सामाजिक
विज्ञान

नदी घाटी और सभ्

[माध्यमिक शिक्षा परिषद् उत्तर प्रदेश की हाईस्कूल कक्षाओं के लिए नवीनतम प्रारूप एवं पाठ्यक्रम पर आधारित प्रश्नोत्तर रूप में सर्वश्रेष्ठ पुस्तक]

रंजना

हाईस्कूल सामाजिक विज्ञान

[राजकीय पाठ्य-पुस्तक पर आधारित प्रथम एवं द्वितीय प्रश्न-पत्र हेतु]
विस्तृत उत्तरीय, लघुउत्तरीय, अति लघु उत्तरीय, बहुविकल्पीय
तथा मानचित्र सम्बन्धी प्रश्नों के हल सहित

1. राजकीय पाठ्य-पुस्तक के सभी प्रश्न और उनके उत्तर।
2. बोर्ड परीक्षा में अब तक पूछे गये सभी प्रश्नों के उत्तर।
3. अन्य महत्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्न और उनके उत्तर।
4. परीक्षा में पूछे गये मानचित्र सम्बन्धी सभी सैटों के प्रश्नों के हल।

लेखक
उदयवीर सक्सेना
दयालबाग विश्वविद्यालय, दयालबाग

सावित्री गौड़
प्रधानाचार्या
ति. ज्वा. प्र. आर्य कन्या इण्टर कालेज,
इटावा

डा. आर. एस. यादव
एम. ए., एम. कॉम., पी-एच. डी.
प्रवक्ता
एस. एन. इण्टर कालेज, इटावा

रंजना प्रकाशन मन्दिर
शिक्षा सम्बन्धी पुस्तकों के प्रकाशक
12/13, सुई कटरा, हॉस्पिटल रोड, आगरा-282003

प्रकाशक :
रंजना प्रकाशन मन्दिर
12/13, सुई कटरा, आगरा
फोन : 72925

नवीन संशोधित संस्करण : 1994

मूल्य : 36·00 रुपये मात्र

प्रिन्टर्स : देवदीप मुद्रक,
बाग मुजफ्फर खाँ, आगरा ।

नवीन संस्करण की भूमिका

माध्यमिक शिक्षा परिषद् उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद की हाईस्कूल परीक्षा के सभी वर्गों के लिए अनिवार्य विषय सामाजिक विज्ञान हेतु रंजना सामाजिक विज्ञान गाइड का नवीन और संशोधित संस्करण प्रस्तुत करते हुए हमें अति प्रसन्नता हो रही है। हम उन विद्वान अध्यापकों एवं छात्रों के सद्भाव के अति आभारी हैं जिन्होंने इस पुस्तक का हृदय से स्वागत किया है।

हाईस्कूल सामाजिक विज्ञान विषय पर वैसे तो अनेकों सहायक पुस्तकें एवं गाइडें बाजार में उपलब्ध हैं, किन्तु छात्रों को अपने पाठ्यक्रम को पूर्ण करने के लिए एक से अधिक पुस्तकों का सहारा लेना पड़ता है जिससे उनके समय और धन का अपव्यय होता है। यह पुस्तक छात्रों की इसी प्रकार की अनेकों समस्याओं को ध्यान में रखकर लिखी गई है कि छात्रों को दोनों प्रश्न-पत्रों की विषय-सामग्री एक ही पुस्तक में एक साथ उपलब्ध हो जाये और अन्यत्र भटकना न पड़े।

माध्यमिक शिक्षा परिषद् द्वारा हाईस्कूल सामाजिक विज्ञान के प्रथम एवं द्वितीय प्रश्न-पत्रों में अनेक परिवर्तन एवं संशोधन किये हैं। इस पुस्तक की सामग्री को निर्देशानुसार विस्तृत, लघु, अति लघु, बहु-विकल्पीय एवं मानचित्र सम्बन्धी प्रश्नों के माध्यम से सरलतम एवं बोधगम्य भाषा में प्रस्तुत किया गया है। इस पुस्तक की अन्य प्रमुख विशेषताएँ निम्नांकित हैं—

1. इस पुस्तक में दोनों राजकीय पाठ्य-पुस्तकों में दिये गये समस्त प्रश्नों के उत्तर दिये गये हैं।

2. इस पुस्तक में बोर्ड की परीक्षा में 1984 से अब तक पूछे गये प्रश्नों के साथ अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर प्रचुर मात्रा में दिये गये हैं।

3. पुस्तक के प्रत्येक अध्याय में अति लघु और बहु-विकल्पीय प्रश्न और उनके उत्तर अत्यधिक मात्रा में दिये गये हैं।

4. पुस्तक के अन्त में दोनों प्रश्न-पत्रों के मानचित्र सम्बन्धी प्रश्न और उनके उत्तर पर्याप्त मात्रा में दिये गये हैं तथा परीक्षा में पूछे गये मानचित्र सम्बन्धी प्रश्न मानचित्र में हल सहित दिये गये हैं।

5. स्वच्छ एवं त्रुटि रहित छपाई, परीक्षोपयोगी विषय सामग्री एवं मूल्य केवल लागत मात्र इस पुस्तक की एक अन्य प्रमुख विशेषता है।

पुस्तक के इस नवीन संस्करण को पूरी तरह छात्रोपयोगी बनाने का प्रयास किया गया है। हमें पूर्ण आशा है कि यह नवीन संस्करण छात्रों तथा शिक्षकों के लिए पहले से अधिक उपयोगी सिद्ध होगा। पुस्तक के आगामी संस्करण हेतु सभी सुहृदयवर अध्यापकों एवं विषय विशेषज्ञों के सुझाव सादर व सप्रेम आमन्त्रित हैं।

छात्रों के उज्जवल भविष्य की शुभकामनाओं सहित।

लेखक एवं प्रकाशक

आपका पाठ्यक्रम एवं अंक विभाजन

सामाजिक विज्ञान में तीन-तीन घन्टे के दो प्रश्न-पत्र 50-50 अंक के होंगे।

माध्यमिक शिक्षा परिषद् उ० प्र०, इलाहाबाद द्वारा निर्धारित तथा सरकारी गजट 2 जून 1984 में प्रकाशित, के अनुसार सामाजिक विज्ञान (हाईस्कूल) के प्रत्येक प्रश्न-पत्र में विस्तृत उत्तरीय, लघुउत्तरीय, अति लघुउत्तरीय एवं बहु-विकल्पीय प्रश्नों द्वारा सम्पूर्ण पाठ्यक्रम का समावेश होगा। अतएव प्रत्येक अंश का सम्यक् अध्ययन आवश्यक है। प्रकरण के अनुसार अंक विभाजन निम्नवत् होगा—

प्रथम प्रश्न-पत्र — अंक 50

क्रम सं०	प्रकरण	अंक
1.	प्रागैतिहासिक मानव जीवन	2
2-3.	नदी घाटी की सभ्यताएँ तथा प्राचीन संसार की कुछ महत्वपूर्ण सभ्यताएँ	7
4.	संसार के प्रमुख धर्म	3
5.	मध्यकालीन संसार	3
6-7.	यूरोप में पुनर्जागरण तथा औद्योगिक क्रान्ति	5
8.	संसार की कुछ महत्वपूर्ण राजनैतिक क्रान्ति	2
9.	भारत की सांस्कृतिक विरासत	5
10.	भारत में जन जागरण	2
11.	स्वतन्त्रता के लिए भारत का संघर्ष	3
12.	प्रजातन्त्र में जन जीवन	10
13.	राष्ट्रीय एकता	4
14.	राष्ट्रीय सुरक्षा तथा विदेश नीति	4
		योग=50

द्वितीय प्रश्न-पत्र — अंक 50

क्रम सं०	प्रकरण	अंक
15.	सुनियोजित आर्थिक विकास देश के संसाधन	7
16.	ससाधनों का योजना बद्ध संदोहन	7
17.	हमारी आर्थिक समस्याएँ एवं आर्थिक विकास	7
18.	राज्यों की अन्योन्याश्रियता	4
19.	सामाजिक परिवर्तन तथा विकास	4
20.	वातावरण और भावात्मक अनुकूलन	5
21.	विकसित देशों में जनजीवन	4
22.	विकासशील देशों में जनजीवन	4
23.	वर्तमान विश्व की प्रमुख विशेषताएँ	4
24.	अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग तथा शान्ति की समस्याएँ	4
		योग=50

कार्यालय, सचिव माध्यमिक शिक्षा परिषद् उ० प्र० इलाहाबाद द्वारा
सामाजिक विज्ञान—प्रथम प्रश्न-पत्र का
प्रकरणानुसार प्रश्नों का स्वरूप तथा अंक विभाजन

प्रकरण	प्रकरण का नाम	प्रश्नों का स्वरूप	कुल प्रश्न	कुल अंक
1.	प्रागैतिहासिक मानव का जीवन	अति लघुउत्तरीय—1 बहुविकल्पीय—1	2	2
2.	नदी घाटी की सभ्यतायें तथा प्राचीन संसार की कुछ महत्व-पूर्ण सभ्यतायें	विस्तृत उत्तरीय—1 लघुउत्तरीय—1	2	7
3.	विश्व के प्रमुख धर्म	लघुउत्तरीय—1 अति लघुउत्तरीय—1	2	3
4.	मध्यकालीन संसार	लघुउत्तरीय—1 अति लघुउत्तरीय—1 या बहु-विकल्पीय—1	2	3
5.	यूरोप में पुनर्जागरण तथा औद्योगिक क्रान्ति	विस्तृत उत्तरीय—1	1	5
6.	संसार की कुछ महत्वपूर्ण राजनैतिक क्रान्तियाँ	लघुउत्तरीय—1	1	2
7.	भारत की सांस्कृतिक विरासत	अति लघुउत्तरीय—3 बहु-विकल्पीय—2	5	5
8.	भारत में नवजागण	लघुउत्तरीय—1	1	2
9.	स्वतन्त्रता के लिए भारत का संघर्ष	लघुउत्तरीय—1 अति लघुउत्तरीय—1	2	3
10.	प्रजातन्त्र में जन जीवन	विस्तृत उत्तरीय—1 लघुउत्तरीय—2 बहु-विकल्पीय—1	4	10
11.	राष्ट्रीय एकता	लघुउत्तरीय—1 अति लघुउत्तरीय—2	3	4
12.	राष्ट्रीय सुरक्षा तथा विदेश नीति	लघुउत्तरीय—1 अति लघुउत्तरीय—2	3	4

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न $3 \times 5 = 15$ — प्रकरण 2,5,10

लघुउत्तरीय प्रश्न $10 \times 2 = 20$ — प्रकरण 2,3,4,6,8,9,10,11,12

अति लघुउत्तरीय प्रश्न $7 \times 1 = 7$ — प्रकरण 1,3,4,7,9,11,12

बहु-विकल्पीय प्रश्न $4 \times 1 = 4$ — प्रकरण 1,4,7,10

मानचित्र सम्बन्धी प्रश्न $4 \times 1 = 4$

प्रश्न संख्या $= 28$ अंक $= 50$

कार्यालय, सचिव, माध्यमिक शिक्षा परिषद् उ० प्र० इलाहाबाद द्वारा सामाजिक विज्ञान—द्वितीय प्रश्न-पत्र का प्रकरणानुसार प्रश्नों का स्वरूप तथा अंक विभाजन

प्रकरण	प्रकरण का नाम	प्रश्नों का स्वरूप	कुल प्रश्न	कुल अंक
1.	सुनियोजित आर्थिक विकास	विस्तृत उत्तरीय—1 अति लघुउत्तरीय—2	3	7
2.	संसाधनों का योजना बद्ध संदोहन	विस्तृत उत्तरीय—1 लघुउत्तरीय—1	2	7
3.	हमारी आर्थिक समस्याएँ एवं आर्थिक विकास	विस्तृत उत्तरीय—1 लघुउत्तरीय —1	2	7
4.	राज्यों की अन्योन्याश्रयता	लघुउत्तरीय—1 अति लघुउत्तरीय—2	3	4
5.	सामाजिक परिवर्तन तथा विकास	लघुउत्तरीय—1 अति लघुउत्तरीय—2	3	4
6.	वातावरण और भावात्मक अनुकूलन	लघुउत्तरीय—2 अति लघुउत्तरीय—1	3	5
7.	विकसित देशों में जन-जीवन	लघुउत्तरीय—1 बहु-विकल्पीय—2	3	4
8.	विकासशील देशों में जन-जीवन	लघुउत्तरीय—2	2	4
9.	वर्तमान विश्व की प्रमुख विशिष्टताएँ	लघुउत्तरीय—1 अति लघुउत्तरीय—1 बहु-विकल्पीय—1	3	4
10.	अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग तथा शान्ति की समस्याएँ	अति लघुउत्तरीय—3 बहु-विकल्पीय—1	4	4

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न 3 × 5 = 15 प्रकरण —1,2,3,

लघुउत्तरीय प्रश्न 10 × 2 = 20 प्रकरण —2,3,4,5,6,7,8,9

अति लघुउत्तरीय प्रश्न 7 × 1 = 7 प्रकरण—1,4,5,6,9,10

बहुविकल्पीय प्रश्न 4 × 1 = 4 प्रकरण—7,9,10

मानचित्र सम्बन्धी प्रश्न 4 × 1 = 4

प्रश्न संख्या 28 अंक = 50

विषय-सूची

प्रथम प्रश्न-पत्र

अनुभाग एक-सभ्यता का विकास

अनुभाग दो—भारत की संस्कृति का इतिहास

द्वितीय प्रश्न-पत्र

अनुभाग तीन—आधुनिक भारत में जनजीवन

हाईस्कूल सामाजिक विज्ञान के प्रश्नों के प्रकार एवं अंकों का वितरण निम्न प्रकार से होगा

प्रश्न के प्रकार	प्रश्नों की संख्या	प्रत्येक प्रश्न के अंक	कुल अंक	उत्तर सीमा
अति लघुउत्तरीय प्रश्न	7	1	7	10 शब्दों या 1 वाक्य में
लघुउत्तरीय प्रश्न	10	2	20	100 शब्दों या 10 वाक्यों में
विस्तृत उत्तरीय	3	5	15	300 शब्दों या 40 वाक्यों में
बहु-विकल्पीय या वस्तुनिष्ठ प्रश्न	4	1	4	1 वाक्य या उसका अंश
मानचित्र के प्रश्न	4	1	4	स्थान अंकित कीजिये
योग	28	—	50	—

नोट—(1) इस प्रकार सामाजिक विज्ञान के दोनों प्रश्न-पत्रों में 28-28 प्रश्न पूंछे जायेंगे और ये सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे।

(2) प्रथम प्रश्न-पत्र में भारत का मामचित्र, द्वितीय प्रश्न-पत्र में विश्व का मानचित्र भरना होगा। मानचित्र पेपर के साथ दिये जायेंगे।

1 प्रागैतिहासिक मानव का जीवन

अति लघुउत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—सर्वप्रथम पृथ्वी पर किस प्रकार के जीवों का विकास हुआ ? (Imp.)

उत्तर—पृथ्वी पर सर्वप्रथम सूक्ष्म एवं रीढ़ रहित जीवों का विकास हुआ।

प्रश्न 2—जीवाश्म किसे कहते हैं ? (1987)

उत्तर—जीवाश्म मानव की उन अस्थियों को कहते हैं जो लाखों वर्षों से पृथ्वी में दबी हुई हों।

प्रश्न 3—सृष्टि के प्रारम्भ में मनुष्य किन स्थानों पर रहता था ? (1989)

उत्तर—सृष्टि के प्रारम्भ में मनुष्य खुले आकाश के नीचे, वृक्षों की शाखाओं, नदियों एवं झीलों के किनारे पर निवास किया करता था।

प्रश्न 4—पाषाण युग को किन प्रमुख भागों में विभाजित किया जा सकता है ?

उत्तर—पाषाण युग को निम्नलिखित तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है—

(1) पूर्व पाषाण युग, (2) मध्य पाषाण युग, (3) नव पाषाण युग।

प्रश्न 5—पाषाण युग के औजार किस प्रकार के होते थे ?

उत्तर—पाषाण युग के औजार पत्थर के बेडौल तथा खुरदरे होते थे।

प्रश्न 6—नव पाषाण युग के दो प्रमुख औजारों के नाम बताइए। (1984, 87)

उत्तर—(1) हथौड़ा, (2) कुल्हाड़ी।

प्रश्न 7—पाषाण युग के एक प्रमुख देवता का नाम बताइए।

उत्तर—मातृदेवी।

प्रश्न 8—पाषाण युग में मृतक संस्कार की क्या प्रथा थी ?

उत्तर—पाषाण युग में शवों को जमीन में दफनाने की प्रथा थी।

प्रश्न 9—अग्नि का आविष्कार किस युग के मनुष्यों ने किया ? (1984, 86, 89)

उत्तर—अग्नि का आविष्कार पूर्व पाषाण युग के मनुष्यों ने किया।

प्रश्न 10—पुरा पाषाण युग के किन्हीं दो स्थानों के नाम लिखिए। जहाँ चित्रकारी के नमूने प्राप्त हुए हैं।

उत्तर—(1) फ्रांस, (2) स्पेन।

परीक्षा में पूछे गये अति लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1—प्राइमेट से क्या तात्पर्य है ? (1984, 89)

उत्तर—प्राइमेट से तात्पर्य नर वानर है। जैसे, चिंपैंजी।

प्रश्न 2—विकासवादी सिद्धान्त का जन्मदाता कौन महान व्यक्ति था ? (1985)

उत्तर—विकासवादी सिद्धान्त का जन्मदाता 'डार्विन' था।

प्रश्न 3—पहिये का आविष्कार किस युग में हुआ ? (1985, 86, 89)

उत्तर—पहिये का आविष्कार नव-पाषाण युग में हुआ।

प्रश्न 4—पुरा पाषाण काल के औजार संसार के भिन्न-भिन्न महाद्वीपों में पाये गये हैं ?

उत्तर—पुरा पाषाण काल के औजार यूरोप, एशिया तथा अफ्रीका महाद्वीपों में पाये गये हैं।

प्रश्न 5—कृषि का आविष्कार किस युग में हुआ ? (1988)

उत्तर—कृषि का आविष्कार नव-पाषाण युग में हुआ था।

प्रश्न 6—पुरा पाषाण काल में मानव की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि क्या थी ? (1989)

उत्तर—पुरा पाषाण काल में मानव की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि 'अग्नि की खोज' थी।

प्रश्न 7—पाषाण युग के एक प्रमुख देवता और एक प्रमुख देवी का नाम बताइए।

उत्तर—पाषाण युग के प्रमुख देवता सूर्य और प्रमुख देवी मातृदेवी थी।

प्रश्न 8—पृथ्वी पर मानव का जन्म कब हुआ ?

उत्तर—पृथ्वी पर मानव का जन्म आज से लगभग पाँच लाख वर्ष पहले हुआ था।

प्रश्न 9—पृथ्वी की आयु कितनी है ?

उत्तर—पृथ्वी की आयु लगभग 4 अरब 50 करोड़ वर्ष है ?

प्रश्न 10—पुरा पाषाण काल के मानव का भोजन क्या था ?

उत्तर—पुरा पाषाण के मानव का भोजन कन्दमूल फल और पशुओं का कच्चा माँस था।

लघुउत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—प्रागैतिहासिक तथा ऐतिहासिक कालों का अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—मानव जीवन के विकास की उस लम्बी कहानी को इतिहास कहते हैं जिसकी जानकारी के लिए लिखित प्रमाण मिलते हैं। परन्तु लेखन कला के विकास से पूर्व भी मानव लाखों वर्षों से पृथ्वी पर रह रहा था। मानव विकास की इस कहानी का कोई लिखित प्रमाण नहीं है। इस काल को प्रागैतिहासिक काल कहते हैं। प्रागैतिहासिक शब्द प्राक + इतिहास से मिलकर बना है जिसका अर्थ है इतिहास से पूर्व का काल अथवा युग।

प्रश्न 2—पाषाण युग के नामांकन का मुख्य आधार क्या है ? (1989)

उत्तर—जब पृथ्वी पर मानव जीवन आरम्भ हुआ तो उसका जीवन पशुओं

के समान था। उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति प्रकृति करती थी। परन्तु उसका मस्तिष्क अन्य पशुओं की अपेक्षा अधिक विकसित था। मनुष्य ने अपनी बुद्धि के आधार पर ही अपना विकास किया। सर्वप्रथम पत्थरों के टुकड़ों से उसने जंगली पशुओं का शिकार प्रारम्भ किया। फिर उसने प्रस्तर खण्डों को काटकर उपयोगी औजार बनाना आरम्भ किया। ये औजार अब अधिक उपयोगी थे। उसके कुछ औजार लकड़ी तथा हड्डियों के भी थे। परन्तु उसके अधिकांश औजार पत्थर के थे। इन्हीं पाषाण औजारों के आधार पर मानव जीवन के इस प्रारम्भिक काल को पाषाण युग कहा जाता है।

प्रश्न 3—पुरा पाषाण युग का मानव खानाबदोशी जीवन क्यों व्यतीत करता था?

उत्तर— पुरा पाषाण युग के मानव का खानाबदोशी जीवन

पुरा पाषाण युग का मानव पूर्णरूप से प्रकृति पर निर्भर था। उसे कृषि तथा पशु पालन का कोई ज्ञान न था। वह जंगली फल-फूल एवं कन्दमूल एकत्रित करता था। वह जंगली पशुओं का शिकार करके अपनी उदर पूर्ति करता था। वह भोजन के लिए मछली का भी प्रयोग करता था। वह शिकार की खोज में मारा-मारा फिरता था। इसी कारण कहा जाता है कि पुरा पाषाण युग का मानव खानाबदोषी का जीवन व्यतीत करता था। उसका जीवन कष्टों से भरा हुआ था।

प्रश्न 4—पुरा पाषाण युग के मनुष्यों के धार्मिक विश्वास क्या थे?

उत्तर— पुरा पाषाण युग के मनुष्यों के धार्मिक विश्वास

पुरा पाषाण युग के मनुष्य अपने मृतकों के शवों को जमीन में दफनाते थे अर्थात् भूमि के नीचे गाढ़ देते थे। वे कब्र में आभूषण हथियार तथा भोज्य पदार्थों को भी मृतक के साथ रख देते थे। ऐसा इस कारण किया जाता था जिससे मृतक व्यक्ति उनका उपयोग कर सकें। मृतक के शरीर को लाल रंग से रंगने की भी प्रथा थी। हो सकता है कि उनका यह विश्वास हो कि इस लाल रंग से उनके जीवन की लालिमा पुनः लौट सकती है। इस प्रकार परलोक सम्बन्धी जीवन में उनका विश्वास स्पष्ट होता है।

प्रश्न 5—पुरा पाषाण कालीन चित्रकला पर प्रकाश डालिए।

उत्तर— पुरा पाषाण कालीन चित्रकला

पुरा पाषाण कालीन व्यक्तियों को कला का भी ज्ञान था। आदि मानव पशुओं के सजीव चित्र बनाया करते थे। भारत भर में गुफाओं की दीवारों पर उनके द्वारा अंकित पशुओं के चित्र प्राप्त हुए हैं। इससे इस धारणा की पुष्टि होती है कि उस समय के लोगों को चित्रकला का ज्ञान था। इन चित्रों में पशुओं के शरीर में भाले चुभे हुए प्रदर्शित किये गये हैं। कभी-कभी इन चित्रों में रंगों का भी प्रयोग किया गया है। पूर्व पाषाण युग के मनुष्य अपने औजारों को विभिन्न प्रकार के चित्रों से सजाया करते थे।

प्रश्न 6—नव पाषाण युग में मानव किस प्रकार के वस्त्रों का प्रयोग करता था?

उत्तर— नव पाषाण युग में मानव के वस्त्र

नव पाषाण युग की सबसे महत्त्वपूर्ण घटना पहिये का आविष्कार है। पहिये

का प्रयोग सूत कातने और उसे लपेटने के लिए भी किया जाता था। सभ्यता के विकास के क्रम में बर्तन बनाना, सूत कातना, और बुनना तीन मुख्य सफलताएँ थीं। इस युग में मानव ने कताई-बुनाई की कला का आविष्कार किया। चमड़े के अतिरिक्त कपास, सन तथा ऊन से वस्त्र तैयार किये जाने लगे। पश्चिमी एशिया में खुदाई से चर्खा तथा करघा प्राप्त हुए हैं। इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि इस युग में सूत कातने तथा कपड़ा बुनने की कला का आविष्कार हो चुका था। उस समय के लोग कपड़ा सिलने की कला से भी परिचित हो गये थे।

प्रश्न 7—कृषि और पशु पालन से मानव के जीवन में क्या परिवर्तन हुआ ? (1989)

उत्तर— कृषि और पशु पालन से मानव जीवन में परिवर्तन

कृषि और पशु पालन का विकास हो जाने से मानव-जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन हो गये। कृषि और पशुपालन के विकास के कारण मानव को खानाबदोशी जीवन का अन्त हो गया और उसके जीवन में स्थिरता आ गयी। अब वह अपनी कृषि-भूमि के समीप ही घर बनाकर रहने लगा और कालान्तर में वह नदियों के किनारे स्थायी निवास बनाकर रहने लगा। निवास के साथ-साथ उसके भोजन में भी परिवर्तन हो गया। अब वह विभिन्न प्रकार के अनाज और दूध का प्रयोग करने लगा। इस प्रकार उसका सुव्यवस्थित सामुदायिक जीवन प्रारम्भ हो गया जिसके फलस्वरूप मानव में सामुदायिक भावनाओं का विकास हुआ।

प्रश्न 8—पाषाण युग के लोगों का सामुदायिक विकास कैसे हुआ ?

उत्तर— पाषाण युग के लोगों का सामुदायिक विकास

आदि मानव को निरन्तर जंगली पशुओं से खतरा बना रहता था। अतः वे झुण्ड बनाकर ही जंगली जानवरों का शिकार कर पाते थे इसी कारण वे समूह बना कर रहने लगे। यह समूह निर्माण ही उनके सामाजिक जीवन का प्रारम्भ था।

पाषाण युग में मानव इधर-उधर घूमा करते थे। परन्तु पशु पालन और कृषि कार्य करने के कारण उनको एक स्थान पर रहना पड़ता था। अतः वे समुदाय बनाकर रहने लगे थे। जिससे उनमें सामुदायिक भावना विकसित हुई। सामुदायिक जीवन की कुछ निश्चित प्रथाएँ थीं। प्रारम्भ में समस्त कृषि योग्य भूमि पर सामूहिक अधिकार था। परन्तु कालान्तर में भूमि पर एकल अधिकार का विचार-पनपने लगा था। अब भूमि पर कुछ परिवारों तथा कबीलों का अधिकार स्थापित हो गया था। परिवार व कबीले में वयोवृद्ध को मुखिया माना जाता था और इसके द्वारा बनाये गये नियमों का सभी पालन करते थे। इस प्रकार पाषाण काल में सामुदायिक भावना विकसित हुई।

परीक्षा में पूछे गये लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1—पुरा पाषाण युग के मानव के मुख्य औजार क्या थे ? (1984)

उत्तर—पुरा पाषाण युग के मानव के औजार प्रस्तर खण्ड, लकड़ी, या हड्डियों के होते थे जो भद्दे, बेडौल और खुरदरे होते थे। इस युग के औजार मुख्य रूप से तीन भागों में विभाजित किये गये हैं—

1. कुड़ार, 2. गड़ासे, 3. रुखानी।

कुड़ार काटने और छीलने के काम आता था, गड़ासे से काटने का काम लिया

जाता था और रुखानी छिद्र करने में प्रयुक्त होती थी। इस युग में अन्तिम चरण में धनुष, भाला, छेदनी, सुई आदि हथियार भी बना लिये गये थे ?

प्रश्न 2—उत्तर पाषाण युग के मानव के मुख्य औजार क्या थे ? (1989)

उत्तर—उत्तर पाषाण युग के मानव ने बुद्धि और कौशल का प्रयोग करके सुन्दर, सुडौल और चिकने औजार बनाना प्रारम्भ कर दिया। इस युग के मुख्य औजार हल, हँसिया, तकली, हथौड़ा, कुल्हाड़ी, धनुषबाण आदि थे।

प्रश्न 3—आग की खोज को इतना महत्व क्यों दिया जाता है ?

उत्तर—आग की खोज उत्तर पाषाण काल की एक महत्वपूर्ण घटना है। आग की खोज ने आदि मानव के जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन कर दिये। आग की खोज ने मानव को जंगली पशुओं से सुरक्षा प्रदान की। आग की खोज से मानव कच्चे माँस के स्थान पर उसे भूनकर खाने लगा। आग की सहायता से मनुष्य अपने रहने की गुफाओं को गर्म करके शीत से रक्षा करने लगा तथा आग से मनुष्य रात्रि में और अँधेरे के स्थान में प्रकाश करने लगा। इस कारण भी उसका जीवन पहले की अपेक्षा अधिक सुरक्षित हो गया। इन्हीं कारणों से आग की खोज को इतना अधिक महत्व दिया जाता है।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—पृथ्वी पर जीवन का विकास किस प्रकार हुआ ? (1986, 89)

उत्तर— **पृथ्वी पर जीवन का विकास**

इस पृथ्वी पर मनुष्य लाखों वर्षों से निवास करता चला आया है परन्तु यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि वह धरती पर किस प्रकार प्रकट हुआ। वैज्ञानिकों ने पृथ्वी की आयु लगभग 4 अरब 50 करोड़ स्वीकार की है। इस दृष्टि से पृथ्वी पर मनुष्य के उद्भव की कहानी लाखों वर्ष पुरानी है। जीवन का विकास अत्यन्त सूक्ष्म तथा रीढ़ विहीन प्राणियों के रूप में हुआ। मानव जीवन का विकास धीरे-धीरे हुआ। मनुष्य कब और कैसे इस पृथ्वी पर आया, इस प्रश्न का उत्तर आज भी विवादास्पद है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि केवल 30,000 या 40,000 वर्ष पहले से ही हमारी अपनी मानव जाति 'होमो सपियंस' (Homo-Sapiens) का उदय हुआ। आधुनिक युग के सभी व्यक्ति इसी 'होमो सपियंस' जाति के हैं। मनुष्य क्रमशः प्रगति के पथ पर बढ़ता हुआ सभ्यता की वर्तमान सीढ़ी पर पहुँचा है। मनुष्य की प्रगति की यह कहानी बड़ी ही रोचक है। सभ्यता के आरम्भ से पूर्व मनुष्य की दशा पशुओं जैसी थी। आदि मनुष्य को 'सभ्य' बनने में हजारों वर्ष लगे हैं।

होमो सपियंस

खुदाई के फलस्वरूप, उस समय के औजार, मिट्टी के बर्तन, निवास तथा मनुष्यों तथा जानवरों की हड्डियाँ प्राप्त हुई। खुदाई से प्राप्त वस्तुओं के आधार पर हमें यह निश्चित करने में सफलता मिली है कि प्रागैतिहासिक काल में क्या घटनाएँ घटित हुई थीं। उस समय मनुष्य किस प्रकार जीवन यापन करता था ? उसका क्या भोजन था ? विद्वानों की धारणा है कि पहले मनुष्य अपने हाथों तथा पैरों से चलता था। फिर उसने पाँवों पर सीधे खड़ा होना तथा अपने हाथों को स्वतन्त्र कर लेना सीखा। इसी प्रकार मानव शिल्पी बनने योग्य हो सका। अब वह दूर-दूर तक सभी दिशाओं में देखने योग्य हो सका। इस प्रकार वह जीवन के विकास के मार्ग

पर तीव्र गति से अग्रसर हुआ। आज से तीस चालीस हजार वर्ष पूर्व का "ज्ञानी-मानव", जो इस धरती पर प्रकट हुआ, उसे होमो सपियंस' जाति से सम्बन्धित माना जाता है। आज के सभी मनुष्य इसी जाति से सम्बन्धित माने जाते हैं।

मानव शास्त्र (Anthropology) के अनुसार, पुरातन पाषाण युग का आरम्भ आज से लगभग 6 लाख वर्ष पूर्व हुआ था। इस युग की सभ्यता के भग्नावेश पृथ्वी के अनेक प्रदेशों से प्राप्त हुए हैं। यूरोप, एशिया, अफ्रीका आदि देशों में पत्थर के बने वे औजार प्राप्त हुए हैं जिनको प्राचीन पाषाण युग का मनुष्य प्रयोग में लाता था। इससे हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि प्राचीन पाषाण युग की सभ्यता पृथ्वी के सभी प्रदेशों में एक समान थी। विविध भागों में विचरण करने वाला मनुष्य एक ही ढंग से अपनी सभ्यता का विकास कर रहा था।

प्रश्न 2—इतिहासकारों को 'पुरातत्व सामग्री से मानव विकास की जानकारी किस प्रकार हुई ?

उत्तर—पुरातत्व सामग्री से मानव विकास की जानकारी

पुरातत्व सामग्री से मानव विकास की जानकारी भूगर्भशास्त्रियों की खोजों, उत्साही उत्खनन-कर्त्ताओं (Archaeologists) के परिश्रम से प्राप्त, औजारों, हथियारों तथा बर्तनों से प्राप्त जानकारी से की जा सकती है। पृथ्वी की खुदाई से प्राप्त वस्तुओं की जाँच करके विद्वानों ने भिन्न-भिन्न देशों में आदि काल की सभ्यता के विकास की जानकारी प्राप्त की है। इस प्रकार हमें आदिकाल के मनुष्यों से सम्बन्धित अनेक तथ्यों की महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हो गई। परन्तु मनुष्य का क्रमबद्ध इतिहास उस समय से प्राप्त होता है जबसे मनुष्य ने लिखना पढ़ना सीख लिया था। किसी देश में, जिस समय तक का मनुष्य का क्रमबद्ध इतिहास हमें उपलब्ध होता है, उस समय या काल को 'ऐतिहासिक काल' कहा जाता है। उसके पहले के समय या काल को प्रागैतिहासिक काल, (Prehistoric Age) कहा जाता है। भारत में आर्य सभ्यता के आरम्भ से ऐतिहासिक काल, प्रारम्भ होता हैं। प्रागैतिहासिक काल की अवधि लाखों वर्ष की है।

संसार के अनेक प्राचीन खण्डहरों की खुदाई की गई। इस खुदाई से मानव-अस्थिपंजर, शिल्प-उपकरण, मूर्तियाँ—खिलौने, मुहरें तथा अन्य प्राचीन सामग्री प्राप्त हुई है। इन वस्तुओं के आधार पर उस समय के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक जीवन की जानकारी की जा सकती है। इस प्रकार की खुदाई से संसार की प्राचीन सभ्यताओं का ज्ञान प्राप्त हुआ है। खुदाई से प्राप्त वस्तुओं की सही जानकारी करने के लिए भू-विज्ञान, प्रकृति-विज्ञान, मानव-विज्ञान तथा अन्य विज्ञानों का सहारा लेना पड़ता है। ये वस्तुएँ अत्यन्त जीर्ण अवस्था में होती हैं। इसी कारण इनका परीक्षण अत्यन्त सावधानी से किया जाता है। यदि परीक्षणकर्ता से तनिक भी असावधानी हो जाती है तो वस्तु के नष्ट होने की सम्भावना रहती है। यदि वस्तु टूट या नष्ट हो जाती है तो लाखों वर्ष की कहानी समाप्त हो जाती है।

प्रश्न 3—पुरा (पूर्व) पाषाण युग में मानव किस प्रकार अपना जीवन-व्यतीत करता था ?

उत्तर— पुरा (पूर्व) पाषाण युग में मानव जीवन

पुरा पाषाण युग में मानव जीवन का अध्ययन निम्नलिखित शीर्षकों में किया जा सकता है—

(i) औजारों में सुधार (Improvement in Implements)—प्रारम्भिक पाषाण युग के पश्चात् मानव ने सभ्यता के विकास के द्वितीय चरण में प्रवेश किया। यह अवस्था 'पाषाण युग' (Palaeolithic Age) कहलाता है। इस अवस्था से मनुष्य ने अपने द्वारा निर्मित हथियारों में सुधार किया और उनको अधिक उपयोगी बनाया। उसने पत्थरों को घिसकर औजारों तथा हथियारों को और अधिक पैना बनाया और उनको सुन्दर आकृति प्रदान की। उसके द्वारा विभिन्न प्रकार के कार्यों को सम्पन्न करने के लिए विभिन्न प्रकार के औजार बनाये गये। इस समय मानव के प्रमुख औजार चाकू, कुदाली और कुल्हाड़ी थे।

(ii) आग की खोज (Discovery of Fire)—पूर्व पाषाण युग के प्रारम्भ में मनुष्य को आग का प्रयोग करना न आता था। दैवयोग से उसने देखा कि दो पत्थरों के रगड़ने से चिनगारी उत्पन्न होती है। जैसे ही सूखी पत्तियाँ तथा पेड़ों की शाखाएँ चिनगारी के सम्पर्क में आती थीं, वे जल उठती थीं। आदि मानव की आग की खोज कोई साधारण घटना नहीं है। इस खोज ने मनुष्य के जीवन में महत्वपूर्ण परिवर्तन किया। उसने आग का प्रयोग अपनी गुफा को गर्म करने तथा जंगली जानवरों को भयभीत करने के लिए किया। उसने कच्चे माँस को आग में भूना और इस प्रकार उसे अधिक स्वादिष्ट बनाया।

(iii) भोजन एकत्रित करने वाला मानव (Man as a Food Gatherer)—पूर्व पाषाण युग में मनुष्य भोजन एकत्रित किया करता था। वह जंगली मनुष्य था और भोजन एकत्रित करने में उसे अन्य जंगली जीव-जन्तुओं से प्रतियोगिता करनी पड़ती थी। आदि-मानव भोजन की तलाश में इधर-उधर घूमा करता था और खाना-बदोष जीवन व्यतीत करता था। वह निरन्तर शिकार की तलाश में फिरता रहता था। वह भूख शान्त करने के लिए प्राकृतिक वनस्पति तथा छोटे पशुओं पर निर्भर रहता था। वह झीलों और नदियों में मछली पकड़ा करता था। कभी-कभी वह जंगली जानवरों का पीछा किया करता था जो छोटे पशुओं को मारकर अपनी भूख शान्त करते थे। वह इस प्रकार से बचे हुए गोश्त को खा जाया करता था।

(iv) वस्त्र और आश्रय (Food and Shelter)—पूर्व पाषाण युग के मानव को वस्त्रों की कोई जानकारी न थी। वे नितान्त नग्न घूमा करते थे। कालान्तर में उन्होंने मृत पशुओं की खाल से अपने शरीर को ढकना आरम्भ कर दिया। इस कार्य के लिए उन्होंने पेड़ की छाल का भी प्रयोग किया। जंगली जानवरों से बचने के लिए कभी-कभी वे पेड़ों पर भी चढ़ जाया करते थे। फिर वे जंगली जानवरों से रक्षा करने के लिए गुफाओं में रहने लगे।

(v) सामाजिक जीवन (Social Life)—आदि मानव को निरन्तर जंगली पशुओं से खतरा बना रहता था। अतः वे झुण्ड बनाकर ही जंगली जानवरों का शिकार कर पाते थे। इसी कारण वे समूह बनाकर रहने लगे। यह समूह निर्माण ही उनके सामाजिक जीवन का प्रारम्भ था। उन्होंने हड्डियों की सुइयाँ बनाना भी सीख लिया था।

(vi) कलात्मक प्रगति (Development of Art)—इस युग के व्यक्तियों ने अपनी कलात्मक प्रगति का भी परिचय दिया है। आदि मानव पशुओं के सजीव चित्र बनाया करते थे। भारत भर में गुफाओं की दीवारों पर उनके द्वारा अंकित पशुओं के चित्र प्राप्त हुए हैं।

प्रश्न 4—पुरा पाषाण (पूर्व) युग तथा नव पाषाण युग के औजारों एवं भोजन सामग्री में अन्तर बताइए।

उत्तर—पुरा पाषाण तथा नव पाषाण युग के औजारों में अन्तर

पुरा पाषाण तथा नव पाषाण युग के औजारों में अन्तर इस प्रकार है—

औजार

पुरा पाषाण युग के औजार	नव पाषाण युग के औजार
(1) इस काल में मानव के प्रमुख औजार कुल्हाड़ी, गड़ासा तथा शल्कल थे।	(1) मानव के प्रमुख औजार कुल्हाड़े, भाले और तीर थे।
(2) पत्थरों को घिसकर औजार और पैने बनाये जाते थे।	(2) अब औजार अधिक चिकने, चमकदार एवं सुडौल होने लगे हैं।
(3) औजार प्रस्तर खण्डों, लकड़ी तथा अस्थियों से बनाये जाते थे।	(3) इस युग में भी प्रस्तर खण्डों तथा हड्डियों के बने औजारों का प्रयोग होता रहा।
(4) इस काल के औजार भद्दे, बेडौल तथा खुरदरे थे।	(4) इस काल के औजारों पर पालिश की जाती थी। इससे वे चमकदार होने लगें।
(5) धीरे-धीरे पत्थरों के औजारों के अतिरिक्त हड्डी, सींग तथा हाथी दांत के भी औजार बनाये जाने लगे।	(5) इस युग में लकड़ी का भी प्रयोग होने लगा। बढ़ईगीरी का विकास हुआ। अब हँसिया प्रमुख औजार था।
(6) इस काल के बने औजार यूरोप, अफ्रीका तथा एशिया के विभिन्न स्थलों से प्राप्त हुए हैं।	(6) उत्तर पाषाण युग के कुल्हाड़े काश्मीर, दक्षिणी भारत में गोदावरी के निकट, आसाम की पहाड़ियों से प्राप्त हुए हैं।

भोजन

पुरा पाषाण युग का भोजन	नव पाषाण युग का भोजन
(1) मानव भोजन के लिए प्रकृति पर निर्भर था।	(1) अब मानव भोजन की खोज में मारा-मारा नहीं फिरता था।
(2) मानव का भोजन फल-फूल तथा कन्दमूल था। जंगली पशुओं का शिकार भी उसका भोजन था।	(2) मानव गेहूँ, जौ मक्का, साग-सब्जी आदि का प्रयोग करता था। अब पशु पालन का भी विकास हुआ।
(3) मानव अपने भोजन में मछली का भी प्रयोग करता था।	(3) मानव अपने भोजन में माँस, मछली तथा फलों का प्रयोग करने लगा।
(4) अग्नि का ज्ञान न होने के कारण वह कच्चा माँस खाता था।	(4) अब खाद्य सामग्री पकायी जाने लगी।

प्रश्न 5—अग्नि तथा पहिये के आविष्कार से पाषाण युग के मानव के जीवन में क्या परिवर्तन हुआ?

उत्तर—

अग्नि तथा पहिये के आविष्कार से मानव जीवन में परिवर्तन

(1) **आग की खोज** (Discovery of Fire)—पूर्व पाषाण युग के प्रारम्भ में मनुष्य को आग का प्रयोग करना न आता था। दैवयोग से उसने देखा कि दो पत्थरों के रगड़ने से चिनगारी उत्पन्न होती है। जैसे ही सूखी पत्तियाँ तथा पेड़ों की शाखाएँ चिनगारी के सम्पर्क में आती थीं वे जल उठती थीं। सम्भवतः इस प्रकार से आग की खोज की गई होगी। आदि मानव की आग की खोज कोई साधारण घटना न थी। इस प्रकार मानव ने चिनगारी से आग जलाना सीख लिया। अब मानव कच्चा माँस भूनकर खाने लगा। भुना माँस उसे अधिक स्वादिष्ट लगा होगा। आग के प्रयोग से जंगली पशुओं को डराने एवं दूर भगाने में उसे सहायता मिली। मानव को उसे अपनी अँधेरी गुफाओं को भी प्रकाशित करने में सहायता मिली।

(2) **पहिये का आविष्कार** (Invention of the Wheel)—प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में इस युग को सबसे मुख्य सफलता चक्र (पहिया या चाक) का आविष्कार है। पहिये का उपयोग गाड़ी खींचने ओर बर्तन को गोलाकार आकृति देने के लिए किया जाता था। दक्षिण भारत में इस युग के द्वारा बनाये गये मिट्टी के बर्तन प्राप्त हुए हैं जिनसे ज्ञात होता है कि वे 'चाक' का प्रयोग जानते थे। इस युग के मनुष्य 'चाक' (Wheel) चलाकर मिट्टी के बर्तन बनाते थे। 'पहिये' की सहायता से ही उत्तर पाषाण काल के मनुष्यों ने गाड़ी चलाना आरम्भ किया जिससे दूरस्थ स्थानों को बोझा ढोया जाता था। पहिये का प्रयोग सूत कातने और उसे लपेटने के लिए भी किया जाता था। सभ्यता के विकास के क्रम में बर्तन बनाना, सूत कातना और बुनना तीन मुख्य सफलताएँ थीं।

परीक्षा में पूछे गये विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1—भारत में उत्तर पाषाण काल की विशेषताएँ लिखिए। (1984)

अथवा

उत्तर पाषाण युग या नव पाषाण युग में मानव अपना जीवन किस प्रकार व्यतीत करता था।

उत्तर— **उत्तर पाषाण युग**

उत्तर पाषाण युग के मानव जीवन का वर्णन निम्नलिखित शीर्षकों में किया जा सकता है—

(i) **नवीन औजार तथा हथियार** (New Tools and Weapons)—उत्तर पाषाण युग सभ्यता के विकास के क्रम में एक महत्त्वपूर्ण कदम है। वह कुल्हाड़े, भाले और तीर आदि हथियार बनाने लगा। इन हथियारों से उसे जंगली जानवरों से अपनी रक्षा करने में सहायता मिली। उसे अब जंगली जानवरों का शिकार करने में आसानी होने लगी। अब उसने कच्चे माँस का प्रयोग करना छोड़ दिया। वह इसे पकाकर खाने लगा। आग को देखकर जंगली जानवर भयभीत होने लगे।

(ii) **पशु पालन** (Domestication of Animals)—पूर्व पाषाण युग में मानव अपने भोजन हेतु शिकार तथा मछली पकड़ने पर निर्भर रहता था। परन्तु अब-नव पाषाण युग (Neolithic Age) में उसने उपयोगी पशु जैसे—भेड़, बकरी, गाय, सूअर, गधा और भैंस आदि का पालन आरम्भ कर दिया। इस युग में मनुष्य

ने सबसे पहले कुत्ते का पालन आरम्भ किया क्योंकि कुत्ता उसे शिकार करने में सहायता किया करता था। उसके पश्चात् उसने भेड़-बकरी का पालन आरम्भ किया, तत्पश्चात्, गाय और भैंस को पाला जाना आरम्भ किया गया। सबसे अन्त में गधा और घोड़ा बोझ ढोने के लिए पाले जाने लगे।

(iii) **कृषि का आरम्भ (Beginning of Agriculture)**—इस युग में धीरे-धीरे मानव ने कृषि करना आरम्भ कर दिया। सभ्यता के विकास के क्रम में यह दूसरा चरण था। सम्भवतः कृषि कला की खोज का श्रेय उस समय की स्त्रियों को है। जब पुरुष जानवरों को चराने के लिए ले जाता था, स्त्रियाँ घर पर बच्चों की देखभाल के लिए रह जाती थीं। वे पशुओं के चारे के लिए जंगली पौधों और पेड़ों की जड़ों को एकत्रित किया करती थीं। उन्होंने देखा कि बीज भूमि में दबकर अंकुरित हो जाता है। उन्होंने यह भी आश्चर्य से देखा कि एक बीज सौ गुना या उससे भी अधिक बढ़ जाता है। सम्भवतः इस प्रकार कृषि कार्य आरम्भ किया गया।

(iv) **पहिये का आविष्कार (Invention of the Wheel)**—प्रौद्योगिकी क्षेत्र में इस युग को सबसे मुख्य सफलता चक्र (पहिया या चाक) का आविष्कार है। पहिये का उपयोग गाड़ी खींचने और बर्तन को गोलाकार आकृति देने के लिए किया जाता था। दक्षिण भारत में इस युग के द्वारा बनाये गये मिट्टी के बर्तन प्राप्त हुए हैं जिनसे ज्ञात होता है कि वे 'चाक' का प्रयोग जानते थे। इस युग के मनुष्य 'चाक' (Wheel) चलाकर मिट्टी के बर्तन बनाते थे।

(v) **धर्म (Religion)**—इस युग के मनुष्य प्रकृति (Nature) के उपासक थे। वे पत्थर, सूर्य तथा वृक्ष की पूजा करते थे। वे पृथ्वी मातृदेवी (Mother-goddess) की पूजा करते थे। वे सूर्य की पूजा करते थे क्योंकि पृथ्वी पर वही जीवनदाता है। वे नदियों की इस कारण पूजा करते थे क्योंकि वे उनको उनकी आवश्यकता की पूर्ति के लिए जल प्रदान करती थीं। पेड़ों की पूजा वे इस कारण करते थे क्योंकि वे उनसे भयभीत रहते थे।

परीक्षा में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1—नव पाषाण युग के सम्बन्ध में दिये गये तथ्यों में जो सही हो, उसे अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिये— (1985)

(1) मानव ने शिकार करना प्रारम्भ किया।
(2) आग की खोज हुई। (3) पहिये का आविष्कार हुआ।
(4) मानव ने पत्थर के औजार बनाना प्रारम्भ किया।

उत्तर—(3) पहिये का आविष्कार हुआ।

प्रश्न 2—पुरातत्व विभाग के सम्बन्ध में जो तथ्य सही हो, उसे चुनकर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए— (1985)

(1) जनगणना करना। (2) ऐतिहासिक पुस्तकों को प्रकाशित करना।
(3) ऐतिहासिक स्थानों की खुदाई कराकर प्राचीन सभ्यता को प्रकाश में लाना।
(4) पंचवर्षीय योजनाओं का निर्माण करना।

उत्तर—(3) ऐतिहासिक स्थानों की खुदाई कराकर प्राचीन सभ्यता को प्रकाश में लाना।

प्रश्न 3—पुरा पाषाण काल के सम्बन्ध में दिये गये निम्न तथ्यों में से एक सही का चयन करके अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए— (1985)

(1) कृषि कार्य का प्रारम्भ हुआ। (2) पशु पालन का प्रारम्भ हुआ।
(3) मिट्टी के बर्तन बनाना प्रारम्भ हुआ।
(4) आग का आविष्कार हुआ।

उत्तर—(4) आग का आविष्कार हुआ।

प्रश्न 4—पुरा पाषाण काल के मानव की महत्वपूर्ण उपलब्धि क्या थी? (1986)

(1) आग की खोज। (2) कृषि कार्य का प्रारम्भ।
(3) मिट्टी के बर्तन बनाना। (4) पशु पालन करना।

उत्तर—(1) आग की खोज।

प्रश्न 5—पृथ्वी पर सर्वप्रथम किस प्रकार के जीवों का विकास हुआ? (1987)

(1) जल में रहने वाले जीव। (2) अण्डे देने वाले प्राणी।
(3) स्तन प्राणी जीव। (4) अत्यन्त सूक्ष्म एवं रीढ़ विहीन प्राणी।

उत्तर—(4) अत्यन्त सूक्ष्म एवं रीढ़ विहीन प्राणी।

प्रश्न 6—नव पाषाण युग के लोग लोग पूजा करते थे— (1988)

(1) भगवान राम। (2) भगवान कृष्ण।
(3) मातृदेवी। (4) भगवान शिव।

उत्तर—(3) मातृदेवी।

प्रश्न 7—पुरा पाषाण युग के मानव का भोजन क्या था? (1988, 90)

(1) पका हुआ माँस। (2) गेहूँ चावल आदि।
(3) दूध, दही, मक्खन आदि। (4) जंगली फल-फूल व कन्दमूल।

उत्तर—(4) जंगली फल-फूल व कन्द-मूल।

प्रश्न 8—नव-पाषाण एवं पुरा पाषाण युग के मानव में भिन्नता का आधार था। (1988)

(1) धातु के औजारों का प्रयोग। (2) भोजन के लिए शिकार।
(3) गुफाओं में निवास। (4) चित्रकारी करना।

उत्तर—(1) धातु के औजारों का प्रयोग।

प्रश्न 9—नव-पाषाण युग का मानव कहाँ रहता था? (1989)

(1) खुले आकाश के नीचे। (2) खाल के तम्बूओं में।
(3) गुफाओं में। (4) मिट्टी तथा लकड़ी के मकानों में।

उत्तर—(4) मिट्टी तथा लकड़ी के मकानों में।

प्रश्न 10—नव-पाषाण युग के मानव ने— (1989)

(1) शिकार करना प्रारम्भ किया। (2) पत्थर के औजार बनाना प्रारम्भ किया।
(3) आग की खोज की। (4) पहिये का आविष्कार किया।

उत्तर—(4) पहिये का आविष्कार किया। □

2 नदी घाटी की सभ्यताएँ

अति लघुउत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—सिन्धु घाटी सभ्यता के दो प्रमुख नगरों के नाम लिखिए। (1988)

उत्तर—(1) मोहनजोदड़ो; (2) हड़प्पा।

प्रश्न 2—सिन्धु घाटी सभ्यता से सम्बन्धित दो देवताओं के नाम लिखिए।

उत्तर—(1) मातृदेवी, (2) पशुपति (शिवजी)।

प्रश्न 3—कुम्हार के चाक का प्रयोग सर्वप्रथम कहाँ हुआ ?

उत्तर—कुम्हार के चाक का सर्वप्रथम प्रयोग मेसोपोटामिया मे हुआ।

प्रश्न 4—हम्बूराबी की विधि संहिता की एक विशेषता बताइए।

उत्तर—हम्बूराबी ने राज्य के विभिन्न कबीलों तथा जातियों के परस्पर विरोधी कानूनों और परम्पराओं को अवैध घोषित कर दिया।

प्रश्न 5—मेसोपोटामिया के दो प्रमुख देवताओं के नाम लिखिए।

उत्तर—(1) शक्स (सूर्य देवता), (2) नन्नार (चन्द्र देवता)।

प्रश्न 6—प्राचीन चीन के दो प्रमुख देवताओं के नाम लिखिए।

उत्तर—(1) लोआन्से (2) कन्फ्यूशियस।

प्रश्न 7—राजकीय सेवा के चुनाव के लिए सर्वप्रथम प्रतियोगिता परीक्षायें कहाँ प्रारम्भ हुई ?

उत्तर—राजकीय सेवा के लिए सर्वप्रथम प्रतियोगिता परीक्षा चीन में प्रारम्भ हुई।

प्रश्न 8—चीन के लाओ धर्म की पुस्तक का क्या नाम था ?

उत्तर—चीन के लाओ धर्म की पुस्तक का नाम लाओन्से किंग था।

प्रश्न 9—प्राचीन चीन के किन्हीं दो आविष्कारों के नाम बताइए।

उत्तर—प्राचीन चीन के दो आविष्कारों में नाम (1) कुतुबनुमा, और (2) भूकम्प मापक यन्त्र।

प्रश्न 10—जिगुरत का सम्बन्ध किस सभ्यता से था ?

उत्तर—जिगुरत का सम्बन्ध मेसोपोटामिया की सभ्यता से था।

परीक्षा में पूछे गये अति लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1—कन्फ्यूशियस का जन्म किस देश में हुआ था ? (1985)

उत्तर—कन्फ्यूशियस का जन्म चीन देश में हुआ था।

प्रश्न 2—चीन में चिन वंश का सबसे प्रतापी शासक कौन था ? (1987)
उत्तर—चीन में चिन वंश का सबसे प्रतापी शासक शी ह्वांगटी था।
प्रश्न 3—सिन्धु घाटी के लोग किस देवी की पूजा करते थे ? (1988)
उत्तर—सिन्धु घाटी के लोग मातृदेवी की पूजा करते थे।

अन्य महत्वपूर्ण अति लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 4—भारत में उन दो स्थानों के नाम लिखिए जहाँ सिन्धु घाटी सभ्यता के अवशेष प्राप्त हुए हैं ?

उत्तर—भारत में लोथल और कालीबंगा नामक दो स्थान हैं जहाँ सिन्धु घाटी के अवशेष प्राप्त हुए हैं।

प्रश्न 5—लोथल कहाँ पर स्थित है ?
उत्तर—लोथल गुजरात में स्थित है।
प्रश्न 6—मोहनजोदड़ो कहाँ पर स्थित है ?
उत्तर—मोहनजोदड़ो सिन्धु प्रदेश के लरकाना जिले में स्थित है
प्रश्न 7—हड़प्पा कहाँ पर स्थित है ?
उत्तर—हड़प्पा पाकिस्तान में रावी नदी के किनारे स्थित है।
प्रश्न 8—मेसोपोटामिया की सभ्यता के दो प्रमुख केन्द्रों के नाम बताइए।
उत्तर—मेसोपोटामिया की सभ्यता के दो प्रमुख केन्द्रों के नाम हैं—
(1) सुमेर (2) बेबीलोन।
प्रश्न 9—मेसोपोटामिया का प्रसिद्ध शासक कौन था ?
उत्तर—मेसोपोटामिया का प्रसिद्ध शासक हम्मूराबी था।
प्रश्न 10—हम्मूराबी की विधि संहिता क्या है ?
उत्तर—शासक हम्मूराबी ने समस्त राज्य के लिए जिन समान कानूनों का संकलन कराया, उसे हम्मूराबी की विधि-संहिता कहते हैं।
प्रश्न 11—कीलाक्षर लिपि का सम्बन्ध किस सभ्यता से है ?
उत्तर—कीलाक्षर लिपि का सम्बन्ध मेसोपोटामिया की सभ्यता से है।
प्रश्न 12—मिस्र की सभ्यता किस नदी की घाटी में विकसित हुई थी ?
उत्तर—मिस्र की सभ्यता नील नदी की घाटी में विकसित हुई थी।
प्रश्न 13—मिस्र के राजा को क्या कहा जाता था ?
उत्तर—मिस्र के राजा को 'फेराओ' कहा जाता था।
प्रश्न 14—मिस्र की सभ्यता के दो प्रमुख नगरों के नाम बताइए।
उत्तर—मिस्र की सभ्यता के दो प्रमुख नगरों के नाम हैं—
(1) मेम्फिस (2) थीब्ज।
प्रश्न 15—मिस्र के सबसे प्रसिद्ध पिरामिड का नाम बताइए। उसे किसने बनवाया था ?

उत्तर—मिस्र का सबसे प्रसिद्ध पिरामिड 'गीजा का पिरामिड' है। इसे मिस्र के सम्राट खूफू ने बनवाया था।

प्रश्न 16—चीन की प्राचीन सभ्यता का प्रथम केन्द्र कौन-सा था ?
उत्तर—चीन की प्राचीन सभ्यता का प्रथम केन्द्र ह्वांगहो नदी की घाटी था।

प्रश्न 17—चीन की प्राचीन सभ्यता का नाम क्या था ?

उत्तर—चीन की प्राचीन सभ्यता का नाम शाङ सभ्यता था।

प्रश्न 18—प्राचीन चीन में किन-किन वस्तुओं का आविष्कार हुआ ?

उत्तर—प्राचीन चीन में भूकम्पमापी यन्त्र, कुतुबनुमा धूप-घड़ी और पानी की चक्की का आविष्कार हुआ।

प्रश्न 19—चीन की प्राचीन वस्तुकला का उदाहरण कौन-सा है ?

उत्तर—चीन की प्राचीन वास्तुकला का उदाहरण 'चीन की विशाल दीवार' है जिसकी गणना संसार के आठ आश्चर्यों में की जाती है।

प्रश्न 20—'चीन का शोक' किसे कहते हैं और क्यों ?

उत्तर—'चीन का शोक' ह्वांगहो नदी को कहते हैं क्योंकि यह नदी बहुधा बाढ़ के समय देश के एक बड़े भू-भाग को अपनी लपेट में ले लेती थी।

19/1996

लघुउत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—नदी घाटी की सभ्यताओं के विकास में प्राकृतिक शक्तियाँ कहाँ तक सहायक थीं ?

उत्तर—प्राचीन काल में मनुष्य असभ्य तथा जंगली था परन्तु धीरे-धीरे वह उन्नति करता गया तथा उसने सभ्यता, संस्कृति विज्ञान तथा कला आदि के क्षेत्र में प्रगति प्रारम्भ कर दी। मनुष्य ने प्रगति करके विश्व की विभिन्न नदी घाटियों में अपना निवास स्थान बना लिया। नदी घाटी की सभ्यताओं के विकास में प्राकृतिक परिस्थितियाँ बहुत अधिक सहायक सिद्ध हुई हैं क्योंकि मनुष्य को विभिन्न सुविधायें नदियों को घाटियों में ही प्राप्त हुई। यही कारण है कि सिन्धु मिश्र, मैसोपोटामिया तथा चीन आदि सभ्यताओं का विकास नदी घाटियों में ही हुआ। अतः स्पष्ट है कि नदी घाटी की सभ्यताओं के विकास में प्राकृतिक स्थितियाँ बहुत अधिक सहायक सिद्ध हुई हैं।

प्रश्न 2—सिन्धु घाटी सभ्यता की जानकारी के प्रमुख साधन क्या हैं ?

उत्तर—

जानकारी के प्रमुख साधन

1922-23 ई० में भारतीय पुरातत्व विभाग द्वारा की गई खुदाई के फलस्वरूप सिन्ध प्रान्त के लरकाना जिले में सिन्धु नदी के तट पर एक नगर के अवशेष मिले हैं। इसे मोहनजोदड़ो के नाम से जाना जाता है। इसी प्रकार पंजाब में माण्टगोमरी जिले में रावी के तट पर हड़प्पा नामक स्थान के चिन्ह मिले हैं। इन खण्डहरों की खुदाई से प्राप्त वस्तुएँ सिन्धु घाटी सभ्यता की जानकारी के प्रमुख साधन हैं।

प्रश्न 3—सिन्धु घाटी सभ्यता के अन्तर्गत स्त्रियों के शृंगार प्रेमी होने के उदाहरण प्रस्तुत कीजिए।

(1990)

उत्तर—

स्त्रियों के शृंगार-प्रेमी होने के उदाहरण

सिन्धु घाटी के निवासी आभूषण प्रिय थे। आभूषण स्त्रियों तथा पुरुषों दोनों के द्वारा धारण किये जाते थे। उस समय के प्रचलित आभूषण गले का हार, कान के गहने, पैर में कड़े तथा करधनी थे। धनी व्यक्ति अपने आभूषण सोने चाँदी, हाथी दाँत तथा पन्ना आदि के बनवाते थे। परन्तु निर्धन व्यक्ति अपने आभूषण ताँबे तथा अन्य सस्ती वस्तुओं के बनवाते थे।

प्रश्न 4—पिरामिडों की मुख्य विशेषताएँ क्या थीं? (1985, 86, 88, 89)

उत्तर—पिरामिडों की विशेषताएँ—मिस्र के पिरामिड वास्तुकला के श्रेष्ठ नमूने हैं। इन पिरामिडों का आयतन निकालने के लिए वे सही सूत्र का प्रयोग करते थे। पिरामिडों के निर्माण के लिए पत्थर के भारी-भारी टुकड़ों को ऊँचाई पर ले जाकर उनकी जुड़ाई की जाती थी। गीजा में संसार प्रसिद्ध पिरामिड हैं। इन पिरामिडों में शवपेटी के लिए कक्ष बहुमूल्य वस्त्र, भोजन सामग्री, आभूषण तथा फर्नीचर रखा जाता था। किसानों तथा उनकी स्त्रियों की समाधियों पर विशाल स्मारक बनाये जाते थे। इनको पिरामिड कहा जाता था।

प्रश्न 5—मिस्री समाज में कौन-कौन से वर्ग थे? (1988)

उत्तर—मिस्री समाज के वर्ग—मिस्र के समाज में पहला स्थान फराओ का होता था। फराओ मिस्र का राजा कहलाता था। सबसे अधिक शक्ति उसके पास रहती थी। उस समय के राजाओं को देवता माना जाता था। मन्दिरों में राजा की मूर्तियाँ स्थापित की जाती थीं। समाज में फराओ के पश्चात् क्रमानुसार पुरोहितों, राज कर्मचारियों, कलाकारों तथा दस्तकारों का स्थान हुआ करता था। उसके पश्चात् कृषकों का स्थान होता था। वे शहर के बाहर रहा करते थे। सबसे अन्त में दासों का स्थान था। वे प्रायः युद्ध में बनाये गये बन्दी होते थे।

प्रश्न 6—मिस्र की चित्रकला की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—मिस्र की चित्रकला—मिस्र में चित्रकला का विकास वास्तुकला तथा मूर्ति-कला के सहायक के रूप में हुआ। जिन मूर्तियों को मूर्तिकारों के द्वारा बनाया जाता था, मूर्तिकार उनमें रंग भर दिया करते थे। इस प्रकार मूर्तियाँ सजीव हो जाती थीं। चित्रकार भवनों, मन्दिरों तथा समाधियों पर आकर्षक चित्र बनाया करते थे। इन चित्रों में तालाब में तैरती बतखें, हिरनों के झुण्ड, शिकार की घात में बैठी बिल्ली आदि प्रमुख हैं।

प्रश्न 7—मैसोपोटामिया की कीलाकार लिपि किसे कहते हैं?

उत्तर—मैसोपोटामिया की सभ्यता की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि यहाँ की लिपि है। यहाँ की सभ्यता में विचारों को चिन्हों, चित्रों तथा संकेतों के माध्यम से व्यक्त किया जाता था। इसमें अनेक चिन्ह प्रयोग किये जाते थे। परन्तु कालान्तर में यह लिपि रेखाप्रधान लिपि के साथ ध्वनि बोधक लिपि बन गई। इस लिपि को कीलाकार लिपि कहा जाता है। इसमें मिट्टी की गीली पट्टियों पर एक नोकदार कमल से लिखा जाता था। इन पट्टियों को आग में पका लिया जाता था। खुदाई में इस प्रकार की पट्टियाँ हजारों की संख्या में प्राप्त हुई हैं।

प्रश्न 8—निम्नलिखित का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

(अ) ममी, (ब) पितेसी, (स) स्फिंक्स, (द) अनुसिम्बल।

उत्तर—(अ) ममी—मिस्र की सभ्यता में मृतकों के शवों को औषधियों का लेप करके हजारो वर्षों तक सुरक्षित रखा जाता था जिन्हें ममी कहते थे। मिस्र की ममी वहाँ के सम्राटों तथा अन्य महान् व्यक्तियों के शव हैं इनको एक विशेष प्रकार के मसाले लगाकर सुरक्षित रखा गया है। यह मिस्र के इतिहास के ज्ञान के प्रमुख साधन हैं। ममी आज भी संसार को आश्चर्यचकित कर रही है। इस प्रकार सुरक्षित रखे शव को ममी कहा जाता है।

(ब) पितेसी --मैसोपोटामिया की सभ्यता के अन्तर्गत राज्यों का अधिकारी पितेसी कहलाता था। वहाँ प्रधान मन्दिरों के पुरोहित को पितेसी कहा जाता था। उसका प्रमुख कार्य कृषि उद्योग धन्धे एवं नगर की देखभाल करना था।

(स) स्फिक्स —मिस्र की वास्तुकला का एक अद्‌भुत तथा अनुपम उदाहरण वरसिंह (स्फिक्स) की मूर्ति है। प्राचीन मिस्र की सभ्यता में एक प्रकार के पशु की मूर्ति की पूजा होती थी। इस मूर्ति में शरीर सिंह का है तथा सिर मनुष्य का है। वह मूर्ति ठोस पत्थर को काटकर बनायी गयी है।

(द) अबूसिम्बल—मिस्र की सभ्यता में मन्दिरों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। सूर्य देव का मन्दिर अबूसिम्बल का मन्दिर है। यह प्रसिद्ध देव मन्दिर ठोस पर्वत के अन्दर लगभग 60 मीटर काटकर बनाया गया है। इस मन्दिर से स्पष्ट होता है कि उस काल में मिस्र के लोग सूर्य की पूजा करते थे।

परीक्षा में पूछे गये लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1—सिन्धु घाटी के लोगों के धार्मिक विश्वासों का वर्णन कीजिए। (1984)

उत्तर—सिन्धु घाटी की खुदाई में प्राप्त वस्तुओं से पता लगता है कि यहाँ के निवासी मूर्ति पूजक थे। मातृदेवी इनकी सबसे अधिक पूज्य देवी थी। वे पशुपति शिव की भी पूजा करते थे। वे विभिन्न प्राकृतिक शक्तियाँ जैसे सूर्य, अग्नि, जल आदि की भी पूजा करते थे। पशु-पक्षियों की पूजा का भी प्रचलन था। साँड को इस सभ्यता के लोग एक पवित्र पशु मानते थे क्योंकि खुदाई में मिली मोहरों पर साँड की आकृति अंकित हुई मिली है। वृक्षों में पीपल की विशेष रूप से पूजा की जाती थी।

प्रश्न 2—आप किस प्रकार कह सकते हैं कि सिन्धु घाटी के नगरों का निर्माण एक निश्चित योजना के आधार पर हुआ था? (1985)

उत्तर—सिन्धु घाटी के मोहनजोदाड़ो और हड़प्पा नगरों की खुदाई में मिले खण्डहरों को देखने से ज्ञात होता है कि सिन्धुवासी नगर निर्माण की कला में बड़े चतुर थे। उन्होंने अपने नगरों का निर्माण एक निश्चित योजना के आधार पर किया था। उस समय नगरों में विशाल भवन बनाये जाते थे। समस्त नगर में चौड़ी सड़कें थीं जो एक-दूसरे को काटती हुई समूचे नगर में फैली हुई थीं। सड़कों के दोनों ओर क्रमबद्ध रूप में भवन बने हुए थे। सड़कों के किनारे नगर के गन्दे पानी के निकास के लिए नालियाँ थीं। विशाल और भव्य भवन सड़कों के किनारे बनाये जाते थे। नगरों में जहाँ नालियाँ होती थीं, उनकी भी सुन्दर व्यवस्था थी। इस प्रकार इस सभ्यता के लोगों ने नगरों का निर्माण योजनाबद्ध ढंग से किया था।

प्रश्न 3—मेसोपोटामिया की सभ्यता के सामाजिक जीवन का वर्णन कीजिए। (1988)

उत्तर—मेसोपोटामिया का समाज तीन वर्गों में बँटा हुआ था—

1. उच्च वर्ग—उच्च वर्ग में राजा, पुरोहित, और सामन्त और राज्य के बड़े अधिकारी सम्मिलित थे। इस वर्ग को हर प्रकार की सुविधाएँ प्राप्त थीं तथा समाज में सम्मान प्राप्त था।

2. **मध्यम वर्ग**—मध्यम वर्ग में जमींदार, व्यापारी, शिल्पकार और राज्य के छोटे कर्मचारी आते थे। इनका जीवन भी सन्तोषजनक और सुखमय था।

3. **निम्न वर्ग**—निम्न वर्ग के अन्तर्गत दास हुआ करते थे। दास प्रायः युद्धबन्दी होते थे। इनका जीवन कष्टमय था, किन्तु उनके साथ कठोरता का व्यवहार नहीं किया जाता था।

नारी का स्थान—मेसोपोटामिया की सभ्यता में नारी को समाज में बहुत सम्मान प्राप्त था। समान्यतः एक विवाह की प्रथा प्रचलित थी। विवाह में दहेज का प्रचलन था किन्तु दहेज पर विवाहिता का ही अधिकार होता था। विधवा को अपनी सम्पत्ति बेचने का अधिकार प्राप्त था। पर्दा-प्रथा राजदरबारों तक ही सीमित थी, स्त्रियाँ शृंगार भी करती थीं।

प्रश्न 4—हम्मूराबी की विधि-संहिता पर एक टिप्पणी लिखिए। (1990)

उत्तर—मेसोपोटामिया की सभ्यता में बेबीलोन में हम्मूराबी नामक एक सम्राट् था जिसने सुव्यवस्थित शासन के लिए एक विशाल कानून (विधि) संग्रह निर्मित कराया था जो हम्मूराबी की विधि संहिता कहलाया। उसने समस्त राज्य के लिए प्रचलित कानूनों का संकलन कराया और स्वयं अनेक उपयोगी और जनहित-कारी कानून बनाकर एक विशाल पत्थर की शिला पर खुदवाया। सम्राट हेम्मूराबी ने राज्य के विभिन्न कबीलों और जातियों के परस्पर विरोधी कानूनों और परम्प-राओं को अवैध घोषित कर दिया और समस्त राज्य में समान कानूनों का प्रचलित कराया। इस विधि-संहिता में 282 कानून थे जो 244 मी० ऊँचे पत्थर पर खुद-वाये गये।

इस संहिता में जीवन के प्रत्येक पहलू से सम्बन्धित कानून सम्मिलित थे। ये कानून अपराध, परिवार, श्रम, सम्पत्ति, वाणिज्य, व्यापार, कृषि आदि विषयों से सम्बन्धित थे। इस विधि-संहिता में अधिकारों और उत्तरदायित्वों दोनों की चर्चा की गयी है।

प्रश्न 5—प्राचीन मिस्र के धर्म के बारे में आप क्या जानते हैं ? (1985)

उत्तर—प्राचीन मिस्रवासी अनेक देवी-देवताओं की मूर्तियों की पूजा करते थे। वे अनेक प्राकृतिक शक्तियों जैसे सूर्य, चन्द्र, जल आदि को देवताओं के रूप में मानकर उनकी उपासना करते थे। सूर्य देवता (रे), चन्द्र देवता (नन्नार) और नील देवता उनके प्रमुख देवता थे। इन देवताओं के अतिरिक्त प्राचीन मिस्रवासी पर्वत, झरने, घड़ियाल, गीदड़, बाघ, गाय जैसे पक्षियों आदि की देवता के रूप में पूजा करते थे। मिस्रवासियों का पुनर्जीवन में दृढ़ विश्वास था।

प्रश्न 6—कन्फ्यूशियस कौन था ? उसके मुख्य उपदेशों का उल्लेख कीजिए। (1987)

उत्तर—कन्फ्यूशियस चीन का एक महान् दार्शनिक होने के साथ धर्म और समाज-सुधारक था। उन्होंने व्यक्ति और समाज में सामंजस्य स्थापित करने के लिए अनेक नियम बनाये। एक लम्बे समय तक चीन में कन्फ्यूशियस के धर्म का बोलबाला रहा।

कन्फ्यूशियस चीन के सामाजिक जीवन को नियमित करने के लिए पाँच व्यावहारिक नियम बनाये, जिन्हें 'पंचकिंग' कहा जाता है। उसने आचरण सम्बन्धी

नियमों पर विशेष बल दिया और नैतिक जीवन को व्यक्ति के लिए एक आदर्श बताया। सदाचार, प्राचीन रीति-रिवाजों के प्रति आदर, गुरुजनों एवं पूर्वजों का सम्मान तथा परिवार के लोगों में संगठन की भावना रखना उनके प्रमुख उपदेश हैं। उनके उपदेशों ने चीनी सभ्यता का काफी विकास किया।

प्रश्न 7—लाओत्से कौन था ? संक्षेप में लिखिए। (1984)

उत्तर—लाओत्से चीन देश का एक महान् और क्रान्तिकारी दार्शनिक था। उसके क्रान्तिकारी विचारों और जन-हितकारी शिक्षाओं ने तत्कालीन चीनवासियों के जीवन में एक नया मोड़ लाने में पर्याप्त सफलता प्राप्त की। लाओत्से ने 'ताओ' धर्म चलाया और अपने धार्मिक विचारों को 'लाओत्से किंग' नाम पुस्तक में लिपिबद्ध किया। उसने सरल और सादा जीवन व्यतीत करने और स्वार्थ त्यागने पर विशेष बल दिया। वह प्रकृति की शक्तियों पर बहुत अधिक विश्वास रखता था। इसके साथ ही उसका कहना था कि मनुष्य को विनयशील होना चाहिए क्योंकि विनम्रता मनुष्य का सबसे बड़ा गुण है। उसका यह भी कहना था कि मनुष्य बुराई करने के साथ भलाई करे।

अन्य महत्त्वपूर्ण लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 8—'जिगुरत' किसे कहते हैं ? इसका सम्बन्ध किस सभ्यता से था ?

उत्तर—जिगुरत—नगर के संरक्षक देवता के लिए नगर के पवित्र क्षेत्र में किसी ऊँची पहाड़ी या ईंटों के बने ऊँचे चबूतरे पर बने मन्दिर को 'जिगुरत' कहा जाता है। देव-मन्दिर के साथ-साथ जिगुरत में भण्डारगृह और कार्यालय भी होते थे। इस प्रकार जिगुरत एक सामाजिक और प्रशासनिक केन्द्र होता था। जिगुरत कई-कई मंजिलों के होते थे जिनके सबसे ऊपरी भाग में देवता का मन्दिर होता था। जिगुरत का सम्बन्ध मेसोपोटामिया की सभ्यता से था।

प्रश्न 9—मिस्र की सभ्यता को 'नील नदी का उपहार या देन' क्यों कहा जाता है ?

उत्तर—मिस्र अफ्रीका महाद्वीप का एक छोटा किन्तु महत्त्वपूर्ण देश है जिसमें नील नदी बहती है। नील नदी के दोनों किनारों पर सकरी और चौड़ी हरी-भरी भूमि की एक पट्टी है। यही नील नदी की घाटी है। इसी नील नदी की घाटी में एक उन्नतशील सभ्यता का विकास हुआ। जिसे नील नदी घाटी की सभ्यता कहते हैं। यदि नील नदी नहीं होती तो मिस्र देश रेगिस्तान एवं बंजर होता। नील नदी के जल से ही नहरों द्वारा सिंचाई करके यहाँ खेती की जाती है। दूसरे नील नदी में प्रतिवर्ष बाढ़ आती है जिससे कृषि-भूमि की उपजाऊ शक्ति बढ़ जाती है और अधिक अन्न तथा अन्य वस्तुएँ पैदा होती हैं। नील नदी में जल-प्रचुर मात्रा में होने से यहाँ के लोगों को और भी अन्य अनेक सुविधाएँ प्राप्त होती हैं, जैसे यातायात की सुविधा आदि। इसी कारण मिस्र की सभ्यता को 'नील नदी का उपहार या देन' कहा जाता है।

प्रश्न 8—ह्वांगहो नदी को 'चीन का शोक' क्यों कहा जाता है ?

उत्तर—ह्वांगहो नदी की घाटी में विश्व की एक प्राचीन सभ्यता का जन्म हुआ जिसे चीन की सभ्यता कहा जाता है। किन्तु इस नदी में बहुधा भयंकर बाढ़ आया करती थी जिसके फलस्वरूप खेतों और घरों में पानी भर जाता था जिससे

अपार धन-जन की हानि होती थी। इस कारण यहाँ के निवासियों को एक कठिन चुनौती भरा जीवन व्यतीत करना पड़ता था। इस कारण ह्वांगहो नदी को 'चीन का शोक' कहा जाता है।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—सिन्धु घाटी सभ्यता का विवरण निम्नलिखित शीर्षक के अन्तर्गत अंकित कीजिए—

(अ) नगर रचना, (ब) धार्मिक विश्वास, (स) आर्थिक जीवन।

अथवा **(1984, 85, 87, 89, 90)**

सिन्धु घाटी की सभ्यता और संस्कृति की प्रमुख विशेषतायें लिखिए।

उत्तर—सिन्धु घाटी सभ्यता की नगर रचना—मोहनजोदड़ो तथा सिन्धु घाटी के अन्य नगरों की जो खुदाई हुई उससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि सिन्धु नदी घाटी की सभ्यता 'नगरों की सभ्यता' थी। इस सभ्यता का मुख्य केन्द्र स्थान एक अति विशाल नगर था। इसके खंडहरों के भग्नावशेष से इस बात की जानकारी मिलती है कि इस समय भी विशाल भवन बनाये जाते थे तथा लोग नगर निर्माण की कला से भली-भाँति परिचित थे। समस्त नगर में चौड़ी सड़कें थीं जो एक-दूसरे को काटती हुईं समस्त नगर में फैली हुई थीं। सड़कों के किनारे नगर का पानी बहाने के लिए नालियाँ थीं। विशाल भवन सड़कों के किनारे बनाये जाते थे। ऐसा प्रतीत होता है कि उस समय के लोग स्नान करने के विशेष शौकीन थे। खुदाई में एक विशाल स्नानागार भी मिला है। इस स्नानागार की आकृति चौकोर है तथा उसके चारों ओर बरामदे तथा कमरे मिले हैं। इसके तालाब के पानी तक पहुँचने के लिए सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। इसको महान् स्नानागार कहते हैं। मध्य के तालाब की लम्बाई 12 मीटर, चौड़ाई 7 मीटर तथा गहराई 2½ मीटर है। पास के एक कमरे के कुएँ से पानी आता है। पास के बरामदों में बने कमरों का प्रयोग सम्भवतः कपड़े बदलने के लिए किया जाता होगा। इसका निर्माण कितना भव्य रहा होगा, यह इस तथ्य से सिद्ध होता है कि 5000 वर्ष के बाद भी यह अभी खड़ा है। इसी तरह का एक और स्नानागार मिला है जिसकी लम्बाई 11·8 मीटर, चौड़ाई 10 मीटर तथा गहराई 2·4 मीटर है। स्नानागार के कुण्ड में नल के द्वारा पानी पहुँचाने तथा उसे बाहर निकालने की अच्छी व्यवस्था थी।

मकानों का निर्माण आधुनिक समय की भाँति योजनानुसार किया जाता था। उस समय भी मकान ईंटों के बनाये जाते थे। मकानों के मध्य एक आँगन हुआ करता था। खण्डहरों की खुदाई से ज्ञात होता है कि प्रत्येक मकान में कूड़ा रखने के लिए स्थान बनाया जाता था। मकानों की एक भी खिड़की या दरवाजा प्रमुख सड़क की ओर नहीं खुलता था। सार्वजनिक स्नानागार को देखकर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि उस समय के लोग स्वच्छता विशेष रूप से पसन्द करते थे। इस बात की भी सम्भावना है कि स्नान करना एक धार्मिक कृत्य माना जाता हो।

(ब) सिन्धु घाटी सभ्यता के लोगों के धार्मिक विश्वास—प्राचीन समय के खंडहरों की खुदाइयों में कुछ मुहरें तथा धातुओं की मूर्तियाँ मिली हैं। उन मुहरों तथा मूर्तियों पर अंकित आकृतियों के आधार पर कहा जा सकता है कि वे अनेक देवी-देवताओं पर विश्वास करते थे। मातृदेवी की सबसे अधिक उपासना की जाती थी।

हड़प्पा की खुदाई में एक योगी की मूर्ति प्राप्त हुई है। कुछ विद्वानों के अनुसार, यह पशुपति शिव की मूर्ति है। इस सभ्यता के लोग विभिन्न प्राकृतिक शक्तियों की भी पूजा करते थे। पीपल की भी पूजा की जाती थी। उस समय पशु-पक्षियों की भी पूजा की जाती थी। कुछ मुहरों पर कुबड़ वाले साँड की आकृति अंकित है। इससे यह अनुमान लगाया जाता है कि वे इस पशु को विशेष पवित्र मानते थे।

(स) सिन्धु घाटी के निवासियों का आर्थिक जीवन—सिन्धु घाटी सभ्यता के निवासी धनी थे और उनका जीवन सुखी था। यह स्थान आधुनिक समय की तरह रेतीला तथा शुष्क न था। वहाँ अच्छी वर्षा होती थी। चूँकि कृषि कार्य के लिए पर्याप्त वर्षा होती थी, अतः वहाँ के निवासी गेहूँ और जौ पैदा करते थे। कृषि कार्य के लिए हल का प्रयोग किया जाता था। सिन्धु घाटी के निवासी गाय, बैल, हाथी, घोड़े, सूअर, भेड़ आदि पशु पालते थे। यहाँ के निवासी गैंडा, चीता और भालू आदि जानवरों से भी परिचित थे।

कृषि तथा पशुपालन के अतिरिक्त वहाँ के निवासी व्यापार भी करते थे। ये लोग दूर देशों के साथ व्यापार करते थे। सिन्धु घाटी के निवासी व्यापार के अतिरिक्त उद्योग-धन्धे भी चलाते थे। वे विभिन्न प्रकार के विलास तथा शृंगार की वस्तुएँ तैयार किया करते थे। सिन्धु घाटी से निवासी आभूषण बनाने, बर्तन बनाने, राजगीरी का काम करने, बढ़ई तथा लुहार का कार्य करने, कपड़ा बुनने, सूत कातने, पत्थर काटने, चित्र बनाने, मूर्तियाँ बनाने तथा अस्त्र-शस्त्र बनाने का कार्य किया करते थे। इस प्रकार सिन्धु घाटी के निवासी सम्पन्न तथा समृद्ध थे।

प्रश्न 2—मैसोपोटामिया की प्राचीन सभ्यता का विकास निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर अंकित कीजिए— (1985, 88)

(अ) धार्मिक विश्वास, (ब) उद्योग धन्धे, (स) विज्ञान।

अथवा

मैसोपोटामिया की सभ्यता की प्रमुख विशेषतायें लिखिये।

उत्तर—(अ) मैसोपोटामिया के निवासियों के धार्मिक विश्वास—धार्मिक मामलों में सुमेरीय लोग सिन्धु घाटी सभ्यता वालों से कुछ भिन्न थे। वे पहले एके-श्वरवादी थे। परन्तु बाद में वे अनेक देवी-देवताओं की पूजा करने लगे थे। प्रत्येक नगर का अपना सरक्षक देवता था। भू-लगान उसी के नाम पर वसूल किया जाता था। सुमेरीय लोग प्रकृति की कल्याणकारिणी शक्तियों की पूजा देवी-देवताओं के रूप में किया करते थे। सरकार के समस्त नियमों का पालन इसी देवता के नाम पर किया जाता था। उसके मन्दिर पर बड़ी धनराशि व्यय की जाती थी। पुरोहितों को विशेष अधिकार प्राप्त थे।

सुमेरीय मृत्यु के पश्चात् जीवन में विश्वास करते थे। वे कब्र में मृत व्यक्ति के साथ भोजन तथा दैनिक जीवन में प्रयोग की जाने वाली वस्तुएँ भी रख देते थे। ऐसा भी विश्वास किया जाता है कि वहाँ के निवासी मृत-पूर्वजों को परिवार का रक्षक मानते थे तथा इसी कारण उनकी पूजा भी की जाती थी।

मैसोपोटामिया के निवासियों के प्रमुख देवता शम्स (सूर्य देवता), अनु (आकाश देवता), एनीलल (वायु देवता) तथा नन्नार (चन्द्र देवता) थे। प्रत्येक नगर में एक प्रधान मन्दिर होता था। वहाँ का देवता नगर का संरक्षक देवता माना जाता था।

(ब) मैसोपोटामिया के निवासियों के उद्योग-धन्धे—मैसोपोटामिया के उद्योग धन्धे उन्नत दशा में थे। यहाँ के शिल्पकार अत्यन्त परिश्रमी थे। वे दैनिक जीवन के प्रयोग की अनेक वस्तुएँ तैयार करते थे। इनमें लकड़ी, सोना, चाँदी, ताँबा, हाथी दाँत तथा काँच की वस्तुएँ सम्मिलित थीं। यहाँ ऊनी तथा सूती वस्त्र भी तैयार किये जाते थे। मैसोपोटामिया के धातुकार ताँबा, कांस्य तथा अन्य धातुएँ तथा अस्त्र-शस्त्र बनाने में दक्ष थे।

(स) विज्ञान के क्षेत्र में प्रगति—सुमेरियन सभ्यता के निवासियों ने विज्ञान के क्षेत्र में अच्छी प्रगति की थी। वे 60 संख्या द्वारा गणना किया करते थे। उनकी गणना में 60 सैकण्ड का 1 मिनट तथा 60 मिनट का 1 घण्टा हुआ करता था। इस सभ्यता के निवासियों ने ही सर्वप्रथम वृत्त को 360 अंशों में विभाजित किया था। उनका पंचांग चन्द्रमा पर आधारित था। वे 29 या 30 दिन का एक माह मानते थे। कुछ दिनों के पश्चात् इसे सूर्य की वार्षिक गति के बराबर बनाने के लिए वे एक माह और अधिक जोड़ दिया करते थे। भारतवर्ष में आजकल यही पद्धति अपनाई जाती है। प्रति तीन वर्ष के पश्चात् एक 'मल मास' आता है। सर्वप्रथम सुमेरिया निवासियों ने नक्षत्रों तथा ग्रहों की गति की गणना की। उन्हीं लोगों ने यह स्पष्ट किया कि मानव जीवन पर ग्रहों का क्या प्रभाव पड़ता है।

प्रश्न 3—प्राचीन मिस्रवासियों ने वास्तुकला तथा विज्ञान के क्षेत्रों में क्या प्रगति की? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। (1988, 90)

अथवा

मिस्र की प्राचीन सभ्यता की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर—वास्तुकला—मिस्र की तत्कालीन कला पर धर्म का प्रभाव था। वास्तुकला के नमूने आज भी वहाँ के पिरामिडों, मन्दिरों, गुहा, समाधियों तथा भवनों आदि में देखने को मिलते हैं।

पिरामिड महान् राजाओं के मकबरे होते थे। प्रारम्भिक काल में मिस्र की इमारतों में पिरामिड सर्वश्रेष्ठ हुआ करते थे। उस समय के 30 बड़े तथा अनेक छोटे पिरामिड आज तक विद्यमान हैं। सबसे भव्य पिरामिड काहिरा के पास गीजा का महान् पिरामिड है। इसका निर्माण 2650 ई० पू० के लगभग प्राचीन राज्य के फराओ सियाफ ने किया था। यह विशाल इमारत पत्थर के बहुत बड़े भारी टुकड़ों को जोड़कर बनायी गयी है। कहा जाता है कि इसको पूरा करने के लिए एक लाख मजदूरों ने 20 वर्ष तक कार्य किया था। चूँकि पिरामिड राजाओं के मकबरे थे अतः उनमें ममियों को तथा उनके प्रयोग में आने वाली सभी प्रकार की बहुमूल्य वस्तुओं को रखा जाता था। इन पिरामिडों को बने हजारों वर्ष हो गये हैं। परन्तु उनमें से कुछ अभी भी सुरक्षित दशा में हैं।

निःसन्देह यह पिरामिड संसार को सात आश्चर्यजनक स्मारकों में है। इस समय के मन्दिर विशाल गुफाओं को काटकर तैयार किये गये हैं। कोनार्क का मन्दिर विश्व का विशालतम भवन है। इसमें एक भव्य सभा भवन है जो 136 स्तम्भों पर टिका है। दूसरा मन्दिर अबूसिम्बल का है। यह ठोस पहाड़ के अन्दर लगभग 60 मीटर काटकर बनाया गया है। यह उदय होते हुए सूर्य देवता का मन्दिर कहलाता है।

विज्ञान—मिस्र के पिरामिड वास्तुकला के श्रेष्ठ नमूने हैं। इन पिरामिडों से ज्ञात होता है कि मिस्रवासियों को गणित का गूढ़ ज्ञान था। वे एक लाख तक की संख्याओं का प्रयोग करते थे। परन्तु सम्भवतः उनको शून्य का ज्ञान न था। उनको त्रिभुज तथा आयत का क्षेत्रफल निकालना आता था। मिस्रवासी वृत्त का क्षेत्रफल निकालने के लिए पाई (π) का प्रयोग करते थे। उन्होंने पिरामिडों के आयतन की गणना की थी। उनको इसका सही सूत्र ज्ञात था। सामान्य रूप से मिस्र की गणित अधिक प्रायोगिक थी।

प्रश्न 4—मानव सभ्यता के विकास में चीन का क्या योगदान है ?
(1985, 89, 90)

उत्तर—मानव सभ्यता के विकास में चीन का योगदान—ऐसा विश्वास किया जाता है कि चीन में प्रथम सभ्यता ह्वांगहो नदी की घाटी में विकसित हुई थी। यह नदी अपने साथ प्रचुर मात्रा में उपजाऊ मिट्टी तथा पानी लाती थी। परन्तु बाढ़ के पश्चात् यह नदी अपनी धारा के बहाव में परिवर्तन कर देती थी। इससे खेतों तथा घरों में पानी भर जाता था। पानी को बाहर निकालने के लिए खोदी जाने वाली नहरें बेकार हो जाती थीं। इसी कारण इस नदी को 'चीन का शोक' कहते हैं। चूंकि नदी की बाढ़ यहाँ के निवासियों के लिए एक चुनौती थी, इसी कारण यहाँ सभ्यता का विकास हुआ।

शाङ सभ्यता—सबसे प्राचीन चीनी सभ्यता शाङ सभ्यता है। यहाँ शाङ वंश के राजाओं ने 1765 ई० पू० से 1122 ई० पू० तक राज्य किया। 14 शताब्दी ई० पू० में यहाँ के निवासियों के एक उच्च स्तर की सभ्यता का विकास कर लिया था। यहाँ की सभ्यता किसी भी विकसित सभ्यता से किसी प्रकार से कम न थी।

(i) सभ्यता के लोग—यहाँ की सभ्यता में राजा के पश्चात् कुलीन पुरुषों का स्थान था। राजा उनको भूमि दिया करता था। वे इसके बदले युद्ध में राजा की सहायता किया करते थे। इसे एक प्रकार की सामन्त प्रथा कहा जा सकता है। तीसरे वर्ग में वे व्यक्ति थे जो व्यापार करते थे अथवा दस्तकार थे। इस सभ्यता के अधिकांश निवासी कृषक थे। यहाँ दास प्रथा भी थी। वे सबसे निम्न श्रेणी में आते थे। दास वे व्यक्ति होते थे जो युद्ध में बन्दी बनाये जाते थे।

(ii) व्यवसाय, शिल्प और कला—इस सभ्यता की समृद्धि कृषि कार्य पर निर्भर थी। लोग मुख्य रूप से ज्वार, बाजरे की खेती करते थे। तत्पश्चात् वे गेहूँ तथा चावल की भी खेती करने लगे। यहाँ सिंचाई की अच्छी व्यवस्था थी। फलस्वरूप देश में अनाज प्रचुर मात्रा में उत्पन्न किया जाता था। इससे सभ्यता की प्रगति में पर्याप्त उन्नति हुई।

(iii) वस्त्र—इस सभ्यता के लाग सन से बने कपड़े पहनते थे। परन्तु इस बात के भी प्रमाण मिलते हैं कि यहाँ के निवासी रेशम के कपड़े पहनते थे। कालान्तर में रेशम का उत्पादन चीन का मुख्य व्यवसाय हो गया।

विश्व सभ्यता को देन—मानव सभ्यता के विकास में चीन का विशेष योगदान रहा है। आविष्कार के क्षेत्र में चीन निवासियों का विशेष योगदान रहा है। गणित तथा विज्ञान के क्षेत्रों में चीन के निवासियों के आविष्कार विशेष उपयोगी सिद्ध हुए हैं। प्रतियोगिता परीक्षाएँ जिनके द्वारा अधिकारों का चयन किया जाता था, चीन में

ही प्रारम्भ हुई। चीनवासियों ने भूकम्प-मापक यन्त्र की खोज की थी। इसके द्वारा भूकम्प आने की सूचना पहले से ही मिल जाती थी। चीन के निवासियों को अन्य देशों की भी जानकारी थी। चीन के निवासियों ने कागज बनाने और मुद्रण प्रणाली का आविष्कार किया। इससे समस्त संसार को विशेष लाभ हुआ। चीन के निवासियों ने ही संसार को रेशम के वस्त्र तथा चीनी मिट्टी के बर्तन बनाने की कला सिखाई। चीनियों में एक उपयोगी यन्त्र कुतुबनुमा के आविष्कार से समुद्री यात्राएँ सुरक्षित हो गईं। चीन के निवासियों को मौसम की भविष्यवाणी करना आता था।

प्रश्न 5—चीनी पंचांग के विषय में आप क्या जानते हैं। प्राचीन नदी घाटी सभ्यताओं के पंचाग एक-दूसरे से किस प्रकार भिन्न थे? (1990)

उत्तर—पंचांग का अर्थ—पंचांग एक विशेष प्रकार का विवरण होता है, जिसके अनुसार दिन, महीना तथा वर्ष की गणना सूर्य एवं चन्द्रमा की गतियों के आधार पर की जाती है।

चीनी पंचांग—चीन का पंचांग सूर्य और चन्द्रमा की गणनाओं के आधार पर बनाया गया था। उनके माह का आधार चन्द्रमा था। प्रत्येक माह में 29 या 30 दिन हुआ करते थे। परन्तु चीनी यह जानते थे कि वर्ष $365\frac{1}{4}$ दिन का होता है। इस प्रकार उन्होंने ज्योतिष का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया था। वे ठीक तरह से बता सकते थे कि चन्द्र-ग्रहण की निश्चित तिथि क्या होगी।

सुमेरियन पंचांग—सुमेरियन 60 संख्या द्वारा गणना किया करते थे। उनकी गणना में 60 सैकण्ड का एक मिनट, 60 मिनट का एक घण्टा हुआ करता था इस सभ्यता के निवासियों ने ही सर्वप्रथम वृत्त को 360 अंशों में विभाजित किया था। उनका पंचांग चन्द्रमा पर आधारित था। वे 29 या 30 दिन का एक माह मानते थे। कुछ दिनों के पश्चात् इसे सूर्य की वार्षिक गति के बराबर बनाने के लिए वे एक माह और अधिक जोड़ दिया करते थे। भारतवर्ष में आजकल यही पद्धति अपनायी जाती है। प्रति तीन वर्ष के पश्चात् एक 'मल मास' आता है। सर्वप्रथम सुमेरिया निवासियों ने नक्षत्रों तथा ग्रहों की नीति की गणना की। उन्हीं लोगों ने यह स्पष्ट किया कि मानव जीवन पर ग्रहो का क्या प्रभाव पड़ता है।

मिस्र की सभ्यता के निवासियों का सौर पंचांग—यहाँ से निवासियों की सबसे महत्त्वपूर्ण उपलब्धि सौर पंचांग का निर्माण है। आधुनिक समय में इसका परिवर्तित रूप हमारे समक्ष दिखाई देता है। इस सभ्यता के निवासियों ने 30-30 दिन के 12 महीनों में वर्ष को विभाजित किया था। प्रत्येक वर्ष के अन्त में 5 दिन और जोड़ दिये जाते थे वह पंचाग भविष्यवाणी कर सकता था।

परीक्षा में पूछे गये विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1—नील नदी की सभ्यता का वर्णन निम्न शीर्षकों के अन्तर्गत कीजिए—

(क) शासन-व्यवस्था
(ख) कृषि तथा उद्योग
(ग) कला
(घ) धार्मिक जीवन।
(ङ) सामाजिक जीवन।

(1984, 85, 87, 88, 90)

उत्तर—मिस्र देश अफ्रीका महाद्वीप के उत्तरी-पूर्वी भाग में एक छोटा किन्तु महत्वपूर्ण देश है जिसमें नील नदी बहती है। इसी नील नदी की घाटी में एक

समुन्नत सभ्यता का जन्म हुआ जिसे नील नदी घाटी की सभ्यता कहते हैं। नील नदी घाटी की सभ्यता का क्षेत्र अफ्रीकी महाद्वीप के उत्तर-पूर्व में मध्यसागर, लाल सागर, सिनाई का मरुस्थल और सहारा का मरुस्थल से घिरा हुआ है। इसी नील नदी की सभ्यता को मिस्र की सभ्यता भी कहते हैं। यह सभ्यता भी अन्य सभ्यताओं की भाँति बहुत पुरानी है।

(क) शासन व्यवस्था—मिस्र की शासन व्यवस्था धर्म पर आधारित थी। सम्राट शासन का प्रधान अधिकारी होता है था जिसे फेराओ कहते थे। सर्वोच्च अधिकारी होने के साथ-साथ सम्राट सर्वोच्च सेनापति, प्रधान पुजारी और सर्वोच्च न्यायाधीश भी था। युद्ध और सन्धि के निर्णय वही करता था। सम्राट समय-समय पर सार्वजनिक कार्यों के निरीक्षण करने के लिए समस्त राज्य की यात्रायें भी करता था।

शासन की सुविधा के लिए समस्त राज्य को अनेक भागों में विभाजित किया गया था। इन राज्यों के पदाधिकारियों की नियुक्ति सम्राट स्वयं करता था। राज्य सरकारों की देखभाल के लिए एक केन्द्रीय सरकार होती थी जिसका प्रधान कार्यालय सम्राट के भवन में स्थित था। केन्द्रीय सरकार के शासकीय शार्यों में सहायता के लिए प्रधानमन्त्री युवराज पुरोहित और राज्य के प्रमुख कर्मचारी होते थे।

(ख) कृषि तथा उद्योग—मिस्र के निवासियों का मुख्य व्यवसाय कृषि और पशु पालन था। समाज के अतिरिक्त ये अनेक प्रकार के फल भी पैदा करते थे। यहाँ के लोग भेड़ों की ऊन और सन के कपड़े भी बुनते थे। ये लोग लकड़ी और धातु से अनेक वस्तुएँ बनाते थे। चाक से मिट्टी के बर्तन बनाना भी एक प्रमुख धन्धा था। ये व्यापार भी करते थे। भारत, सूडान और बेबीलोन से इनके अच्छे व्यापारिक सम्बन्ध थे।

(ग) कला और विज्ञान—मिस्र सभ्यता का सामाजिक जीवन बहुत उन्नत और विकसित था। ये लोग भवन निर्माण कला, मूर्ति कला, और चित्र कला में पारंगत थे। लेखनकला का विकास भी सर्वप्रथम मिस्र में ही हुआ था। इन्होंने पहले चित्रलिपि को विकसित किया और बाद में वर्णमाला को। यहाँ शिक्षा की अच्छी व्यवस्था थी। यहाँ के लोग गणित, विज्ञान और ज्योतिष में बड़े निपुण थे। ये लोग कुशल चिकित्सक भी थे। यहाँ के विज्ञान की सबसे बड़ी उपलब्धि सौर पंचांग का निर्माण था। निःसन्देह प्राचीन मिस्र की उपलब्धियाँ महान थीं।

(घ) धार्मिक जीवन—मिस्र के निवासी अनेक देवी-देवताओं की पूजा करते थे। इनके मुख्य देवता, सूर्य, चन्द्र और प्राकृतिक शक्तियाँ थीं। उपापना के लिए मन्दिर होते थे। मन्दिर की देखरेख के लिए पुरोहित रखे जाते थे। युद्ध के समय सेना का संचालन ये पुरोहित ही करते थे। मिस्रवासियों का पुर्नजन्म में विश्वास था। इसलिये वे शवों को 'ममी' के रूप में सुरक्षित रखते थे।

(ङ) सामाजिक जीवन—मिस्र का समाज सुवव्यवस्थित तथा सुसंगठित था। सम्पूर्ण भाग तीन भागों में विभक्त था। उच्च वर्ग इसमें राष्ट्र के उच्च पदाधिकारी शमिल थे। 2. मध्य वर्ग इसमें व्यापारी, व्यवसायी, कलाकार और सरकारी कर्मचारी शामिल थे। 3. निम्न वर्ग—इसमें दास लोग शामिल थे। जो मजदूरी और मेहनत के कार्य करते थे।

प्रश्न 2—ह्वांगहो और यांगटिसीक्यांग नदियों की घाटी की सभ्यता का वर्णन निम्न शीर्षकों के आधार पर कीजिए—

(क) शासन-व्यवस्था **(ख) सामाजिक जीवन** (1985, 88)

उत्तर—प्राचीन काल में जिन देशों में नदियों की घाटियों में सभ्यताओं का विकास हुआ, उनमें ह्वांगहो और यांगटिसीक्यांग नदियों कीं घाटी की सभ्यता को 'चीन की सभ्यता' कहा जाता है। इस सभ्यया का जन्म ईसा से तीन हजार वर्ष पूर्व हुआ। ह्वांगहो की घाटी चीन की प्रथम सभ्यता का केन्द्र है। इस सभ्यता के विकास से चीन ही नहीं अपितु समूचि मानव-सभ्यता को योग मिला। चीनी सभ्यता का विवरण निम्न शीर्षकों के आधार पर प्रस्तुत किया जा रहा है—

(क) शासन-व्यवस्था—चीन की सभ्यता में शासन का प्रधान सम्राट होता था और उसे धर्म का प्रधान भी माना जाता था। वह राज्य का प्रधान सेनापति, प्रमुख पुरोहित और उच्च न्यायाधीश होता था। वह निरंकुश शासक के समान कार्य करता था और उसके अधिकार असीमित होते थे परन्तु शासन के कार्यों में अपने मन्त्रियों से सलाह लेता था और देश के रीति-रिवाजों तथा जनहित के कार्यों का ध्यान रखता था। राज्य के उच्च पदाधिकारियों की नियुक्ति प्रतियोगिता परीक्षाओं के माध्यम से उसी के द्वारा की जाती थी। प्रतियोगिता परीक्षाओं की व्यवस्था के लिए वह जिन अधिकारियों की नियुक्ति करता था, वे 'मंदारिन' कहलाते थे। सम्राट के अधीन सामन्त होते थे जो अपने-अपने क्षेत्रों में शासन चलाते थे। उनके पास विशाल सेना होती थी जिनमें घुड़सवार, रथ तथा पैदल सैनिक होते थे। सेना, धर्म, न्याय और शिक्षा शासन के प्रमुख विभाग थे।

(ख) सामाजिक जीवन—प्राचीन चीन का समाज चार वर्गों में विभाजित थे :

(i) **उच्च वर्ग**—चीन के समान में शासक का सर्वोच्च स्थान था। इसके बाद कुलीन पुरुषों का स्थान था। इन कुलीन पुरुषों में सामन्त, पुरोहित और विद्वान आदि सम्मिलित थे। राजकीय उच्च पदाधिकारियों की गणना भी इसी वर्ग में की जाती थी। इस वर्ग का समाज से बड़ा सम्मान था।

(ii) **मध्यम वर्ग**—व्यापारी और दस्तकार इस वर्ग में आते थे। इनका जीवन सुखमय था।

(iii) **निम्न वर्ग**– किसान निम्न वर्ग में आते थे। इनका जीवन सामान्य होता था।

(iv) **दास**—नौकर व मजदूर निम्नतम श्रेणी में आते थे। इनका जीवन कष्टमय था।

समाज की सबसे छोटी इकाई परिवार था। यहाँ भी प्राचीन भारत के समान संयुक्त परिवार प्रणाली की प्रथा थी। परिवार का मुखिया पिता होता था। कहीं-कहीं मातृ सत्तात्मक परिवार भी पाये जाते थे जिनमें पिता के साथ माता की भी प्रमुख स्थान होता था। बड़े भाई से बाद छोटा भाई उत्तराधिकारी होता था। उसके अभाव में पिता का ज्येष्ठ पुत्र उत्तराधिकारी होता था। इस प्रकार चीनी समाज में पूर्वजों का बड़ा सम्मान था तथा प्रचीन परम्पराओं का पोषण किया जाता था।

परीक्षा में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1—शासन अधिकारियों के लिए चयन परीक्षा प्रारम्भ करने वाला देश है— (1987)

(क) इंगलैंड (ख) जापान
(ग) चीन, (घ) स्वर्णद्वीप

उत्तर—(ग) चीन।

प्रश्न 2—संसार में बैंकिंग-प्रणाली सबसे पहले शुरू हुई थी— (1987)

(क) मेसोपोटामिया में, (ख) मिस्र में,
(ग) यूनान में, (घ) चीन में।

उत्तर—(घ) चीन में

प्रश्न 3—कन्फ्यूशियस कौन था ? (1987)

(क) यूनानी दार्शनिक, (ख) पारसी धर्म का प्रचारक,
(ग) चीन का धर्म-सुधारक, (घ) रूसी क्रान्ति का नेता।

उत्तर—(ग) चीन का धर्म-सुधारक।

प्रश्न 4—चीन की सभ्यता का विकास हुआ— (1988)

(क) भारत के उत्तर-पश्चिम में, (ख) चीन के पश्चिम में,
(ग) ब्रह्मपुत्र की घाटी में, (घ) ह्वांगहो नदी की घाटी में।

उत्तर—(घ) ह्वांगहो नदी की घाटी में।

प्रश्न 5—चीन की महान दीवार का निर्माण किसने करवाया था ? (1989)

(क) सम्राट शी ह्वांगटी ने, (ख) लाओत्से ने,
(ग) कन्फ्यूशियस ने, (घ) चाऊ वंश के शासकों ने।

उत्तर—(क) सम्राट शी ह्वांगटी ने।

□

3 प्राचीन संसार की कुछ महत्त्वपूर्ण सभ्यताएँ

अति लघुउत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—सात नदियों द्वारा सिंचित प्रदेश का नाम बताइए।

उत्तर—सात नदियों द्वारा सिंचित प्रदेश का नाम सप्तसिन्धु था।

प्रश्न 2—प्राचीन भारत की दो विदुषी महिलाओं के नाम लिखिए। (1986)

उत्तर—प्राचीन भारत की दो विदुषी महिलाओं के नाम गार्गी तथा घोषा था।

प्रश्न 3—चार वेदों के नाम क्या हैं ?

उत्तर—वेद चार हैं—ऋग्वेद, सामवेद, यजर्वेद तथा अथर्ववेद।

प्रश्न 4—आर्यों के मनोरंजन के कोई दो प्रमुख साधन बताइए।

उत्तर—आर्यों के मनोरंजन के दो साधन संगीत, घोड़ों तथा रथों की दौड़ थे।

प्रश्न 5—प्राचीन भारत के दो महाकाव्यों के नाम लिखिए।

उत्तर—प्राचीन भारत के दो महाकाव्य रामायण तथा महाभारत हैं।

प्रश्न 6—प्राचीन भारत में दर्शन की किन शाखाओं का जन्म हुआ ?

उत्तर—प्राचीन भारत में दर्शन की 6 शाखाओं का जन्म हुआ—(i) वेदान्त, (ii) मीमांसा, (iii) सांख्य, (iv) योग, (v) न्याय और (vi) वैशेषिक।

प्रश्न 7—सिकन्दर के आक्रमण के कोई दो प्रभाव अंकित कीजिए।

उत्तर—दोनों देशों के निवासी व्यापार, कला एवं संस्कृति के क्षेत्र में परस्पर प्रभावित हुए और यूनान के माध्यम से यूरोप में भारतीय सभ्यता, दर्शन और संस्कृति का प्रभाव पड़ा।

प्रश्न 8—भारत में सर्वप्रथम किस शासक ने राजनीतिक एकता स्थापित की।

उत्तर—भारत में सर्वप्रथम चन्द्रगुप्त मौर्य ने राजनैतिक एकता स्थापित की।

प्रश्न 9—महाजन पदों में से किन्हीं दो राज्यों का नाम. अंकित कीजिए। जहाँ—

(अ) गणतन्त्र शासन पद्धति प्रचलित थी।

(ब) जहाँ राजतन्त्र शासन प्रणाली प्रचलित थी।

उत्तर—(अ) कपिल वस्तु, मिथिला।

(ब) मगध, कौशल।

प्रश्न 10—शुंग शासक किस धर्म के अनुयायी थे ?

उत्तर—शुंग शासक ब्राह्मण धर्म के अनुयायी थे।

प्रश्न 11—सातवाहन वंश का राज्य कहाँ स्थित था ?
उत्तर—सातवाहन वंश का राज्य कर्नाटक और आंध्र प्रदेश में फैला था।

प्रश्न 12—प्राचीन भारत के दो वैज्ञानिकों के नाम लिखिए।

उत्तर—आर्य भट्ट और वराहमिहिर प्राचीन भारत के दो प्रसिद्ध वैज्ञानिक थे।

प्रश्न 13—कनिष्क किस वंश का शासक था ?
उत्तर—कनिष्क कुषाण वंश का शासक था।

प्रश्न 14—गुप्त साम्राज्य के दो सम्राटों के नाम लिखिए।
उत्तर—समुद्रगुप्त और चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य गुप्त साम्राज्य के दो सम्राट थे।

प्रश्न 15—हूणों का आक्रमण कब और किस समय हुआ ?
उत्तर—हूणों का आक्रमण 486 ई० में स्कंद गुप्त के समय हुआ था।

प्रश्न 16—हर्षवर्द्धन को दक्षिण के किस शक्तिशाली राजा ने हरा दिया।
उत्तर—हर्षवर्द्धन को पुलकेशिन द्वितीय ने परास्त किया था।

परीक्षा में पूछे गये अति लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1—किसी एक उपनिषद् का नाम लिखिए। (1984)
उत्तर—'मुण्डक' एक प्रसिद्ध उपनिषद् है।

प्रश्न 2—महाभारत के किस अंश में वेदों और उपनिषदों का सार निहित हैं ? (1985)

उत्तर—महाभारत के दसवें पर्व (शान्ति-पर्व) में वेदों और उपनिषदों का सार निहित है।

प्रश्न 3—वेदों में सबसे प्राचीन वेद कौन-सा है ? (1986)
उत्तर—ऋग्वेद सबसे प्राचीन वेद है।

प्रश्न 4—सोमनाथ का मन्दिर कहाँ स्थित है ? इस पर प्रथम बार आक्रमण किसने किया ? (1987)

उत्तर—सोमनाथ का मन्दिर गुजरात में स्थित है। इस पर प्रथम बार महमूद गजनवी ने आक्रमण किया।

प्रश्न 5—'अर्थशास्त्र' का लेखक कौन था ? (1988)
उत्तर—'अर्थशास्त्र' का लेखक कौटिल्य (चाणक्य) था।

प्रश्न 6—'महाभारत' का रचयिता कौन था ? (1988)
उत्तर—'महाभारत' का रचयिता महर्षि व्यास थे।

प्रश्न 7—'इण्डिका' का लेखक कौन था ? (1987, 91)
उत्तर—'इण्डिका' का लेखक 'मैगस्थनीज' था।

प्रश्न 8—गुप्त साम्राज्य का सबसे शक्तिशाली शासक कौन था ? (1990)
उत्तर—गुप्त साम्राज्य का सबसे शक्तिशाली शासक चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य था।

प्रश्न 9—चन्द्रगुप्त मौर्य का प्रधानमन्त्री कौन था ? (1990)
उत्तर—चन्द्रगुप्त मौर्य का प्रधानमन्त्री चाणक्य था।

अन्य महत्वपूर्ण अति लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 10—'रामायण' महाकाव्य के रचयिता का नाम लिखिए।

उत्तर—'रामायण' महाकाव्य के रचयिता वाल्मीकि थे।

प्रश्न 11—चन्द्रगुप्त मौर्य का किस विदेशी शासक से संघर्ष हुआ।

उत्तर—चन्द्रगुप्त मौर्य का यूनानी शासक सैल्यूकस से संघर्ष हुआ।

प्रश्न 12—मौर्य साम्राज्य की स्थापना किसने की थी? (1991)

उत्तर—मौर्य साम्राज्य की स्थापना चन्द्रगुप्त मौर्य ने की थी।

प्रश्न 13—मौर्य साम्राज्य के बाद किस वंश ने भारत पर राज्य किया तथा उसका संस्थापक कौन था?

उत्तर—मौर्य साम्राज्य के बाद शुंग वंश ने भारत पर राज्य किया तथा उसका संस्थापक पुष्यमित्र शुंग था।

प्रश्न 14—गुप्त काल भारत के इतिहास में स्वर्णयुग के नाम से क्यों विख्यात है?

उत्तर—गुप्त काल में भारत में कला, साहित्य, संगीत और वाणिज्य की अत्यधिक उन्नति हुई। इसलिए यह इतिहास में स्वर्णयुग के नाम से विख्यात है?

प्रश्न 15—किस युद्ध के बाद अशोक ने बौद्ध धर्म अपनाया?

उत्तर—कलिंग के युद्ध के बाद अशोक ने बौद्ध धर्म अपनाया।

लघुउत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—भारतीय समाज किन-किन वर्गों में विभाजित था?

उत्तर—भारतीय समाज निम्न चार वर्गों में विभाजित था—

(1) **ब्राह्मण**—भारतीय समाज में ब्राह्मणों को सर्वोपरि स्थान प्राप्त था। मनुस्मृति में ब्राह्मणों का कर्त्तव्य वेदों का अध्ययन करना, और अध्ययन कराना, यज्ञ करना तथा यज्ञ कराना, दान देना, दान लेना तथा तप करना बताया गया था।

(2) **क्षत्रिय**—मनुस्मृति में, क्षत्रियों का कर्त्तव्य युद्ध करना, प्रजा की रक्षा करना, दान देना तथा यज्ञ करना बताया गया है। इस प्रकार क्षत्रियों का मुख्य धर्म बाहरी और आन्तरिक संकटों से समाज की रक्षा करना था।

(3) **वैश्य**—मनुस्मृति के अनुसार वैश्यों का प्रमुख कर्त्तव्य कृषि करना, व्यापार करना तथा ब्याज पर धन देना है। महाभारत में वैश्यों का कर्त्तव्य दान देना, यज्ञ करना, अध्ययन करना तथा ईमानदारी से धन एकत्रित करना बताया गया है।

(4) **शूद्रों के कर्त्तव्य**—वर्ण व्यवस्था में शूद्रों की सबसे निम्न स्थिति मानी गयी है। मनुस्मृति में शूद्रों का कर्त्तव्य तीनों वर्णों—ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य की सेवा करना बताया गया है।

प्रश्न 2—वैदिक धर्म की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर— **वैदिक धर्म की प्रमुख विशेषताएँ**

(i) **वेदों की प्राचीनता**—वेद भारतीय आर्यों के सबसे प्राचीन ग्रन्थ हैं। वेद का अर्थ है—ज्ञान। वेदों की रचना भारतवर्ष में हुई थी। अनेक शताब्दियों में रचे हुए साहित्य का एक सामूहिक नाम है। पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार, ई० पू० 800 के लगभग तक समस्त वैदिक साहित्य की रचना हो चुकी थी।

(ii) **वैदिक साहित्य**—वेद चार हैं—(1) ऋग्वेद, (2) यजुर्वेद, (3) सामवेद और (4) अथर्ववेद। प्रत्येक वेद के तीन भाग हैं—(i) **संहिता**—इनमें वैदिक ऋचाओं का संकलन है। (ii) **ब्राह्मण**—इसमें कर्मकाण्ड की विधियों तथा नियमों का संकलन है। इसमें ऋचाओं की टीका की गयी है। (iii) **आरण्डय तथा उपनिषद्**—अरण्य शब्द का अर्थ वन है। मान्यता के अनुसार इनको वन में ही पढ़ा जा सकता है। उपनिषदों की भाषा सरल तथा स्पष्ट हैं। समस्त संसार में इनको सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है, ऐसा विश्वास किया जाता है कि वैदिक ऋचाओं की रचना वशिष्ठ, विश्वामित्र, जमदग्नि, अमि तथा अगस्त आदि ऋषियों ने किया है। हिन्दुओं में यह धारणा है कि वेद ईश्वरोक्त हैं।

प्रश्न 2—पाटलिपुत्र नगर-शासन की क्या व्यवस्था थी ?

उत्तर—पाटलिपुत्र नगर शासन की व्यवस्था—पाटलिपुत्र नगर के लिए 30 सदस्यों की एक सभा थी जो आजकल की नगरपालिका के समान थी। यह संस्था 6 उप समितियों में बँटी थी। प्रत्येक समिति में पाँच सदस्य होते थे। इन समितियों के प्रमुख कार्यों में कला-कौशल की देख-रेख विदेशियों की देख-भाल, जनगणना, वाणिज्य एवं व्यापार की सुव्यवस्था, वस्तुओं का क्रय-विक्रय, चुंगी की वसूली आदि सम्मिलित थे।

प्रश्न 4—गण राज्यों की शासन व्यवस्था का संक्षिप्त उल्लेख कीजिए।

उत्तर—गण राज्यों की शासन व्यवस्था—गण राज्यों में प्रजातन्त्र शासन प्रणाली प्रचलित थी। उस समय राज्य में एक नायक का पद होता था। प्रजा नायक का चयन किया करती थी। वह गणराज्य का प्रधान होता था। सभा शासन सम्बन्धी प्रश्नों पर विचार-विमर्श किया करती थी। इसे संस्थागार कहा जाता था। जिन विषयों पर सभा में विचार-विमर्श किया जाता था, उस पर प्रत्येक सदस्य अपनी राय प्रकट करता था। वे सदस्य मौन रहते थे, जो प्रस्ताव के पक्ष में होते थे। केवल विपक्षी सदस्य भाषण दिया करते थे। मतदान के लिए 'शलाका' का प्रयोग किया जाता था। संस्थागार राजा, सेनापति तथा अन्य पदाधिकारियों की नियुक्ति करती थी।

प्रश्न 5—कनिष्क के साम्राज्य का विस्तार क्षेत्र बताइए।

उत्तर—कनिष्क के साम्राज्य का विस्तार-क्षेत्र—कनिष्क का राज्य भारत के वाहर अफगानिस्तान, बैक्ट्रिया, यारकन्द तथा खोतान तक विस्तृत था। भारत में उसके साम्राज्य का विस्तार पाटलिपुत्र तक था। कुषाणों की सत्ता पंजाब, सिन्ध, काश्मीर तथा उत्तर प्रदेश के कुछ क्षेत्रों तक फैली हुई थी।

प्रश्न 6—फाह्यान कौन था ? उसने भारतीय जन-जीवन के विषय में क्या लिखा है ?

उत्तर—फाह्यान एक चीनी यात्री था। उसने पाटलिपुत्र के निवासियों की बड़ी प्रशंसा लिखी है। उसने लिखा है कि पाटलिपुत्र के लोग सज्जन हैं और दान, दया और धर्माचरण में एक-दूसरे की होड़ करते हैं। वैश्य लोगों ने दानशालाएँ खोल रखी हैं जहाँ दान दिया जाता है।

प्रश्न 7—दक्षिणी भारत के प्रमुख राज्यों के नाम बताइए।

उत्तर—दक्षिण भारत के प्रमुख राज्यों नाम पांड्य, चोल तथा चेर था।

प्रश्न 8—प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता का प्रचार किन देशों में हुआ ?

उत्तर—प्राचीन भारतीय संस्कृति और सभ्यता का प्रचार मध्य एशिया और दक्षिणी-पूर्वी एशिया के अनेक देशों में हुआ जिनमें फुनान (हिन्द चीन), कम्बोज (कम्बोडिया) चम्पा (स्याम), यव द्वीप (जावा), वोर्नियो तथा स्वर्ण-भूमि (वर्मा) आदि प्रमुख हैं। तिब्बत और चीन देशों में भी भारतीय धर्म और संस्कृति का भी व्यापक प्रसार हुआ। इन देशों में शैव एवं वैष्णव धर्म के अतिरिक्त बौद्ध धर्म का भी व्यापक प्रचार हुआ। कम्बोडिया में भारतीय स्थापत्य कला अब भी विद्यमान है। चीन व लंका में बौद्ध धर्म का प्रचलन आज भी है।

प्रश्न 9—अशोक का धर्म क्या था ? उसने कौन-सा युद्ध किया ?

उत्तर—अशोक बौद्ध धर्म का अनुयायी था। उसने कलिंग का प्रसिद्ध युद्ध किया।

परीक्षा में पूछे गये लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1—मेगस्थनीज कौन था ? (1988, 90, 91)

उत्तर—मेगस्थनीज एक यूनानी राजदूत था, जिसे यूनान के शासक सेल्यूकस ने चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में भेजा था। उसने भारत में रहकर 'इण्डिका' नामक एक पुस्तक लिखी जिसमें उसने चन्द्रगुप्त मौर्य की शासन-व्यवस्था का आँखों देखा विवरण तथा भारत के तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक जीवन का विस्तारपूर्वक वर्णन किया है।

अन्य महत्वपूर्ण लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 2—अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए क्या-क्या कार्य किये ?

उत्तर—कलिंग युद्ध में नरसंहार और रक्तपात से अत्यन्त दु:खी होकर उसके प्रायश्चित्त स्वरूप अशोक ने बौद्ध धर्म को न केवल अपनाया, अपितु दूर-दूर के देशों में प्रचार कराया। उसने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए निम्न कार्य किये—

1. अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए देश के कोने-कोने में शिला लेखों और स्तम्भों पर बौद्ध धर्म की शिक्षाओं को खुदवाकर लगवाया।

2. अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए स्तूपों और मठों का निर्माण कराया।

3. अशोक ने स्वयं बौद्ध धर्म को अपनाया और उसके उपदेशों का जनता में प्रचार किया।

4. अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए धर्म महापात्रों को नियुक्त किया।

5. अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए अपने पुत्र, पुत्री तथा धर्म प्रचारकों को सुदूरवर्ती देशों में भेजा।

प्रश्न 3—श्रीलंका में बौद्ध धर्म का प्रचार किस राजा ने किया और किस प्रकार ?

उत्तर—श्री लंका में बौद्ध धर्म का प्रचार अशोक सम्राट ने किया। उसने श्री लंका में बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए अपने पुत्र महेन्द्र और अपनी पुत्री संघमित्रा को भेजा। इसके अतिरिक्त उसने श्री लंका में बौद्ध मठों और स्तूपों का भी निर्माण कराया।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—प्राचीन भारतीयों के सामाजिक जीवन की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर—प्राचीन भारतीयों के सामाजिक जीवन की प्रमुख विशेषताएँ—

प्राचीन भारतीयों के सामाजिक जीवन की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं—

(1) **विवाह**—उस समय समाज का आधार परिवार था। परिवार पितृ मूलक हुआ करते थे। उस समय एक-विवाह की प्रथा प्रचलित थी। बहुविवाह की प्रथा न थी। पुरुष अथवा स्त्री को यह स्वतन्त्रता थी वे अपनी इच्छा से विवाह कर सकें अर्थात् अपने जीवन-साथी का चयन कर सकें। विवाह में 'वर्ण' का कोई बन्धन न था। पति घर का स्वामी होता था तथा उसकी स्त्री उसकी जीवनसंगिनी हुआ करती थी। सदाचार पर विशेष बल दिया जाता था। उस समय बाल-विवाह की प्रथा न थी। पुत्रियाँ अपने पिता के संरक्षण में रहती थीं। पिता की मृत्यु के पश्चात् भाई उनकी देखभाल करते थे। उस समय विवाह का उच्च आदर्श था। दहेज प्रथा साधारणतया प्रचलित थी।

(2) **भोजन**—आर्यों का मुख्य भोजन दूध था। दूध से मक्खन तथा दही बनाकर खाया जाता था। 'क्षीर पाक मोदक' का भी उल्लेख मिलता है। उस समय जौ की रोटियाँ घी से चुपड़कर खाई जाती थीं। इस सभ्यता के लोग माँसाहारी भी थे। परन्तु केवल उन पशुओं का माँस खाया जाता था जिनको वे बलिदान किया करते थे। मछली का प्रयोग नहीं किया जाता था। इस सभ्यता में गाय को विशेष सम्मान प्राप्त था। इसी कारण इसका वध नहीं किया जाता था। उस समय के लोग 'सोमरस' का भी प्रयोग करते थे। परन्तु सुरा को अच्छी वस्तु नहीं माना जाता था। उस समय खाद्य पदार्थों का बाहुल्य था।

(3) **स्त्रियों की स्थिति**—उस समय स्त्रियों को परिवार में विशेष सम्मान दिया जाता था। स्त्रियों को इधर-उधर जाने की स्वतन्त्रता थी। वे यज्ञ में भाग लिया करती थीं। उस समय पर्दा-प्रथा न थी। बालिकाओं को उच्च शिक्षा दी जाती थी। इसी कारण कुछ स्त्रियों ने ऋषियों का पद प्राप्त किया था। स्त्रियाँ अपने पति की सेवा करती थीं। सती प्रथा भी प्रचलित थी।

(4) **आर्थिक दशा**—उस समय की आर्थिक दशा अच्छी थी। लोग पशुपालन करते थे। बैल हलों में जोते जाते थे तथा वे बैलगाड़ी भी खींचते थे। इस समय गाय को विशेष सम्मान मिला हुआ था। जिस व्यक्ति के पास जितनी अधिक गायें होती थीं, वह उतना ही अधिक धनी माना जाता था। उस समय धन की गणना पशुओं से होती थी। ऋग्वैदिक काल में कृषि का विशेष महत्त्व था।

(5) **व्यापार**—इस काल की सभ्यता ग्राम-सभ्यता है। परन्तु ग्राम आत्म-निर्भर हुआ करते थे। उनको बाहर से अपनी आवश्यकता की कोई भी वस्तु नहीं मँगानी पड़ती थी। उस समय सिक्कों का प्रचलन था तथा विनिमय प्रथा प्रचलित थी। उस समय के लोगों को कपास का ज्ञान न था। इसी कारण वे ऊन का प्रयोग किया करते थे। उस समय के लोगों की आवश्यकताएँ सीमित थीं।

(6) **धर्म तथा दर्शन**—इस समय का धर्म बहुदेवतावाद था। उस समय के लोगों ने अपने देवताओं की कल्पना मनुष्य के आकार में की थी। इन्हीं देवताओं के

आवाहन में ऋचाओं की रचना की गई है। ऋग्वेद में देवताओं की संख्या 30 दी हुई है। ऋग्वेद में देवियों का भी स्थान है। सबसे प्रमुख देवी उषा थी। उषा का आवाहन लगभग 20 छन्दों में हुआ है। इन्द्र का समस्त देवताओं में उच्च स्थान है। इसे वर्षा का देवता कहा जाता है। वैदिक धर्म अत्यन्त सरल था।

प्रश्न 2—मौर्यकालीन शासन प्रणाली का उल्लेख कीजिए। **(1989, 91)**

उत्तर—मौर्यकालीन शासन प्रणाली—मौर्यों के समय भारत का शासन एक राजा के द्वारा चलाया जाता था। प्रान्तों में कुछ राज्यपाल होते थे। परन्तु उनका चयन भी राजकुमारों में से ही किया जाता था। राज्यपाल की सहायता के लिए अनेक अधिकारी हुआ करते थे। राज्य का उद्देश्य शासन चलाना तथा समाज कल्याण का कार्य करना हुआ करता था। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में राजा का आदर्श इस प्रकार लिखा है—"**प्रजा के सुख में राजा का सुख और प्रजा के कल्याण में उसका कल्याण निहित है।**" राजा प्रजा के कल्याण पर विशेष ध्यान देता था।

कुषाण राजा अपने को "राजाधिराज" कहते थे। सातवाहन राज्य में मौर्यों की केन्द्र प्रधान शासन पद्धति पूर्णरूप से सुव्यवस्थित कही जा सकती है।

साम्राज्यों के उत्थान और पतन से प्रशासनिक व्यवस्था में परिवर्तन आता रहा। परन्तु ग्रामों की शासन व्यवस्था लगभग वैसी ही रही। ग्रामों का विकास स्वायत इकाई के रूप में हुआ। ग्रामों में शासन व्यवस्था बनाये रखने के लिए ग्राम का मुखिया उत्तरदायी था। मुखिया स्थानीय झगड़े निबटाता था तथा ग्रामों में शान्ति बनाये रखता था।

प्रश्न 3—गुप्त काल से सम्बन्धित निम्नलिखित शीर्षकों पर प्रकाश डालिए।
(अ) धार्मिक विश्वास, (ब) आर्थिक जीवन। **(1986)**

उत्तर—(अ) गुप्तकाल के लोगों के धार्मिक विश्वास—गुप्त काल में भारतीय समाज के लोगों का वेदों में फिर से विश्वास बढ़ने लगा था। यज्ञ तथा पूजा-पाठ का भी महत्त्व बढ़ गया था। वैदिक धर्म का भी पुनरुत्थान हुआ। ब्राह्मणों में फिर से आस्था बढ़ गई तथा उनका आदर होने लगा। अब विष्णु तथा शिव की पूजा होने लगी। गुप्त सम्राटों ने वैष्णव धर्म को राज धर्म घोषित किया था। परन्तु वे अन्य धर्मों का भी आदर करते थे। वैष्णव धर्म के साथ शैव, शाक्त, बौद्ध तथा जैन आदि धर्मों का भी विकास हुआ।

(ब) गुप्तकाल के लोगों का आर्थिक जीवन—700 ई० पू० के लगभग नगरों का बसना आरम्भ हुआ। ये नगर उद्योगों के केन्द्रों के आस-पास बसे थे। उस समय के मुख्य नगर तक्षशिला, काशी, कौशांबी, चंपा, वैशाली तथा भृगुकच्छ थे। जब भारत पर विदेशियों ने आक्रमण किया तो भारत का विदेशों से व्यापार आरम्भ हुआ। इसी समय सूती कपड़ा, लोहे का काम तथा हाथी दाँत के काम का विकास हुआ। जो व्यक्ति एक विशेष प्रकार का कार्य करते थे, उन्होंने अपनी श्रेणियाँ बना ली थीं। कुछ समय के पश्चात् ये श्रेणियाँ ही उपजातियों में परिवर्तित हो गईं।

गुप्त साम्राज्य का जब पतन हो गया तो रोम के साथ व्यापार कम हो गया। परन्तु दक्षिण पूर्व एशिया के देशों और अफ्रीका के पूर्वी तट से व्यापार बढ़ गया। इसी समय इस भावना ने जोर पकड़ा कि समुद्र द्वारा विदेश यात्रा करने से

मनुष्य अपवित्र हो जाता है। अतः सम्भवतः इसी कारण विदेशी व्यापार को धक्का लगा।

प्रश्न 4—विज्ञान के क्षेत्र में प्राचीन भारतीयों की उपलब्धियों का उल्लेख कीजिए। (1986)

उत्तर—विज्ञान के क्षेत्र में प्राचीन भारतीयों की उपलब्धियाँ—वैदिक साहित्य में हमें गणित का प्रारम्भिक उल्लेख मिलता है। वैदिक काल में वेदियों को बनाने की आवश्यकता हुई। इस प्रकार रेखागणित की आधारशिला रखी गई। परन्तु गणित का विकास धीरे-धीरे हुआ। अंकों की दशमलव प्रणाली, उनका स्थानीय मान और शून्य का ज्ञान भारतीयों की ही देन है। परन्तु शून्य का नामकरण भारतीयों ने नहीं किया था। गुप्त काल से शताब्दियों पूर्व भारतीय गणित की दो शाखाएँ—पट्टि गणित (अंकगणित) और बीजगणित थीं। शून्य को उस समय 'विन्दु' कहा जाता है। प्राचीन भारत में ज्योतिष का विकास किया गया था। प्राचीन भारत के दो ज्योतिषशास्त्री थे। इनका नाम था—(1) आर्यभट्ट और (2) वराहमिहिर। ज्योतिष के अध्ययन में त्रिकोणमिति का उपयोग किया गया।

प्राचीन भारत में चिकित्सा विज्ञान की भी पर्याप्त उन्नति हुई। 'चरक' इस काल के प्रसिद्ध चिकित्साशास्त्री थे, इस काल के चिकित्साशास्त्री शल्य क्रिया से भी परिचित थे, प्राचीन भारतीय धातु विज्ञान के विशेष ज्ञाता थे। महरौली में बना लोह स्तम्भ इस बात का प्रमाण है। इस स्तम्भ पर इतने वर्ष वीत जाने पर भी जंग नहीं लगी है।

परीक्षा में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1—निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा कथन महरौली के स्तम्भ की विशेषता प्रकट करता है। सही कथन को उत्तर पुस्तिका में लिखिए— (1984)

(i) वह पत्थर का बना है। (ii) वह लोहे का बना है।
(iii) उस पर रंगीन चित्र बने हैं। (iv) उस पर पेड़-पौधों के चित्र खुदे हैं।

उत्तर—(ii) वह लोहे का बना है।

प्रश्न 2—सबसे प्राचीन वेद है— (1985)

(i) सामवेद (ii) यजुर्वेद
(iii) ऋग्वेद (vi) अथर्ववेद।

उत्तर—(iii) ऋग्वेद।

प्रश्न 3—निम्नलिखित में से चन्द्रगुप्त द्वितीय किस वंश का शासक था— (1989)

(i) नन्द वंश (ii) शुंग वंश
(iii) मौर्य वंश (vi) गुप्त वंश।

उत्तर—(iv) गुप्त वंश।

प्रश्न 4—रामायण के लेखक थे— (1990)

अथवा

रामायण के रचयिता कौन थे? (1991)

(i) कालिदास (ii) तुलसीदास
(iii) वाल्मीकि (iv) बाण।

उत्तर—(iii) वाल्मीकि।

यूनान तथा रोम की सभ्यताएँ

अति लघुउत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—होमर के दो महाकाव्यों के नाम अंकित कीजिए। (1987)

उत्तर—होमर ने संसार प्रसिद्ध दो काव्य ईलियड और ओडिसी की रचना की थी।

प्रश्न 2—यूनान के किन्हीं दो प्रमुख देवताओं के नाम लिखिए।

उत्तर—यूनान के दो प्रमुख देवता जियस तथा अपोलो थे।

प्रश्न 3—एथेंस में ज्यूरी के सदस्यों का चुनाव किस प्रकार होता था? (1985)

उत्तर—ज्यूरी के सदस्य सभी वर्गों के नागरिकों में से लाटरी द्वारा चुने जाते थे।

प्रश्न 4—मेराथन का युद्ध किन-किन के बीच हुआ था?

उत्तर—मेराथन का युद्ध ईरान के शासक द्वारा तथा यूनानियों के मध्य हुआ था।

प्रश्न 5—एक्रोपोलिस किसे कहते हैं? (1986, 88)

उत्तर—लगभग 800 ई० पू० में यूनान के ग्राम समूह संगठित होकर नगर राज्य बन गये। प्रत्येक नगर एक उच्च स्थान या पहाड़ी पर बना होता था जिसे एक्रोपोलिस कहते थे। इस गढ़ के चारों ओर नगर बसा होता था।

प्रश्न 6—ओलम्पिक खेलों की परम्परा कहाँ से आरम्भ हुई? (1985, 89)

उत्तर—ओलम्पिक खेलों की परम्परा यूनान के एथेंस नगर से ओलम्पिया स्थान से आरम्भ हुई।

प्रश्न 7—रोम के दो कवियों के नाम बताइए। (1988)

उत्तर—रोम के दो महान कवि होरेस तथा वर्जिस थे।

प्रश्न 8—रिपब्लिक का लेखक कौन था? (1990)

उत्तर—रिपब्लिक का लेखक महान दार्शनिक प्लेटो था।

प्रश्न 9—रोम के दो देवताओं के नाम लिखिए। (1985)

उत्तर—रोम के दो देवता ज्यूपिटर तथा मिनर्वा थे।

प्रश्न 10—लिवि ने किस विषय से सम्बन्धित ग्रन्थ की रचना की?

उत्तर—लिपि रोम का एक महान् इतिहासकार था। उसका ग्रन्थ रोम के इतिहास का भंडार है। यह ग्रन्थ अपनी कलात्मक शैली के कारण बहुत लोकप्रिय था।

परीक्षा में पूछे गये अति लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1—सुकरात कहाँ का निवासी था? (1984)

उत्तर—सुकरात यूनान देश का निवासी था।

प्रश्न 2—यूनान के प्रसिद्ध दो दार्शनिकों के नाम लिखिए। (1985, 89)

उत्तर—यूनान के प्रसिद्ध दो दार्शनिकों के नाम—1. सुकरात 2. प्लेटो।

प्रश्न 3—खेलों के क्षेत्रों में यूनानियों की सबसे बड़ी देन क्या है? ये खेल कब प्रारम्भ हुए। (1985)

उत्तर—खेलों के क्षेत्रों में यूनानियों की सबसे बड़ी देन ओलम्पिक खेल हैं ? ये खेल 776 ई० पू० में प्रारम्भ हुए।

अन्य महत्वपूर्ण अति लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 4—यूनान के दो प्रमुख राज्य कौन-कौन से थे ?

उत्तर—यूनान के दो प्रमुख राज्य स्पार्टा और एथेंस थे।

प्रश्न 5—एथेंस और ईरान में कौन-सा युद्ध हुआ और कब ?

उत्तर—एथेंस और ईरान के बीच मेराथन का युद्ध हुआ और यह युद्ध 490 ई० पू० में हुआ।

प्रश्न 6—जूलियस सीजर कौन था ?

उत्तर—जूलियस सीजर रोम का एक प्रसिद्ध सेनानायक था।

प्रश्न 7—रोम की एक प्रमुख देवी का नाम लिखिए।

उत्तर—रोम की एक प्रमुख देवी 'जूनो' थी।

लघुउत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—स्पार्टा तथा ट्राय के मध्य युद्ध का प्रमुख कारण क्या था ?

उत्तर—युद्ध का प्रमुख कारण—एशिया माइनर के पश्चिमी छोर पर ट्राय नामक एक नगर था। वहाँ के राजकुमार पेरिस ने स्पार्टा की महारानी हेलन का अपहरण कर लिया था। इसके परिणामस्वरूप स्पार्टा तथा ट्राय का युद्ध हुआ। युद्ध में ट्राय नगर की घेरा बन्दी की गई तथा उसे नष्ट कर दिया गया।

प्रश्न 2—सोलन के प्रमुख सुधारों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—सोलन के प्रमुख सुधार—7वीं शताब्दी ईसा पूर्व में एथेंस राज्य के लोगों की दशा अत्यन्त शोचनीय थी। स्वतन्त्र किसानों की भूमि पर धनिकों का अधिकार था। उनकी दशा में सुधार लाने के लिए सभी वर्ग के व्यक्तियों ने सोलन नामक व्यक्ति को सुधार के लिए चुना सोलन ने शासन, कानून, न्याय तथा व्यापार के क्षेत्रों में अनेक सुधार किये।

प्रश्न 3—सुकरात कौन था ? उसे विषपान के लिए विवश क्यों किया गया ? (1987)

उत्तर—सुकरात—यूनान के सर्वाधिक प्रसिद्ध दार्शनिक, सुकरात, प्लेटो और अरस्तु को कौन नहीं जानता। सुकरात (Socrates) का विश्वास था कि ज्ञान (Knowledge) ही सुख और आचरण का मार्ग दिखाता है। मनुष्य की अज्ञानता (Ignorance) से अनेक बुराइयाँ उत्पन्न होती हैं। उसने उस समय के प्रचलित अन्ध विश्वासों की कटु आलोचना की। इसी कारण उसे युवकों का पथ भ्रष्ट करने वाला बताया गया है ? उसको इसी अपराध के दण्ड स्वरूप जहर का प्याला (Cup of Hemlock) पीना पड़ा। उस पर मुकदमा चलाया गया। विद्वान न्यायाधीश के समक्ष उसने जो साहसपूर्ण शब्द कहे, उनको आज भी याद किया जाता है। सुकरात को विषपान करने को विवश किया गया। इसका कारण यह था कि उस समय जिन व्यक्तियों के हाथ में राजसत्ता थी, वे सुकरात के विचारों से सहमत नहीं थे।

प्रश्न 4—यूनानियों के धार्मिक विश्वास क्या थे ? (1986)

उत्तर—यूनानियों के धार्मिक विश्वास—प्रारम्भिक यूनानी अनेक देवताओं

में विश्वास करते थे। उनके अनेक देवता थे। इन लोगों ने अपने देवताओं की कल्पना मनुष्य के रूप में की थी। देवता मनुष्यों से अधिक शक्तिशाली समझे जाते थे। उनको अमर माना जाता था। 'जियस' को आकाश का देवता माना जाता था। वे उसी को बिजली चमकने का कारण मानते थे। 'पोसीदन' समुद्र का देवता था। जहाजों के डूबने का कारण उसी को माना जाता था। वह समुद्र में तूफान उत्पन्न किया करता था। शराब के देवता की भी मान्यता थी। शराब के देवता को 'डायोनीसस' कहा जाता था। 'अपोलो' को सूर्य का देवता माना जाता था। ऐसा विश्वास किया जाता था कि, उसमें भविष्यवाणी करने की क्षमता है। 'एथीना' को विजय और ज्ञान की देवी माना जाता था। यूनानियों का विश्वास था कि वह कलाओं का संरक्षण करती है।

यूनानियों का विश्वास था कि उनके देवी-देवता ओलिम्पस पहाड़ पर रहते हैं। यूनान के उत्तरी भाग में यह पहाड़ स्थित है। भारतवासियों की तरह यूनानी अपने देवताओं की आराधना इस कारण नहीं करते थे कि वे उनको स्वर्ग व नर्क में स्थान प्रदान करते हैं। वे देवताओं को इस कारण प्रसन्न रखना चाहते थे जिससे उनकी फसल अच्छी हो, अर्थात् अधिक उपज हो। उनके सभी मनोरथ पूर्ण हों। उनको अपने कार्यों में सफलता मिले। यूनानवासियों के पाप या पुण्य से उनके देवताओं को कोई सम्बन्ध न था। उनके यहाँ पुरोहितों (Priests) की प्रथा न थी। परिवार का स्वामी यज्ञ-सम्पन्न किया करता था। कभी-कभी राजा समस्त समुदाय की ओर से यज्ञ किया करता था।

प्रश्न 5—रोम के इतिहास में आगस्टस का नाम क्यों प्रसिद्ध है ?

उत्तर—आगस्टस—सीजर की मृत्यु के पश्चात् आगस्टस रोम शासक बना। उसने साम्राज्य में शान्ति स्थापित की। उसके समय में रोम में अनेक सुधार हुए तथा राज्य की अधिक उन्नति हुई। इसलिए रोम के इतिहास में आगस्टन का नाम प्रसिद्ध है।

प्रश्न 6—साहित्य के क्षेत्र में रोमवासियों की उपलब्धियों का उल्लेख कीजिए। (1988)

उत्तर—साहित्य के क्षेत्र में रोमवासियों की उपलब्धियाँ—रोम के निवासियों ने अपनी वर्णमाला का विकास यूनान के निवासियों की वर्णमाला के आधार पर किया था। पश्चिमी यूरोप में लगभग सभी शिक्षित व्यक्ति लेटिन भाषा का प्रयोग करते थे। आधुनिक समय में विज्ञान में अनेक शब्द लेटिन के ही हैं। इस सभ्यता में साहित्य का पर्याप्त विकास हुआ। कविता के क्षेत्र में भी विशेष प्रगति हुई। वर्जिल यहाँ का एक महान् कवि था। उसने 'इनीड' नाम की रचना की जो आजकल भी विशेष लोकप्रिय है। इनीड की शैली 'इलियड' और 'ओडिसी' जैसी है। रोम का सबसे प्रसिद्ध इतिहासकार टैसिटस था। उसकी दो पुस्तकें 'एनल्स' और 'हिस्ट्रीज' विशेष प्रसिद्ध हैं। इन पुस्तकों में उसने अपने समय की अराजकता तथा भ्रष्टाचार का विशद वर्णन किया है।

प्रश्न 7—कोलोसियम की क्या विशेषताएँ थीं ? (1986)

उत्तर—कोलोसियम—रोमवासी मनोविनोद के आनन्द लेते थे। उनके यहाँ खेल-तमासों के लिए बड़ी-बड़ी रंगशालाएँ थीं। कोलोसियम इसी प्रकार की एक विशाल रंगशाला थी। यह गोलाकार मण्डप के आकार में बनी थी जिसमें लगभग

45 हजार दर्शकों को बैठने की व्यवस्था थी। यह रोमन भवन निर्माण कला का सुन्दर उदाहरण था।

परीक्षा में पूछे गये लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1—यूनान के दो दार्शनिकों का परिचय दीजिए। (1985, 89)

उत्तर—यूनान के दो दार्शनिकों में प्लेटो और अरस्तु का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है जिनका संक्षिप्त परिचय निम्न प्रकार है—

1. **प्लेटो**—प्लेटो यूनान के प्रसिद्ध दार्शनिक सुकरात का शिष्य था। इसकी गणना यूनान के महान दार्शनिकों में की जाती है। यह पाश्चात्य राजनीतिक दर्शन का जनक माना जाता है। उसने 'दि रिपब्लिक' और 'दि लाज' जैसे उच्चकोटि के ग्रन्थों की रचना की जो आज भी अपने विषय के मौलिक ग्रन्थ माने जाते हैं। उसने न्याय, साम्यवाद, तथा अनेक राजनीतिक विषयों अपने प्रभावशाली विचार प्रतिपादित किये। उसने आदर्श राज्य की कल्पना की और आदर्श राजा का सिद्धान्त प्रस्तुत किया।

2. **अरस्तु**—अरस्तु यूनान के महान दार्शनिक प्लेटो का शिष्य था। प्लेटो की भाँति अरस्तु की गणना यूनान के महान और उच्चकोटि के दार्शनिकों में की जाती है। वह दर्शनशास्त्र और राजनीतिशास्त्र का प्रकाण्ड विद्वान था। उसने दर्शन-शास्त्र, राजनीतिशास्त्र, आचारशास्त्र और विज्ञान पर अनेक उच्चकोटि के ग्रन्थों की रचना की। उसे **'राजनीति का पिता'** माना जाता है। उसने 'पॉलिटिक्स' नाम के ग्रन्थ की रचना की जो विश्व की राजनीतिशास्त्र की पुस्तक में महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

प्रश्न 2—'प्रजातन्त्र का सर्वप्रथम विकास यूनान में हुआ था।' सिद्ध कीजिए। (1988)

उत्तर—लगभग 800 ई० पू० के यूनान में नगर राज्यों की स्थापना हो चुकी थी जो राजाओं के अधीन थे। कुछ समय बाद वहाँ राजतन्त्र का अन्त हो गया और सामन्तवादी शासन-व्यवस्था प्रचलित हो गयी। कालान्तर में मध्यम वर्ग ने सामन्तवादी शासन व्यवस्था के विरोध में संघर्ष किया जिसके फलस्वरूप तानाशाही का अन्त हो गया और लोकतन्त्र की स्थापना हो गयी। यूनान में दासों को छोड़कर सभी को नागरिकता के अधिकार प्राप्त हो गये जिसके परिणामस्वरूप यूनान में सर्वप्रथम चुनाव कराने और मत देने आदि की प्रथा प्रारम्भ हुई। पेरिक्लीज ने यूनान में प्रजातन्त्र की स्थापना और विकास में बहुत योगदान किया और एथेंस में प्रजातन्त्र को उन्नति के शिखर पर पहुँचा दिया। अतः कहा जा सकता है कि प्रजातन्त्र का विकास सर्वप्रथम यूनान में हुआ था।

प्रश्न 3—रोम की सभ्यता की मुख्य देन क्या थी? (1987)

अथवा

'संसार को रोमवासियों की मौलिक देन कानून और शासन-व्यवस्था के क्षेत्र में है।' स्पष्ट कीजिए। (1989)

उत्तर—विश्व की सभ्यता में रोम की सभ्यता का महत्वपूर्ण स्थान है। इस सभ्यता ने अपनी मौलिक देनों से विश्व की सभ्यता को प्रभावित किया है। विश्व की सभ्यता को रोम की सभ्यता की प्रमुख देन निम्न प्रकार हैं—

1. रोमन कानून विश्व की सभ्यता को एक महान देन है। आज भी रोमन कानून वर्तमान कानूनी संहिताओं में सर्वाधिक प्रयुक्त किये जाते हैं।

2. रोम की सभ्यता ने विश्व को लोकतन्त्र, प्रशासनिक संगठन और सैनिक प्रबन्ध की राज्य-व्यवस्थाओं के सन्दर्भ में अमूल्य देन दी है।

3. रोम सभ्यता ने रोमन साम्राज्य की विभिन्न जातियों को एकता के सूत्र में संगठित करके विश्व के सामने प्रथम बार विश्व साम्राज्य का आदर्श प्रस्तुत किया। इस प्रकार रोमनों ने विश्व विजेताओं के मार्गों को प्रशस्त किया।

4. लैटिन भाषा रोम की अभूतपूर्व देन है। यह भाषा पश्चिमी यूरोप के सभी शिक्षित लोगों की भाषा बन गयी है। इसका प्रभाव आज भी यूरोप की भाषाओं से स्पष्ट होता है।

5. डाट और गुम्बद का प्रयोग सर्वप्रथम रोम की सभ्यता में हुआ। यहाँ की विशाल रंगशालाएँ और सार्वजनिक भवन वास्तुकला के श्रेष्ठ उदाहरण हैं।

6. ईसाई धर्म को विश्व धर्म का रूप देने का महत्व भी रोम की सभ्यता को ही है।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—प्राचीन यूनानियों के साहित्य एवं कला के क्षेत्र में प्रमुख उपलब्धियों का उल्लेख कीजिए। (1989)

उत्तर—यूनानी साहित्य—यूनान के कवियों तथा साहित्यकारों में अनेक महाकाव्य, काव्य और नाटक लिखे हैं। यूनान के दो महाकाव्य संसार में प्रसिद्ध हैं—(i) इलियड और (ii) ओडिसी। इन महाकाव्यों की गणना संसार के श्रेष्ठ महाकाव्यों में की जाती है। छोटी यूनानी कविताओं को लिरिक (Lyric) कहा जाता है। इनको लायर (Lyre) नामक वाद्य के साथ गाया जाता है। यूनानी जिन गीतों की रचना करते थे, उनमें मनुष्य के मनोभावों को व्यक्त किया जाता था। पिण्डार का नाम उन सर्वश्रेष्ठ कवियों में लिया जाता है जिसने विजयी खिलाड़ियों की प्रशंसा में कविताएँ लिखी हैं। स्त्री कवियों में "सैफो" का नाम प्रसिद्ध है। उसने प्रेम और प्रकृति सौन्दर्य के गीत लिखे हैं।

इतिहास की प्रथम पुस्तकें लिखने का श्रेय यूनानियों को ही है। यूनान निवासी 'हेरोडोटस' को इतिहास का जनक माना जाता है। उसने यूनान और ईरान के युद्धों का इतिहास लिखा है। इस कार्य को पूरा करने के लिए उसने अनेक स्थानों का भ्रमण किया। प्लूतार्क ने "Lives of the Illustrious Men" नामक पुस्तक की रचना की। इसमें उसने महान व्यक्तियों के जीवन का समाचार लिखा है।

यूनानियों ने अनेक नाटकों की भी रचना की। इनमें सुखान्त (Comedy) तथा दुखान्त (Tragedy) दोनों प्रकार के नाटक हैं। यूनानी नाट्यशालाओं के खण्डहर आज भी देखे जा सकते हैं।

यूनान की कला—यूनानी वास्तुकला की जानकारी उसके मन्दिरों से की जा सकती है। यूनानी वास्तुकला और मूर्तिकला के श्रेष्ठ उदाहरण उसके मन्दिर हैं। इन मन्दिरों की यह विशेषता होती थी कि इनमें एक प्रकोष्ट होता था जिसमें देवता की मूर्ति स्थापित की जाती थी। इस प्रकोष्ठ के चारों ओर स्तम्भ होते थे। इन

स्तम्भों के शीर्ष भिन्न-भिन्न प्रकार के होते थे। यूनान के वास्तुकला की यही विशेषता थी। इसी प्रकार का एक मन्दिर पार्थेनन है। मन्दिर यूनानी वास्तुकला का एक श्रेष्ठ उदाहरण है।

यूनान के निवासी मानव के दो गुणों को विशेष महत्व देते थे—ये थे मानव का साहस और सौन्दर्य, यूनान की मूर्तिकला में इन्हीं दो गुणों का समावेश है। इस कला को प्रदर्शित करता हुआ एक चित्र मिला। यह चित्र डिस्क फेंकने वाले एक खिलाड़ी की मूर्ति का है। इस मूर्ति को प्रसिद्ध शिल्पी माइरत द्वारा बनाया गया था। इससे स्पष्ट होता है कि यहाँ की अधिकतर मूर्तियाँ देवताओं अथवा खिलाड़ियों की हैं। तत्कालीन यूनानी चित्रकला से जो नमूने शेष रह पाये हैं, वे हाथी दाँत की वस्तुओं और फूलदानों में मिलते हैं।

प्रश्न 2—यूनानियों के मनोरंजन के मुख्य साधन क्या थे ?

उत्तर—यूनानियों के मनोरंजन के मुख्य साधन—उनका जीवन सरल था। पुरुष वर्ग खेलने तथा व्यायाम करने में व्यस्त रहते थे। वे रात्रि के समय भोजन के साथ शराब पीते थे। संगीत से वे अपना मनोरंजन किया करते थे। वे राजनीति, सत्य और सौन्दर्य पर वाद-विवाद किया करते थे। जब बालकों को शिक्षा दी जाती थी तो साहित्य, संगीत और खेलकूद पर विशेष बल दिया जाता था। बालकों को भाषण देना भी सिखाया जाता था। बालिकाओं को शिक्षा प्राप्त करने के लिए विद्यालय नहीं भेजा जाता था। उनकी शिक्षा घर पर ही होती थी। राजनीति उनका क्षेत्र न था। जब देवताओं की उपासना की जाती थी तो खूब उत्सव मनाया जाता था और सार्वजनिक अवकाश रहता था। इसी प्रकार का एक उत्सव ओलम्पिक खेल वर्तमान समय में भी संसार में मनाया जाता है। यह उत्सव जियस देवता के सम्मान में मनाया जाता था। यह उत्सव प्रत्येक चार वर्ष के पश्चात् मनाया जाता था। यूनान के प्रत्येक कोने से दर्शक इसे देखने के लिए एकत्रित होते थे।

यूनान निवासी प्रतिदिन खेलों में भाग लेते थे। यूनान में शारीरिक शिक्षा पर विशेष बल दिया जाता था।

प्रश्न 3—स्पार्टा के निवासियों को कुशल सैनिक बनाने के लिए क्या व्यवस्था की गई थी ? (1988, 90)

उत्तर—कुशल सैनिक बनाने की व्यवस्था—स्पार्टा के निवासियों को कुशल सैनिक बनाने की व्यवस्था इस प्रकार की गई थी—

1. सैनिक शिक्षा पर विशेष बल दिया जाता था।
2. स्वतन्त्र नागरिक के लिए सैनिक सेवा अनिवार्य थी।
3. प्रत्येक बालक को 7 वर्ष से 20 वर्ष तक सरकारी शिविरों में रहना पड़ता था।
4. इन शिविरों में बालकों को सैनिक शिक्षा दी जाती थी।
5. बालकों को बैरकों में कठोर अनुशासन में रहना पड़ता था।
6. स्पार्टा के निवासी इसी कारण कुशल सैनिक तथा साहसी योद्धा थे।

प्रश्न 4—रोम की वास्तुकला की क्या विशेषताएँ थीं ? उदाहरण सहित बताइए। (1985)

अथवा

रोम वासियों की वास्तुकला, चित्रकला और मूर्तिकला की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। (1985)

उत्तर—रोम की वास्तुकला की विशेषताएँ—रोम के निवासियों को वास्तुकला में दक्षता प्राप्त थी। कंक्रीट का प्रयोग सर्वप्रथम उन्हीं के द्वारा किया गया। वे ईंट और पत्थरों के टुकड़ों को जोड़ना जानते थे। उन्होंने वास्तुकला में दो सुधार किये। ये सुधार थे—डाट और गुम्वद बनाना। रोम के भवन दो-तीन मंजिल ऊँचे बनाये जाते थे। इनमें डाटें ठीक एक-दूसरे के ऊपर बनाई जाती थीं। ये डाटें गोल होती थीं। इन्हीं डाटों का प्रयोग कोलोजियम बनाने में किया गया था।

वास्तुकाला का अन्य उदाहरण रोम स्थित पैंथियन है। यह भवन के रोम के देवताओं को समर्पित था। वास्तुकला का एक और उदाहरण त्राजन का स्तम्भ है। इसका निर्माण 113 ई० में त्राजन की विजयों के स्मारक के रूप में किया गया था।

रोम निवासी उसी प्रकार की मूर्तियों का निर्माण करते थे, जिस प्रकार की मूर्तियों का निर्माण यूनानियों के द्वारा किया जाता था। परन्तु इस कला में कुछ अन्तर भी था। यूनानी लोगों की मूर्तियाँ उनके आदर्शों को व्यक्त करती थीं। परन्तु रोम के निवासी ऐसा नहीं करते थे। रोम के निवासी अपनी मूर्तियों में मनुष्यों के चरित्र को व्यक्त करने का प्रयास करते थे। उन्होंने अधिकतर सम्राटों की मूर्तियाँ बनाईं। ये मूर्तियाँ सड़कों के चौराहों पर टाँग दी जाया करती थीं। रोम निवासियों ने भित्ति कला (Murals) का भी विकास किया।

परीक्षा में पूछे गये विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1—प्राचीन यूनानियों की साहित्य, कला और विज्ञान के क्षेत्र में उपलब्धियों पर प्रकाश डालिए। (1991)

उत्तर—'यूनानी साहित्य और यूनान की कला' के क्षेत्र में उपलब्धियों का विवरण राजकीय पुस्तक के प्रश्न संख्या 1 का अवलोकन करें।

यूनान का विज्ञान से क्षेत्र में योगदान—विज्ञान की विभिन्न शाखाओं का विकास यूनान में हुआ था। यूनान में ज्योतिष, गणित, भौतिक विज्ञान, खगोलशास्त्र, चिकित्साशास्त्र आदि की विशेष उन्नति हुई। यूक्लिड और पाइथागोरस का जन्म यूनान में ही हुआ था जिन्होंने रेखागणित के अनेक सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया। महान वैज्ञानिक आर्किमिडीज का जन्म भी यूनान में हुआ। उसने आपेक्षिक घनत्व के सिद्धान्त की खोज की तथा गोलाकार वस्तुओं की परिधि मापने के नियम बनाये। हैरन यूनानी वैज्ञानिक था जिसने भाप का इंजन बनाया। हिप्पीक्रेटीग ने आधुनिक चिकित्साशास्त्र की नींव डाली। हिप्पार्कस ने चन्द्रमा के व्यास का सही-सही आकलन किया।

प्रश्न 2—प्राचीन रोमवासियों के साहित्य, जन जीवन और कला के विचार पर प्रकाश डालिए। (1990)

उत्तर—रोम इटली की राजधानी है। यह नगर इटली के मध्य में टाइबर नदी के तट पर स्थित है। इस नगर में जिस सभ्यताओं का जन्म हुआ, उसे रोम की सभ्यता कहते हैं। यह सभ्यता संसार की प्राचीनतम सभ्यता में से एक महत्वपूर्ण

सभ्यता है। प्राचीन रोमवासियों के साहित्य, जन-जीवन और कला के विकास का विवरण निम्नवत हैं—

1. **साहित्य**—रोम का साहित्य लैटिन भाषा में लिखा हुआ है। रोमवासियों ने लैटिन भाषा का इतना अधिक विकास किया कि लैटिन भाषा यूरोप की अनेक भाषाओं का आधार है। होरेस और वर्जिल यहाँ के महान कवि थे और टेसिटस तथा लिपि यहाँ के प्रसिद्ध इतिहासकार थे जिनके ग्रन्थ रोम के इतिहास के भण्डार और बहुत लोकप्रिय हैं। यूनान के नाटकों तथा महाकाव्यों के अनुवाद भी लैटिन भाषा में मिलते हैं।

2. **जन-जीवन**—रोम का समाज मुख्य रूप से दो भागों में बँटा हुआ था—पेट्रीशियन और प्लीवियन। पेट्रीशियन कुलीन होते थे। इनके पास अपार धन था। इनमें धनी और सामान्य लोग सम्मिलित थे। यह लोग अपना समय गाने-बजाने और ऐशो-आराम करने में व्यतीत करते थे। इनका भोजन स्वास्थ्यवर्धक होता था। ये माँस, मछली और शराब का सेवन करते थे। प्लीवियन सामान्य जनता को कहा जाता था। इस वर्ग में मध्यम या निर्धन किसान होते थे। इसमें कारीगर और मजदूर लोग शामिल थे। इस वर्ग को बहुत कम अधिकार प्रदान किये गये थे। इनसे बहुत मात्रा में कर वसूल किये जाते थे तथा इनको अनुचित दण्ड भी दिया जाता था।

पेट्रीशियन तथा प्लीवियन के अतिरिक्त रोमन समाज में दास भी थे। इन्हें किसी भी प्रकार के अधिकार प्राप्त नहीं थे। उनका जीवन पशुओं के तुल्य था। उनको खरीदा तथा बेचा जाता था। इन दासों की दशा बहुत ही शोचनीय थी। रोमन समाज में स्त्रियों को बहुत सम्मान दिया जाता था।

3. **कला**—रोमवासी वास्तुकला, मूर्तिकला, भित्तिकला, चित्र कला आदि में बड़े दक्ष थे। कंक्रीट का प्रयोग सर्वप्रथम इन्हीं के द्वारा किया गया। ये लोग ईंटों और पत्थरों के टुकड़ों को जोड़ना खूब अच्छी तरह जानते थे। इन्होंने वास्तुकला में दो सुधार किये—

(1) डाट लगाना, (2) गुम्मद बनाना।

रोम के भवन दो-तीन मंजिल के होते थे, जिनमें डाटें एक-दूसरे के ऊपर बनायी जाती थीं। ये डाटें गोल होती थीं। इन्हीं डाटों का प्रयोग विशाल रंगशाला कोलोसियम के बनाने में किया गया था। रोम के देवी-देवताओं के मन्दिर यहाँ की वास्तुकला के अनोखे उदाहरण हैं।

रोमवासी अच्छे मूर्तिकार थे। इनके द्वारा निर्मित मूर्तियाँ बड़ी सजीव हैं। इन्होंने अधिकांश मूर्तियाँ यहाँ के शासकों की बनायी हैं जो बड़ी भव्य हैं और उनकी शक्ति का प्रदर्शन करती हैं। ये लोग भित्तिकला और चित्रकारी में भी बड़े प्रवीण थे। संक्षेप में रोमवासियों का कला ज्ञान बहुत उच्चकोटि का था।

परीक्षा में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1—ओलम्पिक खेलों का प्रारम्भ किस देश में हुआ था? (1987, 90)
(क) यूनान, (ख) रोम, (ग) जर्मनी, (घ) इंग्लैण्ड।
उत्तर—(क) यूनान।

प्रश्न 2—यूनान के प्रसिद्ध इतिहासकार का नाम था। (1987)
(क) होमर, (ख) सुकरात, (ग) हेरोडोटस, (घ) अरस्तू।
उत्तर—(क) होमर।

प्रश्न 3—यूनान का महान सम्राट कौन था ? (1987)
(क) जूलियस सीजर, (ख) सुकरात, (ग) पेरीक्लीज, (घ) हैनीबाल ।
उत्तर—(ग) पैरीक्लीज ।

प्रश्न 4—कंकरीट का प्रयोग किस सभ्यता में हुआ ? (1987)
(क) यूनान, (ख) रोम, (ग) चीन, (घ) सिन्धु ।
उत्तर—(ख) रोम ।

प्रश्न 5—यूनान के प्रसिद्ध दार्शनिक का नाम था— (1991)
(क) जूलियस सीजर, (ख) सेसल्स, (ग) आर्डकिमन, (घ) सुकरात ।
उत्तर—(घ) सुकरात ।

प्रश्न 6—इटली का महान चित्रकार था— (1989)
(क) लियोनार्दो द विन्ची (ख) माइकल ऐंजिलो
(ग) रफेल (घ) दांते ।
उत्तर—(ग) रफेल । □

4 विश्व के प्रमुख धर्म

अति लघुउत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—भगवान विष्णु में आस्था रखने वाले सम्प्रदाय का नाम लिखिए।
उत्तर—भगवान विष्णु में आस्था रखने वाला सम्प्रदाय वैष्णव सम्प्रदाय है।

प्रश्न 2—जैन धर्म के प्रवर्त्तक कौन थे ? (1987)
उत्तर—जैन धर्म के प्रवर्त्तक महावीर स्वामी थे।

प्रश्न 3—कन्फ्यूशियस किस देश में पैदा हुए थे ? (1985)
उत्तर—कन्फ्यूशियस चीन देश के 'लू' प्रान्त में पैदा हुए थे।

प्रश्न 4—पारसी धर्म के संस्थापक का नाम क्या था ? 1987)
उत्तर—पारसी धर्म के संस्थापक का नाम जरथुस्त्र था।

प्रश्न 5—ईसाई धर्म के धार्मिक ग्रन्थ का नाम बताइए। (1988)
उत्तर—ईसाई धर्म के धार्मिक ग्रन्थ का नाम बाईबिल है।

प्रश्न 6—सिक्खों का पवित्र ग्रन्थ कौन-सा है ? (1985)
उत्तर—सिक्खों का पवित्र ग्रन्थ 'ग्रन्थ साहब' है।

प्रश्न 7—सबसे प्राचीन वेद का नाम बताइए। (1987)
उत्तर—सबसे प्राचीन वेद का नाम ऋग्वेद है।

प्रश्न 8—इस्लाम धर्म के पैगम्बर का नाम बताइए। (1989)
उत्तर—इस्लाम धर्म के पैगम्बर का नाम हजरत मुहम्मद साहब है।

प्रश्न 9—अवेस्ता किस धर्म का पवित्र ग्रन्थ है। (1987)
उत्तर—अवेस्ता पारसी धर्म का ग्रन्थ है।

परीक्षा में पूछे गये अति लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1—कुम्भ मेला के दो तीर्थ स्थानों के नाम लिखिए। (1985, 89)
उत्तर—कुम्भ मेला के दो तीर्थ स्थलों के नाम—(1) हरिद्वार, (2) इलाहाबाद (प्रयाग)।

प्रश्न 2—गौतम बुद्ध का जन्म कहाँ हुआ था ? (1987, 89, 90)
उत्तर—गौतम बुद्ध का जन्म कपिलवस्तु के लुम्बनी नामक वन में हुआ था।

प्रश्न 3—हीनयान किस धर्म का सम्प्रदाय है ? (1986)
उत्तर—हीनयान बौद्ध धर्म का सम्प्रदाय है।

प्रश्न 4—श्री लंका में बौद्ध धर्म का प्रचार कब और किसने किया ? (1988)
उत्तर—श्री लंका में बौद्ध धर्म का प्रचार तीसरी शताब्दी पूर्व सम्राट अशोक ने किया।

प्रश्न 5—यहूदी धर्म के प्रवर्त्तक का नाम बताइए। (1984)

उत्तर—यहूदी धर्म के प्रवर्त्तक 'हजरत मूसा' थे।

प्रश्न 6—जरथुस्त्र कौन थे ? (1987)

उत्तर—जरथुस्त्र पारसी धर्म के संस्थापक थे।

प्रश्न 7—सिक्ख धर्म के दसवें गुरु कौन थे ? (1987)

उत्तर—सिक्ख धर्म के दसवें गुरु गोविन्दसिंह हैं ?

प्रश्न 8—मुहम्मद साहब को दिव्य ज्ञान की प्राप्ति कहाँ हुई। (1989)

उत्तर—मुहम्मद साहब को दिव्य ज्ञान की प्राप्ति मक्का में हुई थी।

प्रश्न 9—मक्का और मदीना क्यों प्रसिद्ध हैं ? (1986)

उत्तर—मक्का और मदीना मुसलमानों के तीर्थ स्थल होने के कारण प्रसिद्ध हैं।

अन्य महत्वपूर्ण अति लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 10—हिन्दू धर्म के चार पुरुषार्थों के नाम बताइए।

उत्तर—हिन्दू धर्म के चार पुरुषार्थों के नाम हैं—
(1) धर्म, (2) अर्थ, (3) काम, (4) मोक्ष।

प्रश्न 11—ईसाई धर्म के प्रवर्त्तक का नाम लिखिए।

उत्तर—ईसाई धर्म के प्रवर्त्तक जीसस क्राइस्ट (ईसामसीह) हैं।

प्रश्न 12—सिक्ख धर्म के संस्थापक कौन थे ?

उत्तर—सिक्ख धर्म के संस्थापक गुरु नानक देव थे।

प्रश्न 13—यहूदी धर्म के प्रवर्त्तक का नाम बताइए।

उत्तर—यहूदी धर्म के प्रवर्त्तक हजरत मूसा थे।

प्रश्न 14—बौद्ध धर्म के प्रवर्त्तक कौन थे ?

उत्तर—बौद्ध धर्म के प्रवर्त्तक गौतम बुद्ध थे ?

प्रश्न 15—गौतम बुद्ध का जन्म कहाँ और कब हुआ ?

उत्तर—गौतम बुद्ध का जन्म कपिलवस्तु के समीप लुम्बिनी वन में 563 ई० पू० में हुआ था।

प्रश्न 16—बौद्ध धर्म की दो शाखाएँ कौन-सी हैं ?

उत्तर—बौद्ध धर्म की दो शाखाएँ हीनयान और महायान हैं।

प्रश्न 17—जैन धर्म की दो शाखाएँ कौन-सी हैं ?

उत्तर—जैन धर्म की दो शाखाएँ श्वेताम्बर और दिगम्बर हैं।

लघुउत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—हिन्दू धर्म में त्रिदेवों की मान्यता से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर—हिन्दू धर्म देवत्रयी सिद्धान्त मानता है। हिन्दू धर्म के अनुसार, सृजन, पोषण तथा विनाश—ये तीन सृष्टि के शाश्वत नियम हैं। ब्रह्मा सृष्टि की रचना करने वाले, विष्णु उसका पालन करने वाले तथा महेश उसका (सृष्टि में विकृतियाँ व्याप्त होने पर) विनाश करने वाले हैं।

प्रश्न 2—चारों वेदों के नाम लिखिए। (1987)

उत्तर—चारों वेदों के नाम इस प्रकार हैं—(1) ऋग्वेद, (2) यजुर्वेद, (3) सामवेद और (4) अथर्ववेद।

प्रश्न 3—जैन धर्म के पाँच महाव्रत कौन से हैं ? (1986, 90)

उत्तर—जैन धर्म के पाँच महाव्रत (शिक्षाएँ) निम्नलिखित हैं—

1. **अहिंसा**—मन, वचन और कर्म से किसी भी जीव को कष्ट न पहुँचाना चाहिए।

2. **सत्य**—मन, वचन और कर्म द्वारा सत्य का आचरण करना चाहिए।

3. **अस्तेय**—किसी भी प्रकार की चोरी नहीं करनी चाहिए।

4. **अपरिग्रह**—आवश्यकता से अधिक वस्तुओं का संग्रह नहीं करना चाहिए।

5. **ब्रह्मचर्य**—सभी प्रकार की वासनाओं को त्याग कर संयमित जीवन व्यतीत करना चाहिए।

प्रश्न 4—जैन धर्म और बौद्ध धर्म की कोई दो समानताएँ लिखिए। (1936)

उत्तर—जैन धर्म और बौद्ध धर्म की दो समानताएँ इस प्रकार हैं—

1. दोनों धर्मों में अहिंसा को प्रधान स्थान प्राप्त है। किसी जीव को मन, वचन और कर्म से न सताना ही अहिंसा है।

2. दोनों धर्मों में जाति-पाँति का विरोध किया गया है। कोई भी मनुष्य अच्छे कर्म करके मोक्ष प्राप्त कर सकता है।

प्रश्न 5—बौद्ध धर्म के चार आर्य-सत्य कौन-कौन हैं ? (1984, 86)

उत्तर—बौद्ध धर्म के चार आर्य सत्य निम्नलिखित हैं—

(1) **दुःख**—महात्मा बुद्ध के अनुसार संसार में दुःख ही दुःख है।

(2) **दुःख-समुदाय**—दुःख के कारणों को समुदाय कहते हैं। महात्मा बुद्ध के अनुसार इस दुःख का मूल कारण तृष्णा है।

(3) **दुःख निरोध**—महात्मा बुद्ध ने बताया कि जब दुःख का कारण ज्ञात हो जाए तो उसे दूर करना भी सम्भव है। बुद्ध के अनुसार तृष्णा के समाप्त होने से दुःख समाप्त हो जाते हैं।

(4) **दुःख निरोधी मार्ग**—महात्मा बुद्ध के अनुसार दुःख को समाप्त करने तथा तृष्णा के क्षय के लिए आठ साधन हैं इनको अष्टांग कहते हैं। इसी मार्ग के द्वारा तृष्णा को समाप्त करके दुःखों को दूर किया जा सकता है।

प्रश्न 6—इस्लाम धर्म के पाँच कार्य सिद्धान्तों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—इस्लाम धर्म के पाँच कार्य सिद्धान्त इस प्रकार हैं—

कल्मा, नमाज, रोजा, जकात और हज ये पाँच पुण्य कर्म प्रत्येक मुसलमान के लिए अनिवार्य हैं।

1. **कल्मा**—इस्लाम का मूलमन्त्र है—

"ला इलाह-इल्ल अल्लाह, मुहम्मद-उर-रसूल अल्लाह", अर्थात् अल्लाह एक है, उसके अतिरिक्त कोई नहीं है और मुहम्मद उसके पैगम्बर हैं।

2. **रोजा**—रमजान के पवित्र मास में प्रत्येक मुसलसान को सूर्योदय से सूर्यास्त तक व्रत (रोजा) रखना चाहिए।

3. **नमाज**—उसे हर रोज पाँच बार नमाज और प्रार्थना करनी चाहिए।

4. **जकात**—प्रत्येक इस्लाम धर्म के अनुयायी को अपनी आय की निश्चित राशि स्वेच्छा से गरीबों को दान करनी चाहिए। यह एक पुण्य कार्य है।

5. हज—अपने जीवन काल में कम-से-कम एक बार मक्का की तीर्थयात्रा पर अवश्य जाना चाहिए।

प्रश्न 7—गुरु नानक का जन्म कब तथा कहाँ हुआ था ? (1986)

उत्तर—गुरु नानक का जन्म 1469 ई० में पंजाब प्रान्त के तलवन्डी (वर्तमान ननकाना साहिब, पाकिस्तान) में हुआ था।

प्रश्न 8—ईसाई धर्म के दो आधार तत्व कौन से हैं ? (1989)

उत्तर—ईसाई धर्म के दो आधार तत्त्व इस प्रकार हैं—

1. ईश्वर पर अटूट विश्वास के साथ पूर्ण आत्म-समर्पण की भावना रखनी चाहिए।

2. दीन-दुखियों की सेवा करना ही सच्चा धर्म है। सदा अवगुणों से बचने का प्रयास करना चाहिए।

प्रश्न 9—ओल्ड टेस्टामेन्ट से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर—'ओल्ड टेस्टामेन्ट' यहूदी धर्म का पवित्र ग्रन्थ है। वास्तव में 'ओल्ड टेस्टामेन्ट' ईसाई धर्म के पवित्र ग्रन्थ 'बाइबिल' का प्रथम भाग है। इसमें यहूदी धर्म के सिद्धान्त संकलित हैं। इसी कारण यहूदी इसे अपना धर्म ग्रन्थ मानते हैं।

परीक्षा में पूछे गये लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1—पारसी धर्म के संस्थापक कौन थे ? इस धर्म के प्रमुख सिद्धान्तों का उल्लेख कीजिए। (1984)

उत्तर—पारसी धर्म के संस्थापक जरथुस्त्र थे। इस धर्म की पवित्र पुस्तक अवेस्ता है जिसमें इस धर्म के सिद्धान्तों का उल्लेख है। पारसी धर्म के प्रमुख सिद्धान्त निम्नलिखित हैं—

1. **एकेश्वरवाद का सिद्धान्त**—ईश्वर एक है और वह सर्वव्यापी और सर्वशक्तिमान है। वही व्यक्ति के कार्यों को संचालित और नियन्त्रित करता है। उसकी सत्ता के बिना पत्ता भी नहीं हिलता। उसी के निर्देश पर सूर्य-चन्द्र चलते हैं।

2. **आत्मा और कर्मवाद का सिद्धान्त**—आत्मा अजर और अमर है। मृत्यु से शरीर का नाश होता है, आत्मा का नहीं। मनुष्य अपने कर्मों का फल प्राप्त करता है। सुकर्मों से स्वर्ग और कुकर्मों से नरक मिलता है।

3. **सत्य के प्रति आस्था**—पारसी धर्म में सत्य को विशेष स्थान दिया है। सत्य ही परम साधना है, सत्य ही परम धर्म है और सत्य से ही विजय प्राप्त होती है।

4. **चरित्र-निर्माण पर बल**—पारसी धर्म में चरित्र-निर्माण पर विशेष बल दिया है। मानव के कल्याण के लिए सद्विचार, सद्वचन और सद्कार्य आवश्यक हैं।

प्रश्न 2—सिक्ख धर्म की प्रमुख शिक्षाएँ क्या हैं ? (1988, 90)

अथवा

सिक्ख धर्म किसने चलाया ? इसकी प्रमुख विशेषाएँ क्या हैं ? (1991)

उत्तर—सिक्ख धर्म के प्रवर्त्तक गुरु नानकदेव हैं। इस धर्म की प्रमुख शिक्षाएँ (विशेषताएँ) निम्नलिखित हैं—

1. **ईश्वर एक है**—गुरु नानक ने बताया कि इस सृष्टि का रचयिता ईश्वर

एक है। वह सर्वव्यापी और सर्वशक्तिमान है। यह निराकार और अमर है। हमें उसी में विश्वास रखना चाहिए और उसकी पूजा करनी चाहिए।

2. जाति-पाँति का विरोध—गुरु नानक ने जाति-भेद और छुआछूत का सामाजिक कलंक बताया। सभी उसी एक ईश्वर की सन्तान हैं। अतः सभी को धर्म पालन करने का अधिकार है।

3. अन्ध-विश्वासों का घोर विरोध—गुरुनानक के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को अन्ध-विश्वासों और रूढ़िवादी विचारों से बचना चाहिए। उनके अनुसार जो व्यक्ति मन से धर्मात्मा है और सदाचारी है, वही धर्मात्मा है।

4. गुरु का महत्त्व—गुरु के माध्यम से ही ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है। अतः गुरु में अपार श्रद्धा और असीम विश्वास रखना चाहिए।

प्रश्न 3—जैन धर्म के प्रमुख सिद्धान्तों का वर्णन कीजिए। (1985, 86)

अथवा

जैन धर्म का वर्णन निम्न शीर्षक के अन्तर्गत कीजिए—

(i) त्रिरत्न (ii) पंच महाव्रत। (1990)

उत्तर—जैन धर्म के सिद्धान्त—वर्धमान महावीर ने जिन सिद्धान्तों का प्रचार किया, उन्हीं को जैन धर्म के मूल सिद्धान्त माना जाता है। ये सिद्धान्त निम्न-लिखित हैं—

1. पंच महाव्रत—वर्धमान महावीर ने प्रत्येक व्यक्ति को पाँचों व्रतों के पालन का उपदेश दिया। ये पाँच महाव्रत अहिंसा, सत्य, अचौर्य, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य हैं। इन महाव्रतों के पालन से मनुष्य सुखी जीवन व्यतीत कर सकता है।

2 त्रिरत्नों का विधान—वर्धमान महावीर ने कर्म के बन्धनों से छुटकारा पाने के लिए त्रिरत्नों का विधान किया है। ये त्रिरत्न सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन और सम्यक्-चरित्र है। ज्ञान, दर्शन और चरित्र आत्मा में मूल रूप से निहित अवस्थाएँ हैं। इन त्रिरत्नों की प्राप्ति से कर्म के बन्धनों से छुटकारा पाकर आत्मा जन्म-मरण से मुक्ति पाकर मोक्ष में चली जाती है। अतः इन्हीं त्रिरत्नों के आचरण द्वारा मनुष्य मोक्ष (निर्वाण) पद को प्राप्त कर सकता है।

3. कर्म की प्रधानता—कर्म की प्रधानता जैन धर्म का प्रमुख सिद्धान्त है। जैन धर्म के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को अपने अच्छे-बुरे कर्मों का फल मिलता है। इसलिए व्यक्ति को अपने कर्मों में नैतिकता और शुद्धता पर विशेष बल देना चाहिए।

4. अनेकात्मवाद में विश्वास—जैन-धर्म के अनुसार जितने जीव हैं, उतनी ही आत्मा हैं। ये आत्माएँ पृथक्-पृथक् होते हुए भी एक हैं और एक होने पर भी अनेक हैं। यही अनेकात्मवाद जैन धर्म का प्राण है।

प्रश्न 4—बुद्ध के जीवन में सारनाथ का क्या महत्व है? (1990)

उत्तर—बुद्ध के जीवन में सारनाथ का महत्व—बिहार के गया नामक स्थान पर छः वर्षों की कठोर तपस्या के बाद गौतम बुद्ध को जब सत्य और ज्ञान की प्राप्ति हो गयी, तब उन्होंने सारनाथ नामक स्थान पर अपने पाँच भिक्षुओं को अपना पहला उपदेश सुनाया था। इसलिए सारनाथ बौद्ध धर्म का तीर्थस्थान बन गया। अतः बुद्ध जीवन में सारनाथ का विशेष महत्व है।

प्रश्न 5—बौद्ध धर्म की दो शाखाओं का विवरण दीजिए। (1987)

उत्तर—बौद्ध धर्म दो शाखाएँ निम्न हैं—1. हीनयान 2. महायान।

1. हीनयान—हीनयान शाखा के अनुयायी परम्परावादी है। वे महात्मा बुद्ध द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों का अक्षरशः पालन करते हैं। उन्हें प्राचीन सिद्धान्तों में लेशमात्र परिवर्तन पसन्द नहीं है।

2. महायान—महायान शाखा के अनुयायी परम्परागत सिद्धान्तों में समयानुकूल परिवर्तन के पक्षधर हैं। वे सिद्धान्तों को व्यावहारिक बनाने के लिए उदार दृष्टिकोण अपनाने के पक्षपाती हैं।

अन्य महत्वपूर्ण लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 6—जैन धर्म की दो शाखाओं (सम्प्रदाय) का विवरण दीजिए।

उत्तर—जैन धर्म की दो शाखाएँ इस प्रकार हैं—1. श्वेताम्बर, 2. दिगम्बर।

1. श्वेताम्बर—श्वेताम्बर शाखा के मुनि लोग अपने शरीर पर श्वेत वस्त्र धारण करते हैं तथा मुख पर श्वेत वस्त्र की पट्टी लगाते हैं; वे किसी भी श्रावक के हाथ का भोजन व जल ग्रहण कर लेते हैं। इस सम्प्रदाय के अनुयायी मुनि जैन धर्म की कठोरता और जटिलता को कम करने के पक्षपाती हैं।

2. दिगम्बर—दिगम्बर शाखा के मुनि निर्वस्त्र (नग्न) रहते हैं और दिक् यानी दिशाओं को ही अपना वस्त्र मानते हैं। इस सम्प्रदाय के मुनि विशेष विधि के द्वारा ही श्रावक से भोजन व जल ग्रहण करते हैं। विशेष विधि द्वारा भोजन व जल न मिलने पर उसका परित्याग कर देते हैं। इस सम्प्रदाय के अनुयायी मुनि जैन धर्म की कठोरता और जटिलता के पक्षधर हैं। ये लोग अपने को भगवान महावीर का सच्चा अनुयायी समझते हैं।

प्रश्न 7—संसार के विभिन्न धर्मों के मूल में विद्यमान समान विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर—सभी धर्मों की समान विशेषताएँ—संसार में अनेक धर्म हैं और उनमें विद्यमान विशेषताएँ भी भिन्न-भिन्न हैं किन्तु सभी धर्मों के मूल में एकरूपता है क्योंकि सभी धर्मों का लक्ष्य एक ही है और वह है मानव जाति को मोक्ष की प्राप्ति की ओर अग्रसर करना। विश्व के विभिन्न धर्मों के मूल में विद्यमान समान विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

1. सभी धर्म एक ईश्वर की सत्ता को मानते हैं और उस पर आस्था एवं विश्वास रखते हैं।

2. सभी धर्मों का एक ही लक्ष्य है और वह लक्ष्य है संसार के जन्म-मरण से मुक्ति (मोक्ष) पाना।

3. सभी धर्म मानव को अपने कर्म और आचरण को सुन्दर और उत्तम बनाने पर विशेष जोर देते हैं। नैतिक नियमों का पालन करना सभी धर्मों में आवश्यक बताया है।

4. सभी धर्मों की मान्यता है कि हम एक ईश्वर की सन्तान हैं। अतः सभी मानव भाई-भाई हैं। वर्गभेद, जाति-भेद और ऊँच-नीच की भावना व्यर्थ है।

5. सभी धर्म मानव की दैनिक दिनचर्या में किसी न किसी रूप में प्रार्थना करने पर वल देते हैं। संक्षेप में विश्व के सभी धर्मों का सारभूत तत्व एक ही है।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—हिन्दू धर्म के स्वरूप का वर्णन कीजिए। इनके प्रमुख सम्प्रदाय कौन-कौन-से हैं ? (1984)

उत्तर—हिन्दू के धर्म का स्वरूप—हिन्दू धर्म का स्वरूप इस प्रकार है—

(1) हिन्दू धर्म विश्व की उच्चतम सत्ता में पूर्ण विश्वास करता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि हिन्दू धर्म परमात्मा की सत्ता में पूर्ण विश्वास रखता है।

(2) हिन्दू-धर्म एक ईश्वर में विश्वास करता है। परन्तु यह धर्म अपने अनुयायियों को इस बात की स्वतन्त्रता देता है कि वे चाहे जिस रूप में भगवान की आराधना करें। सम्भवतः इसी कारण भारतवर्ष में अनेक देवी-देवताओं की पूजा आरम्भ हुई।

(3) हिन्दू धर्म त्रिदेवों—ब्रह्मा, विष्णु और महेश को मान्यता देता है क्योंकि ब्रह्मा संसार की उत्पत्ति करने वाले हैं, विष्णु उसके पालनकर्त्ता हैं और महेश सृष्टि के विनाश करने वाले हैं।

(4) हिन्दु धर्म-कर्म के सिद्धान्त में विश्वास करता है। इस सिद्धान्त से तात्पर्य यह है कि मनुष्य इस जन्म में जैसे कर्म करेगा, उसे वैसा ही अगला जन्म मिलेगा। आत्मा अमर है. परन्तु कर्मों के अनुसार वह एक शरीर छोड़कर दूसरा शरीर धारण कर लेती है।

(5) मनुष्य के जीवन का लक्ष्य मोक्ष प्राप्त करना है। मोक्ष प्राप्त करने के तीन मार्ग हैं—**प्रथम** ज्ञान मार्ग, **द्वितीय** कर्म मार्ग एवं **तृतीय** भक्ति मार्ग। ज्ञान मार्ग के द्वारा परम ब्रह्म के स्वरूप का चिन्तन और मनन किया जाता है। कर्म मार्ग में, धर्म के अनुसार कर्मों को करने में मोक्ष की प्राप्ति की जा सकती है। भक्ति मार्ग में व्यक्ति मन्दिरों में जाकर नतमस्तक होकर पूजापाठ, उपासना और आराधना के द्वारा मोक्ष प्राप्त कर सकता है।

(6) हिन्दू धर्म की एक विशेषता उसकी आध्यात्म भावना है। इसका प्रादुर्भाव वैदिक युग में हुआ था। जो कुछ आँखों से दिखाई देने वाला है, उस भौतिक जगत से परे भी कोई सत्ता है। यह विचार भारत में वैदिक युग से निरन्तर चला आ रहा है। इसी सत्ता के स्वरूप का चिन्तन और मनन करना आध्यात्म भावना है।

(7) हिन्दू-धर्म की मान्यता है कि जब-जब पृथ्वी पर पाप बढ़ते हैं, तब-तब ईश्वर अवतार लेकर दुष्टों का संहार करते हैं और धर्म की मर्यादा की रक्षा करते हैं।

(8) हिन्दू धर्म में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को चार पुरुषार्थ माना गया है। इन चारों पुरुषार्थों में प्रथम तीन मोक्ष प्राप्ति की क्रमबद्ध सीढ़ियाँ हैं। इन तीनों को पारकर ही मनुष्य मोक्ष मार्ग पर अग्रसर हो सकता है।

(9) हिन्दू धर्म पुनर्जन्म में विश्वास करता है। इस धर्म की मान्यता है कि जीव 84 लाख योनियों में भटकता फिरता है। मनुष्य योनि श्रेष्ठ योनि है। इसी योनि में रहकर मनुष्य मोक्ष पद प्राप्त कर जन्म-मरण के चक्र से छुटकारा पा सकता है।

हिन्दू धर्म के प्रमुख सम्प्रदाय—हिन्दू धर्म में अनेक देवी-देवताओं की पूजा की जाती है। अतः उपासना पद्धति और विचारधाराओं की विभिन्नता के आधार पर हिन्दू धर्म तीन सम्प्रदायों में विभक्त हो गया। ये तीन सम्प्रदाय निम्नवत हैं—

(1) **वैष्णव सम्प्रदाय**—वैष्णय सम्प्रदाय के अनुयायी विष्णु की और उनके अवतार राम तथा कृष्ण की पूजा करते हैं।

(2) **शैव सम्प्रदाय**--शैव सम्प्रदाय के अनुयायी शिवजी की पूजा करते हैं। शंकराचार्य शैव सम्प्रदाय के महान प्रचारक माने जाते हैं।

(3) **शाक्त सम्प्रदाय**—शाक्त सम्प्रदाय के अनुयायी मातृशक्ति की पूजा करते हैं। मातृशक्ति को उमा, दुर्गा, भवानी, काली, चामुण्डा, अन्नपूर्णा आदि नामों से जाना जाता है।

प्रश्न 2—जैन धर्म के संस्थापक कौन थे ? जैन धर्म से प्रमुख सिद्धान्तों का वर्णन कीजिए। (1986, 88)

उत्तर—जैन धर्म के संस्थापक महावीर स्वामी थे। यद्यपि महावीर स्वामी इस धर्म के जन्मदाता माने जाते हैं, परन्तु जैन ग्रन्थों के अनुसार महावीर चौबीसवें तीर्थंकर थे। उनसे पूर्व 23 तीर्थंकर और हो चुके थे।

जैन धर्म के प्रमुख सिद्धान्त—जैन धर्म के प्रमुख सिद्धान्त इस प्रकार हैं—

(1) मानव जीवन का मुख्य उद्देश्य मोक्ष प्राप्त करना है।

(2) जिन नियमों का पालन एक मुनि कर सकता है, उन नियमों का पालन एक गृहस्थ नहीं कर सकता।

(3) गृहस्थ के लिए पाँच अणु व्रतों का पालन आवश्यक है। पाँच अणु व्रत निम्नलिखित हैं—

(i) प्रत्येक व्यक्ति के लिए यह आवश्यक है कि वह अहिंसा व्रत का पालन करे। मन, वचन और शरीर से किसी भी प्रकार की हिंसा करना अनुचित है। गृहस्थों के लिए इस धर्म में स्थूल अहिंसा का विधान किया गया है।

(ii) समस्त प्रवृत्तियों को दवाकर सदैव सत्य बोलना चाहिए।

(iii) किसी भी प्रकार से दूसरों की सम्पत्ति नहीं लेना चाहिए। कभी चोरी नहीं करनी चाहिए।

(iv) मन, वचन तथा कर्म के द्वारा पर-स्त्री का समागम न करना चाहिए। अपनी पत्नी में ही सन्तोष रखना चाहिए।

(v) आवश्यकता के बिना सम्पत्ति एकत्रित नहीं की जानी चाहिए। अर्थ संग्रह के पीछे भागना पाप है।

(4) पाँच अणु व्रतों के अतिरिक्त गृहस्थ को समय-समय पर तीन गुण-व्रतों का भी पालन करना चाहिए। ये गुण व्रत निम्नलिखित हैं—

(i) गृहस्थ को चाहिए कि वह कभी-कभी यह व्रत ले कि वह इस दिशा में इससे अधिक दूर नहीं जायगा।

(ii) मनुष्य को ऐसे कार्यों से सदैव बचना चाहिए जिससे उसका कोई सम्बन्ध नहीं है।

(iii) गृहस्थ को यह व्रत लेना चाहिए कि मैं परिमाण में इससे अधिक भोजन नहीं लूंगा, भोजन में इससे अधिक वस्तुएँ नहीं खाऊँगा।

(5) प्रत्येक गृहस्थ को चार शिक्षा-व्रत लेना चाहिए। प्रत्येक गृहस्थ को इनका पालन करना आवश्यक है। चार शिक्षा-व्रत निम्नलिखित हैं—

(i) प्रत्येक गृहस्थ एक क्षेत्र व देश निश्चित कर ले। उससे आगे गृहस्थ न जाये।

(ii) प्रत्येक गृहस्थ निश्चित समय पर साम्य भाव धारण कर आत्म-स्वरूप में लीन होने का प्रयास करे।

(iii) प्रत्येक अष्टमी तथा चतुर्दशी के दिन गृहस्थ सब प्रकार का भोजन त्याग कर धर्म-कथा श्रवण करने में अपना समय व्यतीत करे।

(iv) सभी अतिथियों विशेष रूप से मुनि लोगों का स्वागत करना प्रत्येक गृहस्थ का धर्म है।

(6) जैन मुनियों के लिए पाँच महाव्रतों का पालन करना आवश्यक है। इन व्रतों का पालन करना गृहस्थों के लिए सम्भव नहीं है। ये पाँच महाव्रत निम्न-लिखित हैं—

(i) अहिंसा महाव्रत—किसी भी प्राणी को बिना जाने-बूझे भी हिंसा करना पाप है।

(ii) असत्य त्याग महाव्रत—सत्य और प्रिय भाषण करना, असत्य का त्याग करना महाव्रत कहलाता है। यदि कोई बात सत्य भी हो, परन्तु कटु हो तो उसे नहीं बोलना चाहिए।

(iii) अस्तेय महाव्रत—किसी दूसरे की किसी भी वस्तु को उसकी अनुमति के बिना ग्रहण न करना अस्तेय महाव्रत कहलाता है।

(iv) ब्रह्मचर्य महाव्रत—अपने विपरीत लिंग के व्यक्ति से किसी भी प्रकार का संसर्ग रखना प्रत्येक मुनि के लिए निषिद्ध है।

(v) अपरिग्रह महाव्रत - किसी भी व्यक्ति, रस या व्यक्ति के साथ अपना सम्बन्ध न रखना तथा सबसे निर्लिप्त रहकर जीवन व्यतीत करना अपरिग्रह व्रत कहलाता है।

(7) साधना या विनय के मार्ग में महावीर स्वामी के तीन साधन बताये हैं जिन्हें त्रिरत्न कहा जाता है। ये त्रिरत्न निम्न हैं—

(i) सम्यक ज्ञान, (ii) सम्यक दर्शन, (iii) सम्यक चरित्र।

सम्यक ज्ञान का अर्थ है—सच्चा और पूर्ण ज्ञान यह ज्ञान तीर्थंकरों के उप-देशों को ध्यानपूर्वक अध्ययन करने से प्राप्त होता है। सम्यक् दर्शन का अर्थ तीर्थं-करों में पूर्ण विश्वास है। सम्यक चरित्र का तात्पर्य सदाचारमय नैतिक जीवन से है।

(8) जैन धर्म में अहिंसा को प्रधान स्थान प्राप्त है। जैन जीवधारी और जड़ दोनों के प्रति अहिंसा का उपदेश देते हैं। जैन धर्म कर्म पर अत्यधिक बल देता है। इसी से जीव की मुक्ति मिल सकती है। इस धर्म में तपस्या का मुख्य स्थान है। मन, वाणी और कर्म की पवित्रता, अहिंसा, दया, तृष्णा, त्याग और कठोर आत्म-संयम

आदि नियमों का पालन करने से मनुष्य आवागमन से मुक्त हो, मोक्ष को प्राप्त कर सकता है।

प्रश्न 3—बौद्ध धर्म के उदय के क्या कारण थे? इस धर्म की प्रमुख शिक्षाओं पर प्रकाश डालिए।

(1985, 89)

उत्तर—बौद्ध धर्म से पूर्व सामान्य जन सामाजिक असमानताओं, धार्मिक कर्मकाण्डों एवं जटिल दर्शनिक सिद्धान्तों से ऊब चुका था। फलस्वरूप, प्राचीन धर्म के आडम्बरहीन, सरल तथा सुगम स्वरूप को गौतम बुद्ध ने जनता के सम्मुख एक नवीन रूप में रक्खा। इसी धर्म को बौद्ध धर्म के नाम से जाना जाता है। सामाजिक विषय परिस्थिति के कारण बौद्ध धर्म का उदय हुआ।

बौद्ध धर्म के सिद्धान्त—महात्मा बुद्ध के नैतिक उपदेशों को "अर्य-सत्य-चतुष्टय" अर्थात् चार आर्य सत्य कहा जाता है। ये चार आर्य सत्य इस प्रकार हैं—

(1) **दुःख**—महात्मा बुद्ध के अनुसार संसार में दुःख ही दुःख हैं। जन्म, मरण, वृद्धावस्था तथा रोग ये सब दुःख हैं। किसी व्यक्ति की इच्छा पूरा न होना भी दुःख है।

(2) **दुःख समुदाय**—दुःख के कारणों को समुदाय कहते हैं। महात्मा बुद्ध ने संसार के निवासियों को दुःख का कारण समझाया। महात्मा बुद्ध ने एक अनुभवी वैद्य की भाँति "दुःख रूपी महारोग" का निदान किया तथा संसार को उसका कारण बतलाया। उनके अनुसार, इस दुःख का मूल कारण तृष्णा है। इसी तृष्णा से ममता, राग, अहंकार तथा द्वेष आदि विकार उत्पन्न होते हैं।

(3) **दुःख निरोध**—महात्मा बुद्ध ने बताया कि जब दुःख का कारण ज्ञात हो जाय तो उसे दूर करना भी आवश्यक है। बुद्ध के अनुसार तृष्णा के समाप्त होने से जन्म-मरण, जरा-व्याधि समाप्त हो जाते हैं। सम्पूर्ण तृष्णा क्षय और दुःख रहित अवस्था का नाम निर्वाण है।

(4) **दुःख निरोधी मार्ग**—महात्मा बुद्ध ने बताया कि दुःख को समाप्त करने तथा तृष्णा के क्षय के लिए आठ साधन हैं। महात्मा बुद्ध उनको अष्टांग कहते थे। ये निम्नलिखित हैं—

(i) सम्यक दृष्टि, (ii) सम्यक संकल्प, (iii) सम्यक नाम, (iv) सम्यक कर्मान्ति, (v) सम्यक जीविका, (vi) सम्यक व्यायाम, (vii) सम्यक स्मृति और, (viii) सम्यक समाधि।

महात्मा बुद्ध के द्वारा बताया गया मार्ग मध्यम मार्ग है। इसमें अति का सर्वत्र विरोध किया गया है। बौद्ध धर्म में कठोर व्रत और तप आदि पर बल नहीं देता है।

महात्मा बुद्ध ने मध्यम मार्ग पर विशेष बल दिया। परन्तु इसके साथ-साथ उन्होंने नैतिक शील पर भी अधिक बल दिया। महात्मा बुद्ध का कथन था कि इन शीलों का पालन करना प्रत्येक व्यक्ति का कर्त्तव्य है। महात्मा बुद्ध के अनुसार ये शील निम्नलिखित हैं—

(i) अहिंसा, (ii) अस्तेय, (iii) सत्य, (iv) अपरिग्रह, (v) ब्रह्मचर्य, (vi) नृत्य-गान का त्याग, (vii) सुगन्धित पदार्थों का त्याग, (viii) असमय में भोजन का त्याग, (ix) कोमल शय्या का त्याग और (x) कामिनी-कंचन का त्याग।

उपर्युक्त दस शीलों में से पाँच शील गृहस्थ-उपासकों और अन्तिम भिक्षुओं के लिए हैं।

प्रश्न 4—कन्फ्यूशियस कौन थे ? उनके उपदेशों का उल्लेख कीजिए। (1987)

उत्तर—कन्फ्यूशियस—कन्फ्यूशियस चीन का एक महान दार्शनिक समाज सुधारक और धर्म का संस्थापक था। चीन के निवासी कन्फ्यूशियस को राजा फूत्से कहते हैं। उनका जन्म एक अभिजात कुल में हुआ था। वे महावीर तथा बुद्ध के समकालीन थे। उनका जन्म ई० पू० 551 तथा मृत्यु 479 ई० पू० में हुई थी। कन्फ्यूशियस के समय में चीन की राजनीतिक और सामाजिक दशा बहुत शोचनीय थी। इसलिए उसने तत्कालीन विकृतियों को दूर करने के लिए प्रभावशाली प्रयत्न किये। अपने उद्देश्य में सफल होने के लिए उसने बहुत से व्यावहारिक नियम बनाये जिन्हें कन्फ्यूशियस धर्म के सिद्धान्त कहा जाता है।

कन्फ्यूशियस धर्म के सिद्धान्त—कन्फ्यूशियस धर्म के प्रमुख सिद्धान्त इस प्रकार हैं—

(1) यह धर्म शिष्टाचार के विभिन्न सिद्धान्तों पर बल देता है। यह धर्म ईश्वर के अस्तित्व, अगले जीवन तथा जादू-टोने पर मौन है।

(2) यह धर्म विनम्रता पर विशेष बल देता है। यह धर्म सिखाता है कि अन्य शक्तियों के साथ विनम्रता के साथ व्यवहार करना चाहिए।

(3) इस धर्म के अनुसार आप जिस व्यवहार की आशा दूसरों से नहीं करते, उसे आपको दूसरों से नहीं करना चाहिए।

(4) अपनी त्रुटि को स्वीकार कर लेना मनुष्य का एक विशेष गुण है।

(5) इस धर्म के अनुसार, "एक व्यक्ति जो गलती करता है और अपनी गलती को स्वीकार नहीं करता, वह और गलती करता है।"

(6) इस धर्म के नियम अत्यन्त व्यावहारिक हैं। इस धर्म में राजा-प्रजा, पिता-पुत्र, पति-पत्नी, छोटे भाई और बड़े भाई के सम्बन्ध सुधारने पर बल दिया गया है।

(7) इस धर्म के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को अपने माता-पिता, गुरुजन तथा पूर्वजों का आदर करना चाहिए।

(8) इस धर्म के अनुसार, मनुष्य को न्याय, ईमानदारी, सत्यता और कर्त्तव्य पर दृढ़ रहना चाहिए।

(9) इस धर्म के अनुसार जो शिक्षित व्यक्ति हैं, उनको दूसरों का आचरण सुधारने का प्रयास करना चाहिए।

(10) इस धर्म के सिद्धान्त कन्फ्यूशियस द्वारा रचित पाँच धर्म पुस्तकों में मिलते हैं। इनको पाँच महाकाव्य या कालजयी ग्रन्थ कहा जाता है।

प्रश्न 5—पारसी धर्म के संस्थापक कौन थे ? इस धर्म की प्रमुख शिक्षाओं का वर्णन कीजिए। (1984, 85)

उत्तर—पारसी धर्म—प्राचीन ईरानियों का मुख्य धर्म पारसी था। इसकी आधारशिला जरथुष्ट्र ने ई० पू० 7वीं शताब्दी में रखी थी। जरथुष्ट्र का नाम

संसार के उन महान् व्यक्तियों में गिना जाता है जिन्हें ईसा, मुहम्मद, बुद्ध और महावीर की भाँति एक नये धर्म की आधारशिला रखने का श्रेय है। जरथुष्ट्र द्वारा चलाया गया धर्म उन्हीं के नाम पर जरथुष्ट्र धर्म या पारसी धर्म कहलाता है। जरथुष्ट्र को यूनानी भाषा में जरोस्टर कहा जाता है। जरथुष्ट्र ने प्राचीन ईरानी धर्म में कुछ सुधार किया। उसने प्राचीन धर्म में कुछ नये सिद्धान्तों का समावेश किया। उन्होंने एक ईश्वर की विचारधारा का समर्थन किया।

पारसी धर्म के सिद्धान्त—पारसी धर्म के मुख्य सिद्धान्त इस प्रकार हैं—

(1) मनुष्य का कर्त्तव्य है कि वह अपने में अच्छाइयाँ उत्पन्न करे जिससे श्रेष्ठ शक्तियों को वल मिल सके।

(2) इस धर्म में सूर्य और अग्नि की पूजा की जाती है।

(3) इस धर्म के अनुसार एक दिन कयामत का दिन आयेगा। उस दिन मुर्दे (Dead) जीवित हो जायेंगे। तभी उनकी अच्छाइयों तथा बुराइयों का निर्णय किया जायगा। इस धर्म के अनुसार दूध का दूध और पानी का पानी हो जायगा। ईसाई धर्म में यह विचार पारसी धर्म से ही लिया गया है।

(4) पारसी धर्म के मुख्य सिद्धान्त पारसियों की धार्मिक पुस्तक "अवेस्ता-ए-जेंद" में मिलते हैं।

(5) जैसा कि बताया जा चुका है, जरथुष्ट्र के अनुसार विश्व में दो शक्तियाँ मौजूद हैं अहुर माजदा और अहिरमान। पहला अच्छी शक्तियों का प्रतीक है और द्वितीय बुरी शक्तियों का प्रतीक है। इन दो शक्तियों में निरन्तर संघर्ष होता रहता है। प्रत्येक दशा में विजय अहुर माजदा की होगी। उस समय विश्व का आचरण बदल जायगा। समस्त विश्व सदाचारी हो जायगा।

(6) पारसी धर्म प्राचीन ईरानियों का धर्म है, अर्थात् यह प्राचीन ईरानियों का मुख्य धर्म था।

प्रश्न 6—इस्लाम धर्म के प्रमुख सिद्धान्तों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—इस्लाम धर्म के प्रमुख सिद्धान्त—इस्लाम धर्म के प्रमुख सिद्धान्त हैं—

(1) खुदा (भगवान) एक है। उसी की पूजा (इबादत) की जानी चाहिए।

(2) इस्लाम धर्म अनेक देवी-देवताओं के अस्तित्व में विश्वास नहीं करता। यह धर्म केवल एक भगवान में विश्वास करता है।

(3) मुसलमान मूर्ति पूजा में विश्वास नहीं करते। इस्लाम धर्म मूर्ति पूजा की आज्ञा नहीं देता।

(4) खुदा सर्व-व्यापक है। इसी कारण नमाज कहीं भी अदा की जा सकती है।

(5) इस्लाम धर्म में शराब पीने की आज्ञा नहीं है।

(6) इस्लाम धर्म यह मानता है कि प्रत्येक व्यक्ति को उसके कर्मों का फल—अच्छा या बुरा अवश्य मिलेगा।

(7) इस्लाम धर्म के अनुसार संसार में एक दिन कयामत (प्रलय) अवश्य आयगी। उस दिन खुदा सबके विषय में अपना निर्णय देगा।

(8) इस्लाम धर्म में ऋण पर ब्याज लेना मना है। सूद लेना बुरा समझा जाता है।

(9) इस्लाम धर्म के अनुसार, उसके अनुयायी पुरुष अनेक स्त्रियों से विवाह कर सकते हैं।

(10) इस्लाम धर्म के अनुसार स्त्रियों को पर्दे में रहना चाहिए।

(11) इस्लाम धर्म के अनुसार पुरुष तथा स्त्री समान नहीं हैं।

(12) यह धर्म पैगम्बरों पर विश्वास करता है। वे भगवान का सन्देश लाते हैं।

(13) जो कुछ कुरान में लिखा है, वह खुदा ने स्वयं लिखा है। खुदा ने ये शब्द मुहम्मद साहब को सुनाये थे।

(14) इस्लाम धर्म स्वर्ग और नर्क में विश्वास करता है।

(15) मुसलमान कयामत में विश्वास करते हैं। इस दिन मुर्दे उठ खड़े होते हैं।

(16) भगवान की इच्छा ही मनुष्य का निर्णय करती है।

(17) मुसलमानों की अच्छी आत्माएँ स्वर्ग जाती हैं। वहाँ दास और स्त्रियाँ उनकी सेवा करती हैं।

(18) इस धर्म में समानता और भाई-चारे पर बल दिया जाता है।

(19) बुरी आत्माएँ नर्क जाती हैं। यही उनका दण्ड है।

(20) इस धर्म में मसजिद का निर्माण इस कारण किया जाता है कि सभी मुसलमान एकत्रित होकर नमाज अदा कर सकें।

(21) प्रत्येक मुसलमान को निम्नलिखित कार्य करने पड़ते हैं—

(i) उसे नित्य निम्नलिखित कलमा पढ़ना चाहिए—

"खुदा एक है। खुदा के अतिरिक्त और कोई नहीं है। मुहम्मद साहब उसके पैगम्बर हैं।"

(ii) एक मुसलमान को दिन में 5 बार नमाज पढ़ना चाहिए।

(iii) रमजान के माह में प्रत्येक मुसलमान को रोजा रखना चाहिए।

(iv) प्रत्येक मुसलमान को दान देना अनिवार्य है। यदि किसी मुसलमान के पास कुछ धन है तो उसे दान अवश्य देना चाहिए।

(v) प्रत्येक मुसलमान को अपने जीवन में कम से कम एक बार मक्का हज करने अवश्य जाना चाहिए।

प्रश्न 7—ईसाई धर्म के प्रवर्त्तक कौन थे? उनकी प्रमुख शिक्षाओं का वर्णन कीजिए। (1989)

उत्तर—ईसाई धर्म के प्रवर्तक ईसा मसीह थे। उनका जन्म जेरुसलम के निकट बेथलम में हुआ था। आगे चलकर ईसाई धर्म दो सम्प्रदायों में विभक्त हो गया—कैथोलिक और प्रोटेस्टेन्ट।

ईसाई धर्म की प्रमुख शिक्षाएँ—ईसाई धर्म की प्रमुख शिक्षाएँ इस प्रकार हैं—

(1) ईश्वर एक है। केवल उसी की उपासना की जानी चाहिए।

(2) ईश्वर सबका पिता है। वह सबको प्यार करता है। वह निर्धन तथा असहायों से विशेष प्रेम करता है।

(3) शुद्ध हृदय से प्रायश्चित करने पर वह पापियों को क्षमा कर देता है।

(4) पवित्र हृदय वाला चरित्रवान व्यक्ति असहायों तथा दुःखी जनों की सेवा करके ही ईश्वर की कृपा प्राप्त कर सकता है।

प्रश्न 8—सिक्ख धर्म किसने चलाया? इस धर्म की प्रमुख शिक्षाओं का वर्णन कीजिए। (1985)

उत्तर—सिक्ख धर्म गुरु नानक देव ने चलाया था। गुरु नानक देव सिक्ख धर्म के प्रथम गुरु थे। इस परम्परा में दस गुरु हुए हैं। अन्तिम गुरु, गुरु गोविन्द सिंह थे। सिक्ख धर्म दसों गुरुओं के उपदेशों और शिक्षाओं का संकलित रूप है। गुरु नानक देव की शिक्षाएँ एवं उपदेश जिस ग्रन्थ में संकलित हैं, उसे 'गुरु ग्रन्थ साहब' कहा जाता है। यह ग्रन्थ सिक्ख धर्म की पवित्र पुस्तक है।

सिक्ख धर्म की शिक्षाएँ—गुरु वाणी ही सिक्ख धर्म की शिक्षाएँ और सिद्धांत हैं जो निम्नलिखित हैं।

(1) ईश्वर एक है। वह निराकार, अलख अजर और अमर है। सभी धर्म। उसी एक परमपिता परमेश्वर को अलग-अलग नाम से सम्बोन्धित करते हैं।

(2) गुरु के माध्यम से ही भगवत प्राप्ति हो सकती है। अतः गुरु में विश्वास रखना चाहिए।

(3) सभी एक ही ईश्वर की सन्तान हैं और समान हैं। अतः जाति-प्रथा और छुआछूत सामाजिक कलंक हैं।

(4) मनुष्य को श्रेष्ठ कर्म करना चाहिए और छल-कपट, मद्यपान, धूम्रपान आदि दुर्गुणों से दूर रहना चाहिए।

(5) अन्ध विश्वासों, कर्मकाण्डों आदि से दूर रहना चाहिए। गुरु नानक का कहना था कि जो व्यक्ति अच्छे विचार रखता है। वही धार्मिक है।

(6) मूर्तिपूजा एक आडम्बर है और बहुदेववाद निराधार एवं निरर्थक हैं।

(7) प्रत्येक सिक्ख के लिए 'पाँच ककार' केश, कड़ा, कंघा, कच्छा और कृपाण धारण करना आवश्यक है। यह अन्तिम गुरु का उपदेश था।

प्रश्न 9—यहूदी धर्म की प्रमुख शिक्षाओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर—प्राचीन समय में यह धर्म पश्चिमी एशिया के फिलिस्तीन राज्य में विकसित हुआ। यह हिब्रू अथवा यहूदी लोगों का धर्म है। मूसा ने इस धर्न को संगठित किया था। जब हिब्रू लोगों पर मिस्र के शासक ने बहुत अत्याचार किया तो वे ई० पू० की 13वीं शती में मूसा के नेतृत्व में फिलिस्तीन चले गये। मूसा के संगठन करने से पूर्व हिब्रू लोग अनेक देवताओं पर विश्वास करते थे। अब मूसा ने विभिन्न कबीलों को संगठित किया। इसके पश्चात् उन लोगों ने यहवे अथवा जेहोवा को अपना भगवान स्वीकार किया। यहूदी ऐसा विश्वास करते हैं कि स्वयं भगवान ने मूसा के माध्यम से

दस उपदेश प्रसारित किए। इन उपदेशों की विशेषता यह है कि इनमें एक ईश्वर में आस्था प्रकट की गई है।

फिलिस्तीन में हिब्रू लोगों ने राजतन्त्रात्मक शासन पद्धति वाले एक संयुक्त राज्य की स्थापना की। जेरूसलम इस राज्य की राजधानी बनाई गई। आधुनिक समय में जेरूसलम विश्व के तीन महान् धर्मों की पवित्र भूमि बन गया है। ये धर्म हैं। यहूदी धर्म, ईसाई धर्म और इस्लाम धर्म। हिब्रू राजा अनेक हुए हैं। परन्तु उनमें सोलोमन सबसे अधिक प्रसिद्ध हुआ है।

यहूदी धर्म के सिद्धान्त—यहूदी धर्म के प्रमुख सिद्धान्त इस प्रकार हैं—

(1) यह धर्म एक ईश्वर में विश्वास करता है।

(2) यहूदियों का ईश्वर यहवा है। यहवा अपने लोगों से प्यार करता है।

(3) जब मनुष्य कुमार्ग पर चलता है तो यहवा उससे बदला लेता है।

(4) यहूदी यह विश्वास करते हैं कि विश्व को पापों से छुटकारा दिलाने उनका मसीहा एक दिन पृथ्वी पर आएगा।

(5) परन्तु इस मसीहा ने अभी तक जन्म नहीं लिया है।

(6) ईश्वर बड़ा दयालु है। वह पश्चाताप करने वाले पापी को भी माफ कर देता है।

(7) यहूदी धर्म के कर्मकाण्ड पर बल नहीं दिया गया है। यह धर्म नैतिकता पर बल देता है।

(8) यहूदियों का धर्म ग्रन्थ "ओल्ड टैस्टामैन्ट"

(9) 'एपोकूफा' भी यहूदियों की पवित्र धर्म पुस्तक है।

(10) ओल्ड टैस्टामैन्ट और एपोकूपा में यहूदियों का इतिहास है। इसमें धार्मिक नैतिक नियमावली भी है जिसका प्रत्येक यहूदी को पालन करना चाहिए। इन पुस्तकों में चिकित्सा तथा ज्योतिष की भी बातें हैं। ये पुस्तकें यहूदियों तथा ईसाइयों दोनों के लिए पवित्र तथा पूज्य है।

परीक्षा में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1—गुरु नानक का जन्म कहाँ हुआ ? (1984, 86)

(क) अमृतसर। (ख) ननकाना साहब।
(ग) जालन्धर। (घ) लाहौर।

उत्तर—(ख) ननकाना साहब।

प्रश्न 2—शंकराचार्य कौन थे ? (1986)

(क) महाभारत के रचयिता। (ख) प्रसिद्ध गणितज्ञ।
(ख) महान दार्शनिक (घ) महान सेनापति।

उत्तर—(ग) महान दार्शनिक।

प्रश्न 3—ईसाई धर्म का पवित्र ग्रन्थ कौन-सा है ? (1987)

(क) वेद। (ख) कुरान।
(ग) पुराण (घ) बाइबिल।

उत्तर—(ख) बाइबिल।

प्रश्न 4—कन्फ्यूशियस कौन था? (1987)

(क) चीन का धर्म सुधारक। (ख) पारसी धर्म का प्रवर्त्तक।
(ग) रूसी क्रान्ति का नेता। (घ) यूनानी दार्शनिक।

उत्तर—(क) चीन का धर्म सुधारक।

प्रश्न 5—मार्टिन लूथर था— (1988)

(क) राजा। (ख) दार्शनिक।
(ग) वैज्ञानिक। (घ) समाज सुधारक।

उत्तर—(घ) समाज सुधारक।

प्रश्न 6—पारसी धर्म का पवित्र ग्रन्थ है— (1989)

(क) बाइबिल। (ख) कुरान।
(ग) इन्जील। (घ) अवेस्ता-ए-जेन्द।

उत्तर—(घ) अवेस्ता-ए-जेन्द।

□

5 मध्यकालीन संसार

अति लघुउत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—भारत में मध्य युग का आरम्भ कब से माना जाता है ?

उत्तर—भारत में मध्य युग का आरम्भ राजपूत जाति के अभ्युदय के साथ माना जाता है ।

प्रश्न 2—तराईन की कितनी लड़ाइयाँ हुईं और किस-किस के बीच हुई ?

उत्तर—तराईन की दो लड़ाइयाँ हुईं जो निम्नलिखित हैं—(i) 1191 ई० में पृथ्वीराज चौहान और मुहम्मद गोरी के बीच । (ii) 1192 ई० में पृथ्वीराज चौहान और मुहम्मद गोरी के बीच ।

प्रश्न 3—खुजराहो कहाँ स्थित है और क्यों प्रसिद्ध है ? (1988)

उत्तर—खुजराहो मध्यप्रदेश में छतरपुर जिले के निकट स्थित है । यह अपने भव्य मन्दिरों के लिए प्रसिद्ध है । यह चंदेल नरेशों द्वारा बनवाये गये थे ।

प्रश्न 4—सोमनाथ पर किसने और कब आक्रमण किया ? (1988, 90)

उत्तर—1026 ई० में महमूद गजनवी ने सोमनाथ पर आक्रमण किया ।

प्रश्न 5—देवगिरि तथा द्वारसमुद्र में कौन से राजपूत वंश राज्य कर रहे थे ?

उत्तर—देवगिरि में यादव तथा द्वारसमुद्र में होयसल राजपूत वंश राज्य कर रहे थे ।

प्रश्न 6—गीत गोविन्द को किसने और किसके काल में लिखा था ? (1986)

उत्तर—जयदेव ने कन्नौज के राजा लक्ष्मण सेन के शासन काल में "गीत गोविन्द" लिखा था ।

परीक्षा में पूछे गये अति लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1—मध्य युग में जिस भारतीय सन्त ने हिन्दू-मुस्लिम एकता पर सबसे अधिक बल दिया, उसका नाम लिखिए । (1984)

उत्तर—मध्य युग में हिन्दू-मुस्लिम एकता पर सबसे अधिक बल देने वाले भारतीय सन्त का नाम कबीर दास था ।

प्रश्न 2—मध्य युगीन भारत के सन्तों की शिक्षाओं में पायी जाने वाली किसी एक समानता का उल्लेख कीजिए । (1985)

उत्तर—मध्ययुगीन भारत के सन्तों की शिक्षाओं में पायी जाने वाली एक समानता 'जाति-पाँति का विरोध' है ।

प्रश्न 3—सोमनाथ के मन्दिर पर प्रथम आक्रमण किसने किया। (1985)
उत्तर—सोमनाथ के मन्दिर पर प्रथम आक्रमण महमूद गजनवी ने किया।

प्रश्न 4—मध्यकालीन भारत में भक्ति आन्दोलन के दो सन्तों के नाम लिखिए। (1988)
उत्तर—मध्यकालीन भारत में भक्ति आन्दोलन के दो सन्तों के नाम—
(1) कबीरदास, (2) गुरू नानक देव।

अन्य महत्वपूर्ण अति लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 5—भारत में मुस्लिम राज्य की स्थापना कब और किस शासक द्वारा की गयी ?

उत्तर—भारत में मुस्लिम राज्य की स्थापना ग्यारहवीं शताब्दी के अन्त में मुहम्मद गोरी द्वारा की गयी।

प्रश्न 6—भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना किसने की ?
उत्तर—भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना बाबर ने की।

प्रश्न 7—बाबर ने भारत पर कब आक्रमण किया ?
उत्तर—बाबर ने भारत पर सन् 1526 ई० में आक्रमण किया।

प्रश्न 8—भारत में राष्ट्रीय और धार्मिक एकता की स्थापना किस मुगल सम्राट ने की थी ?

उत्तर—भारत में राष्ट्रीय और धार्मिक एकता की स्थापना मुगल सम्राट अकबर ने की थी।

प्रश्न 9—भारत में मुगल साम्राज्य के पतन के लिए कौन-सा शासक उत्तरदायी माना जाता है ?

उत्तर—भारत में मुगल साम्राज्य के पतन के लिए औरंगजेब को उत्तरदायी माना जाता है।

प्रश्न 10—'पृथ्वीराज रासो' ग्रन्थ का रचयिता कौन था और यह ग्रन्थ किसके काल में लिखा गया ?

उत्तर—'पृथ्वीराज रासो' ग्रन्थ के रचयिता राजकवि चन्दवरदायी थे। यह ग्रन्थ पृथ्वीराज चौहान के शासन काल में लिखा गया।

प्रश्न 11—तानसेन कौन था और वह क्यों प्रसिद्ध है ?

उत्तर—'तानसेन अकबर के दरबार के नवरत्नों में से एक था। वह उच्चकोटि का संगीतज्ञ होने के कारण प्रसिद्ध है।

लघुउत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—राजपूतों के उत्तर भारत में कौन-कौन से प्रमुख राजवंश थे ?

उत्तर—उत्तर भारत में राजपूतों के प्रमुख राजवंश—उत्तर भारत में राजपूतों के प्रमुख राजवंश निम्नलिखित थे—

1. कन्नौज में गुर्जर प्रतिहार राजवंश।
2. दिल्ली और अजमेर में चौहान राजवंश।
3. बुन्देल खण्ड में चन्देल वंश।
4. मालवा में परमार राजवंश।

5. गुजरात का सोलंकी राजवंश।
6. बिहार तथा बंगाल के पाल तथा सेनवंश।

प्रश्न 2—राजपूत कालीन साहित्य वीर रस प्रधान क्यों था? (1987)

उत्तर—राजपूत राजा परम वीर, महान आदर्शवादी और साहसी योद्धा होते थे। इस काल में प्रायः छोटी-छोटी बातों पर युद्ध छिड़ जाते थे। इस कारण यह काल युद्धों का काल था। राजाओं के दरबार में प्रायः राजकवि रहते थे जो राजाओं को उत्साहित करने के लिए वीररस से ओत-प्रोत कविताएँ सुनाया करते थे। चारणों ने वीरगाथाओं के रूप में वीर रस प्रधान रचनाएँ कीं। इसी कारण राजपूत कालीन साहित्य वीर रस प्रधान था।

प्रश्न 3—राजपूत समाज में सती-प्रथा तथा जौहर-प्रथा से क्या समझते हो? (1987)

उत्तर—राजपूत समाज में सती और जौहर-प्रथा—भारतीय स्त्रियाँ सामूहिक रूप से अग्निकुण्ड प्रज्वलित कर अपने सतीत्व और नारीत्व की रक्षा करती थीं। इस प्रथा को जौहर-प्रथा कहते थे। पति की मृत्यु पर यदि स्त्री भी उसी चिता के साथ जल जाती थी तो इसे सती-प्रथा कहते थे।

प्रश्न 4—शंकराचार्य कौन थे और क्यों प्रसिद्ध हैं? (1984, 87)

उत्तर—शंकराचार्य—शंकराचार्य एक महान धार्मिक नेता थे। 788 ई० में दक्षिण के केरल प्रान्त में इनका जन्म हुआ था। उनके प्रयासों के फलस्वरूप देश में ब्राह्मण धर्म का पुनः उत्थान हुआ। हिन्दू धर्म के प्रसार और प्रचार के लिए उन्होंने देश के चारों कोनों पर मठों की स्थापना की। उनके द्वारा प्रतिपादित मायावाद और अद्वैतवाद के कारण बौद्ध उनकी ओर आकर्षित हुए। वे यद्यपि ब्रह्म और आत्मा को एक मानते थे। तथापि वैदिक धर्म के अधिष्ठाता के रूप में उनको व्यापक प्रसिद्धि प्राप्त हुई। केवल 38 वर्ष की अल्प आयु में ही वे इस संसार से विदा हो गये।

प्रश्न 5—शैव तथा वैष्णव मत से तुम क्या समझते हो?

उत्तर—शैव मत—शिवजी में आस्था रखकर पूजा-अर्चना करने वाले संगठन को शैव मत कहा गया। भारत की अधिकांश जनता शैव मत की उपासक थी। शिव-मन्दिरों का निर्माण अधिक संख्या में किया गया था। अधिकांश राजपूत राजा शैव-मत के अनुयायी थे। शैव मत अनेक सम्प्रदायों में विभाजित हो गया था, जैसे—पशुपति, कापालिक और कालमुख आदि।

वैष्णव मत—भगवान विष्णु में आस्था रखकर पूजा-अर्जना करने वाले संगठन को वैष्णव मत कहा गया। राम और कृष्ण को विष्णु का अवतार माने जाने के कारण दक्षिण भारत में वैष्णव मत का अत्यधिक प्रचार हुआ।

परीक्षा में पूछे गये लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 6—भारत में मध्ययुगीन भक्ति आन्दोलन की चार विशेषताएँ लिखिये। (1984)

उत्तर—मध्य युग में भारतीय समाज में अनेक कुरीतियाँ और अन्ध-विश्वास व्याप्त थे। इन्हें दूर करने के लिए अनेक साधू-सन्त और सुधारक हुए जिन्होने ईश्वर की भक्ति पर विशेष बल दिया और धर्म का एक आन्दोलन चलाया जो इतिहास में भक्ति

आन्दोलन के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस भक्ति आन्दोलन की चार विशेषताएँ निम्न-लिखित हैं—

(1) भक्ति आन्दोलन ने सच्ची भक्ति ओर ईश्वर प्रेम पर बहुत जोर दिया।

(2) इस आन्दोलन ने जाति-पाँति, ऊँच-नीच और छुआछूत की भावना को दूर करने पर विशेष जोर दिया।

(3) भक्ति आन्दोलन ने चरित्र और मन की पवित्रता पर बल दिया।

(4) इस आन्दोलन ने हिन्दू-मुस्लिम एकता स्थापित करने का भरसक प्रयास किया।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—राजपूत कालीन सभ्यता तथा संस्कृति का वर्णन कीजिए।

उत्तर— राजपूतकालीन सभ्यता तथा संस्कृति

अनेक जातियों का उदय—राजपूत युग में चार जातियों के अतिरिक्त और भी अनेक उपजातियाँ विकसित हुईं। प्रादेशिक सीमाओं के आधार पर अनेक जातियाँ बन गईं, जैसे—कान्यकुब्ज, गौड़ तथा तेलगू आदि। पेशे के आधार पर भी अनेक जातियाँ बन गईं, जैसे—लुहार बढ़ई, सुनार तथा खटीक आदि। इस प्रकार राजपूत युग में जिस जातीय जटिलता का विकास हुआ, वह किसी सीमा तक आज भी बना हुआ है।

ब्राह्मणों का समाज में स्थान—ब्राह्मणों का समाज में विशेष आधिपत्य था। प्रायः मन्त्री पद ब्राह्मणों को ही दिया जाता था। अलमसउदी के अनुसार, ब्राह्मण मुख्य रूप से अध्ययन और अध्यापन का कार्य करते थे। ब्राह्मणों को प्राणदण्ड नहीं दिया जाता था। ब्राह्मण भी अनेक उपजातियों में विभाजित हो गये थे। शर्मा, द्विवेदी, चतुर्वेदी तथा पाण्डेय आदि ब्राह्मणों की शाखाएँ थीं।

कायस्थ—राजपूत युग में एक नवीन जाति का और उदय हो गया था जो कायस्थ कहलाती थी। कायस्थ लिपिक (लिखने) का कार्य करते थे।

रूढ़िवादिता का नियम—इस युग के भारतीयों का दृष्टिकोण अत्यन्त सीमित हो गया था। उनमें अन्धविश्वास, रूढ़िवादिता तथा अनुदारता जैसे अवगुण उत्पन्न हो गये थे।

स्त्रियों की दशा—इस समय स्त्रियों की दशा गिरती जा रही थी। वे हर प्रकार के अधिकारों से वंचित थीं। बाल-विवाह और बहु-विवाह के कारण उनकी दशा और भी शोचनीय हो गई थी। सती-प्रथा का अत्यधिक प्रचलन था। यदि स्त्रियाँ स्वेच्छा से सती नहीं होती थीं तो उन्हें सती होने के लिए बाध्य किया जाता था। उस समय विधवा-विवाह का प्रचलन नहीं था।

राजपूतों का चरित्र—राजपूत वीर, आदर्शवादी तथा साहसी होते थे। वे युद्ध के नियमों का पालन प्राणों से भी अधिक करते थे। राजपूत शरणागत को अभयदान करते थे और पराजितों के साथ अच्छा व्यवहार करते थे। वे युद्ध में विश्वासघात करना पाप मानते थे। परन्तु राजपूतों में ऐसे अनेक अवगुण भी थे जिनके कारण उन्हें मुस्लिम शासकों के आगे पददलित होना पड़ा। विलासिता, परस्पर वैमनस्य तथा अकड़ आदि उनके प्रमुख अवगुण थे। राजपूत समाज अनेक अन्ध-विश्वासों से ग्रसित था।

दार्शनिक साहित्य—जैन, बौद्ध तथा ब्राह्मण दार्शनिकों ने अनेक ग्रन्थों की रचना की। ज्ञानश्री, कमलशील तथा शान्तिरक्षित प्रसिद्ध बौद्ध दार्शनिक थे। जैन दार्शनिकों में हरिभद्र, विद्यानन्द, हेमचन्द्र आदि के नाम महत्वपूर्ण हैं। जयन्त भट्ट, वाचस्पति मिश्र और उदयनाचार्य भी इस युग के महान लेखक थे। उदयनाचार्य ने लक्षणावली, बौद्धाधिकार तथा न्याय कुसुमाञ्जली आदि ग्रन्थों की रचना की थी। सांख्य योग पर भी अनेक ग्रन्थों की रचना हुई। वाचस्पति ने "सांख्य तत्व कौमुदी" नामक ग्रन्थ लिखा। मण्डन मिश्र ने विधिविवेक, भावना विवेक और विनम्र-विवेक आदि प्रसिद्ध ग्रन्थ लिखे।

व्याकरण तथा कोष—पुरुषोत्तमदेव ने "त्रिकाण्ड शेष" और 'हारावली' नामक शद कोष लिखे। हेमचन्द ने 'काव्यानुशान' की रचना की। भोज का 'सरस्वती कण्ठाभरण' एक प्रसिद्ध ग्रन्थ था।

ललित साहित्य—भवभूति इस काल के प्रसिद्ध नाटकार थे। 'मालती माधव', 'महावीर चरित्र' और 'उत्तरराम चरित' इनके लिखे प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं। माघ ने शिशुपाल वध नामक महाकाव्य की रचना की। राजशेखर एक महान नाटककार था। उसने कर्पर मंजरी, विद्वशाल मंजिका, बाल रामायण आदि ग्रन्थों की रचना की। जयदेव इस युग के महान गीतिकार थे।

वास्तुकला—इस काल के राजपूतों के द्वारा बनवाये हुए मन्दिर वास्तुकला के श्रेष्ठ उदाहरण हैं। उस समय वास्तुकला की तीन शैलियाँ प्रचलित थीं—(i) नगर, (ii) बेसर और (iii) द्रविड़। प्रथम दो शैलियों को यूरोपीय विद्वान् इंडो-आर्य और चालुक्यों की शैली कहते हैं। 'बेसर' शैली में एक शिखर होता है। द्रविड़ शैली में छोटे-छोटे अनेक बुर्ज होते हैं। ऊपर शिखर पर एक अर्ध चन्द्राकार गुम्बज रहता है। इस शैली के मन्दिर आज भी दक्षिण में देखे जा सकते हैं। चालुक्य शैली इन दोनों के मिश्रण से बनी है। इस प्रकार के नमूने बम्बई अहाते के मध्य भाग में मिलते हैं।

उड़ीसा में भुवनेश्वर का मन्दिर, बुन्देलखण्ड में खजुराहो का मन्दिर तथा आबू पर्वत का जैन मन्दिर प्रसिद्ध इमारतें हैं। ये तीनों मन्दिर नगर श्रेणी के उत्कृष्ट नमूने हैं। आबू का जैन मन्दिर सफेद संगमरमर का बना हुआ है।

द्रविड़ शैली के उत्कृष्ट नमूने मामल्लपुरम के रथ मन्दिर, कांची का पल्लव मन्दिर, एलोरा का कैलाश मन्दिर तथा बेजोर का मन्दिर है।

चालुक्य राजाओं ने भी अनेक मन्दिर बनवाये। 12वीं शताब्दी में निर्मित बेलूर का मन्दिर एक दर्शनीय मन्दिर है। परन्तु हुलेविड का मन्दिर चालुक्यों की स्थापत्य कला का सबसे सुन्दर उदाहरण है। इसका निर्माण 1200 ई० के लगभग प्रारम्भ किया गया। परन्तु इस मन्दिर का निर्माण कभी पूरा न हो सका। इस दशा में भी इस मन्दिर की गणना देश के उच्च कोटि के मन्दिरों में की जाती है।

इस काल की विशेषता यह है कि समस्त देश में अनेक मन्दिरों का निर्माण किया गया।

प्रश्न 2—सल्तनत काल मे ...रतीय समाज की राजनैतिक और सामाजिक दशा कैसी थी? उस काल में कला और साहित्य की क्या उन्नति हुई?

उत्तर— सल्तनत काल में भारतीय समाज की राजनैतिक दशा

सन् 1000 ई० से 1526 ई० तक के काल को सल्तनत काल कहते हैं। इस काल में दिल्ली की गद्दी पर सुल्तान शासकों ने राज्य किया। मुसलमान प्रारम्भ में

धार्मिक विचारों से प्रेरित होकर भारत में आये और विजय के उपरान्त वे स्थायी रूप से भारत में बस गये। उनका राजनैतिक रूप मध्य एशिया के तुर्क सुल्तानों जैसा था। धर्म प्रधान राज्य की तरह भारत में सुल्तान भी निरंकुश शासक थे। उनका साम्राज्य उनकी राजनैतिक व्यवस्था व आर्थिक स्वरूप सैनिक संगठन और बल पर निर्भर था। सैन्यशक्ति ही राज्य की आधारशिला थी। जब-जब सैन्यशक्ति से ह्रास हुआ, सल्तनतकालीन सुल्तानों का पतन हुआ। जो शक्तिशाली रहा उसी ने देश की बागडोर को अपने हाथ में रखा।

सल्तनत काल में भारतीय समाज की सामाजिक दशा

स्त्रियों की दशा—स्त्रियों की दशा पूर्व की अपेक्षा अधिक शोचनीय हो गई थी। इस युग में भी पुत्री का जन्म अशुभ माना जाता था। अमीर से लेकर बादशाह तक पुत्र जन्म की कामना करते थे। पर्दा प्रथा ने जोर पकड़ लिया था। मुगल-शासक पर्दा प्रथा के विशेष पक्षपाती थे। राजस्थान में भी यह प्रथा नाम मात्र को थी। बाल-विवाह और बहु-विवाह ने स्त्रियों की दशा अत्यधिक शोचनीय बना दी थी। कन्याओं का विवाह 6 या 7 वर्ष की आयु में हो जाता था। अमीर सामन्तों में बहु-विवाह का प्रचलन था। एक-एक अमीर अनेक स्त्रियों से विवाह करता था। स्त्रियों को शिक्षा से वंचित रखा जाता था। राजपूत स्त्रियों का चरित्र उज्ज्वल तथा आदर्श था। सती प्रथा का प्रचलन था। अकबर ने बाल-विवाह और सती-प्रथा को रोकने का प्रयास भी किया था।

सामाजिक रीति-रिवाज—जब मुसलमान भारत में आये तो उन्होंने हिन्दुओं से सम्पर्क बढ़ाया और इस प्रकार दोनों की संस्कृतियाँ प्रभावित हुईं। भारतीयों के रीति-रिवाजों में परिवर्तन आया। तुर्कों के समय दास-प्रथा प्रचलित हुई। मुसलमान शासकों ने अपनी सुविधा के लिए, दास बना लिये, चाहे वे किसी जाति के हों। इन दासों को क्रय-विक्रय किया जाता था। मध्य एशिया दासों की बिक्री का एक मुख्य केन्द्र था। दास अपने स्वामी की सम्पत्ति के रूप में रहते थे।

कला और साहित्य की उन्नति—कला की दृष्टि से इस काल में कोई विशेष उन्नति नहीं हुई। कुतुबउद्दीन ऐबक ने कुतुबमीनार बनवाई। सल्तनत काल में शिक्षा की कोई उन्नति नहीं हुई। संस्कृति साहित्य को गहरा धक्का लगा।

प्रश्न 3—तुर्कों के आक्रमण से भारत के राजनैतिक और सामाजिक जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर—

राजनैतिक और सामाजिक जीवन पर प्रभाव

मुसलमानों का भारत में आना एक नये काल की सूचना का द्योतक है। अरब तुर्कों की अपेक्षा अधिक सभ्य थे। तुर्क एक रण-पिपासु जाति के थे। भारतीय सभ्यता के आगे उनकी सभ्यता कुछ भी न थी। परन्तु फिर भी इस्लाम की विजय का भारत पर बहुत प्रभाव पड़ा। मुसलमानों ने हिन्दू सभ्यता और संस्कृति से बहुत कुछ सीखा। भारतीय संस्कृति को नष्ट करना उनके लिए असम्भव था।

तेरहवीं शताब्दी में दिल्ली सल्तनत के रूप में तुर्कों ने अपना राज्य स्थापित किया। उनके शासन के लगभग 200 वर्षों में उनके साम्राज्य का काफी विस्तार हो चुका था। इस समय के प्रसिद्ध शासक थे—ग्यासउद्दीन बलबन, अलाउद्दीन खिलजी और मुहम्मद बिन तुगलक। इन शासकों ने एक सुदृढ़ शासन व्यवस्था लागू

की। जब चौदहवीं शताब्दी में तैमूर लंग का आक्रमण हुआ तो उस समय सल्तनत का राज्य समाप्त हो चुका था। सल्तनत के स्थान पर अनेक छोटे-छोटे राज्य स्थापित हो गये थे। इसके पश्चात् बाबर आया। उसने मुगल साम्राज्य की नींव डाली और उसके उत्तराधिकारियों ने मुगल साम्राज्य की स्थापना की। मुगलों ने शासन में स्थिरता स्थापित की। भारत में बहुत दिनों के पश्चात् राजनैतिक एकता स्थापित हुई।

भारत में मुगलों का आगमन एक महत्वपूर्ण घटना है। मुसलमानों ने हिन्दुओं की संस्कृति को प्रभावित किया। हिन्दुओं ने भी मुसलमानों की संस्कृति को प्रभावित किया। हिन्दुओं तथा मुसलमानों ने एक-दूसरे की रीति-रिवाजों को प्रभावित किया। उनके जीवन में परिवर्तन आया। धार्मिक क्षेत्र में सबसे महत्वपूर्ण आन्दोलन भक्ति आन्दोलन था। भक्ति आन्दोलन के कारण जाति-भाँति की भावना को गहरा आघात बना। समाज में समानता की भावना का उदय हुआ। हिन्दू-मुस्लिम एकता को बल मिला। हिन्दी कविता में मोड़ भक्ति आन्दोलन के कारण ही आया। भक्ति आन्दोलन के कारण दलित जातियों को ऊपर उठने का अवसर मिला। भक्ति आन्दोलन ने हिन्दुओं को मुसलमान बनने से रोका। इसी कारण समाज में फैली कुरीतियों तथा अन्ध-विश्वास को भी धक्का लगा।

प्रश्न 4—मध्यकालीन युग में भक्ति आन्दोलन का वर्णन कीजिए। भक्ति आन्दोलन का भारत के जन-जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा? (1988)

उत्तर— **मध्य युग में भक्ति आन्दोलन**

मध्य युग में हिन्दू धर्म इस्लाम से संघर्ष कर रहा था। उत्तरी भारत में वैष्णव धर्म का अधिक प्रचलन था। सम्पूर्ण भारतवर्ष में भक्ति आन्दोलन तीव्रता पर था। सूरदास, तुलसीदास तथा रामानुज द्वारा भक्ति मार्ग का प्रबल प्रचार हो रहा था। सूरदास भगवान कृष्ण के उपासक थे। अतः उन्होंने कृष्णमार्गी शाखा का प्रसार किया। तुलसीदास राममार्गी शाखा के प्रवर्त्तक थे। बंगाल में चैतन्य ने भक्ति आन्दोलन का प्रसार किया। दक्षिणी भारत में एकनाथ, तुकाराम तथा रामदास भक्ति आन्दोलन के प्रचारक थे। मुसलानों में इस समय सूफी मत चल पड़ा। सूफी त्यागमय जीवन में विश्वास करते थे। वे अपना अधिकांश समय चिन्तन और भजन में व्यतीत करते थे। अतः समाज उन्हें बड़े आदर की दृष्टि से देखता था। परन्तु औरंगजेब के काल में सूफियों पर अत्याचार हुए।

भक्ति आन्दोलन पर जन-जीवन का प्रभाव

मुगल शासकों में अकबर को छोड़कर प्रायः सभी शासकों ने धार्मिक कट्टरता की नीति ग्रहण की। बाबर और हुमायूँ के शासनकाल में हिन्दुओं को अधिक नहीं सताया गया। अकबर ने पूर्णतया धार्मिक सहिष्णुता की नीति अपनाई। उसने अपनी समस्त प्रजा को, चाहे वह किसी भी धर्म की क्यों न हो, समान दृष्टि से देखा। उसने यह अनुभव किया कि भारत में शासन करने के लिए हिन्दुओं की उपेक्षा करना सम्भव नहीं है। अतः उसने हिन्दुओं को धार्मिक स्वतन्त्रता प्रदान की और उन्हें महत्वपूर्ण पदों पर भी नियुक्त किया। स्वयं उसने अनेक हिन्दू आचरणों को अपनाया। जहाँगीर के काल तक भी यही स्थिति रही। परन्तु शाहजहाँ के शासनकाल में असहिष्णुता की नीति पुनः प्रारम्भ की गई और औरंगजेब के शासनकाल तक वह चरम सीमा पर पहुँच गई। औरंगजेब ने हिन्दुओं को अत्यन्त क्रूरता से सताया।

अनेक मन्दिरो को गिरवाकर मस्जिद बनवाई गई । इस नीति के परिणामस्वरूप हिन्दू-मुसलमानों की खाई और गहरी हो गयी ।

प्रश्न 5—मुगलकालीन भारत की सामाजिक और साहित्यिक दशा का वर्णन कीजिए । (1988)

उत्तर— **मुगल काल में भारत की सामाजिक दशा**

मुगल कालीन सामाजिक जीवन को निम्नलिखित भागों में विभाजित किया जा सकता है:—

(1) उच्च वर्ग, (2) मध्य वर्ग और (3) निम्न वर्ग ।

(1) **उच्च वर्ग**—उच्च वर्ग में सामन्त तथा धनी व्यक्तियों का वर्ग आता था । यह वर्ग धन की अधिकता और विशेष सुविधाओं के कारण भोग-विलास, ऐश्वर्य और मद्यपान आदि में डूबा रहता था । शान-शौकत से रहना अमीरों और सामन्तों के जीवन का अंग बन गया था । इस विषय पर लूनिया लिखते हैं, "राजवंश, सामन्त और उच्च वर्ग के लोगों के जीवन का प्रमुख उद्देश्य अधिक से अधिक सुख-विलास एवं ऐश्वर्य का जीवन व्यतीत करना था, यद्यपि उनमें दानशीलता वीरता, विद्याप्रेम आदि गुण थे । उनमें गर्व आत्म-सम्मान कूट-कूट कर भरा था । वे शोषक थे और वे श्रमिकों व निम्न श्रेणी के लोगों द्वारा उत्पन्न धन का अपव्यय करते थे ।" उच्चकोटि की रेशम, जरी और बेल बूटों से कढ़े वस्त्र उसकी नित्य-प्रति की साधारण वेष-भूषा थी । भोजन का स्तर भी जनसाधारण के भोजन से कहीं ऊँचा था । एक ओर तो सर्वसाधारण जनता अधिकतर रूखी-सूखी खाकर पेट भरती थी । दूसरी ओर, अमीर और सामन्त चटपटे, मसालेदार तथा चिकनाई युक्त, भोजन का आनन्द लेते थे । विशाल दावतों का आयोजन किया जाता था जिसमें अत्यधिक रुपया व्यय किया जाता था । शराब का सेवन अत्यधिक होता था । एक-एक अमीर अनेक स्त्रियाँ रखता था । स्त्रियों को केवल भोग विलास की वस्तु माना जाता था । अमीरों का अधिक खर्चीले होने का कारण जब्ती कानून था । इस कानून के अनुसार किसी अमीर के मरने पर उसका समस्त धन राज्य-कोष में जमा कर दिया जाता था । इस कारण अमीर खुल-कर व्यय करते थे । प्रत्येक अमीर अनेक दास-दासियाँ रखता था और शान-शौकत से रहता था ।

मध्यम वर्ग—मध्यम वर्ग अत्यन्त अल्प संख्या में था । इस वर्ग में व्यापारी, व्यवसायी और सरकारी कर्मचारी या लेखक वर्ग आता था । यह धर्य के आडम्बरों से दूर रहता था । व्यापारी अपना धन सरकारी कर्मचारियों से छिपाकर रखते थे ।

निम्न वर्ग—निम्न वर्ग में कारीगर, किसान तथा ग्रामीण मजदूर आते थे । मुगलकाल में इस वर्ग का जीवन अत्यन्त कठिन और संघर्षमय था । ग्रीष्मकाल में ये लोग प्रायः वस्त्रहीन रहते थे । ऊनी वस्त्र और जूते उनकी क्रय-शक्ति के बाहर थे । उनके रहन-सहन का स्तर अत्यन्त निम्न था । कृषक और श्रमिक वर्ग झोपड़ियों में रहता था उनके बर्तन मिट्टी के बने होते थे । कारीगरों को बहुत कम पारिश्रमिक दिया जाता था । कभी-कभी उनसे बेगार तक ली जाती थी । अकाल के समय निम्न वर्ग की दशा और भी शोचनीय हो जाती थी । भूख से व्याकुल माँ-बाप अपने बच्चों तक को बेच डालते थे । निम्न वर्ग की शोचनीय दशा का कारण मुगल शासन का जन-कल्यानकारी न होना था । मुगल-शासन केवल एक सैनिक शासन था ।

मुगल काल में भारत की साहित्यिक दशा

मुगल शासक साहित्य-प्रेमी थे। उनके शासनकाल में विभिन्न भाषाओं के साहित्य ने अपूर्व प्रगति की।

फारसी साहित्य—इस काल में फारसी राजकीय भाषा थी। बाबर ने 'तुजुके-बाबरी' का फारसी में तीन बार अनुवाद करवाया था। अकबर के काल में फारसी साहित्य ने अत्यधिक विकास किया। उसने अपने दरबार में फारसी के प्रमुख विद्वानों को संरक्षण दिया। 'अइने-ए-अकबरी' के अनुसार उनके दरबार में 59 फारसी के कवि थे। अबुल-फजल स्वयं फारसी का एक महान कवि था। गिजाली, फैजी आदि भी प्रसिद्ध कवि थे। गिजाली ने 'मीर-तुलकेनात', 'नक्काश ए-वहीद' नामक ग्रन्थों की रचना की। अब्दुलरहीम 'खान-ए-खाना' भी फारसी में कविता करते थे। अकबर के समय में अनेक ऐतिहासिक ग्रन्थों की रचना भी हुई। मुल्ला दाउद ने 'तारीखे-ए-अल्फी' की रचना की। अबुल-फजल ने 'आइन-ए-अकबरी' तथा अकबारनामा लिखे। बदायूँनी ने 'तवकात-ए-अकबरी' की रचना की। अकबर ने अनुवाद का एक अलग विभाग स्थापित किया था। अरबी, तुर्की तथा संस्कृत भाषा के अनेक ग्रन्थ फारसी भाषा में अनुवादित किये गये। तकीब खाँ तथा शेरी ने महाभारत का अनुवाद फारसी में किया। बदायूँनी ने भी अनेक ग्रन्थों के अनुवाद फारसी में किये थे। रामायण का अनुवाद भी फारसी में किया गया। प्रसिद्ध ग्रन्थ लीलावती का अनुवाद फैजी ने फारसी में किया था। जहाँगीर भी साहित्य प्रेमी था गयासवेग, नकीवखाँ, अब्दुलहक उसके दरबार के प्रसिद्ध विद्वानों में से थे। शाहजहाँ ने साहित्य के क्षेत्र में अपने पूर्वजों की परम्परा को बनाये रखा। हाजी मुहम्मद जहान, चन्द्रभान ब्राह्मण उनके दरबार के प्रसिद्ध विद्वान थे। शाहजहाँ के काल में ऐतिहासिक ग्रन्थों की रचना भी हुई। अब्दुलहमीद लाहौरी ने 'बादशाहनामा' लिखा। इनायतखाँ ने 'शाहजहाँनामा' की रचना की। दारा भी फारसी का अच्छा विद्वान था। औरंगजेब धर्म शास्त्र तथा न्यायशास्त्र का पण्डित था। उसकी आज्ञा से ही 'फतवा ए-आलमगीरी' नामक ग्रन्थ की रचना हुई।

संस्कृत साहित्य—बाबर और हुमायूँ के शासन काल में संस्कृत भाषा का अधिक विकास नहीं हुआ। परन्तु अकबर ने संस्कृत भाषा के प्रति उदारता दिखायी। अबुल-फजल के अनुसार अनेक संस्कृत के विद्वान अकबर के दरबार को सुशोभित करते थे। महेश ठाकुर ने संस्कृत साहित्य का इतिहास लिखा। पदमसुन्दर ने 'अकबरशाही, श्रृंगार दर्पण' नामक ग्रन्थ की रचना की। जैन विद्वान सिद्धचन्द्र उपाध्याय ने 'भानुचन्द्र चित्रा' नामक ग्रन्थ लिखा। जगन्नाथ पण्डित शाहजहाँ कालीन कवि थे। कवीन्द्र सरस्वती एक अन्य संस्कृत का विद्वान था।

हिन्दी साहित्य—अकबर के शासन काल से हिन्दी काव्य का विकास होता है। वास्तव में अकबर की धार्मिक सहिष्णुता की नीति ने हिन्दी साहित्य के विकास में विशेष योग दिया। हिन्दी के प्रमुख कवि सूरदास, तुलसीदास, रहीम आदि मुगल युग की देन थे। अकबर के दरबारी कवियों में टोडरमल, भगवानदास, मानसिंह के नाम उल्लेखनीय हैं। परन्तु इस युग के महान कवि तुलसीदास थे। अकबर से इनका कभी परिचय नहीं हुआ। हिन्दू जाति में जागृति उत्पन्न करने का प्रमुख श्रेय इनको ही दिया जाता है। 'रामचरित मानस' इनका प्रमुख ग्रन्थ है। विनय पत्रिका, कवितावली, दोहावली, जानकीमंगल; पार्वतीमंगल आदि इनके अन्य प्रमुख ग्रन्थ हैं। जार्ज

ग्रियरसन ने तुलसीदास की रामायण को करोड़ों हिन्दुओं की बाइबिल कहकर पुकारा है। तुलसीदास की विनय पत्रिका भी एक उच्चकोटि का ग्रन्थ है। तुलसीदास के बाद दूसरी श्रेणी के कवि सूरदास थे। इन्होंने बहुत ही सुन्दर गेय पद लिखे। व्रजभाषा में रचित 'सूरसागर' इनका अद्वितीय ग्रन्थ है। इनकी कविता में शृंगार और भक्ति रस का अद्भुत मिश्रण है। बाल्य रस का सजीव और मार्मिक वर्णन सूरदास न किया है। रसखान के पद भी बड़े भावुकतापूर्ण हैं। नन्ददास, बिट्ठलनाथ, परमानन्ददास, कुम्भन ने अनेक भक्ति रस की कविताएँ लिखीं। रीतिकालीन कवियों के नेता आचार्य केशव माने जाते हैं। शाहजहाँ कालीन कवि सुन्दर का नाम उल्लेखनीय है। औरंगजेब के शासन काल में भूषण कवि ने अनेक वीर रस की कविताएँ लिखीं।

अन्य भाषाएँ—गुप्त काल में बंगला, मराठी तथा गुजराती साहित्य का भी अपूर्व विकास हुआ। बंगाल में चैतन्य चरित्र की धूम मची थी। एकनाथ, दासोपन्त, मुक्तेश्वर, पण्डित तुकाराम मराठी के प्रसिद्ध कवि थे।

उर्दू साहित्य—नूरी आजम पुरी, हजरत कमालुद्दीन, मखदूत शेखसारी अकबर कालीन प्रसिद्ध कवि थे। मुगल-शासकों को दक्षिण में बीजापुर और गोलकुण्डा के शासकों ने उर्दू को अधिक आश्रय दिया। दक्षिण के कवियों में वली का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

परीक्षा में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1—भक्ति आन्दोलन का मुख्य उद्देश्य था— (1984)

(क) मुसलमानों का विरोध करना।
(ख) हिन्दू धर्म का विरोध करना।
(ग) नया धर्म चलाना।
(घ) वाह्य आडम्बरों तथा छुआछूत के स्थान पर एकता पर बल देना।

उत्तर—(ध) वाह्य आडबरों तथा छुआछूत के स्थान पर एकता पर बल देना।

प्रश्न 2—भारत में दास वंश की नींव डाली थी— (1986)

(क) कुतुबुद्दीन ऐबक ने। (ख) मुहम्मद गौरी ने।
(ग) इल्तुतमिश ने। (घ) बलबन ने।

उत्तर—(क) कुतुबुद्दीन ऐबक ने।

प्रश्न 3—गंगा नहर किसने बनवायी थी ? (1986)

(क) फिरोजशाह ने। (ख) डलहौजी ने।
(ग) अकबर ने। (घ) कैप्टन काटले ने।

उत्तर—(क) फिरोजशाह ने।

प्रश्न 4—जहाँगीर के शासन काल में कौन-सी कला की अत्यधिक उन्नति हुई थी ? (1986)

(क) वास्तुकला। (ख) चित्रकला।
(ग) संगीत। (घ) मूर्तिकला।

उत्तर—(ख) चित्रकला।

प्रश्न 5—पृथ्वीराज रासो के रचयिता थे— (1987)

(क) चन्दबरदाई। (ख) जयदेव।
(ग) जयचन्द। (घ) तुलसीदास।

उत्तर—(क) चन्दबरदाई।

प्रश्न 6—तानसेन किस मुगल सम्राट के सभासद थे— (1987, 90)

(क) जहाँगीर। (ख) शाहजहाँ।
(ग) अकबर। (घ) औरंगजेब।

उत्तर—(ग) अकबर।

प्रश्न 7—अमीर खुसरो के सम्बन्ध में कौन-सा कथन सही है— (1988)

(क) वे कवि और संगीतज्ञ थे।
(ख) वे प्रतिभाशाली शासक थे।
(ग) वे कुशल सेनापति थे।
(घ) वे इस्लाम धर्म के प्रचारक थे।

उत्तर—(क) वे कवि और संगीतज्ञ थे।

प्रश्न 8—तराइन का दूसरा युद्ध हुआ था— (1988)

(क) सन् 1191 ई० में। (ख) सन् 1193 ई० में।
(ग) सन् 1192 ई० में। (घ) सन् 1194 ई० में।

उत्तर—(ग) सन् 1192 ई० में।

प्रश्न 9—इलाहाबाद का दुर्ग किसने बनवाया था— (1986, 89)

(क) अशोक ने। (ख) समुद्रगुप्त ने।
(ग) जहाँगीर ने। (घ) अकबर ने।

उत्तर—(घ) अकबर ने।

मध्यकालीन दक्षिणी-पूर्वी एशिया

अति लघु उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—स्वर्णभूमि किसे कहते हैं ? वहाँ का प्रमुख धर्म क्या है ? (1987)
उत्तर—स्वर्णभूमि बर्मा को कहते हैं। वहाँ का प्रमुख धर्म बौद्ध धर्म है।

प्रश्न 2—शैलेन्द्र वंश का शासन कहाँ था ? वहाँ का प्रमुख धर्म क्या था ?

उत्तर—जावा, सुमात्रा तथा बोर्नियो द्वीपों पर शैलेन्द्र वंश का शासन था। वहाँ का प्रमुख धर्म हिन्दू धर्म था।

प्रश्न 3—चंपा का वर्तमान नाम क्या है ? वहाँ के निवासियों को क्या कहा जाता था ?

उत्तर—चंपा का वर्तमान नाम वियतनाम है ? वहाँ के मूल निवासियों को 'चाम' कहा जाता था।

प्रश्न 4—अंकोरवाट का मन्दिर किस देवता का है और कहाँ है ? (1987)

उत्तर—अंकोरवाट का मन्दिर विष्णु भगवान का है। यह मन्दिर कम्बोडिया में है।

प्रश्न 5—समरतुंग कहाँ का शासक था और उसने कौन-सा प्रसिद्ध बौद्ध स्तूप बनवाया था ?

उत्तर—समरतुंग जावा का शासक था। बोरों बुदूर स्तूप उसके द्वारा बनवाया गया था।

परीक्षा में पूछे गये अति लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 6—इंडोनेशिया के उस द्वीप का नाम लिखिए, जहाँ हिन्दू-संस्कृति आज भी जीवित है। (1984)

उत्तर—इण्डोनेशिया के बाली द्वीप समूह में हिन्दू संस्कृति आज भी जीवित है। (1986)

प्रश्न 7—दक्षिण पूर्वी एशिया के उन दो स्थानों के नाम लिखिए, जहाँ भारतीय संस्कृति के चिन्ह आज भी विद्यमान हैं।

उत्तर—दक्षिण-पूर्वी एशिया में कम्बोडिया में अंकोरबाट का मन्दिर और जावा में बोरोबुदूर का स्तूप आज भी भारतीय संस्कृति के चिन्ह के रूप में विद्यमान है।

लघु उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—श्रीलंका में बौद्ध धर्म का प्रचार तथा प्रसार किसने किया ? (1988)

उत्तर—श्रीलंका में सम्राट अशोक ने अपने पुत्र महेन्द्र तथा पुत्री संघ-मित्रा को बौद्ध धर्म के प्रसार तथा प्रचार के लिए भेजा था।

प्रश्न 2—मध्यकाल में दक्षिण-पूर्व एशिया में कौन-कौन से देश सम्मिलित थे ?

उत्तर—मध्य काल में दक्षिण-पूर्व एशिया में बर्मा, श्रीलंका, जावा, कम्बोडिया, वियतनाम, श्याम (थाइलैण्ड) तथा मलाया सम्मिलित थे।

प्रश्न 3—फनून राजवंश कहाँ था ? इसकी स्थापना किसने की थी ?

उत्तर—फनून राजवंश कम्बोडिया में था और इसकी स्थापना भारतीय ब्राह्मण कौटिल्य ने की थी।

प्रश्न 4—कम्बुज शासकों में सबसे प्रतापी राजा कौन हुआ ?

उत्तर—सूर्य वर्मन द्वितीय कम्बुज शासकों में सबसे प्रतापी राजा हुआ है। यह संस्कृत का प्रकाण्ड विद्वान था।

प्रश्न 5—स्वर्णद्वीप किसे कहते हैं ? वहाँ संस्कृत भाषा का प्रचलन कैसे हुआ ?

उत्तर—सुमात्रा को स्वर्ण द्वीप कहा जाता है। सुमात्रा में तीसरे शताब्दी में हिन्दू राज्य की स्थापना हुई। आठवीं शताब्दी में सुमात्रा में शैलेन्द्र वंश के हिन्दू शासकों का राज्य स्थापित हो गया था। अनेक हिन्दू कलिंग प्रदेश से पहले दक्षिण बर्मा गये, फिर उन्होंने मलाया पर आधिपत्य किया। तत्पश्चात् इस वंश के लोगों ने सुमात्रा, जावा, बोर्नियो तथा बाली द्वीप-समूहों पर अपना अधिकार करके स्थायी रूप से भारतीय सभ्यता और संस्कृति का प्रचार-प्रसार किया। शैलेन्द्र वंश के सभी शासक बौद्ध धर्म के मानने वाले थे। उन्होंने समस्त स्वर्ण द्वीप पर बौद्ध धर्म का प्रचार किया। ग्यारहवीं शताब्दी में दक्षिण भारत के चौलवंशीय राजाओं ने

स्वर्ण द्वीप पर आक्रमण करके वहाँ शैलेन्द्र राजाओं को परास्त कर चोल साम्राज्य स्थापित किया। इस प्रकार हिन्दू राजाओं के प्रभाव से सुमात्रा में संस्कृत भाषा का प्रचलन हुआ।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—दक्षिणी-पूर्वी एशिया में सभ्यता तथा संस्कृति के प्रसार पर एक निबन्ध लिखिए।

उत्तर—भारतीय सभ्यता और संस्कृति का प्रसार—दक्षिणी-पूर्वी एशिया में लोग हिन्दू तथा बौद्ध धर्म के अनुयायी थे। श्रीलंका और बर्मा में बौद्ध धर्म अधिक लोकप्रिय हुआ। आज भी श्रीलंका और बर्मा में बौद्ध धर्म के अनुयायी मिलते हैं। जावा, सुमात्रा, कम्बोडिया, चंपा, बोर्नियो तथा बाली द्वीप समूह में हिन्दू राजा शासन करते थे। बाली द्वीप में आज भी हिन्दू देवी-देवताओं की पूजा होती है। वहाँ भगवान बुद्ध की प्रतिमाओं को भी पूजा जाता है।

सुमात्रा में संस्कृत भाषा का प्रचलन था। चंपा तथा जावा आदि में संस्कृत के अनेक अभिलेख मिले हैं। हिन्दू उपनिवेशों में संस्कृत भाषा तथा व्याकरण का पाठन होता था। वेद, पुराण तथा महाभारत को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था तथा उनका पठन-पाठन होता था।

हिन्दू उपनिवेशों में हिन्दू कला का भी प्रचार हुआ। जावा, कम्बोडिया, चंपा, स्वर्ण द्वीप में अनेक स्तूप, विहार, मठ तथा मन्दिर देखने को मिलते हैं। यह इस बात का प्रमाण है कि भारतीय संस्कृति तथा कला अपनी पूर्ण उन्नति पर थी। जावा में बोरो बदूर का बौद्ध स्तूप संसार भर में विख्यात है। कम्बोडिया में अंगकोरवाट का विष्णु मन्दिर भारतीय शिल्पकला का उच्चतम उदाहरण है। यह एक विशाल चबूतरे पर निर्मित है। इसके अन्दर रामायण और महाभारत के दृश्य अंकित किये गये हैं।

यहाँ के निवासियों ने भारतीय जीवन भी अपना लिया था। जावा, सुमात्रा तथा चंपा में भारतीय जातियों का प्रचलन था। उनका रहन-सहन, रीति-रिवाज, विवाह आदि भारतीय थीं। बाली में आज भी जाति प्रथा प्रचलित है। यहाँ हिन्दू देवी-देवताओं की मूर्तियाँ बनाई तथा पूजी जाती हैं।

प्रश्न 2—दक्षिण पूर्वी एशिया की सामाजिक, राजनैतिक तथा धार्मिक दशा को भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति ने किस प्रकार प्रभावित किया ?

उत्तर—दक्षिण पूर्वी एशिया की सामाजिक, राजनैतिक तथा धार्मिक दशा पर प्रभाव—प्राचीन समय से ही भारत के अन्य देशों के साथ व्यापारिक और सांस्कृतिक सम्बन्ध थे। उस काल में भारत का राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा धार्मिक जीवन सन्तुलित था। भारत ने उस समय, दक्षिण-पूर्व एशिया के स्वर्ण भूमि क्षेत्र में प्रवेश किया। वहाँ अपना आधिपत्य स्थापित किया और तत्पश्चात् उस प्रदेश में अपनी सभ्यता, संस्कृति तथा धर्म को फैलाया। इस प्रकार उस देश में भारतीय सभ्यता और संस्कृति ने अपना प्रभाव डाला। भारतीयों ने शताब्दियों तक दक्षिण-पूर्व एशिया के भू-भागों पर राज्य करके अपनी सभ्यता और संस्कृति का प्रसार किया। दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों में भारतीय उपनिवेश अनेक शताब्दियों तक स्थापित रहे। इसके परिणामस्वरूप वहाँ के निवासियों ने भारतीय

सामाजिक जीवन को अपना लिया। फिर उन्होंनें हिन्दू और बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया।

दक्षिणी-पूर्वी के इन उपनिवेशों में विशेष रूप हिन्दू तथा बौद्ध धर्म के अनुयायी थे। बाली द्वीप में आज भी हिन्दू देवी-देवताओं की पूजा की जाती है। जावा में रामायण तथा महाभारत का वहाँ की भाषा में अनुवाद किया गया। बाली में आज भी जाति प्रथा है।

प्रश्न 3—कम्बोडिया तथा चंपा में भारतीय उपनिवेश कैसे स्थापित हुए ? (1986)

उत्तर—कम्बोडिया तथा चंपा में भारतीय उपनिवेश—कम्बोडिया में कौटिल्य ने भारतीय उपनिवेश की नींव डाली। वह एक भारतीय ब्राह्मण था। कौटिल्य को फ़नुन साम्राज्य का संस्थापक माना जाता है। छठी शताब्दी में फनुन साम्राज्य का पतन हो गया और यहाँ कम्बूज राज्य की स्थापना की गई। इस राज्य का संस्थापक एक भारतीय ब्राह्मण श्रुतवर्मन था। कम्बुज वंशीय राजा भारतीय धर्म, संस्कृति और जाति के थे।

चंपा को आजकल वियतनाम कहते हैं। वहाँ भारत का सबसे प्राचीन उपनिवेश था। भारतीय हिन्दू निवासियों ने द्वितीय शताब्दी में चंपा में अपना उपनिवेश स्थापित किया। चंपा का प्रथम संस्थापक हिन्दू शासक श्रीमार था।

प्रश्न 4—मध्यकालीन दक्षिण-पूर्व एशिया पर इस्लाम धर्म का क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर—दक्षिणी-पूर्वी एशिया पर इस्लाम धर्म का प्रभाव—चौदहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में अरब के मुसलमान व्यापारी दक्षिण-पूर्व तक पहुँच गये थे। उन्होंने मलाया के मलक्मा बन्दरगाह पर जबरन अपना अधिकार कर लिया था, जिसके साथ ही इस्लाम धर्म का मलाया में प्रवेश हो गया। धीरे-धीरे मलाया निवासियों ने अरब विजेताओं के इस्लाम धर्म को अपनाना शुरू कर दिया, जिससे हिन्दू धर्म एवं संस्कृति को बड़ा धक्का लगा फिर भी मलाया में आज भी हिन्दू संस्कृति के अवशेष मौजूद हैं।

प्रश्न 5—दक्षिण-पूर्वी एशिया में मध्यकालीन युग में वहाँ की वास्तुकला भाषा और साहित्य पर भारतीय सभ्यता और संस्कृति का क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर—दक्षिण-पूर्वी एशिया की कला, भाषा और साहित्य पर प्रभाव—मध्यकालीन युग में दक्षिण-पूर्वी एशिया में भारतीय सभ्यता और संस्कृति ने वहाँ सभी महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में अपना प्रभाव डाला था। मध्यकाल में भारतीय सभ्यता और संस्कृति का दक्षिणी-पूर्वी एशिया की वास्तुकला, भाषा तथा साहित्य का अत्यधिक प्रभाव पड़ा था। जावा, कम्बोडिया, चम्पा तथा स्वर्णद्वीप में आज भी अनेक सुन्दर मन्दिर, स्तूप तथा बिहार एवं मठ हैं जो प्राचीन सभ्यता तथा संस्कृति का ज्ञान प्रदान करते हैं। जावा का सबसे सुन्दर बौद्ध स्तूप 'बीरोबुदूर' तथा कम्बोडिया में अंकोरवाट का विष्णु मन्दिर भारतीय वास्तुकला के सजीव तथा महत्त्वपूर्ण उदाहरण हैं।

दक्षिणी-पूर्वी एशिया के अनेक देशों में भाषा तथा साहित्य का विकास हुआ। सुमात्रा में संस्कत भाषा का विकास भारतीयों द्वारा ही हुआ था। भारतीय संस्कृति

के प्रमुख ग्रन्थ रामायण, पुराण तथा महाभारत आदि की दक्षिण-पूर्वी एशिया के देशों में पढ़ाया जाना इनका प्रमुख कार्य था। रामायण तथा महाभारत आदि ग्रन्थों का भी स्थानीय भाषाओं में अनुवाद किया गया। वेद, पुराण तथा रामायण और महाभारत यहाँ जनसाधारण द्वारा पढ़े जाते थे।

अतः स्पष्ट हो जाता है कि दक्षिण-पूर्वी एशिया में मध्यकाल के अन्तर्गत वहाँ वास्तुकला भाषा और साहित्य पर भारतीय सभ्यता और संस्कृति का बहुत महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ा।

परीक्षा में पूछे गये तथा अन्य महत्वपूर्ण बहु-विकल्पीय प्रश्न

नीचे कुछ प्रश्नों के उत्तरों के विकल्प दिये जा रहे हैं। सही विकल्प छाँटकर अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखिए—

प्रश्न 1—अंकोरवाट का मन्दिर बनवाया गया—
(i) सूर्यवर्मन द्वितीय द्वारा, (ii) जयवर्मन तृतीय द्वारा,
(iii) सूर्यवर्मन प्रथम द्वारा, (iv) जयवर्मन प्रथम द्वारा।
उत्तर—(i) सूर्यवर्मन द्वितीय द्वारा।

प्रश्न 2—चंपा की राजधानी थी—
(i) पाटलिपुत्र, (ii) रंगून,
(iii) अयोध्या, (iv) अमरावती।
उत्तर—(iv) अमरावती।

प्रश्न 3—थाईलैण्ड का प्राचीन नाम था—
(i) स्मर्ण भूमि, (ii) श्याम,
(iii) चंपा, (iv) स्वर्ण द्वीप।
उत्तर—(ii) श्याम।

प्रश्न 4—जावा में शासन करते थे—
(i) शैलेन्द्र वंश के शासक, (ii) फनून वंश के शासक
(iii) मंगोल वंश के शासक, (iv) कोई भी नहीं।
उत्तर—(i) शैलेन्द्र वंश के शासक।

प्रश्न 5—श्रीलंका में बौद्ध धर्म का प्रचार करने के लिए किस भारतीय सम्राट ने धर्म प्रचारक भेजे थे? (1987)
(i) कनिष्क ने, (ii) अशोक ने।
(iii) बिम्बसार ने, (iv) नियाण्डर ने।
उत्तर—(ii) अशोक ने।

प्रश्न 6—बोरोबुदूर का बौद्ध स्तूप कहाँ पर स्थित है?
(i) मलाया, (ii) चीन,
(iii) जापान, (iv) जावा में।
उत्तर—(iv) जावा।

प्रश्न 7—अंकोरवाट का मन्दिर किस देवता से सम्बन्धित है?
(i) शंकर, (ii) राम,
(iii) विष्णु से, (iv) श्रीकृष्ण।
उत्तर—(iii) विष्णु।

मध्यकालीन पश्चिमी एशिया

अति लघुउत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से),

प्रश्न 1—रसायनशास्त्र में अरब निवासी क्या-क्या बनाना जानते थे ?

उत्तर—अरब निवासी रसायनशास्त्र में चाँदी का घोल, पोटाश, शोरे तथा गन्धक का तेजाब एवं इत्र बनाना जानते थे।

प्रश्न 2—अरब निवासी वर्ष की गणना किसके आधार पर करते थे ?

उत्तर—अरब निवासी वर्ष की गणना चाँद की गति के आधार पर करते थे।

प्रश्न 3—अरब प्रायद्वीप में कौन-कौन-से देश सम्मिलित हैं ?

उत्तर—अरब प्रायद्वीप में तुर्की, मिस्र, सीरिया, ईरान तथा ईराक देश सम्मिलित हैं।

प्रश्न 4—फिरदौसी ने कौन-सी पुस्तक लिखी थी ? उमरखय्याम क्यों प्रसिद्ध है ? (1985, 86)

उत्तर—फिरदौसी ने शाहनामा लिखा है। उमरखय्याम रूबाइयाँ के लिए प्रसिद्ध हैं।

प्रश्न 5—येरूसलम कहाँ पर स्थित है और क्यों प्रसिद्ध है ? (1987)

उत्तर—येरूसलम पश्चिम एशिया (इजरायल) में स्थित है। यह ओमर मस्जिद के कारण बहुत अधिक प्रसिद्ध है। यह यहूदियों, ईसाइयों तथा मुसलमानों का तीर्थ केन्द्र है।

अन्य महत्वपूर्ण अति लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 6—खलीफाओं की राजधानी का नाम बताइए।

उत्तर—खलीफाओं की राजधानी का नाम बगदाद है।

प्रश्न 7—गुलिस्तां और दोस्तां दार्शनिक काव्यों के रचयिता का नाम लिखिए।

उत्तर—गुलिस्तां और दोस्तां दार्शनिक काव्यों के रचयिता का नाम शेख सादी है।

प्रश्न 8—ओमर मस्जिद कहाँ स्थित है ?

उत्तर—ओमर मस्जिद येरूशलम में स्थित है।

लघुउत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—बगदाद कहाँ है और क्यों प्रसिद्ध है ? (1986)

उत्तर—बगदाद ईराक देश में स्थिति है। यह एक बड़ा व्यापारिक केन्द्र है। यहाँ बड़ी-बड़ी इमारतें तथा महल हैं। यहाँ धनी व्यापारी तथा उच्च वर्ग के लोग रहते हैं। बगदाद व्यापार के लिए प्रसिद्ध है।

प्रश्न 2—अरब निवासियों के मुख्य उद्योग-धन्धे क्या थे ?

उत्तर—**अरब निवासियों के उद्योग-धन्धे**—अरब के पास खेती योग्य भूमि नहीं के बराबर थी। इसलिए एशिया और यूरोप के सम्पर्क में आने से अरबवासियों को उद्योग-धन्धों पर अधिक आश्रित रहना पड़ा। अरब वालों ने अपने देश में कपास द्वारा वस्त्रों को बनाया और यूरोप की भी कपास की खेती को प्रोत्साहन दिया।

बड़ी-बड़ी नहरों का निर्माण कर उन्होंने दलदली और अयोग्य भूमि को खेती योग्य बनाने का प्रयास किया। उन्होंने अपने प्रयोग के लिए हवा चक्की का प्रयोग प्रचलित किया। अरब निवासी सभी तरह की धातुओं के प्रयोग को जानते-समझते थे और उनका अपने उद्योग-धन्धों में प्रयोग करते थे। उन्होंने भारत में गन्ने की खेती करना, शक्कर बनाना एवं खाने-पीने के लिए उन्नत अन्न उपजाने की विधियों को सीखा था। वे इत्र, अर्क और शर्बत बनाते थे और व्यापार करते थे।

प्रश्न 3—मक्का और मदीना क्यों प्रसिद्ध हैं? (1986)

उत्तर—मक्का तथा मदीना इस्लाम के धार्मिक स्थल हैं। इस्लाम धर्म के अनुसार प्रत्येक मुसलमान को एक बार हज के लिए मक्का अवश्य जाना चाहिए। प्रतिवर्ष हजारों मनुष्य यहाँ काबा के दर्शन करने आते हैं। मक्का में इस्लाम धर्म के संस्थापक मुहम्मद साहब का जन्म हुआ था और मदीना में मुहम्मद साहब ने हिजरत की थी। इसके अतिरिक्त दोनों नगर व्यापारिक केन्द्र भी हैं। इस कारण ये दोनों नगर धार्मिक तथा व्यापारिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण हैं।

प्रश्न 4—अरब निवासी कारीगरी में किन-किन वस्तुओं को बनाते थे?

उत्तर—अरब के गलीचे, चमड़े की वस्तुएँ, तलवारें, पच्चीकारी एवं मीनाकारी के काम प्रसिद्ध हैं। अरब निवासी हस्तनिर्मित वस्तुओं तथा बर्तनों में सजावट का काम किया करते थे। वे जानवरों के चित्र भी बनाते थे। कुरान को हाथ से लिखा जाता था। जनसाधारण कपास से कपड़े तैयार करते थे।

प्रश्न 5—विज्ञान के क्षेत्र में अरब निवासियों ने भारत तथा यूनान से क्या सीखा? (1990)

उत्तर—विज्ञान के क्षेत्र में भारत तथा यूनान से जानकारी

(1) अरब निवासियों ने भारत और यूनान से चिकित्सा शास्त्र सीखा। इस क्षेत्र में उन्होंने विशेष उन्नति की। अरब निवासियों ने अलराजी तथा इब्नसिना जैसे चिकित्सक उत्पन्न किये।

(2) अरब निवासियों ने अनेक अस्पताल खोले। इन अस्पतालों में आँखों के रोगों, चेचक, प्लेग तथा छूत की बीमारियों का इलाज होता था।

(3) अरब के निवासियों ने यूनानियों से त्रिकोणमिति का ज्ञान सीखा। गणित क्षेत्र में उन्होंने भारतवासियों से भारतीय अंक प्रणाली का ज्ञान प्राप्त किया।

(4) अरब निवासियों को यह जानकारी थी कि पृथ्वी सूर्य का चक्कर लगाती है तथा पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है। यूरोप निवासियों को इसका ज्ञान न था।

(5) अरब निवासियों ने सोडियम कारबोनेट तथा सिल्वर नाइट्रेट जैसे मिश्रणों की जानकारी प्राप्त की। उन्होंने गन्धक के तेजाबों का पता चलाया।

(6) साहित्य के क्षेत्र में अरब निवासियों की विशेष देन है। अलिफ लैला आज भी विश्व विख्यात कथा साहित्य है।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—इस्लाम धर्म की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर— इस्लाम धर्म की विशेषताएँ

इस्लाम धर्म की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं—

(1) खुदा एक है। उसी की इबादत पूजा (worship) की जानी चाहिए।

(2) मुसलमान अनेक देवी-देवताओं की पूजा नहीं करते। वे केवल एक खुदा को स्वीकार करते हैं।

(3) मुसलमान मूर्ति-पूजा में विश्वास नहीं करते। इस्लाम धर्म मूर्ति-पूजा की आज्ञा नहीं देता।

(4) खुदा सर्व व्यापक है। इसी कारण नमाज कहीं भी अदा की जा सकती है।

(5) इस्लाम धर्म में शराब पीने की आज्ञा नहीं है।

(6) इस्लाम धर्म यह मानता है कि प्रत्येक व्यक्ति को उसके कर्मों का फल अच्छा या बुरा अवश्य मिलेगा।

(7) इस्लाम धर्म के अनुसार संसार में एक दिन कयामत (प्रलय Doom's Day) अवश्य आयगी। उस दिन खुदा सबके विषय में अपना निर्णय देगा।

(8) इस्लाम धर्म में ऋण पर ब्याज लेना मना है। सूद लेना बुरा समझा जाता है।

(9) इस्लाम धर्म के अनुसार उसके अनुयायी पुरुष अनेक स्त्रियों से विवाह कर सकते हैं।

(10) इस्लाम धर्म के अनुसार स्त्रियों को पर्दे में रहना चाहिए।

(11) इस्लाम धर्म के अनुसार पुरुष तथा स्त्री समान नहीं है।

(12) यह धर्म पैगम्बरों पर विश्वास करता है। वे भगवान का सन्देश लाते हैं।

(13) जो कुछ कुरान में लिखा है, वह खुदा ने स्वयं लिखा है। खुदा ने ये शब्द मुहम्मद साहब को सुनाये थे।

(14) इस्लाम धर्म स्वर्ग और नर्क में विश्वास करता है।

(15) मुसलमान क्यामात में विश्वास करते हैं। इस दिन मुर्दे उठ खड़े होते हैं।

(16) भगवान की इच्छा ही मनुष्य के भाग्य का निर्णय करती है।

(17) मुसलमानों की अच्छी आत्माएँ स्वर्ग जाती हैं। वहाँ दास और स्त्रियाँ उनकी सेवा करती हैं।

(18) इस धर्म में समानता और भाई-चारे पर बल दिया जाता है।

(19) बुरी आत्माएँ नर्क जाती हैं। यही उनका दण्ड है।

(20) इस धर्म में मसजिद का निर्माण इस कारण किया जाता है कि सभी मुसलमान एकत्रित होकर नमाज अदा कर सकें।

(21) प्रत्येक मुसलमान को निम्नलिखित कार्य अवश्य करने पड़ते हैं—

(i) उसे नित्य निम्नलिखित कलमा पढ़ना चाहिए—

"खुदा एक है। खुदा के अतिरिक्त और कोई नहीं है। मुहम्मद साहब उसके पैगम्बर हैं।"

(ii) एक मुसलमान को दिन में 5 बार नमाज पढ़ना चाहिए।

(iii) रमजान के माह में प्रत्येक मुसलमान को रोजा रखना चाहिए।

(iv) प्रत्येक मुसलमान को दान देना अनिवार्य है। यदि किसी के पास कुछ धन है तो उसे दान अवश्य देना चाहिए।

(४) प्रत्येक मुसलमान को अपने जीवन में कम से कम एक बार मक्का अवश्य जाना चाहिए।

प्रश्न 2—इस्लाम धर्म के प्रादुर्भाव से पहले अरबों की सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक दशा का वर्णन कीजिए।

उत्तर—अरबों की सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक दशा—उस समय अरब अनेक कबीलों में विभाजित थे। प्रत्येक कबीले का प्रधान शेख कहलाता था। शेख की आज्ञा मानना कबीले के प्रत्येक सदस्य के लिए अनिवार्य था। उस समय अरब में स्त्रियों का स्थान अत्यन्त निम्न था। शेख अपने कबीले के सदस्यों को विविध मामलों में आज्ञा दिया करता था। स्त्रियों की दशा कितनी हीन थी, यह इस तथ्य से स्पष्ट होता है कि एक आदमी कितनी ही स्त्रियों से विवाह कर सकता था। कबीलों के सदस्य स्त्रियों के लिए युद्ध किया करते थे। स्त्री को पुरुष की सम्पत्ति माना जाता था। वह पुरुष वर्ग की दया पर जीवित रहती थी। पुरुष अपनी पत्नी को किसी भी समय छोड़ सकता था। पुरुष शराब पिया करते थे तथा जुआ खेला करते थे।

अरब निवासी पशु पालन करते थे। वे एक स्थान से दूसरे स्थान को पानी और चारे की तलाश में घूमा करते थे। वे शिकारी थे। परन्तु कभी-कभी वे लूटमार भी कर लिया करते थे। अरब में बहुदेववाद प्रचलित था। प्रत्येक कबीले का एक देवता होता था। कबीले का प्रत्येक सदस्य उस देवता की पूजा किया करता था। मक्का में एक पवित्र मसजिद थी। इसे काबा कहते थे। इस उपासना गृह के अन्दर एक काला पत्थर था। इसका आकार समकोण चतुर्भुज का था। इस उपासना गृह में अनेक मूर्तियाँ थीं। काबा अरब में सबसे बड़ा देवता माना जाता था। उस समय देवता को प्रसन्न करने के लिए नर-बलि की भी प्रथा थी। मक्का अरब का एक प्रमुख नगर था। यहाँ विभिन्न स्थानों के काफिले आकर रुकते थे। उस समय अरब निवासी अत्यन्त निर्धन तथा पिछड़े हुए थे। वे अन्ध विश्वासी थे। उस समय अरब निवासी अनेक देवताओं की पूजा किया करते थे।

मध्य युग में अरब समाज—उस समय खलीफा (Chlipha) सबसे शक्तिशाली नेता होता था। उसे उच्चतम राजनीतिक अधिकार थे। खलीफा की आज्ञाएँ कानून मानी जाती थीं। अभिजात वर्ग (Flite) को अन्य श्रेणियाँ उससे निम्न मानी जाती थीं। व्यापारी, लेखक, हकीम, शिक्षक तथा काजी उसके मातहत कार्य करते थे।

उस समय दासों की संख्या अत्यधिक थी। उनका सार्वजनिक रूप से क्रय-विक्रय किया जाता था। धनी व्यक्ति अधिक से अधिक दासों को अपनी सेवा के लिए रखते थे। समाज में उनको सम्मानीय स्थान प्राप्त न था।

उस समय कृषि उन्नत दशा में थी। परन्तु उद्योग धन्धों पर भी विशेष ध्यान दिया जाता था। अरबों ने सिंचाई का उचित प्रबन्ध कर रखा था। उस समय अनेक प्रकार के फल उगाये जाते थे।

प्रश्न 3 - अरबों ने किस प्रकार इस्लाम धर्म का मध्य एशिया भारत एवं दक्षिणी-पूर्वी यूरोप में प्रसार किया ?

उत्तर—अरब साम्राज्य—मुहम्मद साहब ने मक्का में जन्म लिया था। वहीं से उन्होंने अपने उपदेश आरम्भ किये। लगभग सम्पूर्ण अरब निवासियों ने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया था। 632 ई० में पैगम्बर साहब की

मृत्यु हो गई। परन्तु उनकी मृत्यु से पूर्व समस्त अरब एक राज्य के अन्तर्गत आ चुका था। यहाँ से ही इस्लाम धर्म संसार के अन्य देशों में फैल गया। अरब निवासियों ने फारस, मिस्र, मध्य एशिया, पश्चिमी अफ्रीका तथा स्पेन पर अधिकार कर लिया।

अरब विजेता जहाँ कहीं भी गये, वे अपना धर्म साथ ले गये। अरब निवासियों ने बड़े उत्साह से इस्लाम धर्म का प्रचार किया। उन शताब्दियों में उनकी सभ्यता यूरोप निवासियों से कहीं आगे थी। पैगम्बर मुहम्मद साहब की आज्ञा के अनुसार, प्रत्येक मुसलमान का यह कर्तव्य है कि वह ज्ञान की खोज करे। इसी कारण अरब निवासियों का वैज्ञानिक ज्ञान अन्य देशों की अपेक्षा कहीं अधिक था।

प्रश्न 4—खलीफाओं का इस्लाम धर्म के प्रचार एवं प्रसार में क्या योगदान रहा है ?

उत्तर—खलीफाओं का योगदान—उस समय खलीफा सबसे शक्तिमान नेता होता था। इसी कारण उसे उच्चतम राजनीतिक अधिकार प्राप्त थे। खलीफा की आज्ञा कानून मानी जाती थी। मुहम्मद साहब के पश्चात् खलीफाओं ने इस्लाम धर्म के उत्तराधिकारियों के रूप में इस्लाम धर्म का प्रचार किया। जिस देश को अरब वासियों ने जीता, वहाँ उन्होंने इस्लाम धर्म का प्रसार किया। बगदाद खलीफाओं की राजधानी था।

प्रश्न 5—इस्लाम धर्म के प्रादुर्भाव से पूर्व तथा बाद में अरब सभ्यता तथा स्वरूप का वर्णन कीजिए।

उत्तर—इस्लाम धर्म के प्रादुर्भाव से पूर्व की सभ्यता—अरब के निवासी खानाबदोश थे। वे छोटे-छोटे कबीलों में विभाजित थे। वे परस्पद लड़ते रहते थे। प्रत्येक कबीले का प्रधान शेख कहलाता था। शेख की आज्ञा मानना कबीले के प्रत्येक सदस्य के लिए अनिवार्य था। उस समय अरब में स्त्रियों का स्थान अत्यन्त निम्न था। शेख अपने कबीले के सदस्यों को विविध मामलों में आज्ञा दिया करता था। स्त्रियों की दशा कितनी हीन थी, यह इस तथ्य से स्पष्ट होता है कि एक आदमी कितनी ही स्त्रियों से विवाह कर सकता था। कबीलों के सदस्य स्त्रियों के लिए युद्ध किया करते थे। स्त्री को पुरुष की सम्पत्ति माना जाता था। वह पुरुष वर्ग की दया पर जीवित रहती थी। पुरुष अपनी पत्नी को किसी भी समय छोड़ सकता था। पुरुष शराब पिया करते थे तथा जुआ खेला करते थे।

इस्लाम धर्म के प्रादुर्भाव से बाद की सभ्यता—अरबवासियों ने धर्म के प्रसार के जोश में समस्त पश्चिमी एशिया को अपने अधिकार में कर लिया। समस्त विजित प्रदेशों में इस्लाम की जड़ें मजबूत कर दीं। इस प्रकार उन्होंने अरब सभ्यता, संस्कृति तथा धर्म का प्रसार किया। अरब वालों ने अपनी सभ्यता के मूल तत्व भारत तथा चीन से प्राप्त किये थे। अरब निवासी धार्मिक मामलों में कट्टर थे। वे शिक्षित न थे। अरबों ने चिकित्सा सम्बन्धी ज्ञान भारत और यूनान से सीखा। खलीफाओं ने इस्लाम धर्म के प्रचार में विशेष योगदान दिया। अरबों ने अपनी एक विशिष्ट संस्कृति का विकास किया। उस समय बहुविवाह प्रथा प्रचलित थी। समाज को काजियों के द्वारा न्याय प्राप्त होता था। अरब शासन में सामन्ती प्रथा थी। अरब जगत धर्म प्रधान के कारण कुरान की आयतों से अधिक शासित होता था। कुरान में संगति, मानव

आकृतियों के चित्र तथा मूर्ति-निर्माण का निषेध है। इस कारण इस्लामी समाज में स्थापत्य कला, चित्रकला और संगीत का विकास नहीं हुआ।

अन्य महत्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1—खलीफाओं की राजधानी थी—

(क) मक्का। (ख) मदीना।
(ग) बगदाद। (घ) येरुशलम।

उत्तर—(ग) बगदाद।

प्रश्न 2—इस्लाम धर्म में न्याय किया जाता है—

(क) काजी के द्वारा। (ख) मुल्ला के द्वारा।
(ग) मौलवी के द्वारा। (घ) राजा के द्वारा।

उत्तर—(क) काजी के द्वारा।

प्रश्न 3—शाहनामा का लेखक था—

(क) उमरखय्याम। (ख) फिरदौसी।
(ग) अलीअलराजी। (घ) शेखसादी।

उत्तर—(ख) फिरदौसी।

मध्यकालीन यूरोप

अति लघुउत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—मार्टिन लूथर कौन था? वह किस कार्य के लिए प्रसिद्ध है? (1990)

उत्तर—मार्टिन लूथर जर्मनी का रहने वाला था। वह एक महान समाज सुधारक था। वह रोम के पोप के पाखण्डवाद का विरोधी था उसने चर्च के दोषों का भण्डा फोड़ किया था।

प्रश्न 2—चर्च की प्रभुसत्ता किसके पास थी?

उत्तर—चर्च की प्रभुसत्ता रोम के पोप के पास थी।

प्रश्न 3—राजा की निरंकुशता किस सिद्धान्त के आधार पर विकसित हुई? (1985)

उत्तर—राजा की निरंकुशता राजा के दैवी अधिकार सिद्धान्त आधार पर विकसित हुई।

प्रश्न 4—कुस्तुंतुनिया पर किसने और कब अधिकार कर लिया?

उत्तर—तुर्कों ने 1453 ई० में कुस्तुंतुनिया पर अधिकार कर लिया था।

परीक्षा में पूछे गये अति लघुउत्तरीय प्रश्न

न 5—मध्य युग में रोम के पोप की ईसाई जगत में क्या स्थिति थी? (1984)

उत्तर—मध्य युग में रोम के पोप की ईसाई जगत में सर्वोपरि स्थिति थी। वह सर्वोच्च नेता व धर्मगुरु माना जाता था।

प्रश्न 6—धर्म युद्ध क्या था? (1987)

उत्तर—ईसाइयों और तुर्कों के बीच शक्ति परीक्षण के लिए जो युद्ध हुए, उन्हें धर्मयुद्ध कहा जाता है।

प्रश्न 7—ईसाइयों और तुर्कों के बीच कब तक धर्म युद्ध लड़े गये ?

उत्तर—ईसाइयों और तुर्कों के बीच सन् 1096 से 1291 तक धर्म युद्ध लड़े गये ।

लघुउत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—सामन्तवाद में भूमि का वितरण किस प्रकार होता था ?

उत्तर—सामन्तवाद में किसानों के तीन वर्ग थे—

(i) स्वतन्त्र किसान, (ii) कृषि-दास, (iii) सर्फ ।

(i) स्वतन्त्र किसान—किसानों का सबसे उच्च वर्ग स्वतन्त्र किसान कहलाता था । वे अधिपति से भूमि प्राप्त करते तथा उसे कर देते थे । वे अधिपति के लिए कोई कार्य नहीं करते थे और न अपने उत्पादन का कोई भाग अपने अधिपति को देते थे ।

(ii) कृषि-दास—कृषकों का दूसरा वर्ग कृषि-दास कहलाता था । इस वर्ग के किसान अपने उत्पादन का कुछ भाग अपने सामन्त को दिया करते थे । वे अपने सामन्तों के खेतों पर कुछ निश्चित दिन कार्य भी करते थे शेष दिन वे अपने खेतों पर कार्य किया करते थे ।

(iii) सर्फ—किसानों का सबसे निम्न वर्ग सर्फ कहलाता था । ऐसे किसानों की संख्या सबसे अधिक थी । ऐसे किसानों पर अनेक प्रकार प्रतिबन्ध लगे हुए थे । ऐसे किसानों को अपने मालिकों के लिए मकान तथा सड़कें बनानी होती थीं । उनको मकानों तथा सड़कों की मरम्मत भी करनी होती थी । इस कार्य के लिए उनको किसी प्रकार की मजदूरी नहीं मिलती थी ।

प्रश्न 2—मध्यकालीन युग में धर्म और राजनीति के क्या सम्बन्ध थे ? **(1986, 89)**

उत्तर—मध्यकालीन युग में पोप की धार्मिक सत्ता अत्यन्त शक्तिशाली थी । उस समय यूरोप में धर्म प्रधान राजनीति थी । राजनैतिक सत्ता के रूप में राजा भी पोप की आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर सकता था । चर्च का धार्मिक सामाजिक और राजनैतिक क्षेत्रों में पूर्ण हस्तक्षेप था । रोम के चर्च में पोप धर्मोपरि था । उस समय पोप का कैथोलिक धर्म था । चर्च राज्य की तरह कर वसूल करता था । पोप की शक्ति अत्यन्त व्यापक थी । धार्मिक-भय तथा आतंक के कारण जनता पोप की प्रत्येक आज्ञा मानती थी । चर्च की अपनी सरकार, अपना कानून अपने न्यायालय और अपनी सामाजिक एवं धार्मिक व्यवस्था थी ।

प्रश्न 3—पोप के धार्मिक अधिकार क्या थे ? **(1988)**

उत्तर—**पोप के धार्मिक अधिकार**—रोमन साम्राज्य के पतन के पश्चात् रोमन कैथोलिक चर्च ने विशेष शक्ति प्राप्त कर ली थी । चूँकि शक्ति बढ़ गई थी, अतः पोप का महत्त्व भी बढ़ गया था । पोप समस्त ईसाई जगत के पूज्य बन गये थे । उनकी शक्ति इतनी बढ़ गयी थी उनको ईसा मसीह का प्रतिनिधि माना जाने लगा था । अब पोप ईसाई राजाओं को आदेश देने लगे थे । ईसाई राजा पोप के आदेशों के विरुद्ध कार्य नहीं कर सकते थे ।

प्रश्न 4—कैथोलिक धर्म से आप क्या समझते हो ?

उत्तर—**रोमन कैथोलिक धर्म की विशेषताएँ**—रोमन कैथोलिक धर्म की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं—

(i) कैथोलिक चर्च को सबसे उच्च संस्था स्वीकार करते हैं ।

(ii) पोप उच्चतम स्थिति रखते हैं। पोप की आज्ञा का पालन किया जाना अनिवार्य है।

(iii) रोमन कैथोलिक का विश्वास था, "खाओ पीओ और मौज करो।" इसी कारण वे जीवन का पूर्ण आनन्द लेते थे।

(iv) उनका कर्म के सिद्धान्त पर विश्वास न था। वे इस पर भी विश्वास नहीं करते थे कि मृत व्यक्ति अपने कर्मों के अनुसार न तो स्वर्ग जाते हैं और न कर्म में। पोप किसी भी व्यक्ति को स्वर्ग भेज सकता है।

(v) संसार में कैथोलिक धर्म के अनुयायियों की संख्या लगभग 50 करोड़ है।

(vi) कैथोलिक के लिए प्रत्येक रविवार को चर्च जाना अनिवार्य है। यहां चर्च के उपदेश सुनना आवश्यक है।

(vii) कैथोलिक मनुष्य की मुक्ति के लिए संस्कारों को आवश्यक मानते हैं?

(viii) प्रत्येक ईसाई के लिए व्रत रखना अनिवार्य है।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—मध्यकालीन यूरोप में चर्च और राज्य में क्या सम्बन्ध थे ? (1986, 87, 89)

अथवा

मध्यकालीन यूरोप में चर्च के योगदान की चर्चा कीजिए। (1984)

अथवा

मध्य युग में यूरोप वासियों तथा तुर्कों के बीच जो धर्म युद्ध हुए उनके क्या मुख्य कारण थे ?

उत्तर—मध्यकालीन यूरोप में चर्च—रोमन साम्राज्य के पतन के पश्चात् रोमन चर्च कैथोलिक चर्च ने विशेष शक्ति प्राप्त कर ली थी। चूंकि चर्च की शक्ति बढ़ गयी थी, अतः पोप का महत्व भी बढ़ गया था। पोप समस्त ईसाई जगत के पूज्य बन गये थे। उनकी शक्ति इतनी बढ़ गई थी कि उनको ईसामसीह का प्रतिनिधि माना जाने लगा था। अब पोप ईसाई राजाओं को आदेश देने लगे थे। ईसाई राजा पोप के आदेशों के विरुद्ध कार्य नहीं कर सकते थे।

(1) **शिक्षा के क्षेत्र में चर्च का योगदान**—मध्य युग में ईसाई समाज अज्ञानता की लपेट में था। अतः चर्च ही शिक्षा-प्रसार का कार्य करती थी। परन्तु उस समय केवल पादरी लोग शिक्षित होते थे। उनकी शिक्षा का माध्यम लैटिन होता था। इस कार्य में उनकी सहायता ईसाई भिक्षु और भिक्षुणियाँ किया करते थे।

(2) **नाटक के क्षेत्र में चर्च का योगदान**—उस समय लोग शिक्षित कम थे। छपी हुई पुस्तकों का भी अभाव था। अतः शिक्षा-प्रसार का एक साधन नाटक था। उस समय के नाटक लोगों का मनोरंजन भी करते थे और साथ ही साथ शिक्षा देने का कार्य भी करते थे। इन नाटकों का आयोजन गिरिजाघरों में होता था। नाटक दो प्रकार के होते थे—(i) प्रथम प्रकार के नाटकों में सन्तों के चमत्कार दिखाये जाते थे और (ii) द्वितीय प्रकार के नाटकों में पाप और पुण्य के मध्य संघर्ष दिखाया जाता था।

(3) **संगीत के क्षेत्र में चर्च का योगदान**—सामूहिक गान समय गिरजाघरों में संगीत का प्रयोग किया जाता था। अतः गायकों ने कुछ नई धुनें निकालीं। जो गीत गाये जाते थे, उनका सम्बन्ध धर्म से होता था।

(4) वास्तुकला के क्षेत्र में चर्च का योगदान—उस समय उल्लेखनीय इमारतें चर्च के द्वारा बनाये गये गिरजाघर या सामन्तों के दुर्ग हुआ करते थे। गिरजाघर उस समय की वास्तुकला के उत्कृष्ट नमूने हैं। गिरजाघर के मध्य में गुम्बदाकार छत वाले बड़े-बड़े हाल होते थे। इसके दोनों ओर स्तम्भों की पंक्तियाँ होती थीं। इसकी दीवारें काफी मोटी तथा मजबूत होती थीं जिससे वे भारी छतों का बोझ सम्भाल सकें। इसकी दीवारों पर खिड़कियाँ लगाई जाती थीं। गिरजाघर नगर के सबसे सुन्दर भवन हुआ करते थे।

प्रश्न 2—मध्यकालीन यूरोप में सामन्तवाद से क्या समझते हो? सामन्तवाद के क्या गुण-दोष थे। (1987)

उत्तर—मध्यकालीन यूरोप में सामन्तवाद—यूरोप के मध्यकाल में बड़े-बड़े साम्राज्य समाप्त हो गये थे। इनका स्थान अनेक छोटे-छोटे राज्यों ने ले लिया था। इन राज्यों में राजकुमार राज्य करते थे। वे आपस में लड़ते रहते थे। अतएव चारों ओर अशान्ति का वातावरण बन गया था। इसी कारण दूसरी ओर सामन्तवाद की जड़ें गहरी होने लगीं। अब युद्ध होना एक साधारण बात हो गयी थी। ये युद्ध कभी एक लार्ड का दूसरे लार्ड से, लार्डों का राजाओं से और एक राजा का दूसरे राजा से हुआ करते थे। इसी कारण प्रत्येक राजा या लार्ड को इतनी शक्ति एकत्रित करनी पड़ती थी कि वह युद्ध के समय आक्रमणकारी का मुकाबला कर सके और स्वयं अपनी रक्षा कर सके।

सामन्ती वर्ग

मध्यकाल में सामन्ती समाज में एक क्रमवार संगठन (Hierarchy) की स्थापना की गई थी। इस क्रम में प्रत्येक व्यक्ति जिसका सामन्ती समाज से सम्बन्ध था अपना निश्चित स्थान था। इस क्रम में सबसे ऊपर राजा होता था। उसका कार्य लार्डस (Lord) को जागीरें वितरित करना था। इन लार्डस को ड्यूक (Duke) या अर्ल (Earl) कहा जाता था। ये बड़े लार्ड अपनी जागीरों का कुछ भाग छोटे लार्डस को दे दिया करते थे। इन लार्डस को बैरन (Baron) कहा जाता था। स्पष्ट है कि ये ड्यूक और अर्ल राजा के समान्त होते थे। बैरन ड्यूक या अर्ल के मातहत कार्य करते थे। इस क्रमवार संगठन में सबसे छोटे नाइट (Knight) होते थे। वे बैरनों को सैनिक सहायता दिया करते थे। नाइट्स के मातहत कोई सामन्त नहीं होता था। इन सामन्तों से यह अपेक्षा की जाती थी कि वे अपने से बड़ों की सेवा करें। ये सामन्त जिनके मातहत कार्य करते थे, उनको सैनिक सहायता दिया करते थे। प्रत्येक सामन्त सैनिकों की एक टुकड़ी अपने पास रखता था और आवश्यकता के समय अपने अधिपति को सहायता दिया करते थे। सेना की इन सब टुकड़ियों को मिलाकर राजा की सेना बना करती थी। सामन्ती क्रम इतना शक्तिशाली होता था कि राजा किसी बैरन या नाइट से सीधा सम्पर्क स्थापित नहीं कर सकता था। राजा को प्रत्येक कार्य में पूरी सावधानी रखनी होती थी।

सामन्तवाद के गुण तथा दोष

सामन्तवाद के कुछ गुण इस प्रकार हैं—

(1) सामन्तों ने राज्य में शान्ति और व्यवस्था स्थापित की जो रोमन साम्राज्य के पतन के फलस्वरूप उत्पन्न हो गयी थी।

(2) सामन्तों ने वीरता को प्रोत्साहित किया। उन्होंने अपनी सैन्य शक्ति में वृद्धि की। इसका परिणाम यह हुआ कि ईसाइयों ने धर्म युद्ध में मुसलमानों से डटकर मोर्चा लिया।

(3) सामन्त अपने क्षेत्र के लोगों की जान और माल की रक्षा करते थे। सामान्तों ने अपने लोगों को आन्तरिक तथा बाह्य शत्रुओं से रक्षा की।

(4) सामन्तवाद ने राजा के अधिकारों पर नियन्त्रण लगा रखा था। राजा अपने समझौतों से, सामन्तों से और सामन्त राजाओं से बँधे हुए थे। इस प्रकार राजा मनमानी नहीं कर सकता था।

सामन्तवाद के कुछ दोष इस प्रकार हैं—

(1) समान्तवाद में राजनीतिक एकता स्थापित न हो सकी। सामन्तवाद के कारण देश छोटी-छोटी जागीरों में विभाजित हो गया। इसके फलस्वरूप कोई शक्तिशाली केन्द्रीय सत्ता विकसित न हो सकी।

(2) सामन्त लोग आपस में लड़ते-झगड़ते रहते थे। इस प्रकार मध्य युग में अनेक युद्ध हुए।

(3) सामन्तों की शील में वृद्धि हुई। राजा की शक्ति कम होती गई। देश में हर समय विद्रोह की सम्भावना बनी रहती थी।

(4) सामन्तवाद की एक विशेषता 'शोषण' थी। सामन्त लोग भोग-विलास का जीवन व्यतीत करते थे। परन्तु किसानों का शोषण किया जाता था। वे नाटकीय जीवन व्यतीत करते थे।

प्रश्न 3—मध्यकालीन यूरोप में कला, साहित्य और समाज में क्या उन्नति हुई?

उत्तर—मध्यकालीन यूरोप में कला, साहित्य और समाज—सामन्तों ने कला तथा साहित्य को खूब प्रोत्साहन दिया। इस समय यूरोप में शानदार महलों का निर्माण किया गया। यूरोप में अन्य देशों की भाँति प्राचीन काल का समाज मुख्य रूप से ग्रामों में रहता था, किन्तु मध्यकाल में नगरों का विकास आरम्भ हो गया। दसवीं शताब्दी में नागरिक जीवन में परिवर्तन आने लगे। इटली तथा भूमध्य सागर के आस-पास अनेक नगर बस गये। गिल्ड संगठनों के द्वारा शहरी जीवन की आर्थिक दशा का संचालन होता था। यही कारण है कि मध्यकाल में शहर व्यापारिक, राजनैतिक तथा कला के केन्द्र बन गये।

प्रश्न 4—मध्यकालीन युग में नगरों के महत्त्व और उनके व्यापारिक स्वरूप का वर्णन करो।

उत्तर—व्यापार के विकास के साथ-साथ व्यापारी वर्ग का महत्त्व बढ़ गया। अब उसकी राजनीतिक क्षेत्र में भी प्रभाव बढ़ गया। 11वीं शताब्दी से व्यापार और अधिक महत्त्वपूर्ण होने लगे। उस समय के व्यापार और वाणिज्य के नगर आजकल यूरोप के प्रसिद्ध नगरों में गिने जाते हैं। इटली के नगर अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण अन्य यूरोपीय नगरों की अपेक्षा अच्छी स्थिति में थे। मध्यकाल में यूरोप के सभी नगर व्यापार पर निर्भर थे। ये नगर या तो समुद्र तट पर स्थित थे या व्यापारिक मार्गों पर स्थित थे। उस समय के प्रसिद्ध नगर इस प्रकार हैं—

(i) पेरिस, (ii) वेनिस, (iii) जेनोआ, (iv) फ्लोरेंस, (v) मिलान, (vi) पीसा, (vii) कुस्तुनतुनियाँ, (viii) ल्योन और (ix) रोम आदि।

प्रश्न 5—मंगोलों के आक्रमण ने किस प्रकार यूरोप और पश्चिमी एशिया के समाज और धर्म को प्रभावित किया ?

उत्तर—लगभग 12वीं शताब्दी में मध्य एशिया में मंगोलों की शक्ति का उदय हुआ। मंगोलों के महान नेता चंगेजखाँ थे। उसने मंगोलों की जाति को संगठित करके मंगोलों की शक्ति को अत्यधिक बढ़ा दिया। 1256 ई० में चंगेजखाँ के पौत्र हलाकू खाँ ने आक्रमण करके बगदाद पर अधिकार कर लिया। बगदाद से खलीफा भागकर मिस्र चले गये और वहाँ रहने लगे। अरबवासियों ने पश्चिमी एशिया पर अपना अधिकार कर लिया और वहाँ अपने धर्म का प्रचार किया। मंगोलों के आक्रमण ने कला तथा साहित्य के सभी केन्द्र नष्ट कर दिये। अब इस्लाम धर्म का प्रभाव कम हो गया।

परीक्षा में पूछे एवं अन्य महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1—मार्टिन लूथर किंग था— (1988)

(क) राजा। (ख) वैज्ञानिक।
(ग) दार्शनिक। (घ) समाज सुधारक।

उत्तर—(घ) समाज सुधारक।

प्रश्न 2—ईसाइयों और तुर्कों के मध्य धर्म युद्ध होने का कारण था—

(क) राजसत्ता की क्रान्ति। (ख) धार्मिक मतभेद।
(ग) धन की प्राप्ति। (घ) रोम के पोप का प्रभुत्व।

उत्तर—(ख) धार्मिक मतभेद।

प्रश्न 3—मध्य युग में यूरोपीय समाज की प्रमुख विशेषता थी—

(क) सामन्तवाद। (ल) दास-प्रथा।
(ग) नगरीकरण। (घ) अन्धविश्वास।

उत्तर—(क) सामन्तवाद।

प्रश्न 4—रोम का साम्राज्य समाप्त हुआ—

(क) 475 ई० में। (ख) 477 ई० में।
(ग) 476 ई० में। (घ) 478 ई० में।

उत्तर—476 ई० में। □

6 यूरोप में पुनर्जागरण

अति लघुउत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—उत्तमाशा अन्तरीप की खोज किसने की ?

उत्तर—वारथोलोम्यू डियाज ने 1486 ई० में उत्तमाशा अन्तरीप की खोज की।

प्रश्न 2—विश्व की जल मार्ग के द्वारा प्रथम परिक्रमा किसने की ? (1986, 89)

उत्तर—सर्वप्रथम जल मार्ग द्वारा विश्व की मंगलन ने परिक्रमा की।

प्रश्न 3—पोप ने नई दुनियाँ का बँटवारा किन-किन देशों के मध्य किया ? (1988)

उत्तर—पोप ने नई दुनिया का बँटवारा पुर्तगाल तथा स्पेन देशों के मध्य किया।

प्रश्न 4—विलियम हाकिन्स कौन था और वह भारत में किस बादशाह के दरबार में आया ?

उत्तर—विलियम हाकिन्स एक अँग्रेज व्यापारी था। वह भारत में 1608 ई० में मुगल सम्राट जहाँगीर के दरबार में आया था।

प्रश्न 5—न्यूसाउथ वेल्स, एबीसीनियाँ, काँगों प्रदेश तथा मोरक्को कहाँ और किस देश में हैं ?

उत्तर—न्यूसाउथ वेल्स आस्ट्रेलिया महाद्वीप है। अबीसीनिया, कांगो प्रदेश तथा मोरक्को अफ्रीका में स्थित है।

परीक्षा में पूछे गये तथा अन्य अति लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 6—कोलम्बस कहाँ का निवासी था ? (1984)

उत्तर—कोलम्बस स्पेन का निवासी था।

प्रश्न 7—वास्कोडिगामा किस देश से और कब भारत आया था ? (1986)

अथवा

वास्कोडिगामा कालीकट कब आया था ? (1987)

उत्तर—वास्कोडिगामा पुर्तगाल देश से सन् 1498 ई० में कालीकट (भारत) आया था।

प्रश्न 8—कोलम्बस कौन था ? उसने अमेरिका की खोज कब की ? (1989)

उत्तर—कोलम्बस स्पेन का एक साहसी नाविक था ? उसने अमेरिका की खोज सन् 1492 ई० में की।

प्रश्न 9—तुर्कों (अरबों) ने कुस्तुन्तुनियाँ पर अधिकार कब किया ?

उत्तर—तुर्कों (अरबों) ने कुस्तुन्तुनियाँ पर अधिकार 1453 ई० में किया।

प्रश्न 10—मैगलेन किस देश का नाविक (निवासी) था ?

उत्तर—मैगलेन पुर्तगाल देश का नाविक (निवासी) था।

प्रश्न 11—उस यूरोपीय नाविक का नाम बताइए जिसने सर्वप्रथम भारत और यूरोप मध्य समुद्री मार्ग खोजा था ?

उत्तर—वास्कोडिगामा वह पहला यूरोपीय नाविक था जिसने भारत और यूरोप के मध्य समुद्री मार्ग खोजा था।

लघुउत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—तुर्कों तथा अरबों के आक्रमण ने यूरोप के धार्मिक जीवन पर क्या प्रभाव डाला ?

उत्तर—यूरोप के धार्मिक जीवन पर प्रभाव—तुर्कों तथा अरबों के आक्रमण ने यूरोप में एक असाधारण क्रान्ति उत्पन्न कर दी थी। उस समय दो सभ्यताएँ आपस में टकरा रही थीं और वे एक-दूसरे को प्रभावित करने का प्रयास कर रही थीं। तुर्कों का प्रयास था कि वे इस्लाम धर्म का अधिकाधिक प्रसार करें और ईसाइयों का यह प्रयास था कि वे किस प्रकार अपनी सभ्यता की रक्षा करें। इस संघर्ष में समस्त यूरोप एक हो गया। तुर्कों ने बलपूर्वक अपने धर्म का प्रचार करना चाहा। परन्तु यूरोप ने सांस्कृतिक पुनुरुत्थान के द्वारा अपने धर्म और समाज की रक्षा की। और धर्म को रूढ़िवादी स्वरूप को समाप्त किया लोगों ने धर्म की पुरानी मान्यताओं अस्वीकार कर धर्म की नयी और वैज्ञानिक व्याख्या की।

प्रश्न 2—प्रोटेस्टेन्ट धर्म के उदय के क्या कारण थे ?

उत्तर—प्रोटेस्टेन्ट धर्म के उदय के कारण—जर्मनी में मुक्ति पत्रों के विरोध में जो आन्दोलन चला उसका नेता मार्टिन लूथर था। मार्टिन लूथर जर्मनी के एक मजदूर का पुत्र था। वह भिक्षु बन गया था और एक विश्वविद्यालय में प्राध्यापक नियुक्त हो गया था। उसे कैथोलिक चर्च के रीति-रिवाजों को देखकर बहुत दुःख हुआ था। वह यह अनुभव करने लगा था कि पोप का आध्यात्मिक संसार से कोई सम्बन्ध नहीं है। इस प्रकार कैथोलिक धर्म की बुराइयों पोप के धार्मिक एकाधिकार और सामन्तवादी शोषण और अन्याय के विरोध में प्रोटेस्टेन्ट धर्म का उदय हुआ।

प्रश्न 3—वास्कोडिगामा किस प्रकार भारत पहुँचा ? (1986)

उत्तर—वास्कोडिगामा—भौगोलिक अन्वेषणों के क्षेत्र में वास्कोडिगामा का नाम विशेष उल्लेखनीय है। वह 1498 ई० पुर्तगाल से चलकर उत्तमाशा अन्तदीप पहुँचा वहाँ से वह पूर्व की ओर बढ़ा। उसने हिन्द महासागर पार किया और मालाबार के तट पर पहुँचा फिर वहाँ से कालीकट पहुँचा और वहाँ के राजा जमोरिन के दरबार में गया। कुछ समय तक भारत में रहकर उसने यहाँ पुर्तगाली बस्तियाँ वसायीं।

प्रश्न 4—कोलम्बस ने नई दुनिया का पता कैसे लगाया ? (1987)

उत्तर—कोलम्बस स्पेन देश का एक साहसी नाविक था। उसे समुद्री यात्रा करने का बड़ा शौक था। स्पेन का राजा फर्डिनेंड और रानी ईसाबेला ने कोलम्बस को आर्थिक और राजनैतिक सहायता प्रदान कर जलमार्ग द्वारा भारत पहुँचने के लिए

प्रोत्साहित किया। 1492 ई० में वह तीन जहाजों में कुछ साथियों को लेकर पश्चिमी समुद्री मार्ग के द्वारा भारत की खोज के लिए निकल पड़ा। 33 दिनों की कठिन समुद्री यात्रा के बाद वह एक नयी धरती पर पहुँच गया। उसने समझा यह कि वह भारत पहुँच गया, परन्तु वह जिस नयी धरती पर पहुँचा, वह भारत न होकर नयी दुनिया थी जिसका सही पता उस समय चला, जबकि इटली निवासी एक-दूसरे नाविक अमेरिगो ने इसी समुद्री मार्ग द्वारा यात्रा करके इसका पता लगाया। बाद में इस नयी धरती का नाम अमेरिगो के नाम पर अमेरिका पड़ा। इस प्रकार कोलम्बस ने नई दुनिया का पता लगाया।

प्रश्न 5—डेविड लिविंग्सटन के कार्यों का क्या महत्व है ?

उत्तर—डेविड लिविंग्सटन के कार्यों का महत्व —डेविड लिविंग्स्टन स्काटलैंड का निवासी था। उसने अफ्रीका के अद्‌भुत प्रदेश की खोज की। उसने वहाँ की परिस्थितियों का अध्ययन किया और लौट आया। वह फिर से 1842 ई० में अफ्रीका गया और 1873 ई० तक वहाँ रहा। उसने लगभग 30 वर्षों के प्रयास में हजारों मीलों की लम्बी यात्रा पैदल की। उसने अनेक नदियों, झीलों और दुर्गम प्रदेशों की खोज की। उसीने कांगो नदी का पता लगाया। 1873 ई० में उसकी मृत्यु हो गई। इस प्रकार डेविड लिविंग्स्टन द्वारा अफ्रीका की खोज से इंग्लैण्ड को वहाँ अपने उपनिवेश स्थापित करने में बड़ी सहायता मिली।

प्रश्न 6—उत्तरी अफ्रीका का बँटवारा किन-किन देशों में हुआ ?

उत्तर—उत्तरी अफ्रीका का बँटवारा—उत्तरी अफ्रीका का बँटवारा फ्रान्स, इंग्लैण्ड और इटली के मध्य हुआ। उत्तरी अफ्रीका का भाग यूरोप के निकट था। अतः सभी देश उस पर अपना अधिकार जमाना चाहते थे।

परीक्षा में पूछे गये तथा अन्य लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 7—रोम का प्रसिद्ध चित्रकार कौन था ? उसका कौन-सा चित्र विश्व प्रसिद्ध हुआ ?

उत्तर—रोम का प्रसिद्ध चित्रकार माइकल ऐंजेला था। यूरोप के पुनर्जागरण काल में उसकी कलाकृतियों ने यूरोप में बड़ी धूम मचा दी थी। 'दी फाल ऑफ मैन' (मनुष्यों का पतन) उसका विश्व प्रसिद्ध चित्र था।' दी लास्ट जजमेन्ट (अन्तिम न्याय) उसका दूसरा विश्व प्रसिद्ध चित्र था।

प्रश्न 8—दान्ते कौन था ? उसका संक्षिप्त परिचय दीजिए।

उत्तर—दान्ते इटली का एक प्रसिद्ध लेखक था। उसने इटेलियन भाषा में अनेक ग्रन्थों की रचना की। उसकी रचनाओं से यूरोप के पुनर्जागरण को बहुत बल मिला। उसकी प्रसिद्ध रचना 'डिवाइन कमेडिया' थी जो इटेलियन भाषा में लिखी एक साहित्यिक रचना है। इस ग्रन्थ में एक तीर्थ यात्रा का बहुत ही सजीव एवं रोचक वर्णन है।

प्रश्न 9—रोजर बेकन के विषय में आप क्या जानते हैं। संक्षेप में लिखिए।

उत्तर—रोजर बेकन इंग्लैण्ड का एक महान वैज्ञानिक था। उसने तर्कवाद के के आधार पर सत्य और धर्म की विवेचना करने पर जोर दिया। रोजर बेकन ने भूगोल, खगोल, गणित और विज्ञान के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ प्राप्त कीं और यूरोपवासियों को इन विषयों के गहन अध्ययन के लिए प्रेरित किया। उसके अथक प्रयासों के फलस्वरूप यूरोप निवासी रोम और यूनान के साहित्य को पढ़ने में पर्याप्त रुचि लेने लगे।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—पुनर्जागरण से आप क्या समझते हो ? यूरोप में पुनर्जागरण के क्या कारण थे ? (1984, 86)

अथवा

यूरोप में पुनर्जागरण के कारणों पर प्रकाश डालिए ? (1988, 90)

उत्तर—पुनर्जागरण का अर्थ—यूरोप में जब मध्ययुग समाप्त हो रहा था और नवीन युग का प्रारम्भ हो रहा था तो वहाँ अनेक परिवर्तन हुए जिनमें एक था 'पुनर्जागरण'। इस शब्द के लिए अँग्रेजी में अधिक लोकप्रिय शब्द है—'रिने सान्स' यह शब्द फ्रांसिसी भाषा का है जिसका शाब्दिक अर्थ है—'फिर से जीवित हो जाना। यूरोप के इतिहास में पुनर्जागरण शब्द उस काल के लिए लिया जाता है—जो लगभग 1300 ई० से प्रारम्भ हुआ और 1600 ई० तक चलता रहा। इस काल में योरोप वासियों ने जीवन के प्रति अपना दृष्टिकोण परिवर्तित कर दिया। पुनर्जागरण शब्द का प्रयोग उन सभी बौद्धिक परिवर्तनों के लिए किया जाता है, जो यूरोप में मध्य युग के अन्त में तथा आधुनिक युग के प्रारम्भ में दृष्टिगोचर हो रहे थे। दूसरे शब्दों में, पुनर्जागरण से तात्पर्य उस अवस्था से होता है, जब मानव-समाज अपनी पुरानी सांस्कृतिक एवं राजनैतिक अवस्थाओं में नवीन उपयोगी परिवर्तनों के लिए उत्सुक हो जाता है। संक्षेप में पुनर्जागरण एक अहिंसक और सांस्कृतिक क्रान्ति थी जिसके कारण मनुष्य ने अज्ञानता, अन्धविश्वास और सामन्तों के शोषण से मुक्ति प्राप्त की। वास्तव में यूरोप में उत्पन्न वैचारिक चेतना को पुनर्जागरण की संज्ञा दी गयी।

—पुनर्जागरण के कारण—यूरोप में पुनर्जागरण के प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं—

(1) **धर्म-युद्धों का प्रभाव**—तुर्कों और ईसाइयों के बीच अपने धर्म के प्रचार और सुरक्षा के कारण अनेक युद्ध हुए। इन युद्धों के कारण बहुत से लोग विदेशों के सम्पर्क में आये तथा वहाँ की सभ्यता का ज्ञान प्राप्त किया। ये लोग अपने देश को जब लौटे तो नयी सभ्यता और नये विचारों को लेकर आये। इन विचारों ने पुनर्जागरण में बहुत सहयोग प्रदान किया। ये लोग प्लेटो तथा अरस्तू आदि विचारकों के विचारों से बहुत प्रभावित हुए।

(2) **सामान्तवाद का पतन**—योरोप में सामान्तवाद के पतन का पुनर्जागरण पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा। सामन्तवाद के पतन से जनसाधारण को बहुत अधिक राहत प्राप्त हुई और वह शान्तिपूर्वक नवीन विषयों के बारे में सोचने लगे।

(3) **भौगोलिक खोजें**—भौगोलिक खोज का भी पुनर्जागरण में विशेष महत्व है। भौगोलिक खोजों के द्वारा नये व्यापारिक समुद्री भागों का पता चलने से व्यापार की उन्नति हुई तथा अन्य दूसरी महत्वपूर्ण सभ्यताओं का विकास हुआ जिससे नये विचारों का शीघ्रता से प्रसार हुआ तथा पुनर्जागरण को बल प्राप्त हुआ।

(4) **नगरों का विकास**—सामन्तवाद की समाप्ति के साथ ही साथ नगरों का विकास प्रारम्भ हुआ। नगर शिक्षा, व्यापार और उद्योगों के प्रमुख केन्द्र बन गये। उच्च शिक्षा के कारण धार्मिक अन्धविश्वास कम हुए और पुनर्जागरण का प्रारम्भ हुआ।

(5) **छापेखाने का आविष्कर**—पुनर्जागरण के विकास में छापेखाने के आविष्कार का विशेष महत्व है। 1465 ई० जर्मनी के गुटिनबर्ग नाम के व्यक्ति ने

छापेखाने का आविष्कार किया। इससे भारी संख्या में पुस्तकें छपने लगीं और सभी को सरलता या सुगमता से सुलभ होने लगीं।

(6) **वैज्ञानिक आविष्कार**—विज्ञान की उन्नति ने पुनर्जागरण का मार्ग खोज दिया। गैलीलियों ने दूरदर्शन यन्त्र का आविष्कार करके नक्षत्रों के बारे में खोज शुरू की तथा आइजन न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण शक्ति का पता लगाया।

प्रश्न 2—पुनर्जागरण काल में किन-किन नये देशों की तथा किस प्रकार खोज हुई? (1987, 89)

उत्तर—पुनर्जागरण काल में यूरोप के देशों में अनेक ऐसे साहसी नाविक हुए जिन्होंने लम्बी-लम्बी भौगोलिक और समुद्री यात्राओं के द्वारा नये-नये देशों तथा स्थानों की खोज की। इस काल में हुई प्रमुख खोजों का वर्णन निम्नलिखित है—

1. **उत्तमाश अन्तरीप की खोज**—इसकी खोज एक पुर्तगाली नाविक वारथोलोम्यु डियाज ने 1486 ई० में पूरे पश्चिमी अफ्रीका के तट की यात्रा करके की। जब वह अफ्रीका के पश्चिमी तट की कठिनाइयों को झेलता हुआ दक्षिणी अफ्रीका के अन्तरीप में पहुँचा तो उसे पूर्वी देशों विशेषत: भारत पहुँचने की पूरी आशा हुई। इसलिए उसने उस अन्तरीप का नाम उत्तमाशा अन्तरीप रखा जो आज तक प्रचलित है।

2. **अमेरिका की खोज**—अमेरिका की खोज स्पेन के एक साहसिक नाविक कोलम्बस ने की। कोलम्बस 1492 में स्पेन के राजा और रानी से आर्थिक सहायता प्राप्त कर 3 जहाजों में अपने साथियों को लेकर पश्चिमी समुद्र के मार्ग से भारत की खोज के लिए निकल पड़ा। 33 दिनों की कठिन समुद्री यात्रा के बाद वह एक नयी धरती पर पहुँच गया। उसने उसी को भारत समझा परन्तु वास्तव में वह नई दुनिया—आधुनिक अमेरिका था। कुछ समय बाद इटली का एक नाविक अमेरिगो भी उसी मार्ग से यहीं पर पहुंचा। उसी के नाम पर इस नई दुनिया का नाम अमेरिका पड़ गया।

3. **उत्तरी अमेरिका की खोज**—उत्तरी अमेरिका की खोज इंग्लैण्ड के एक नाविक जौन कैवट ने की। इंग्लैण्ड के राजा हेनरी सप्तम ने 1497 में जौन कैवट को पूरी आर्थिक और राजनैतिक सहायता देकर पश्चिमी तट की ओर भेजा। वह उत्तरी अन्ध महासागर को पार करके लेब्राडोर के समुद्री तट पर पहुँचा। इसके बाद वह कनाडा के समुद्र तट पर पहुँचा इस प्रकार उसने उत्तरी अमेरिका की खोज की।

4. **फिलीपीन्स द्वीप समूह की खोज**—फिलीपीन्स द्वीप समूह की खोज पुर्तगाली नाविक फर्डिनेंड मैगलेन ने की। उसने 1519 ई० में स्पेन के राजा की सहायता से समुद्री यात्रा का अभियान किया। मैगलेन दक्षिणी अफ्रीका को पार करता हुआ दक्षिणी अमेरिका के जलडमरुमध्य से होकर प्रशान्त महासागर में पहुँचा: महीनों तक वह समुद्र में आगे बढ़ता रहा और अन्त में वह फिलीपीन्स द्वीप समूह में पहुँचा। उसने स्पेन के राजकुमार फिलिप के नाम इन द्वीप समूहों का नाम फिलीपींस रखा।

5. **अफ्रीका की खोज**—अफ्रीका महाद्वीप की खोज स्काटलैण्ड निवासी डेविड लिविंग्स्टन ने की। वह 1841 ई० में एक इसाई मिशनरी के रूप में अफ्रीका गया। उसने वहाँ की परिस्थितियों का भली प्रकार अध्ययन किया और अपने देश लौट आया। वह फिर 1842 ई० ई० में अफ्रीका गया और 30 वर्षों तक वहीं रहा।

इस बीच दो-बार वह अपने घर अवश्य लौटा। अफ्रीका में रहकर उसने हजारों मीलों की लम्बी यात्रा पैदल की, उसने कांगो नदी सहित अनेक नदियों, झीलों और दुर्गम भू-भागों की खोज की।

प्रश्न 3—पुनर्जागरण के फलस्वरूप यूरोप की आर्थिक दशा, व्यापार और सामाजिक जीवन में क्या उल्लेखनीय प्रगति हुई? (1988, 90)

उत्तर—आर्थिक दशा पर प्रभाव—भौगोलिक खोजों के पश्चात् यूरोप के व्यापारी एशिया के देशों से वस्तुएँ क्रय किया करते थे। फिर उन वस्तुओं को अत्यधिक मूल्य पर अपने देशवासियों को बेचा करते थे। इस प्रकार वे अत्यधिक लाभ कमाते थे। इस प्रकार वे प्राप्त लाभ का सोना अपने देश ले जाते थे। यूरोप वालों ने एशिया और अमेरिका में अनेक उपनिवेश बसा लिये थे। अब समस्या यह थी कि इन उपनिवेशों का सोना किस प्रकार यूरोप जाये। अतः इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए यूरोप निवासियों ने अनेक नियम बनाये। उपनिवेश अन्य देशों से जिसके वे उपनिवेश न थे व्यापार नही कर सकते थे। वाणिज्यवाद के अन्तर्गत यह भी नियम था कि वे कुछ वस्तुओं का निर्माण नहीं कर सकते थे। इसका उद्देश्य प्रतियोगिता रोकना था। जिसके फलस्वरूप इन देशों की आर्थिक प्रगति हुई।

व्यापार पर प्रभाव—पुनर्जागरण के फलस्वरूप जब व्यापार का विकास हुआ तो व्यापार के क्षेत्र में अनेक परिवर्तन हुए। मध्य युग में इटली के नगर अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के केन्द्र थे। जब नवीन व्यापारिक मार्गों की खोज हुई तो इन व्यापारिक केन्द्रों का महत्त्व कम हो गया और अटलान्टिक महासागर के निकट के देश व्यापार के प्रमुख केन्द्र बन गये।

यूरोप में पुनर्जागरण के फलस्वरूप उपनिवेशों की स्थापना होने से कच्चे माल की उपलब्धि और तैयार माल की खपत के लिए बाजार होने के कारण यूरोपीय देशों के व्यापार और उद्योगों में बहुत अधिक वृद्धि हुई जिससे व्यापारी वर्ग बहुत धनी हो गया उन्होने अपनी कार्य प्रणाली में आमूल-चूल परिवर्तन किया और व्यापार के माध्यम से अधिक से अधिक धन अर्जित किया।

सामाजिक जीवन पर प्रभाव—पुनर्जागरण के कारण यूरोप में धार्मिक अन्ध विश्वासों और सामाजिक बुराइयों को दूर करने के प्रयास प्रारम्भ हो गये थे। समाज में पोप की प्रभुसत्ता घटने लगी थी और सामाजिक जीवन में एक नयी विचार-धारा जागृत होने लगी। समाज में सामन्तवादी प्रथा समाप्त हो गयी और लोगों द्वारा श्रमपूर्ण जीवन यापन करना अपना धर्म माना जाने लगा। पूँजीवाद का उदय होने से समाज में पूँजीपति और श्रमिक दो वर्गों का जन्म हो गया। शिक्षा का प्रसार तीव्र गति से होने के कारण समाज में नये-नये विचारों का जन्म हुआ जिससे समाज में नयी जागृति और चेतना जाग उठी। नारी की स्थिति में पर्याप्त सुधार आया। लोग राजनैतिक अधिकारों के प्रति जागरूक हो गये।

संक्षेप में यूरोप में पुनर्जागरण ने मनुष्यों के जीवन और विचारों में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन उत्पन्न कर दिये।

प्रश्न 4—इंग्लैण्ड में उपनिवेश बनाने की होड़ में उस काल में किस प्रकार कहाँ-कहाँ अपने उपनिवेश बसाये?

उत्तर—इंग्लैण्ड के उपनिवेश—पुर्तगाल और स्पेन की औपनिवेशिक

सफलताओं को देखकर इंग्लैण्ड ने भी अपने लिए नये-नये उपनिवेश खोजने और अपना व्यापार बढ़ाने की सोची। उस समय इंग्लैण्ड बड़ी तेजी से पुनर्जागरण और पुनरुत्थान की ओर बढ़ रहा था।

इंग्लैण्ड के आन्तरिक और सामाजिक जीवन में परिवर्तन हो रहे थे। धार्मिक व्यापारिक तथा आर्थिक दृष्टि से इंग्लैण्ड के बहुत से लोग परेशान थे और अपनी समस्याओं को निपटाने के लिए चिंतित थे।

इंग्लैण्ड की महारानी ने अपने देशवासियों को उत्तरी अमेरिका में उपनिवेश बनाने की आज्ञा दे दी। अतः वे उपनिवेश बनाने के प्रयास में जुट गये। 1600 ई० में अँग्रेजों ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना की ओर धीरे-धीरे उन्होंने भारत में अपने पैर जमा लिये।

17वीं शताब्दी में आस्ट्रेलिया महाद्वीप की खोज की गई तथा वहाँ ब्रिटिश उपनिवेश की स्थापना की गई।

धीरे-धीरे संसार के अन्य देशों में भी ब्रिटिश उपनिवेशों की स्थापना की गई।

प्रश्न 5—अफ्रीका को अन्ध महाद्वीप क्यों कहा जाता था? उसको खोजने में किन-किन व्यक्तियों का महान् योगदान रहा?

उत्तर—अफ्रीका एक अन्ध महाद्वीप—इस महाद्वीप की भौगोलिक स्थिति के कारण यह महाद्वीप सदियों तक संसार के लिए अन्धकारमय रहा। यहाँ यात्रा करना अत्यन्त कठिन है। रास्ते दुर्गम हैं तथा यातायात के साधनों का भी विकास नहीं हुआ था। जलवायु विपरीत है। यहाँ की जलवायु अत्यन्त गर्म है। इसी कारण संसार के लोग यहाँ आने में कतराते थे।

15वीं शताब्दी में पुर्तगाल के साहसी नाविकों ने अफ्रीका के पश्चिम तट के अनेक भू-भागों का पता लगाया था। वास्कोडिगामा ने 1498 ई० मेंअफ्रीका के सुदूर उत्तमाशा अन्तरीप के रास्ते, भारत के लिए जलमार्ग की जानकारी की थी।

अफ्रीका को खोजने में निम्नलिखित व्यक्तियों का योगदान रहा है—

अफ्रीका की खोज में सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान डेविड लिविंस्टन का है। वह एक डाक्टर तथा पादरी था और स्काटलैण्ड का रहने वाला था। 1873 ई० में अफ्रीका में उसकी मृत्यु हो गयी। 1871 में हेनरी मोर्टन स्टेनली ने अफ्रीका के लिए प्रस्थान किया। 1886 में उसने फिर से अफ्रीका की यात्रा की।

अफ्रीका के कांगो प्रदेश पर सर्वप्रथम बेलजियम के राजा लियोपोल्ड का अधिकार हुआ। एक जर्मन अन्वेषक ने पूर्वी अफ्रीका पर अपना अधिकार कर लिया। धीरे-धीरे यूरोप के देशों ने पश्चिमी अफ्रीका का बँटवारा कर लिया। उसके पश्चात् उत्तरी अफ्रीका का बँटवारा यूरोप के देशों के द्वारा किया गया। उन्नीसवीं शताब्दी में अँग्रेजों ने डचों को हटाकर दक्षिणी अफ्रीका में अपने पैर जमा लिये।

प्रश्न 6—यूरोप वासियों को कौन-कौन-सी सभ्यताओं से आमेलन हुआ? उसका उन सभ्यताओं पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर—सभ्यताओं का आमेलन तथा उनका प्रभाव—यूरोपीय सभ्यताओं का अमेरिका, एशिया तथा अफ्रीका की प्राचीन सभ्यताओं से आमेलन हुआ। इसमें भारतीय संस्कृति, चीन तथा पूर्वी द्वीप समूह की संस्कृति तथा सभ्यता, मिस्र तथा अरबों

की सभ्यता एवं अमेरिका की माया एजेटिक तथा इंका सभ्यताएँ विशेष महत्त्व-पूर्ण है।

वास्कोडिगामा जब भारत आया तो भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति पूर्ण विकसित हो चुकी थी। मुगल काल में हिन्दू-मुसलिम एकता सुदृढ़ हो गयी थी। यूरोप के लोग यहाँ व्यापार करने आये थे। परन्तु कालान्तर में वे यहाँ ईसाई धर्म का प्रचार करने लगे। इंग्लैण्ड की सरकार ने भारत में अंग्रेजी भाषा तथा साहित्य का अध्ययन आरम्भ किया। आज भारतीय पूर्णरूप से पाश्चात्य संस्कृति में रंग चुके हैं।

जब यूरोपीय देशों के निवासी अमेरिका गये तो दोनों देशों की सभ्यताओं का मेल नहीं हुआ। वहाँ यूरोपवासी मालिक थे और वहाँ के निवासी दास थे। इससे इन दोनों में अलगाव तथा विभेद की भावनाएँ पनपने लगीं। यूरोपवासी अपने को अधिक सभ्य समझते थे। आज भी वहाँ रंग और वर्णभेद की नीति अपनायी जाती है। अफ्रीका में ईसाई धर्म का प्रचार किया गया और अनेक लोग ईसाई बन गये। आज भी अफ्रीका के अनेक देशों का धर्म ईसाई धर्म है।

कोलम्बस जब अमेरिका पहुँचा तो उसने समझा कि वह भारत पहुँच गया है। वास्तव में वह अमेरिका पहुँचा था। यहाँ उसका सम्पर्क "माया सभ्यता" से हुआ। जिस समय स्पेन ने मध्य अमेरिका पर अधिकार किया, उस समय वहाँ माया सभ्यता पूर्ण विकसित थी। माया सभ्यता के लोग छोटे-छोटे नगरों में रहते थे। उनका कार्य जंगल को काटकर खेती योग्य भूमि बनाना था। इन लोगों ने पत्थरों को काटकर भवनों का निर्माण किया। उनको कागज का प्रयोग आता था और वे दीवारों तथा कागजों पर चित्र बनाते थे। वे चित्रलिपि का प्रयोग करते थे। स्पेन ने इस सभ्यता को समाप्त कर दिया। परन्तु इस सभ्यता को खंडहरों, इमारतों तथा वेधशालाओं के भग्नावशेषों के रूप में आज भी देखा जा सकता है।

माया सभ्यता और "टोलरिक" लोगों की सभ्यता के मिलन से एक नई सभ्यता का जन्म हुआ। इसे 'ऐजटिक' सभ्यता कहा जाता है। एजेटिक सभ्यता के लोग चिकने और चमकदार पत्थरों के सुन्दर भवनों का निर्माण करते थे। ये लोग सोना और चाँदी का प्रयोग करते थे। वे कपास की खेती करते थे तथा अच्छा कपड़ा तैयार कर लेते थे। इन लोगों ने चित्रलिपि का विकास कर लिया था। वे समय वर्ष की गणना करना जानते थे। उनको गणित तथा ज्योतिष का अच्छा ज्ञान था।

मध्य युग के आरम्भ में दक्षिण अमेरिका के पेरू प्रदेश में एक प्राचीन भारतीय सभ्यता वहाँ पहुँचकर विकसित थी।[1] बारहवीं शताब्दी के समीप इंका जाति के लोगों ने पेरू में फैली प्राचीन सभ्यता पर आक्रमण करके उस प्रदेश पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया। इंका जाति ने शीघ्र अपनी जाति को संगठित कर पेरू में एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की। इंका जाति के लोग बहुत सभ्य थे। उन्होंने वहाँ के जंगलों को काटकर भूमि को खेती के योग्य बनाया। ये लोग वहाँ की खानों से सोना, चाँदी, ताँबा आदि धातुएँ निकालते थे और उनका प्रयोग करते थे। इन लोगों ने आवागमन के लिए अपने साम्राज्य में सड़कें बनायी थीं। इस जाति का शासन इनके राजा करते थे जो निरंकुश शासक होते थे। ये लोग भवन निर्माण कला में बहुत निपुण थे। ये भवनों में बड़े-बड़े पत्थरों का प्रयोग

करते थे। ये मन्दिर, महल, सड़कें एवं पुल बनाना अच्छी प्रकार जानते थे। इंका जाति के लोग सूर्य के उपासक थे।

परीक्षा में पूछे गये विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 7—यूरोप में पुनर्जागरण के फलस्वरूप समाज धर्म तथा भाषा और साहित्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए—स्पष्ट कीजिए। (1985)

अथवा

यूरोप में पुनर्जागरण के फलस्वरूप समाज, धर्म तथा राजनीति के क्षेत्र में क्या परिवर्तन हुए ? (1989)

अथवा

यूरोपीय पुनर्जागरण के फलस्वरूप समाज में क्या परिवर्तन हुए ? स्पष्ट कीजिए।

पुनर्जागरण के प्रभाव (परिवर्तन)

पुनर्जागरण एक महान् शक्तिशाली आन्दोलन था। इस आन्दोलन ने मानवके विचारों की दशा को वदल दिया तथा ज्ञान-विज्ञान के नये मार्गों को खोल दिया। पुनर्जागरण एक नये युग आरम्भ करने का कारण बना। इस आन्दोलन के बहुत व्यापक परिणाम निकले। इसके मुख्य प्रभाव निम्नलिखित हैं—

समाज पर प्रभाव—पुनर्जागरण का प्रभाव समाज पर अनेक रूप में पड़ा जो निम्नलिखित हैं—

(1) **प्राचीन अन्धविश्वासों का अन्त**—पुनर्जागरण एक मानसिक एवं बौद्धिक आन्दोलन था। इससे लोगों में नये विचारों, भावनाओं और मान्यताओं के कारण प्राचीन अन्धविश्वासों का अन्त हुआ। इस आन्दोलन से प्रेरित होकर मनुष्य मानसिक दासता से स्वतन्त्र हुआ।

(2) **मानवता का प्रचार**—पुनर्जागरण के कारण लोगों में मानववाद का प्रचार हुआ। इससे प्रभावित होकर विद्वानों, दार्शनिकों, कलाकारों तथा साहित्यकारों आदि में भी अपनी रचनाओं तथा कृतियों का मुख्य विषय मनुष्य को ही रखा। मानवमात्र को समान समझना तथा उसके ऊपर कठोर अत्याचार को समाप्त करना मानववाद का ही प्रभाव था।

(3) **वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर बल**—पुनर्जागरण ने मानव सभ्यता के विकास में बहुत महत्वपूर्ण योग प्रदान किया। लोगों ने प्राचीन दृष्टिकोण को त्याग कर नवीन वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपना लिया।

(4) **शिक्षा का प्रचार**—पुनर्जागरण से फलस्वरूप लोगों में शिक्षा का प्रचार होने लगा स्थान-स्थान पर स्कूल, कॉलेज तथा विश्वविद्यालय खुलने लगे। जनसाधारण में विद्याध्ययन की रुचि बढ़ने लगी।

धर्म पर प्रभाव—इस काल में रोमन कैथोलिक चर्च की बुराइयों का विरोध हुआ। धर्म में सुधार लाने के लिए आन्दोलन शुरू हुए और ईसाई धर्म दो शाखाओं प्रोटेस्टेण्ट तथा कैथोलिक में बँट गया। प्रोटोस्टेण्ट धर्म सुधारवादी था और उसका दृष्टिकोण उदार था।

राजनीति पर प्रभाव—पुनर्जागरण के कारण सामन्तवादी शक्ति का अन्त हुआ तथा शक्ति-सम्पन्न मध्यम वर्ग का जन्म हुआ और शक्तिशाली राष्ट्र-राज्यों की स्थापना हुई। पोप तथा चर्च का राजाओं पर जो नियन्त्रण या, वह समाप्त हो गया। इसका परिणाम यह हुआ कि राजा निरंकुश हो गये। इंग्लैण्ड, फ्रांस

और स्पेन में एकीकरण की भावना उत्पन्न हो गयी तथा राष्ट्रीय राज्य स्थापित हो गये परन्तु इटली में पोप तथा सम्राट आदि के कारण एकता की स्थापना नहीं हो सकी।

भाषा और साहित्य पर प्रभाव—यूरोप के पुनर्जागरण काल में इटली, इंग्लैण्ड, फ्रांस, यूनान आदि देशों में भाषा और साहित्य का पर्याप्त विकास हुआ तथा लोगों ने भाषा और साहित्य के क्षेत्र में विशेष रुचि लेनी प्रारम्भ कर दी है।

फलतः यूरोप से देशों में लैटिन, फ्रांस, अँग्रेजी, जर्मनी आदि भाषाओं का बहुत अधिक विकास हुआ। इसके अतिरिक्त अँग्रेजी भाषा में ऐसा साहित्य लिखा गया जिसे पढ़कर विदेशी लोगों में भी जागृति हुई और वे अँग्रेजी भाषा व साहित्य को पढ़ने में अत्यधिक रुचि लेने लगे। परिणामस्वरूप अँग्रेजी एक अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में उभरकर आयी और विश्व की लोकप्रिय भाषा बन गयी।

परीक्षा में पूछे गये तथा अन्य बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1—सामुद्रिक मार्ग से विश्व की परिक्रमा सबसे पहले किसने की ? (1987, 90)

(क) कोलम्बस। (ख) हाकिन्स।
(ग) मार्कोपोलो। (घ) मैगलेन।

उत्तर—(घ) मैगलेन।

प्रश्न 2—नई दुनिया की खोज करने वाला नाविक था—

(क) कोलम्बस। (ख) वास्कोडिगामा।
(ग) कैप्टन कुक। (घ) डेविड लिविंग्स्टन।

उत्तर—(क) कोलम्बस।

प्रश्न 3—वास्कोडिगामा किस देश का नाविक था ?

(क) इटली। (ख) पुर्तगाल।
(ग) स्पेन। (घ) स्काटलैण्ड।

उत्तर—(ख) पुर्तगाल।

प्रश्न 4—यूरोप के लिए भारत का समुद्री मार्ग खोजने वाला था—

(क) मैगलन। (ख) मार्कोपोलो।
(ग) वास्कोडिगामा। (घ) कोलम्बस।

उत्तर—(ग) वास्कोडिगामा।

प्रश्न 5—माया सभ्यता विकसित थी—

(क) अमेरिका में, (ख) फ्रांस में,
(ग) भारत में, (घ) मध्य अमेरिका में।

उत्तर—(घ) मध्य अमेरिका में।

प्रश्न 6—चित्रलिपि का विकास किया गया—

(क) माया सभ्यता द्वारा, (ख) टोलरिक लोगों द्वारा,
(ग) ऐजेटिक सभ्यता द्वारा, (घ) चीनी सभ्या द्वारा।

उत्तर—(क) माया सभ्यता द्वारा।

प्रश्न 7—अन्ध महाद्वीप कहा जाता है—

(क) अफ्रीका, (ख) भारत,
(ग) यूरोप, (घ) आस्ट्रेलिया।

उत्तर—(क) अफ्रीका।

7 | औद्योगिक क्रान्ति

अति लघुउत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—औद्योगिक क्रान्ति सर्वप्रथम कहाँ आरम्भ हुई ?

उत्तर—औद्योगिक क्रान्ति 18वीं शताब्दी में सर्वप्रथम इंग्लैण्ड में आरम्भ हुई।

प्रश्न 2—इंग्लैण्ड में लोहा तथा कोयला कहाँ पाया जाता है ?

उत्तर—इंग्लैण्ड में लोहा तथा कोयला की खानें समुद्र तट के निकट पायी जाती हैं। ये वेल्स, नार्थम्बरलैण्ड तथा स्काउटलैण्ड में पाया जाता है।

प्रश्न 3—फ्लाइंग शटल का आविष्कार कब हुआ और किसने किया ? (1987)

उत्तर—फ्लाइंग शटल का आविष्कार 1738 ई० में जॉन नामक व्यक्ति ने किया।

प्रश्न 4—जेम्सवाट क्यों प्रसिद्ध है ?

उत्तर—जेम्सवाट ने भाप से चलने वाले इंजन का आविष्कार 1769 ई० में किया। इसलिए उसका नाम विश्व में प्रसिद्ध है।

प्रश्न 5—जार्ज स्टीफेन्सन का आविष्कार क्या था और कब हुआ ?

उत्तर—जार्ज स्टीफेन्सन ने कोयला से चलने वाला पहला रेल इंजन का आविष्कार सन् 1814 ई० में किया था।

प्रश्न 6—सेफ्टी लैम्प किसने बनाया और कब ?

उत्तर—सेपटी लैम्प हम्फ्री डेवी नामक वैज्ञानिक ने 1815 ई० में बनाया था।

परीक्षा में पूछे गये अति लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 7—कार्ल मार्क्स ने किस प्रसिद्ध ग्रन्थ की रचना की थी ? (1987)

उत्तर—कार्ल मार्क्स ने **'दास कैपीटल'** नामक प्रसिद्ध ग्रन्थ की रचना की थी।

प्रश्न 8—औद्योगिक क्रान्ति कब प्रारम्भ हुई थी ?

उत्तर—औद्योगिक क्रान्ति 1750 में प्रारम्भ हुई थी।

प्रश्न 9—विश्व का प्रथम रेल मार्ग कब और कहाँ चालू हुआ ?

उत्तर—विश्व का प्रथम रेलमार्ग 1825 ई० में स्टाकटन और डार्लिंगटन तक चालू हुआ।

प्रश्न 10—मुद्रण कला (छापाखाना) का आविष्कार किसके द्वारा और किस देश में हुआ।

उत्तर—मुद्रण कला का आविष्कार गुटनबर्ग द्वारा जर्मनी में हुआ।

प्रश्न 11—स्पिनिंग जैनी का आविष्कार किसने और कब किया ?

उत्तर—स्पिनिंग जेनी का आविष्कार जेम्स हरग्रीव्स ने 1764 ई० में किया।

प्रश्न 12—समाजवाद या साम्यवाद का जनक किसे माना जाता है।

उत्तर—समाजवाद या साम्यवाद का जन्म कार्ल मार्क्स को माना जाता है।

लघुउत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—इंग्लैण्ड में सर्वप्रथम औद्योगिक क्रान्ति क्यों आरम्भ हुई ? (1986)

उत्तर—इंग्लैण्ड विश्व में औद्योगिक क्रान्ति का जन्मदाता माना जाता है। क्योंकि सबसे पहले औद्योगिक क्रान्ति इंग्लैण्ड में ही हुई। इंग्लैण्ड में सर्वप्रथम औद्योगिक क्रान्ति होने के निम्न कारण थे—

(1) उद्योगों की स्थापना के लिए लोहा और कोयला का बहुत अधिक महत्व है। इंग्लैण्ड में लोहा और कोयला के अपार भण्डार थे जिन्होंने औद्योगिक क्रान्ति को प्रोत्साहित किया।

(2) इंग्लैण्ड के वैज्ञानिकों ने बड़ी-बड़ी मशीनों का आविष्कार किया जो वहाँ की औद्योगिक क्रान्ति की आधार बनी।

(3) इंग्लैण्ड की सरकार की नीति नये व्यापारों को प्रोत्साहन देने वाली थी। इस कारण यहाँ का पूँजीपति वर्ग अपनी पूँजी नये उद्योगों को आरम्भ करने में लगाने लगा।

(4) इंग्लैण्ड ने विश्व के अनेक क्षेत्रों में अपने उपनिवेश तथा सत्ता स्थापित करके व्यापार की तीव्र उन्नति की क्योंकि इन क्षेत्र से उसे उद्योगों के लिए कच्चा माल सरलता से सुलभ होने लगा और वहाँ के उद्योगों द्वारा तैयार माल इन क्षेत्रों के बाजारों में खपने लगा।

(5) इंग्लैण्ड के उपनिवेशों से उद्योगों में काम करने के लिए कम मजदूरी पर अधिक मजदूर सुलभ हो गये थे।

(6) इंग्लैण्ड में वैज्ञानिक आविष्कारों के फलस्वरूप परिवहन एवं दूर संचार के साधनों का विकास बहुत तीव्र गति से हुआ जिसने वहाँ की औद्योगिक क्रान्ति को पर्याप्त रूप से प्रभावित किया।

प्रश्न 2—सूत कातने के विकास में कौन से यन्त्र सहायक हुए ?

उत्तर—सूत कातने के यन्त्र—सर जॉन ने एक ऐसी मशीन बनाई जो बिना हाथ की सहायता के बिना मशीन के करघे के दोनों ओर फैंकी जा सकती थी। इससे बुनाई बड़ी सरलता से होती थी।

हार ग्रीब्ज ने स्पिनिंग जैनी का आविष्कार किया जो कम समय में अधिक सूत कातती थी। क्राम्प्टन ने जल और आकराईट ने जलशक्ति से चलने वाले चरखे का निर्माण किया जिससे सूत और अधिक काता जा सकता था।

प्रश्न 3—औद्योगिक विकास से शहरों पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर—औद्योगिक क्रान्ति से शहरों पर प्रभाव—औद्योगिक क्रान्ति के फलस्वरूप शहरों की जनसंख्या बढ़ गयी। वहाँ गन्दी वस्तियाँ स्थापित हो गयीं। गाँवों के लोग जाकर नगरों में रहने लगे क्योंकि कारखानों की स्थापना नगरों में हुई थी।

प्रश्न 4—जापान के औद्योगिक विकास का वर्णन कीजिए।

उत्तर—जापान का औद्योगिक विकास—औद्योगिक क्रान्ति का एशिया में प्रभाव पड़ा। इससे जापान सबसे अधिक प्रभावित हुआ। परन्तु जापान में बड़े-बड़े उद्योग धन्धे स्थापित नहीं किये गये। वहाँ छोटे-छोटे उद्योग धन्धों का विकास किया गया। इससे जापान में बेकारी नहीं फैल पाई। जापान के घरों में भी छोटे उद्योग चलाये जाने लगे। इससे जापान में विशेष उन्नति हुई। अमेरिका तथा इंग्लैण्ड के सहयोग से एशिया में सर्वप्रथम जापान में औद्योगिक क्रान्ति हुई। आज जापान की गणना संसार के विकसित देशों में की जाती है। कार, रेडियो, ट्रांजिस्टर, कैमरे, घड़ियाँ तथा खिलौने संसार के बाजार में सर्वत्र उपलब्ध हैं।

प्रश्न 5—रूस में उद्योग कब बढ़ा और उसका क्या परिणाम हुआ?

उत्तर—रूस में औद्योगिक क्रान्ति—उस समय रूस में जारों का निरंकुश राज था। इस कारण वहाँ औद्योगिक क्रान्ति देर से आरम्भ हुई। औद्योगिक क्रान्ति के फलस्वरूप मशीनों को बाहर से मँगाया गया। परन्तु सस्ता श्रम देश में ही उपलब्ध था। 1917 ई० की साम्यवादी क्रान्ति के पश्चात् वहाँ औद्योगीकरण सम्भव हो सका। कृषि दासों की मुक्ति से श्रम समस्या सरलता से हल हो गयी। परन्तु धीरे-धीरे रूस औद्योगिक दृष्टि से इतना विकसित हो गया कि वह यूरोप के अन्य राष्ट्रों से मुकाबला करने लगा। आज रूस विज्ञान और तकनीकी विकास में किसी से कम नहीं है।

प्रश्न 6—औद्योगिक क्रान्ति किसे कहते हैं?

उत्तर—औद्योगिक क्रान्ति का अर्थ—18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में अनेक महत्त्वपूर्ण क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए। इन परिवर्तनों ने उत्पादन के तरीकों तथा संगठन में अनेक परिवर्तन किये। इन परिवर्तनों के कारण एक नवीन प्रकार की "अर्थ-व्यवस्था" का विकास हुआ। इसे "औद्योगिक अर्थ-व्यवस्था" कहा जाता है। इस औद्योगिक अर्थ-व्यवस्था के तीव्रगामी परिवर्तनों को 'औद्योगिक क्रान्ति' कहते हैं क्योंकि ये परिवर्तन अत्यन्त प्रभावशाली हुए उन्होंने विश्व की अर्थ-व्यवस्था को प्रभावित किया।

प्रश्न 7—18वीं शताब्दी में विज्ञान तथा तकनीकी का विकास कैसे हुआ?

उत्तर—विज्ञान तथा तकनीकी का विकास—वस्तुओं का उत्पादन जिसे पशुओं तथा मनुष्यों के द्वारा किया जाता था, 18वीं सदी में मशीनों के द्वारा किया जाने लगा। इसी कारण कहा जाता है कि औद्योगिक क्रान्ति से मशीन युग (Machine Age) का आरम्भ होता है। 1750 ई० से कारखाना पद्धति आरम्भ हुई। और मनुष्यों के स्थान पर मशीनों का अधिक प्रयोग होने लगा। अब नये नगरों की स्थापना हुई। इन नगरों में कारीगर तथा किसान आकर बसने लगे। घर पर काम करने के स्थान पर कारखानों में और हाथ से काम करने के स्थान पर मशीनों से कार्य किया जाने लगा। 1750 ई० से पहले जो घटनाएँ घट रही थीं, उनके कारण मशीनों के आविष्कार को प्रोत्साहन मिला। इन्हीं कारणों से औद्योगिक क्रान्ति का आरम्भ हुआ।

प्रश्न 8—मशीन युग का आरम्भ किस प्रकार हुआ?

उत्तर—मशीन युग का आरम्भ—1750 ई० से पहले यूरोप में जो घटनाएँ घटित हो रही थीं, उन घटनाओं ने नवीन मशीनों के आविष्कार को प्रोत्साहित

किया। वास्तव में इन्हीं घटनाओं ने औद्योगिक क्रान्ति को जन्म दिया। इन्हीं घटनाओं के कारण नवीन देशों की खोज हुई तथा उपनिवेशों की स्थापना हुई। जब नये उपनिवेश बसे तो व्यापार में वृद्धि हुई जिससे आवश्यकता की वस्तुओं की माँग बढ़ गई और व्यापार में अधिक लाभ भी होने लगा। परन्तु समस्या यह थी कि बढ़ती हुई माँग की पूर्ति कैसे की जाय। उत्पादन के जो प्राचीन तरीके थे उनसे उत्पादन कम हो पाता था। अतः आवश्यकता की पूर्ति नहीं हो पाती थी। मशीनों के प्रयोग से ही उत्पादन में वृद्धि की जा सकी थी। उपनिवेशों के बसने से व्यापार में जो लाभ हुआ, उससे बड़े-बड़े उद्योग स्थापित किये गये। बड़े उद्योगों की स्थापना के लिए अधिक पूँजी की आवश्यकता थी। व्यापार में अधिक लाभ होने के कारण अब अधिक पूँजी उपलब्ध थी। अतः बड़े पैमाने पर प्राविधिक आविष्कारों का प्रयोग किया जाने लगा। इस प्रकार मशीन युग का आरम्भ हुआ।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—औद्योगिक क्रान्ति के कारण लिखिए। (1984, 86)

उत्तर—औद्योगिक क्रान्ति के प्रमुख कारण—औद्योगिक क्रान्ति का प्रारम्भ इंग्लैण्ड में सन् 1850 ई० के लगभग हुआ। वस्तुओं के उत्पादनों का जो कार्य मनुष्य तथा पशु करते थे, वह मशीनों के द्वारा किया जाने लगा। इस प्रकार यह कहा जाता है कि औद्योगिक क्रान्ति का प्रारम्भ सर्वप्रथम इंग्लैण्ड में हुआ था। इंग्लैण्ड में औद्योगिक क्रान्ति का सबसे पहले आरम्भ होने के निम्नलिखित कारण हैं—

(1) कच्चे माल की पूर्ति—औद्योगिक क्रान्ति का एक प्रमुख कारण कच्चे माल की पूर्ति थी। इंग्लैण्ड ने बहुत-सी बस्तियाँ प्रारम्भ कर ली थीं, जहाँ से उसे कच्चा माल आसानी से कम मूल्य पर मिल जाता था। देशों के उद्योगों के विकास के लिए कच्चा माल जैसे—कपास, जूट और गन्ना आदि पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होना चाहिए तभी उद्योगों का विकास सम्भव है।

(2) पूँजी की उपलब्धि—देश में पूँजी की उपलब्धि पर्याप्त मात्रा में होनी चाहिए क्योंकि पूँजी के अभाव में कोई भी उद्योग-धन्धा भली-भाँति नहीं चल सकता है। इंगलैण्ड के लोगों की आर्थिक स्थिति अच्छी थी। कारखाने लगाने के लिए उनके पास पर्याप्त मात्रा में पूँजी थी। अतः उन्होंने उद्योगों के क्षेत्र में बहुत अधिक प्रगति की थी।

(3) शक्ति के साधनों की प्रचुरता—उद्योगों की स्थापना के लिए लिए बिजली, पेट्रोल तथा कोयला आदि पर्याप्त मात्रा में होने चाहिए। इंग्लैण्ड ने सर्वप्रथम भाप शक्ति का पता लगाया और उसके पास भाप शक्ति उत्पन्न करने के लिए कोयला पर्याप्त मात्रा में मौजूद था।

(4) खनिज सम्पत्ति की अधिकता—उद्योगों की स्थापना के लिए देश में लोहा तथा कोयला जैसे खनिज पदार्थ प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होने चाहिए। इंग्लैण्ड में लोहा तथा कोयले के पर्याप्त भण्डार हैं। इसी कारण यहाँ पर उद्योग-धन्धों का बहुत शीघ्रता से विकास सम्भव हो सका।

(5) यातायात के साधनों का विकास—देश में यातायात के साधनों का पूर्ण रूप से विकास होना उद्योगों की स्थापना के लिए अति आवश्यक है। देश में पक्की सड़कों, रेल, जहाज तथा वायुयान की अच्छी व्यवस्था होनी चाहिए जिससे माल

सरलता से एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाया जा सके। इंग्लैण्ड का समुद्री मार्ग बहुत विकसित तथा शक्तिशाली था। उसके लिए कच्चे माल का लाना और कारखानों में बने माल को दूसरे देश में पहुँचाना बहुत आसान था।

(6) बाजार की सुलभता—उद्योगों द्वारा कारखानों में बने हुए माल की बिक्री के लिए देशी तथा विदेशी मण्डियाँ होनी चाहिए। इंग्लैण्ड अपने बनाये हुए माल एवं वस्तुओं को अपने उपनिवेशों में आसानी से बेच सकता था। उसे बाज़ार ढूँढने की कोई समस्या नहीं थी।

(7) सस्ते मजदूरों की प्राप्ति—देश में कुशल मजदूर पर्याप्त मात्रा में और उचित मजदूरी पर काम करने के लिए तैयार रहने चाहिए। कृषि-क्रान्ति के कारण भूमिहीन बेरोजगारों की संख्या बहुत अधिक बढ़ गयी थी। अतः इंग्लैण्ड में काफी संख्या में कम मजदूरी पर काम करने के लिए मजदूर उपलब्ध थे।

प्रश्न 2—औद्योगिक क्रान्ति किन-किन देशों में यूरोप से फैली ?

उत्तर—औद्योगिक क्रान्ति का प्रसार—औद्योगिक क्रान्ति का सूत्रपात सर्वप्रथम इंग्लैंड में हुआ। इसके बाद यूरोप के अन्य देशों में इसका प्रसार हुआ। औद्योगिक क्रान्ति का प्रसार निम्न देशों में हुआ—

(1) इंग्लैण्ड—औद्योगिक क्रान्ति सर्वप्रथम इंग्लैण्ड में हुई। नवीन वैज्ञानिक आविष्कार के फलस्वरूप इंग्लैण्ड में बड़ी-बड़ी मशीनें बनने लगीं। कच्चे माल की सुलभता, पूँजी की अधिकता, प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता के कारण क्रान्ति को बहुत अधिक बल मिला। फलतः इंग्लैंड में विशाल उद्योगों की स्थापना हुई और इंग्लैण्ड आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न हो गया।

(2) फ्रांस—1830 ई० के बाद फ्रांस में अनेक उद्योगों की स्थापना हुई। राजा लुई फिलिप ने उद्योगपतियों को विशेष प्रोत्साहन दिया जिसके फलस्वरूप यहाँ उद्योग स्थापित हुए, रेलों और सड़कों का विकास हुआ। औद्योगिक क्रान्ति के कारण फ्रांस आज विश्व का प्रमुख राष्ट्र माना जाता है।

(3) जर्मनी—यद्यपि जर्मनी में अनेक नये आविष्कार हुए, किन्तु राजनैतिक अव्यवस्था के कारण उसका अधिक आर्थिक विकास न हो पाया। बिस्मार्क के प्रयासों से जर्मनी का औद्योगिक विकास हुआ। जर्मनी में मशीनों के निर्माण का उद्योग बहुत विकसित हुआ। यहाँ मुद्रण कला का भी अधिक विकास हुआ।

(4) जापान—अमेरिका तथा इंग्लैंड के सहयोग से एशिया में सर्वप्रथम जापान में औद्योगिक प्रगति हुई। आज भी जापान विकसित देशों में अपना स्थान रखता है। जापान ने बड़े उद्योगों के स्थान पर छोटे-छोटे उद्योगों को स्थान दिया है।

(5) रूस—रूस में औद्योगीकरण देर से हुआ। इसका कारण वहाँ जारों का निरंकुश शासन था। 1917 ई० की साम्यवादी क्रान्ति के पश्चात् वहाँ औद्योगिक क्रान्ति का श्री गणेश हो सका।

प्रश्न 3—औद्योगिक क्रान्ति के प्रभाव लिखिए। (1984, 86, 89)

उत्तर—औद्योगिक क्रान्ति के प्रभाव—औद्योगिक क्रान्ति से उद्योगों के क्षेत्र में बहुत महत्वपूर्ण एवं क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए जिसके फलस्वरूप मानव सभ्यता

पर बहुत प्रभाव डाला। औद्योगिक क्रान्ति के प्रभावों को निम्नलिखित प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है—

(अ) सामाजिक प्रभाव—औद्योगिक क्रान्ति के सामाजिक प्रभाव इस प्रकार से हैं—

(1) बेरोजगारी की समस्या—औद्योगिक क्रान्ति का सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक प्रभाव बेरोजगारी का बढ़ना है। औद्योगिक क्रान्ति ने हाथ से कार्य करने वाले लाखों कारीगरों को बेकार कर दिया क्योंकि हाथ से बना हुआ माल मँहगा होता था और लोग उसको नहीं खरीदते थे।

(2) बच्चों तथा स्त्रियों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव—इस क्रान्ति का सबसे बुरा प्रभाव यह पड़ा कि बच्चों तथा स्त्रियों का स्वास्थ्य खराब होने लगा क्योंकि पूँजीपति लोग कारखानों में बच्चों एवं स्त्रियों को काम पर लगा देते थे। इसका प्रमुख कारण यह था कि वे सस्ते वेतन पर मिल जाते थे।

(3) नगरों की सफाई की समस्या—इसका एक दुष्परिणाम यह हुआ कि बहुत से कम मजदूर गाँवों से नगरों में जाकर बस गये। नगरों में बहुत भीड़ इकट्ठी हो गई। इससे स्वास्थ्य एवं सफाई की समस्या उत्पन्न हो गयी।

(4) दो नये वर्गों का उदय—औद्योगिक क्रान्ति ने समाज में दो नये वर्गों को जन्म दिया—(क) उद्योगपति वर्ग और (ख) मजदूर वर्ग। उद्योगपतियों को बहुत अधिक लाभ होता था। परन्तु मजदूरों को बहुत कम वेतन मिलता था। इसका परिणाम यह हुआ कि अमीर और अधिक अमीर हो गये तथा गरीब और गरीब होते गये।

(5) कला और साहित्य का विकास—औद्योगिक क्रान्ति के कारण मनुष्य मशीनों पर काम करने लगे। इससे जो समय बचता था उसे मनुष्य साहित्य और कला के विकास में लगाने लगे। अतः साहित्य और कला की उन्नति होने लगी।

(ब) आर्थिक प्रभाव—औद्योगिक क्रान्ति के बाद आर्थिक प्रभाव निम्नलिखित हैं—

(1) कुटीर उद्योगों का पतन—औद्योगिक क्रान्ति का सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव कुटीर उद्योग-धन्धों का पतन था। बड़े कारखानों में बने सस्ते व श्रेष्ठ माल के सामने घरेलू उद्योगों का माल न टिक सका। अब लोगों ने हाथ का बनाया हुआ माल खरीदना छोड़ दिया। इस कारण घरेलू उद्योगों का पतन होने लगा।

(2) वस्तुओं के मूल्यों में कमी—औद्योगिक क्रान्ति से कारखानों में कम समय और कम मेहनत के साथ अधिक वस्तुओं के उत्पादन से कीमत में कमी हो गयी। अब वस्तुयें जन-साधारण को सस्ती प्राप्त होने लगीं। इससे लोगों के रहन-सहन का स्तर ऊँचा उठ गया।

(3) नगरों का विकास—औद्योगिक क्रान्ति के कारण नगरों का विकास तेजी से होने लगा। लोग बड़ी संख्या में गाँवों को छोड़कर कारखानों के पास रहने लगे जिससे बड़े-बड़े नगर बसने लगे। इंगलैण्ड में मानचेस्टर, शैफील्ड तथा लंकाशायर आदि औद्योगिक नगरों की स्थापना हुई।

(4) व्यापार में वृद्धि—औद्योगिक क्रान्ति के कारण बड़े-बड़े कारखानों का निर्माण होने लगा। इन कारखानों में बड़ी मात्रा में उत्पादन होने लगा। इससे

वाणिज्य तथा व्यापार में तेजी से विकास हुआ तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में वृद्धि हुई।

(5) **कृषि में उन्नति**—कृषि पर भी औद्योगिक क्रान्ति का प्रभाव पड़ा। कृषि कार्यों में मशीनों का प्रयोग होने लगा तथा उन्नतिशील बीज तथा खाद का प्रयोग होने लगा। इसके परिणामस्वरूप कृषि की दशा सुधर गयी तथा किसान समृद्धिशाली हो गये।

(6) **यातायात के साधनों का विकास**—औद्योगिक क्रान्ति से व्यापार में वृद्धि हुई तथा यातायात के साधनों का विकास हुआ। सड़कों, रेलों तथा जहाजों का निर्माण होने लगा तथा संचार के साधनों का भी विकास हुआ।

(स) **अन्य प्रभाव**—उपर्युक्त प्रभावों के अतिरिक्त इस क्रान्ति के अन्य महत्वपूर्ण प्रभाव यह पड़े कि विश्व में युद्धों का जन्म हुआ तथा विज्ञान की उन्नति से पिछड़े देशों में सभ्यता का विकास हुआ। औद्योगिक क्रान्ति ने उपनिवेशवाद तथा पूँजीवाद को जन्म दिया। उद्योगों में तैयार माल की खपत के लिए बड़े-बड़े बाजार की आवश्यकता हुई। इस कारण यूरोपीय देशों ने विशेषकर इंग्लैण्ड ने विश्व के देशों पर आधिपत्य जमाना प्रारम्भ कर दिया। फलतः विश्व में इंग्लैण्ड के अनेक उपनिवेश एवं साम्राज्य स्थापित हो गये। औद्योगिक क्रान्ति ने इंग्लैण्ड में पूँजी को बहुत बढ़वा दिया। इस क्रान्ति के कारण पूँजीपति व श्रमिक वर्ग का जन्म हुआ। फलतः विश्व में पूँजीवादी और समाजवादी विचारधारा विकसित हुई।

प्रश्न 4—औद्योगिक क्रान्ति से विश्व को क्या लाभ हुआ ?

उत्तर—औद्योगिक क्रान्ति से विश्व को लाभ—वस्तुओं का उत्पादन जिसे पशुओं तथा मनुष्यों के द्वारा किया जाता था, अब मशीनों के द्वारा किया जाने लगा। इसी कारण कहा जाता है कि औद्योगिक क्रान्ति से मशीन युग का आरम्भ होता है। 1750 ई० से कारखाना पद्धति आरम्भ हुई। अब मशीनों तथा हाथ की शक्ति का अधिक प्रयोग होने लगा। अब नये नगरों की स्थापना हुई। इन नगरों में कारीगर तथा किसान आकर बसने लगे। अब घर पर काम करने के स्थान कारखानों में और हाथ से काम करने के स्थान पर मशीनों से कार्य किया जाने लगा। 1750 ई० से पहले जो घटनाएँ घट रही थीं, उनके कारण मशीनों के आविष्कार को प्रोत्साहन मिला। इन्हीं कारणों से औद्योगिक क्रान्ति का आरम्भ हुआ।

हम यहाँ पर विभिन्न आविष्कारों का वर्णन करेंगे जिससे उस समय के विज्ञान पर प्रकाश डाला जा सके—

1. कपड़ा उद्योग का अविष्कार—

(i) 1764 ई० में हरग्रीव्ज ने स्पिनिंग जैनी का आविष्कार किया। इससे तेजी से सूत कातने में सहायता मिलती है।

(ii) इसी समय फ्लाइंग शटल का आविष्कार किया गया।

(iii) 1769 ई० में हरग्रीव्ज-चरखा पानी की शक्ति से चलाया जाने लगा।

(iv) 1776 ई० में म्यूल का आविष्कार किया गया। इससे सूत तेजी से और बारीकी से काता जाने लगा।

(v) 1785 ई० में कार्टराइट ने पावर लूम का आविष्कार किया। इससे भाप की शक्ति के द्वारा सूत काता जाने लगा।

(iv) 1793 ई० में 'जिन' नाम की कपास ओटने की मशीन का आविष्कार किया।

2. भाप की शक्ति का प्रयोग

1769 ई० में जेम्सवाट (James Watt) ने भाप से चलने वाले इंजन का आविष्कार किया। इससे उद्योग के क्षेत्र में एक क्रान्ति आ गई। अब वे कारखाने भी चलने लगे जो नदियों से दूर स्थित थे।

3. कोयला तथा लोहा उद्योग का विकास

(i) 1750 ई० में अब्राहीम डर्बी ने लोहे को पिघलाने के लिए पत्थर के कोयले का प्रयोग आरम्भ किया। इस प्रकार इस्पात तैयार करना तथा अच्छी मशीनें बनाना सरल हो गया।

(ii) सर हम्फरी डेवी ने सेफ्टी लैम्प का आविष्कार किया। इस लैम्प से कारखानों में रोशनी भी हो जाती थी और कोल गैस के कारण आग लगने की सम्भावना कम हो गई थी।

4. यातायात और संचार विस्तार

(i) मैकेडम ने पत्थर का प्रयोग करके पक्की सड़कें बनाना आरम्भ किया। इससे यातायात के साधनों की विशेष सुविधा हो गई।

(ii) 1814 ई० में जार्ज स्टीफेन्स ने रॉकेट नामक भाप का इंजन बनाया। यह लोहे की पटरी पर दौड़ता था। इससे कोयला और लोहा ढोना आसान हो गया।

(iii) 1835 ई० में तार का आविष्कार हुआ। इससे सन्देश शीघ्र भेजे जाने लगे। 1870 ई० में टेलीफोन का आविष्कार हुआ।

प्रश्न 5—औद्योगिक क्रान्ति ने समाजवाद को किस प्रकार आरम्भ कर दिया ?

उत्तर—औद्योगिक क्रान्ति ने पूंजीवादी समाज को जन्म दिया जिससे अमीर और अमीर तथा गरीब और गरीब होते गये। मजदूर वर्ग का अधिक से अधिक शोषण होता रहा। अधिकांश लाभ कारखानों के मालिकों को मिलता था। सामन्तों और जमींदारों के अतिरिक्त एक नया पूंजीपति वर्ग स्थापित हो गया। मजदूर पूर्ण रूप से पूंजीपति वर्ग पर आश्रित थे, उनकी स्थिति स्वतन्त्र होते हुए भी गुलामों की भाँति थी। पूंजीपति और मजदूर इन दो श्रेणियों के साथ-साथ तीसरी श्रेणी का भी उदय होने लगा जिससे शिक्षित मध्य वर्ग अथवा बुद्धिजीवी कहा जाने लगा। राष्ट्रीय सम्पत्ति का इस क्रान्ति से तेजी से विकास हो रहा था, परन्तु उसका मूल्य मजदूरों के स्वास्थ्य से चुकाया जाता रहा। ऐसी परिस्थितियों में मजदूर वर्ग के हृदय में असन्तोष की आग भड़क उठी। इस असन्तोष की आग ने समाजवाद को जन्म दिया।

समाजवाद का अर्थ है समाज के सभी वर्गों का कल्याण। औद्योगिक क्रान्ति से पहले दास प्रथा थी। निर्धनों को कोई भी अधिकार नहीं था। पादरी तथा सामन्त विलासी जीवन व्यतीत करते थे। औद्योगिक क्रान्ति ने बुद्धिजीवी वर्ग को जन्म दिया जिसने विश्व में समाजवाद फैलाया।

समाजवाद के जन्म के कारण

समाजवाद के जन्म के एक नहीं कई कारण थे। इन कारणों में प्रमुख कारण बुद्धिजीवी वर्ग का जन्म श्रमिकों के हित में सुधार, हस्तक्षेप न करने की नीति का

त्याग, श्रमिकों में जागृति, मार्क्सवाद का जन्म, अन्तर्राष्ट्रीय युद्ध तथा सामाजिक परिवर्तन।

इस प्रकार पूरे संसार में समाजवाद फैल गया। समाजवाद को फैलाने का मुख्य श्रेय औद्योगिक क्रान्ति को ही है।

परीक्षा में पूछे गये विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 6—औद्योगिक क्रान्ति से साम्राज्यवाद को किस प्रकार प्रोत्साहन मिला? (1991)

अथवा

'औद्योगिक क्रान्ति ने विश्व में उपनिवेशवाद और पूंजीवादी समाज का जन्म दिया'—स्पष्ट कीजिए। (1988)

उत्तर—औद्योगिक क्रान्ति और साम्राज्यवाद—प्राचीनकाल में यूरोप के देशों को अन्य देशों का ज्ञान नहीं था। इसलिये उनका साम्राज्यवाद केवल एक राज्य से दूसरे राज्य पर आक्रमण करने तक सीमित था। टर्की द्वारा कुस्तुन्तुनिया का मार्ग बन्द कर देने से उन्होंने व्यापार के लिए दूसरा समुद्री मार्ग खोज निकाला। बचे माल को निकालने के लिए उन्होंने विदेशों में अपने उपनिवेश स्थापित किये। इन उपनिवेशों ने स्वतन्त्रता के लिए आन्दोलन किये और धीरे-धीरे स्वतन्त्र हो गये। अब यूरोप के राज्यों ने अपनी उपनिवेश प्रसार की नीति में परिवर्तन किया और उन्हें बिक्री अड्डों का रूप दे दिया। इसको इतिहास में "मर्केन्टाईल पद्धति" या वाणिज्यवाद कहते हैं। परन्तु अब यूरोपीय शक्तियाँ सैनिक बल से उपनिवेशों एवं अन्य देशों को अपने अधिकार में लाने को तैयार हो गयीं।

नवीन साम्राज्यवाद की भावना के निम्नलिखित कारण थे—

(i) **औद्योगिक क्रान्ति**—इंग्लैण्ड में नये-नये आविष्कारों की धूम मची थी। नये कारखानों में सामान अधिक मात्रा में बनने लगा। अपने देश का माल निकालने के लिए यूरोप के देशों ने अन्य देशों को अपने अधीन करने की नीति अपनायी। इससे साम्राज्यवाद का उदय हुआ।

(ii) **राजनैतिक आकांक्षा**—इंग्लैण्ड को भारत आने के लिए अफ्रीका का चक्कर लगाना पड़ता था। इसके लिए मार्ग में उसके अपने बन्दरगाह, जहाजों का कोयला पानी लेने के लिए होना आवश्यक था। इसके अतिरिक्त उसकी वहाँ सैनिकों को प्राप्त होने की आवश्यकता होती थी। इसका परिणाम यह हुआ कि यूरोप के सभी देशों की लोलुप दृष्टि इन पर पड़ने लगी।

(iii) **धर्म प्रचार की आकांक्षा**—समुद्री मार्गों के पता चलने पर ईसाइयों ने ईसाई धर्म का प्रचार करना आरम्भ कर दिया। उनके विचारों से विदेशों में यूरोपीय सभ्यता का प्रसार हुआ। साम्राज्य के विस्तार में इन ईसाई पादरियों का भी बड़ा हाथ था।

(iv) **आवागमन के साधनों में वृद्धि**—जलपोतों का निर्माण हो जाने से दूरस्थ देशों में पहुँचना सम्भव हो सका। इसकी सुविधा से व्यापार में वृद्धि हुई। उसी ने विदेशों में अपना प्रभुत्व अच्छी प्रकार से जमाया।

(v) **अन्य आविष्कारों का प्रभाव**—औद्योगिक क्रान्ति के बाद तार, टेलीफोन के आविष्कारों ने सारे विश्व को एक नगर के समान मिला दिया था। समाचार एक कोने से दूसरे कोने पर सरलता से पहुँच जाता है।

(vi) जनसंख्या में वृद्धि—व्यावसायिक क्रान्ति के फलस्वरूप यूरोप की जनसंख्या बढ़ गयी थी। निवास के लिए भूमि की खोज में इन लोगों ने अन्य देशों में जाना आरम्भ कर दिया। इस प्रकार साम्राज्यवाद को बल मिला।

(vii) पारस्परिक स्पर्द्धा—यूरोप के लगभग सभी राज्यों में इस बात की स्पर्द्धा पायी जाने लगी कि वे अपने साम्राज्य का विस्तार अधिक से अधिक क्षेत्र में करें परिणामस्वरूप यूरोप में साम्राज्यवाद का प्रसार होने लगा।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि औद्योगिक क्रान्ति के फलस्वरूप यूरोप के अनेक देशों ने विश्व के अनेक देशों में अपने-अपने साम्राज्य स्थापित करने की लालसा जाग्रत होने लगी। इसी प्रवृत्ति के कारण औद्योगिक क्रान्ति ने विश्व में उपनिवेशवाद और पूंजीवादी समाज को जन्म दिया।

परीक्षा में पूछे गये तथा अन्य बहु-विकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1—सूत कातने की मशीन का सर्वप्रथम आविष्कारक था— (1984)

(अ) जेम्सवाट। (ब) हार ग्रीव्ज।
(स) आर्कराइट। (द) स्टीफेन्सन।

उत्तर—(ब) हार ग्रीव्ज।

प्रश्न 2—जार्ज स्टीफेन्सन का आविष्कार क्या था? (1986)

(अ) रेडियो। (ब) टेलीविजन।
(स) रेल का इन्जन। (द) मोटर कार।

उत्तर—(स) रेल का इन्जन।

प्रश्न 3—औद्योगिक क्रान्ति आरम्भ किस देश में हुआ था?

(अ) जर्मनी। (ब) फ्रांस।
(स) इंग्लैण्ड। (द) संयुक्त राज्य अमेरिका।

उत्तर—(स) इंग्लैण्ड।

प्रश्न 4—मुद्रण कला का प्रारम्भ किस देश में हुआ था?

(अ) जर्मनी। (ब) फ्रांस।
(स) इंग्लैण्ड। (द) भारत।

उत्तर—(अ) जर्मनी।

प्रश्न 5—फ्लाइंग शटल का आविष्कारक था?

(अ) कार्ट राइट। (ब) आर्क_राइट।
(स) हैम्फ्री डेवी। (द) जॉन।

उत्तर—(द) जॉन।

प्रश्न 6—औद्योगिक क्रान्ति ने किस विचारधारा को जन्म दिया?

(अ) व्यक्तिवाद। (ब) पूंजीवाद।
(स) उपयोगितावाद। (द) समाजवाद।

उत्तर—(द) समाजवाद।

भारत में औद्योगिक क्रान्ति

अति लघुउत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—महाराष्ट्र में सूती मिलों का केन्द्र कौन-सा शहर है ? (1987)

उत्तर—महाराष्ट्र में बम्बई, सूती मिलों का प्रमुख केन्द्र हैं ।

प्रश्न 2—पंजाब में ऊनी कपड़ा मिलों का केन्द्र कौन-सा शहर है ?

उत्तर—पंजाब में ऊनी कपड़ा मिलों का प्रमुख केन्द्र लुधियाना है ।

प्रश्न 3—सरकारी लोहा तथा इस्पात के चार केन्द्रों के नाम लिखिए ? (1987)

उत्तर—सरकारी लोहा तथा इस्पात के चार केन्द्र इस प्रकार हैं—

(1) राउरकेला (उड़ीसा), (2) बोकारो (बिहार),
(3) दुर्गापुर (पश्चिमी बंगाल), (4) भिलाई (मध्य प्रदेश) ।

प्रश्न 4—जूट उद्योग सबसे अधिक कहाँ है ?

उत्तर—सबसे अधिक जूट उद्योग पश्चिमी बंगाल में है ।

प्रश्न 5—वायुयान द्वारा विदेशी सेवा देने वाले कार्पोरेशन का नाम लिखिए ।

उत्तर—भारत में वायुयान द्वारा विदेशी सेवा **'एयर इण्डिया कार्पोरेशन'** द्वारा सम्पादित होती है ।

परीक्षा में पूछे गये तथा अन्य अति लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 6—कौन-से दो इस्पात के कारखाने निजी क्षेत्र द्वारा संचालित हैं ? (1985)

उत्तर—इस्पात के निम्न दो कारखाने निजी क्षेत्र द्वारा संचालित हैं—

(1) टाटा आयरन एण्ड स्टील कम्पनी-जमशेदपुर ।
(2) मैसूर आयरन एण्ड स्टील वर्क्स-भद्रावती ।

प्रश्न 7—उत्तर प्रदेश के उन दो नगरों के नाम लिखिए, जहाँ सूती मिल हैं । (1986)

उत्तर—उत्तर प्रदेश के दो नगर जहाँ सूती मिल निम्न हैं—

(1) कानपुर, (2) वाराणसी ।

प्रश्न 8—लाल इमली की ऊनी मिल कहाँ स्थित है ? (1988)

उत्तर—लाल इमली की ऊनी मिल कानपुर में स्थित है ।

प्रश्न 9—भारत में रेलवे लाइन किस गवर्नर के काल में और कब बिछायी गयी ?

उत्तर—भारत में रेलवे लाइन लार्ड डलहौजी के काल में सन् 1953 ई० में बिछायी गयी ।

लघुउत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—भारत के प्रमुख उद्योग कौन-कौन से हैं ?

उत्तर—भारत के प्रमुख उद्योग निम्नलिखित हैं—

(1) सूती वस्त्र उद्योग । (2) ऊनी वस्त्र उद्योग ।

(3) रेशमी वस्त्र उद्योग (4) लोहा तथा इस्पात उद्योग।
(5) जूट उद्योग तथा (6) चीनी उद्योग।

प्रश्न 2—भारत के लोहा तथा इस्पात उद्योग का वर्णन कीजिए।

उत्तर—लोहा तथा इस्पात अनेक प्रकार से उपयोग किया जाता है। समस्त प्रकार की मशीनें इसी से बनाई जाती हैं। भवन-निर्माण, पुल-निर्माण, परिवहन के साधन तथा अनेक प्रकार की मशीनें इसी से बनाई जाती हैं। इस उद्योग की गणना आधारभूत उद्योगों में की जाती है।

1887 ई० में टाटा आयरन एण्ड स्टील वर्क्स की स्थापना हुई। 1918 ई० में इण्डियन आयरन एण्ड स्टील कम्पनी की स्थापना की गई। 1923 ई० में मैसूर आयरन वर्क्स की स्थापना की गई।

सन् 1947 के बाद भारत सरकार ने विदेशी सरकारों की सहायता से भिलाई, बोकारों, राउरकेला और दुर्गापुर में लोहा और इस्पात उद्योग के विशाल कारखानों की स्थापना की।

प्रश्न 3—रेलों की विभिन्न मण्डल लिखिए। रेलों से क्या लाभ हैं? (1986, 88)

उत्तर—रेलों का कार्य सुव्यवस्थित रूप से चलाने के लिए विभिन्न मण्डल स्थापित किये गये हैं। इसमें उत्तरी रेलवे, पूर्वी रेलवे, पश्चिमी रेलवे, मध्य रेलवे तथा दक्षिणी रेलवे मण्डल हैं।

रेलों से लाभ—रेलें आर्थिक और व्यापारिक दृष्टि से बहुत उपयोगी होती हैं। रेलों से निम्नलिखित लाभ हैं—

(1) रेलों से लाखों व्यक्तियों को रोजगार मिला है। इसमें करोड़ों रुपये की पूँजी लगी हुई है।
(2) रेल, परिवहन, कृषि तथा उद्योग के विकास में अत्यन्त महत्वपूर्ण है।
(3) रेल व्यापार का मुख्य साधन है।
(4) युद्ध के समय रेलों का महत्त्व और बढ़ जाता है।
(5) रेलों से राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा मिला है।

प्रश्न 4—देश को विदेशी मुद्रा किस प्रकार प्राप्त हो रही है?

उत्तर—भारत अनेक उद्योगों में उत्पादित माल का निर्यात करके विदेशी मुद्रा प्राप्त कर रहा है। जूट का माल अधिकतर विदेशों को भेजा जाता है। इसका मुख्य निर्यात अमेरिका इंग्लैण्ड, कनाडा तथा आस्ट्रेलिया को होता है। इससे भारत को बहुत अधिक विदेशी पूँजी प्राप्त होती है।

अमेरिका, ब्रिटेन, श्रीलंका तथा पश्चिमी एशिया के देशों को चीनी निर्यात करके भारत बड़ी मात्रा में विदेशी मुद्रा अर्जित करता है।

सूती वस्त्र उद्योग भी विदेशी मुद्रा अर्जित करने में सहायता करता है। सूती वस्त्रों के निर्यात से लगभग तीन अरब रुपये के बराबर विदेशी मुद्रा अर्जित की जाती है।

प्रश्न 5—उद्योग द्वारा राष्ट्रीय एकता कैसे प्राप्त हो रही है?

उत्तर—उद्योगों में अनेक स्त्री-पुरुष कार्य करते हैं। वे एक-दूसरे के साथ

सहयोग से कार्य करते हैं। वे एक-दूसरे की सहायता करते हैं। इस प्रकार वे एक-दूसरे के निकट आते हैं। वे एक-दूसरे की समस्याओं को समझते तथा उनका हल करते हैं। रेलें भी राष्ट्रीय एकता तथा सांस्कृतिक समन्वय में भारी योगदान दे रही हैं। एक साथ कार्य करने तथा रहने से राष्ट्रीय एकता हो रही है। इस प्रकार उद्योग राष्ट्रीय एकता की भावना की वृद्धि में बहुत योगदान कर रहे हैं।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—भारत के सूती वस्त्र उद्योग का वर्णन कीजिए।

उत्तर—भारत का सूती वस्त्र उद्योग—अमेरिका के पश्चात् सूती वस्त्र उद्योग में भारत का द्वितीय स्थान है। 1980 ई० तक हम तीन अरब रु० का कपड़ा निर्यात करते थे। इस प्रकार हम पर्याप्त विदेशी पूँजी अर्जित करते थे। भारत में इस उद्योग में 10 लाख से भी अधिक लोग कार्य करते हैं।

कपड़े का उत्पादन सबसे अधिक महाराष्ट्र में होता है। भारत के अन्य स्थानों पर भी सूती कपड़े की मिलें स्थापित की गई हैं। महाराष्ट्र में बम्बई, पुणे, शोलापुर तथा नागपुर में मिलें खोली गयी हैं। गुजरात में अहमदाबाद, सूरत, बड़ौदा, राजकोट, भावनगर और पोरबन्दर में सूती मिलें स्थापित की गयी हैं। मध्य प्रदेश में इन्दौर, ग्वालियर, उज्जैन, देवास तथा रतलाम में सूती मिलें कार्य कर रही हैं। उत्तर प्रदेश में कानपुर, वाराणसी, सहारनपुर तथा मोदीनगर में सूती मिलें स्थापित की गई हैं। पंजाब में लुधियाना तथा अमृतसर में सूती मिलें हैं।

प्रश्न 2—भारत में जूट उद्योग का वर्णन कीजिए।

उत्तर—भारत में जूट उद्योग—भारत में बंगाल में जूट उद्योग का केन्द्र है। इस उद्योग में बोरे, रस्सियाँ, दरियाँ, टाट, पानदान तथा गलीचे आदि तैयार किये जाते हैं। भारत में इस उद्योग में करोड़ों रु० की पूँजी लगी हुई है। पश्चिमी बंगाल में जूट उद्योग के लगभग 115 कारखाने हैं। इस उद्योग में लगभग 3½ लाख श्रमिकों को रोजगार मिलता है। पाकिस्तान बन जाने के पश्चात् इस उद्योग का अधिकांश भाग पूर्वी पाकिस्तान को चला गया। उस समय तक भारत जूट उद्योग में प्रथम स्थान रखता था।

प्रश्न 3—भारत में औद्योगीकरण का वर्णन कीजिए।

उत्तर—भारत में औद्योगीकरण का आरम्भ—औद्योगीकरण क्रान्ति के पूर्व भारत अनेक वस्तुओं का निर्यात करता था। उनमें से प्रमुख वस्तुएँ इस प्रकार थीं—सूती, ऊनी और रेशमी कपड़े, मसाले तथा नील आदि। परन्तु औद्योगिक क्रान्ति के फलस्वरूप इन वस्तुओं का निर्यात समाप्त हो गया।

जब इंग्लैण्ड में औद्योगिक क्रान्ति आरम्भ हुई तो वहाँ लगभग सभी वस्तुओं का उत्पादन बढ़ गया। अब समस्या यह थी कि इस तैयार माल को किस प्रकार बेचा जाए। तैयार वस्तुओं के लिए बाजार चाहिए था। इसी कारण इंग्लैण्ड ने अपना माल एक बड़ी मात्रा में भारत भेजना आरम्भ कर दिया। पहले भारत वस्तुओं का निर्यात करता था। अब वह एक आयातक देश बन गया। इंग्लैण्ड उसे अनेक वस्तुएँ भेजता था।

जब भारत की वस्तुओं का निर्यात समाप्त हो गया तो यहाँ के कुटीर

उद्योग-धन्धे और लघु उद्योग समाप्त हो गये। अब वस्तुओं का उत्पादन बहुत कम हो गया।

कुटीर उद्योग और लघु उद्योग-धन्धों के समाप्त हो जाने के फलस्वरूप अनेक कारीगर और दस्तकार बेकार हो गये। उनको निर्धनता का जीवन व्यतीत करने को विवश होना पड़ा। उनको भूखों मरने की नौबत आ गयी।

भारत में औद्योगिक क्रान्ति के आरम्भ होने के फलस्वरूप कृषि पर भार बढ़ गया। भारत पहले भी एक कृषि प्रधान देश था। दस्तकारों और कारीगरों के बेकार हो जाने से अब वे भी कृषि कार्य करने लगे। इससे कृषि पर और बोझ बढ़ गया। अब कृषि का व्यवसाय फलदायक व्यवसाय नहीं रह गया। किसानों का जीवन भी कष्टमय हो गया। अब भारत पूर्णरूप से कृषि प्रधान देश हो गया।

इस उद्देश्य से कि भारत में निर्मित वस्तुएँ इंग्लैण्ड में निर्मित वस्तुओं का मुकाबला न कर सके, ब्रिटिश सरकार ने अनेक नियम बनाये। इन नियमों के बनाने का उद्देश्य इंग्लैण्ड से निर्मित वस्तुओं की बिक्री थी। अँग्रेज सरकार ने उस माल पर जो हमारे देश में बनता था भारी उत्पादन कर लगा दिया। भारतीय कारीगरों को विभिन्न प्रकार से परेशान भी किया जाता था।

अँग्रेज सरकार ने भारतीय किसानों को इस बात पर विवश किया कि वे अपना माल सस्ती दर पर अँग्रेज सरकार को बेचे। इस प्रकार अँग्रेजी सरकार ने बहुत लाभ कमाया। अँग्रेजों की यह नीति औद्योगिक नीति का ही परिणाम थी।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि भारतीय निर्धनता का एक प्रमुख कारण इंग्लैण्ड में होने वाली औद्योगिक क्रान्ति है। इस क्रान्ति ने भारतीय अर्थ-व्यवस्था में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन ला दिया।

प्रश्न 4—भारत में औद्योगीकरण के प्रभाव लिखिए।

उत्तर—भारत में औद्योगीकरण के प्रभाव—भारत में औद्योगीकरण का प्रभाव इस प्रकार है—

(1) भारत में अनेक उद्योग-धन्धे विकसित हुए जिससे लाखों लोगों को रोजगार मिला।

(2) मजदूर, इंजीनियर, डाक्टर, उद्योग प्रबन्धक, निरीक्षक आदि सभी वर्गों के व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त हुआ है।

(3) अब उत्पादन बड़ी मात्रा में किया जाता है जिससे हम अनेक वस्तुएँ निर्यात करने लगे हैं। अब हम विदेशी मुद्रा अर्जित करने में समर्थ हुए हैं।

(4) देश में बड़े उद्योगों में करोड़ों की पूंजी लगी हुई है। अब विदेशों से बड़ी-बड़ी मशीनें आयात की जाती हैं।

(5) बड़े पैमाने पर उत्पादन होने के कारण वैज्ञानिक अनुसन्धान तथा तकनीकी का विकास हुआ है। अब देश में नवीन खोजों की ओर ध्यान दिया जाता है।

(6) भारत ने अणु शक्ति का विकास करके विश्व में अपना नाम पैदा किया है। भारत ने यह निश्चय किया है कि वह अणुशक्ति का उपयोग शान्ति के कार्यों के लिए करेगा।

(7) अब यातायात के साधनों का विकास हुआ है। इससे भारतीय एक दूसरे के निकट आ गये है।

(8) अब कारखानों में अनेक स्त्री-पुरुष एक साथ कार्य करते हैं। इससे राष्ट्रीय एकता को बल मिला है।

(9) अब भारतीय दैनिक उपयोग तथा सुख और ऐश्वर्य की वस्तुएँ प्रयोग करने लगे हैं। उससे उनका रहन-सहन का स्तर ऊँचा उठ गया है।

(10) अब भारतीय इंजनीनियर और डाक्टर विदेशों में भी कार्य करने लगे हैं। इससे भारत की प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई है।

(11) श्रमिकों के कल्याण के लिए अनेक उपाय किये गये हैं। अब उनसे सप्ताह में केवल 48 घण्टे काम लिया जाता है। अब छोटे बालकों से काम नहीं लिया जाता है।

(12) देश में समाजवाद की भी लहर आई है। सरकार की हर नीति समाजवाद को बढ़ावा देने वाली होती है।

परीक्षा में पूछे गये तथा अन्य बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1—भारत में रेल यातायात का प्रारम्भ किसके समय में हुआ? (1987, 88)

(क) लार्ड कर्जन। (ख) लार्ड विलियम वैन्टिक।
(ग) लार्ड डलहौजी। (घ) लार्ड डफरिन।

उत्तर—(ग) लार्ड डलहौजी।

प्रश्न 2—भारत में प्रथम रेल कब चलायी गई?

(क) 1853 ई०। (ख) 1852 ई०।
(ग) 1857 ई०। (घ) 1947 ई०।

उत्तर—(क) 1853 ई०।

प्रश्न 3—लोहा और इस्पात का प्रथम कारखाना किसने स्थापित किया?

(क) डालमिया। (ख) टाटा।
(घ) डलहौजी। (घ) इनमें से किसी ने नहीं।

उत्तर—(ख) टाटा।

प्रश्न 4—भारत के किस राज्य में चीनी का सर्वाधिक उत्पादन होता है?

(क) पंजाब। (ख) तमिलनाडू।
(ग) बिहार। (घ) उत्तर प्रदेश।

उत्तर—(घ) उत्तर प्रदेश।

प्रश्न 5—रेयन (नकली रेशम) का उपयोग किस नगर में अधिक होता है।

(क) दिल्ली। (ख) लखनऊ।
(ग) आगरा। (घ) ग्वालियर।

उत्तर—(घ) ग्वालियर।

☐

8 संसार की कुछ महत्त्वपूर्ण राजनीतिक क्रान्तियाँ तथा उनके परिणाम

1. इंग्लैण्ड की क्रान्ति

(अ) अति लघुउत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—मैग्नाकार्टा कब तक और किस राजा के समय तैयार हुआ ? (1985, 87)

उत्तर—1215 ई० में राजा जॉन के समय मैग्नाकार्टा तैयार किया गया।

प्रश्न 2—चार्ल्स प्रथम को फाँसी कब दी गई।

उत्तर—चार्ल्स प्रथम को 1649 ई० में फाँसी दी गई।

प्रश्न 3—चार्ल्स प्रथम के पश्चात् शासन किसने सम्भाला ?

उत्तर—चार्ल्स प्रथम के पश्चात् क्रामवेल को प्रमुख रक्षक नियुक्त किया गया।

प्रश्न 4—जेम्स द्वितीय के समय में रक्तहीन क्रान्ति कब हुई ? (1987, 90)

उत्तर—जेम्स द्वितीय के समय 1688 ई० में रक्तहीन क्रान्ति हुई।

प्रश्न 5—विलियम ऑफ ओरेंज कहाँ का शासक था ?

उत्तर—विलियम ऑफ ओरेंज हालैण्ड का शासक था ?

परीक्षा में पूछे गये तथा अन्य अति लघुउत्तीय प्रश्न

प्रश्न 6—इंगलैंड में रक्तहीन क्रान्ति कब हुई थी ? (1987)

उत्तर—इंग्लैंड में रक्तहीन क्रान्ति 1688 ई० में हुई थी।

प्रश्न 7—इंग्लैंड में 'बिल ऑफ राइट्स' कब पारित हुआ ?

उत्तर—इंग्लैण्ड में 'बिल ऑफ राइट्स' 1689 ई० में पारित हुआ।

लघुउत्तरीय प्रश्न (प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का) (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—मैग्नाकार्टा द्वारा सर्वप्रथम राजा के किन अधिकारों को संयत करने का प्रस्ताव किया गया है ? (1986, 87)

उत्तर—मैग्नाकार्टा (घोषणा पत्र) तथा राजा के अधिकार—मैग्नाकार्टा द्वारा राजा के निम्नलिखित अधिकारों को संयत करने का प्रस्ताव किया गया—

(1) चर्च, सामन्त तथा व्यापारियों के हितों की रक्षा करने का प्रयास किया गया।

(2) परिषद् की अनुमति के बिना राजा उनकी स्तन्त्रता में हस्तक्षेप नहीं कर सकता था और न ही उनके अधिकार ले सकता था।

प्रश्न 2—अधिकार पत्र की प्रमुख धाराओं का संक्षिप्त वर्णन कीजिए। (1984, 87)

उत्तर—अधिकार पत्र की प्रमुख धारायें—अधिकार पत्र की प्रमुख धारायें इस प्रकार थीं—

(1) राजा संसद की अनुमति के बिना किसी भी नियम को न लागू कर सकता था और न निलम्बित।

(2) राजा से कर लगाने जुर्माने वसूल करने तथा दण्डित करने का अधिकार भी ले लिया गया।

(3) सेना की भर्ती के लिए संसद की स्वीकृत अनिवार्य हो गई।

(4) वित्तीय तथा सैनिक नियन्त्रण के कारण संसद का अधिवेशन प्रति वर्ष बुलाना आवश्यक हो गया।

(5) यह भी निर्धारित कर दिया गया कि राजा को ऐंग्लिकन चर्च का अनुयायी होना चाहिए।

(6) अब राजा के पास कोई स्वतन्त्र सत्ता न रह गई।

प्रश्न 3—क्रामवेल के शासन से जनता क्यों ऊब गई थी ?

उत्तर—क्रामवेल का शासन—गणतन्त्र शासन स्थापित होने पर क्रामवेल प्रमुख रक्षक (Lord Protector) नियुक्त किया गया। परन्तु धीरे-धीरे वह सैनिक तानाशाह बन गया। उससे बड़ी कठोरता से प्यूरिटन धर्म तथा उसके कठोर अनुशासन को लागू करना प्रारम्भ कर दिया। जनता ऐसे शासन से तंग आ गई।

प्रश्न 4—चार्ल्स प्रथम ने किस प्रकार धन इकट्ठा किया ?

उत्तर—चार्ल्स प्रथम के द्वारा धन एकत्रित किया जाना—चार्ल्स प्रथम ने अपनी निरंकुशता बनाये रखने के लिए अनेक अवैधानिक तरीकों से धन एकत्रित करना आरम्भ किया। चार्ल्स प्रथम ने संसद को भंग कर 11 वर्षों तक अवैधानिक ढंग से धन एकत्रित करता रहा।

प्रश्न 5—बिल ऑफ राइट्स (अधिकार विधेयक) द्वारा संसद के अधिकारों में क्या वृद्धि हुई ?

उत्तर—संसद के अधिकारों में वृद्धि—संसद के अधिकारों में वृद्धि इस प्रकार हुई—

(1) किसी भी नियम को लागू या निलम्बित करने के लिए संसद की अनुमति आवश्यक हो गई।

(2) सेना की भर्ती के लिए संसद की स्वीकृति अनिवार्य हो गई।

(3) अब संसद का अधिवेशन प्रति वर्ष बुलाया जाना आवश्यक हो गया।

(4) राजपद पूर्ण रूप से संसद की सहमति पर आधारित हो गया।

परीक्षा में पूछे गये लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 6—इंग्लैण्ड की गौरवपूर्ण क्रान्ति के दो कारणों का संक्षिप्त विवरण दीजिए। (1984)

उत्तर—इंग्लैण्ड की राजक्रान्ति में रक्त की एक बूंद भी नहीं गिरी। इसलिए इतिहास में वह रक्तहीन क्रान्ति गौरवपूर्ण क्रान्ति के नाम से प्रसिद्ध है। इस क्रान्ति के दो प्रमुख कारण अग्रलिखित थे—

(1) **कैथोलिकों को महत्व देना**—1685 ई० में चार्ल्स द्वितीय की मृत्यु के बाद उसका भाई जेम्स द्वितीय इंग्लैण्ड की राजगद्दी पर बैठा। वह कैथोलिक धर्म का कट्टर अनुयायी था। इसलिए उसने शासन में उच्च पदों पर, सेना में अधिकारी पदों पर और चर्च एवं विश्वविद्यालयों में उच्च पदों पर कैथोलिक धर्म के लोगों को नियुक्त करना शुरू किया। इससे जनता में असन्तोष बढ़ गया जो क्रान्ति के रूप में प्रकट हुआ।

(2) **कानूनों को स्थगित करना**—जेम्स द्वितीय ने 1687 ई० में अनेक घोषणाओं के द्वारा कैथोलिकों के विरुद्ध बने बहुत से कानूनों को स्थगित कर दिया और उन्हें सरकारी पदों पर नियुक्त होने, चर्चों में पूजा-पाठ, प्रार्थना-सभा आदि करने की पूरी छूट दे दी। यह बात आम जनता को अच्छी नहीं लगी। अतः उसने क्रान्ति का बिगुल बजा दिया।

प्रश्न 7—इंग्लैण्ड की संसद ने 1689 ई० में जो अधिकार अधिनियम पारित किया, उसके मुख्य प्रावधान क्या थे? (1984)

अथवा

इंग्लैण्ड की गौरवपूर्ण क्रान्ति ने किस प्रकार राजा के अधिकारों का सीमित कर दिया? (1986)

उत्तर—इंग्लैण्ड की गौरवपूर्ण क्रान्ति के बाद संसद ने 1689 ई० में जो अधिकार अधिनियम पारित किया, उसके मुख्य प्रावधान इस प्रकार हैं :

1. इंग्लैण्ड के राजा के अधिकार सीमित हो गये। अब राजा संसद की अनुमति के बिना कोई भी नियम लागू या हटा नहीं सकता।

2. राजा को कर लगाने, जुर्माना वसूल करने तथा दंडित करने का अधिकार भी नहीं रहा।

3. सेना में भर्ती के लिए संसद की पूर्व अनुमति अनिवार्य हो गयी।

4. प्रति वर्ष संसद का अधिवेशन बुलाना आवश्यक हो गया।

अधिनियम के उपर्युक्त प्रावधानों के अनुसार राजा के पास निजी स्वतन्त्र सत्ता नहीं रही अपितु सब कुछ संसद की सहमति पर आधारित हो गया। इस प्रकार राजा की निरंकुशता समाप्त हो गयी और उसके अधिकार को सीमित कर दिया गया।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—चार्ल्स प्रथम तथा संसद के झगड़े के क्या कारण थे? (1985)

उत्तर—चार्ल्स प्रथम तथा संसद के झगड़े के कारण—अब तक एक नया वर्ग बन चुका था। इस वर्ग में धनी जमींदार, धनी व्यापारी, वकील तथा उच्च अधिकारी सम्मिलित थे। यह वर्ग अधिक धनी हो गया था। इन लोगों ने चर्च की भूमि क्रय कर ली थी। स्टुअर्ट राजा दैवी अधिकार के पक्षपाती थे। संसद ने राजाओं को व्यय करों के लिए धन स्वीकृत नहीं किया। चार्ल्स प्रथम को युद्ध लड़ने के लिए धन की आवश्यकता थी। अतः संसद और राजतन्त्र में इसी कारण संघर्ष चलता रहा।

धार्मिक संघर्ष—इस काल में धार्मिक क्षेत्र में अनेक परिवर्तन हुए। इससे राजतन्त्र की स्थिति कमजोर हो गयी। इसी कारण संसद को राजा के प्रति संघर्ष करने को और अधिक अवसर मिला। लोग वैज्ञानिक आविष्कारों के कारण

बाइबिल की शिक्षाओं में सन्देह करने लगे थे। लोग धर्म के सिद्धान्तों को अधिक महत्त्व देने लगे थे। धार्मिक संघर्ष ने जनता को राजा के विरुद्ध संगठित होने में सहायता दी। एलिजाबेथ प्रथम के समय स्थापित चर्च के विरुद्ध आन्दोलन चल रहा था। प्यूरिटन लोग जिनका संसद में बहुमत था, इस आन्दोलन का नेतृत्व कर रहे थे। वे चाहते थे कि शिक्षित व्यक्ति ही चर्च के अधिकारी नियुक्त किये जायें। उस समय चार्ल्स प्रथम इंग्लैण्ड का शासक था। वह चर्च का अनुयायी था। इसी कारण प्यूरिटन उससे अप्रसन्न थे।

प्रश्न 2—इंग्लैण्ड की गौरवपूर्ण क्रान्ति के प्रभाव लिखिए।

उत्तर—इंग्लैण्ड की गौरवपूर्ण क्रान्ति के प्रभाव—इंग्लैण्ड में गणतन्त्र केवल 11 वर्ष तक चला। क्रामवेल जिसने राजा को पराजित करने में प्रमुख भूमिका निभाई थी, देश का प्रमुख रक्षक बन गया। वह तानाशाह था जिसका अपनी सेना पर पूर्ण अधिकार था। जब उसकी मृत्यु हो गई तो राजतन्त्र फिर से स्थापित हो गया। चार्ल्स द्वितीय फिर से राजा बना। उसके उत्तराधिकारी जेम्स द्वितीय ने राजतन्त्र को प्रमुख बनना चाहा। परन्तु जनता इसे पसन्द नहीं करती थी। 1688 ई० में विलियम ऑफ ओरेंज को सम्राट बनाने के लिए आमन्त्रित किया गया। वह जेम्स द्वितीय की पुत्री मेरी का पति था। जब यह लन्दन पहुँचा तो जेम्स द्वितीय लन्दन छोड़कर फ्रांस भाग गया। इंग्लैण्ड की जनता ने, विलियम तथा मेरी को देश का संयुक्त शासक बनाया। इंग्लैण्ड के इतिहास में इसे गौरवमयी क्रान्ति कहा जाता है।

प्रश्न 3—इंग्लैण्ड में संसदीय शासन प्रणाली किस प्रकार स्थापित हुई ?

उत्तर—इंग्लैण्ड में संसदीय शासन प्रणाली—1689 ई० में संसद ने बिल ऑफ राइट्स पास किया। अब यह स्वीकार किया गया कि संसद का अधिवेशन जल्दी-जल्दी बुलाया जा सकता है। संसद की स्वीकृति में देश के कानूनों को भंग किया जा सकता है, नये कर लगाये जा सकते हैं और सेना में भर्ती की जा सकती है। राजा से अधिकार वापिस ले लिये गये। अब संसद ने पूर्ण रूप से राजतन्त्र पर अधिकार कर लिया था। विलियम और मेरी संसद पर पूर्णरूप से निर्भर थे। अब शासन पूर्णरूप से संसद पर निर्भर था।

18वीं और 19वीं शताब्दी में इंग्लैण्ड में अर्थ-व्यवस्था का विस्तार हुआ। अब आधुनिक पूंजीवादी समाज का विकास हुआ। 17वीं शताब्दी में नवजात वर्गों ने निरंकुश शासकों के विरुद्ध जो आन्दोलन किया, उसमें वे सफल हुए। अब इंग्लैण्ड में निरंकुश शासन समाप्त हो गया था।

बहु-विकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1—इंग्लैण्ड में गौरवपूर्ण क्रान्ति हुई—

(i) 1788 में (ii) 1688 में

(iii) 1888 में (iv) 1704 में।

उत्तर—(ii) 1688 में।

प्रश्न 2—इंग्लैण्ड में उत्तराधिकार विधेयक पास किया गया—

(i) 1942 में (ii) 1701 में

(iii) 1857 में (iv) 1300 में।

उत्तर—(ii) 1701 ई० में।

प्रश्न 3—इंग्लैण्ड में मैग्नाकार्टा पारित हुआ—
(i) 1512 ई० (ii) 1215 ई०
(iii) 1689 ई० (iv) 1556 ई० ।
उत्तर—(ii) 1215 ई० ।

प्रश्न 4—विश्व की राज-क्रान्तियों में 'गौरवपूर्ण' क्रान्ति कही जाती है—
(i) फ्रांस की क्रान्ति (ii) अमेरिका की क्रान्ति
(iii) रूस की क्रान्ति (iv) इंग्लैण्ड की क्रान्ति ।
उत्तर—(iv) इंग्लैण्ड की क्रान्ति ।

प्रश्न 5—इंग्लैण्ड में गृह युद्ध छिड़ गया—
(i) हेनरी तृतीय के शासन में (ii) चार्ल्स प्रथम के शासन में
(iii) जेम्स द्वितीय के शासन में (iv) हेनरी प्रथम के शासन में ।
उत्तर—(i) हेनरी तृतीय के शासन में ।

2. अमेरिका की क्रान्ति

अति लघुउत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—अमेरिका की खोज कब और किसने की ? (1984, 87)
उत्तर—1492 ई० में कोलम्बस ने अमेरिका की खोज की ।

प्रश्न 2—स्टाम्प एक्ट कब पास हुआ ?
उत्तर—1765 ई० में ब्रिटेन की संसद ने स्टाम्प एक्ट पास किया ।

प्रश्न 3—क्रान्ति का प्रथम युद्ध कब और कहाँ हुआ ?
उत्तर—अमेरिका की क्रान्ति का प्रथम युद्ध 1775 ई० में मेसाच्यूसेट में लेक्सिंगटन नामक स्थान पर हुआ ।

प्रश्न 4—बोस्टन चाय पार्टी का क्या अर्थ है ? (1986, 88, 90)
उत्तर—1773 ई० में कुछ अमेरिकन रैड इण्डियन की बेशभूषा में जहाज पर चढ़ गये और चाय की समस्त पेटियाँ बोस्टन बन्दरगाह के समीप समुद्र में फेंक दीं । यह घटना इतिहास में बोस्टन चाय पार्टी के नाम से प्रसिद्ध है ।

प्रश्न 5—अमेरिका का स्वतन्त्रता दिवस कब मनाया जाता है ? (1985, 87)
उत्तर—अमेरिका का स्वतन्त्रता दिवस प्रत्येक वर्ष 4 जुलाई को मनाया जाता है ।

अन्य अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 6—अमेरिका में राज क्रान्ति कब हुई ?
उत्तर—अमेरिका में राज क्रान्ति 1775 ई० में हुई ।

प्रश्न 7—अमेरिका के प्रथम राष्ट्रपति का नाम लिखिए ।
उत्तर—अमेरिका के प्रथम राष्ट्रपति का नाम जार्ज वाशिंगटन था ।

प्रश्न 8—अमेरिका में नया संविधान कब लागू हुआ ?
उत्तर—अमेरिका में नया संविधान 1789 ई० में लागू हुआ ।

प्रश्न 9—अमेरिका में दास-प्रथा का विरोध किसने किया ?

उत्तर—अमेरिका में दास-प्रथा का विरोध अब्राहमलिंकन ने किया।

प्रश्न 10—अमेरिका में 19वीं शताब्दी में गृह-युद्ध प्रारम्भ होने का क्या कारण था ?

उत्तर—अमेरिका में 19वीं शताब्दी में गृह-युद्ध प्रारम्भ होने का कारण दास-प्रथा की समाप्ति था।

लघुउत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—अमेरिकन क्रान्ति का उल्लेखनीय नारा क्या था ? उसका क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर—अमेरिकन क्रान्ति का उल्लेखनीय नारा था, "यदि प्रतिनिधित्व नहीं तो कर भी नहीं।" अत: ब्रिटेन की संसद को उन पर टैक्स लगाने का अधिकार नहीं है। उन्होंने यह भी तय किया कि ब्रिटिश माल का बहिष्कार किया जाय। वहाँ के गवर्नर ने इस सभा को बर्खास्त करने का प्रयास किया। परन्तु वह अपने प्रयास में सफल नहीं हुआ। इस प्रकार विरोध की स्थिति उत्पन्न हो गई। इस विरोध के कारण स्टाम्प एक्ट तो हटा लिया। परन्तु यह घोषणा की गयी कि ब्रिटेन को उपनिवेशों में कर लगाने का अधिकार है। अत: ब्रिटेन ने आयात किये गये कागज, शीशा, रंग और चाय पर कर लगा दिया। परन्तु उपनिवेशों ने फिर से विरोध किया। इस पर ब्रिटेन ने सभी वस्तुओं पर से कर हटा दिया। परन्तु चाय पर कर लगा रहने दिया।

प्रश्न 2—फिलाडेलफिया के सम्मेलन ने कौन-सा निर्णय किया ?

उत्तर—फिलाडेलफिया के सम्मेलन के निर्णय—इस सम्मेलन ने राजा तृतीय के पास एक ज्ञापन भेजा जिसमें उपनिवेशों को उद्योगों तथा व्यापार पर लगे प्रतिबन्धों को हटाने की माँग की गई। यह भी प्रस्ताव रखा गया कि बिना उपनिवेशों की सह-मति के उन पर किसी प्रकार का कर न लगाया जाये।

प्रश्न 3—क्रान्ति को सफल बनाने में विदेशी शक्ति के सहयोग का वर्णन कीजिए तथा उसके परिणाम लिखिए।

उत्तर—क्रान्ति को सफल बनाने में विदेशी शक्ति का सहयोग तथा उसके परिणाम—क्रान्ति को सफल बनाने में फ्रान्स ने सहयोग दिया। उसने अमेरिकन बस्तियों की स्वतन्त्रता को मान्यता प्रदान कर दी। स्पेन और हालैण्ड भी इंग्लैण्ड के शत्रु थे। उन्होंने भी अमेरिका के स्वतन्त्रता संग्राम के साथ इंग्लैण्ड से युद्ध छेड़ दिया। आयरलैण्ड ने भी इंग्लैण्ड के विरुद्ध आन्दोलन आरम्भ कर दिया। ऐसी स्थिति में इंग्लैण्ड चारों तरफ से परेशानियों से घिर गया। अब उसके लिए उपनिवेशों से युद्ध करना कठिन हो गया। क्रान्ति के कारण 13 उपनिवेश एकता के सूत्र में बँध गये। पेरिस सन्धि के पूर्व ही उपनिवेशों ने "संयुक्त राज्य अमेरिका" नाम से एक संगठन बनाया।

प्रश्न 4—जार्ज वाशिंगटन के कार्यों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—जार्ज वाशिंगटन के कार्य—जार्ज वाशिंगटन ने 1781 में अग्रलिखित कार्य किये—

(1) लार्ड कार्नवालिस को अनेक स्थानों पर पराजित करके उसके 7,000 सैनिकों को घेर लिया और पार्कटाउन के युद्ध में उनको आत्म-समर्पण के लिए बाध्य किया।

(2) 1789 ई० में जार्ज वाशिंगटन को प्रथम बार राष्ट्रपति बनाया गया। उन्होंने अमेरिका के लिए संविधान तैयार करवाया।

(3) जार्ज वाशिंगटन दो बार चार-चार वर्ष की अवधि के लिए राष्ट्रपति चुने गये।

प्रश्न 5—अमेरिका की क्रान्ति के परिणामों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—अमेरिका की क्रान्ति के परिणाम—अमेरिकन क्रान्ति के परिणाम इस इस प्रकार थे—

(1) 1783 ई० में इंग्लैण्ड को पेरिस की सन्धि करनी पड़ी।

(2) इस सन्धि के अनुसार अमेरिका के 13 उपनिवेश संगठित रूप से स्वतन्त्र हो गये।

(3) अमेरिका में 4 जुलाई को स्वतन्त्रता दिवस मनाया जाने लगा।

(4) 13 उपनिवेश सदैव के लिए एकता के सूत्र में बँध गये।

(5) उपनिवेशों ने अपना पृथक् संगठन "संयुक्त राज्य अमेरिका" के नाम से बनाया।

परीक्षा में पूछे गये तथा अन्य लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 6—अमेरिका के स्वाधीनता संग्राम के किन्हीं दो कारणों का उल्लेख कीजिए। (1985)

उत्तर—अमेरिका में 1776 ई० में जो राज क्रान्ति हुई, उसी को अमेरिका का स्वाधीनता संग्राम कहा जाता है। यह स्वतन्त्रता संग्राम अमेरिका के इतिहास में एक अपूर्व एवं महत्वपूर्ण घटना थी। अमेरिका के स्वाधीनता संग्राम के दो प्रमुख कारण निम्नलिखित थे—

(1) **दोषपूर्ण शासन-व्यवस्था**—अमेरिका ब्रिटेन का उपनिवेश था। इसलिए इंग्लैण्ड ने अमेरिका की शासन व्यवस्था पर नियन्त्रण कर रखा था। प्रत्येक उपनिवेश का प्रशासन एक अँग्रेज गवर्नर के अधीन होता था। इंग्लैण्ड की सरकार उपनिवेशों पर अपने नियम थोपती रहती थी, किन्तु उपनिवेशों की धारा-सभाएँ उन नियमों के अधीन रहना पसन्द नहीं करती थीं। ऐसी स्थिति में जनता ने क्रान्ति का बिगुल बजा दिया।

(2) **स्वार्थपूर्ण व्यापार नीति**—अँग्रेजी सरकार उपनिवेशों को इंग्लैण्ड के लिए लाभ का एक उत्तम साधन मानती थी। इसलिए उसने जो व्यापार की नीति अपनायी, उससे उपनिवेशवासी बहुत असन्तुष्ट थे। यह असन्तोष उस समय और भी बढ़ गया जब अँग्रेजी सरकार ने उन पर नये-नये कर लगा दिये। फलतः उपनिवेशवासियों में रोष व्याप्त हो गया जो क्रान्ति के रूप में प्रकट हुआ।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—अमेरिका के स्वतन्त्रता संग्राम के क्या कारण थे?

उत्तर—अमेरिका के स्वाधीनता युद्ध के कारण—

अमेरिका के स्वाधीनता युद्ध के प्रमुख करण निम्नलिखित थे—

(1) उपनिवेशों का शासन दोषपूर्ण था। उपनिवेशों के रहने वाले आन्तरिक स्वतन्त्रता चाहते थे। परन्तु गवर्नर इस ओर उदासीन था।

(2) इंग्लैण्ड अमेरिका में स्थित अपनी उपनिवेशों का शोषण कर रहा था। परन्तु अमेरिकन उपनिवेशों के लोग इस शोषण के विरुद्ध थे।

(3) अंग्रेजी सरकार ने 1756 ई० में स्टाम्प एक्ट लगा दिया। इसके द्वारा व्यापारिक सौदे पर टैक्स देना पड़ता था। परन्तु उपनिवेशों के लोग इसे अनुचित मान कर इसका विरोध कर रहे थे।

(4) अनेक दार्शनिकों के विचारों के कारण अमेरिकन उपनिवेशों के लोग अपने मौलिक अधिकारों के प्रति जागरूक हो रहे थे। अमेरिका के अनेक लेखकों ने उपनिवेशों के लोगों में स्वतन्त्रता की भावनाएँ भर दी थीं।

उपर्युक्त प्रमुख कारण थे जो अमेरिका में स्वतन्त्रता के युद्ध के लिए उत्तरदायी थे।

प्रश्न 2—स्वतन्त्रता संग्राम की प्रमुख घटनाओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—स्वतन्त्रता संग्राम की प्रमुख घटनाएँ—

स्वतन्त्रता संग्राम की प्रमुख घटनाएँ इस प्रकार हैं—

(1) अंग्रेजी सेना को सराटोगा के पास आत्म-समर्पण करना पड़ा।

(2) सराटोगा का युद्ध अमेरिका के स्वतन्त्रता संग्राम में विशेष महत्त्व रखता है।

(3) इस युद्ध में सुसज्जित अंग्रेजी सेना को अनुभवहीन अमेरिका की सेना ने परास्त कर दिया था।

(4) इस विजय ने अमेरिका निवासियों में आत्म-विश्वास उत्पन्न कर दिया।

(5) अंग्रेजी सेना की पराजय ने फ्रांस को भी अपना बदला लेने के लिए उकसाया। फ्रांस ने अमेरिकन बस्तियों की स्वतन्त्रता को मान्यता प्रदान कर दी। उनकी सहायता के लिए धन युद्ध सामग्री और सेना भेजी।

(6) इस प्रकार इंग्लैण्ड का फ्रान्स से भी युद्ध छिड़ गया।

(7) ब्रिटेन का स्पेन और हालैण्ड से भी युद्ध आरम्भ हो गया।

(8) भारत में हैदरअली भारत से अंग्रेजों को खदेड़ना चाह रहा था। वह इसके लिए अथक् प्रयास कर रहा था।

(9) आयरलैण्ड भी इंग्लैण्ड से युद्ध करने के लिए तैयार हो रहा था।

(10) इस प्रकार इंग्लैण्ड चारों तरफ से परेशानियों से घिर गया।

(11) 1781 ई० में जार्ज वाशिंगटन ने अंग्रेजी की सेना को पराजित कर दिया और उनके 7000 सैनिकों को घेर लिया।

(12) 1783 ई० में विवश होकर अंग्रेजों को फ्रान्स से सन्धि करनी पड़ी।

प्रश्न 3—अमेरिका की क्रान्ति की क्या उपलब्धियाँ थीं ?

उत्तर—अमेरिकन क्रान्ति की उपलब्धियाँ—

अमेरिकन क्रान्ति की निम्नलिखित उपलब्धियाँ थीं—

(1) अनेक अंग्रेज कनाडा में बस गये। इस प्रकार कनाडा में एक बड़ा उपनिवेश स्थापित हो गया। आस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैण्ड के उपनिवेश भी उसी के पश्चात् बसाये गये।

(2) अमेरिका में लिखित संविधान तैयार किया गया।

(3) अमेरिका ने लिखित संविधान देकर विश्व के लिए एक नया लोकतन्त्रीय मार्ग प्रदर्शित किया।

(4) अब इंग्लैण्ड के राजनीतिज्ञ उदारता के पोषक हो गये।

(5) जार्ज तृतीय की बढ़ती हुई शक्ति पर रोक लग गयी।

(6) इंग्लैण्ड ने आयरलैण्ड की कानून बनाने की माँग को स्वीकार कर लिया।

(7) अमेरिका की क्रान्ति के पश्चात् 6 वर्षों के बाद ही फ्रान्स की क्रान्ति आरम्भ हो गयी।

परीक्षा में पूछे गये तथा अन्य बहु-विकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1—अमेरिका का प्रथम राष्ट्रपति कौन था? (1987)

(i) नैपोलियन (ii) जार्ज वाशिंगटन
(iii) रीगन (iv) कैनेडी।

उत्तर—(ii) जार्ज वाशिंगटन।

प्रश्न 2—अमेरिका का स्वतन्त्रता दिवस मनाया जाता है— (1986)

(i) 4 जुलाई को (ii) 26 जनवरी को
(iii) 15 अगस्त को (iv) 14 जुलाई को।

उत्तर— (i) 4 जुलाई को।

प्रश्न 3—अमेरिका में संविधान लागू हुआ—

(i) 1776 ई० में (ii) 1787 ई० में
(iii) 1783 ई० में (iv) 1789 ई० मे।

उत्तर—(iv) 1789

प्रश्न 4—अमेरिका का प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम हुआ—

(i) 1788 में (ii) 1776 में
(iii) 1790 में (iv) 1789 में।

उत्तर—(ii) 1776 में।

प्रश्न 5—अमेरिका में दास प्रथा समाप्त करायी—

(i) जार्ज वाशिंगटन (ii) जॉन कैनेडी
(iii) अब्राहमलिंकन (iv) रीगन।

उत्तर—(iii) अब्राहमलिंकन।

3. फ्रान्स की क्रान्ति

अति लघुउत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—फ्रांसीसी क्रान्ति कब आरम्भ हुई?

उत्तर—फ्रांस की क्रान्ति 1830 ई० में आरम्भ हुई।

प्रश्न 2—क्रान्ति आरम्भ होने के समय फ्रांस में कौन राजा था?

उत्तर—क्रान्ति आरम्भ होने के समय लुई सोलहवाँ फ्रांस का राजा था।

प्रश्न 3—उस सभा का नाम लिखिए जिसके बुलाने से फ्रांस की क्रान्ति का श्रीगणेश हुआ?

उत्तर—उस सभा का नाम 'स्टेट्स जनरल था' जिसके बुलाने से फ्रांस की क्रान्ति का श्रीगणेश हुआ।

प्रश्न 4—1815 ई० के बाद यूरोप के किन-किन देशों में राष्ट्रीय आन्दोलन आरम्भ हुए ?

उत्तर—1815 ई० के बाद यूरोप के इटली, जर्मनी और यूनान देशों में राष्ट्रीय आन्दोलन आरम्भ हुआ—।

प्रश्न 5—क्रान्ति को किन प्रमुख दार्शनिकों ने प्रभावित किया ?

उत्तर—क्रान्ति को रूसो, मान्टेस्क्यू तथा वाल्टेयर, आदि दार्शनिकों ने प्रभावित किया।

परीक्षा में पूछे गये तथा अन्य अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 6—नैपोलियन कब और कहाँ पराजित हुआ ? (1984)

उत्तर—नेपोलियन 1815 ई० में वाटर लू के युद्ध में पराजित हुआ।

प्रश्न 7—रूसो कौन था ? उसने किसका विरोध किया ? (1988)

उत्तर—रूसो फ्रांस का एक महान दार्शनिक था। उसने फ्रांस के राजा के विशेषाधिकारों का विरोध किया।

प्रश्न 8—फ्रांस की क्रान्ति का एक प्रमुख प्रभाव लिखिए।

उत्तर—फ्रांस की क्रान्ति का प्रमुख प्रभाव निरंकुश राजतन्त्र सोर सामन्तवाद की समाप्ति हुई।

लघुउत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—14 जुलाई फ्रांस मे राष्ट्रीय पर्व के रूप में क्यों मनायी जाती है ? (1988, 90)

उत्तर—14 जुलाई एक राष्ट्रीय पर्व—जनता के विरोध के सामने राजा को झुकना पड़ा तथा एक सम्मिलित अधिवेशन किया गया। यह जनवर्ग की भारी विजय थी। राजा और दरबारी इस घटना से भयभीत होकर विदेशों से सेना मँगाकर राष्ट्रीय सभा को भंग करने की योजना बनाने लगे। विदेशों से सेना आने की अफवाह ज्यों ही जनता में फैली, वह भड़क उठी। हथियार एकत्रित कर जनता की एक भीड़ ने 14 जुलाई, 1789 ई० को बस्तील की जेल पर (जिसे वे राजा के अत्याचार का प्रतीक समझते थे) आक्रमण कर दिया। चार घण्टे के घेरे के बाद, जेल के फाटक तोड़ दिये गये तथा कैदियों को मुक्त कर दिया गया। इसके साथ ही शहरों, गाँवों तथा कस्बों में भी क्रान्ति फैल गयी। यह घटना निरंकुश शासन के पतन की श्रृंखला की पहली कड़ी थी। आज भी फ्रांस में 14 जुलाई एक राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनाया जाता है।

प्रश्न 2—राजा और रानी को फाँसी क्यों दी गयी ?

उत्तर—फ्रांस को आस्ट्रिया तथा हालैण्ड से युद्ध करना पड़ा। इससे नागरिकों में उत्तेजना फैल गयी क्योंकि उनको यह विश्वास था कि इसके पीछे राजा और रानी का हाथ है। समाजवाद के पक्षपातियों ने ट्यूलरी पर आक्रमण कर दिया। राजा, रानी तथा राजकुमार ने विधान सभा में आकर अपने प्राणों की रक्षा की। राजा और रानी पर बाद में मुकद्दमा चलाया गया और 1792 ई० में उनको फाँसी पर लटका दिया गया।

प्रश्न 3—जैकोबिन्स कौन थे ? इन्होंने देश में कैसे आतंक फैलाया ?

उत्तर—जो व्यक्ति जैकोबिन विचारधारा से सहमत थे, उनको जैकोबिन्स कहा जाता था। यह दल शक्तिशाली तथा बहुसंख्यक था। वे क्रान्ति को तेजी से

बढ़ना चाहते थे। ये लोग पूरे यूरोप के शत्रु थे क्योंकि अन्य सभी देश फ्रांस की क्रान्ति को समाप्त करना चाहते थे। अतः बढ़ती हुई क्रान्ति के आन्तरिक तथा बाहरी शत्रुओं के मुक़ाबले की तैयारी आरम्भ हो गयी। सारे देश में आतंक फैल गया।

प्रश्न 4—फ्रांस में नैपोलियन की क्या भूमिका थी ? (1989)

उत्तर—नैपोलियन जो निरन्तर सेना का सफलतापूर्वक संचालन कर रहा था, अत्यन्त शक्तिशाली हो गया और अन्त में सम्राट बन बैठा। नैपोलियन 1805 ई० में रूस को पराजित करके, अपनी शक्ति की चरम सीमा पर पहुँच गया। उसने इंग्लैण्ड को भी परास्त करना चाहा। परन्तु वह अपने इरादे में सफल न हो सका। अन्त में यूरोप के मित्र राष्ट्रों ने संगठित होकर लिपजिंग में परास्त कर उसे कैद कर लिया, जहाँ से वह भाग निकला। जनता ने उसका स्वागत किया और वह पुनः सत्तारूढ़ हो गया। 1815 ई० में मित्र राष्ट्रों ने उसको पुनः परास्त करके अन्त तक कैद रखा।

प्रश्न 5—नैपोलियन के पतन के पश्चात् क्रान्ति को रोकने का क्या प्रयास किया गया ?

उत्तर—वियना सम्मेलन में यूरोप के सभी राष्ट्रों ने मिलकर यूरोप में शान्ति स्थापित कर पुरानी राज्य पद्धति की रक्षा के प्रयास किये थे। आस्ट्रिया और रूस ने मिलकर एक पवित्र संघ बनाकर लोकतन्त्रीय भावनाओं को कुचलने की योजनायें बनायीं। फ्रांस में पुनः पुराना राजवंश स्थापित कर दिया गया। इस प्रकार तानाशाही सरकारें यह समझने लगीं कि अपने उद्देश्य में सफल हो गयी हैं और यूरोप से लोकतन्त्रीय भावनायें कुचल दी गयी हैं। किन्तु वे प्रयास इस दिशा में पूर्णरूप से असफल ही रहे।

अन्य लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 6—रूसो के विषय में आप क्या जानते हैं ?

उत्तर—रूसो—रूसो फ्रांस का एक महान् शिक्षा-शास्त्री तथा दार्शनिक था। फ्रांस की जनता पर सबसे अधिक उसी का प्रभाव पड़ा। उसने एक पुस्तक लिखी, जिसका नाम था, "Social Contract"। इस पुस्तक के द्वारा उसने फ्रांसीसी लोगों को क्रान्ति के लिए तैयार किया। उसके क्रान्तिकारी विचारों ने फ्रांस के निवासियों को एक नई चेतना दी।

प्रश्न 7—वाल्टेयर के विषय में संक्षेप में लिखिए।

उत्तर—वाल्टेयर—वाल्टेयर फ्रांस का एक महान दार्शनिक एवं क्रान्तिकारी नेता था। वाल्टेयर अपने क्रान्तिकारी विचारों के लिए प्रसिद्ध था। उसने जनता के समक्ष चर्च और राज्य की बुराइयों को प्रस्तुत किया। उसका विश्वास था कि जब तक प्राचीन संस्थाओं को समाप्त नहीं किया जाता, तब तक एक नये युग की कल्पना नहीं की जा सकती। इस प्रकार उसने फ्रांसीसी क्रान्ति के लिए पृष्ठभूमि तैयार की।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—फ्रांस की क्रान्ति के कारण लिखिए— (1987, 90)

उत्तर—फ्रांसीसी क्रान्ति के कारण—फ्रांसीसी क्रान्ति के कुछ मुख्य कारण इस प्रकार थे—

(1) आर्थिक कारण—फ्रांस ने अनेक युद्धों में भाग लिया था। अतः उसकी आर्थिक दशा अत्यन्त शोचनीय हो गयी थी। इसके अतिरिक्त चूँकि उस समय के

शासक अत्यन्त विलासी थे, अतः फांस की आर्थिक दशा बहुत खराब हो गयी थी। साधारण जनता करों के बोझ से दबी जा रही थी। जन-साधारण जो कर चुकाती थी उसका केवल कुछ भाग ही सरकारी कोष में जमा हो पाता था। इस प्रकार फ्रांस की आर्थिक दशा खराब हो रही थी और यह क्रान्ति का कारण बनी।

(2) तात्कालिक कारण—चूँकि फ्रांस की आर्थिक दशा बिगड़ रही थी, अतः इसे सुधारने के लिए 1789 ई० में एक अधिवेशन बुलाया गया। जन-साधारण को यह आशा थी कि इस अधिवेशन में वे अपनी समस्याएँ सुलझा सकेंगे। परन्तु कुलीन वर्ग के लोगों ने इस अधिवेशन में भाग नहीं लिया। लगभग एक वर्ष पहले फ्रांस में अकाल पड़ चुका था। इससे जन-साधारण विशेष दुःखी थे। अतः अधिवेशन बुलाये जाते परन्तु किसी समस्या के हल न होने के कारण यह क्रान्ति का एक कारण बना।

(3) सामाजिक कारण—क्रान्ति से पूर्व फ्रांसीसी समाज में असमानता थी। कुछ लोगों का जीवन तो अत्यन्त सुखी था, परन्तु कुछ लोगों का जीवन अत्यन्त दुःखी था। समाज में बुद्धि-जीवियों का कोई आदर न था। समय-समय पर उन्हें अपमानित होना पड़ता था। अतः यह सामाजिक असमानता क्रान्ति का एक कारण बनी।

(4) राजनैतिक कारण—उस समय का शासक लुई सोलहवाँ एक निरंकुश शासक था। यह सदा आमोद-प्रमोद में ही लगा रहता था। सरकारी अधिकारी मनमानी करते थे। इस प्रकार राज्य में कानून और व्यवस्था बिगड़ चुकी थी। जनता को किसी प्रकार के अधिकार नहीं मिले थे, अतः ऐसी दशा फ्रांसीसी क्रान्ति का एक कारण बनी।

(5) क्रान्तिकारी विचारधारा—कुछ फ्रांसीसी दार्शनिकों ने अपने क्रान्तिकारी विचारों से फ्रांस के लोगों को प्रभावित किया। उन्होंने जनता के हृदय में क्रान्ति के बीज बोये। उधर अमेरिकन क्रान्ति ने भी फ्रांस की क्रान्ति को प्रोत्साहित किया।

प्रश्न 2—राष्ट्रीय महासभा के कार्य एवं उनके प्रभावों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—राष्ट्रीय महासभा के कार्य—राष्ट्रीय महासभा के कार्य इस प्रकार हैं—

(1) राष्ट्रीय महासभा ने मानव और नागरिकों के अधिकारों की घोषणा की जिसके अनुसार कानून की दृष्टि में सभी मानव समान थे—

(2) किसी भी व्यक्ति को बिना कानून की सहायता से दण्डित अथवा कैद न किया जा सकेगा।

(3) कर-भार सभी पर समान होगा।

(4) प्रत्येक व्यक्ति को धार्मिक विचारों की स्वतन्त्रता होगी। सम्पत्ति पर वैयक्तिक अधिकार होगा।

(5) चर्च के द्वारा कर लेना बन्द कर दिया गया।

(6) चर्च की समस्त जायदाद छीन कर नीलाम कर दी गई तथा उसे राष्ट्रीय आय में सम्मिलित कर दिया गया।

(7) पादरियों की नियुक्ति चुनाव द्वारा निर्धारित की गई जिसमें सभी लोगों को मत देने का अधिकार था।

(8) पादरियों को राष्ट्र की ओर से वेतन निर्धारित कर दिया गया।

(9) दासता समाप्त कर दी गयी।

(10) समस्त विशेषाधिकार समाप्त कर दिये गये।

(11) पुरानी सामन्तवादी प्रथा समाप्त हो गईं तथा आधुनिक समाजवादी व्यवस्था आरम्भ हो गयी।

(12) यदि राजा किसी प्रस्ताव पर हस्ताक्षर नहीं करता तो वह प्रस्ताव तीन बार विधान सभा में पारित होने के पश्चात् स्वतः ही कानून बन जाएगा।

प्रश्न 3—1830 ई० की क्रान्ति का वर्णन कीजिए।

उत्तर—1830 ई० की फ्रांस की क्रान्ति—

(1) इस क्रान्ति के फलस्वरूप फ्रांस सामन्तवाद का अन्त हुआ। बहुत अल्प समय में ही मध्य वर्ग के व्यक्तियों ने चर्च की भूमि क्रय कर ली। सरकार ने भी धनी व्यक्तियों की भूमि जब्त कर ली।

(2) फ्रांस की क्रान्ति ने समस्त विश्व में लोकतन्त्र के विचारों को सामने रखा। अब फ्रांस में सरकार का उद्देश्य समस्त जनता को सुखी बनाना हो गया।

(4) फ्रांस की क्रान्ति ने विश्व के लोगों में स्वतन्त्रता की भावनाएँ विकसित कीं।

(4) फ्रांस की क्रान्ति ने समाज के प्रत्येक वर्ग को समानता के अधिकार प्रदान किये।

(5) फ्रांस की क्रान्ति ने विश्व बन्धुत्व के विचार को संसार के समक्ष रखा।

(6) फ्रांस की क्रान्ति से सबक लेकर संसार के अन्य देशों के शासकों ने अपनी जनता के लिए अधिक से अधिक कल्याणकारी कार्य आरम्भ किये।

परीक्षा में पूछे गये तथा अन्य बहु-विकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1—फ्रांस की क्रान्ति के समय वहाँ का शासक था— (1990)

(i) चार्ल्स प्रथम (ii) लुई फिलिप
(iii) लुई सोलहवाँ (iv) लुई अठारहवाँ।

उत्तर—(iii) लुई सोलहवाँ।

प्रश्न 2—फ्रांस में राष्ट्रीय पर्व मनाया जाता है—

(i) 4 जुलाई (ii) 15 अगस्त
(iii) 14 जुलाई (iv) 26 जनवरी।

उत्तर—(iii) 14 जुलाई।

प्रश्न 3—नैपोलियन ने रूस को पराजित किया—

(i) 1807 ई० में (ii) 1803 ई० में
(iii) 1805 ई० में (iv) 1806 ई० में।

उत्तर—(i) 1807 ई०।

प्रश्न 4—फ्रांस की क्रान्ति हुई थी—

(i) 1769 ई० (ii) 1789 ई०
(iii) 1689 ई० (iv) 1889 ई०।

उत्तर—(ii) 1789 ई०।

4. रूस की क्रान्ति

अति लघुउत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—रूस का अन्तिम जार कौन था ?

उत्तर—रूस के अन्तिम जार का नाम जार निकोलस था ।

प्रश्न 2—क्रान्ति को प्रभावित करने वालों के नाम लिखिए ?

उत्तर—क्रान्ति को प्रभावित करने वालों के नाम इस प्रकार थे—मार्क्स, टालस्टाय, सुरेनिव लेलिन आदि ।

प्रश्न 3—वोल्शेविक दल के सर्वप्रथम नेता कौन थे ?

उत्तर—वोल्शेविक दल के सर्वप्रथम नेता लेनिन थे ।

प्रश्न 4—वोल्शेविक दल के हाथ में कब से शक्ति आयी ?

उत्तर—वोल्शेविक दल के हाथ में शक्ति 1917 ई० से आयी ।

प्रश्न 5—किस सन्धि से रूस प्रथम विश्व युद्ध से अलग हो गया ?

उत्तर—वेस्ट लिटोवेस्क की सन्धि करके रूस को युद्ध से अलग कर दिया गया ।

प्रश्न 6—रूस में प्रथम पंचवर्षीय योजना कब आरम्भ हुई ?

उत्तर—रूस में 1928 ई० से प्रथम पंचवर्षीय योजना आरम्भ हुई ।

प्रश्न 7—रूसी विचारक लेनिन के अनुसार क्रान्ति को सफल बनाने वाली दो बातें लिखिए ।

उत्तर—रूसी विचारक लेनिन के अनुसार क्रान्ति को सफल बनाने के लिए निम्नलिखित दो बातें आवश्यक होती हैं—

(1) जनता क्रान्ति के लिए बलिदान देने के लिए तत्पर हो ।

(2) तत्कालीन सरकार इतनी संकटग्रस्त हो कि वह एक ही झटके में निष्प्राण हो जाये ।

प्रश्न 8—रूस की गणना समाजवादी देशों के अन्तर्गत करेंगे या पूंजीवादी ?

उत्तर—रूस की गणना समाजवादी देशों के अन्तर्गत की जाती है ।

परीक्षा में पूछे गये तथा अन्य अति लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 9—कार्ल मार्क्स ने किस ग्रन्थ की रचना की थी ? (1990)

उत्तर—कार्ल मार्क्स ने 'दास कैपीटल' ग्रन्थ की रचना की थी ।

प्रश्न 10—रूसी क्रान्ति के प्रमुख नेता का नाम लिखिए ।

उत्तर—रूसी क्रान्ति का प्रमुख नेता लेलिन था ।

प्रश्न 11—रूस में 'खूनी रविवार' की घटना कहाँ और कब हुई ?

उत्तर—रूस में 'खूनी रविवार' की घटना सेंट पिटर्सबर्ग में 1905 ई० में हुई ।

प्रश्न 12—रूस की क्रान्ति कब हुई ?

उत्तर—रूस की क्रान्ति 1917 ई० में हुई थी ।

लघुउत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—1905 ई० की घटना 'खूनी रविवार' क्यों कहलाती है ? (1985)

उत्तर—खूनी रविवार—पादरी गोपेन के नेतृत्व में 22 जनवरी, 1905 ई० को सेंट पीटर्सबर्ग के श्रमिक जार के समक्ष माँगें प्रस्तुत करने के लिए एकत्रित हुए। परन्तु जार ने उनकी कठिनाइयाँ नहीं सुनीं। जार ने आज्ञा दी कि उन पर गोलियाँ चलायी जायें। सैनिकों ने उन पर गोलियाँ चला दीं जिससे राजमहल के सामने लाशों के ढेर लग गये। रूस के इतिहास में इसी घटना को 'खूनी रविवार' कहा जाता है।

प्रश्न 2—1917 ई० को श्रमिकों और औरतों के जुलूस का क्या परिणाम रहा ?

उत्तर—जुलूस का परिणाम—7 मार्च, 1917 ई० को श्रमिकों और औरतों ने मिलकर एक जुलूस बनाकर पीटर्सवर्ग की ओर प्रस्थान किया। भूखे श्रमिकों ने रोटी और कपड़े की दूकानें लूट लीं। वहाँ के श्रमिक भी क्रान्तिकारियों से मिल गये। जार ने सेना को गोली चलाने की आज्ञा दी। परन्तु सेना ने जार की आज्ञा मानने से इन्कार कर दिया। सेना विद्रोहियों से मिल गयी। क्रान्तिकारियों ने मास्को पर विजय प्राप्त कर ली। बेवसी की स्थिति में 15 मार्च, 1917 ई० को जार ने अपना पद छोड़ दिया। रूस में राजनैतिक क्रान्ति सफल हो गयी।

प्रश्न 3—लेनिन ने क्या घोषित किया ? अपने विरोधियों का किस प्रकार दमन किया ?

उत्तर—राजसत्ता आते ही लेनिन ने किसानों, श्रमिकों तथा सैनिकों को सोवियतों की इकाई घोषित किया। सबसे पहले सोवियत सरकार ने आन्तरिक शत्रुओं का सफाया करना आरम्भ किया। विदेशी शक्तियों से निपटने के लिए योजना बनायी गयी। इसके लिए राज्य की लाल सेना ने जारशाही साम्राज्य के समस्त भागों पर पूर्ण आधिपत्य स्थापित कर लिया। लाल सेना अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित न थी, परन्तु इसने सेना का दृढ़ता से मुकाबला किया और अपूर्व शौर्य तथा देश-प्रेम दिखाया। चीला नामक एक स्थान पर अदालत स्थापित करके हजारों विरोधियों को मृत्यु दण्ड दिया गया। जार सपरिवार मार डाला गया। नयी सरकार के ये कार्य इतिहास में लाल आतंक के नाम से जाने जाते हैं।

प्रश्न 4—रूस के राष्ट्रीय झण्डे का क्या स्वरूप है ? (1986)

उत्तर—सोवियत सरकार ने जो रक्तपात किया, उसने फ्रांस के आतंक के राज्य में किये गये रक्तपात की सीमा भी पार कर दी। यूरोप के अन्य देशों को भी साम्यवादी सरकार को मान्यता देनी पड़ी। इसका झण्डा लाल है। इस पर हँसिया किसानों का प्रतीक तथा हथौड़ा श्रमिकों के प्रतीक के रूप में अंकित है।

परीक्षा में पूछे गये तथा अन्य लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 5—1917 ई० की रूसी क्रान्ति ने वहाँ किस प्रकार समाजवाद को जन्म दिया ? (1988)

उत्तर—1917 ई० की रूसी क्रान्ति से रूसी साम्राज्यवाद और वहाँ के जार के निरंकुश शासन का अन्त हो गया। इस क्रान्ति के फलस्वरूप वहाँ एक नयी सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था विकसित हुई जिसमें कार्ल मार्क्स के सिद्धान्तों को कार्य-रूप में परिणत कर दिया गया। इस व्यवस्था में प्रत्येक व्यक्ति को उसकी क्षमता और योग्यता के अनुसार काम देना राज्य का उत्तरदायित्व हो गया। इस प्रकार काम

करना एक संवैधानिक अधिकार हो गया। व्यक्तिगत सम्पत्ति का अधिकार समाप्त हो गया। इससे पूंजीवाद का अन्त होकर समानता पर आधारित समाज स्थापित हो गया। राज्य के सभी साधनों का राष्ट्रीयकरण करके समाजवाद की स्थापना हो गयी। अतः रूस 'सोवियत समाजवादी गणराज्य संघ' के नाम से पुकारा जाने लगा और वहाँ लेलिन की अध्यक्षता में साम्यवादी सरकार की स्थापना हुई। इस प्रकार 1917 ई० की रूसी क्रान्ति के बाद वहाँ वास्तविक रूप से समाजवाद उदय हुआ।

प्रश्न 6—रूस की क्रान्ति में लेलिन के योगदान को स्पष्ट कीजिए। (1989)

उत्तर—रूस की क्रान्ति में लेलिन का महान योगदान है। राजसत्ता मिलते ही लेलिन ने जार द्वारा की गयी गुप्त सन्धियाँ अमान्य कर दी। उसने किसानों मजदूरों तथा सैनिकों का सोवियतों की इकाई घोषित किया और सभी इकाइयों को आत्म-निर्णय का अधिकार दिया।

विरोधियों और जमींदारों से निबटने के लिए लेलिन ने एक सेना का संगठन किया। 'चीला' नाम अदालत की स्थापना करके हजारों विरोधियों को मृत्यु दण्ड दिया गया। जार को सपरिवार मार डाला गया। इस प्रकार लेलिन ने अपने विरोधियों का दमन किया और रूस में समाजवादी आर्थिक व्यवस्था का शुभारम्भ किया। इस प्रकार रूस में लेलिन के नेतुत्व में राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक क्रान्ति सम्पन्न हुई और रूस की गणना विश्व के अग्रणी राष्ट्रों में होने लगी।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—रूसी क्रान्ति के क्या कारण थे? (1988)

उत्तर—रूसी क्रान्ति के कारण—रूस में 1917 ई० में जार के विरुद्ध जो क्रान्ति हुई उसके अनेक कारण थे। उसमें से कुछ कारण निम्नलिखित हैं—

(1) रूस में किसानों की दशा वहुत दयनीय हो चुकी थी। इससे वहाँ के किसानों ने जार के विरुद्ध विद्रोह कर दिया।

(2) रूस में श्रमिकों की दशा भी अच्छी न थी। कारखानों में उनको कम वेतन दिया जाता था और उनके साथ बुरा व्यवहार किया जाता था। उन पर हड़ताल करने पर प्रतिबन्ध लगाया गया। परन्तु इसका उन पर कोई असर न हुआ।

(3) रूस में जार के शासन में अत्याचार बढ़ रहा था। इस कारण लोग अधिक से अधिक उसके विरुद्ध हो रहे थे।

(4) कार्ल मार्क्स ने रूस के लोगों को जार के विरुद्ध हथियार उठाने के लिए प्रेरित किया।

(5) प्रथम विश्वयुद्ध में जार की हार हो गयी। प्रथम विश्व युद्ध में रसद की कमी से लगभग सत्रह लाख सैनिक मारे गये, पाँच लाख घायल हुए और लगभग बीस लाख कैदी बना लिये गये। इन सैनिकों के परिवारों में विद्रोह की भावना पनप रही थी।

प्रश्न 2—प्रथम विश्वयुद्ध में सम्मिलित होने से रूस की क्या दशा हो गयी?

उत्तर—रूस की दशा—प्रथम विश्व युद्ध में सम्मिलित होने से रूस की दशा इस प्रकार थी—

(1) लगभग 7 लाख रूसी सैनिक युद्ध में मारे गये। कुछ इलाज की कमी से मारे गए।

(2) इससे सेना में आक्रोश फैल गया।

(3) इसने रूसी निरंकुश शासन को अन्तिम झटका देकर धराशायी कर दिया।

(4) 1916-17 ई० में रूस में भारी अकाल पड़ गया। जनता भूखों मरने लगी और देश में महामारी फैल गई।

(5) किसानों तथा श्रमिकों का शोषण किया जा रहा था।

प्रश्न 3—रूसी क्रान्ति का देश पर क्या प्रभाव पड़ा? (1984)

उत्तर—रूसी क्रान्ति का देश पर प्रभाव—रूसी क्रान्ति के निम्नलिखित परिणाम निकले—

(1) रूस में निरंकुश शासन समाप्त हो गया।

(2) रूस में अभिजात वर्ग समाप्त हो गया और चर्च की शक्ति समाप्त हो गयी।

(3) संसार में प्रथम बार समाजवादी समाज का निर्माण हुआ।

(4) जार के साम्राज्य को एक नये राज्य सोवियत समाजवादी गणराज्य के संघ में परिवर्तित कर दिया गया।

(5) रूस में उत्पादन के साधनों पर निजी स्वामित्व समाप्त कर दिया गया। अब उत्पादन में व्यक्तिगत लाभ जैसी कोई वस्तु न थी।

(6) आर्थिक नियोजन को उच्च अर्थ-व्यवस्था के निर्माण के लिए आवश्यक माना गया।

(7) रूस में पंचवर्षीय योजनाओं के आधार पर देश में औद्योगीकरण किया गया।

(8) रूस में क्रान्ति के फलस्वरूप एक नई सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था विकसित की गई।

(9) रूसी समाज में व्याप्त बड़ी असमानताओं को दूर किया गया।

(10) प्रत्येक व्यक्ति को काम देना अब राज्य का कर्त्तव्य हो गया। प्रत्येक व्यक्ति को काम करने का अधिकार एक संवैधानिक अधिकार बन गया।

(11) रूसी क्रान्ति ने उस देश में ज्ञान और कला को विकसित किया।

(12) रूसी क्रान्ति का विश्वव्यापी प्रभाव पड़ा। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर समाजवादी आन्दोलन चलाया गया।

(13) सोवियत संघ में समाजवाद की सफलता ने जनतन्त्र की फिर से परिभाषा करने में सहायता दी।

(14) रूस से लेनिन की अध्यक्षता में साम्यवादी सरकार की स्थापना हुई।

(15) अब शिक्षा का कार्य चर्च से ले लिया गया और लोगों को शिक्षित करने का उत्तरदायित्व सरकार ने ले लिया।

(16) रूसी साम्राज्यवाद का अन्त हुआ। जो देश रूस के अधीन थे, उन्हें स्वतन्त्रता दे दी गयी।

(17) अब रूस पिछड़ा हुआ देश नहीं रहा।

(18) 1917 ई० की क्रान्ति के फलस्वरूप ही आधुनिक समय में रूस एक शक्तिशाली देश है।

बहु-विकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1—रूसी क्रान्ति का मुख्य नेता कौन था ?

(क) लेलिन (ख) कार्ल मार्क्स

(ग) टालस्टाय (घ) रूसो।

उत्तर—(क) लेलिन।

प्रश्न 2 —समाजवाद का जनक माना जाता है—

(क) स्टालिन (ख) कार्ल मार्क्स

(ग) लेलिन (घ) टालस्टाय।

उत्तर—(ख) कार्ल मार्क्स।

प्रश्न 3—रूस की क्रान्ति हुई थी—

(क) 1857 ई० (ख) 1918 ई०

(ग) 1917 ई० (घ) 1919 ई०।

उत्तर—(ग) 1917 ई०।

प्रश्न 4—रूस की क्रान्ति के बाद वहाँ कौन-सी शासन व्यवस्था लागू हुई ?

(क) समाजवाद (ख) लोकतन्त्र

(ग) संसदीय प्रणाली (घ) साम्यवाद।

उत्तर—(घ) साम्यवाद। □

9 | भारत की सांस्कृतिक विरासत

अति लघुउत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—गुप्तकाल के दो प्राचीन मन्दिरों के नाम तथा स्थान लिखिए। (1984, 86)

उत्तर—गुप्तकाल के दो मन्दिरों के नाम—1. कानपुर के समीप भीतरगाँव मन्दिर, 2. झाँसी जिले के देवगढ़ स्थान पर गुप्तकाल का दशावतार मन्दिर।

प्रश्न 2—मथुरा की मूर्तिकला की प्रमुख विशेषता क्या है ? (1988)

उत्तर—मथुरा की मूर्तिकला की प्रमुख विशेषता यह है कि मूर्तियाँ बनाने के लिए एक विशेष प्रकार के लाल पत्थर का प्रयोग किया गया है।

प्रश्न 3—अजन्ता किस जगह स्थित है ?

उत्तर—अजन्ता महाराष्ट्र में औरंगाबाद के निकट स्थित है।

प्रश्न 4—कालिदास की दो प्रमुख कृतियों के नाम लिखिए। (1984, 87, 90)

उत्तर—मेघदूत और अभिज्ञान शाकुन्तलम् कालिदास की दो प्रमुख कृतियाँ हैं।

परीक्षा में पूछे गये अति लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 5—ऐलौरा क्यों प्रसिद्ध है ? (1984)

उत्तर—ऐलौरा पहाड़ों को काटकर बड़े सुन्दर मन्दिर बने हुए हैं जो वास्तुकला के उत्कृष्ट प्रतिरूप हैं। इस कारण ऐलौरा प्रसिद्ध है।

प्रश्न 6—किसी एक प्रसिद्ध उपनिषद का नाम लिखिए। (1984, 86)

उत्तर—एक प्रसिद्ध उपनिषद का नाम—कठोपनिषद्।

प्रश्न 7—सांख्य दर्शन के रचयिता का क्या नाम था ? (1984)

उत्तर—सांख्य दर्शन के रचयिता का नाम कपिलमुनि था।

प्रश्न 8—'उत्तर रामचरित' के लेखक का क्या नाम है ? (1984)

उत्तर—'उत्तर रामचरित' के लेखक का नाम भवभूति हैं।

प्रश्न 9—भारत के सभी वेदों एवं उपनिषदों का सार महाभारत के किस अंश में है ? (1985)

उत्तर—भारत के सभी वेदों एवं उपनिषदों का सार महाभारत के 'भगवद्-गीत' अंश में है।

प्रश्न 10—'गीत गोविन्द' की रचना किसने की ? (1985)

उत्तर—'गीत गोविन्द' की रचना महाकवि जयदेव ने की।

प्रश्न 11—वेदों में सबसे प्राचीन वेद कौन-सा है ? (1986)

उत्तर—वेदों में सबसे प्राचीन वेद 'ऋग्वेद' है।

प्रश्न 12—एत्माद्दौला का मकबरा कहाँ पर है और किस शासक ने बनवाया ? (1987)

उत्तर- एतमाद्दौला का मकबरा आगरा में मुगल सम्राट जहाँगीर ने बनवाया था।

प्रश्न 13—अजन्ता और ऐलोरा की चित्रकला में क्या अन्तर है ? (1988)

उत्तर—अजन्ता की कला चित्र प्रधान और ऐलौरा की कलामूर्ति प्रधान है।

प्रश्न 14—मुगलकालीन चित्रकला की क्या विशेषताएँ हैं ?

उत्तर—मुगलकालीन चित्रकला में भारतीय और ईरानी शैली का समन्वय है। (1990)

प्रश्न 15—महाभारत का रचयिता कौन था ?

उत्तर—महाभारत के रचयिता महर्षि वेदव्यास थे।

प्रश्न 16—अष्टाध्यायी का रचयिता कौन था ? (1990)

उत्तर—अष्टाध्यायी के रचयिता पाणिनि थे।

प्रश्न 17—हर्षचरित का रचयिता कौन था ? (1991)

उत्तर—हर्षचरित के रचयिता बाणभट्ट थे।

प्रश्न 18—हिन्दू मन्दिरों की प्रमुख विशेषताएँ क्या थीं ? (1991)

उत्तर—हिन्दू मन्दिर प्राचीन भारतीय संस्कृति, मूर्तिकला और चित्रकला के उत्कृष्ट प्रतीक हैं। उनमें प्राप्त मूर्तियों में सजीवता के दर्शन होते हैं।

प्रश्न 19—दशावतार का मन्दिर कहाँ स्थित है ? (1990)

उत्तर—दशावतार का मन्दिर झाँसी जिले के देवगढ़ नामक स्थान में स्थित है।

प्रश्न 20—प्राचीन भारत के दो महान वैज्ञानिकों के नाम लिखिए।

उत्तर—प्राचीन भारत के दो महान् वैज्ञानिकों के नाम—1. आर्यभट्ट, 2. नागार्जुन।

प्रश्न 21—आर्यभट्ट की वैज्ञानिक क्षेत्र में किसी एक प्रमुख देन का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—आर्यभट्ट की वैज्ञानिक क्षेत्र में प्रमुख देन है कि पृथ्वी गोल है और अपनी धुरी पर घूमती है।

प्रश्न 22—राजस्थानी चित्रकला की किसी एक विशेषता का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—राजस्थानी चित्रकला की प्रमुख विशेषता यह है कि उसकी शैली आलंकारिक है।

प्रश्न 23—मथुरा की मूर्तिकला की प्रमुख विशेषता का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—मथुरा की मूर्तिकला की प्रमुख विशेषता यह है कि अधिकांश मूर्तियाँ लाल बलुआ पत्थर से बनायी गयी हैं।

प्रश्न 24 - खजुराहो कहाँ स्थित है और क्यों प्रसिद्ध है?

उत्तर—खजुराहो झाँसी के पास बुन्देलखण्ड में स्थित है और मन्दिरों के लिए प्रसिद्ध है।

प्रश्न 25—मध्यकालीन स्थापत्य कला के दो उदाहरण बताइए।

उत्तर—मध्यकालीन स्थापत्य कला के दो उदाहरण—1. ढाई दिन का झोंपड़ा, 2. कुतुबमीनार।

लघुउत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—गुफाओं की चित्रकला के विषय में संक्षेप में बताइए।

उत्तर—गुफाओं की चित्रकला—

(अ) बाघ—बाघ जो ग्वालियर के अमझेरा क्षेत्र के निकट है, उसमें अजन्ता शैली की कुछ चित्रकारी देखने को मिलती है। इसमें सबसे मुख्य चित्रकारी हाथियों का एक जुलूस और एक नृत्यांगना का है जिसमें संगीतज्ञ स्त्रियाँ हैं।

(ब) अजन्ता—अजन्ता में बड़ी संख्या में बौद्ध भिक्षुओं के द्वारा निर्मित चैत्य और विहार मिलते हैं। 25 से अधिक चट्टानों को पहचान लिया गया है। इसमें से कुछ हीनयान सम्प्रदाय के और कुछ महायान सम्प्रदाय से सम्बन्धित हैं। 19 नम्बर का चैत्य सबसे सुन्दर प्रतीत होता है। इसमें 15 खम्भे हैं जिनको अति सुन्दरता से सजाया गया है।

भारत की प्राचीन चित्रकला का सर्वोत्कृष्ट रूप अजन्ता के गुफा-मन्दिरों की भित्तियों पर दिखाई देता है। जिस प्रकार के दिव्य व मनोरम चित्र अजन्ता की भित्तियों पर चित्रित हैं, वैसे अन्यत्र कहीं नहीं हैं। अन्य स्थानों पर चित्रित रंगों में वह ताजगी नहीं है जो अजन्ता में है। अजन्ता की गुफाओं में जो चित्र बने हैं, वे कला की दृष्टि से अनुपम हैं। 16 नम्बर गुफा में चित्रित एक चित्र में रात्रि के समय राजकुमार सिद्धार्थ गृह-त्याग कर रहे हैं। यशोधरा और उसके साथ पुत्र राहुल सोये हुए हैं।

इसी गुफा में एक अन्य चित्र एक राजकीय जुलूस का है जिसमें बहुत से मनुष्य सज-धजकर जा रहे हैं। स्त्रियों के शरीर पर सुन्दर आभूषण हैं। उनके वस्त्र इतने महीन हैं कि समस्त शरीर दिखाई देता है। इस गुफा के अनेक चित्र जातक ग्रन्थों के कथानकों को दृष्टि में रखकर बनाये गये हैं। ये चित्र ऐसे हैं जिनको देखकर मनुष्य कभी तृप्त नहीं होता। वे दर्शकों को एक कल्पनामयी मधुर संसार में ले जाते हैं।

(स) ऐलोरा—ऐलोरा का एक प्रसिद्ध चैत्य विश्वकर्मा नाम से जाना जाता है। ऐलोरा में चट्टान को काटकर 12 विहार बनाये गये हैं। कुछ विहार 2 या 3 मंजिल के भी हैं। महान बडा विहार में एक बड़ा हाल है जिसमें 2 पंक्तियों में 24

खम्भे हैं। इसमें 23 कमरे हैं। विश्वकर्मा का स्तूप 8 मीटर ऊँचा है और इसके ऊपर बुद्ध की एक भव्य प्रतिमा है जिसमें दोनों ओर सेवक खड़े दिखाये गये हैं।

हम एक चैत्य का चित्र प्रस्तुत कर रहे हैं। इसकी भव्यता का अवलोकन कीजिए। चैत्य या हाल में धार्मिक सभा हुआ करती थी। इस प्रकार इसे मन्दिर कहा जाये तो कोई त्रुटि नहीं होगी।

प्रश्न 2—राजस्थानी तथा कांगड़ा चित्रकला शैली में भेद बताइए।

उत्तर—राजपूत चित्रकला—राजपूत चित्रकला हिन्दू-प्रसिद्ध तथा आध्यात्मिक थी। यह कला धर्म के साथ जुड़ी हुई थी। यह जन-साधारण का जीवन प्रदर्शित करती है। इस कला के दो भाग हैं—(i) राजस्थानी कला तथा (ii) पहाड़ी कला। परन्तु दोनों चित्रकलाओं की प्रविधि एक समान है। राजस्थानी कला में कृष्ण-लीला, नायिका भेद, ऋतु चरित्र, राज-दरबार के दृश्य, जुलूस तथा शिकार आदि की चित्रकला चित्रित की गई है।

पहाड़ी कला को काँगड़ा कला भी कहते हैं। इसके अनेक उपभेद हैं, जैसे—काँगड़ा, गुलर, चम्बा और बसोली आदि। इस चित्रकला में भव्यता तथा सुन्दरता देखी जा सकती है। इसके चारों ओर प्राकृतिक सुन्दरता पायी जाती है। इन चित्र-कलाओं में भक्ति, आध्यात्मिक प्रेम, कृष्ण और राधा का प्रेम, रामायण और महाभारत के दृश्य हैं। देवताओं को मनुष्य के रूप में दिखाया गया है। कुछ प्रसिद्ध चित्रकारियाँ इस प्रकार हैं—गोवर्धन-धारण, गौ-चरन, नल-दमयन्ती आदि। ये चित्र चित्रकारी के उत्कृष्ट नमूने हैं। वे चित्रकारों की कला के अद्भुत नमूने हैं। हम काँगड़ा कला की चित्रकला का एक उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं।

प्रश्न 3—प्राचीन भारत के प्रमुख दार्शनिकों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

उत्तर—प्राचीन भारत के दार्शनिक—प्राचीन भारत के प्रमुख दार्शनिक इस प्रकार थे—

(i) **महर्षि गौतम**—महर्षि गौतम न्याय-दर्शन के प्रवर्त्तक थे। उन्होंने सूत्र रूप में न्याय-दर्शन की रचना की।

(ii) **कणादि मुनि**—वैशेषिक दर्शन के प्रवर्त्तक कणादि मुनि थे। उन्होंने वैशेषिक सूत्रों की रचना की।

(iii) **कपिल मुनि**—सांख्य दर्शन के प्रवर्त्तक कपिल मुनि थे। उन्होंने सांख्य सूत्रों की रचना की थी। पंचशिखाचार्य का षष्टितन्त्र इस शास्त्र का प्रामाणिक ग्रन्थ था।

(iv) **महर्षि पतंजलि**—योग दर्शन के आदि-प्रवर्त्तक महर्षि पतंजलि थे। उन्होंने योग सूत्रों की रचना की। उन पर व्यास ऋषि का भाष्य योग दर्शन का अत्यन्त प्राचीन तथा प्रामाणिक ग्रन्थ है।

(v) **आचार्य जेमिनि**—मीमांसा दर्शन के प्रवर्त्तक आचार्य जेमिनि थे। उन्होंने मीमांसा सूत्रों की रचना की है। उन पर शावर मुनि ने भाष्य लिखा। शावर भाष्य पर आचार्य कुमारिल भट्ट और प्रभाकर भट्ट ने व्याख्याएँ लिखीं। कुमारिल भट्ट मीमांसा दर्शन के प्रसिद्ध आचार्य हुए हैं।

(vi) **बादरायण व्यास**—वेदान्त दर्शन के प्रवर्त्तक बादरायण व्यास थे।

उन्होंने ही वेदान्त सूत्रों की रचना की। इन सूत्रों पर विविध आचार्यों ने अपने-अपने मत के अनुसार अनेकों भाष्य लिखे हैं। वेदान्त सूत्रों पर रामानुजाचार्य, मध्वाचार्य, निम्बिकाचार्य और वल्लभाचार्य ने भी भाष्य लिखे हैं। इनका मत शंकर से भिन्न है।

प्रश्न 4—संस्कृत साहित्य की प्रमुख कृतियों के विषय में बताइए।

उत्तर— संस्कृत साहित्य की प्रमुख कृतियाँ

(1) मेघदूत, ऋतुसंहार, रघुवंश, कुमारसम्भव—ये काव्य ग्रन्थ संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान कालिदास ने लिखे थे।

(2) अभिज्ञान शाकुन्तलम्, मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमयश वंशावली—ये कालिदास द्वारा रचित प्रसिद्ध नाटक हैं।

(3) उपनिषद्—इसमें दार्शनिक प्रश्नों को समझाया गया है। इनमें कर्म, माया और मोक्ष को विस्तार से समझाया गया है।

(4) अष्टाध्यायी—इसकी रचना पाणिनि ने छठी शताब्दी ई० पू० की थी। वह संस्कृत का महान् ज्ञाता था। इस पुस्तक का सम्बन्ध व्याकरण से है।

(5) रामायण—रामायण के रचयिता आदिकवि वाल्मीकि थे। इसमें मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के चरित्र का चित्रण है। उनके चरित्र के माध्यम से इसमें कवि ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र के, विशेषतः गृहस्थ धर्म के उज्ज्वल आदर्श लोकप्रिय ढंग से प्रस्तुत किये हैं।

(6) महाभारत—महाभारत की रचना ऋषि व्यास ने की थी। इसमें केवल कौरवों तथा पाण्डवों के मध्य युद्ध का वर्णन ही नहीं किया गया है, अपितु भारतीय संस्कृति और हिन्दू धर्म के समग्र विकास का एकमात्र विश्वकोष है।

प्रश्न 5—प्राचीन भारत के प्रमुख वैज्ञानिकों के नाम बताइए। उनके विषय में आप क्या जानते हैं?

उत्तर—प्राचीन भारत के वैज्ञानिक—प्राचीन भारत के प्रमुख वैज्ञानिक निम्नलिखित हैं—

(i) आर्यभट्ट—ये 476 ई० पू० में पाटलिपुत्र में शिक्षण का कार्य करते थे। आर्यभट्ट का ग्रन्थ 'आर्य भटीय' गणित के सम्बन्ध में उस युग के ज्ञान को भली-भाँति प्रकट करता है। इस ग्रन्थ को जब वह 23 वर्ष के थे पाटलिपुत्र में लिखा गया था। इसमें अंकगणित, बीजगणित तथा ज्यामिति के सिद्धान्तों तथा सूत्रों का प्रतिपादन किया गया है। यह ग्रन्थ गुप्तकाल में पाँचवीं शताब्दी में लिखा गया था। ज्योतिष में आर्यभट्ट के अनेक शिष्य थे। इनमें निःशंक पांडुरंग स्वामी लाटदेव के नाम उल्लेखनीय हैं। लाटदेव आगे चलकर बहुत प्रसिद्ध हुआ। उसे सर्व-सिद्धान्त गुरु माना जाता था।

(ii) वराहमिहिर (505-587 ई० पू०)—इन्होंने ग्रीक विज्ञान सीखा था। वराहमिहिर ने जो ग्रन्थ लिखे, वे इस प्रकार हैं—(क) पंच सिद्धान्तिका, (ख) वृहंज्जातक, (ग) वृहत्संहिता, और (घ) लघु जातक।

(iii) ब्रह्मगुप्त (598 ई० पू०)—ये ज्योतिष शास्त्र के विद्वान थे। 'ब्रह्मस्फुट' इनका ज्योतिषशास्त्र पर लिखा एक प्रमाणिक ग्रन्थ है।

(iv) नागार्जुन - नागार्जुन एक उच्चकोटि के चिकित्सक थे। चिकित्सा शास्त्र के अतिरिक्त वह लौह-शास्त्र और रसायन विज्ञान के भी ज्ञाता थे।

(v) चरक—चरक एक महान् चिकित्साशास्त्री थे। उन्होंने शल्य चिकित्सा की खोज की थी। इनका प्रसिद्ध ग्रन्थ 'चरक संहिता' है जो आधुनिक चिकित्सा शास्त्र का विश्व कोष माना जाता है।

परीक्षा में पूछे गये लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 6—प्राचीन भारतीय मूर्तिकला की चार शैलियों के नाम लिखिए। (1985)

उत्तर—प्राचीन भारतीय मूर्तिकला उन्नति के शिखर पर थी जिसमें मूर्तिकला की अनेक शैलियों का प्रयोग किया जाता था। प्राचीन भारतीय मूर्तिकला की प्रमुख चार शैलियाँ इस प्रकार हैं—1. गंधार मूर्तिकला शैली, 2. मथुरा मूर्तिकला शैली, 3. सारनाथ मूर्तिकला शैली, 4. दक्षिण भारतीय मूर्तिकला शैली।

प्रश्न 7—उन चार स्थानों के नाम लिखिए जहाँ अशोक के शिलालेख प्राप्त हुए हैं? (1988)

उत्तर—अशोक ने बौद्धधर्म के उपदेशों और आदेशों को शिलाओं पर खुदवाया जिन्हें शिलालेख कहा जाता है। इस प्रकार 14 शिलालेख अब तक पाये गये हैं जिनमें चार निम्न स्थानों पर प्राप्त हुए हैं—1. कालसी (देहरादून), 2. गिरिनार (काठियावाड़), 3. देवगढ़ (झाँसी), 4. सोपारा (बम्बई)।

प्रश्न 8—प्राचीन काल में भारत के चार ऐतिहासिक ग्रन्थों का परिचय दीजिए। (1984)

उत्तर—प्राचीन काल के भारत के चार ऐतिहासिक ग्रन्थ निम्नलिखित हैं—

1. रामायण—रामायण भारतीय संस्कृति का एक उत्कृष्ट ग्रन्थ है। इसके रचयिता महाकवि वाल्मीकि हैं। यह भारतीय इतिहास का मूल ग्रन्थ है।

2. महाभारत—महाभारत भारतीय इतिहास का दूसरा अद्वितीय ग्रन्थ है। यह तत्कालीन धार्मिक, दार्शनिक और ऐतिहासिक आदर्शों का अमूल्य और अक्षय संग्रह है। इस ग्रन्थ के लेखक वेद व्यास हैं।

3. राजतरंगिणी—राजतरंगिणी में 12वीं शताब्दी तक के कश्मीर के इतिहास का सुन्दर वर्णन है। इसके लेखक 'कल्हण' हैं।

4. विक्रमांकदेवचरित—इस ऐतिहासिक ग्रन्थ में चालुक्य वंश के राजा विक्रमादित्य षष्ठ का जीवन चरित्र वर्णित है। इसके लेखक 'विल्हण' हैं।

प्रश्न 9—भारतीय संस्कृति की प्रमुख दो विशेषताएँ बताइए। (1990)

उत्तर—भारतीय संस्कृति की प्रमुख दो विशेषताएँ निम्न हैं—

1. अनेकता में एकता—भौगोलिक पर्यावरण की विभिन्नताओं के कारण भारत के लोगों की वेशभूषा, खान-पान, रहन सहन, एवं भाषाओं और जातियों में विभिन्नताएँ मिलती हैं परन्तु इनका मूलरूप एकात्मक है।

2. समन्वय की प्रकृति—भारतीय संस्कृति में शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक तीनों प्रकार की शक्तियों के विकास पर समान रूप से बल दिया गया है।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—भारतीय संस्कृति की विशेषताएँ लिखिए। (1990)

उत्तर—भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में अपना विशेष स्थान रखती है। यह संस्कृति मौलिक और चिरन्तन है। यह संस्कृति सैकड़ों वर्षों की दासता, अनेक राजनैतिक उथल-पुथल और अनेकों विदेशी आक्रमणों के बावजूद भी आज जीवित है। भारतीय संस्कृति की कतिपय ऐसी मौलिक विशेषताएँ हैं जिनके कारण उसके मूलरूप हमारे बीच आज भी विद्यमान हैं, उनकी मात्रा न्यूनाधिक भले ही हो गयी है। भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषताएँ निम्न लिखित हैं—

(1) प्राचीनतम संस्कृति—भारतीय संस्कृति विश्व में सबसे पुरानी संस्कृति है। यह संस्कृति अन्य देशों की संस्कृति की तरह समाप्त नहीं हुई अपितु आज भी जीवित है। अनेक विदेशियों ने आक्रमण करके भारतीय संस्कृति को नष्ट करने के अथक् प्रयास किये किन्तु हमारी संस्कृति मूलरूप में आज भी जीवित है।

(2) समन्वय की भावना—भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता समन्वय की भावना है। समन्वय का अर्थ है—"विभिन्न प्रकार के विचारों और भावनाओं में एकरूपता उत्पन्न करना", भारत में वैदिक काल से लेकर आज तक जितनी भी सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक उथल-पुथल हुई, सबकी-सब भारतीय संस्कृति में समाहित हो गयीं।

(3) आध्यात्मिपरक— भारतीय जीवन भौतिकता के स्थान पर आध्यात्मिकता पर अधिक टिका हुआ है। यहाँ के सभी धर्म और जाति के लोग ईश्वर की सत्ता पर विश्वास करते हैं। सभी का मत है कि सृष्टि का रचयिता एक ही ईश्वर है। उसकी सत्ता के बिना पत्ता भी नहीं हिलता है।

(4) अनेकता में एकता—भारत में विभिन्न जातियाँ, भाषाएँ, धर्म, वेशभूषा, खान-पान, रीति-रिवाज आदि अनेकताएँ पायी जाती हैं। परन्तु फिर भी सभी भारतीय मूल रूप से एक ही हैं। यह विशेषता हमारी संस्कृति की सर्व प्रमुख विशेषता है।

(5) धर्म की प्रधानता—भारतीय संस्कृति का मूल तत्व धर्म है। इस संस्कृति में धर्म के चार चरणों—धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष का सुन्दर समन्वय है। अपने धर्म अर्थात् कर्त्तव्य का पालन करते हुए अर्थ प्राप्त करके अपनी कामनाओं की पूर्ति करनी चाहिए। इन तीनों के सुयोग से ही मोक्ष सम्भव है। ये चारों एक-दूसरे के पूरक हैं।

(6) वर्णाश्रम व्यवस्था—भारतीय संस्कृति में समाज को चार वर्णों—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र तथा मानव जीवन को चार आश्रमों—ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा सन्यास में बाँटा गया है। वर्णाश्रम व्यवस्था भारतीय सामाजिक संरचना की आधारशिला थी। धीरे-धीरे यह वर्ण व्यवस्था जाति व्यवस्था में बदल गयी और उसका आधार कार्य के स्थान पर जन्म हो गया।

(7) सत्य और अहिंसा पर बल—भारतीय संस्कृति में सत्य और अहिंसा पर अत्यधिक बल दिया है। महात्मा गौतम बुद्ध और महावीर स्वामी ने तो अहिंसा को सर्वोपरि माना है। सम्राट अशोक ने इसी सत्य और अहिंसा का सुदूर देशों

में व्यापक प्रचार किया। आधुनिक युग में महात्मा गाँधी ने इसी सत्य अहिंसा को फिर से जीवित कर दिया और इसी के बल पर ब्रिटिश जैसी महान् शक्ति को भारत से भाग दिया।

प्रश्न 2—'भारतीय संस्कृति में विविधता में एकता है'—इस कथन की व्याख्या कीजिए। (1986)

उत्तर—भारतीय संस्कृति एक महान संस्कृति है। इसमें कुछ ऐसी विशेषताएँ हैं जो संसार की अन्य संस्कृतियों में नहीं पायी जाती हैं। भौगोलिक दृष्टि से भारत को चार भागों में बाँटा जा सकता है—(1) हिमालय तथा उत्तर पूर्वी सीमान्त पर्वत, (2) गंगा का विशाल मैदान, (3) दक्षिण पठार तथा (4) तटीय मैदान। इन चारों भागों में हर प्रकार की विविधता पायी जाती है। कहीं ऊँचे पठार हैं तो कहीं सपाट मैदान; कहीं शस्य श्यामल प्रदेश तो कहीं निर्जल मरुभूमि। इस देश में जलवायु की विविधता भी उल्लेखनीय है। जलवायु की विविधता के साथ-साथ नाना प्रकार की वनस्पति एवं जीव इस देश में देखने को मिलते हैं। भौगोलिक पर्यावरण के कारण यहाँ के निवासियों की वेशभूषा, खानपान, रहन-सहन तथा भाषाओं एवं जातियों में विभिन्नता देखने को मिलती है। किन्तु इसके मूल में भारतीय संस्कृति का एकात्मक रूप है।

भारतीय संस्कृति में अनेकों प्रकार की विविधताएँ तथा विभिन्नताएँ पायी जाती हैं। जैसे यहाँ अनेक धर्मों के मानने वाले, विविध जातियों के विभिन्न भाषाएँ बोलने वाले, विभिन्न राज्यों के विभिन्न रीति-रिवाजों के मानने वाले, विभिन्न त्यौहारों को मानने वाले, विभिन्न रहन-सहन वेश-भूषा वाले, काले-गोरे आदि विविधताएँ होते हुए भी सब में एक यही भावना है कि हम भारतीय हैं। अतः उनमें भावात्मक एकता है। आज देश में एक जाति वाले दूसरी जाति व धर्म वालों के साथ विवाह सम्बन्ध स्थापित कर रहे हैं। यहाँ पर हिन्दू, मुसलिम, सिक्ख, ईसाई सभी एक साथ खाते-पीते हैं तथा सभी आपस में मिल-जुलकर प्रेम से एक साथ रहते हैं।

इस प्रकार स्पष्ट है कि भारतीय संस्कृति में आन्तरिक एकता, आत्मसात की भावना तथा समन्वय की प्रकृति पायी जाती है। भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता उसमें ग्रहण करने की क्षमता है। भारतीय संस्कृति की मूलधारा बहती रही और आगे आने वाली नई विचारधाराओं को ग्रहण करती रही। इस प्रकार भारतीय संस्कृति में विविधता में एकता दृष्टिगोचर होती है।

प्रश्न 3—गुप्तकाल की स्थापत्यकला के विषय में आप क्या जानते हैं? मध्य कालीन स्थापत्य कला पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—गुप्तकाल की स्थापत्य कला—गुप्त युग के जो पौराणिक मन्दिर मिले हैं, उनसे उस युग की वास्तुकला का भली-भाँति परिचय मिल जाता है। अभी तक जो मन्दिर मिले हैं, वे इस प्रकार हैं—

(1) झाँसी जिले के देवगढ़ स्थान पर गुप्तकाल का दशावतार का मन्दिर मिला है। गुप्त युग के मन्दिरों में यह सबसे प्रसिद्ध तथा उत्कृष्ट मन्दिर है। एक ऊँचे चबूतरे के मध्य यह मन्दिर बनाया गया है।

(2) अजयगढ़ राज्य में भूसरा के समीप 'नचना कूथना' नामक स्थान पर पार्वती का एक पुराना मन्दिर है।

(3) कानपुर के समीप भीतरगांव में गुप्तकाल का एक विशाल मन्दिर अभी भी विद्यमान है।

(4) महाराष्ट्र के बीजापुर जिले में अपहोल नामक स्थान पर एक पुराना मन्दिर आज भी विद्यमान है।

(5) मध्य प्रदेश के जबलपुर जिले में तिगवा नामक स्थान पर गुप्तकाल का एक मन्दिर पाया गया है जो एक ऊँचे टीले पर स्थित है।

(6) मध्य प्रदेश के नागौद क्षेत्र में भूमरा नामक स्थान पर एक प्राचीन समय का शिव मन्दिर स्थापित है। अब यह मन्दिर भग्न दशा में है।

उस समय की वास्तुकला अपनी उन्नति की चरम सीमा पर थी। उस समय के बहुत कम मन्दिर अब मिलते हैं। उस समय के मन्दिर छोटे होते थे। परन्तु उनमें शिखर होता था जिसे सजाया जाता था। सारनाथ का धमेख स्तूप गुप्त काल में ही बना था। इसके बाहरी भाग में जो प्रस्तर हैं, वे अनेक प्रकार के चित्रों व प्रतिमाओं से अंकित हैं। देवगढ़ के मन्दिर का शिखर भारत में सबसे पुराना है। इसी कारण इस मन्दिर का विशेष महत्व है। भीतरगांव का मन्दिर ईंटों से बनाया गया है। उसकी दीवारों का बाहरी अंश मिट्टी के पकाये हुए फलकों से बनाया गया है। इन फलकों पर तरह-तरह की चित्रकारी व मूर्तियाँ अंकित की गयी हैं।

मध्यकालीन स्थापत्यकला—मध्य युग की वास्तुकला को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है—(i) आर्य और (ii) द्रविड़।

(i) **आर्य वास्तुकला**—इस युग में उत्तरी भारत में जो मन्दिर पाये जाते हैं, वे आर्य कला के अनुसार निर्मित किये गये हैं। इन मन्दिरों में मूर्ति स्थापना के लिए आलय बनाये गये हैं। इसके सम्मुख खुला स्थान छोड़ा जाता है। मन्दिर के चारों ओर प्रदक्षिणा के लिए स्थान रहता है। इसे प्रदक्षिणा पथ कहा जा सकता है।

(ii) **द्रविड़ वास्तुकला**—द्रविड़ शैली के मन्दिरों में गर्भ-गृह के सम्मुख अनेक स्तम्भों वाला मण्डल भी बनाया जाता है। मन्दिर के प्रांगण में प्रवेश के लिए ऐसे विशाल द्वारों की रचना की जाती है जिनके ऊपर विविध देवी-देवताओं की मूर्तियों से अलंकृत गोपुर रहते हैं। दक्षिणी भारत के मन्दिर प्रायः द्रविड़ शैली के हैं। उड़ीसा में भुवनेश्वर का लिंगराज का मन्दिर, कोणार्क का सूर्य मन्दिर और जगन्नाथ मन्दिर सबसे महत्वपूर्ण हैं। भुवनेश्वर के लिंगराज के मन्दिर का चित्र हम प्रस्तुत कर चुके हैं। यहाँ हम कोणार्क स्थित सूर्य मन्दिर का एक चित्र दे रहे हैं। इस मन्दिर की भव्यता देखते ही बनती है।

प्रश्न 4—सारनाथ की मूर्तिकला के विषय में आप जानते हैं ?

उत्तर—गुप्तकाल में मूर्ति निर्माण कला का महत्वपूर्ण केन्द्र सारनाथ था। यहाँ "धर्म चक्र प्रवर्तन" करते हुए महात्मा बुद्ध की मूर्ति सारनाथ मूर्तिकला का उत्कृष्ट नमूना है। सारनाथ मूर्तिकला के बहुत से नमूने कलकत्ता संग्रहालय में सुरक्षित हैं। मूर्ति में कुछ के मुखमण्डल पर अपूर्व शान्ति, कोमलता तथा गम्भीरता है। इस मूर्ति की आँखें आधी बन्द हैं और इस पर तनिक-सी मुस्कराहट भी है। इस मूर्ति में पदमासन बाँधकर बैठे हुए भगवान् बुद्ध सारनाथ में धर्म-चक्र प्रवर्तन करते

हुए दिखाये गये हैं। मूर्ति में दोनों कन्धे महीन वस्त्र से ढके प्रदर्शित किये गये हैं। ये वस्त्र पैरों तक हैं और आसन के पास पैरों से इनका भेद स्पष्ट दिखाई देता है। सिर के चारों ओर अलंकृत प्रभामण्डल है जिसके दोनों ओर दो देवों की मूर्तियाँ बनी हैं। आसन के मध्य भाग में एक चक्र बनाया गया है जिसके दोनों ओर दो मृग हैं।

इस प्रकार स्पष्ट है कि सारनाथ-मूर्तिकला का विशेष महत्व है।

प्रश्न 5—मुगलकालीन चित्रकला के विषय में आप क्या जानते हैं ?

उत्तर—मुगलकालीन—मुगलकालीन चित्रकला का वर्णन इस प्रकार है—

(अ) बाबर—बाबर को चित्रकला से प्रेम था। उसने अपनी आत्म-कथा को चित्रित कराया था। परन्तु वह इस ओर विशेष ध्यान न दे पाया क्योंकि उसका जीवन संघर्षमय था।

(ब) हुमायूँ—हुमायूँ स्थापत्य कला की अपेक्षा चित्रकला में अधिक रुचि रखता था। उसने फारस में इस कला का अध्ययन किया था। उसके दरबार में मीर सैयद अली तथा ख्वाजा अब्दुल समद दो प्रसिद्ध चित्रकार थे। उन्होंने सुप्रसिद्ध फारस ग्रन्थ दस्ताने-अमीर-हमजा को चित्रित किया। वे भारतीय चित्रकारों के साथ कार्य किया करते थे। इसी समय से फारसी और भारतीय चित्रकला का समन्वय आरम्भ होता है।

(स) अकबर—अकबर को चित्रकला की विशेष रुचि थी। उसने फारसी चित्रकारों से शिक्षा ग्रहण की थी। उसके शासनकाल में इस कला का विदेशीपन समाप्त हो गया। अन्त में उसका रूप भारतीय हो गया। अकबर ने फतेहपुरसीकरी की दीवारों पर सुन्दर चित्र अंकित कराये थे। 'दास्ताने अमीर हमजा', 'तारीखे खानदानी तैमुरिया' और 'बादशाहनामा' के चित्रकारों की चित्रकारी देखकर मुगल चित्रकला के क्रमिक विकास की जानकारी की जा सकती है। अकबर ने चित्रकला की उन्नति तथा विकास के लिए अब्दुल समद की अध्यक्षता में एक विभाग की स्थापना की थी जिसने प्रशंसनीय कार्य किया।

(द) जहाँगीर—जहाँगीर को चित्रकला से विशेष अनुराग था। वह स्वयं कला का पारखी था। वह उच्चकोटि के चित्रों के लिये बहुत अधिक धन व्यय करने को तैयार रहता था। वह स्वयं उच्चकोटि का चित्रकार था। वह चित्र देखकर चित्रकारों के नाम बता दिया करता था। उसके दरबार में अनेक चित्रकार थे उसके दरबार में हिन्दू चित्रकारों में बिशनदास, मनोहर माधव, तुलसी और गोवर्धन आदि प्रसिद्ध थे। मुस्लिम चित्रकारों में आगा रजा, अब्दुल हसन, मुहम्मद नादिर, मुहम्मद मुराद तथा उस्ताद मंसूर आदि थे।

(य) शाहजहाँ—शाहजहाँ के समय चित्रकला की अवनति होने लगी थी। उसके दरबार में चित्रकारों की संख्या कम थी। उस समय में फकीर उल्ला, मीर हाशिम आदि दरबारी कलाकार थे। उसका पुत्र दारा शिकोह चित्रकला का प्रेमी था।

(र) औरंगजेब—उसने समस्त चित्रकारों को अपने दरबार से अलग कर दिया था। वह कट्टर सुन्नी मुसलमान था। उसने चित्रकला के कुछ उत्कृष्ट नमूनों का अन्त कर उसमें सफेदी भरवा दी थी।

परीक्षा में पूछे गये तथा अन्य बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1—दक्षिण भारत की सबसे प्राचीन भाषा का क्या नाम है ?

(क) कन्नड़ (ख) गुजराती
(ग) संस्कृत (घ) तमिल ।

उत्तर—(घ) तमिल ।

प्रश्न 2—आर्यभट्ट कौन था ? (1985)

(क) एक प्रसिद्ध कवि था (ख) एक कुशल शासक था
(ग) एक महान् वैज्ञानिक था (घ) एक संगीतज्ञ था ।

उत्तर—(ग) एक महान् वैज्ञानिक था ।

प्रश्न 3—कौन-सा कथन गांधार कला की विशेषता प्रकट करता है ? (1985)

(क) विषय वस्तु और शैली दोनों ही भारतीय हैं
(ख) विषय वस्तु भारतीय और शैली यूनानी है
(ग) विषय वस्तु यूनानी और शैली भारतीय है
(घ) विषय वस्तु और शैली दोनों ही यूनानी हैं ।

उत्तर—(ख) विषय वस्तु भारतीय और शैली यूनानी है ।

प्रश्न 4—जहाँगीर के शासनकाल में कौन-सी कला की अत्यधिक उन्नति हुई ? (1986)

(क) वास्तुकला (ख) मूर्तिकला
(ग) संगीतकला (घ) चित्रकला ।

उत्तर—(घ) चित्रकला ।

प्रश्न 5—रामायण के रचयिता कौन थे ? (1989, 90, 91)

(क) महर्षि वाल्मीकि (ख) वेदव्यास
(ग) तुलसीदास (घ) कालिदास ।

उत्तर—(क) महर्षि वाल्मीकि ।

प्रश्न 6—मथुरा कला की अधिकतर मूर्तियाँ बनाई गयी हैं— (1989)

(क) लाल बलुआ पत्थर से (ख) संगमरमर से
(ग) काला पत्थर से (घ) रेत से ।

उत्तर—(क) लाल बलुआ पत्थर से ।

प्रश्न 7—शंकराचार्य के सम्बन्ध में निम्नलिखित कथनों में से जो कथन सही हो उसे अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए— (1986)

(क) वे एक महान् सेनापति थे (ख) वे एक प्रसिद्ध गणितज्ञ थे
(ग) वे महान् दार्शनिक थे (घ) वे महान् भारत के रचयिता थे ।

उत्तर—(ग) वे महान् दार्शनिक थे ।

प्रश्न 8—कथा सरित्सागर के रचयिता थे— (1987)

(क) कल्हण (ख) जयदेव
(ग) सोमदेव (घ) प्रेमचन्द ।

उत्तर—(ग) सोमदेव ।

प्रश्न 9—अर्थशास्त्र ग्रन्थ का लेखक था— (1988)

(क) पाणिनि (ख) कौटिल्य
(ग) विशाखादत्त (घ) वाणभट्ट ।

उत्तर—(ख) कौटिल्य ।

प्रश्न 10—'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' के रचयिता कौन थे ? (1988)

(क) भवभूति (ख) कालिदास
(ग) विशाखादत्त (घ) बराह मिहिर ।

उत्तर—(ख) कालिदास ।

प्रश्न 11—'अमीर खुसरो' के सम्बन्ध में कौन-सा कथन सही है? (1988)

(क) वे कवि और संगीतज्ञ थे (ख) वे कुशल सेनापति थे
(ग) वे प्रतिभाशाली शासक थे (घ) वे इस्लाम धर्म के प्रचारक थे ।

उत्तर—(क) वे कवि और संगीतज्ञ थे ।

प्रश्न 12—'सतसई' की रचना की—

(क) बिहारी ने (ख) सेनापति ने
(ग) भूषण ने (घ) केशवदास ने ।

उत्तर—(क) बिहारी ने ।

प्रश्न 13—नागार्जुन एक विशिष्ट थे—

(क) चिकित्सक (ख) पशु चिकित्सक
(ग) वैज्ञानिक (घ) दार्शनिक ।

उत्तर—(क) चिकित्सक ।

प्रश्न 14—ब्रह्मस्फुट एक प्रामाणिक ग्रन्थ है—

(क) ज्योतिष का (ख) गणित का
(ग) विज्ञान का (घ) समाजशास्त्र का ।

उत्तर—(क) ज्योतिष का ।

□

10 | भारत में नवजागरण

अति लघुउत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—ब्रह्म समाज के संस्थापक कौन थे ? (1985, 86)

उत्तर—ब्रह्म समाज के संस्थापक राजा राममोहन राय थे।

प्रश्न 2—आर्य समाज के प्रमुख धार्मिक ग्रन्थ का नाम बताइए। (1985)

उत्तर—आर्य समाज के प्रमुख धार्मिक ग्रन्थ का नाम सत्यार्थप्रकाश है।

प्रश्न 3—स्वामी दयानन्द सरस्वती ने किस सम्प्रदाय की स्थापना की ?

उत्तर—स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की। इसमें सभी जातियों के व्यक्तियों के लिए दरवाजे खुले थे।

प्रश्न 4—रामकृष्ण मिशन के संस्थापक का नाम बताइए। (1985, 88)

उत्तर—स्वामी विवेकानन्द ने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की।

प्रश्न 5—स्वामी विवेकानन्द ने रामकृष्ण मिशन का मुख्यालय कहाँ स्थापित किया ?

उत्तर—स्वामी विवेकानन्द ने रामकृष्ण मिशन का मुख्यालय वेलूर मठ बनाया।

प्रश्न 6—सर सैयद अहमद खाँ ने किस शिक्षा केन्द्र की स्थापना की ? (1990)

उत्तर—सर सैयद अहमद खाँ ने मोहम्मडन ऐंग्लो ओरियन्टल कालेज की स्थापना की, जो आज अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के नाम से जाना जाता है।

प्रश्न 7—थियोसोफिकल सोसायटी का मुख्य कार्यालय भारत में कहाँ खोला गया ?

उत्तर—थियोसोफिकल सोसायटी का मुख्य कार्यालय आड्यार (मद्रास के निकट) खोला गया।

परीक्षा में पूछे गये तथा अन्य अति लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 8—मैक्समूलर कौन था ? (1987)

उत्तर—मैक्समूलर जर्मन देश का एक विद्वान था जिसे भारतीय संस्कृति में अपार आस्था थी।

प्रश्न 9—भारतीय नव जागरण के अग्रदूतों (समाज सुधारकों) के नाम बताइए।

उत्तर—भारतीय नव जागरण के दो अग्रदूतों के नाम—
1. राजा राममोहन राय, 2. दयानन्द सरस्वती।

प्रश्न 10—'आनन्द मठ' ग्रन्थ के रचनाकार का नाम लिखिए।

उत्तर—'आनन्द मठ' ग्रन्थ के रचनाकार बंकिम चन्द्र चटर्जी हैं।

प्रश्न 11—'वन्दे मातरम्' राष्ट्रीय गान की रचना किसने की?

उत्तर—'वन्दे मातरम्' राष्ट्रीय गान की रचना बंकिमचन्द्र चटर्जी ने की थी।

प्रश्न 12—आर्य समाज की स्थापना कहाँ और कब हुई?

उत्तर—आर्य समाज की स्थापना बम्बई में 10 अप्रैल, सन् 1875 ई० में हुई।

प्रश्न 13—ब्रह्म समाज की स्थापना कहाँ और कब हुई?

उत्तर—ब्रह्म समाज की स्थापना कलकत्ता में 20 अगस्त, सन् 1828 ई० में हुई।

प्रश्न 14—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने भारत के नव जागरण में किस प्रकार योगदान किया?

उत्तर—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने भारत के नव जागरण में अपनी रचनाओं के माध्यम से योगदान किया।

लघुउत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—प्रशासनिक एकीकरण से आप क्या समझते हैं?

उत्तर—सम्पूर्ण देश को एकता के सूत्र में बाँधने के लिए प्रशासनिक शक्तियों का एकाकीकरण किया जाता है तो उसे प्रशासनिक एकीकरण कहा जाता है तथा जब शक्तियों का बँटवारा होता है तो उसे हम प्रशासनिक विकेन्द्रीकरण कहते हैं। ब्रिटिश शासनकाल में अंग्रेजों ने भारत में प्रशासन एकीकरण की स्थापना की थी। इसके अन्तर्गत सम्पूर्ण देश में एक समान शासन प्रणाली तथा न्याय व्यवस्था को स्थापित किया था। भारत में नव जागरण के फलस्वरूप सामाजिक तथा धार्मिक सुधार आन्दोलन का एकीकरण हुआ। इसी कारण से भारतवासियों में अपने महान् राष्ट्र के प्रति एकता की भावना विकसित हुई।

प्रश्न 2—ब्रह्म समाज ने किन सामाजिक कुरीतियों का अन्त किया? (1985)

उत्तर—ब्रह्म समाज ने सती-प्रथा का घोर विरोध किया। उसने विधवा विवाह के औचित्य को उचित बताया। उसने बाल-विवाह के विरुद्ध आवाज उठायी। ब्रह्मसमाज ने अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार को बल दिया, जिसके द्वारा छुआछूत, कर्म-काण्डों, अन्ध विश्वासों जैसी सामाजिक बुराइयों का अन्त किया।

प्रश्न 3—आर्य समाज की स्थापना का लक्ष्य क्या था?

उत्तर—स्वामी दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना की। आर्य समाज की स्थापना का लक्ष्य भारतीय संस्कृति और संस्कृति का पुनरुत्थान था। आर्य समाज ने शिक्षा का प्रचार किया।

प्रश्न 4—राष्ट्रीय भावना के विकास में आर्य समाज का क्या योगदान है ?

उत्तर—आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती थे। उन्होंने देश में अनेकों महत्वपूर्ण कार्य किये। आर्य समाज ने जातीय भेद-भाव को दूर करके सभी वर्गों की समानता को महत्व प्रदान किया तथा शिक्षा के क्षेत्र में अनेकों शिक्षा संस्थाओं की स्थापना की। आर्य समाज ने भारतीयों में राष्ट्रीयता की भावना का संचार किया तथा उनमें जागृति उत्पन्न की।

प्रश्न 5—श्रीमती एनी बेसेंट कौन थी ? वह किस संस्था की अध्यक्ष बनीं ? (1987)

उत्तर—श्रीमती एनी बेसेंट एक अँग्रेज महिला थीं। वे थियोसोफिकल सोसायटी की अध्यक्ष बनीं।

प्रश्न 6—थियोसोफिकल सोसाइटी की स्थापना किन उद्देश्यों को लेकर की गई थी ?

उत्तर—थियोसोफिकल सोसायटी के कुछ उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

(1) समस्त मानव मात्र का धर्म, वेदान्त तथा ज्ञान का अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित करना इस सोसाइटी का मुख्य उद्देश्य है।

(2) उन प्राकृतिक नियमों की खोज करना जो कि रहस्यमय हैं।

प्रत्येक धर्म का अनुयायी इस सोसाइटी का, सदस्य बन सकता है। इसमें जाति-पाँति के आधार पर किसी प्रकार का भेद-भाव नहीं किया गया है। इसमें मातृ-भाव उत्पन्न करने पर बल दिया गया है।

प्रश्न 7—सर सैय्यद अहमद खाँ ने मुसलमानों में व्याप्त किन कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया ? (1988)

उत्तर—सर सैय्यद अहमद खाँ एक मुस्लिम समाज सुधारक थे। उनके समय में मुसलमानों में पर्दा प्रथा, बहु-विवाह प्रथा तथा बाल-विवाह प्रथा प्रचलित थी। सर सैय्यद अहमद खाँ ने इन कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया। उन्होंने मुसलिम समाज में प्रचलित रूढ़ियों और धार्मिक अन्ध-विश्वासों का खुलकर विरोध किया और उन्हें दूर करने का भरसक प्रयास किया।

प्रश्न 8—लार्ड मैकाले भारत में किस प्रकार की शिक्षा का समर्थक था ?

उत्तर—लार्ड मैकाले भारत में अँग्रेजी शिक्षा का समर्थक था। उसे भारतीय शिक्षा का पथ प्रदर्शक कहा जाता है। परन्तु उसने देशी भाषाओं के विकास में भी अपना योगदान दिया।

प्रश्न 9—मैक्समूलर ने भारतीय संस्कृति के उत्थान में क्या योगदान दिया ?

उत्तर—मैक्समूलर एक प्रसिद्ध जर्मन भाषा शास्त्री था। वह संस्कृति भाषा का महान् विद्वान था। आपने संस्कृत ग्रन्थों का अनुवाद किया तथा सेक्रेड बुक्स ऑफ दी ईस्ट' अथवा पूर्व के प्रसिद्ध धार्मिक ग्रन्थ का सम्पादन किया। आपने भारतीय दर्शन पर भी अनेकों महत्वपूर्ण पुस्तकें लिखीं। आपने उच्च कोटि की टीकायें भी लिखीं। आपने योरोप में भी संस्कृत भाषा के अध्ययन हेतु विशेष कार्य किये। इस प्रकार आपने भारतीय संस्कृति के उत्थान के लिए सराहनीय कार्य किये।

परीक्षा में पूछे गये तथा अन्य लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 10—ब्रह्म समाज ने भारतीय समाज की कुरीतियों को किस प्रकार दूर करने का प्रयास किया ?

उत्तर—भारतीय समाज और धर्म में फैली हुई बुराइयों और कुरीतियों को दूर करने के उद्देश्य से राजा राममोहन राय ने ब्रह्म समाज की स्थापना की। ब्रह्म समाज का मुख्य उद्देश्य धार्मिक और सामाजिक सुधारों द्वारा भारतीय समाज का आधुनिकीकरण करना था। इसलिए ब्रह्म समाज ने समाज में प्रचलित सती-प्रथा, बाल-विवाह, बहुविवाह, जाति-प्रथा, पर्दा-प्रथा, बाल-हत्या छुआछूत आदि सामाजिक बुराइयों और कुरीतियों के विरुद्ध जनता में प्रचार किया और सरकार से इन बुराइयों तथा कुरीतियों के विरुद्ध कानून बनाने की पेशकश की। ब्रह्म समाज ने समाज में स्त्रियों के समान अधिकारों का समर्थन किया जिसके लिए उन्होंने स्त्री-शिक्षा और विधवा-विवाह आदि के लिए जोरदार क़दम उठाये। इस प्रकार ब्रह्म समाज ने भारतीय समाज की कुरीतियों को दूर करने के अथक् प्रयास किये।

प्रश्न 11—भारत में धर्म सुधार और समाज सुधार के क्षेत्र में आर्य समाज के योगदान को स्पष्ट कीजिए। (1986)

उत्तर—आर्य समाज द्वारा धर्म-सुधार—आर्य समाज ने हिन्दू धर्म में फैली हुई बुराइयों को दूर करने के लिए महत्वपूर्ण कार्य किये। सर्वप्रथम आर्य समाज ने हिन्दुओं में उनके धर्म ग्रन्थ वेद के प्रति आस्था पैदा करने का प्रयास किया। हिन्दू धर्म में प्रचलित मूर्ति पूजा, कर्मकाण्ड, बलिप्रथा आदि को वेद के विरुद्ध प्रमाणित किया और सरल वैदिक धर्म को ही हिन्दुओं का असली धर्म बताया। उन्होंने हिन्दू धर्म और संस्कृति की श्रेष्ठता को सबके सम्मुख रखा तथा हिंन्दू धर्म को शक्तिशाली बनाने के लिए आन्दोलन का सहारा लिया। छूआ-छूत को वेद के विरुद्ध बतलाकर अनेक लोगों को हिन्दू धर्म में वापिस लिया और धर्म के प्रति उनकी आस्था को मजबूत किया। इस प्रकार आर्य समाज ने धर्म सुधार के क्षेत्र में महान योगदान किया।

आर्य समाज द्वारा समाज सुधार—आर्य समाज ने समाज में व्याप्त बुराइयों और कुरीतियों को दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। जातीय भेदभाव को समाप्त करने के लिए जाति भेद निवारक संघ की स्थापना की। शुद्धि-आन्दोलन के द्वारा सभी धर्म के लोगों के लिए हिन्दू धर्म के द्वार खोल दिये। वेश्यावृत्ति को दूर करने के लिए, कानून बनाने के लिए प्रस्ताव 1श किये। बहु-विवाह, बाल-विवाह, सती प्रथा, पर्दा-प्रथा आदि के विरोध में जनमत तैयार करने के प्रयास किये। मँहगे और जटिल संस्कारों के स्थान पर सर्व सुलभ और सरल संस्कार विधि की रचना की। इस प्रकार आर्य समाज ने समाज सुधार के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किये।

प्रश्न 12—आर्य समाज के प्रवर्तक कौन थे ? आर्य समाज के कोई पाँच सिद्धान्त बताइए।

उत्तर—स्वामी दयानन्द सरस्वती आर्य समाज के प्रवर्तक थे। आपने 10 अप्रैल, 1887 ई० को इस संस्था की बम्बई नगर में स्थापना की थी। वह हिन्दू समाज में फैली हुई कुरीतियों को समूल नष्ट करना चाहते थे। वह एक ईश्वर के

उपासक थे तथा मूर्तिपूजा के विरोधी थे। आर्य समाज के प्रमुख पाँच सिद्धान्त इस प्रकार थे—

(1) सब सत्य विद्या है और जो पदार्थ विद्या से जानें उन सभी का आदि-मूल परमेश्वर है।

(2) ईश्वर सर्वशक्तिमान, दयालु तथा न्यायकारी है, उसी की उपासना करने योग्य है।

(3) वेद सभी सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वेद का पठन-पाठन और सुनना सुनाना सभी का परम धर्म है।

(4) सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने हेतु सर्वथा उद्यत रहना चाहिए।

(5) सभी काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य का विचार करके करने चाहिए।

प्रश्न 13—रामकृष्ण मिशन के संस्थापक कौन थे ? मिशन का मुख्य उद्देश्य क्या है ? (1984)

उत्तर—रामकृष्ण मिशन के संस्थापक स्वामी विवेकानन्द थे। उनके गुरु रामकृष्ण परमहंस थे। उनके नाम पर ही उन्होंने मिशन की स्थापना की। मिशन का मुख्य उद्देश्य मानवता की सेवा करना है।

प्रश्न 14—रामकृष्ण मिशन द्वारा समाज सुधार व धर्म के क्षेत्र में की गयी सेवाओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—**रामकृष्ण द्वारा समाज सुधार**—स्वामी विवेकानन्दजी ने रामकृष्णमिशन की स्थापना करके अनेक सामाजिक बुराइयों को दूर करने का भरसक प्रयास किया। उन्होंने जाति-व्यवस्था का घोर विरोध किया तथा छुआछूत को समाज का कलंक बताकर उसे दूर करने पर जोर दिया। उन्होंने मिशन की ओर से विधवा-आश्रम, अनाथ-आश्रम, अस्पताल आदि खोले। मिशन ने अनेक शिक्षा संस्थाओं की भी स्थापना की। इस प्रकार मिशन द्वारा समाज सेवा सम्बन्धी अनेक कार्य किये गये।

रामकृष्ण मिशन द्वारा धर्म के क्षेत्र में की गयी सेवाएँ—रामकृष्ण मिशन का मुख्य उद्देश्य मानवता की सेवा करना है। स्वामीजी मानव की सेवा को सबसे बड़ी पूजा मानते थे। स्वामीजी के अनुसार जो व्यक्ति असहायों और दरिद्रों की सेवा करता है, वह महात्मा है। इस प्रकार मानव सेवा ही ईश्वर प्राप्ति का साधन है। अतः मानव सेवा सर्वोपरि धर्म है। इस प्रकार हिन्दू धर्म के शाश्वत सन्देश को विश्व में फैलाने का सफल प्रयास किया।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—भारत में नवजागरण से आप क्या समझते हैं ? इसके कारणों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—**भारत में नवजागरण**—भारतीय पुनर्जागरण से भारतीय समाज का कोई भी क्षेत्र अछूता न रहा। भारतीय लोगों के प्रत्येक क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन आया। इसके परिणामस्वरूप भारतीय समाज में नवीन चेतना, स्फूर्ति और शक्ति का संचार हुआ। नवजागरण के फलस्वरूप भारत का कायाकल्प हो गया। इससे पहले

भारत में 1000 वर्ष में जो सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन हुए थे उससे कहीं अधिक परिवर्तन नवजागरण के कारण घटित हुए। इसके परिणामस्वरूप मध्यकालीन भारत आधुनिकीकरण युग की ओर द्रुतगति से अग्रसर होने लगा। नवजागरण का सबसे अधिक प्रभाव भारतीय धर्मों पर पड़ा। भारत की अधिकांश कुरीतियाँ भारतीय लोगों के अन्धविश्वासों के कारण विद्यमान थीं। इसी कारण सुधारकों ने धर्म को अपना कार्यक्षेत्र बनाया। इसी के फलस्वरूप हिन्दू धर्म में महान् क्रान्तिकारी परिवर्तन आये जो अत्यन्त सुखद थे। भारतीय नवजागरण के मुख्य कारण निम्नलिखित हैं—

(1) अँग्रेजी शिक्षा का प्रसार द्रुतगति से हुआ।

(2) सामाजिक सुधारकों ने अनेक सामाजिक कुरीतियाँ दूर करने का प्रयास किया।

(3) साधारण जनता को धर्म में अनास्था उत्पन्न हो गयी थी।

(4) ईसाई पादरी अपना धर्म फैलाने का प्रयास कर रहे थे।

(5) राजनैतिक दासता से सामाजिक विघटन की स्थिति उत्पन्न हो गयी थी।

(6) विदेशी शासन भारतीयों का खुलकर शोषण कर रहा था।

प्रश्न 2—भारत की सामाजिक तथा आर्थिक व्यवस्था पर ब्रिटिश शासन का क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर—भारत की सामाजिक तथा आर्थिक व्यवस्था पर ब्रिटिश शासन का प्रभाव—भारत में ब्रिटिश शासन के फलस्वरूप सामाजिक तथा आर्थिक व्यवस्था में परिवर्तन आया। भारतीयों की सामाजिक दशा में सुधार आया। मुसलिम काल में भारत में अनेक कुरीतियों ने घर कर लिया था। भारतवासी अन्धविश्वासों में जकड़े हुए थे। वे पुरानी रीति-रिवाजों में विश्वास करते थे। जिस समय भारत में अँग्रेजों का शासन आरम्भ हुआ, उस समय भारतीय समाज की दशा अत्यन्त शोचनीय थी। भारतीय समाज में अनेक कुरीतियाँ विद्यमान थीं। उस समय सती-प्रथा, बाल-विवाह, शिशु-हत्या तथा अस्पृश्यता अपनी चरम सीमा पर थी। धीरे-धीरे भारतीयों के दृष्टिकोण में एक महान परिवर्तन आया। भारतीयों ने अनेक कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया। भारतीयों ने प्राचीन संस्कृति का अध्ययन आरम्भ किया। यह इस समय की सबसे अनुपम देन है।

अँग्रेजों के आगमन के पश्चात् यातायात के साधनों में सुधार हुआ। यातायात के साधनों में सुधार होने से मनुष्य सामान और संदेश, सबको लाने ले जाने में बहुत आसानी हो गयी। इससे मनुष्यों की कुछ सीमा तक निर्धनता दूर हुई। कृषि में भी कुछ सुधार हुआ। यह स्वाभाविक था कि अधिक उत्पादन करने के लिए कृषि के तरीकों में परिवर्तन हो। किसान पहले की अपेक्षा अधिक मात्रा में खाद का प्रयोग करने लगे। अब खेती पर अधिक बोझ बढ़ गया।

परन्तु ब्रिटिश सरकार की आर्थिक नीति का भारत पर बहुत महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। इसके कारण भारत की परम्परागत सामाजिक तथा आर्थिक व्यवस्था नष्ट हो गयी। समाज में अनेक नवीन वर्गों का उदय हुआ। जिन प्रदेशों में स्थायी बन्दोबस्त लागू किया गया, वहाँ धनी जमींदार का वर्ग बन गया। ये जमींदार भूमि को अपनी सम्पत्ति समझते थे। वे स्वयं खेती नहीं करते थे। किसान केवल काश्तकार थे। उन्हें कोई अधिकार न था। जमींदार जब चाहें तो उनको बेदखल कर

सकते थे। जिन क्षेत्रों में रैयतवाड़ी पद्धति लागू की गयी थी, किसान भूमि का स्वामी हो गया था। परन्तु उसका जीवन सुखी न था। किसान ऋण के बोझ से दबा रहता था। वह साहूकार से कर्जा लिया करता था।

ब्रिटिश सरकार ने भारतीयों की सामाजिक दशा सुधारने के लिए सती-प्रथा समाप्त करने के लिए कानून बनाया। शिक्षा का भी पुनर्गठन किया गया। प्रेस पर अनेक प्रतिबन्ध लगाये गये।

ब्रिटिश शिक्षा प्राप्त करके समाज में एक नया वर्ग बन गया। ग्रामों में कुछ व्यक्ति नये साहूकार बन गये।

एक नया महत्वपूर्ण वर्ग बुद्धि-जीवी व्यवसायियों का था। इसमें सरकारी कर्मचारी, वकील, डॉक्टर, अध्यापक, पत्रकार और शिल्पी सम्मिलित थे। बीसवीं शताब्दी में उद्योगों में काम करने वाले मजदूरों का वर्ग भी समाज में महत्वपूर्ण वर्ग बन गया।

ब्रिटिश शासन का भारतीय समाज पर व्यापक प्रभाव पड़ा। भारत की जनता ने अपने समाज की बुराइयों को दूर करने के लिए सुधार आन्दोलन प्रारम्भ किये। इससे भारत में आधुनिकीकरण की आधारशिला रखी गयी। 19वीं शताब्दी में समाज की बुराइयों को दूर करने के लिए सुधार आन्दोलन प्रारम्भ हुए। इन आन्दोलनों ने राष्ट्रीयता के विकास का मार्ग प्रशस्त किया।

प्रश्न 3—19वीं शताब्दी के धर्म और समाज सुधार आन्दोलनों के नाम तथा उनकी उपलब्धियों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

उत्तर—19वीं शताब्दी के प्रमुख धर्म और समाज सुधार आन्दोलन निम्न-लिखित थे—

(1) ब्रह्म समाज,
(2) आर्य समाज,
(3) रामकृष्ण मिशन,
(4) थियोसोफिकल सोसायटी,
(5) अलीगढ़ आन्दोलन तथा
(6) अहमदिया आन्दोलन।

(1) ब्रह्म समाज—ब्रह्म समाज ने धार्मिक क्षेत्र में ही नहीं वरन् सामाजिक क्षेत्र में अनेक सुधार किये। इसने बाल-विवाह तथा सती-प्रथा का विरोध किया। इसी समाज के प्रयासों से सती प्रथा समाप्त हो गयी। इसी समाज के प्रयास के कारण विधवा विवाह को प्रोत्साहन मिला। इस समाज ने भी शिक्षा के लिए प्रशंस-नीय कार्य किये। इस समाज ने जाति प्रथा का विरोध किया तथा धर्म के दरवाजे सभी व्यक्तियों के लिए खोले रखे। इस प्रकार हजारों व्यक्ति ईसाई बनने से रुक गये।

(2) आर्य समाज—आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द थे। उन्होंने हिन्दुओं की सभायें कीं और उनको उपदेश दिये। दयानन्द जी ने भिन्न-भिन्न स्थानों पर आर्य समाजों की स्थापना की। उन्होंने अनेक डी० ए० वी० कालेजों की भी स्थापना की और शिक्षा के प्रसार में प्रशंसनीय कार्य किया। दयानन्द ने स्त्री शिक्षा पर भी विशेष बल दिया और स्त्रियों की शिक्षा के लिए कन्या-विद्यालयों की स्थापना

की। उन्होंने वैदिक धर्म का प्रचार किया और अनेक सामाजिक कुरीतियों का अन्त किया। उनका सबसे महत्वपूर्ण ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश 1879 ई० में प्रकाशित हुआ।

(3) **रामकृष्ण मिशन**—स्वामी विवेकानन्द जी रामकृष्ण परमहंस के प्रिय शिष्य थे। विवेकानन्द जी ने अपने गुरु का सन्देश विदेशों में भी पहुँचाया। आप अमरीका गये और वहाँ उन्होंने रामकृष्ण मिशन की अनेक शाखायें स्थापित कीं। स्वामीजी की हिन्दू-धर्म में अत्यधिक आस्था थी। उन्होंने वेदों के अध्ययन पर बल दिया। उन्होंने सब धर्मों का आदर किया। उन्हें वे सभी बातें जो अच्छी और सच्ची होती थीं, प्रिय थीं। वह मानव मात्र की सेवा को सबसे बड़ी पूजा मानते थे। विवेकानन्दजी के विचार में जो व्यक्ति असहाय लोगों की सेवा करता है, वह महात्मा है। स्वामीजी ने विधवा आश्रम, अनाथालय, अस्पताल आदि भी खोले। इस प्रकार उन्होंने सेवा कार्य संगठित रूप से किया। विवेकानन्द जी ने जाति-व्यवस्था का घोर विरोध किया। उन्होंने छूआछूत की अत्यन्त कटु आलोचना की।

रामकृष्ण मिशन ने अनेक शिक्षा संस्थाओं की स्थापना की है। इस मिशन द्वारा समाज सेवा सम्बन्धी कार्य सबसे अधिक किये गये हैं। रामकृष्ण मिशन के स्थापित अस्पताल पूरे भारत में देखे जा सकते हैं।

(4) **थियोसोफिकल सोसायटी**—(श्रीमती) ऐनी बेसेंट के नेतृत्व में थियोसोफिकल सोसायटी की अत्यधिक उन्नति हुई। उनको अपने जीवन के आरम्भ काल में ही ईसाई धर्म से घृणा हो गयी थी। 1863 ई० में भारत आने पर उन्होंने हिन्दू धर्म अपना लिया वे इस सोसाइटी की सदस्य बन गयीं। उन्होंने हिन्दू संस्कृति को पाश्चात्य संस्कृति की अपेक्षा महान् बतलाया। उन्होंने मूर्ति-पूजा को उचित समर्थन प्रदान किया। उन्होंने जाति-प्रथा के मौलिक रूप का भी समर्थन किया।

एनीबेसेंट ने सामाजिक क्षेत्र में अनेक सुधार किये। उन्होंने बाल-विवाह का कड़ा विरोध किया। राजनीतिक क्षेत्र में भी श्रीमती एनीबेसेंट का महत्त्वपूर्ण योगदान है। थियोसोफिकल सोसाइटी ने अनेक हिन्दू-शास्त्रों का अनुवाद करवाके प्रकाशन करवाया। इस कार्य से शिक्षित हिन्दू अधिक लाभान्वित हुए। इस प्रकार उनको अपने धर्म की वास्तविकता का ज्ञान हुआ। इस सोसाइटी द्वारा देश के विभिन्न भागों में पुस्तकालय स्थापित किये गये हैं।

(5) **अलीगढ़ आन्दोलन**—19वीं शताब्दी में मुसलिम समाज में अनेक कुरीतियाँ प्रचलित थीं। सर सय्यद अहमद खाँ ने अलीगढ़ आन्दोलन द्वारा मुसलमानों में जाग्रति फैलाने का प्रयास किया। वह पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति के भक्त थे। उन्होंने मुसलमानों का ध्यान इस ओर आकर्षित करते हुए कहा कि अंग्रेजी शिक्षा के द्वारा ही मुसलमान प्रगति कर सकते हैं। परन्तु मुल्ला, मौलवियों ने इनके इस कथन का विरोध किया। सर सय्यद अहमद खाँ ने उन्हें यह विश्वास दिलाया कि पाश्चात्य शिक्षा से मुसलमानों को किसी प्रकार की हानि नहीं होगी। उन्होंने अपने रहन-सहन में पाश्चात्य सभ्यता का अनुकरण किया। मुसलमानों ने इसका विरोध किया। परन्तु अन्त में उन्होंने अपने विचारों से मुसलमानों को प्रभावित कर ही लिया। उन्होंने स्त्री शिक्षा को आवश्यक बतलाया और पर्दा-प्रथा का घोर विरोध किया। 1875 ई० में अलीगढ़ के मोहम्मडन एँग्लो ओरियन्टल कॉलेज (Mohammaden Anglo Oriental College) की स्थापना की गयी। यही कॉलेज बाद में मुसलिम विश्वविद्यालय में परिणित हो गया। उन्होंने मुसलिम शिक्षा सम्मेलन का

आयोजन किया। वह हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच एकता बनाये रखना चाहते थे।

(6) **अहमदियां आन्दोलन**—मिर्जा गुलाम अहमद ने यह आन्दोलन चलाया था। अतः यह अहमदिया आन्दोलन के नाम से जाना गया। मिर्जा गुलाम एक महान पुरुष थे। उनका विचार था कि उनका जन्म केवल मुसलमानी धर्म में ही सुधार के लिए नहीं हुआ है। यही कारण था कि उन्होंने हिन्दू तथा ईसाई धर्मों को भी पुनर्जीवित करने का प्रयास किया। उनके विचार में सभी धर्म मनुष्य को सच्चाई की ओर ले जाते हैं। उन्होंने इस्लाम धर्म को सब धर्मों में श्रेष्ठ बतलाया। उन्होंने बहु-विवाह तथा सती प्रथा का समर्थन किया।

प्रश्न 4—राजा राममोहन राय भारत में नवजागरण के अग्रदूत थे, विवेचना कीजिए। (1990)

उत्तर—राजा राममोहन राय का जन्म 1774 ई० में बंगाल के एक कट्टर ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनकी शिक्षा पटना में हुई थी। पटना उस समय मुसलिम शिक्षा संस्कृति का केन्द्र था। राजा राममोहन राय ने संस्कृति, अँग्रेजी, अरबी, फारसी के अध्ययन के साथ ही बौद्ध, हिन्दू, इस्लाम तथा ईसाई धर्मों का भी अध्ययन किया। उन्होंने हिन्दू धर्म में प्रचलित अनेक बुराइयों का अध्ययन किया। उन्होंने इन बुराइयों को दूर करने का दृढ़ संकल्प किया। जब उनकी आयु 15 वर्ष की थी, उसी समय उन्होंने मूर्ति-पूजा का विरोध किया और इस विषय पर उन्होंने एक पुस्तक भी लिखी। उनके इस कार्य का घोर विरोध किया गया। राजा राममोहन राय ने वैदिक हिन्दू धर्म का समर्थन किया। वे धर्म की सरलता तथा सम्पूर्णता से विशेष प्रभावित थे। राममोहन राय पर ईसाई धर्म का भी प्रभाव पड़ा। उन्होंने ईसाइ धर्म की अनेक अच्छी बातों को स्वीकार किया। वे अंग्रेजी शिक्षा के समर्थक थे। राजा राम मोहन राय ने विधवा विवाह का प्रचार किया। उन्होंने भ्रूण हत्या, बलि-प्रथा तथा सती-प्रथा जैसे कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया। उन्होंने समाज सुधार के दृष्टिकोण से 1828 ई० में ब्रह्म समाज की स्थापना की।

उपर्युक्त कारणों से राजा राममोहन राय को भारत में नवजागरण का अग्रदूत कहा जाता है।

प्रश्न 5—आर्य समाज के प्रमुख सिद्धान्तों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—आर्य समाज के नियम—

(1) सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।

(2) ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।

(3) वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

(4) सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

(5) सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।

(6) संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है। अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

(7) सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्त्ताव करना चाहिए।

(8) अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

(9) प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट रहना चाहिए। किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

(10) सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालन से परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम पालन में स्वतन्त्र रहें।

प्रश्न 6—भारत में आधुनिक शिक्षा के क्रमिक विकास का वर्णन कीजिए।

उत्तर—भारत में आधुनिक शिक्षा का विकास—नव जागरण काल में शिक्षा का पूर्ण विकास हुआ। इस काल में शिक्षा के विकास हेतु बहुत महत्त्वपूर्ण कार्य किये गये। राजा राममोहन राय ने इस क्षेत्र में बहुत ही सराहनीय कार्य किये। उनके प्रयासों से अनेकों शिक्षण संस्थाएँ शिक्षा प्रदान करने हेतु खोली गयीं। 1857 ई० में आधुनिक शिक्षा प्रदान करने की दृष्टि से कलकत्ता, मद्रास तथा बम्बई विश्वविद्यालयों की स्थापना की गयी। इसके उपरान्त 1875 ई० में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय की स्थापना सरसय्यद अहमदखाँ ने की तथा 1887 ई० में इलाहाबाद विश्वविद्यालय की स्थापना की गयी। 1904 ई० में लार्डकर्जन ने विश्वविद्यालय अधिनियम पारित करवाया। इस अधिनियम के अनुसार उच्चस्तरीय शिक्षा में सुधार किया गया तथा इस कमीशन की रिपोर्ट के आधार पर शिक्षा में बहुत महत्त्वपूर्ण सुधार हुए।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् शिक्षा के क्षेत्र में विकास—स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरान्त शिक्षा के हर क्षेत्र में विकास हुआ है। भारत में प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च शिक्षा, स्त्री शिक्षा, तकनीकी शिक्षा, व्यवसायिक शिक्षा, इन्जीनियरिंग शिक्षा आदि सभी क्षेत्रों में बहुत ही सराहनीय कार्य किया जा रहा है।

प्रश्न 7—नव जागरण का भारतीय समाज पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर—नव जागरण का भारतीय समाज पर प्रभाव—भारत में धार्मिक तथा सामाजिक सुधार आन्दोलनों (नव जागरण) का इस प्रकार प्रभाव पड़ा—

(1) भारत में स्त्री शिक्षा की प्रगति हुई।

(2) नगरों में अनेक कन्या विद्यालय तथा कॉलेज खोले गये।

(3) इन आन्दोलनों के फलस्वरूप अनेक शिक्षा संस्थाओं की स्थापना हुई।

(4) सुधार आन्दोलनों से स्त्रियों की दशा में सुधार हुआ।

(5) समाज में असहाय व्यक्तियों के लिए अनाथालय तथा अस्पताल खोले गये।

(6) निर्धन व्यक्तियों के लिए सहायता कार्य आरम्भ किया गया।

(7) समाज से अनेक कुरीतियों, जैसे—बाल-विवाह, पर्दा-प्रथा, जाति-प्रथा का अन्त करने का प्रयास किया गया। विधवा-विवाह पर लगे प्रतिबन्ध समाप्त हो गये।

(8) भारत में पाश्चात्य शिक्षा का प्रसार हुआ।
(9) इससे जाति-पाँति की कठोरता में शिथिलता आयी।
(10) स्त्रियों को पुरुष के समान अधिकार मिल गये।
(11) सुधार आन्दोलनों से राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ।

बहु-विकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1—ब्रह्म समाज की स्थापना की—

(क) राजा राममोहन राय ने, (ख) देवेन्द्रनाथ ने,
(ग) केशव चन्द्र ने, (घ) दयानन्द सरस्वती ने।

उत्तर—(क) राजा राममोहन राय।

प्रश्न 2—गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना की गई—

(क) स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा, (ख) स्वामी दयानन्द द्वारा,
(ग) स्वामी विवेकानन्द द्वारा, (घ) रामकृष्ण द्वारा।

उत्तर—(क) स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा।

प्रश्न 3—रामकृष्ण मिशन की स्थापना की गयी—

(क) 1857 ई० में, (ख) 1942 ई० में,
(ग) 1897 ई० में, (घ) 1905 ई० में।

उत्तर—(ग) 1897 ई०।

प्रश्न 4—थियोसोफिकल सोसाइटी का मुख्यालय कहाँ है?

(क) कलकत्ता में, (ख) अड्यार में,
(ग) बम्बई में, (घ) दिल्ली में।

उत्तर—(ख) अड्यार में।

प्रश्न 5—भारत में अंग्रेजी शिक्षा की नींव डाली थी—

(क) लार्ड विलियम बैंटिक ने, (ख) लार्ड इरविन ने,
(ग) लार्ड वारेन हेस्टिंग्ज ने, (घ) लार्ड मैकाले ने।

उत्तर—(घ) लार्ड मैकाले ने।

11 स्वतन्त्रता के लिए भारत का संघर्ष

अति लघुउत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—भारत का प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम कब लड़ा गया ? (1988)

उत्तर—भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम 1857 ई० में लड़ा गया।

प्रश्न 2—कांग्रेस की स्थापना किसने की ? (1985, 87)

उत्तर—कांग्रेस की स्थापना सर ए० ओ० ह्यूम ने की।

प्रश्न 3—उग्रवादी दल के प्रतिष्ठाता कौन थे ?

उत्तर—उग्रवादी दल के प्रतिष्ठाता बाल गंगाधर तिलक थे।

प्रश्न 4—गाँधीजी ने उग्र आन्दोलन स्थगित करने का निश्चय क्यों किया ?

उत्तर—गाँधीजी अहिंसा के पुजारी थे। अतः उन्होंने उग्र आन्दोलन स्थगित करने का निश्चय किया।

प्रश्न 5—आजाद हिन्द फौज की स्थापना किसने की ? (1985, 90)

उत्तर—आजाद हिन्द फौज की स्थापना-सुभाषचन्द्र बोस ने की।

प्रश्न 6—1947 ई० क्यों प्रसिद्ध है ? (1989)

उत्तर—1947 ई० में भारत को स्वतन्त्रता मिली थी। इसी कारण यह प्रसिद्ध है।

प्रश्न 7—सर्वोदय आन्दोलन का प्रारम्भ किसने किया ? (1985)

उत्तर—सर्वोदय आन्दोलन का प्रारम्भ आचार्य विनोबा भावे ने किया।

प्रश्न 8—उदारवादी नेताओं के नाम बताइए।

उत्तर—गोपालकृष्ण गोखले, फीरोजशाह मेहता तथा डा० रानाडे प्रमुख उदारवादी नेता थे।

प्रश्न 9—प्रमुख आतंकवादियों के नामों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—खुदीराम बोस, प्रफुल्लचन्द्र चाकी, मदनलाल ढींगरा, सुशील सेन, अरविन्द घोष, विनायक दामोदर सावरकर आदि प्रमुख आतंकवादी नेता थे।

परीक्षा में पूछे गये तथा अन्य अति लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 10—भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना कब हुई ? (1984)

उत्तर—भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना 1885 में हुई।

प्रश्न 11—कांग्रेस के दो उदारवादी (नरम दली) नेताओं के नाम लिखिए। (1984)

उत्तर—कांग्रेस के दो उदारवादी नेताओं के नाम—1. दादाभाई नौरोजी, 2. गोपालकृष्ण गोखले।

प्रश्न 12—मुस्लिम लीग की स्थापना कब और किसके नेतृत्व में हुई? (1987)

उत्तर—मुस्लिम लीग की स्थापना सन् 1906 ई० में आगा खाँ के नेतृत्व में हुई।

प्रश्न 13—राष्ट्रीय गान के रचयिता कौन थे? (1990)

उत्तर—राष्ट्रीय गान के रचयिता बंकिम चन्द्र चटर्जी थे।

प्रश्न 14—1857 ई० की क्रान्ति का प्रारम्भ कहाँ से और कब हुआ?

उत्तर—1857 ई० की क्रान्ति का प्रारम्भ मेरठ नगर से 10 मई को हुआ।

प्रश्न 15—1857 ई० के विद्रोह के दो महान् नेताओं के नाम लिखिए।

उत्तर—1857 ई० के विद्रोह के दो महान् नेताओं के नाम—1. महारानी लक्ष्मीबाई, 2. तांत्या टोपे।

प्रश्न 16—पूर्ण स्वाधीनता की माँग कब और कहाँ हुई?

उत्तर—पूर्ण स्वाधीनता की माँग दिसम्बर 1929 को लाहौर अधिवेशन में हुई?

प्रश्न 17—असहयोग आन्दोलन का प्रारम्भ कब और किसने किया?

उत्तर—असहयोग आन्दोलन का प्रारम्भ 1920 ई० में महात्मा गाँधी ने किया।

प्रश्न 18—आजाद हिन्द फौज की स्थापना किसने की?

उत्तर—आजाद हिन्द फौज की स्थापना नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने की।

प्रश्न 19—भारत का अन्तिम अँग्रेज गवर्नर कौन था?

उत्तर—भारत का अन्तिम अँग्रेज गवर्नर लार्ड माउण्टबेटन था।

प्रश्न 20—भारत कब स्वतन्त्र हुआ?

उत्तर—भारत 15 अगस्त, 1947 ई० को स्वतन्त्र हुआ।

प्रश्न 21—स्वतन्त्र भारत के प्रथम भारतीय गवर्नर जनरल कौन थे?

उत्तर—स्वतन्त्र भारत के प्रथम भारतीय गवर्नर जनरल चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य थे।

लघुउत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—1857 की क्रान्ति की विफलता के पाँच कारण लिखिए। (1984, 87, 90)

उत्तर—1857 ई० की क्रान्ति की विफलता के कारण—1857 ई० की क्रान्ति के विफलता के कुछ कारण इस प्रकार थे—

(1) प्रथमतः विद्रोह सीमित क्षेत्रों में फैला हुआ था। भारत के कुछ भाग तो

इससे प्रभावित ही नहीं हुए विशेषकर दक्षिण भारत, हैदराबाद तथा सिंधियां के राज्य में शान्ति बनी रही।

(2) यद्यपि अन्तिम मुगल बादशाह तथा पेशवा नाना साहब दोनों ने मिल कर क्रान्ति का नेतृत्व किया, परन्तु सामूहिक नेतृत्व की सफलता नहीं मिली और अन्त में बहादुरशाह जफर ने दिल्ली में आत्म-समर्पण कर दिया।

(3) आधुनिक शस्त्रात्रों के अभाव के कारण भी भारतीय सैनिक असफल रहे।

(4) भारतीय सेनाओं का कोई संगठित नेतृत्व न था। मुसलमान सम्राट के नेतृत्व में तथा हिन्दू नाना साहब और झाँसी की रानी के नेतृत्व में लड़े।

(5) अँग्रेजों का यह सौभाग्य था कि उनके पास लारेंस, औटरम, हैवलॉक, निक्लसन तथा एडवर्डस जैसे अनुभवी सेनाध्यक्ष थे। उन्होंने प्रारम्भ से लेकर अन्त तक स्थिति को सम्भाला।

प्रश्न 2—बंग-भंग आन्दोलन क्या था ? (1985)

उत्तर—1905 ई० में लार्ड कर्जन ने बंगाल तथा उत्तर पश्चिम सीमान्त प्रदेश को दो भागों में विभाजित कर दिया। इसका उद्देश्य मुसलिम बहुमत वाला प्रान्त बनाना था। बंगाल के लोगों ने इसे अपना अपमान समझा। उन्होंने कहा कि उनकी एकता को खण्डित किया गया है। बंग-भंग के खिलाफ जोरदार आन्दोलन चलाया गया। 1919 ई० में बंग-भंग समाप्त कर दिया गया और दोनों बंगाल एक हो गये।

प्रश्न 3—असहयोग आन्दोलन की रूपरेखा पर प्रकाश डालिए। (1989)

उत्तर—असहयोग आन्दोलन का उद्देश्य और कार्यक्रम—1915 ई० से 1919 ई० तक अँग्रेजी सरकार के एक सहयोगी के रूप में कार्य करने वाले महात्मा गाँधी जब सन् 1920 में अँग्रेजों की विभिन्न नीतियों और अत्याचारों से खिन्न हो गये तो उनके विचारों में एक ज्वार-भाटा आ गया। ब्रिटिश सरकार और भारत की जनता के प्रति सद्भावना और न्यायपरायणता में अगाध विश्वास रखने वाले गाँधी असहयोगी बन गये। उनके मन में विश्वास जगा कि यदि जनता, सरकार के किसी भी कार्य में सहायता न करे, तो सरकार चल नहीं सकती तथा सरकार को लाचार होकर उनकी स्वराज्य की माँग को पूरा करना होगा। इसी विश्वास पर उन्होंने असहयोग आन्दोलन करने का निश्चय किया। असहयोग आन्दोलन से तात्पर्य ऐसे आन्दोलन से था, जिसमें आम जनता सरकार को सहयोग देना बन्द कर दे और सरकार पंगु होकर रह जाये।

असहयोग आन्दोलन चलाने के लिए बहुत से कार्यक्रम निश्चित किये गये। जिनमें कुछ निषेधात्मक थे तथा कुछ रचनात्मक। निषेधात्मक कार्यक्रमों का अर्थ था सरकार के प्रति असहयोग तथा रचनात्मक कार्यक्रमों का अर्थ था कुछ कार्यों को करना जिससे जनता के कल्याण के साथ-साथ देश में रास्ट्रीयता की भावना में वृद्धि हो।

असहयोग आन्दोलन द्वारा सरकारी अदालतों का बहिष्कार, विधानमण्डलों का बहिष्कार, शिक्षा संस्थाओं का बहिष्कार किया गया। अँग्रेजी सरकार द्वारा दी गयी उपाधियों को लौटाया गया। अनेक भारतीयों ने सरकारी नौकरियों को त्याग दिया। विदेशी वस्तुओं की होली जलायी गयी। सरकार को करों की अदायगी नहीं की गयी। प्रारम्भ में असहयोग आन्दोलन पूर्णतः अहिंसात्मक था किन्तु कालान्तर में यह हिंसात्मक हो गया। इस कारण गाँधीजी ने इस आन्दोलन को वापिस ले लिया।

प्रश्न 4—पूर्ण स्वाधीनता की माँग कब हुई ? (1989)

उत्तर—दिसम्बर 1929 ई० में लाहौर अधिवेशन में कांग्रेस ने पण्डित जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में पूर्ण स्वतन्त्रता की माँग की। इस अधिवेशन में कांग्रेस ने अपना लक्ष्य भारत की पूर्ण स्वतन्त्रता घोषित किया तथा 26 जनवरी को प्रति वर्ष स्वाधीनता दिवस मनाने की घोषणा की थी। इसी कारण से लाहौर अधिवेशन का ऐतिहासिक दृष्टि से विशेष महत्व है।

प्रश्न 5—सविनय अवज्ञा आन्दोलन से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर—26 जनवरी 1930 को स्वतन्त्रता दिवस मनाया गया। इसके उपरान्त गांधीजी ने डांडी यात्रा से सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारम्भ किया। गांधीजी ने अपने कुछ अनुयायियों के साथ समुद्र तट पर जाकर नमक बनाकर सरकारी कानून का उल्लंघन किया इस आन्दोलन का तात्पर्य बिना किसी हिंसा के सरकार की आज्ञा का उल्लंघन करना था। मार्च 1931 ई० में जब गांधी और इरविन के बीच समझौता हो गया तो आन्दोलन समाप्त हो गया।

प्रश्न 6—'भारत छोड़ो आन्दोलन' (1952) का भारत की स्वतन्त्रता प्राप्ति पर क्या प्रभाव पड़ा ? (1985, 88, 91)

उत्तर—1942 ई० में भारत के नेताओं ने भारत छोड़ो आन्दोलन शुरू कर दिया। सरकार ने आन्दोलन का क्रूरता से दमन किया। आन्दोलन इतना भयंकर था कि सरकार हिल गयी। इस आन्दोलन ने भारतीयों के उत्साह में भारी वृद्धि कर दी और वह राष्ट्रीयता की भावना से ओत-प्रोत हो गये।

प्रश्न 7—26 जनवरी की तिथि का भारतीय इतिहास में क्या महत्व है ? (1984)

उत्तर—26 जनवरी की तिथि का भारतीय इतिहास में विशेष महत्व है। क्योंकि 26 जनवरी, 1929 को भारतीयों ने सर्वप्रथम अपना लक्ष्य पूर्ण स्वतन्त्रता घोषित किया था तथा 26 जनवरी, 1950 को भारत में नवीन संविधान लागू हुआ।

प्रश्न 8—आतंकवादी आन्दोलन से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर—आतंकवादी आन्दोलन का अर्थ है खूनी क्रान्ति। इसके नेता बाल गंगाधर तिलक थे। उनका कहना था कि स्वतन्त्रता की माँग के मनवाने के लिये आतंक फैला दो और शत्रुओं पर सशस्त्र हमला करके उसे अपनी माँग के लिए मजबूर कर दो। अनेक देश भक्तों ने बन्दूक और बम की शक्ति से ब्रिटिश सरकार से लोहा लिया तथा अपने प्राणों का बलिदान किया।

परीक्षा में पूछे गये लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 9—राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना कब और क्यों की गयी ? (1984)

उत्तर—भारतीय समस्याओं की ओर अँग्रेजी सरकार का ध्यान आकर्षित करने के उद्देश्य से सन् 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना की गयी। मिस्टर ए० ओ० ह्यूम इसके संस्थापक थे जो अवकाश प्राप्त अँग्रेज सरकारी अफसर थे। इस समय कांग्रेस की स्थापना का मुख्य उद्देश्य भारतवासियों की समस्याओं को दूर करने के लिए भारतीय नेताओं को एक राष्ट्रीय मंच पर लाना था।

भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के अधिवेशन प्रतिवर्ष होते रहे। इन अधिवेशनों में समयानुकूल अँग्रेजी सरकार से शासन सुधार आदि की माँग की जाती रही। 19वीं शताब्दी के अन्तिम वर्षों में काँग्रेस का मुख्य उद्देश्य अंग्रेजी सरकार की नीतियों की आलोचना करना और शासन में सुधार की माँग करता रहा और अन्त में स्वराज्य की माँग काँग्रेस का मुख्य उद्देश्य हो गया।

प्रश्न 10—26 जनवरी भारत के राष्ट्रीय जीवन में दो कारणों से महत्वपूर्ण हैं। वे दो कारण क्या हैं? (1984)

उत्तर—सन् 1929 में काँग्रेस का अधिवेशन पं० जवाहर नेहरू की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। उस समय काँग्रेस ने पूर्ण स्वराज्य की प्राप्ति अपना लक्ष्य घोषित किया। इसके अनुसार 26 जनवरी सन् 1930 में स्वतन्त्रता दिवस मनाया गया और अनेक स्थानों पर तिरंगा झण्डा फहराया गया। 26 जनवरी का महत्व अनेक कारणों से है क्योंकि यह दिन हमारे राष्ट्रीय संघर्ष का महत्वपूर्ण दिवस है। इस दिन स्वतन्त्रता की माँग को लेकर देश में काँग्रेस ने तिरंगा झण्डा फहराया था तथा इसी दिन संविधान सभा ने नया संविधान बनाकर सन् 1950 में लागू किया गया था। इसी संविधान से भारत प्रभुसत्ता सम्पन्न गणराज्य घोषित हुआ। उक्त कारणों से 26 जनवरी भारत के राष्ट्रीय जीवन में महत्वपूर्ण है।

प्रश्न 11—1942 के 'भारत छोड़ो' आन्दोलन का स्वतन्त्रता हेतु संघर्ष पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर—1942 'भारत छोड़ो' आन्दोलन—ब्रिटिश सरकार की टालमटोल नीति से काँग्रेस के नेता बहुत ही असन्तुष्ट थे। जब उन्हें यह विश्वास हो गया कि अँग्रेज सरकार भारतीयों को सत्ता नहीं सौंपना चाहती, तब 8 अगस्त, 1942 को गांधी जी के नेतृत्व में 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव पारित किया गया और गांधी जी ने देशवासियों का नारा दिया 'करो या मरो'। इस प्रस्ताव के पारित होने के अगले दिन ही अँग्रेजी सरकार ने गांधी जी सहित अनेक नेताओं को गिरफ्तार कर लिया। फलस्वरूप 'भारत छोड़ो' आन्दोलन की आग सारे देश में फैल गयी। राष्ट्रीय नेताओं के गिरफ्तार कर लेने के कारण इस आन्दोलन ने हिंसात्मक रूप धारण कर लिया। सारे देश में स्थान-स्थान पर उग्र प्रदर्शन हुए। स्कूल, कॉलेज, कारखाने बन्द हो गये, स्थान-स्थान पर रेलवे स्टेशन, डाकखाने, तारघर तथा पुलिस थानों को जला दिया गया। अनेक स्थानों पर आन्दोलनकारियों ने अँग्रेजी शासन का नामोनिशान मिटा दिया और स्वतन्त्र शासन की स्थापना कर ली। अँग्रेजी सरकार ने भी आन्दोलन को कुचलने के लिए अनेक प्रयास किये। जगह-जगह विद्रोहियों पर मशीनगनों से गोलियाँ बरसायी गयी, वायुयानों से बम गिराये गये। परिणामस्वरूप हजारों की संख्या में युवक शहीद हुए। यद्यपि अँग्रेजी सरकार इस आन्दोलन को कुचलने में सफल हो गयी तथापि इस आन्दोलन ने जनजागृति का एक ऐसा वातावरण तैयार किया कि आन्दोलन की समाप्ति के कुछ वर्षों के बाद ही अँग्रेजों को भारत छोड़कर जाने के लिए विवश होना पड़ा।

प्रश्न 12—भारत में 1857 की प्रमुख क्रान्ति में भारतीय राजाओं एवं सैनिकों ने भाग क्यों लिया?

उत्तर—1857 की क्रान्ति में भारतीय राजाओं तथा सैनिकों द्वारा भाग लेने के कारण—1857 की क्रान्ति हमारे देश के इतिहास की महत्वपूर्ण घटना है।

इस क्रान्ति का उद्देश्य देश को स्वतन्त्र कराना था। भारतीय इतिहास में इसे स्वतन्त्रता का प्रथम संग्राम अथवा स्वतन्त्रता की पहली क्रान्ति कहा जाता है। इस क्रान्ति या विद्रोह ने भारत में अँग्रेजी शासन की नींव को हिला दिया। भारत की 1887 की क्रान्ति में भारतीय राजाओं तथा सैनिकों ने सक्रिय भाग लिया। भारतीय राजाओं एवं सैनिकों द्वारा इस क्रान्ति में भाग लेने के निम्नलिखित कारण थे—

(1) अँग्रेजों द्वारा देशीय राज्यों को हड़पने की नीति—1857 की क्रान्ति का प्रमुख कारण लार्ड डलहौजी की राज्य अपहरण की नीति थी। इससे देशीय राजाओं ने इस विद्रोह में सक्रिय रूप से भाग लिया।

(2) भारतीय सैनिकों के प्रति अधिकारियों के भेद-भाव की नीति—भारतीय सैनिकों के प्रति अधिकारियों की भेद-भाव की नीति भी क्रान्ति का प्रमुख कारण थी। भारतीय सैनिकों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया जाता था। युद्ध के समय उनको आगे कर दिया जाता था और इनाम-वितरण के समय उनको सबसे पीछे कर दिया जाता था। इस कारण भारतीय सैनिको में असन्तोष फैल गया था। यह असन्तोष ही क्रान्ति का प्रमुख कारण था।

(3) सैनिकों का चर्बी लगे कारतूसों का प्रयोग करना—उस समय सैनिकों को जो कारतूस दिये गये उनमें गाय और सूअर की चर्बी लगी थी। उन कारतूसों को रायफल में भरने से पूर्व दाँत से काटना पड़ता था इससे हिन्दू तथा मुसलमान सैनिकों की धार्मिक भावना को गहरी ठेस लगी। अतः उन्होंने विद्रोह कर दिया।

प्रश्न 13—जलियाँवाले बाग का हत्याकाण्ड का संक्षेप में वर्णन कीजिए। (1988)

उत्तर—जलियाँवाले बाग का हत्याकाण्ड—भारत के इतिहास में जलियाँवाले बाग का हत्याकाण्ड विशेष महत्व रखता है। जनता के विरोध को दबाने के लिए सरकार ने 1919 ई० में रौलट एक्ट बनाया, इसके अन्तर्गत सरकार किसी भी व्यक्ति को मुकदमा चलाये बिना ही जेल में डाल सकती थी, जब जनता ने इसका विरोध किया तो सरकार ने लाठियों और गोलियों का सहारा लिया तथा पंजाब के प्रसिद्ध नेता डा० सत्यपाल एवं सैफुद्दीन किचलु को गिरफ्तार कर लिया। उनकी गिरफ्तारी के विरोध में अमृतसर के जलियाँवाले बाग में नागरिकों की एक सभा हुई। जनरल डायर कुछ सिपाहियों को लेकर वहाँ पहुँचा, उसने चेतावनी दिये बिना ही लोगों पर गोली चलवा दी। इससे लगभग 1000 व्यक्ति मारे गये थे और 2000 घायल हुए और पूरे पंजाब में फौजी शासन लागू कर दिया गया। सरकार के इस कार्य से देश में रोष का वातावरण छा गया तथा सरकार के प्रति कटुता उत्पन्न हो गयी और जनता संग्राम के लिए कमर कसकर तैयार हो गयी।

प्रश्न 14—भारत के स्वतन्त्रता संघर्ष में नेताजी के योगदान पर प्रकाश डालिए। (1989)

उत्तर—भारत के स्वतन्त्रता संघर्ष में नेताजी का योगदान विशेष उल्लेखनीय है। गांधीजी और पं० नेहरूजी के बाद इनका ही स्थान है। नेताजी राष्ट्रीय काँग्रेस के सक्रिय कार्यकर्त्ता थे। उनकी विचारधारा गांधीजी से मेल नहीं खाती थी परन्तु नेताजी स्वतन्त्रता संघर्ष में गांधीजी के परम सहयोगी रहे। नेताजी उग्रवादी दल के नेता थे। इसलिए उनकी विचारधारा थी कि अहिंसावादी नीति से भारत को स्वराज्य

नहीं मिलेगा। वे शक्ति के समर्थक थे, इसलिए सैन्य शक्ति के द्वारा भारत को स्वतन्त्र कराने के पक्षधर थे। उन्होंने गुप्त रूप से 'आजाद हिन्द फौज' का गठन किया जिसके द्वारा उन्होंने अँग्रेजों के छक्के छुड़ा दिये। वे कई बार जेल गये। सन् 1941 में वे जेल में से भेष बदलकर अँग्रेजी सरकार की आँखों में धूल झोंककर भारत से जर्मनी और फिर वहाँ से जापान चले गये। उनका नारा था, 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।' उनके नाम से सरकार अँग्रेजी थरथर काँपती थी। उन्होंने भारत की स्वतन्त्रता में अपना तन, मन, धन और यौवन सर्वस्व सर्मपित कर दिया। वस्तुतः नेताजी भारत के स्वतन्त्रता संघर्ष के अद्वितीय सैनानी थे।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—1857 ई० के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के कारणों एवं परिणामों पर प्रकाश डालिए। (1985, 86)

उत्तर—स्वतन्त्रता संग्राम के कारण—1857 ई० के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के कारण निम्नलिखित थे—

(1) राजनीतिक कारण (1985)—स्वतन्त्रता संग्राम के राजनीतिक कारण इस प्रकार थे—

(ii) **लार्ड डलहौजी की साम्राज्यवादी नीति**—अँग्रेजों की साम्राज्यवादी नीति ने भारतीयों में असन्तोष फैला दिया था। उनकी राज्य हड़पने की नीति ने अनेक शासकों को असन्तुष्ट कर दिया था। क्रान्ति के समय जनता ने भारतीय नरेशों का साथ दिया।

(ii) **मुगल सम्राटों की शक्ति और यश में कमी**—इस समय तक मुगल सम्राटों की शक्ति और यश में काफी कमी आ गयी थी। प्रजा मुगल सम्राटों का सम्मान करती थी। परन्तु अँग्रेजों ने मुगल सम्राटों का सम्मान करना छोड़ दिया था। प्रजा इसे अच्छा नहीं समझती थी। अतः भारतीयों ने मुगल सम्राटों के नेतृत्व में विद्रोह कर दिया।

(iii) **भारतीय नरेशों का विदेशी नीति पर नियन्त्रण**—अँग्रेज शासकों ने कुछ देशी राज्यों को अपने राज्य में मिला लिया था। अँग्रेज शासकों का इन रियासतों की विदेशी नीति पर पूर्ण नियन्त्रण था। परन्तु अँग्रेज इतने से ही सन्तुष्ट न थे। अँग्रेज शासकों ने देशी रियासतों के आन्तरिक मामलो में हस्तक्षेप करना आरम्भ कर दिया। इस कारण देशी नरेशों ने विद्रोह में सैनिकों का साथ दिया।

(iv) **भारतीय शासकों के यहाँ अँग्रेजी सेना**—अँग्रेज शासकों ने भारतीय नरेशों के लिए यह अनिवार्य कर दिया कि वे अपने यहाँ अँग्रेजी सेना रक्खें। सेना भारतीय जनता को तरह-तरह से कष्ट देती थी। इसी कारण भारतीय राजाओं तथा प्रजा में अँग्रेजों के विरुद्ध असन्तोष था।

(v) **जमींदारों के प्रति नीति**—अँग्रेज शासकों ने अपनी नीति से जमींदारों को भी अप्रसन्न कर रखा था। इसी कारण वे अँग्रेजों के विरुद्ध हो गये थे। अँग्रेजों ने जमींदारों की जमींदारियों को जब्त कर लिया था। अतः उन्होंने विद्रोह में सैनिकों का साथ दिया।

(vi) **उच्च वर्ग के प्रति नीति**—कम्पनी के कर्मचारियों ने उच्च वर्ग के लोगों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया। इस कारण वे अँग्रेजों से असन्तुष्ट हो

गये थे। उनको उच्च पद नहीं दिये जाते थे। इसी कारण वे अपने मालिकों से नाराज थे।

(2) आर्थिक कारण—1857 ई० के स्वतन्त्रता संग्राम के आर्थिक कारण इस प्रकार हो सकते हैं—

(i) विदेशों को भारतीय धन—अँग्रेज यहाँ व्यापार करने के उद्देश्य से आये थे। परन्तु वे यहाँ बस गये। फिर उन्होंने यहाँ शासन करना प्रारम्भ कर दिया। भारत में अँग्रेजी शासन स्थापित हो जाने के पश्चात् भारतीय धन विदेशों को पहुँचने लगा। भारतीय जनता इससे सन्तुष्ट न थी। इसी कारण उसने अँग्रेजों के खिलाफ विद्रोह किया।

(ii) भारतीय उद्योगों की दयनीय दशा—अँग्रेजी शासकों की नीति के कारण भारतीय उद्योग प्रायः नष्ट हो गये थे। अँग्रेज भारतीयों का शोषण कर रहे थे। सम्पूर्ण भारत का व्यापार अपने हाथ में ले लेना ही कम्पनी के हित में था। इसी कारण वे अपने उद्देश्य की पूर्ति करना चाहते थे। इस समय तक इंग्लैण्ड में औद्योगिक क्रान्ति हो चुकी थी। भारत से इंग्लैण्ड को कच्चा माल भेजा जाता था। इंग्लैण्ड से निर्मित माल भारत को भेजा जाता था। इस प्रकार भारतीय उद्योग लगभग नष्ट हो गये थे। भारतीय श्रमिक बड़ी संख्या में बेकार हो गये थे। इसका एक अप्रत्यक्ष प्रभाव यह पड़ा कि भारतीयों को कृषि व्यवसाय अपनाना पड़ा। कृषि पर दबाव बढ़ गया। परन्तु अँग्रेजों ने कृषि व्यवसाय के सुधार के लिए कोई उपाय नहीं किया। इससे भारतीय जनता में असन्तोष था।

(iii) सैनिकों की बेकारी—अँग्रेजों ने अनेक देशी राज्यों को हड़प लिया था। इन राज्यों के सैनिक बेकार हो गये थे। ये सैनिक अँग्रेजों के घोर शत्रु बन गये थे।

(3) सामाजिक कारण—1857 ई० की क्रान्ति के कुछ सामाजिक कारण इस प्रकार हैं—

(i) अंग्रेजी भाषा का विरोध—भारतीय अंग्रेजी शिक्षा का विरोध करते थे। उनका ऐसा विश्वास था कि अँग्रेजी शिक्षा के द्वारा अँग्रेज भारतीयों को ईसाई बनाना चाहते हैं।

(ii) ब्रिटिश माल का विरोध—उस समय इंग्लैण्ड से भारतीयों के लिए माल भेजा जाता था। वे इसे पाश्चात्य माल समझ कर घृणा करते थे।

(iii) सामाजिक प्रथाओं पर प्रतिबन्ध—कम्पनी ने भारत की अनेक सामाजिक प्रथाओं, जैसे सती-प्रथा, बाल-विवाह आदि पर प्रतिबन्ध लगा दिया था। भारतीय जनता ने इसका विरोध किया था।

(iv) पाश्चात्य संस्कृति और सभ्यता का प्रचलन—ब्रिटिश शासकों ने भारत में पाश्चात्य संस्कृति और सभ्यता का प्रचलन किया। परन्तु वे भारतीय संस्कृति और भाषाओं के प्रति उदासीन रहे। इससे भारतीयों में असन्तोष की लहर फैल गयी थी।

(4) धार्मिक कारण—प्रथम भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के धार्मिक कारण इस प्रकार हैं—

(i) पादरियों द्वारा ईसाई धर्म का प्रचार—अँग्रेज शासकों के साथ अनेक

ब्रिटिश पादरी भारत आये थे। उन्होंने भारत में ईसाई धर्म का प्रचार आरम्भ किया। कम्पनी के संचालकों की नीति भी भारत में ईसाई धर्म का प्रचार करना था। ईसाई लोगों को कम्पनी में उच्च पद दिया जाया करते थे। इसके विपरीत कम्पनी के संचालकों का हिन्दुओं और मुसलमानों के प्रति व्यवहार सन्तोषजनक न था। इससे हिन्दुओं और मुसलमानों में असन्तोष थे।

(ii) हिन्दू धर्म के सिद्धान्तों की अवहेलना—ब्रिटिश शासक हिन्दू धर्म के सिद्धान्तों की अवहेलना किया करते थे। इसका फल यह हुआ कि हिन्दू ब्रिटिश शासकों से घृणा करने लगे।

(iii) चर्बीयुक्त कारतूसों का प्रयोग—इसी समय अँग्रेजों ने भारत में एक नये प्रकार के कारतूसों का प्रचलन आरम्भ किया। इन कारतूसों में जानवरों की चर्बी का प्रयोग किया जाता था। कारतूसों को चलाने से पूर्व इनको दाँत से काटना होता था। जब भारतीय सैनिकों को इस बात की जानकारी हुई तो उनमें असन्तोष की लहर फैल गयी। इसी भावना ने उनको अँग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह करने को विवश कर दिया।

(iv) रेल तथा तार का आविष्कार—इसी समय भारत में रेल तथा तार का प्रचलन आरम्भ हुआ। भारतीयों ने इससे यह आशय निकाला कि अँग्रेज उनका धर्म भ्रष्ट करना चाहते हैं। इससे उनमें असन्तोष भर गया।

(5) सैनिक कारण (1986)—भारत के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के कुछ सैनिक कारण इस प्रकार थे—

(i) भारतीय सैनिकों के प्रति व्यवहार—अँग्रेजी शासकों का भारतीय सैनिकों के साथ व्यवहार अच्छा न था। इस कारण भारतीय सैनिकों ने अँग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह किया।

(ii) ब्रिटिश सैनिकों को अधिक वेतन—भारतीय सैनिकों की अपेक्षा ब्रिटिश सैनिकों का वेतन कहीं अधिक था। इस कारण भारतीय सैनिकों में असन्तोष था।

(iii) उच्च पदों पर अंग्रेज सैनिकों की नियुक्ति—इस समय उच्च पदों पर अँग्रेज सैनिकों की नियुक्ति की जाती थी। इसी कारण कभी-कभी सैनिक विद्रोह किया करते थे। परन्तु उनको कभी अपने उद्देश्य में सफलता नहीं मिली।

(iv) भारतीय सैनिकों में असन्तोष—हम बता चुके हैं कि भारतीय सैनिकों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया जाता था। युद्ध के समय उनको आगे कर दिया जाता था और पुरस्कार वितरण के समय सबसे पीछे। इस कारण भारतीय सैनिकों में असन्तोष फैल गया था।

(v) सेना के अनुशासन में कमी—सेना के कुछ अधिकारियों का राजनीति में प्रवेश हो गया था। इसी कारण सेना के अनुशासन में कमी आई थी।

(v) ब्रिटिश सेना की कमी—भारत में ब्रिटिश सेना की कमी थी। ब्रिटिश सेना को अन्य देशों में नियुक्त कर दिया था।

1857 की क्रान्ति के परिणाम—(1) भारतीय सैनिकों में स्वदेश प्रेम तथा देश को स्वतन्त्र कराने की भावना की जागृति—

(2) भारतीय राजाओं को गोद लेने के अधिकार की पुनः प्राप्ति।

(3) ईस्ट इण्डिया कम्पनी की समाप्ति।

(4) ब्रिटेन की रानी विक्टोरिया का शासन लागू होना।

प्रश्न 2—भारतीय राष्ट्रीय जागरण के कारण बताइए।

उत्तर—राष्ट्रीय जागरण के कारण—19वीं शताब्दी के पूर्व भारत की तत्कालीन परिस्थितियों के बीच किसी भी प्रकार की राष्ट्रीय जागृति सम्भव नहीं थी। जिन विभिन्न कारणों ने 19वीं शताब्दी में राष्ट्रीय जागरण को भारत में जन्म दिया, उन्हें हम निम्नलिखित चार वर्गों में बाँट सकते हैं—

(क) धार्मिक कारण,

(ख) सामाजिक कारण,

(ग) आर्थिक कारण और

(घ) राजनीतिक कारण।

(क) धार्मिक कारण—सुप्तप्रायः भारतीय समाज में नई चेतना का संचार (जो 19वीं शताब्दी के प्रारम्भ में हुआ) धार्मिक आन्दोलन ने ही किया। इन्हीं आन्दोलनों के फलस्वरूप भारत में हुए धार्मिक पुनर्जागरण को हम आगे आने वाली राष्ट्रीय जागृति का उद्‌गम मान सकते हैं।

इस धार्मिक जागृति का प्रारम्भ बंगाल में 1828 ई० में राजा राममोहन राय द्वारा स्थापित ब्रह्म-समाज की स्थापना से हुआ। इस संस्था ने हिन्दू धर्म में प्रविष्ट हुई सभी धार्मिक व सामाजिक कुरीतियों को दूर करने का प्रबल प्रयत्न किया। राजा राममोहन राय ने भारतीय जनता को विदेशी सभ्यता की अच्छाइयों को अपनाने की सलाह दी और अँग्रेजी शिक्षा ग्रहण करने को प्रोत्साहन दिया। उन्होंने हिन्दू कट्टरपंथी सीमाओं को तोड़कर भारतीय समाज को पाश्चात्य संस्कृति के ढाँचे पर संगठित करने का प्रयास किया। वे प्रथम भारतीय थे जिन्होंने धार्मिक सुधारों का सामाजिक, शैक्षिक तथा राजनीतिक सुधारों से सम्बन्ध जोड़ा।

दूसरा प्रमुख आन्दोलन था 'आर्य समाज' का, जिसके संस्थापक थे स्वामी दयानन्द सरस्वती। "आर्य समाज" ने वैदिक सभ्यता तथा संस्कृति के पुनरुत्थान के लिए हिन्दुओं में प्रचलित पुरानी कुप्रथाओं, रूढ़ियों तथा मूर्तिपूजा तथा पाश्चात्य सभ्यता व संस्कृति के प्रभाव का विरोध किया। स्वामी दयानन्द ने भारतीय जनता को अपने अतीत के प्रति श्रद्धा तथा भविष्य के लिए प्राचीन आदर्शों पर चलने का पाठ पढ़ाया। स्वामीजी ने धार्मिक, सामाजिक तथा कुरीतियों को दूर करने के अलावा भारतीयों के हृदय में स्वतन्त्रता, स्वदेश और स्वदेशी वस्तुओं के लिए भी प्रेम का संचार किया। वे पहले भारतीय थे जिन्होंने 'भारत भारतियों के लिए' का नारा लगाया।

तीसरा महत्व आन्दोलन थियोसोफिकल सोसायटी ने किया। इस सोसायटी का कार्य क्षेत्र दक्षिण भारत था। इस आन्दोलन के प्रमुख नेताओं में रूसी महिला ब्लेवेत्सकी, अमेरिकी कर्नल अल्कोट तथा श्रीमती एनीबेसेन्ट थी जिन्होंने भारतीयों को उनके राष्ट्रीय पतन से परिचित कराया और यह भी बताया कि उस पतन के गर्त्त से उनको अपना प्राचीन एवं गौरवशाली हिन्दुत्व ही निकाल सकता है। इस सोसायटी

के कार्यों के फलस्वरूप शिक्षित हिन्दुओं में अपने साहित्य और धर्म में विश्वास का पुनर्जागरण हुआ। इस संस्था ने दक्षिणी भारत में ईसाइयत और भौतिकवाद की प्रभावधारा को रोकने का प्रशंसनीय कार्य किया।

चौथा आन्दोलन स्वामी विवेकानन्द का अपने गुरु रामकृष्ण परमहंस की स्मृति में संस्थापित रामकृष्ण-मिशन का था। स्वामी विवेकानन्द ने सभी धर्मों की एकता के प्रचार के साथ ही विदेशों में भारतीय सभ्यता की आध्यात्मिकता को पाश्चात्य सभ्यता की भौतिकता से श्रेष्ठ घोषित किया। उन्होंने भारतीय सभ्यता के प्रसार तथा विदेशियों पर आध्यात्मिक विजय पाने का सन्देश दिया। स्वामी रामतीर्थ ने भी स्वामी विवेकानन्द के द्वारा प्रारम्भ किये गये भारत के सांस्कृतिक पुनर्जागरण के कार्य को पूरा किया।

(ख) सामाजिक कारण—सामाजिक कारणों में सर्वप्रथम स्थान पाश्चात्य शिक्षा के प्रभावों को आता है। पाश्चात्य शिक्षा के प्रचार ने भी भारतीयों में राष्ट्रीय भावना जागृत करने में बहुत बड़ा योगदान किया। लार्ड विलियम बैंटिक के समय में मैकाले ने ब्रिटिश सरकार से यह आग्रह किया कि भारतीयों को अंग्रेजी शिक्षा दी जाये। यह सुझाव मानकर अंग्रेजी शिक्षा का प्रचार शुरू किया गया। वस्तुतः मैकाले आदि का पश्चिमी शिक्षा का प्रचार करने का उद्देश्य, जैसा कि **रजनी पाम दत्त** ने लिखा है—**"भारत में एक ऐसे वर्ग की स्थापना करना था जो रुचि, विचार शब्द आदि से अंग्रेजी हो।"** पाश्चात्य शिक्षा के निम्नलिखित प्रभाव भारतीयों पर पड़े—

(1) विचार-विनिमय के लिए सामान्य भाषा—अंग्रेजी भाषा के द्वारा भारतवर्ष के विभिन्न भाषा-भाषी लोगों को अपने विचार-विनिमय करने का माध्यम प्राप्त हुआ। विभिन्न प्रान्तों के लोग, जो एक-दूसरे की भाषा नहीं समझते थे, अब अधिक निकट आ गये; क्योंकि उन्हें अंग्रेजी के रूप में एक ऐसी भाषा मिल गई, जिसने अन्तर्प्रान्तीय भाषा का काम किया।

(2) अंग्रेजी विचारों के सम्पर्क में आना—पश्चिमी शिक्षा प्राप्त करने के बाद ही भारतीयों को अंग्रेजी इतिहास तथा अंग्रेजी चिन्तकों के विचारों से अवगत होने का अवसर मिला। उन्होंने तत्कालीन अंग्रेजी लेखकों, दार्शनिकों तथा कवियों के साहित्य को पढ़ा, जो स्वतन्त्रता तथा राष्ट्रीयता के विचारों से ओत-प्रोत था। इससे भारतीयों को ज्ञात हुआ कि स्वतन्त्रता एक आवश्यक वस्तु है।

(3) अंग्रेजी शासन का ज्ञान—भारती विद्यार्थी ब्रिटिश शासन-प्रणाली के सम्पर्क में आये और उन्होंने देखा कि वहाँ एक ऐसी शासन पद्धति थी; जिसमें को अपने प्रतिनिधि चुनने तथा शासन में भाग लेने का अधिकार था। उनके मन में इसी तरह की प्रजातान्त्रिक शासन-व्यवस्था की इच्छा जागृत हुई।

(4) विदेश गमन—शिक्षा प्राप्त करने के लिए भारत से बहुत से विद्यार्थी विदेश जाने लगे। वहाँ उन्होंने देखा कि विदेशी जनता किस प्रकार स्वतन्त्रता और स्वराज्य का उपभोग कर रही थी। इसका प्रभाव उनके हृदय पर भी पड़ा। इसके अलावा विदेशों में जब उन्हें परतन्त्र देश का दास कहा जाता था तब उनके आत्म-सम्मान को गहरा धक्का लगता था। उनमें अपने देश की दयनीय दशा से क्षोभ की भावना जगी और वे अपने देश को स्वतन्त्र बनाने में प्रयत्नशील बनने लगे। इस प्रकार पश्चिमी शिक्षा भी राष्ट्रीयता के विकास में सहकाय बनी।

सामाजिक कारणों में पाश्चात्य शिक्षा के प्रभावों के बाद स्थान आता है जाति विभेद का। ब्रिटिश सरकार का रुख शुरू से ही जाति-विभेद करना रहा था। परन्तु सन् 1857 के विद्रोह के बाद यह भावना उसमें प्रबल हो गई। बहुत से अँग्रेज शासक अपने को भारतीयों से श्रेष्ठ समझते थे। उनका निवास-स्थान भारतीयों के निवास-स्थान से बिलकुल अलग हुआ करता था। वे भारतीयों से केवल अपने दफ्तरों में ही मिलते थे। भारतीयों के साथ उनका अशिष्ट व्यवहार पराकाष्ठा पर पहुँच गया था। वे भारतीयों को अर्द्ध नीग्रो और अर्द्ध गोरिला समझते थे। हमें काला आदमी कहा जाता था। इस प्रकार गोरे और काले के भेद-भाव और सामाजिक असमानताओं के फलस्वरूप भारतीयों में अंग्रेजों के प्रति घृणा की भावना जागी।

(ग) आर्थिक कारण—मनुष्य में विद्रोही भावनाओं को जाग्रत करने में आर्थिक प्रभाव एक प्रमुख कारण होता है। भारतीय राष्ट्रीय जागृति के कारणों में आर्थिक असन्तोष का महत्त्वपूर्ण स्थान है। अंग्रेज हिन्दुस्तान में व्यापार करने आये थे और शासक बन बैठे। हमारे देश पर शासन के साथ ही उन्होंने भारत का शोषण आरम्भ कर दिया। कम्पनी स्थापना के पूर्व ही नहीं 19वीं शताब्दी तक भारत के उद्योग-धन्धे काफी समृद्ध थे। कम्पनी की नीति ने उनको नष्ट कर दिया। भारत से धन लूट-लूटकर इंग्लैण्ड ले जाया जाने लगा। परिणामतः भारतीय जनता निरन्तर निर्धन होती चली गई। अतः उसने राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय योगदान किया।

(घ) राजनीतिक कारण—राजनीतिक कारणों में ब्रिटिश शासन द्वारा भारत में स्थापित राजनीतिक एकता 1857 ई० की सशस्त्र क्रान्ति, लार्ड लिटन का दमनकारी शासन सरकारी नौकरियों में अन्यायपूर्ण नीति आदि का प्रमुख स्थान है।

(1) राजनीतिक एकता की स्थापना—साम्राज्यवाद अपनी प्रतिक्रिया के मार्ग में स्वयं राष्ट्रीय चेतना को जन्म देने में समर्थ होता है। सन् 1757 में प्लासी युद्ध से प्रारम्भ करके ब्रिटिश साम्राज्यवाद अपनी पताका सम्पूर्ण भारत पर फहराने में सफल हुआ। अंग्रेजों ने भारत में एक सुदृढ़ तथा एक केन्द्रीय शासन की स्थापना की। इसी कारण भारत के विभिन्न प्रान्त एक सूत्र में बँध गये। इस एकीकरण के फलस्वरूप जनता में भी एकता और समान हित की भावना जन्मी।

(2) सन् 1857 की सशस्त्र क्रान्ति—भारतीय स्वतन्त्रता की यह पहली लड़ाई विफल तो अवश्य हो गई, लेकिन इसने भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन में काफी योग दिया। ये सहयोग सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही थे। इस क्रान्ति ने यह दिखा दिया था कि भारतवासियों में साहस, आत्म गौरव, कर्त्तव्यपरायणता और जीवन-शक्ति का अभाव नहीं है। वे विदेशियों का मुकाबला करने में डरते नहीं हैं। इस प्रकार भावी देशभक्त और राजनीतिक कार्यकर्त्ता इस क्रान्ति से सदैव प्रेरणा पाते रहे। साथ ही इस क्रान्ति के बाद अँग्रेज शासकों का भारतीयों पर दमन और अत्याचार बढ़ गया। इसका परिणाम हुआ कि अँग्रेजों और अँग्रेजी राज्य के विरुद्ध भारतीयों में घृणा की भावना उत्तरोत्तर बढ़ती ही गई और राजनीतिक चेतना सबल होती गई।

प्रश्न 3—भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन की 1920 से 1935 ई० तक की प्रमुख घटनाओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर— **प्रथम चरण (1920-1935 ई०)**

सितम्बर, 1920 ई० में कांग्रेस की नई नीति और कार्यक्रम के सम्बन्ध में निर्णय लेने के लिए कलकत्ता में एक अधिवेशन किया गया। इस अधिवेशन का सभापतित्व लाला लाजपतराय ने किया और महात्मा गाँधी ने ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध अहिंसात्मक असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ करने का प्रस्ताव प्रस्तुत किया। गांधीजी के प्रस्ताव की पुष्टि करते हुए लाला लाजपतराय ने कहा था—"भारतवासियों के पास अब इसके सिवाय कोई चारा शेष नहीं रह गया है कि वे गांधीजी द्वारा बताये गये अहिंसात्मक आन्दोलन को स्वीकार करें तथा तब तक इसको चलायें जब तक कि उक्त त्रुटियाँ दूर न हों और स्वराज्य की स्थापना न हो।" अपने प्रस्ताव को प्रस्तुत करते हुए गाँधीजी ने भी कहा था कि "ब्रिटिश सरकार शैतान के समान है, जिसके साथ सहयोग करना पूर्णत: असम्भव है। बिना स्वराज्य प्राप्ति के पंजाब और खिलाफत की भूलों की पुनरावृत्ति पर रोक लगाना सम्भव नहीं है।" गाँधीजी के प्रस्ताव का पं० मोतीलाल नेहरू और मौलाना शौकत अली तथा मुहम्मद अली ने समर्थन किया। किन्तु चितरंजनदास, मिसेज ऐनी बीसेन्ट, मिस्टर जिन्ना, विपिनचन्द्र पाल ने इसका विरोध किया। अन्ततः गाँधीजी के प्रस्ताव को कलकत्ता अधिवेशन में बहुमत से पास कर दिया।

दिसम्बर, 1920 ई० में नागपुर में कांग्रेस का पुनः अधिवेशन बुलाया गया और इसमें कलकत्ता अधिवेशन के अहिंसात्मक असहयोग आन्दोलन के निर्णय को पुनः दोहराया गया। कांग्रेस द्वारा स्वराज्य प्राप्ति का लक्ष्य घोषित किया गया। यह भी निर्णय किया गया कि स्वराज्य प्राप्ति के लिए कांग्रेस शान्तिपूर्ण और उचित उपायों को अपनायेगी। यह भी निश्चय किया कि कांग्रेस अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए सरकार से पूर्णतः असहयोग करेगा और कर आदि को बहिष्कार भी करेगी। इस अधिवेशन में लिये गये निर्णय का विरोध करते हुए श्रीमती एनीबीसेंट, मि० जिन्ना एवं विपिनचन्द्र पाल ने कांग्रेस से त्यागपत्र दे दिया।

इस अधिवेशन में लगभग बीस हजार प्रतिनिधि देश के विभिन्न भागों से आकर सम्मिलित हुए थे। अतः कांग्रेस ने असहयोग आन्दोलन को आरम्भ करने का पूरा-पूरा इरादा कर लिया।

असहयोग आन्दोलन की प्रगति

कांग्रेस का समर्थन प्राप्त करके महत्मा गाँधी ने सम्पूर्ण देश का दौरा किया और असहयोग आन्दोलनों के कार्यक्रमों से जनता को अवगत कराया और उसे आन्दोलन में भाग लेने के लिए उत्साहित किया। असहयोग आन्दोलन का सूत्रपात करते हुए उन्होंने स्वयं अपने सरकारी "कैसरे-हिन्द" पदक को सरकार को लौटा दिया। फिर क्या था समूचे देश में असहयोग की बाढ़ आ गयी। वकीलों ने अपना पेशा छोड़ दिया और आन्दोलन में भाग लेने लगे। विद्यार्थियों ने सरकारी स्कूलों का बहिष्कार कर दिया। बिहार काशी, गुजरात, अलीगढ़ में राष्ट्रीय विद्यापीठ खोले गये और उनमें विद्यार्थियों ने अपना नाम दर्ज करना शुरू कर दिया। हजारों आदमियों ने अपनी उपाधियाँ लौटा दीं। विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार किया गया। इसमें हिन्दू और मुसलमानों ने समान रूप से भाग लिया।

आम जनता ने सभी सरकारी कार्यों से अपना सहयोग वापस ले लिया। उन्होंने अग्रलिखित प्रमुख बहिष्कार किये—

(अ) विधान मण्डलों का बहिष्कार—1919 ई० के सुधार अधिनियमों द्वारा स्थापित विधान-मण्डलों का बहिष्कार किया गया। कोई भी कांग्रेसी विधानमण्डलों के चुनाव में खड़ा नहीं हुआ। जनता ने भी वोट देने से इन्कार कर दिया। परिणामस्वरूप बहुत से स्थानों पर बैलट बॉक्स खाली पड़े रहे।

(ब) केन्यूर ड्यूक का बहिष्कार—1919 ई० के सुधार का उद्घाटन करने के लिए केन्यूर ड्यूक भारत आये। सरकार के लाख कोशिश करने पर भी हर जगह हड़तालों से उनका स्वागत हुआ।

(स) प्रिंस ऑफ वेल्स का बहिष्कार—इसी समय प्रिंस ऑफ वेल्स भारत के दौरे पर आये। उसी समय बम्बई में एक दंगा हो गया। कांग्रेस ने उनके दौरे का बहिष्कार किया। जहाँ कहीं भी वे जाते, बाजारों में हड़तालें की जातीं। प्रिंस ऑफ वेल्स के कलकत्ता पहुँचने के समय तक गवर्नर-जनरल लार्ड रीडिंग ने समझौता करना चाहा। परन्तु गांधीजी ने मुहम्मद अली और शौकत अली की रिहाई की शर्त रखी। सरकार को यह शर्त मंजूर नहीं थी। अतः समझौता न हो सका।

असहयोग आन्दोलन की समाप्ति

महात्मा गांधी ने 1 फरवरी, 1922 ई० को भारत के वायसराय लार्ड रीडिंग को एक पत्र लिखा। इसके द्वारा उन्होंने सरकार की अत्याचारपूर्ण एवं दमनपूर्ण नीति की निन्दा करते हुए चेतावनी दी कि 6 दिनों के अन्दर सरकार ने अपनी नीतियों में परिवर्तन नहीं किया तो वह बारडोली में सविनय अवज्ञा आन्दोलन आरम्भ कर देंगे। किन्तु 6 दिन पूर्ण होने के पहले ही गोरखपुर जिले के चौरी-चौरा नामक स्थान पर उत्तेजित भीड़ ने 4 फरवरी, 1922 ई० को एक पुलिस चौकी में आग लगा दी। इस दुर्घटना में एक पुलिस का दरोगा और 21 सिपाही जीवित ही जल गये। इसी प्रकार मालाबार के कुछ मुस्लिम मोपलों ने अनेक हिन्दुओं का वध कर दिया। इसी बात से गांधीजी के हृदय को बहुत ठेस पहुँची और उन्होंने अनुभव किया कि आन्दोलन हिंसात्मक रूप धारण करने जा रहा है। अतः उन्होंने असहयोग आन्दोलन को स्थगित कर दिया।

स्वराज्य पार्टी की स्थापना

1920 ई० के अन्त तक नई सुधार योजना के अनुसार बनाने वाली व्यवस्थापिका सभाओं का निर्वाचन होने वाला था और तब तक परिस्थितियों में काफी परिवर्तन हो चुका था। देश में कुछ ऐसी घटनायें जिन्होंने महात्मा गांधी को असहयोग के पक्ष में ला दिया। सी० आर० दास तथा मोतीलाल नेहरू व्यक्तिगत रूप से इस प्रस्ताव के पक्ष में न होते हुए भी असहयोग के पक्ष में हो गये। यह स्थिति सन् 1922 तक बनी रही। परन्तु जब गांधीजी ने असहयोग आन्दोलन को अचानक रोक दिया तो कांग्रेस का एक पक्ष कौंसिल प्रवेश के लिए जोर लगाने लगा। इसके फलस्वरूप कांग्रेस में एक नये दल की स्थापना हुई जो स्वराज्य पार्टी के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस दल के नेता श्री सी० आर० दास और मोतीलाल नेहरू थे।

स्वराज्य पार्टी की स्थापना के कारण

असहयोग आन्दोलन के स्थगन और महात्मा गांधी की गिरफ्तारी के परिणाम स्वरूप देश में निराशा और उत्साहहीनता व्याप्त होती जा रही थी। कांग्रेस रचनात्मक

कार्यों जैसे शराबबन्दी, चर्खा, चलाना, छूआ-छूत निवारण और हिन्दू-मुसलिम एकता में लगी हुई थी। परन्तु मात्र इन कार्यों से ही स्वतन्त्रता प्राप्ति असम्भव थी। देश में जनजागरण को बनाये रखने के लिए यह आवश्यक था कि आम जनता के सामने कुछ सक्रिय कार्यक्रम रखे जायें। गांधीजी ने जिस ढंग से असहयोग आन्दोलन स्थगित कर दिया था, उससे लोगों में जोरदार प्रतिक्रिया हुई। बंगाल से श्री सी० आर० दास, उत्तर भारत से पं० मोतीलाल नेहरू तथा दक्षिण से एन० सी० केलकर ने जोरदार शब्दों में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की।

देश की ऐसी ही परिस्थिति में देशबन्धु चितरंजनदास के मन में कांग्रेस के सामने एक नया कार्यक्रम रखने का विचार आया। उन्होंने यह विचार प्रकट किया कि विधान सभाओं के बहिष्कार का अन्त किया जाये और उनमें प्रवेश कर उनके अन्दर असहयोग की नीति का प्रयोग किया जाये। यहाँ इस बात का उल्लेख कर देना उचित होगा कि असहयोग की सफलता की जाँच तथा आगामी कार्यक्रम के निर्धारण के लिए जो सत्य-समिति गठित की गई थी, उसने अपनी अन्य सिफारिशों के साथ-साथ कौंसिल में प्रवेश करने की भी सिफारिश की थी। इस समय कांग्रेस का 37वां अधिवेशन दिसम्बर, 1922 ई० में गया में हुआ। कांग्रेस में एकत्रित प्रतिनिधियों में कौंसिल प्रवेश के प्रश्न पर गहरा मतभेद हो गया। कांग्रेस में दो मत वाले हो गये—परिवर्तनवादी और परिवर्तन विरोधी। परिवर्तनवादी दल का नेतृत्व चितरंजनदास कर रहे थे और परिवर्तन विरोधी दल का श्री राजगोपालचारी। परिवर्तनवादियों का विचार था कि विधान सभाओं में प्रवेश कर उदारवादी, अवसरवादी तथा सरकारी चमचों को कौंसिल में जाने से रोका जाय और सरकार की मनमानी पर नियन्त्रण रखा जाये।

स्वराज्य पार्टी का संगठन

कांग्रेस पार्टी से इस्तीफा देकर, देशबन्धु सी० आर० दास स्वराज्य पार्टी के संगठन में लग गये। उनके साथ पं० मोतीलाल नेहरू ने भी अथक परिश्रम किया। इन दोनों व्यक्तियों के प्रयत्न से इलाहबाद में स्वराज्य पार्टी का प्रथम अधिवेशन बुलाया गया तथा मार्च, 1923 ई० में उसका संविधान और कार्यक्रम निर्धारित किया गया। अब यह आवश्यक था कि स्वराज्य पार्टी के सम्बन्ध में कांग्रेस अपनी नीति स्पष्ट करे। इसके लिए सितम्बर, 1923 ई० में कांग्रेस का अधिवेशन दिल्ली बुलाया गया। इस अधिवेशन में कौंसिल-प्रवेश विरोधियों तथा कौंसिल-प्रवेश समर्थकों के बीच एक समझौता हुआ। इसमें कहा गया कि कांग्रेस जन व्यक्तिगत रूप से परिषदों के लिए उम्मीदवार हो सकते हैं। स्वराज्यवादियों ने निर्वाचन के लिए एक कुशल तथा निपुण संगठन स्थापित किया। इस दल की शाखायें सम्पूर्ण देश में स्थापित की गयीं।

स्वराज्य पार्टी के कार्य

कांग्रेस का समर्थन प्राप्त कर स्वराज्य पार्टी वालों ने निर्वाचन में भाग लिया। 1923 ई० का चुनाव मुख्यत: उदार दल और स्वराज्यवादियों के बीच लड़ा गया। चूंकि उदार दल वाले जनता में अपनी प्रतिष्ठा खो चुके थे, फलत: स्वराज्य पार्टी वालों को निर्वाचन में आशातीत सफलता मिली। मध्यप्रदेश की विधान परिषद में उन्हें स्पष्ट बहुमत मिला। बंगला और उत्तर प्रदेश में भी वे काफी संख्या में जीते केन्द्रीय धारा सभा में भी उन्हें 145 सीटों में से 45 सीटें मिलीं। वहाँ सहयोगियों

के साथ मिलकर उन्होंने कुछ महत्वपूर्ण कार्य किये। एक प्रस्ताव द्वारा 1921 ई० के राजद्रोही सभाबन्दी कानून को रद्द करने की माँग की गई। भारत में एक सैनिक स्कूल खोलने का एक बिल भी स्वराज्य पार्टी ने पेश किया।

फरवरी, 1924 ई० में पं० मोतीलाल नेहरू ने केन्द्रीय धारा-सभा में एक महत्वपूर्ण प्रस्ताव पेश किया। इस प्रस्ताव के द्वारा गवर्नर जनरल को भारत में उत्तरदायी शासन स्थापित करने के लिए सन् 1919 के अधिनियम में संशोधन लाने को कहा गया। भारत का भावी संविधान बनाने के लिए एक गोलमेज सम्मेलन बुलाने की भी माँग की गई। परन्तु भारत सरकार द्वारा इन प्रस्तावों पर कोई कार्यवाही नहीं की गई। तब कई बार स्वराज्य पार्टी वालों ने विधान सभा की बैठकों में बजट की माँगों को अस्वीकार कर दिया। सरकारी समारोहों और उत्सवों के निमन्त्रण भी स्वीकार नहीं किये गये।

प्रान्तों में भी स्वराज्यवादियों ने बहुत जगह शासन को असफल बना दिया। मध्य प्रान्तों में स्वराज्यवादियों ने हस्तांतरित विषयों का उत्तरदायित्व लेना अस्वीकार कर दिया। बजट में हस्तांतरित विषयों से सम्बन्धित सभी माँगों को अस्वीकार कर दिया गया, क्योंकि इन विषयों के मन्त्री दूसरे दल के थे। बंगाल में सी० आर० दास ने मन्त्रिमण्डल बनाने से इन्कार कर दिया और दूसरे दल वालों को भी मन्त्रिमण्डल नहीं बनाने दिया। सन् 1924 के प्रारम्भ में सरकार को 3 बार त्यागपत्र देने पड़े। शेष प्रान्तों में स्वराज्यवादियों का अल्पमत था। इसलिए कोई महत्वपूर्ण बात नहीं हुई। विधान सभाओं में सरकार के खिलाफ विरोध-प्रदर्शन करने के लिए स्वराज्य पार्टी वाले बहुधा 'वाक आउट' कर जाते थे। सी० वाई० चिन्तामणि ने लिखा है कि विधानमण्डलों के भीतर जाना और शीघ्र ही 'वाक आउट' कर जाना उस समय का आम दृश्य हो गया था। सर तेजबहादुर सप्रू ने स्वराज्यवादियों द्वारा इस प्रकार की वाक आउट की कार्यवाही को 'स्वचालित देशभक्ति' की संज्ञा दी।

प्रश्न 4—मुसलिम लीग का जन्म क्यों हुआ ? इसका स्वतन्त्रता संग्राम पर क्या प्रभाव पड़ा ? (1087)

उत्तर--

मुस्लिम लीग का जन्म

आगा खाँ के नेतृत्व में भेजा गया शिष्टमण्डल अपने कार्य में सफल हुआ। इससे अब मुसलमानों के दिमाग में एक राजनैतिक संगठन कायम करने की बात आयी। फलस्वरूप 30 दिसम्बर, 1906 ई० में ढाका में मुसलिम नेताओं की एक बैठक हुयी और वहीं पर अखिल भारतीय मुसलिम लीग की स्थापना करने का निश्चय किया गया। 1907 ई० में करांची में उसका संविधान बनाया गया और 1908 ई० के लखनऊ सम्मेलन में इसे स्वीकृत कर लिया। इसके विधान में मुसलिम लीग के निम्नलिखित उद्देश्य घोषित किये गये—

(1) भारतीय मुसलमानों में अँग्रेजों के प्रति निष्ठा की भावना पैदा करना तथा सरकार के प्रति फैली गलतफहमी को दूर करना।

(2) भारतीय मुसलमानों के राजनीतिक तथा अन्य अधिकारों की रक्षा करना तथा अपनी माँगों को नम्र शब्दों में सरकार के सामने रखना।

(3) ऊपर बताये गये उद्देश्यों को हानि पहुँचाये बिना दूसरी जातियों के साथ मित्रता की भावना पैदा करना।

लेकिन थोड़े ही दिनों बाद मुसलिम लीग एक हठवादी संस्था बन गयी। साम्प्रदायिक निर्वाचन के लिए यह सरकार दबाव डालने लगी।

स्वतन्त्रता संग्राम पर लीग का प्रभाव

सन् 1930 के इलाहाबाद वाले लीग के अधिवेशन में डॉ० मुहम्मद इकबाल ने भारत के उत्तर-पश्चिम प्रान्तों को मिलाकर एक मुसलिम राज्य बनाने की भावना व्यक्त की थी। इसका प्रभाव इंगलैण्ड में पढ़ने वाले भारतीय मुसलमान छात्रों पर भी पड़ा। 1933 ई० में लन्दन में पढ़ने वाले कुछ मुसलिम छात्रों ने रहमत अली के नेतृत्व में पाकिस्तान की योजना बनायी। सन् 1940 में लीग के अधिवेशन में, जो लाहौर में हुआ था, मुहम्मद अली जिन्ना ने भी "दो राष्ट्रों के सिद्धान्त" के आधार पर मुसलमानों के लिए अलग राज्य की माँग की। यहीं से पाकिस्तान की माँग ने व्यावहारिक रूप धारण कर लिया। इसका परिणाम यह हुआ कि भारत की एकता भंग हो गयी जिसके फलस्वरूप भारत को स्वतन्त्र होने में काफी विलम्ब हुआ। लीग के कारण ही कांग्रेस की प्रत्येक राष्ट्रवादी और जनतांत्रिक माँग का विरोध होने लगा। 15 अगस्त, 1947 ई० को स्वतन्त्रता प्राप्ति पर भारत का विभाजन भारत और पाकिस्तान के रूप में हो गया जिससे देश की अखण्डता नष्ट हो गयी।

प्रश्न 5—कांग्रेस के जन्म का इतिहास संक्षेप में लिखिए।

उत्तर—भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का जन्म—भारतीय राष्ट्रवादी नेताओं के अतिरिक्त कुछ उदारवादी अँग्रेज जैसे भारतीय सिविल सर्विस पेंशन प्राप्त मिस्टर ह्यूम (Hume) भी एक राष्ट्रीय संस्था की स्थापना के हिमायती थे। उन्होंने मार्च, 1883 ई० को कलकत्ता विश्वविद्यालय के स्नातकों के नाम एक दिल हिला देने वाला पत्र लिखकर एक राष्ट्रीय संगठन की स्थापना की अपील की।

इसी पृष्ठभूमि में 1884 ई० में अडियार (मद्रास) में हुए थियोसोफिकल सोसाइटी के वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर मद्रास में दीवान बहादुर रघुनाथ राव के निवास-स्थान पर देश के प्रमुख 27 व्यक्तियों की बैठक में लिये गये निश्चय के फलस्वरूप दिसम्बर 1884 ई० में "इण्डियन नेशनल यूनियन" नामक एक देशव्यापी संस्था की स्थापना हुई।

मिस्टर ह्यूम नहीं चाहते थे कि इस देशव्यापी संगठन द्वारा राजनीतिक विषयों पर वाद-विवाद हो। उनके अनुसार तो जिस प्रान्त में इस संगठन की बैठक होती, उस प्रान्त के गवर्नर उस बैठक का सभापतित्व करते और इस प्रकार उक्त संगठन को सरकारी संरक्षण प्राप्त होता। किन्तु जब मि० ह्यूम तत्कालीन भारतीय वायसराय लार्ड डफरिन से इस संगठन के सम्बन्ध में चर्चा करने गये तब लार्ड डफरिन ने परामर्श दिया कि वे उस संगठन को राजनीतिक स्वरूप लेने दें। लार्ड डफरिन स्वयं भारतीय जनता के असन्तोष के वैधानिक निष्कासन के उपायों की खोज में लगे थे। उनकी राय में भारत में एक ऐसे राजनीतिक संगठन की आवश्यकता थी जो प्रतिवर्ष ब्रिटिश सरकार को बताती थी कि उसके शासन में क्या दोष है और उन्हें कैसे सुधारा जाय?

इस प्रकार वायसराय डफरिन का आशीर्वाद प्राप्त कर ह्यूम साहब इंगलैण्ड गये। वहाँ उन्होंने भारतीय समस्याओं में दिलचस्पी तथा जानकारी रखने वाले अँग्रेज नेताओं से इस प्रस्तावित संगठन की योजना के सम्बन्ध विचार-विमर्श किया।

मार्च, 1885 ई० में उनके इंग्लैण्ड से भारत लौटने पर यह निश्चय किया गया कि आगामी बड़े दिनों की छुट्टियों में देश के सभी भागों के प्रतिनिधियों की एक सभा पूना में बुलायी जाये। इस आशय से एक परिपत्र प्रचारित किया गया जिसका मुख्य अंश इस प्रकार था।

25 से 31 दिसम्बर, 1885 ई० तक पूना में "इण्डियन नेशनल यूनियन" की एक सभा होगी। इसमें बंगाल, बम्बई और मद्रास प्रदेशों के अंग्रेजी जानने वाले प्रमुख प्रतिनिधि सम्मिलित होंगे।

यद्यपि परिपत्र में इस होने वाली सभा को इण्डियन नेशनल यूनियन का जलसा कहा गया था। लेकिन सम्मेलन से कुछ दिनों पहले इसका नाम बदलकर इसे इण्डियन नेशनल अधिवेशन की संज्ञा दी गयी।

28 दिसम्बर, 1885 ई० को दोपहर के 12 बजे से बम्बई के गोकुलदास तेजपाल कॉलेज में अधिवेशन शुरू हुआ। इसमें देश के विभिन्न भागों से 72 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इसी सम्लेलन ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को जन्म दिया। यह भी कहा जा सकता है कि दिसम्बर, 1884 ई० में जिस इण्डियन नेशनल यूनियन की स्थापना की गयी थी। उसी का नया नामकरण दिसम्बर, 1885 ई० में इण्डियन नेशनल कांग्रेस के रूप में हुआ।

इस अधिवेशन का सभापतित्व श्री उमेशचन्द्र बनर्जी ने किया। जिनके अनुसार, "भारत-भूमि में इतिहास की याद में, ऐसा महत्वपूर्ण और विस्तृत प्रतिनिधित्व पूर्ण सम्मेलन नहीं हुआ था।" इस प्रकार भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का जन्म एक देशी पार्लियामेंट के रूप में हुआ। पं० मदनमोहन मालवीय के शब्दों में, कांग्रेस में भारत ने अपनी वाणी को प्रकट करने का माध्यम पाया।"

प्रश्न 6—स्वतन्त्र भारत की क्या उपलब्धियाँ हैं ?

उत्तर—स्वतन्त्र भारत की उपलब्धियाँ—स्वतन्त्र भारत की निम्नलिखित उपलब्धियाँ हैं—

(1) स्वतन्त्रता के पश्चात् देश में अनेक रियासतें थीं। ये स्वतन्त्र भारत के लिए समस्या थीं। यह सरदार पटेल की सूझ-बूझ का परिणाम है कि आज भारत में देशी रियासतों की कोई समस्या नहीं है।

(2) 1947 ई० में पाकिस्तान ने काश्मीर पर आक्रमण किया। उस समय काश्मीर ने भारत से विलय होने की प्रार्थना की। भारत ने काश्मीर को अपने में विलय कर लिया।

(3) 1947 ई० को नवम्बर में जूनागढ़ को भारत में लिया गया।

(4) सितम्बर, 1948 ई० में हैदराबाद भारत में मिल गया।

(5) स्वतन्त्रता के पश्चात् भारत ने अनेक नदी घाटी योजनाएँ बनायीं। इस प्रकार भारत आर्थिक विकास के पथ पर अग्रसर हुआ है।

(6) स्वाधीनता के पश्चात् सरकार ने पिछड़ी जातियों के उत्थान के लिए विशेष कार्य किया।

(7) पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत विभिन्न उद्योगों का विकास किया गया है।

(8) सिंचाई के साधनों का विकास किया गया है।

(9) कृषि उपकरणों में सुधार किया गया है।
(10) अब रासायनिक खादों का प्रयोग अधिक होता है।
(11) राष्ट्रीय आय में वृद्धि हुई है।
(12) भारत ने विदेशी नीति में तटस्थता की नीति को अपनाया है।
(13) भारत ने पंचशील की नीति को अपनाया है।
(14) स्वतन्त्रता भारत ने सामाजिक तथा आर्थिक क्षेत्र में प्रगति की है।
(15) भारत सरकार ने सामान्य जनता के जीवन-स्तर को ऊँचा उठाने का प्रयास किया है।
(16) भारत ने कुछ सीमा तक निर्धनता की समस्या को हल किया है।
(17) भारत ने अन्तरिक्ष विज्ञान में भी प्रगति की है।
(18) भारत ने जनसंख्या की समस्या का समाधान करने के लिए परिवार नियोजन (परिवार-कल्याण) को बढ़ावा दिया है।
(19) भारत सरकार ने देश से अस्पृश्यता दूर करने का प्रयास किया है।
(20) भारत सरकार ने हरिजनों के उत्थान के लिए अनेक कार्यक्रम बनाये हैं ?

प्रश्न 7—भारतीय रियासतों का विलय क्यों और किस प्रकार किया गया ?

उत्तर—भारत 15 अगस्त, 1947 को स्वतन्त्र हुआ। ब्रिटिश शासन ने भारत को सत्ता सौंपते समय 1947 ई० में भारत में लगभग 562 रियासतों को स्वतन्त्र छोड़ दिया था। सरकार के सामने इन रियासतों की एक गम्भीर समस्या थी। सरकार ने इस समस्या को बड़ी सफलता के साथ हल किया। सरदार पटेल ने इस क्षेत्र में बहुत ही सराहनीय कार्य किया। तत्कालीन गृहमन्त्री सरदार पटेल की अध्यक्षता में एक रियासतीय मन्त्रालय बनाया गया। सरदार पटेल ने भारतीय राजाओं से अपील की। उनकी अपील पर उनके प्रयत्नों के फलस्वरूप जूनागढ़, हैदराबाद एवं काश्मीर को छोड़कर समस्त रियासतें भारतीय संघ में मिल गयीं। बाद में जनमत के आधार पर जूनागढ़ और हैदराबाद की रियासतों तथा पाकिस्तानी सैनिकों की घुसपैठ के कारण काश्मीर के महाराजा ने भी भारतीय संघ में मिलने की घोषणा कर दी। काश्मीर को मिलाने के लिए भारत को सैनिक शक्ति का प्रयोग करना पड़ा। कुछ वर्षों के उपरान्त भारत सरकार ने गोवा, दमन व दियू को पुर्तगाली दासता से मुक्त करा दिया तथा संघ में सम्मिलित कर लिया।

इस प्रकार भारतीय रियासतों का विलय किया गया और भारत संघ राजनीतिक दृष्टि से शक्तिशाली एवं स्थायी बन गया।

परीक्षा में पूछे गये तथा अन्य बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1—नीचे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन का स्थान और सभापति का नाम दिया है। सही विकल्प उत्तर पुस्तिका में लिखिये—

स्थान	सभापति
(अ) अहमदाबाद	श्री दादाभाई नौरोजी
(ब) राजकोट	श्री मोहनदास कर्मचन्द्र गांधी
(स) बम्बई	श्री उमेशचन्द्र बनर्जी
(द) दिल्ली	पं० जवाहर लाल नेहरू।

उत्तर—(स) बम्बई—श्री उमेशचन्द्र बनर्जी।

प्रश्न 2—1857 की क्रान्ति होने का स्थान था— (1987)

(अ) दिल्ली (ब) कानपुर

(स) झांसी (द) मेरठ।

उत्तर—(द) मेरठ।

प्रश्न 3—स्वतन्त्र भारत का प्रथम भारतीय गवर्नर जनरल था। (1987)

(अ) डॉ० राजेन्द्र प्रसाद (ब) सी० राजगोपालाचार्य

(स) पं० जवाहर लाल नेहरू (द) सर सैय्यद अहमद खाँ।

उत्तर—(ब) सी० राजगोपालाचार्य।

प्रश्न 4—भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के संस्थापक कौन थे? (1991)

(क) सुरेन्द्रनाथ बनर्जी (ब) महात्मा गांधी

(स) गोपालकृष्ण गोखले। (द) ए० ओ० ह्यूम।

उत्तर—(द) ए० ओ० ह्यूम।

प्रश्न 5—जलियाँ वाला बाग कहाँ स्थित है? (1988)

(अ) अमृतसर (ब) लाहौर

(स) पटियाला (द) जालंधर।

उत्तर—(अ) अमृतसर।

प्रश्न 6—'भारत छोड़ो' आन्दोलन किस वर्ष चलाया गया? (1985)

(अ) 1941 ई० (ब) 1945 ई०

(स) 1942 ई० (द) 1931 ई०।

उत्तर—(स) 1942 ई०

प्रश्न 7—भारत में नया संविधान कब लागू हुआ था? (1990)

(अ) 15 अगस्त, 1947 ई० (ब) 26 जनवरी, 1950 ई०

(स) 30 जनवरी, 1950 ई० (द) 15 अगस्त, 1948 ई०।

उत्तर—(ब) 26 जनवरी 1950 ई०।

□

12 प्रजातन्त्र में जनजीवन

हमारा संविधान

अति लघुउत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—कैबिनेट मिशन कब भारत आया था ?

उत्तर—कैबिनेट मिशन मार्च, 1946 में भारत आया था।

प्रश्न 2—भारतीय संविधान कितने समय में बनकर तैयार हुआ था ? (1988)

उत्तर—भारतीय संविधान 2 वर्ष, 11 माह तथा 18 दिन में बनकर तैयार हुआ था।

प्रश्न 3—भारतीय संविधान कब लागू किया गया ? (1988, 90)

उत्तर—भारतीय संविधान 26 जनवरी, 1950 ई० को लागू किया गया।

प्रश्न 4—भारतीय संविधान द्वारा कितनी आयु के नागरिकों को मत प्रदान करने का अधिकार है ? (1990)

उत्तर—भारतीय संविधान द्वारा 18 वर्ष एवं उससे अधिक आयु के नागरिकों को मत प्रदान करने का अधिकार है।

प्रश्न 5—हम गणतन्त्र दिवस कब मनाते हैं ?

उत्तर—हम गणतन्त्र दिवस प्रतिवर्ष 26 जनवरी को मनाते हैं।

प्रश्न 6—भारतीय संविधान में कुल कितने अनुच्छेद हैं ?

उत्तर—भारतीय संविधान में कुल 395 अनुच्छेद हैं।

परीक्षा में पूछे गये तथा अन्य लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 7—भारतीय संविधान को एकात्मक प्रकट करने वाला एक लक्षण बताइए। (1986)

उत्तर—भारतीय संविधान को एकात्मक प्रकट करने वाला एक मुख्य लक्षण एक राष्ट्रभाषा की व्यवस्था है।

प्रश्न 8—संविधान द्वारा भारत में किस प्रकार की नागरिकता प्रदान की गई है ? (1986)

उत्तर—संविधान द्वारा भारत में इकहरी नागरिकता प्रदान की गई है।

प्रश्न 9—हमारे संविधान में राष्ट्रभाषा किस भाषा को माना है ?

उत्तर—हमारे संविधान में हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा माना है।

लघुउत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न संविधान से क्या अभिप्रायः है ? (1989)

उत्तर—सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न संविधान से अभिप्राय यह है कि समस्त बाह्य तथा आन्तरिक शक्तियाँ राष्ट्र के हाथ में हैं। वह अपनी नीतियों के सम्बन्ध में किसी विदेशी शक्ति के नियन्त्रण में नहीं है। इस दृष्टि से हमारा भारतीय संविधान सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न संविधान है।

प्रश्न 2—भारतीय संविधान में कौन-कौन से संघात्मक लक्षण पाये जाते हैं ? (1985)

उत्तर—संघात्मक लक्षण—भारतीय संविधान के संघात्मक लक्षण निम्नलिखित हैं—

(1) यह लिखित, सर्वोच्च तथा अपरिवर्तनशील संविधान है।
(2) इसमें केन्द्र तथा राज्य की शक्ति का स्पष्ट विभाजन है।
(3) इसमें स्वतन्त्र न्यायपालिका की व्यवस्था है।
(4) इसमें दोहरी प्रशासनिक व्यवस्था का प्राविधान है।

प्रश्न 3—लोकतन्त्रात्मक गणराज्य का क्या अर्थ है ?

उत्तर—लोकतन्त्रात्मक राज्य का अर्थ है—देश का शासन जनता का, जनता के लिए तथा जनता के द्वारा किया जायगा।

प्रश्न 4—हम गणतन्त्र दिवस क्यों मनाते हैं ?

उत्तर—भारतीय संविधान 26 जनवरी, 1950 ई० को भारत में लागू किया गया। इसी दिन से भारत एक सम्पूर्ण प्रभुत्वसम्पन्न गणतन्त्रात्मक गणराज्य घोषित हुआ। इसलिए हम प्रतिवर्ष 26 जनवरी को गणतन्त्र दिवस राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनाते हैं।

प्रश्न 5—भारतीय संविधान के चार एकात्मक लक्षण बताइए। (1985)

उत्तर—भारतीय संविधान के चार एकात्मक लक्षण इस प्रकार हैं—

(1) इकहरी नागरिकता,
(2) एक राष्ट्र भाषा,
(3) शक्तिशाली केन्द्र की स्थापना,
(4) आपातकालीन व्यवस्था।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—भारतीय संविधान की मूलभूत विशेषताओं का वर्णन कीजिए। (1984, 87, 90)

उत्तर—भारतीय संविधान की मूलभूत विशेषताएं—भारत का संविधान 26 जनवरी, 1950 को सम्पूर्ण देश में लागू हुआ था। यह संविधान विश्व के संविधानों में एक महत्वपूर्ण संविधान है। भारतीय संविधान की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

1. **लिखित संविधान**—भारत का संविधान लिखित संविधान है। इस संविधान में अधिक से अधिक बातों को लिखित रूप प्रदान किया गया है तथा इसे सभी प्रकार से पूर्ण बनाने का प्रयास किया गया है। ऐसा इसलिए किया गया है कि जिससे किसी को किसी भी प्रकार के भ्रम की गुन्जाइश न रहे।

2. **विशाल संविधान**—भारत का संविधान एक विशाल संविधान है। यह संसार के सभी देशों के संविधानों से अधिक विशाल संविधान है। भारत के संविधान में नागरिकता, मौलिक अधिकार, राज्य के नीति-निर्देशक तत्वों, अल्पसंख्यकों, अनुसूचित जातियों तथा जन-जातियों के विशेष अधिकारों का समावेश किया गया है। इन सभी विशेषताओं के कारण भारत का संविधान बहुत अधिक विशाल हो गया है।

3. **सम्पूर्ण प्रभुत्व-सम्पन्न लोकतन्त्रात्मक गणराज्य**—भारत का संविधान सम्पूर्ण प्रभुत्व-सम्पन्न लोकतन्त्रात्मक गणराज्य है। इसका तात्पर्य यह है कि हमारा गणराज्य आन्तरिक और बाहरी दोनों ही प्रकार से सर्वोत्तम सत्ताधारी है। इसके साथ ही साथ भारत एक लोकतन्त्रात्मक राज्य है अर्थात् भारत की राजसत्ता जनता में निहित है। गणराज्य का आशय यह है कि शासन का अध्यक्ष "राष्ट्रपति" सम्राट न होकर जनता द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियों द्वारा निर्वाचित किया जाता है।

4. **धर्मनिरपेक्ष राज्य की स्थापना**—भारतीय संविधान के द्वारा भारत में धर्म-निरपेक्ष राज्य की स्थापना की गयी है। इसका अर्थ यह है कि राज्य और धर्म का क्षेत्र अलग-अलग है तथा राज्य की दृष्टि में सभी धर्म बराबर हैं इसलिए धर्म के नाम पर राज्य तथा शासन के द्वारा किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं किया जा सकता है, व्यक्ति को अपनी इच्छा के अनुसार धार्मिक संस्थायें स्थापित करने तथा उनके संचालन का अधिकार है।

5. **संसदात्मक शासन व्यवस्था**—भारतीय संविधान के अनुसार देश में संसदात्मक शासन व्यवस्था की स्थापना की गयी है। संसदात्मक शासन के तीन प्रमुख लक्षण होते हैं : (i) शासन का नाममात्र का प्रधान, (ii) व्यवस्थापिका और कार्यपालिका का पारस्परिक सम्बन्ध, तथा (iii) कार्यपालिका का कार्यकाल निश्चित न होना। हमारे देश के संविधान में संसदात्मक शासन के सभी प्रमुख लक्षण विद्यमान हैं। राष्ट्रपति भारतीय शासन का नाममात्र का प्रधान है।

6. **मौलिक अधिकार की व्यवस्था**—भारतीय संविधान में नागरिकों को मौलिक या मूल अधिकार प्रदान किये गये हैं। मौलिक अधिकारों का तात्पर्य संविधान द्वारा नागरिकों को प्रदान किये गये ऐसे अधिकार और स्वतन्त्रताओं से है जिन्हें राज्य तथा सरकार के विरुद्ध भी लागू किया जा सकता है। संविधान द्वारा नागरिकों को 7 मौलिक अधिकार प्रदान किये गये थे। लेकिन 44वें संवैधानिक संशोधन द्वारा सम्पत्ति के अधिकार को एक मौलिक अधिकार से केवल एक कानूनी अधिकार कर दिया गया है। इस प्रकार वर्तमान समय में भारतीय नागरिकों को 6 मौलिक अधिकार प्राप्त हैं।

7. **राज्य के नीति-निर्देशक तत्वों का उल्लेख**—भारतीय संविधान में शासन के संचालन के लिए कुछ मूलभूत सिद्धान्तों का वर्णन किया गया है और इन्हें ही राज्य के नीति-निर्देशक तत्व कहा गया है। राज्य के नीति-निर्देशक तत्वों को वैज्ञानिक शक्ति तो प्राप्त नहीं है, लेकिन इन्हें नैतिक और राजनैतिक शक्ति अवश्य

ही प्राप्त है। इन तत्वों के आधार पर भारत में लोककल्याणकारी राज्य की स्थापना की गयी है।

8. स्वतन्त्र न्यायपालिका—भारतीय संविधान की एक प्रमुख विशेषता स्वतन्त्र न्यायपालिका है। न्यायपालिका हमारे संविधान की रक्षक है। न्यायपालिका की स्वतन्त्रता हेतु संविधान में अनेकों महत्वपूर्ण व्यवस्थायें की गयी हैं।

9 वयस्क मताधिकार का प्रारम्भ—भारतीय संविधान के अन्तर्गत नागरिकों को वयस्क मताधिकार प्रदान किया गया है। इस अधिकार के अनुसार सभी वयस्क स्त्री-पुरुषों "पागल, दिवालिये और अपराधियों को छोड़कर" को मतदान का अधिकार दिया गया है। मतदान के लिए वयस्कता की आयु 18 वर्ष रखी गयी है।

10. अल्पसंख्यक तथा पिछड़े हुए वर्गों के कल्याण की विशेष व्यवस्था—भारतीय संविधान में अल्पसंख्यक तथा पिछड़े हुए वर्गों के कल्याण की विशेष व्यवस्था की गई है। इसके अतिरिक्त भारतीय संविधान के अन्तर्गत अनुसूचित जातियों तथा जनजातियों को विशेष संरक्षण प्रदान किया गया है। प्रारम्भ में यह व्यवस्था 1960 ई० तक के लिए थी परन्तु 45वें संवैधानिक संशोधन के अनुसार इसे 1990 ई० तक के लिए बढ़ा दिया गया है।

11. इकहरी नागरिकता—भारतीय संविधान के अन्तर्गत सभी नागरिकों को इकहरी नागरिकता प्रदान की गयी है क्योंकि भारतीय संविधान निर्माताओं का यह विचार था कि दोहरी नागरिकता भारत की एकता को बनाये रखने में सहायक सिद्ध नहीं हो सकती है। अतः संविधान निर्माताओं द्वारा राज्य संघ की स्थापना करते हुए भी दोहरी नागरिकता की व्यवस्था नहीं की गयी। वरन् एकल "इकहरी" नागरिकता की व्यवस्था की गयी है।

12. एक राष्ट्रीय भाषा की व्यवस्था—भारतीय संविधान की एक प्रमुख विशेषता एक राष्ट्रीय भाषा की व्यवस्था है। राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करने के लिए हमारे संविधान में हिन्दी को देवनागरी लिपि में भारत की राष्ट्रभाषा घोषित किया गया है। एक राष्ट्रभाषा की यह व्यवस्था क्षेत्रीय भाषाओं की प्रगति के मार्ग में बाधा नहीं है। संविधान में भारतीय भाषाओं को विभिन्न राज्यों में प्रादेशिक भाषा के लिए स्वीकार कर लिया गया है।

13. कल्याणकारी राज्य की स्थापना—भारतीय संविधान के अनुसार देश में कल्याणकारी राज्य की स्थापना की गयी है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए समाजवादी ढाँचे के समाज की स्थापना की नीति निर्धारित की गई है। देश में कल्याणकारी राज्यों की स्थापना से सभी क्षेत्रों में बहुत अधिक प्रगति हुई है तथा गाँवों की स्थिति में बहुत अधिक परिवर्तन आ गये हैं।

14 सामाजिक समानता की स्थापना—भारतीय संविधान के अनुसार सम्पूर्ण देश में सामाजिक समानता की स्थापना की गयी है। संविधान के द्वारा सामाजिक क्षेत्र में सभी नागरिकों की समानता के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया गया है। अस्पृश्यता या छूआछूत का अन्त कर दिया गया है। भारत में दलित वर्गों की गिरी हुई स्थिति में सुधार करने के लिए संविधान में इस प्रकार की व्यवस्था करना भी आवश्यक था।

उपर्युक्त महत्वपूर्ण विशेषताओं के अतिरिक्त भारतीय संविधान की अन्य

विशेषताएँ समाजवादी राज्य, एकात्मकता की ओर झुका हुआ संघात्मक शासन, साम्प्रदायिक निर्वाचन क्षेत्र की समाप्ति तथा संकटकालीन उपलब्ध आदि हैं।

परीक्षा में पूछे गये तथा बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1—भारत का संविधान देश में लागू हुआ था— (1988)

(i) 15 अगस्त, 1947 को
(ii) 30 जनवरी, 1948 को
(iii) 26 जनवरी, 1950 को
(iv) 30 जनवरी, 1930 को।

उत्तर—(iii) 26 जनवरी 1950 को।

प्रश्न 2—कैबिनेट मिशन भारत में आया था—

(i) जनवरी, 1930 (ii) अगस्त, 1947
(iii) मार्च, 1947 (iv) सितम्बर, 1948।

उत्तर—(iii) मार्च 1947।

प्रश्न 2—भारत की राष्ट्रभाषा है—

(i) अंग्रेजी (ii) उर्दू
(iii) हिन्दी (iv) कोई नहीं।

उत्तर—(iii) हिन्दी।

प्रश्न 4—भारतीय सविधान में—

(i) 480 अनुच्छेद हैं (ii) 390 अनुच्छेद हैं
(iii) 395 अनुच्छेद हैं (iv) 495 अनुच्छेद हैं।

उत्तर—(iii) 395 अनुच्छेद हैं।

प्रश्न 5—भारतीय संविधान की सर्वश्रेष्ठ विशेषता है—

(i) लोकतन्त्र की स्थापना
(ii) विकसित संविधान
(iii) धर्म सापेक्ष तथा संविधान
(iv) सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न संविधान।

उत्तर—(iv) सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न संविधान।

संसदीय शासन एवं संघीय स्वरूप—संघीय एवं राज्य सरकारें

अति लघुउत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—भारतीय संसद के दोनों सदनों के क्या नाम हैं? (1987)

उत्तर—भारतीय संसद के दोनों सदनों के नाम राज्य उच्च सदन सभा एवं लोकसभा निम्न सदन हैं।

प्रश्न 2—भारत में केन्द्रीय मन्त्रिपरिषद के प्रधान को क्या कहते हैं?

उत्तर—भारत में केन्द्रीय मन्त्रिपरिषद के प्रधान को प्रधानमन्त्री कहते हैं।

प्रश्न 3—उत्तर प्रदेश के विधानमण्डल में कितने सदन हैं तथा उनके क्या नाम हैं ? (1988)

उत्तर—उत्तर प्रदेश के विधानमण्डल में दो सदन हैं तथा उनके नाम विधान सभा तथा विधान परिषद हैं।

प्रश्न 4—भारत में कुल कितने संघ शासित क्षेत्र हैं ?

उत्तर—भारत में कुल 9 संघ शासित क्षेत्र हैं।

प्रश्न 5—भारत में कुल कितने राज्य हैं ? (1990)

उत्तर—भारत में कुल 25 राज्य हैं।

परीक्षा में पूछे गये तथा अन्य लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 6—भारत में किस प्रकार की शासन प्रणाली है ? (1984)

उत्तर—भारत में संसदीय शासन प्रणाली है।

प्रश्न 7—केन्द्र शासित क्षेत्रों का शासन किसके अधीन होता है ?

उत्तर—केन्द्र शासित क्षेत्रों का शासन भारत सरकार द्वारा नियुक्त चीफ कमिश्नरों या उप राज्यपालों के अधीन होता है।

लघुउत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—संसदात्मक शासन की मुख्य विशेषताएँ क्या हैं ? (1984)

उत्तर—"संसदात्मक शासन वह शासन प्रणाली है, जिसमें वास्तविक कार्यपालिका अर्थात् मन्त्रि-मण्डल अपनी राजनीतिक नीतियों तथा कार्यों के लिए वैधानिक और तात्कालिक रूप में व्यवस्थापिका के प्रति और अन्तिम रूप में निर्वाचक मण्डल के प्रति उत्तरदायी होता है। इसमें राष्ट्रपति नाममात्र को वैधानिक प्रधान होता है।

प्रश्न 2—केन्द्रीय मन्त्रिपरिषद का निर्माण कैसे होता है ?

उत्तर—लोकसभा में बहुमत दल के नेता को राष्ट्रपति प्रधानमन्त्री पद के लिए आमन्त्रित करता है। लोकसभा में स्पष्ट बहुमत न होने पर अथवा बहुमत दल का निश्चित नेता न हो अथवा दो प्रभावशाली नेता हो या लोक सभा भंग होने की स्थिति में हो तो राष्ट्रपति अपने विवेक से कार्य करता है। प्रधानमन्त्री की नियुक्ति होने पर उसकी सलाह पर राष्ट्रपति अन्य मंत्रियों की नियुक्ति करता है। प्रधानमन्त्री के परामर्श पर ही मंत्रियों को विभाग दिये जाते हैं। इस प्रकार प्रधानमन्त्री और अन्य मन्त्रियों के इस समूह को केन्द्रीय मंत्री परिषद कहा जाता है। संक्षेप में, केन्द्रीय मंत्री परिषद का निर्माण प्रधानमन्त्री और राष्ट्रपति के संयुक्त परामर्श और सहयोग से होता है। केन्द्रीय मन्त्रिपरिषद लोकसभा के प्रति सामूहिक रूप से उत्तरदायी होती है।

प्रश्न 3—संघात्मक शासन में राज्य सरकारों की क्या स्थिति होती है ?

उत्तर—संघात्मक शासन में राज्य सरकारों को एक सीमा तक ही स्वतन्त्रता होती है। केन्द्र अत्यधिक शक्तिशाली होता है। उसे काफी शक्तियाँ प्रदान की गई हैं। नियन्त्रण के वास्तविक अधिकार संघ सरकार में ही निहित हैं और राज्य सरकारें केन्द्र के नियन्त्रण में ही रहकर प्रशासन चलाती है।

प्रश्न 4—संघात्मक शासन किन देशों के द्वारा अपनाना अधिक उपयुक्त होता है ?

उत्तर—संघात्मक शासन उन देशों के द्वारा अपनाना अधिक उपयुक्त होता है, जिनकी जनसंख्या अधिक हो देश विशाल हो, विभिन्न प्रकार की शासन की इकाइयाँ हों, देश के विभिन्न भागों की विभिन्न आवश्यकताएँ हों, सांस्कृतिक एवं भाषा-जनित विधिताएँ हों।

प्रश्न 5—केन्द्र शासित क्षेत्र से क्या अभिप्राय है ?

उत्तर—संसदीय सरकार भारत की राजधानी दिल्ली से सम्पूर्ण देश के शासन पर नियन्त्रण करती है। साथ ही कुछ स्थानों का शासन भी चलाती है, जिसे संघ अथवा केन्द्र शासित क्षेत्र कहते हैं। दूसरे शब्दों में संघ सरकार द्वारा शासित क्षेत्र कहलाते हैं। इन क्षेत्रों का शासन राष्ट्रपति के हाथों में होता है। भारत में केन्द्र शासित 9 क्षेत्र हैं।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—भारतीय संघ के संघात्मक स्वरूप का वर्णन कीजिए। (1985)

उत्तर—भारतीय संविधान निर्माताओं ने भारत में संघात्मक शासन की व्यवस्था की है। इसकी निम्नलिखित विशेषतायें हैं—

(1) लिखित एवं निर्मित संविधान—भारतीय संविधान लिखित एवं निर्मित संविधान का सबसे अच्छा उदाहरण है। भारतीय संविधान की रचना एक निश्चित समय के अन्दर एक संविधान सभा के द्वारा की गई है, जिसका स्वरूप संघात्मक है। अतः यह एक लिखित तथा निर्मित संविधान है।

(2) परिवर्तनशील तथा दुष्परिवर्तनशील संविधान का अद्भुत समन्वय—किसी संविधान की परिवर्तनशीलता तथा दुष्परिवर्तनशीलता उसमें कानूनों के संशोधन की प्रक्रिया पर आधारित है। यदि किसी संविधान में संवैधानिक कानून के संशोधन की प्रक्रिया साधारण कानूनों के संशोधन की प्रक्रिया के समान है तो संविधान में परिवर्तनशीलता है और यदि किसी संविधान में संवैधानिक कानूनों में संशोधन की प्रक्रिया की यदि कोई विशेष विधि है तो संविधान दुष्परिवर्तनशील होगा। इस दृष्टि से हमारा संविधान दुष्परिवर्तनशील है, परन्तु अमेरिकी संविधान के समान नहीं है और न इंग्लैण्ड के संविधान के समान परिवर्तशील है। भारतीय संविधान में संशोधन के लिए दोनों विधियों को अपनाया गया है और यह परिवर्तनशीलता तथा दुष्परिवर्तनशीलता अद्भुत समन्वय है।

(3) स्वतन्त्र न्यायपालिका—संघात्मक शासन व्यवस्था होने के कारण तथा शासन के अन्य गुरुतर दायित्वों का वहन करने के लिए संविधान से न्यायपालिका को स्वतन्त्र अस्तित्व प्रदान किया है। न्यायपालिका के महत्वपूर्ण कार्यों में संविधान की रक्षा एवं व्याख्या करना है। इसके अतिरिक्त नागरिकों के मौलिक अधिकारों की रक्षा करना, व्यवस्थापिका द्वारा निर्मित कानूनों की वैधता की जाँच करना आदि सम्मिलित है। भारतीय न्यायपालिका की सबसे महत्वपूर्ण शक्ति न्यायिक पुनर्निरीक्षण की है, जिसका अर्थ है—न्यायपालिका स्वयं अपने द्वारा दिये गये निर्णय को अस्वीकार कर सकती है, अथवा उस पर पुनर्विचार कर सकती है।

(4) शक्तिशाली केन्द्र की स्थापना—संघात्मक शासन होते हुए भी संविधान ने एक शक्तिशाली केन्द्र की स्थापना की है अर्थात् भारत संघ को एकात्मक संघ बनाकर एक शक्तिशाली केन्द्र की स्थापना की है। संविधान में समवर्ती विषयों पर केन्द्र के कानूनों को प्राथमिकता तथा विशेष परिस्थितियों में राज्य सूची के विषय में भी कानून बनाने की शक्ति प्रदान करके संविधान ने शक्तिशाली केन्द्र की स्थापना की है।

भारतीय संविधान में संघात्मक पद्धति का अनुकरण किया गया है। केन्द्र को अत्यधिक शक्तिशाली बनाने के लिए उसे काफी शक्तियाँ प्रदान की गई हैं। राज्यों को एक सीमा तक ही स्वतन्त्रता प्राप्त है।

परीक्षा में पूछे गये बहु-विकल्पीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—प्रधानमन्त्री की नियुक्ति कौन करता है?

(i) राष्ट्रपति (ii) राज्यपाल
(iii) उप राष्ट्रपति (iv) जनता।

उत्तर—(i) राष्ट्रपति।

प्रश्न 2—राज्य सभा के कितने सदस्यों को राष्ट्रपति मनोनीत करता है?

(i) 15 सदस्यों (ii) 12 सदस्यों
(iii) 9 सदस्यों (iv) 18 सदस्यों।

उत्तर—(ii) 12 सदस्यों।

प्रश्न 3—भारतीय संघ में कितने राज्य हैं?

(i) 18 राज्य (ii) 22 राज्य
(iii) 20 राज्य (iv) 25 राज्य।

उत्तर—(iv) 25 राज्य।

मौलिक अधिकार तथा नीति निर्देशक तत्व

अति लघुउत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—44वें संविधान द्वारा किस अधिकार को मौलिक अधिकार से हटा दिया गया है?

उत्तर—44वें संविधान संशोधन द्वारा सम्पत्ति का अधिकार समाप्त कर दिया गया है।

प्रश्न 2—किस स्थिति में मौलिक अधिकार स्थगित कर दिये जाते हैं? (1985)

उत्तर—देश में आपात कालीन परिस्थितियाँ होने पर मौलिक अधिकार स्थगित कर दिये जाते हैं।

प्रश्न 3—बंधक प्रथा को किस मौलिक अधिकार के अन्तर्गत दण्डनीय अपराध माना गया है ? (1988)

उत्तर – बंधक प्रथा को शोषण के विरुद्ध नागरिकों के अधिकार के अन्तर्गत दण्डनीय अपराध माना गया है ।

प्रश्न 4—मौलिक अधिकारों की रक्षा किस अधिकार के द्वारा होती है ? (1986)

उत्तर—मौलिक अधिकारों की रक्षा सवैधानिक उपचारों के अधिकार द्वारा होती है ।

अन्य अति लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 5—हमारे संविधान द्वारा प्रदत्त नागरिकों के दो मूल अधिकार बताइए ।

उत्तर—हमारे संविधान द्वारा प्रदत्त नागरिकों के दो मूल अधिकार—1. स्वतन्त्रता का अधिकार, 2. समानता का अधिकार ।

प्रश्न 6—मूल अधिकार कब और किसके द्वारा स्थगित किये जा सकते हैं ?

उत्तर—मूल अधिकार संकटकालीन स्थिति में राष्ट्रपति द्वारा स्थगित किये जा सकते हैं ।

लघु उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्त से)

नोट—प्रश्न 1 व 2 के लिए विस्तृत उत्तरीय प्रश्न 1 व 2 अवश्य देखें।

प्रश्न 1—मौलिक अधिकार किसे कहते हैं ?

उत्तर —मौलिक अधिकार—अमेरिका तथा आयरलैण्ड के संविधानों के समान हमारे संविधान में नागरिकों के मूल अधिकारों को संविधान द्वारा संरक्षण प्रदान किया गया है । इन अधिकारों का हनन सरकार भी सामान्य परिस्थितियों में नहीं कर सकेगी । मूल अधिकार 6 हैं, इनकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इन अधिकारों की रक्षा का दायित्व न्यायपालिका को सौंपा गया है ।

प्रश्न 2—नीति निर्देशक तत्व किसे कहते हैं ?

उत्तर—नीति निर्देशक तत्व—भारतीय संविधान के चौथे अध्याय में अधिकतम जनकल्याण के ध्येय से शासन में सहायता तथा मार्ग-दर्शन देने के सिद्धान्तों का वर्णन और नीति निर्धारण के लिए कुछ मूलभूत सिद्धान्तों का वर्णन है जिन्हें नीति निर्देशक तत्व अथवा नीति निश्चित करने वाले तत्व कहा गया है । यद्यपि केन्द्रीय सरकार अथवा राज्य सरकारें इन नीति निर्देशक तत्वों को मानने अथवा लागू करने के लिए वैधानिक रूप से बाध्य नहीं हैं, फिर भी संविधान में निहित नैतिक प्रेरणा के रूप में ये तत्व शासन की नीति को प्रभावित करते हैं ।

प्रश्न 3—बन्दी प्रत्यक्षीकरण से क्या अभिप्राय है ?

उत्तर—बन्दी प्रत्यक्षीकरण—इसका अर्थ है 'बन्दी को प्रत्यक्ष रूप से न्यायालय के समक्ष उपस्थित करना, अर्थात् यदि कोई व्यक्ति बन्दी बनाये जाने पर

न्यायालय से यह प्रार्थना करे कि उसे अवैध रूप से बन्दी बनाया गया है तो न्यायालय बन्दी बनाने वाले अधिकारी को बन्दी बनाये गये व्यक्ति को निश्चित समय तथा स्थान पर उपस्थित करने का आदेश देता है ताकि न्यायालय बन्दी बनाये जाने के कारणों की जाँच कर सके। दोनों पक्षों की बात सुनकर न्यायालय यह निश्चित करता है कि नजरबन्दी वैधानिक है अथवा अवैधानिक। यदि नज़रबन्दी अवैधानिक हो तो न्यायालय उसे तुरन्त रिहा करने का आदेश देता है। इस प्रकार यह व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का अत्यन्त महत्वपूर्ण लेख है। इनके द्वारा अवैधानिक ढंग से बन्दी बनाये गये व्यक्ति को स्वतन्त्रता प्राप्त होती है।

प्रश्न 4—नीति निर्देशक तत्वों में संविधान में समावेश करने का क्या उद्देश्य है ?

उत्तर—डा० अम्बेडकर ने संविधान सभा में नीति निदेशक तत्वों में अन्तर्निहित उद्देश्यों को बड़े स्पष्ट शब्दों में व्यक्त किया था, "हमारा संविधान संसदीय प्रजातन्त्र की स्थापना करता है। संसदीय प्रजातन्त्र से हमारा अर्थ है कि एक व्यक्ति एक वोट। हमारा यह भी तात्पर्य है कि प्रत्येक सरकार अपने प्रतिदिन के कार्यकलापों में तथा एक नियत समय के अन्त में जबकि मतदाताओं और निर्वाचक-मण्डल को सरकार द्वारा किये गये कार्यों का मूल्यांकन करने का अवसर मिलता है, कसौटी पर कसी जायेगी।" राजनीतिक लोकतन्त्र की स्थापना का उद्देश्य यह है कि हम कुछ निश्चित लोगों को यह अवसर न दें कि वे निरंकुशवाद को कायम रख सकें। जब कि हमने राजनीतिक लोकतन्त्र की स्थापना की है, तो हमारी यह भी इच्छा है कि हम आर्थिक लोकतन्त्र का आदर्श भी स्थापित करें। प्रश्न यह है कि क्या हमारे पास कोई निश्चित तरीका है जिससे हम आर्थिक लोकतन्त्र की स्थापना कर सकते हों ? विभिन्न ऐसे तरीके हैं जिनमें लोगों का विश्वास है कि आर्थिक लोकतन्त्र लाया जा सकता है। बहुत से लोग हैं जो व्यक्तिवाद को सबसे अच्छा आर्थिक लोकतन्त्र समझते हैं, बहुत से लोग समाजवादी समाज की स्थापना को सबसे अच्छा आर्थिक लोकतन्त्र मानते हैं, और बहुत लोग कम्यूनिज्म की स्थापना को सर्वोत्तम आर्थिक समाजवाद का रूप मानते हैं।

इस प्रकार नीति निर्देशक तत्व का मुख्य उद्देश्य विधान-मण्डल और कार्यपालिका के समक्ष उपलब्धि का एक मापदण्ड रखना है जिस पर उनकी सफलता और असफलता को आँका जा सके। सिखयी के अनुसार, यह भी आशा की गई थी कि जो इन निदेशों को कार्यान्वित करने में असफल रहे हैं, आम चुनाव के समय उन्हें उचित शिक्षा मिल सकती है। यदि हम सूक्ष्म दृष्टि से देखें तो पायेंगे कि नीति निर्देशक तत्व आर्थिक और सामाजिक आदर्श के किसी निश्चित रूप का उपबन्ध नहीं करते हैं, वे केवल लक्ष्यों की स्थापना करते हैं। जिन्हें विभिन्न रीतियों द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।

प्रश्न 5—मौलिक अधिकारों तथा नीति निर्देशक तत्वों में क्या अन्तर है ?

उत्तर – मौलिक अधिकारों तथा नीति निर्देशक तत्वों में अन्तर—

(i) मौलिक अधिकारों को न्यायिक अथवा संवैधानिक संरक्षण प्राप्त है। किसी नागरिक को यदि ये अधिकार नहीं मिलते तो न्यायालय उसकी सहायता कर सकता है।

नीति निर्देशक तत्वों के पीछे न्यायकि संरक्षण न होने के कारण उनके अनुसार कार्य करने के लिए सरकार को बाध्य नहीं किया जा सकता ।

(2) मौलिक अधिकारों से तात्पर्य उन अधिकारों से है जिनके प्रयोग करने से व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास होता है। अधिकार सामाजिक जीवन की वे दशाएँ हैं जिनके बिना मनुष्य अपना पूर्ण विकास नहीं कर सकता है ।

नीति निर्देशक तत्व सरकार तथा जनता को निरन्तर इस बात की याद दिलाते हैं कि क्या करना चाहिए ।

मौलिक अधिकार तथा नीति निर्देशक तत्व

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—मौलिक अधिकार से क्या तात्पर्य है? भारतीय संविधान में वर्णित मौलिक अधिकारों का वर्णन कीजिए । (1984, 89, 90)

उत्तर—मौलिक अधिकारों से तात्पर्य— किसी व्यक्ति या समुदाय की वह माँग अधिकार कहलाती है जो समाज द्वारा स्वीकृत हो । अधिकार सफल जीवन की भूमिका भी कहा जाता है । वैसे तो अधिकारों का अस्तित्व सभ्यता के साथ-साथ ही स्पष्ट हो गया है, किन्तु मौलिक अधिकारों का आरम्भ फ्रांस की राज्यक्रांति से हुआ। मौलिक अधिकार उन अवसरों को कहते हैं जो व्यक्ति के सर्वतोमुखी विकास के लिए राज्य द्वारा आवश्यक रूप से प्रधान किये गये हों । प्रत्येक लोक तन्त्रात्मक सरकार में नागरिकों को ये अधिकार मिलते हैं, यह हो सकता है कि ये अधिकार कहीं कम हों और कहीं अधिक ।

हमारे संविधान में नागरिकों को 6 मौलिक अधिकार दिये गये हैं, जिनका विवरण निम्न है—

1. समता का अधिकार

इस अधिकार का अर्थ यह है कि राज्य की दृष्टि से सभी नागरिक समान रहेंगे । यह अधिकार निम्न भागों में विभक्त है—

1. अस्पृश्यता का अन्त—अस्पृश्यता, जो समाज का अभिशाप एवं समता की भावना पर एक स्पष्ट कुठाराघात है, को हमारे संविधान द्वारा अवैध घोषित कर दिया गया है ।

2. उपाधियों का अन्त—अब सैनिक अथवा शैक्षणिक उपाधियों को छोड़कर भारत का कोई नागरिक अन्य उपाधियाँ धारण नहीं कर सकता ।

3. धर्म-जाति तथा लिंग के भेदों का अन्त—राज्य के नागरिकों को यह भी अधिकार मिला है कि वे सभी सार्वजनिक स्थानों में बिना किसी भेद-भाव के समान रूप में जा सकेंगे ।

4. वैधानिक समानता की घोषणा—संविधान में यह भी बताया गया है कि कानून की दृष्टि से सभी नागरिक समान हैं और उन्हें राज्य की ओर से समान रूप से वैधानिक संरक्षण और न्याय प्राप्त होगा ।

5. नियुक्तियों की समानता— संविधान में इस बात का भी स्पष्ट उल्लेख है कि सभी नागरिकों को, चाहे वे किसी धर्म, जाति या रंग के हों, नियुक्तियों का समान अवसर मिलेगा। पिछड़ी जातियों को कुछ प्राथमिकता अवश्य मिलेगी किन्तु वह भी नागरिकों की सर्वतोमुखी समानता लाने के लिए प्रदान की गई है।

समता के इस अधिकार ने यद्यपि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का स्वप्न कुछ अंशों में साकार कर दिया है तथापि इसका उद्देश्य तभी पूर्ण हो सकेगा जबकि जनता और विशेषकर शिक्षित वर्ग इसमें सहयोग दें। अच्छा होता यदि संविधान इस अधिकार के उपचार की व्याख्या भी स्पष्ट कर देता।

2. स्वतन्त्रता अधिकार

हमारे संविधान ने नागरिकों के विकास और हित को ध्यान में रखते हुए उन्हें स्वतन्त्रता का भी अधिकार दिया है। इसमें अग्रांकित बातें शामिल हैं—

1. विचार प्रकट करने की स्वतन्त्रता—इसका आशय यह है कि प्रत्येक नागरिक को विचार प्रकट करने की पूर्ण स्वतन्त्रता है। वह सभायें कर सकता है तथा स्वतन्त्रता के साथ उसमें भाषण दे सकता है।

2 व्यावसायिक स्वतन्त्रता—इसका मतलब यह है कि प्रत्येक नागरिक अपनी इच्छानुसार भारत में कहीं भी कोई व्यवसाय कर सकता है।

3. व्यक्तिगत स्वतन्त्रता की रक्षा—संविधान में नागरिकों की व्यक्तिगत स्वतन्त्रता की रक्षा भी हुई है। किसी भी व्यक्ति को निरपराध दण्डित नहीं किया जा सकता और न एक अपराध का कई बार दण्ड मिल सकेगा। प्रत्येक नागरिक को यह स्वतन्त्रता है कि वह बन्दी होने के बाद अपनी इच्छानुसार किसी भी वकील की राय ले। बन्दीकरण के 24 घण्टे के अन्दर ही प्रत्येक बन्दी को मजिस्ट्रेट के सम्मुख ले जाया जायेगा नहीं तो उच्च न्यायालय से बन्दी प्रत्यक्षीकरण का आदेश जारी हो सकेगा। बन्दीकरण के कारणों को जानने का भी प्रत्येक नागरिक को पूरा अधिकार है।

4. आवागमन की स्वतन्त्रता—इसका अर्थ यह है कि प्रत्येक नागरिक अपनी इच्छानुसार भारत के किसी भी भाग में कभी भी आ-जा सकता है।

किन्तु साथ ही इन स्वतन्त्रताओं पर काफी नियन्त्रण भी लगा रखे हैं। 1951 के संशोधन के अनुसार सुरक्षा और सदाचार का ध्यान रखकर भाषण और लेखन की स्वतन्त्रता को नियन्त्रित कर दिया है। इस प्रकार नागरिक केवल नैतिक साधनों से ही अपनी जीविका का उपार्जन कर सकेगा। जनहित की दृष्टि से संस्थाओं के संगठनों पर भी रोक लगाई जा सकेगी। सुरक्षा की दृष्टि से किसी भी व्यक्ति या कुछ संगठनों पर भी रोक लगाई जा सकेगी। सुरक्षा की दृष्टि से किसी व्यक्ति को कुछ समय के लिए बन्दी बनाया जा सकता है। प्रायः नजरबन्द कानून की बड़ी तीव्र आलोचना होती है किन्तु व्यक्तिगत स्वतन्त्रात्मक गणराज्य प्रणाली को ध्यान में रखते हुए इसकी आवश्यकता महसूस होती है।

3. धार्मिक स्वतन्त्रता का अधिकार

संविधान की 25, 26, 27 व 28वीं धाराओं में नागरिक को धार्मिक स्वतन्त्रता का अधिकार भी मिला है। हमारा शासन धर्मनिरपेक्ष है और उसमें

सभी धर्मों की उन्नति का समान अवसर दिया गया है। धार्मिक स्वतन्त्रताएं निम्न हैं—

1. धर्म के पालन और प्रचार की स्वतन्त्रता—प्रत्येक नागरिक को यह अधिकार है कि वह अपनी इच्छानुसार किसी भी धर्म का पालन करे।

2. धार्मिक संस्थाओं में जाने की या न जाने की स्वतन्त्रता—प्रत्येक नागरिक को यह अधिकार है कि वह किसी भी धार्मिक संस्था का सदस्य बने या न बने। किसी भी धार्मिक संस्था को कर देने को उसे बाध्य नहीं किया जा सकता।

3. धार्मिक संस्थाओं के संगठन की स्वतन्त्रता—प्रत्येक नागरिक अपनी इच्छानुसार धार्मिक संस्थाओं का भी संगठन कर सकता है। किन्तु इस पर भी कुछ नियन्त्रण है। राज्य ऐसे नियम बना सकता है जिनका सम्बन्ध यद्यपि धर्म से ही है किन्तु राजनैतिक दृष्टि से वे महत्वपूर्ण है, जैसे—गौ-बध, सती-प्रथा, बहुविवाह आदि प्रश्न धार्मिक हैं किन्तु आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से भी इनका महत्व है। धार्मिक आजादी के बिना मनुष्य का शान्तिपूर्वक उन्नति करना असम्भव है।

4. शोषण के विरुद्ध अधिकार

इस अधिकार के तीन प्रमुख अंग हैं—

1. बेगार और बलात् श्रम का अन्त—संविधान की 23वीं धारा स्पष्ट कहती है कि बेगार और बलात् श्रम अवैधानिक है। ऐसा करने वाले व्यक्ति दण्डित होंगे।

2. मानव व्यापार का अन्त—संविधान ने मानव व्यापार को अवैध घोषित कर दिया है।

3. कोमल आयु की रक्षा—राज्य में यह भी व्यवस्था की गई है कि कोई बालकों की कोमल आयु का दुरुपयोग न करे। 14 वर्ष से कम आयु के बच्चे मिलों और खानों में काम नहीं कर सकेंगे।

इस प्रकार इस अधिकार द्वारा यह प्रयत्न किया गया है कि नागरिकों का शोषण न हो किन्तु इस उद्देश्य में भी पूर्ण स्वतन्त्रता नहीं दिखाई दे रही है।

5. शिक्षा का अधिकार

नागरिकों को अपनी शिक्षा, संस्कृति और सभ्यता की रक्षा का भी अधिकार प्राप्त हुआ है। इस अधिकार के निम्न अंग हैं—

1. शिक्षा संस्थाओं के संगठन का अधिकार—संविधान में सभी नागरिकों को शिक्षा संस्थायें बनाने का अधिकार है। इसमें राज्य कोई रोक नहीं लगा सकता।

2. अल्प-संख्यकों के हितों की रक्षा का अधिकार—इसमें प्रत्येक नागरिक को यह भी अधिकार है कि वह अपने सांस्कृतिक और शिक्षा सम्बन्धी अधिकारों की रक्षा कर सके। राज्य प्रत्येक नागरिक को समान सुविधाएँ देगा। पिछड़ी हुई भाषा और संस्कृति की उन्नति का समान अवसर देना प्रत्येक राज्य का कर्त्तव्य है।

6. संवैधानिक उपचारों का अधिकार

नागरिकों को उपर्युक्त समस्त अधिकारों की रक्षा का भी अधिकार दिया

गया है। जनता को यह अधिकार है कि वह मौलिक अधिकारों की पूर्ण रक्षा कर सके। जब राज्य या अन्य संस्था नागरिकों के इन अधिकारों पर कुठाराघात करेंगी तो उन्हें उच्चतम न्यायालय में इसके विरुद्ध अपील करने का अधिकार है। उच्चतम न्यायालय आदेशों, निर्देशों तथा लेखों द्वारा इनकी पूरी-पूरी रक्षा करता है। यह अधिकार वस्तुतः बड़ा महत्वपूर्ण अधिकार है क्योंकि इसकी अनुपस्थिति में अधिकारों की घोषणा मात्र से क्या लाभ है।

निष्कर्ष—अन्त में यही कहना होगा कि यद्यपि हमारे संविधान ने हमें महत्वपूर्ण अधिकार दे रखे हैं, किन्तु इनकी पूर्ण सफलता तभी है जब जनता भी राज्य का साथ दे। यदि ऐसा नहीं होगा तो इसके उपभोग में स्वतन्त्रता एवं मौलिकता नहीं रह जावेगी। राम-राज्य तभी बन सकेगा जब जनता पूरा सहयोग देगी।

प्रश्न 2—नीति निर्देशक तत्वों से क्या तात्पर्य है? भारतीय संविधान में उल्लिखित नीति निर्देशक तत्वों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—नीति निर्देशक तत्वों से तात्पर्य—नीति निर्देशक तत्वों में वे आदर्श निहित हैं, जिनका प्रत्येक सरकारें अपनी नीतियों के निर्धारण और कानून के बनाने में सदैव ध्यान रखेंगी। इनमें वे आर्थिक, सामाजिक और प्रशासनिक सिद्धान्त अन्तर्निहित हैं जो भारत की विशिष्ट परिस्थितियों के अनुरूप हैं। जी० एन० जोशी के शब्दों में, "इसमें आधुनिक प्रजातान्त्रिक राज्य की वृहत, सामाजिक, राजनैतिक योजनायें निहित हैं।" डॉ. अम्बेडकर ने ठीक ही लिखा है कि—"यह भारतीय संविधान की अनोखी विशेषता है। इनमें एक कल्याणकारी राज्य का लक्ष्य निहित है।"

नीति निदेशक तत्वों का वर्गीकरण—संविधान के अनुच्छेद 36 से 51 तक में नीति निदेशक तत्व राज्य को निर्देश देते हैं कि वे जनहित में ऐसा सामाजिक व्यवस्था स्थापना का प्रयास करें कि प्रत्येक नागरिक के लिए सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय सुनिश्चित हो। वास्तव में यह वह निर्देश है जो संविधान की प्रस्तावना में अन्तर्निहित है। सुविधा के लिए हम इन तत्वों को निम्नलिखित वर्गों में विभाजित कर सकते हैं—

(I) आर्थिक सुरक्षा सम्बन्धी तत्व—

(अ) अनुच्छेद 39 के अनुसार, राज्य अपनी नीति की विशेपता का इस प्रकार संचालन करेगा जिससे—

(1) सभी नागरिकों की जीविका के पर्याप्त साधन।

(2) धन एवं उत्पादन के साधनों का उचित एवं समान बँटवारा।

(3) समान कार्य के लिए समान वेतन।

(4) स्त्रियों एवं बालकों के स्वास्थ्य एवं शक्ति की सुरक्षा सुनिश्चित हो सके।

(ब) अनुच्छेद 41, राज्य को यह निर्देश देता है कि वह अपने आर्थिक सामर्थ और विकास की सीमाओं के भीतर प्रत्येक व्यक्ति के लिए काम पाने, शिक्षा पाने तथा वेकारी, बुढ़ापा, बीमारी और अंग हानि तथा अनर्ह अभाव की दशाओं में सार्वजनिक सहायता पाने के अधिकार को प्राप्त करने का कार्यसाधक उपलब्ध करेगा।

(स) अनुच्छेद 43 के अनुसार, राज्य श्रमिकों का उचित वेतन, शिष्ट जीवन स्तर, अवकाश तथा सामाजिक और सांस्कृतिक अवसर प्राप्त कराने का प्रयास और विशेष रूप से ग्रामों में कुटीर उद्योगों को बढ़ाने का प्रयास करेगा।

(द) अनुच्छेद 42 के अनुसार, राज्य काम की यथोचित और मानवोचित दशाओं को तथा प्रसूति सहायता को उपलब्ध करेगा।

(य) अनुच्छेद 48 के अनुसार, राज्य कृषि और पशु-पालन के आधुनिक और वैज्ञानिक प्रणालियों पर संगठित करने का प्रयास करेगा तथा विशेषतया गायों और बछड़ों तथा अन्य दुधारू और वाहक ढोरों की नस्ल के परीक्षण और सुधारने के लिये तथा उनके वध का प्रतिषेध करने के लिए अग्रसर होगा। 42वें संशोधन द्वारा आर्थिक सुरक्षा सम्बन्धी दो निदेशक तत्व जोड़े गये हैं।

(र) राज्य इस बात का प्रयत्न करेगा कि कानूनी व्यवस्था का संचालन, समान अवसर के आधार पर न्याय की प्राप्ति में सहायक हो और उचित व्यवस्थापन योजना या अन्य किसी प्रकार से समाज के कमजोर वर्गों के लिए निःशुल्क कानूनी सहायता की व्यवस्था करेगा, जिससे आर्थिक, असमर्थ या अन्य किसी प्रकार से व्यक्ति न्यया प्राप्त करने से वंचित न रहे।

(ल) राज्य उचित व्यवस्थापन या अन्य प्रकार से औद्योगिक संस्थानों के प्रबन्ध के कर्मचारियों को भागीदार बनाने के लिए कदम उठायेगा।

(II) सामाजिक हित सम्बन्धी तत्व

(अ) अनुच्छेद 47 के अनुसार राज्य—

(1) लोगों के आहार-पुष्टि-तल (Level of nutrition) और जीवन स्तर को ऊँचा करने तथा सार्वजनिक स्वास्थ्य का सुधार करने का प्रयास करेगा।

(2) विशेषतया औषधीय प्रयोजनों के अतिरिक्त, मादक पेयों और स्वास्थ्य के लिए हानिकर औषधियों का प्रतिषेध करने का प्रयास करेगा।

(3) अनुच्छेद 46 के अनुसार, राज्य अनुसूचित जातियों, आदिम जातियों तथा अन्य दुर्बल वर्गों के लोगों की शिक्षा तथा अर्थ सम्बन्धी हितों की उन्नति का प्रयास करेगा।

(III) न्याय, शिक्षा और प्रजातन्त्र सम्बन्धी तत्व—

शिक्षा, न्याय तथा प्रजातन्त्र की भावना के विकास के लिए कुछ निदेशक तत्वों का समावेश किया गया है, जो इस प्रकार है—

(अ) अनुच्छेद 50 के अनुसार, विधि शासन की स्थापना करके जनता को समुचित न्याय दिलाने के उद्देश्य से राज्य न्यायपालिका को कार्यपालिका से पृथक करने का प्रयास करेगा।

(ब) अनुच्छेद 44 के अनुसार, राज्य नागरिकों के लिए समस्त भारत क्षेत्र में एक समान व्यवहार संहिता (Uniform Civil Code) प्राप्त करने का प्रयास करेगा।

(स) अनुच्छेद 45 के अनुसार, राज्य अशिक्षा को दूर करने के उद्देश्य से बालकों के लिए निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का उपबन्ध करेगा।

(द) अनुच्छेद 40 के अनुसार, राज्य ग्राम पंचायतों को संगठित करेगा और उनको ऐसी शक्तियाँ और अधिकार प्रदान करेगा जो उन्हें स्वायत्त शासन के कार्य करने योग्य बनाने के लिए आवश्यक हों।

(IV) प्राचीन स्मारकों की रक्षा सम्बन्धी तत्व—

(अ) अनुच्छेद 49 के अनुसार राज्य का कर्त्तव्य निश्चित किया गया है कि वह राष्ट्रीय महत्व के स्मारकों, स्थानों और चीजों का संरक्षण भी करेगा। भारतीय संसद द्वारा जिन चीजों अथवा स्थलों को राष्ट्रीय महत्व घोषित कर दिया हो।

(ब) 42वें संशोधन के अनुसार, राज्य देश के पर्यावरण की रक्षा और उसमें सुधार का प्रयास करेगा। राज्य के द्वारा वनों और वन्य जीवन की रक्षा का भी प्रयास किया जायेगा।

(V) अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति और सुरक्षा सम्बन्धी तत्व—

हमारा देश परम्परागत शान्ति का पुजारी रहा है और विश्व-बन्धुत्व की भावना भारतीय संस्कृति का मूलमन्त्र है। इसलिए राज्य के नीति निदेशक तत्वों में अनुच्छेद 51 के अनुसार राज्य को निदेश दिया गया है कि—

(1) अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में वह अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति और सुरक्षा बनाये रखने का,

(2) राष्ट्रों के बीच न्याय और सम्मानपूर्ण सम्बन्धों को बनाये रखने का,

(3) एक दूसरे से सद्व्यवहारों में विधि और सन्धियों के प्रति आदर बढ़ाने का,

(4) अन्तर्राष्ट्रीय विवादों को मध्यस्थता द्वारा निपटाने के लिए प्रोत्साहन देने का प्रयास करेगा।

उपर्युक्त विवेचन में हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि नीति निदेशक तत्व कुछ विशेष विचारधारा से प्रभावित हैं क्योंकि तत्वों में हम समाजवादी, गाँधीवादी, और उदारवादी तत्वों का संम्मिश्रण पाते हैं।

परीक्षा में पूछे गये बहु विकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1—संविधान के द्वारा प्रदत्त मूल अधिकार कितने हैं—

(i) 6 (ii) 7
(iii) 5 (iv) 11।

उत्तर—(i) 6।

प्रश्न 2—संविधान में वर्णित नीति निर्देशक तत्व कितने हैं?

(i) 7 (ii) 11
(iii) 5 (iv) 9।

उत्तर—(iii) 5।

प्रश्न 3—मौलिक अधिकार किसके द्वारा स्थगित किये जा सकते हैं?

(i) प्रधानमन्त्री द्वारा (ii) लोकसभा द्वारा
(iii) राज्य सभा द्वारा (iv) राष्ट्रपति द्वारा।

उत्तर—(iv) राष्ट्रपति द्वारा।

हमारी शासन व्यवस्था

स्थानीय निकाय

अति लघुउत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—ग्रामसभा के कौन-कौन से पदाधिकारी होते हैं ?

उत्तर—ग्रामसभा में एक प्रधान तथा एक उप-प्रधान होता है।

प्रश्न 2—न्याय पंचायत को किन-किन मुकद्दमों को देखने का अधिकार है ?

उत्तर—न्याय पंचायत को दीवानी, फौजदारी तथा माल के मुकद्दमे देखने का अधिकार है।

प्रश्न 3—किस अधिनियम के द्वारा क्षेत्र समिति की स्थापना की गयी है ?

उत्तर—1961 के उत्तर प्रदेश क्षेत्र समिति तथा जिला परिषद अधिनियम के अन्तर्गत क्षेत्र समिति की स्थापना की गई है।

प्रश्न 4—जिला परिषद का अध्यक्ष कितने समय के लिए निर्वाचित किया जाता है ?

उत्तर—जिला परिषद का अध्यक्ष 5 वर्ष के लिए निर्वाचित किया जाता है।

प्रश्न 5—नगरपालिका की स्थापना कितनी जनसंख्या वाले नगरों में की जाती है ?

उत्तर—नगरपालिका की स्थापना 20 हजार या इससे अधिक जनसंख्या वाले नगरों में की जाती है।

परीक्षा में पूछे गये तथा अन्य अति लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 6—स्थानीय स्वशासन से आप क्या समझते हैं ? (1991)

उत्तर—किसी स्थान विशेष का शासन प्रवन्ध उसी स्थान विशेष के लोगों द्वारा किया जाना स्थानीय स्वशासन कहलाता है।

प्रश्न 7—ग्राम पंचायत के सदस्यों का निर्वाचन कितने समय के लिए होता है।

उत्तर—ग्राम पंचायत के सदस्यों का निर्वाचन 5 वर्ष के लिए होता है।

प्रश्न 8—जिला परिषद का अध्यक्ष कितने वर्ष के लिए चुना जाता है ?

उत्तर—जिला परिषद का अध्यक्ष 5 वर्ष के लिए चुना जाता है।

लघुउत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—उत्तर प्रदेश में कौन-कौन से प्रमुख स्थानीय स्वशासन की संस्थाएँ कार्य कर रही हैं। (1988)

उत्तर—उत्तर प्रदेश में स्थानीय स्वशासन की मुख्य रूप से निम्नांकित संस्थाएँ कार्य कर रही हैं—

(1) ग्राम पंचायत, (2) क्षेत्र समिति,
(3) जिला परिषद, (4) नगर पालिका और महानगरपालिका।

प्रश्न 2—ग्रामसभा के प्रधान का निर्वाचन कैसे होता है ?

उत्तर—ग्रामसभा के प्रधान का चुनाव ग्रामसभा के सदस्यों द्वारा किया

जाता है। ग्रामसभा के प्रधान की आयु सीमा 30 वर्ष से कम नहीं होनी चहिए। प्रधान का कार्यकाल 5 वर्ष का होता है।

प्रश्न 3—ग्रामसभा तथा ग्राम पंचायत में क्या अन्तर है?

उत्तर—ग्राम पंचायत ग्रामसभा की कार्यकारिणी होती है। ग्रामसभा के सदस्य ही ग्राम पंचायत के सदस्यों का चुनाव करते हैं।

ग्रामसभा ग्रामों के विकासों के लिए योजनाएँ बनाती हैं और ग्राम पंचायत इन योजनाओं को व्यावहारिक रूप देती है।

ग्रामसभा के सदस्य आजीवन होते हैं जबकि ग्राम पंचायत के सदस्य केवल 5 वर्ष के लिए होते हैं।

प्रश्न 4—न्याय पंचायत अपने किसी मुकद्दमे का निर्णय किस प्रकार करती है?

उत्तर—न्याय पंचायत दीवानी, फौजदारी तथा माल के मुकद्दमे निपटाती है। फौजदारी मुकद्दमों में न्याय पंचायत 100 रुपया तक जुर्माना कर सकती है। 100 रुपया मूल्य तक के दीवानी मुकद्दमे देखने का न्याय पंचायत को अधिकार है। गवाह के उपस्थित न होने पर 25 रुपया तक जमानती वारन्ट उसके विरुद्ध जारी करने का अधिकार न्याय पंचायत को है। न्याय पंचायत कारावास का दण्ड नहीं दे सकती। किसी व्यक्ति पर न्याय पंचायत की मानहानि का आरोप होने पर उससे 5 रुपया जुर्माना वसूल कर सकती है। न्याय पंचायत के निर्णय की कहीं अपील नहीं होती है। इस पर राज्य सरकार का नियन्त्रण होता है।

प्रश्न 5—क्षेत्र समिति के कौन-कौन से पदाधिकारी होते हैं?

उत्तर—क्षेत्र समिति का एक प्रमुख होता है, जिसका चुनाव समिति के सदस्य करते हैं। दो उप-प्रमुख भी समिति के सदस्यों में से ही चुने जाते हैं। ये क्रमशः ज्येष्ठ उप-प्रमुख तथा कनिष्ठ उप-प्रमुख कहलाते हैं। ये प्रमुख के न होने पर उसका कार्यभार सँभालते हैं। प्रमुख के अधीन एक सरकारी अधिकारी होता है, जिसे क्षेत्रीय विकास अधिकारी कहते हैं। इनके अतिरिक्त सहायक विकास अधिकारी तथा ग्राम सेवक भी होते हैं।

प्रश्न 6—जिला परिषद् की आय के साधन कौन-कौन से हैं?

उत्तर—जिला परिषद् की आय के निम्नलिखित साधन हैं—

(1) सम्पत्ति कर,

(2) पुल की उतराई,

(3) मेले तथा प्रदर्शनी इत्यादि से प्राप्त किराया,

(4) भवनों का किराया,

(5) स्कूलों की फीस,

(6) राज्य से प्राप्त अनुदान।

प्रश्न 7—नगरपालिका के चार प्रमुख कार्य बताइए। (1987)

उत्तर—नगरपालिका के चार प्रमुख कार्य निम्नलिखित हैं—

(1) नगर में स्वच्छता का प्रबन्ध करना।

(2) प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था करना।

(3) सड़कें बनवाना, उनकी मरम्मत तथा सफाई करवाना।

(4) औषधालयों की स्थापना एवं संक्रामक रोगों से बचाव हेतु टीके लगवाना।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न—ग्राम पंचायत का संगठन किस प्रकार किया जाता है? इसके कार्यों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—ग्राम पंचायत का संगठन तथा कार्य—ग्राम पंचायत का संगठन इस प्रकार किया जाता है—

(1) **संगठन**—ग्राम पंचायत, ग्राम सभा की कार्यकारिणी होती है जो दिन-प्रतिदिन की समस्याओं को सुलझाने का कार्य करती है। इसका निर्वाचन ग्राम सभा अपने सदस्यों में से ही करती है।

(2) **सदस्य**—ग्राम पंचायत में कम से कम सात और अधिक से अधिक 15 सदस्य तथा प्रधान और उप-प्रधान होते हैं। सदस्यों की संख्या का निर्धारण क्षेत्र की जनसंख्या के आधार पर किया जाता है। हजार या उससे कम जनसंख्या वाले क्षेत्र में 9 सदस्य, 2 हजार से कम तथा एक हजार से अधिक जनसंख्या वाले क्षेत्र में 11 सदस्य, 3 हजार से कम तथा 2 हजार से अधिक जनसंख्या वाले क्षेत्र में 13 सदस्य, तीन हजार से अधिक जनसंख्या वाले क्षेत्र में 15 सदस्य होते हैं। अनुसूचित जातियों के लिए स्थान उनकी जनसंख्या के आधार पर प्रतिनिधित्व आरक्षित होता है।

(3) **निर्वाचन**—ग्राम पंचायत के सदस्यों का निर्वाचन संयुक्त निर्वाचन प्रणाली के आधार पर ग्रामसभा के सदस्यों के द्वारा किया जाता है। यह चुनाव जिलाधीश स्वयं अपने द्वारा नियुक्त निर्वाचन अधिकारी से कराता है।

(4) **कार्यकाल**—ग्राम पंचायत का कार्यकाल 5 वर्ष होता है। परन्तु राज्य सरकार इसे बढ़ाकर 8 वर्ष कर सकती है।

ग्राम पंचायत के कार्य—इसके कार्यों को दो भागों में बाँटा जा सकता है—
(अ) अनिवार्य एवं (ब) ऐच्छिक कार्य।

(अ) अनिवार्य कार्य

(1) **स्वास्थ्य, सफाई एवं चिकित्सा सम्बन्धी कार्य**—(i) सड़कों, गलियों, आदि की सफाई तथा रोशनी का प्रबन्ध।

(ii) ग्राम निवासियों को चिकित्सा सम्बन्धी सहायता का प्रबन्ध करना।

(iii) हैजा, प्लेग, चेचक आदि संक्रामक रोगों की रोकथाम तथा इलाज की व्यवस्था करना।

(iv) मरघट, श्मशान, कब्रिस्तान तथा मरे हुए पशुओं के फेंके जाने के स्थान नियत करना तथा नियन्त्रण करना।

(v) स्वच्छ जल उपलब्ध कराने के लिए कुओं, पोखरों तथा तालाबों का निर्माण एवं मरम्मत और देखभाल करना।

(vi) प्रसूति केन्द्र की देखभाल करना।

(2) **शिक्षा सम्बन्धी कार्य**—बालक-बालिकाओं के लिए पाठशालाओं की स्थापना और उनको चलाना आदि।

(3) **कृषि और उद्योग-धन्धे सम्बन्धी कार्य**—सार्वजनिक चरागाहों का इन्तजाम करना, कृषि, व्यापार तथा उद्योग धन्धों की उन्नति के कार्य करना, खाद एकत्रित करना तथा उसके लिए सुरक्षित स्थान नियत करना।

(4) **यातयात और सार्वजनिक निर्माण सम्बन्धी कार्य**—ग्राम की सड़कों, गलियों, पुलों आदि का निर्माण तथा मरम्मत का कार्य करना, मकानों के निर्माण तथा उनके विस्तार अथवा परिवर्तन सम्बन्धी नियम बनाना, बाढ़ को रोकने के लिए बाँध तथा दीवार आदि बनाना।

(5) **प्रशासन सम्बन्धी कार्य**—(i) पंचायत की सम्पत्ति तथा इमारतों की सुरक्षा और देखरेख का कार्य करना।

(ii) जन्म-मृत्यु, शादी-ब्याह, धर्म, साक्षरता आदि का ब्यौरा रखना।

(iii) सार्वजनिक स्थानों एवं मार्गों पर किये गये अतिक्रमण को हटाना।

(iv) मेला, बाजार और हाट आदि की व्यवस्था करना।

(v) अग्नि-काण्ड से सम्पत्ति की रक्षा करना तथा अग्नि बुझाने का प्रबन्ध करना।

(vi) पशुओं की गणना तथा जनगणना करना और

(vii) अन्य कोई कार्य जो ग्रामसभा निर्धारित कर दे।

(ब) ऐच्छिक कार्य

ऐच्छिक कार्यों के अन्तर्गत ऐसे कार्य आते हैं जो ग्राम के विकास तथा जन-जीवन के भौतिक तथा मानसिक उत्थान के लिए आवश्यक होते हैं। परन्तु इन कार्यों को ग्राम पंचायत अपनी इच्छा तथा सुविधा के अनुसार ही करती है। इसके कुछ ऐच्छिक कार्य निम्नलिखित हैं—

(i) सड़कों के किनारे वृक्ष लगवाना।

(ii) ग्राम की सुरक्षा के लिए स्वयंसेवक दल का निर्माण करना।

(iii) मवेशियों का इलाज, नस्ल-सुधार का प्रबन्ध करना।

(iv) पुस्तकालय, वाचनालय तथा मनोरंजन के साधनों का प्रबन्ध करना।

(v) कुत्तों और बन्दरों को पकड़वाकर ग्राम से बाहर भेजना।

(vi) जिला परिषद् से ग्राम विकास के लिए माँग करना।

(vii) गरीबों तथा अनुसूचित जातियों के लोगों को निवास सम्बन्धी सुविधा देना आदि।

(viii) जिला परिषद् के अन्तर्गत आने वाले वे सभी कार्य जो ग्रामवासियों के लिए उपयोगी हों, जिला परिषद् की अनुमति से करना।

प्रश्न 2—न्याय पंचायत का संगठन किस प्रकार होता है? इसके प्रमुख अधिकार क्या हैं?

उत्तर—ग्राम पंचायत का संगठन तथा अधिकार—न्याय पंचायत ग्रामों में

छोटे-मोटे वाद-विवादों का निपटारा करती है। प्रायः 9 ग्राम सभाओं से मिलकर एक न्याय पंचायत बनती है। कभी-कभी न्याय पंचायत का निर्माण 5 से 12 तक ग्राम सभाओं से मिलकर होता है। न्याय पंचायत का कार्य काल 5 वर्ष का होता है।

संगठन—प्रत्येक ग्राम सभा द्वारा न्याय पंचायत के लिए पाँच पंचों का निर्वाचन किया जाता है। इन व्यक्तियों में से योग्यता के आधार पर सरकारी अधिकारी, जितने पंचों की आवश्यकता होती है, उतने पंच मनोनीत करता है। यदि न्याय पंचायत में ग्राम सभाओं की संख्या 1-6 होती है, तो पंच 15, यदि 7 से 9 तक संख्या होती है, तो 20 पंच तथा 9 से अधिक ग्राम सभाएँ होने पर 25 पंच मनोनीत किये जाते हैं। ये पंच ही न्याय पंचायत के सरपंच एवं सहायक सरपंच का चुनाव करते हैं।

न्याय पंचायत के अधिकार—फौजदारी, दीवानी एवं माल के मुकद्दमे न्याय पंचायत के अधिकार क्षेत्र में आते हैं। 100 रुपये तक के दीवानी मुकद्दमे न्याय पंचायत निपटा सकती है। फौजदारी मुकद्दमों में भी न्याय पंचायत 100 रुपये तक ही जुर्माना करने की अधिकारिणी है। न्याय पंचायत कारावास नहीं दे सकती है। किसी गवाह के उपस्थित न होने की स्थिति में न्याय पंचायत को 25 रुपये तक का जमानती वारंट जारी करने का अधिकार है। इसका अनादर करने की स्थिति में न्याय पंचायत मानहानि के आरोप में उस व्यक्ति पर 5 रुपये तक का जुर्माना कर सकती है।

प्रश्न 3—क्षेत्र समिति किस प्रकार संगठित की जाती है? यह अपने क्षेत्र के विकास के लिए कौन-कौन से कार्य करती है? (1989)

उत्तर—क्षेत्र समिति का संगठन—क्षेत्र समिति का संगठन इस प्रकार किया जाता है—

(1) **सदस्यों की नियुक्ति**—क्षेत्र समिति (ब्लाक) में निम्नलिखित सदस्य होते हैं—

(i) खण्ड के अन्तर्गत समस्त ग्रामसभाओं के प्रधान।

(ii) खण्ड के अन्तर्गत आने वाले समस्त टाउन एरिया और नोटीफाइड एरिया और नोटीफाइड एरिया कमेटी में चेयरमैन।

(iii) क्षेत्र की सहकारी समितियों के 2 से लेकर 5 तक सदस्य।

(iv) उस क्षेत्र के निर्वाचन जिला परिषद् के सदस्य।

(v) खण्ड क्षेत्र से निर्वाचित लोकसभा तथा विधानसभा के सदस्य। राज्यसभा तथा विधान परिषद् के वे सदस्य जो खण्ड क्षेत्र में रहते हैं।

उपर्युक्त सदस्यों के अतिरिक्त कुछ सह-योजित (co-opt) सदस्यों की भी व्यवस्था है, जो इस प्रकार है—

(i) नियोजन और विकास में रुचि रखने वाले दो व्यक्ति।

(ii) यदि क्षेत्र समिति में महिला सदस्यों की संख्या 5 से कम हो तो इतनी महिलाएं सहयोजित की जायें कि उनकी संख्या 5 हो जाये।

(iii) यदि क्षेत्र समिति में अनुसूचित जाति के सदस्यों की संख्या आठ से कम

हो तो इसी जाति के उतने सदस्य और सहयोजित किये जायें कि उनकी संख्या 8 हो जाये।

क्षेत्र समिति के लिए कार्य—क्षेत्र समिति का कार्य-क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है, उसको खण्ड विकास के लिए मुख्य रूप से निम्नलिखित कार्य करने होते हैं।

(i) **कृषि सहकारिता एवं लघु सिंचाई**—क्षेत्र समिति अधिकाधिक अन्न उपजाने और सुरक्षित रखने कृषि के विकास और उत्पादन में वृद्धि, उर्वरकों का प्रबन्ध, उत्तम कोटि के बीजों की व्यवस्था, गोदाम स्थापित करना, कृषि के क्षेत्र में नयी तकनीकी के प्रयोग को महत्व देना, सहकारिता का प्रचार तथा सहकारी संस्थाओं की स्थापना, पोखर तालाबों के निर्माण और गन्दे पानी की निकासी की व्यवस्था, नये बाँधों का निर्माण तथा छोटी-छोटी सिंचाई योजनाओं को कार्यान्वित करने के कार्य करती है।

(ii) **पशुपालन**—इसके लिए पशुपालन चिकित्सालयों की स्थापना और प्रबन्ध, पशुओं की नस्ल में सुधार, पशु मेलों की व्यवस्था, चारे की फसलें उगाना मुर्गीपालन मत्स्य पालन आदि के कार्य किये जाते हैं।

(iii) **स्वास्थ्य**—प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों की स्थापना संक्रामक रोगों से बचाव के लिए टीकों की व्यवस्था, परिवार नियोजन, प्रसूति केन्द्र एवं औषधालयों की स्थापना का कार्य।

(iv) **सार्वजनिक निर्माण का कार्य** सड़कों, पुलों, इमारतों का निर्माण और मरम्मत, वृक्ष लगाना और इसकी रक्षा करना तथा क्षेत्र समिति की अचल सम्पत्ति का प्रबन्ध आदि सार्वजनिक निर्माण सम्बन्धी कार्य हैं।

(v) **ग्रामीण उद्योगों को प्रोत्साहन**—ग्रामों में कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन एवं ग्रामीण उद्योगों के विकास के लिए ऋण की व्यवस्था एवं उद्योगों को आवश्यक तकनीकी प्रशिक्षण प्रदान करना।

(vi) **शैक्षिक सांस्कृतिक एवं सामाजिक कार्य**—प्राथमिक शिक्षा, स्त्री शिक्षा का प्रबन्ध, शारीरिक तथा सामाजिक शिक्षा की व्यवस्था, पुस्तकालयों तथा वाचनालयों की स्थापना, स्वास्थ्य, सफाई कृषि, व्यापार, उद्योग, पशुओं की नस्ल सुधारने के सम्बन्ध में आवश्यक जानकारी प्रदान करना।

(vii) **हरिजन कल्याण**—हरिजन कल्याण में वृद्धि करना, समाज में एकता स्थापित करने के लिए सामाजिक शिक्षा प्रसार।

(viii) **नियोजन**—खण्ड के विकास के लिए योजनाएँ तैयार करना एवं ग्राम सभाओं को योजना निर्माण में सहायता प्रदान करना और योजनाओं को पूरा कराना विकास को प्रोत्साहन देने के लिए विकास प्रतियोगितायें आयोजित करना।

(ix) **ग्राम पंचायतों का निरीक्षण**—ग्राम सभाओं को दी जाने वाली आर्थिक सहायता के समुचित वितरण की व्यवस्था करना तथा उनके कार्यों का निरीक्षण करना।

प्रश्न 4—ज़िला परिषद् का निर्माण किस प्रकार होता है ? इसके प्रमुख कार्य क्या हैं ?

उत्तर—

जिला परिषद् का निर्माण

(1) सदस्यों की नियुक्ति—जिला परिषद् में निम्नलिखित सदस्य होते हैं—

(i) जिले की सभी क्षेत्र समितियों के प्रमुख।

(ii) राज्य सरकार द्वारा चुने गये प्रतिनिधियों के रूप में जिले की क्षेत्र समिति के कुछ सदस्य।

(iii) जिले की सभी नगरपालिकाओं के अध्यक्ष।

(iv) जिले की सहकारी बैंक का प्रबन्ध संचालक।

(v) जिले की समस्त पंजीकृत (रजिस्टर्ड) सहकारी समितियों के सदस्य।

(vi) जिला सहकारी संघ का प्रतिनिधि।

(vii) चुनी हुई सहकारी समिति का एक प्रतिनिधि।

(viii) गन्ना समिति का प्रतिनिधि (उन जिलों में जहाँ गन्ना समितियाँ हैं।)

(ix) जिले से निर्वाचित लोकसभा और विधान परिषद् के सदस्य।

(x) जिले में रहने वाले राज्यसभा तथा विधान परिषद् के सदस्य।

इस प्रकार नियुक्त एवं निर्वाचित सदस्यों की संख्या कम से कम बीस अवश्य होनी चाहिए। ये सदस्य मिलकर कुछ अन्य सदस्यों को सहयोजित (Co-opted) कर लेते हैं।

प्रत्येक जिला परिषद् में महिला सदस्यों की संख्या कम से कम पाँच होना आवश्यक है, अन्यथा जिला परिषद् के सदस्य उतनी महिलाओं को सहयोजित कर लेंगे।

इसी प्रकार जिला परिषद् में अनुसूचित जातियों की सदस्य संख्या अधिक से अधिक 10 हो सकती है, इनकी संख्या कम होने पर जिला परिषद् के सदस्य उतने सदस्यों को सह-योजित (co-opted) कर लेते हैं।

(2) कार्यकाल—जिला परिषद् में सदस्यों का कार्यकाल 5 वर्ष होता है, यदि राज्य सरकार चाहे तो परिषद् का कार्यकाल एक वर्ष और बढ़ा सकती है।

जिला परिषद् के कार्य—जिला परिषद् का प्रमुख उत्तरदायित्व जिले के समस्त ग्रामीण क्षेत्र के विकास एवं सुविधा के लिए कार्य करना है।

जिला परिषद् के प्रमुख कार्य निम्नलिखित हैं—

(i) जिले की सभी ग्रामीण सड़कों का, ग्राम सड़कों का, ग्राम के अन्दर की सड़कों में वर्गीकरण करना।

(ii) राज्य सरकार द्वारा प्रबन्ध किये जाने वाले मेलों को छोड़कर शेष मेलों का ग्राम पंचायत मेला, क्षेत्र समिति-मेला और जिला परिषद् मेलों का वर्गीकरण कर प्रबन्ध करना।

(iii) प्राथमिक स्तर से ऊपर की शिक्षा का प्रबन्ध करना।

(iv) घरेलू उद्योग-धन्धों का प्रबन्ध करना।

(v) स्वास्थ्य सेवाओं का प्रबन्ध करना।

(vi) राज्य सरकार और क्षेत्र समिति एवं ग्राम पंचायत के बीच पत्र-व्यवहार का माध्यम बनाना।

(vii) सड़कों, पुलों, डाक बंगलों आदि का निर्माण प्रबन्ध और मरम्मत करना, वृक्ष लगाना और उनकी रक्षा करना, नहरों, तालाबों और कुँओं तथा बाँधों का निर्माण तथा उनकी मरम्मत करना।

(viii) अस्पतालों तथा औषधियों की व्यवस्था करना।

(ix) ग्राम क्षेत्रों में लगने वाले क्षेत्रों में पशु मेलों का प्रबन्ध करना तथा पशु चिकित्सा की व्यवस्था करना।

(x) ग्राम पंचायतों व क्षेत्र समितियों के कार्यों का निरीक्षण करना व उन पर नियन्त्रण रखना।

(xi) जिले के समस्त ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के लिए योजनाएँ तैयार करना तथा उन्हें कार्यान्वित करना।

(xii) अकाल से बचने का प्रबन्ध करना।

(xiii) राज्य सरकार द्वारा सौंपे गये अन्य सब कार्य करना तथा सरकारी रिपोर्ट तैयार करना।

प्रश्न 5—अपने प्रदेश में नगरपालिकाओं का संगठन किस प्रकार किया जाता है? नगरों के विकास के लिए वह कौन-कौन से कार्य करती है? (1990)

उत्तर—भारत में सर्वप्रथम सन् 1887 में नगरपालिकाओं का गठन किया गया। वर्तमान समय में भारत में लगभग 1000 नगरपालिकाएँ हैं, जिनमें से लगभग 140 उत्तर प्रदेश में हैं।

नगरपालिका का गठन

(1) **सदस्य संख्या**—नगरपालिका के सदस्यों की संख्या उस नगर की जन-संख्या के आधार पर राज्य सरकार निश्चित करती है। अतः विभिन्न नगरपालिकाओं की सदस्य संख्या भिन्न-भिन्न होती है, परन्तु इसके सदस्यों की संख्या 20 से कम और 45 से अधिक नहीं हो सकती। कुछ सदस्यों को नगरपालिका के सदस्यों द्वारा बाहर से सह-योजित (co-opt) कर लिया जाता है। ऐसे सदस्यों की संख्या 4 से कम और 8 से अधिक नहीं हो सकती। अनुसूचित जातियों के लिए नगर में उनकी जनसंख्या के आधार पर स्थान आरक्षित होते हैं।

(2) **निर्वाचन**—नगरपालिका के सदस्यों का निर्वाचन वयस्क मताधिकार के आधार पर गुप्त रूप से होता है, इसलिए पूरे नगर को कई क्षेत्रों में विभाजित कर दिया जाता है जिन्हें वार्ड (ward) कहते हैं। एक वार्ड से एक से अधिक सदस्य चुने जा सकते हैं।

(3) **सदस्यों की योग्यतायें**—नगरपालिका की सदस्यता के लिए प्रत्याशी में मतदाता की योग्यताओं के अतिरिक्त निम्नलिखित योग्यतायें और होनी चाहिए—

(अ) उसमें थोड़ी बहुत लिखने की योग्यता होनी चाहिए।

(ब) सरकारी नौकर न हो।

(स) पागल, कोढ़ी, दिवालिया अथवा अपराधी न हो।
(द) जिसके नाम नगरपालिका का कोई कर अथवा ऋण न हो।

नगरमहापालिका तथा नगरपालिका के कार्य—नगर महापालिका अथवा नगरपालिका को कर्त्तव्य-पालन के रूप में अनिवार्य कार्यों को तो सम्पादित करना ही होता है. पर इसके साथ ही वह नगर का जीवन स्तर सुधारने के लिए कुछ ऐच्छिक कार्यों का सम्पादन भी करती है। नगर महापालिका के अनिवार्य एवं ऐच्छिक कार्य निम्नलिखित हैं—

अनिवार्य कार्य—(1) नगरवासियों के लिए स्वच्छ पीने के पानी की व्यवस्था करना।

(2) नगर की जनसंख्या तथा जन्म और मृत्यु का रिकार्ड रखना।
(3) सड़कों, नालियों का निर्माण एवं उनकी मरम्मत करना।
(4) सड़कों एवं सार्वजनिक स्थानों में रोशनी का प्रबन्ध करना।
(5) प्राथमिक शिक्षा का प्रबन्ध करना।
(6) अस्पताल एवं औषधालय स्थापित करना।
(7) आग लगने पर उसे बुझाने का कार्य।
(8) कमजोर मकानों को गिरवाने अथवा उनकी मरम्मत का कार्य।
(9) चेचक तथा अन्य रोगों से बचाव के लिए टीके लगवाने के प्रबन्ध का प्रबन्ध कार्य।
(10) बाजार बनवाने तथा उनके प्रबन्ध का कार्य।
(11) सड़कों, सार्वजनिक स्थानों, गलियों तथा नालियों की सफाई के प्रबन्ध का कार्य।
(12) श्मशानों का प्रबन्ध करना।
(13) जानवरों के अस्पाल स्थापित करने के कार्य।
(14) अपनी सम्पत्ति की व्यवस्था का कार्य।
(15) लावारिस कुत्तों और अन्य जानवरों को सार्वजनिक स्थानों से हटवाने का कार्य।

ऐच्छिक कार्य—(1) बीमारी, अकाल, बाढ़, महामारी आदि दैवी प्रकोप के समय नगरवासियों की सहायता करना।

(2) नगर में नई बस्तियों का निर्माण।
(3) नगर में पार्क, बगीचे, धर्मशाला, पुस्तकालय, फव्वारे आदि बनवाने का कार्य।
(4) गन्दी बस्तियों को समाप्त करके उसके स्थान पर नयी बस्तियों का निर्माण।
(5) नगर में दुग्ध पूर्ति का प्रबन्ध करने का कार्य।
(6) नगर सेवा के लिए ट्राम, बस आदि की व्यवस्था करना।

(7) प्रदर्शनी तथा मेलों आदि का प्रबन्ध करना।

(8) पागलखाना खुलवाना तथा भिखारियों; कोढ़ियों तथा बेघर लोगों का प्रबन्ध करना।

(9) प्राथमिक शिक्षा के अतिरिक्त माध्यमिक शिक्षा का प्रबन्ध करना।

बहु-विकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1—निम्न कार्यों में से कौन-सा कार्य नगरपालिका नहीं करती है ?

(i) पीने के पानी की आपूर्ति (ii) रोशनी की व्यवस्था
(iii) उच्च शिक्षा का संगठन (iv) जन्म-मृत्यु का लेखा।

उत्तर—(iii) उच्च शिक्षा का संगठन।

प्रश्न 2—ग्राम पंचायत में कम से कम सदस्य होते हैं—

(i) 7 (ii) 10
(iii) 25 (iv) 45।

उत्तर—(i) 7।

प्रश्न 3—न्याय पंचायत जुर्माना कर सकती है—

(i) 500 रुपये (ii) 100 रुपये
(iii) 1,000 रुपये (iv) 50 रुपये।

उत्तर—(ii) 100 रुपये।

प्रश्न 4—नगरपालिका के सदस्यों की संख्या से अधिक नहीं हो सकती—

(i) 10 (ii) 115
(iii) 45 (iv) 25।

उत्तर—(iii) 45।

प्रश्न 5—क्षेत्र समिति के प्रधान को कहते हैं—

(i) प्रमुख (ii) प्रधान
(iii) अध्यक्ष (iv) सभापति।

उत्तर—(i) प्रमुख।

राज्य स्तरीय शासन

अति लघुउत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—राज्य स्तरीय शासन के कौन-कौन से अंग हैं ?

उत्तर—राज्य स्तरीय शासन के तीन अंग हैं—

(1) व्यवस्थापिका, (2) कार्यपालिका, (3) न्यायपालिका।

प्रश्न 2—राज्यपाल की नियुक्ति कौन करता है ? (1984, 86)

उत्तर— राज्यप्राल की नियुक्ति राष्ट्रपति करता है।

प्रश्न 3—विधानमण्डल के कितने सदन होते हैं ? उनके नाम बताइए। (1988)

उत्तर—विधानमण्डल के दो सदन होते हैं—

(1) विधान सभा, (2) विधान परिषद्।

प्रश्न 4—मुख्यमन्त्री की नियुक्ति कौन करता है ? (1986, 87)

उत्तर—राज्यपाल विधानसभा में बहुमत वाले दल के नेता को मुख्यमन्त्री के पद पर नियुक्त करता है।

प्रश्न 5—उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की नियुक्ति किसके द्वारा की जाती है ?

उत्तर—उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की नियुक्ति उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश तथा सम्बन्धित राज्य के राज्यपाल से परामर्श लेकर राष्ट्रपति करता है।

प्रश्न 6—उच्च न्यायालय के न्यायाधीश कितने समय तक अपने पद पर कार्य करते हैं।

उत्तर—उच्च न्यायालय के न्यायाधीश 62 वर्ष की आयु तक कार्य करते हैं।

प्रश्न 7—जिले में कितने प्रकार के न्यायालय कार्यरत हैं ?

उत्तर—प्रत्येक जिले में तीन प्रकार के न्यायालय होते हैं—

(1) दीवानी न्यायालय, (2) फौजदारी न्यायालय, (3) राजस्व न्यायालय।

परीक्षा में पूछे गये तथा अन्य अति लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 8—उत्तर प्रदेश का उच्च न्यायालय कहाँ स्थित है ? (1988)

उत्तर—उत्तर प्रदेश का उच्च न्यायालय इलाहाबाद में स्थित है।

प्रश्न 9—उत्तर प्रदेश में कितने जिले (जनपद) हैं ? (1991)

उत्तर—उत्तर प्रदेश में 58 जिले (जनपद) हैं।

प्रश्न 10—विधान परिषद के सदस्यों का कार्यकाल कितने वर्ष होता है ?

उत्तर—विधान परिषद के सदस्यों का कार्यकाल 6 वर्ष होता है।

लघुउत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक)

प्रश्न 1—विधान परिषद् की सदस्यता के लिए किन-किन योग्यताओं का होना आवश्यक है ? (1987)

उत्तर—विधान परिषद की सदस्यता के लिए योग्यताएँ—विधान परिषद की सदस्यता के लिए व्यक्ति में निम्नलिखित योग्यताएँ होनी चाहिए—

1. वह भारत का नागरिक हो।
2. उसकी आयु 30 वर्ष से कम न हो।
3. भारत सरकार या राज्य सरकार के अधीन किसी लाभ के पद पर कार्यरत न हो।
4. वह पागल, दिवालिया, कोढ़ी या अपराधी न हो।
5. वह संसद द्वारा निर्धारित अन्य शर्तें पूरी करता हो।

प्रश्न 2—मन्त्रि परिषद् का संगठन किस प्रकार होता है ?

उत्तर—मन्त्रि परिषद् का गठन—राज्य के मन्त्रि परिषद् के गठन में सबसे

पहले राज्यपाल विधान सभा में जिस दल का स्पष्ट बहुमत होता है, उस दल के नेता को मुख्यमन्त्री नियुक्त करता है, और उसकी सलाह से अन्य मन्त्रियों की नियुक्ति करता है तथा उनके विभागों का विभाजन करता है। मन्त्री बनने के लिए व्यक्ति को विधान मण्डल के किसी भी सदन का सदस्य होना आवश्यक है। यदि वह किसी भी सदन का सदस्य नहीं है तो छः महीने के अन्दर उसे किसी न किसी सदन का सदस्य हो जाना चाहिए अन्यथा उसे मन्त्री पद से त्याग-पत्र देना पड़ेगा।

प्रश्न 3—राज्यपाल के पद के लिए क्या-क्या योग्यताएँ निर्धारित की गयीं हैं? (1984, 88)

उत्तर—राज्यपाल के पद के लिए निम्नलिखित योग्यताएँ निर्धारित की गई हैं—

(1) वह भारत का नागरिक हो।

(2) वह 35 वर्ष की आयु पूरी कर चुका हो।

(3) संघ अथवा राज्य की व्यवस्थापिका का सदस्य न हो (यदि हो तो उसे नियुक्ति से पूर्व त्याग-पत्र देना होता है)।

(4) संघ अथवा राज्यों की सरकार में किसी लाभ के पद पर न हो।

(5) वह उस राज्य का निवासी न हो जिस राज्य का राज्यपाल नियुक्त किया जा रहा हो।

प्रश्न 4—उच्च न्यायालय किन-किन मुकद्दमों की अपीलें सुनता है?

उत्तर—उच्च न्यायालय निम्नलिखित मुकद्दमों की अपीलें सुन सकता है—

उच्च न्यायालय अपने अधीन न्यायालयों के निर्णयों के विरुद्ध दीवानी, फौजदारी तथा माल के मुकदमों की अपीलें सुनता है। आयकर, बिक्रीकर तथा अन्य करों से सम्बन्धित अपीलें भी उच्च न्यायालय में सुनी जाती हैं।

प्रश्न 5—राज्यपाल को न्यायिक क्षेत्र में क्या अधिकार प्राप्त हैं? (1987)

उत्तर—न्यायिक क्षेत्र में राज्यपाल के निम्न अधिकार प्राप्त हैं—

(1) उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की नियुक्ति में राष्ट्रपति को परामर्श देना।

(2) उच्च न्यायालय के न्यायाधीश की सलाह से अधीन न्यायालयों के न्यायाधीशों तथा जिला न्यायाधीशों की नियुक्ति करना।

(3) मृत्युदण्ड के अतिरिक्त किसी अन्य सजा को कम करना, परिवर्तन करना या क्षमादान देना।

प्रश्न 6—जिले में राजस्व न्यायालय के प्रमुख अधिकारी कौन-कौन होते हैं?

उत्तर—जिले में राजस्व न्यायालय के प्रमुख अधिकारी निम्नलिखित हैं—

(1) **जिलाधिकारी**—यह जिले में राजस्व न्यायालय का सर्वोच्च अधिकारी होता है।

(2) **उपजिलाधिकारी**—जिले में राजस्व का द्वितीय अधिकारी उपजिलाधीश कहलाता है जिसे परगनाधीश भी कहते हैं।

(3) तहसीलदार—भूमि तथा लगान से सम्बन्धित मुकदमों के निर्णय करने के लिए प्रत्येक तहसील में एक तहसीलदार होता है।

(4) नायब तहसीलदार—प्रत्येक तहसील में तहसीलदार की सहायता के लिए एक नायब तहसीलदार होता है।

परीक्षा में पूछे गये तथा अन्य लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 7—विधान सभा और विधान परिषद् के संगठन में अन्तर को स्पष्ट कीजिए। (1986, 88)

उत्तर—विधान सभा और विधान परिषद् के संगठन में निम्न अन्तर पाये जाते हैं—

1. विधान सभा के सदस्यों का निर्वाचन प्रत्यक्ष रूप से जनता द्वारा गुप्त मतदान प्रणाली द्वारा होता है, जबकि विधान परिषद् के सदस्यों का निर्वाचन अप्रत्यक्ष चुनाव द्वारा होता है और इसके 12 सदस्य राज्यपाल द्वारा मनोनीत किये जाते हैं।

2. विधान सभा के सदस्य प्राय: 5 वर्ष के लिए निर्धारित किये जाते हैं। संकट काल की स्थिति में यह समय बढ़ाया भी जा सकता है और मन्त्रि परिषद् की सलाह पर राज्यपाल इसे पहले भी भंग कर सकता है। विधान परिषद् एक स्थायी सदन है। यह तो न कभी भंग होता है और न इसका कार्यकाल बढ़ाया जाता है। प्रति दो वर्ष बाद कुल सदस्य का तिहाई भाग समाप्त हो जाता है और उतने ही नये सदस्य निर्वाचित कर लिये जाते हैं। इस प्रकार विधान परिषद् के एक सदस्य का कार्य काल 6 वर्ष का होता है।

प्रश्न 8—मन्त्रि परिषद में मन्त्रियों की श्रेणियों का उल्लेख कीजिए। (1987)

उत्तर—मन्त्रिपरिषद् में तीन प्रकार के मन्त्री होते हैं—

1. कैबिनेट स्तर के मन्त्री, 2. राज्य मन्त्री, 3. उपमन्त्री।

प्रश्न 9—राज्य के शासन में मुख्यमन्त्री का क्या महत्व है? (1991)

उत्तर—मुख्य मन्त्री का महत्व—राज्य के शासन में मुख्यमन्त्री का महत्वपूर्ण स्थान है। वह राज्य के शासन प्रमुख संचालक, मन्त्री परिषद् का प्रधान और नेता होता है। राज्य की वास्तविक शक्ति उसी के हाथ में होती है। राज्य का शासन उसी की नीतियों के अनुसार चलता है और सभी सहयोगी मन्त्रियों को उसके आदेशों का पालन करना पड़ता है। राज्य की वित्त नीति पर उसका सीधा नियन्त्रण रहता है। मुख्यमन्त्री राज्यपाल और मन्त्रीपरिषद् तथा विधान मण्डल और मन्त्रि-परिषद् में सम्बन्ध जोड़ने वाली कड़ी है। मंत्रिपरिषद यदि शासन की नौका है तो मुख्यमन्त्री उसका नाविक है। संक्षेप में, शासन का पूरा दायित्व उसी के कन्धों पर रहता है।

प्रश्न 10—उत्तर प्रदेश की न्याय-व्यवस्था पर प्रकाश डालिए। (1991)

उत्तर—उत्तर प्रदेश का मुख्य न्यायालय उच्च न्यायालय है जो इलाहाबाद में स्थित है। इसकी एक शाखा लखनऊ में है। उच्च न्यायालय के अधीन प्रत्येक जिले में निम्न तीन प्रकार के न्यायालय होते हैं—

1. दीवानी न्यायालय---इस न्यायालय में धन सम्बन्धी अथवा चल या अचल सम्पत्ति से सम्बन्धित मामलों की सुनवाई होती है।

2. फौजदारी न्यायालय---फौजदारी न्यायालय में लड़ाई-झगड़े, हत्या, मारपीट आदि के मुकदमों की सुनवाई होती है।

3. राजस्व न्यायालय--जिले में राजस्व का न्यायालय जिलाधीश का न्यायालय होता है जिसमें भूमि और लगान सम्बन्धी मुकद्दमों की सुनवाई होती है।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न (राज्यकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1---विधानसभा की रचना किस प्रकार होती है ? इसके प्रमुख कार्य क्या हैं ? (1990)

उत्तर--विधानसभा राज्य के विधानमण्डल का प्रथम अथवा निम्न सदन है। विधानसभा के सदस्यों का निर्वाचन प्रत्यक्ष रूप से राज्य की जनता करती है, इस कारण से इसे लोकप्रिय सदन भी कहा जाता है। यह विधान परिषद् से अधिक शक्तिशाली होती है।

विधानसभा की रचना (संगठन)

संविधान के अन्तर्गत किसी भी राज्य की विधानसभा के सदस्यों की संख्या निश्चित नहीं की गई है, परन्तु संविधान में इसकी न्यूनतम और अधिकतम संख्या निर्धारित कर दी गई है। राज्य की विधान सभा के सदस्यों की संख्या अधिक से अधिक 500 तथा कम से कम 60 होती है। विभिन्न राज्यों में वहाँ की विधान-सभा की सदस्य संख्या उस राज्य की जनसंख्या के आधार पर निश्चित की गई है।

स्थान आरक्षण---राज्यों की विधानसभाओं में अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित जन-जातियों के लिए उनकी जनसंख्या के आधार पर कुछ स्थान सुरक्षित रखे गये हैं। इसके अतिरिक्त राज्यपाल आंगल भारतीय समुदाय के एक सदस्य को मनोनीत करता है।

राज्य विधानसभा की शक्तियाँ और कार्य

विधानसभा के सदस्यों का निर्वाचन समस्त राज्य को निर्वाचन क्षेत्रों में विभक्त करके वयस्क मताधिकार के आधार पर जनता द्वारा प्रत्यक्ष रूप से किया जाता है।

विधानसभा अपने सदस्यों में से एक अध्यक्ष तथा एक उपाध्यक्ष का चुनाव करती है। अध्यक्ष सदन की कार्यवाही का संचालन करता है और उसकी अनुपस्थिति में उपाध्यक्ष यही कार्य करता है। विधान सभा का कार्यकाल 5 वर्ष होता है।

राज्य विधानसभा राज्य की व्यवस्थापिका है। राज्य विधानसभा को संविधान द्वारा प्रदत्त व्यापक शक्तियों का वर्णन हम अग्र शीर्षकों के अन्तर्गत करेंगे---

(1) विधि निर्माण सम्बन्धी शक्ति---राज्य विधान सभा को संविधान के अन्तर्गत सामान्य परिस्थितियों में राज्य सूची और समवर्ती सूची में दिये गये सभी विषयों पर कानून बनाने की शक्ति प्राप्त है इसके अतिरिक्त राज्य विधानसभा राज्य अथवा समवर्ती सूची में दिये गये विषयों पर निर्मित पुराने कानूनों को समाप्त कर सकता है तथा उनमें संशोधन कर सकता है। परन्तु राज्य विधानसभा द्वारा सम-वर्ती सूची के किसी विषय पर बनाये कानून के विरुद्ध हो तो ऐसी स्थिति में संसद

द्वारा बनाये गये कानून ही मान्य होंगे और राज्य विधानसभा द्वारा बनाया गया कानून रद्द हो जायेगा।

(2) **प्रशासन सम्बन्धी शक्ति**—संविधान के अन्तर्गत केन्द्र के समान राज्यों में भी संसदात्मक शासन व्यवस्था को अपनाया गया है। अतः राज्य की मन्त्रिपरिषद् भी अपने कार्यों और नीतियों के लिए विधानसभा के प्रति उत्तरदायी होती है। विधानसभा के सदस्य मन्त्रिपरिषद् पर विभिन्न उपायों से नियन्त्रण रखते है। वे मन्त्रियों से उनके विभागों से सम्बन्धित प्रश्न पूछ सकते हैं।

(3) **वित्त सम्बन्धी शक्ति**—विधानसभा का राज्य के वित्त अर्थात् सरकार के आय-व्यय को नियन्त्रित करने की शक्ति प्राप्त है। बिना विधानसभा की स्वीकृति के न तो कोई नया कर लगाया जा सकता है और न सरकार को किसी मद के व्यय में अतिरिक्त धन बढ़ाने का अधिकार है। इस प्रकार सरकार के बजट पर विधानसभा का पूरा नियन्त्रण होता है। विधानसभा द्वारा पारित बजट को विधान परिषद् केवल 14 दिन तक रोक सकती है और यदि विधान परिषद् को स्वीकृति न भी मिले तो भी बजट विधानसभा द्वारा पारित समझा जाता है और राज्यपाल इस बजट को अपनी स्वीकृति देने पर बाध्य होता है।

(4) **संविधान के संशोधन सम्बन्धी शक्ति**—हमारे संविधान की कुछ ऐसी धाराएँ है जिनमें संविधान के लिए संसद द्वारा विशेष बहुमत के आधार पर पारित प्रस्ताव की कम से कम आधे राज्यों की विधानसभाओं द्वारा स्वीकार किया जाना आवश्यक है। इस प्रकार राज्य विधानसभा संविधान संशोधन सम्बन्धी कार्यों में भी भाग लेती है।

(5) **राष्ट्रपति के निर्वाचन सम्बन्धी शक्ति**—राज्य विधानसभा के निर्वाचित सदस्य राष्ट्रपति के निर्वाचन में भाग लेते हैं।

प्रश्न 2—विधान परिषद् का संगठन किस प्रकार होता है ? इसके कार्यों एवं अधिकारों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—राज्य के विधानमण्डल के दूसरे सदन को विधान परिषद् कहा जाता है। इसे उच्च सदन भी कहा जाता है। यद्यपि राज्य के प्रशासन में इस सदन को कोई विशेष शक्तियाँ प्राप्त नहीं है फिर भी प्रजातन्त्रीय परिपक्वता (प्रजातन्त्र के विकास) तथा राज्य की कार्यपालिका पर नैतिक नियन्त्रण रखने के कारण विधान परिषद् महत्वपूर्ण है।

विधान परिषद् का संगठन

सदस्य संख्या—संविधान में व्यवस्था की गई है कि किसी भी राज्य की विधान परिषद् के सदस्यों की संख्या उस राज्य की विधानसभा की सदस्य संख्या की एक तिहाई से अधिक नहीं होगी। परन्तु यह संख्या चालीस से कम नहीं होनी चाहिए। जम्मू-कश्मीर की संविधान के अन्तर्गत भारत संघ के अन्य सभी राज्यों से भिन्न स्थिति है। अतः इस सम्बन्ध में इस राज्य में कुछ अपवाद हैं।

निर्वाचन—विधान परिषद् के सदस्यों का चुनाव आनुपातिक प्रणाली के आधार पर अप्रत्यक्ष रूप (निर्वाचक मण्डलों के द्वारा) से होता है। इन निर्वाचक मण्डलों में स्थानीय संस्थाओं के निर्वाचक मण्डल, विधानसभा का निर्वाचक मण्डल, स्नातकों का निर्वाचक मण्डल तथा अध्यापकों का निर्वाचक मण्डल विधान परिषद् के सदस्यों का निर्वाचन करते हैं।

विधान परिषद् के कुल सदस्यों के 5/6 सदस्यों का निर्वाचन उपर्युक्त निर्वाचक मण्डलों द्वारा किये जाने के पश्चात् शेष 1/6 सदस्य का मनोनयन राज्यपाल के द्वारा उन व्यक्तियों में से किया जाता है जो साहित्य, कला, विज्ञान सामाजिक सेवा के क्षेत्र में ख्याति प्राप्त हों।

सदस्यता के लिए अर्हतायें—विधान परिषद् की सदस्यता के लिए प्रत्याशी में विधानसभा की सदस्यता के समान ही अर्हतायें होनी चाहिए ; परन्तु उसकी आयु कम से कम 30 वर्ष होनी चाहिए तथा सदस्य को उस राज्य की विधान सभा के उस निर्वाचन क्षेत्र का मतदाता होना चाहिए जहाँ वह सदस्य बनना चाहता है। मनोनीत किये जाने वाले सदस्यों को उस राज्य का निवासी होना चाहिए जिस राज्य की विधान परिषद् की सदस्यता उसे प्रदान की जाती है।

कार्यकाल—विधान परिषद् राज्य के विधानमण्डल का स्थायी सदन है जो कभी भंग नहीं होता। विधान परिषद् के सदस्य 6 वर्ष के लिए निर्वाचित किये जाते हैं और हर दो वर्ष के बाद एक तिहाई सदस्यों का कार्यकाल समाप्त हो जाता है और उसके स्थान पर नये सदस्यों का निर्वाचन हो जाता है। राज्यपाल को भी विधान परिषद् भंग करने का अधिकार है।

पदाधिकारी—विधान परिषद् में दो मुख्य पदाधिकारी होते हैं—(1) सभापति तथा (2) उपसभापति। इन दोनों का चुनाव विधान परिषद् अपने सदस्यों में से ही करती है। यह दोनों पदाधिकारी अपने कार्यकाल तक अपने पदों पर बने रह सकते हैं। वे स्वेच्छा से त्यागपत्र दे सकते हैं तथा कुल सदस्यों के बहुमत से स्वीकृति प्रस्ताव से इन्हें पद से हटाया जा सकता है। इन दोनों की शक्तियाँ और कार्य अपने सदन में लगभग वे ही हैं जो विधानसभा में अध्यक्ष तथा उपाध्यक्ष के हैं। इन दोनों पदाधिकारियों का वेतन तथा अन्य सुविधाएँ राज्य का विधान मण्डल निर्धारित करता है।

विधान परिषद् की शक्तियाँ तथा कार्य—विधान परिषद् की शक्तियाँ और कार्यों का निम्नलिखित रूप में वर्णन किया जा सकता है—

(1) **कार्यपालिका सम्बन्धी कार्य**—विधान परिषद् के सदस्य मन्त्रि परिषद् के सदस्य हो सकते हैं। विधान परिषद् प्रश्न पूछकर, प्रस्तावों तथा वाद-विवादों के द्वारा मन्त्रिपरिषद् पर नियन्त्रण रख सकती है। परन्तु अविश्वास का प्रस्ताव पारित करके मन्त्रिपरिषद् को अपदस्थ करने का अधिकार विधानपरिषद् को नहीं है।

(2) **कानून सम्बन्धी कार्य**—वित्त विधेयक के अतिरिक्त अन्य साधारण विधेयकों को विधान परिषद् में भी प्रस्तुत किया जा सकता है और वे विधेयक दोनों सदनों द्वारा स्वीकृत होने चाहिए। विधानसभा द्वारा पारित किसी विधेयक को यदि विधान परिषद् अस्वीकार कर देती है अथवा विधेयक में ऐसे संशोधन कर देती हो जो विधानसभा को मान्य न हों अथवा परिषद् के समक्ष विधानसभा द्वारा पारित किये गये विधेयक के रखे जाने की तिथि से तीन माह तक परिषद् द्वारा विधेयक पारित नहीं किया जाता तो विधानसभा पुनः उस विधेयक को स्वीकृति के लिए विधानपरिषद को भेजती है। यदि परिषद् विधेयक को पुनः अस्वीकृति कर दे अथवा परिषद् विधेयक रखे जाने की तिथि से एक माह तक विधेयक पारित नहीं करती या विधेयक पुनः ऐसे संशोधन करती है जो विधानसभा को मान्य न हों तो विधेयक विधान परिषद् द्वारा पारित किये बिना ही दोनों सदनों द्वारा पारित समझा

जाता है। इस प्रकार विधान परिषद् किसी साधारण विधेयक को केवल चार माह तक रोक सकती है। विधान परिषद् किसी विधेयक को समाप्त नहीं कर सकती।

(3) **वित्त सम्बन्धी कार्य**— संविधान में इस बात का स्पष्ट रूप से उल्लेख कर दिया गया है कि वित्त विधेयक केवल विधान सभा में ही प्रस्तुत किये जा सकते हैं, विधान परिषद् में नहीं। विधानसभा द्वारा पारित कोई विधेयक जब परिषद् में भेजा जाता है तो विधान परिषद् 14 दिन तक वित्त विधेयक को अपने पास रोक सकती है। यदि वह 14 दिन के अन्दर उस वित्त विधेयक को अपने संशोधनों और सुझाव के साथ विधानसभा को नहीं भेज देती तो ऐसी स्थिति में वह वित्त विधेयक उसी रूप में दोनों सदनों के द्वारा पारित समझा जाता है जिस रूप में विधानसभा ने पारित किया था। वित्त विधेयक के सम्बन्ध में दिये गये संशोधन और सुझावों को मानना या न मानना विधानसभा की इच्छा पर निर्भर करता है।

प्रश्न 3—विधान मण्डल के कार्यों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—

विधान मण्डल के कार्य

(1) **वैधानिक कार्य**—विधान मण्डल को आवश्यकतानुसार नये कानून बनाने, पुराने कानूनों में संशोधन करने अथवा उन्हें रद्द करने का अधिकार है।

(2) **शासन सम्बन्धी कार्य**—शासन पर विधान मण्डल का पूर्ण अधिकार है। विधान मण्डल द्वारा मन्त्रि परिषद् के सदस्यों से प्रश्न पूछे जा सकते हैं। उनके विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव तथा कामरोको प्रस्ताव पारित करना, कार्यों पर नियन्त्रण करना, बजट में कटौती करना आदि कार्य विधान मण्डल के कार्य क्षेत्र में आते हैं।

(3) **वित्तीय कार्य**—राज्य की वित्तीय व्यवस्था पर विधान मण्डल का नियन्त्रण होता है। राज्य का बजट विधान मण्डल द्वारा ही स्वीकृत होता है। विधान मण्डल की स्वीकृति नये कर लगाने अथवा कुछ भी व्यय करने आदि में आवश्यक होती है।

(4) **अन्य कार्य**—विधान मण्डल को संविधान संशोधन में अपनी स्वीकृति देने का अधिकार है। यह विधान परिषद् के 1/3 सदस्यों का चयन कर सकता है। विधान मण्डल को राष्ट्रपति के निर्वाचन में भाग लेने, और राज्य सभा के सदस्यों का निर्वाचन करने का भी अधिकार है।

राज्य विधान मण्डल के सदस्यों को प्राप्त विशेषाधिकार—विधान मण्डल को कुछ विशेष अधिकार प्राप्त हैं जो निम्न हैं—

(1) नियमों के अन्तर्गत सदन में भाषण देने का अधिकार।

(2) अधिवेशन के समय उपस्थित किसी भी सदस्य को अध्यक्ष की अनुमति के बिना गिरफ्तार नहीं किया जा सकता।

(3) सदन में दिये गये किसी सदस्य के भाषण के विरुद्ध न्यायालय में मुकद्दमा नहीं चलाया जा सकता।

प्रश्न 4—राज्यपाल की नियुक्ति किस प्रकार होती है ? उसके प्रमुख अधिकार क्या हैं ? (1987)

उत्तर—राज्यपाल की नियुक्ति—भारत के संविधान में प्रत्येक राज्य के लिए एक राज्यपाल की नियुक्ति का प्रावधान किया गया है। राज्यपाल राज्य का प्रधान होता है। "राज्य की कार्यपालिका की शक्ति राज्यपाल में निहित होती है और वह इस शक्ति का प्रयोग संविधान के अनुसार या तो स्वयं या अपने अधीनस्थ कर्मचारियों द्वारा करेगा।"

संविधान के अनुसार राज्यपाल की नियुक्ति राष्ट्रपति के द्वारा की जाती है। परन्तु व्यावहारिक रूप में राष्ट्रपति केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल के परामर्श तथा सम्बन्धित राज्य के मुख्यमन्त्री की सहमति से ही इस प्रकार की नियुक्तियाँ करता है।

कार्य विधि—सामान्यतः राज्यपाल की नियुक्ति 5 वर्ष के लिए की जाती है। परन्तु यदि राज्यपाल चाहे तो वह अपने पद की अवधि को पूरा करने से पहले ही राष्ट्रपति को त्याग-पत्र देकर अपने पद से मुक्त हो सकता है।

राज्यपाल के पद पर वही व्यक्ति नियुक्त किया जा सकता है जिसमें निम्न अर्हताएँ हों--

(1) वह भारत का नागरिक हो।

(2) वह 35 वर्ष की आयु पूरी कर चुका हो।

(3) वह संघ अथवा राज्य की व्यवस्थापिका का सदस्य न हो (यदि हो तो उसे नियुक्ति से पूर्व त्यागपत्र देना होता है)।

(4) वह संघ अथवा राज्यों की सरकार में किसी लाभ के पद पर न हो।

वेतन तथा भत्ता—राज्यपाल को 11000 रु० मासिक वेतन तथा अन्य भत्ते भी मिलते हैं। रहने के लिए उसे निशुल्क सरकारी निवास-स्थान मिलता है। उसके कार्यकाल में उसके वेतन तथा भत्तों में किसी प्रकार की कमी नहीं की जा सकती है। उसका वेतन तथा भत्ते आदि संचित निधि से दिये जाते हैं। समय-समय पर संसद द्वारा निर्धारित अन्य भत्ते भी उसे दिये जाते हैं।

राज्यपाल के अधिकार और कर्त्तव्य—राज्यपाल कार्यपालिका का सर्वोच्च अधिकारी होता है। भारतीय संविधान ने राज्यपाल को व्यापक अधिकार प्रदान किये हैं जिनका प्रयोग वह स्वयं या अपने प्रतिनिधियों द्वारा करता है। उसके अधिकारों को निम्न भागों में बाँटा जा सकता है—

(1) कार्यपालिका अधिकार—राज्यपाल कार्यपालिका का प्रधान होता है। राज्य के शासन के सारे काम राज्यपाल के नाम से किये जाते हैं। वह विधान सभा में बहुमत दल के नेता को मुख्यमन्त्री पद पर नियुक्त करता है। वह मुख्यमन्त्री की सलाह पर अन्य मन्त्रियों को नियुक्त करता है तथा उनको पद से हटा सकता है। वह राज्य के महाधिवक्ता, लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष तथा सदस्यों की नियुक्ति करता है तथा विधान परिषद् के कुछ सदस्यों को मनोनीत करता है।

(2) विधायनी अधिकार—राज्यपाल को विधान मण्डल का अधिवेशन बुलाने का अधिकार है। वह इसे स्थगित या भंग भी कर सकता है। विधान मण्डल द्वारा पारित कोई विधेयक बिना राज्यपाल के हस्ताक्षर के कानून नहीं बना सकता। राज्यपाल मन्त्रि-परिषद् के परामर्श से आवश्यकता पड़ने पर अध्यादेश भी जारी कर सकता है। ये अध्यादेश विशेष आज्ञा के रूप में होते हैं और कानून की तरह लागू होते हैं।

(3) **न्यायिक अधिकार**---राज्यपाल उच्च न्यायालय के परामर्श से अधीन न्यायालयों के न्यायाधीशों तथा जिला न्यायाधीशों की नियुक्ति करता है। उच्च न्यायालय के न्यायमूर्तियों की नियुक्ति करते समय राष्ट्रपति उस राज्यपाल से परामर्श लेता है। वह विधानमण्डल के द्वारा बनाये गये कानून को तोड़ने वाले अपराधियों की सजा को माफ कर सकता है, कम कर सकता है, या बदल सकता है।

(4) **वित्तीय अधिकार**—राज्यपाल हर वर्ष विधान मण्डल के सामने राज्य का बजट प्रस्तुत करता है। यह बजट वित्त मन्त्री राज्यपाल के नाम से सदन में पेश करता है। राज्यपाल की पूर्व स्वीकृति के बिना कोई धन विधेयक विधानसभा में प्रस्तुत नहीं किया जा सकता है। वह आकस्मिक निधि से सरकार के खर्च के लिए धन की स्वीकृति दे सकता है।

प्रश्न 5---राज्य की मन्त्रिपरिषद् का गठन किस प्रकार होता है ? उसके प्रमुख कार्य क्या है ? (1985)

उत्तर—भारतीय संविधान के अन्तर्गत भारत में केन्द्र के समान राज्यों में भी संसदात्मक शासन व्यवस्था को अपनाया गया है। संसदात्मक शासन में राज्य की कार्यपालिका की वास्तविक शक्ति मन्त्रिपरिषद् में निहित होती है जो अपने कार्यों के लिए विधानसभा के प्रति उत्तरदायी होती है। संविधान के अनुच्छेद '163' में कहा गया है, कि उन बातों को छोड़कर जिनमें राज्यपाल अपने विवेक से कार्य करता है, अन्य कार्यों में उसे सहायता तथा परामर्श देने के लिए एक मन्त्रिपरिषद् होगी जिसका प्रधान मुख्यमन्त्री होगा।

राज्य की मन्त्रिपरिषद् का गठन

मुख्यमन्त्री की नियुक्ति—मन्त्रिपरिषद् के गठन में सबसे पहले राज्यपाल मुख्यमन्त्री को नियुक्त करता है। और फिर मुख्यमन्त्री की सलाह से अन्य मन्त्रियों की नियुक्ति करता है। और उनके विभागों का बँटवारा करता है। परन्तु वास्तव में राज्यपाल मन्त्रिपरिषद् के गठन में स्वेच्छा से कोई नियुक्त नहीं करता।

मन्त्री पद के लिए अर्हताएँ—मन्त्रि परिषद् के सभी सदस्यों के लिए यह आवश्यक है कि वे विधानमण्डल के किसी सदन के सदस्य हों, अन्यथा मन्त्रिपद पर नियुक्ति के समय से 6 माह की अवधि के अन्दर विधानमण्डल के किसी सदन की सदस्यता प्राप्त करना आवश्यक होता है। यदि कोई मन्त्री ऐसा नहीं कर पाता तो उसे मन्त्रि पद छोड़ना पड़ता है।

मन्त्रियों द्वारा शपथ ग्रहण—मुख्यमन्त्री सहित मन्त्रिपरिषद् के सभी सदस्यों को पद ग्रहण करने से पूर्व राज्यपाल के समक्ष पद एवं गोपनीयता की शपथ लेनी पड़ती है।

मन्त्रियों में विभागों का वितरण—राज्यपाल मुख्यमन्त्री के परामर्श से मन्त्रियों के स्तर तथा विभागों के वितरण का कार्य करती है। प्रायः एक मन्त्री को एक विभाग ही सौंपा जाता है, परन्तु कभी-कभी आवश्यकतानुसार एक से अधिक विभाग भी सौंपे जा सकते हैं। मन्त्रियों को उनके विभाग के नाम से सम्बोधित किया जाता है, जैसे --वित्त विभाग का मन्त्री वित्तमन्त्री कहलाता है, शिक्षा-विभाग का शिक्षामन्त्री आदि।

मन्त्रियों के वेतन, भत्ते तथा आवास—मन्त्रियों के वेतन तथा भत्ते राज्य का विधानमण्डल निश्चित करता है। अतः सभी राज्यों में मन्त्रियों के वेतन और

भत्ते आदि एक समान नहीं होते। मन्त्रियों को सरकारी आवास की सुविधा भी प्राप्त होती है। परन्तु यदि कोई मन्त्री राजकीय आवास में नहीं रहता तो उसे इसके बदले में प्रतिमाह कुछ अतिरिक्त भत्ता दिया जाता है। इसी प्रकार यदि कोई मन्त्री राजकीय सवारी का उपयोग नहीं करता तो इसके बदले में भी प्रतिमाह अतिरिक्त भत्ता दिया जाता है।

मन्त्रियों का कार्यकाल—यद्यपि सामान्य परिस्थितियों में मन्त्री 5 वर्ष तक अपने पद पर बने रह सकते हैं क्योंकि विधान सभा का कार्यकाल 5 वर्ष का होता है परन्तु मन्त्रि परिषद् का कार्यकाल अनिश्चित ही समझा जाना चाहिए, क्योंकि यह विधान सभा का विश्वास प्राप्त रहने तक ही कार्य कर सकती है अथवा किन्हीं और कारणों से विधान सभा भंग कर राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू हो जाने पर मन्त्रि परिषद् का कार्यकाल भी समाप्त हो जाता है।

मन्त्रिपरिषद् के कार्य—यद्यपि संविधान के अनुच्छेद '63' के अनुसार, मन्त्रि-परिषद् का कार्य राज्यपाल को शासन के संचालन में सहायता और परामर्श देना ही है, परन्तु व्यावहारिक रूप में ऐसा नहीं है। वास्तविक स्थिति तो यह है कि शासन संचालन के लिए राज्यपाल को संविधान द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग राज्य को मन्त्रिपरिषद ही करती है। मुख्यमन्त्री राज्यपाल को वैधानिक प्रधान होने के नाते मन्त्रिपरिषद् द्वारा शासन से सम्बन्धित नीतियों तथा निर्णय के बारे में सूचित करता है। राज्यपाल इस सम्बन्ध में मन्त्रिपरिषद् को अपने सुझाव दे सकता है परन्तु मन्त्रि-परिषद् उसे मानने के लिए बाध्य नहीं है। इस प्रकार मन्त्रिपरिषद् को कार्यपालिका की जो वास्तविक शक्ति प्राप्त है, उसके आधार पर हम मन्त्रिपरिषद् के कार्यों का वर्णन निम्न प्रकार से कर सकते हैं—

(1) शासन की नीति का निर्धारण—राज्य के शासन की नीति निर्धारित करना मन्त्रिपरिषद् का सबसे महत्वपूर्ण कार्य है। राज्य-सूची में वर्णित विषयों के बारे में मन्त्रिपरिषद् नीति निर्धारित करती है तथा उसे कार्यान्वित भी करती है। इसके अतिरिक्त समय-समय पर उत्पन्न विभिन्न समस्याओं को दूर करने के लिए भी सरकार नीति निर्धारित करती है।

(2) विधि-निर्माण सम्बन्धी कार्य—मन्त्रिपरिषद् समय-समय पर राज्यों में विभिन्न समस्याओं के समाधान हेतु विधि-निर्माण सम्बन्धी कार्य भी करती है। इसके लिए सम्बन्धित विभाग के मन्त्री विधानसभा में विधेयक प्रस्तुत करते हैं जो विधान-मण्डल की स्वीकृति से कानून बन जाते हैं। कौन से विधेयक किस क्रम से विधान-मण्डल में प्रस्तुत किये जाएँ यह भी मन्त्रिपरिषद् निश्चित करती है।

(3) उच्च पदों पर नियुक्ति के लिए राज्यपाल को परामर्श—यद्यपि संवि-धान के अन्तर्गत राज्यपाल को यह अधिकार दिया गया है कि वह राज्य में उच्च अधिकारियों की नियुक्ति करे, परन्तु व्यवहार में मन्त्रिमण्डल की स्वीकृति के आधार पर ही ये नियुक्तियाँ राज्यपाल द्वारा की जाती हैं।

(4) वित्त सम्बन्धी कार्य—मन्त्रिमण्डल राज्य सरकार के वार्षिक 'आय व्यय का विवरण, अर्थात् बजट तैयार करती है। सामान्यतः राज्य के वित्त-मन्त्री द्वारा वित्तीय वर्ष के प्रारम्भ में यह बजट विधान मण्डल में प्रस्तुत किया जाता है जिसको विधान मण्डल से पारित कराना मन्त्रिपरिषद् का कार्य है। इसके अतिरिक्त बजट को सन्तुलित रखने के लिए नये कर लगाने, आय के नये स्रोत ढूंढ़ने तथा

राज्य के खजाने तथा संचित निधि आदि पर नियन्त्रण रखने का कार्य मन्त्रिपरिषद् करती है।

प्रश्न 6—मुख्यमन्त्री की नियुक्ति किस प्रकार की जाती है? उसका राज्य के शासन में क्या महत्व है? (1987, 90)

उत्तर—मुख्यमन्त्री की नियुक्ति—राज्य की मन्त्रिपरिषद के प्रधान को मुख्यमन्त्री कहा जाता है। राज्य के प्रशासन की बागडोर वास्तविक रूप से मुख्यमन्त्री के हाथ में ही होती है। राज्य के शासन के मुख्यमन्त्री की लगभग वही स्थिति है जो केन्द्र में प्रधानमन्त्री की है। मुख्यमन्त्री ही मन्त्रिपरिषद् का निर्माण उसका संचालन तथा उसमें फेर बदल करता है। इस प्रकार राज्य के शासनतन्त्र रूपी चक्र की यदि मन्त्रिपरिषद् धुरी है तो मुख्यमन्त्री उस धुरी का केन्द्र है। राज्यपाल तो राज्य का वैधानिक प्रधान होता है।

राज्यपाल विधानसभा में स्पष्ट बहुमत प्राप्त दल के नेता को ही मुख्यमन्त्री के पद पर नियुक्त करता है और उसे मन्त्रिमरिषद् का गठन करने के लिए आमन्त्रित करता है।

मुख्यमन्त्री के कार्य—राज्य के शासन की वास्तविक शक्ति मन्त्रिपरिषद को प्राप्त है और मुख्यन्त्री परिषद् का प्रधान है। राज्य के शासन में मुख्यमन्त्री की स्थिति अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है। उसकी शक्तियों एवं कार्यों का अध्ययन हम निम्न प्रकार से कर सकते हैं—

(1) **मन्त्रिपरिषद् का गठन**—मुख्यमन्त्री अपनी नियुक्ति के पश्चात् सबसे पहले अपनी मन्त्रिपरिषद् का गठन करता है। जिन व्यक्तियों को मन्त्री पद के लिए चुनता है उनके नामों की सूची वह राज्यपाल को दे देता है जिसे राज्यपाल स्वीकार कर लेता है। मन्त्रिपरिषद् के गठन के सम्बन्ध में मुख्यमन्त्री स्वतन्त्र होता है; मुख्यमन्त्री मन्त्रिपरिषद् के गठन, संचालन तथा समाप्ति का आधार बिन्दु है।

(2) **मन्त्रियों के विभागों का बँटवारा**—मुख्यमन्त्री अपनी मन्त्रिपरिषद् के सदस्यों को अपनी इच्छानुसार विभागों में नियुक्त करता है। वह जो विभाग स्वयं अपने पास रखना चाहे रख सकता है, वह जब चाहे मन्त्रियों के विभागों में फेर-बदल कर सकता है।

(3) **मन्त्रिमण्डल के संचालन का कार्य**—मन्त्रिमण्डल के सभी कार्य मुख्यमन्त्री के निर्देश से संचालित होते हैं। वह मन्त्रिमण्डल की बैठकें बुलाता तथा उनकी अध्यक्षता करता है। मुख्यमन्त्री ही कार्य सूची तैयार करवाता है तथा शासन की नीतियों के बारे में आवश्यक निर्देश देता है।

(4) **शासन के विभिन्न विभागों में सामंजस्य तथा एकता**—मन्त्रिपरिषद् का विधानसभा के प्रति सामूहिक उत्तरदायित्व होने के कारण मुख्यमन्त्री का सदैव यह प्रयत्न रहता है कि शासन के सभी विभाग परस्पर तालमेल रखते हुए एक होकर कार्य करें अर्थात् सम्पूर्ण मन्त्रिपरिषद् एक इकाई के रूप में कार्य करे। मन्त्रिपरिषद् के सदस्यों में परस्पर मतभेद हो जाने पर मुख्यमन्त्री इन मतभेदों को दूर कर सौहार्द बनाये रखता है और इस प्रकार अपने सहयोगियों में एकता स्थापित करता है।

(5) **मन्त्रियों के विभागों और कार्यों में हस्तक्षेप**—मुख्यमन्त्री को यह अधिकार है कि वह किसी विभाग के मन्त्री के शासन सम्बन्धी कार्यों अथवा नीतियों के बारे में हस्तक्षेप कर सकता है और उन्हें आवश्यक निर्देश दे सकता है।

(6) मन्त्रिपरिषद् और राज्यपाल के बीच कड़ी का कार्य—मुख्यमन्त्री अपनी मन्त्रिपरिषद् के कार्यों तथा निर्णयों के बारे में राज्यपाल को सूचित करता है और राज्यपाल के विचार तथा सुझाव मन्त्रिपरिषद् तक पहुँचाता है। सामान्यतया कोई भी मन्त्री मुख्यमन्त्री को सूचित करके ही राज्यपाल से कोई वार्ता करता है। राज्यपाल शासन सम्बन्धी परामर्श मुख्यमन्त्री को ही देता है। इस प्रकार मुख्यमन्त्री, राज्यपाल तथा मन्त्रिपरिषद् से सम्पर्क स्थापित रखने का कार्य करता है।

(7) विधान सभा का नेता—मुख्यमन्त्री राज्य के शासन का प्रधान होने के साथ विधान सभा में बहुमत दल का नेता भी होता है। इस रूप में कानून-निर्माण के क्षेत्र में उसकी भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है और राज्य के बहुत से कानून उसकी इच्छानुसार ही निर्मित होते हैं। इस प्रकार वह पूरी विधानसभा का प्रतिनिधित्व करता है।

(8) सरकार का प्रधान वक्ता—मुख्यमन्त्री राज्य के शासन का प्रधान वक्ता होता है। वह सरकार की नीति का प्रधान वक्ता होता है तथा सरकार की ओर से सभी अधिघोषणाएँ मुख्यमन्त्री ही जारी करता है। विधानसभा में सरकारी नीतियों पर बहस के समय वह अपने सहयोगियों की सहायता करता है और बहस में भाग लेता है।

(9) सम्पूर्ण राज्य का प्रतिनिधित्व—मुख्यमन्त्री केवल राज्य सरकार का प्रधान अथवा विधानसभा का नेता ही नहीं होता बल्कि इस हैसियत से वह सारे प्रदेश का नेता होता है और अन्तर्राज्यीय सम्मेलनों में भाग लेता है तथा विवादों में अपने राज्य की वकालत करता है।

प्रश्न 7—उच्च न्यायालय के संगठन और शक्तियों का वर्णन कीजिए।
(1988)

उत्तर—

उच्च न्यायालय

हमारे प्रदेश (उत्तर प्रदेश) की उच्च न्यायालय इलाहाबाद में स्थित है। इसकी एक शाखा प्रदेश की राजधानी लखनऊ में स्थित है।

संगठन (रचना)—उच्च न्यायालय में एक मुख्य न्यायाधीश तथा ऐसे अन्य न्यायाधीश होते हैं जिन्हें समय-समय पर राष्ट्रपति नियुक्त करना आवश्यक समझे। उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की अधिकतम सीमा निर्धारित नहीं की गयी है अतः आवश्यकतानुसार इनका निर्धारण किया जाता है। उच्च न्यायालय के न्यायाधीश को न्यायमूर्ति कहा जाता है।

उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की नियुक्ति राष्ट्रपति करता है। मुख्य न्यायाधीश की नियुक्ति वह उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश और प्रदेश के राज्यपाल के परामर्श से करता है। अन्य न्यायाधीशों की नियुक्ति करते समय वह उक्त व्यक्तियों के अतिरिक्त सम्बन्धित प्रदेश के उच्च न्यायालय के न्यायाधीश से परामर्श करता है। इन न्यायमूर्तियों को केवल संसद द्वारा ही उसके पद से हटाया जा सकता है।

न्यायाधीशों से लिए योग्यताएँ—उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति बनने के लिए किसी व्यक्ति में निम्न योग्यताएँ होना आवश्यक है—

(1) वह भारत का नागरिक हो।

(2) वह भारत राज्य क्षेत्र के अन्तर्गत कम से कम 10 वर्ष तक किसी न्यायिक पद पर रह चुका हो।

(3) वह एक या एक से अधिक राज्यों के उच्च न्यायालयों में लगातार 10 वर्ष तक अधिवक्ता रह चुका हो।

शक्तियाँ (अधिकार)—उच्च न्यायालय राज्य में सबसे मुख्य न्यायालय ही नहीं होता बल्कि राज्य की समस्त न्याय व्यवस्था का प्रशासनिक प्रधान भी होता है। अतः इसके अधिकार क्षेत्र को दो भागों में बाँटा जा सकता है—

(अ) न्याय सम्बन्धी अधिकार क्षेत्र—उच्च न्यायालय के न्याय सम्बन्धी अधिकार निम्नलिखित हैं—

(1) प्रारम्भिक अधिकार—प्रारम्भिक अधिकार क्षेत्र के अन्तर्गत उच्च न्यायालय को मूल अधिकार की रक्षा, वसीयत, विवाह विच्छेद, विवाह विधि मुकद्दमों को सुनने का अधिकार है।

(2) अपील सम्बन्धी अधिकार—उच्च न्यायालय अपने अधीन न्यायालयों के निर्णयों के विरुद्ध, दीवानी, फौजदारी और माल के मुकद्दमों की अपीलें सुनता है। आयकर और बिक्रीकर से सम्बन्धित अपीलें भी उच्च न्यायालय में ही की जाती हैं।

(3) मौलिक अधिकारों की रक्षा का अधिकार—उच्च न्यायालय को मौलिक अधिकारों की रक्षा करने तथा अन्य उद्देश्यों की पूर्ति के लिए आदेश, निर्देश तथा लेख-जारी करने का अधिकार है।

(4) संविधान की व्याख्या और रक्षा का अधिकार—यदि विधान मण्डल संविधान की किसी धारा के विरुद्ध कोई कानून पारित करता है तो उच्च न्यायालय उसे अवैध घोषित कर सकता है।

(5) मृत्यु दण्ड की स्वीकृति—सत्र न्यायाधीश किसी व्यक्ति को जब तक मृत्यु दण्ड नहीं दे सकता है जब तक वह उच्च न्यायालय से पूर्व स्वीकृति नहीं प्राप्त कर लेता है।

(6) अभिलेख न्यायालय का कार्य—उच्च न्यायालय के निर्णय प्रकाशित किये जाते हैं और साक्षी (नजीर) के रूप में अधीनस्थ न्यायालयों में मान्य रहते हैं। इसके अतिरिक्त उसे अपने मान-हानि के लिए दण्ड देने का अधिकार है।

(ब) प्रशासन सम्बन्धी अधिकार क्षेत्र—उच्च न्यायालयों को अपने अधीन न्यायालयों के प्रबन्ध तथा प्रशासन का अधिकार प्राप्त है। वह अधीन न्यायालयों की कार्य पद्धति द्वारा रिकॉर्ड रखने सम्बन्धी नियम बना सकता है। वह मुकद्दमों को एक न्यायालय से दूसरे न्यायालय में स्थानान्तरित कर सकता है। वह अधीन न्यायालयों के अधिकारियों और कर्मचारियों की सेवा शर्तों के सम्बन्ध में नियम बना सकता है तथा वकीलों की फीस व वेतन निश्चित कर सकता है।

प्रश्न 8—उत्तर प्रदेश की न्याय व्यवस्था का वर्णन कीजिए। (1988, 91)

उत्तर—उत्तर प्रदेश में सबसे उच्च स्थान उच्च न्यायालय को प्राप्त है।

इसके अधीन प्रत्येक जिले में जिला न्यायालय होते हैं। जिला न्यायालय तीन प्रकार के होते हैं।

(1) दीवानी न्यायालय
(2) फौजदारी न्यायालय तथा
(3) राजस्व न्यायालय

(1) दीवानी न्यायालय की व्यवस्था—दीवानी न्यायालय के अधीन निम्नलिखित की व्यवस्था है—

(a) जिला जज
(b) अतिरिक्त जिला जज
(c) लघुवाद न्यायाधीश
(d) व्यवहार न्यायाधीश
(e) मुन्सिफ
(f) न्याय पंचायत

(2) फौजदारी न्यायालय की व्यवस्था—फौजदारी न्यायालय की व्यवस्था इस प्रकार है—

(a) सत्र न्यायाधीश
(b) अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश
(c) सहायक सत्र न्यायाधीश
(d) चीफ जुडीशियल मजिस्ट्रेट
(e) मजिट्रेट प्रथम श्रेणी
(f) मजिट्रेट द्वितीय श्रेणी
(g) न्याय पंचायत

(3) राजस्व न्यायालय की व्यवस्था—राजस्व न्यायालय की व्यवस्था निम्नांकित है—

(a) जिलाधिकारी
(b) उपजिलाधिकारी
(c) तहसीलदार
(d) नायब तहसीलदार
(e) न्याय पंचायत।

परीक्षा में पूछे गये तथा अन्य बहु-विकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1—राज्यपाल पद पर नियुक्ति के लिए अभ्यर्थी की आयु होनी चाहिए— (1984)

(अ) 40 वर्ष (ब) 25 वर्ष
(स) 35 वर्ष (द) 21 वर्ष।

उत्तर—(स) 35 वर्ष।

प्रश्न 2—मुख्यमन्त्री से सम्बन्ध में कौन-सा कथन सही है? (1985)

(अ) वह एक उच्च कोटि का शिक्षा विद् होता है।
(ब) वह एक कुशल सैनिक होता है।

(स) वह कानून का अच्छा ज्ञाता होता है।
(द) वह विधानसभा में बहुमत प्राप्त दल का नेता होता है।
उत्तर—(द) वह विधानसभा में बहुमत प्राप्त दल का नेता होता है।

प्रश्न 3—राज्यपाल की नियुक्ति करता है— (1987)
(अ) प्रधानमन्त्री (ब) राष्ट्रपति
(स) संसद (द) विधानमण्डल।
उत्तर—(ब) राष्ट्रपति।

प्रश्न 4—प्रदेश का उच्च न्यायालय स्थित है— (1988)
(अ) इलाहाबाद (ब) वाराणसी
(स) कानपुर (द) आगरा।
उत्तर—(अ) इलाहाबाद।

प्रश्न 5—विधानमण्डल का सदस्य बनने के लिए कौन-सी योग्यता आवश्यक है ? (1989)
(अ) वह स्नातक उपाधि प्राप्त हो
(ब) वह भारत का नागरिक हो
(स) उसकी आयु 30 वर्ष से कम न हो
(द) वह नागरिक क्षेत्र का निवासी हो
उत्तर—(ब) वह भारत का नागरिक हो।

प्रश्न 6—मुख्यमन्त्री उत्तरदायी है— (1990)
(अ) राज्यपाल के प्रति (ब) विधान परिषद् के प्रति
(स) विधानसभा के प्रति (द) मन्त्रिपरिषद् (कैबिनेट) के प्रति।
उत्तर—(द) मन्त्रिपरिषद् (कैबिनेट) के प्रति।

प्रश्न 7—उत्तर प्रदेश की विधानसभा में कितने सदस्य हैं ?
(अ) 450 (ब) 456
(स) 400 (द) 425।
उत्तर—(द) 425।

प्रश्न 8—विधान परिषद् की सदस्यता के सदस्य की आयु क्या होनी चाहिए—
(अ) 30 वर्ष (ब) 40 वर्ष
(स) 25 वर्ष (द) 21 वर्ष।
उत्तर—(अ) 30 वर्ष।

प्रश्न 9—मुख्यमन्त्री की नियुक्ति करता है—
(अ) राज्यपाल (ब) राज्य सभा का सभापति
(स) विधान परिषद् के सदस्य (द) राष्ट्रपति।
उत्तर—(अ) राज्यपाल।

प्रश्न 10—उच्च न्यायालय का न्यायाधीश अपने पद पर कार्य करता है—
(अ) 60 वर्ष की आयु तक (ब) 65 वर्ष की आयु तक
(स) 62 वर्ष की आयु तक (द) 58 वर्ष की आयु तक।
उत्तर—(स) 62 वर्ष की आयु तक।

केन्द्रीय शासन

अति लघुउत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—संसद के तीन अंग कौन-कौन से हैं ? (1987)

उत्तर—संसद के तीन अंग निम्नलिखित हैं—

(i) राष्ट्रपति, (ii) लोकसभा; (iii) राज्यसभा।

प्रश्न 2—राज्यसभा के कितने सदस्यों को राष्ट्रपति मनोनीत करता है ? (1988, 90)

उत्तर—राष्ट्रपति राज्यसभा के 12 सदस्यों को मनोनीत करता है।

प्रश्न 3—राज्यसभा का सभापति कौन होता है ? (1986, 88)

उत्तर—राज्य सभा का सभापति भारत का उप-राष्ट्रपति होता है ?

प्रश्न 4—प्रधानमन्त्री की नियुक्ति कौन करता है ? (1984, 86, 88, 90)

उत्तर—प्रधानमन्त्री की नियुक्ति राष्ट्रपति करता है।

प्रश्न 5—सर्वोच्च न्यायालय कहाँ स्थित है ? (1990)

उत्तर—सर्वोच्च न्यायालय दिल्ली में स्थित है।

प्रश्न 6—राष्ट्रपति का कार्यकाल कितने वर्ष का होता है ?

उत्तर—राष्ट्रपति का कार्यकाल 5 वर्ष का होता है।

परीक्षा में पूछे गये तथा अन्य अति लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 7—केन्द्र में संसद के दोनों सदनों के क्या नाम हैं ? (1987)

उत्तर—केन्द्र में संसद के दोनों सदनों के नाम लोक सभा और राज्य सभा हैं।

प्रश्न 8—भारत के उपराष्ट्रपति के लम्बी अवधि के लिए विदेश चले जाने पर यदि राष्ट्रपति का पद रिक्त हो जाये तो राष्ट्रपति के पद पर कौन कार्य करेगा। (1985)

उत्तर—भारत के उप-राष्ट्रपति के लम्बी अवधि के लिए विदेश चले जाने पर यदि राष्ट्रपति का पद रिक्त हो जाये तो राष्ट्रपति के पद पर सर्वोच्च न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश कार्य करेगा।

प्रश्न 9—भारतीय सेना का सर्वोच्च अधिकारी कौन होता है ? (1984, 86)

उत्तर—भारतीय सेना का सर्वोच्च अधिकारी राष्ट्रपति होता है।

प्रश्न 10—राज्य सभा के कितने सदस्यों को राष्ट्रपति मनोनीत करता है ?

उत्तर—राज्य सभा के 12 सदस्यों को राष्ट्रपति मनोनीत करता है।

लघुउत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—लोकसभा का सदस्य होने के लिए किन-किन योग्यताओं का होना आवश्यक है ? (1987)

उत्तर—लोकसभा की सदस्यता हेतु आवश्यक योग्यतायें—लोकसभा की सदस्यता के लिए संविधान में निम्नलिखित अर्हतायें निर्धारित की गयी हैं—

(i) वह भारत का नागरिक हो।

(ii) उसकी आयु 25 वर्ष से कम न हो।

(iii) वह भारत सरकार अथवा किसी राज्य सरकार के अन्तर्गत किसी लाभ के पद को धारण न किये हो।

(iv) वह किसी अन्य न्यायालय द्वारा पागल न ठहराया गया हो।

(v) वह दिवालिया न हो।

प्रश्न 2—केन्द्रीय मन्त्रिपरिषद् का गठन किस प्रकार होता है ? (1989, 90)

उत्तर—केन्द्रीय मन्त्रि-परिषद् का गठन—लोकसभा का चुनाव सम्पन्न हो जाने पर लोकसभा में जिस दल का बहुमत होता है, उस दल के नेता को राष्ट्रपति प्रधानमन्त्री नियुक्त करता है। तत्पश्चता प्रधानमन्त्री अपने दल के वरिष्ठ सदस्यों से परामर्श करके मन्त्रियों के नाम की सूची बनाता है और राष्ट्रपति को भेजता है। दोनों आपसी परामर्श से अन्य मन्त्रियों की नियुक्ति करते हैं और विभागों का बँटवारा प्रधानमन्त्री करता है। मन्त्री बनाने के लिए व्यक्ति को संसद का सदस्य होना अनिवार्य है। यदि कोई व्यक्ति मन्त्री बनते समय संसद का सदस्य नहीं है तो उसे 6 माह के अन्दर संसद का सदस्य बन जाना चाहिए अन्यथा उसको अपने मन्त्री-पद से त्यागपत्र देना होगा।

प्रश्न 3—राष्ट्रपति के पद के लिए कौन-कौन सी योग्यताएँ निर्धारित की गई हैं ?

उत्तर—राष्ट्रपति पद के लिए योग्यतायें—सविधान में राष्ट्रपति पद पर आसीन होने वाले व्यक्ति के लिए अधोलिखित अर्हतायें निर्धारित की गई हैं—

(1) वह भारत का नागरिक हो।

(2) उसकी आयु कम से कम 35 वर्ष की हो।

(3) वह लोकसभा का सदस्य निर्वाचित होने की योग्यता रखता हो।

(4) वह संघ सरकार, राज्य सरकार अथवा अन्य स्थानीय सरकार के पद पर न हो।

प्रश्न 4—राष्ट्रपति को न्यायिक क्षेत्र में कौन-कौन-से अधिकार प्राप्त हैं ?

उत्तर—न्यायिक क्षेत्र में राष्ट्रपति के अधिकार—यद्यपि न्यायिक क्षेत्र में राष्ट्रपति का प्रत्यक्ष रूप से कोई हस्तक्षेप नही होता, फिर भी संविधान ने राष्ट्रपति को कुछ न्यायिक शक्तियाँ प्रदान की हैं।

(अ) सर्वोच्च न्यायालय तथा उच्च न्यायालयों के न्यायाधीशों की नियुक्तियाँ करता है। परन्तु उन्हें पदच्युत नहीं कर सकता। उच्चतम न्यायालय द्वारा निर्मित न्यायालय की कार्य व्यवस्था नियमों के सम्बन्ध में राष्ट्रपति की स्वीकृति आवश्यक है।

(ब) राष्ट्रपति सार्वजनिक महत्व के किसी प्रश्न की वैधानिक स्थिति के सम्बन्ध में **सर्वोच्च न्यायालय से परामर्श माँग सकता है।** परन्तु न्यायालय के परामर्श को मानना या मानना राष्ट्रपति के विवेक पर निर्भर करता है।

(स) राष्ट्रपति को **क्षमादान सम्बन्धी अत्यन्त महत्वपूर्ण शक्ति** प्राप्त है। राष्ट्रपति मृत्यु दण्ड पाये हुए किसी भी अपराधी को क्षमा प्रदान कर सकता है अथवा उसके मृत्यु दण्ड को कम कर कैद की सजा में बदल सकता है। राष्ट्रपति को यह अधिकार उस स्थिति में भी प्राप्त है जबकि दण्ड किसी सैनिक न्यायालय द्वारा दिया गया हो। राष्ट्रपति समवर्ती सूची के विषयों से सम्बन्धित अपराधी का क्षमादान उसी

स्थिति में कर सकता है, जब संसद में उक्त मामलों पर राज्य की कार्यपालिका शक्ति को अलग मान लिया हो।

प्रश्न 5—राज्यसभा के सभापति (उपराष्ट्रपति) का निर्वाचन किस प्रकार होता है?

उत्तर—भारतीय संविधान में अनुच्छेद '63' के अन्तर्गत उपराष्ट्रपति के पद की व्यवस्था की गई है। भारत का उपराष्ट्रपति ही राज्य सभा का पदेन सभापति होता है। इसका निर्वाचन संसद के दोनों सदनों लोकसभा और राज्यसभा के सदस्यों से बने निर्वाचक मंडल द्वारा होता है। यह निर्वाचन आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली के आधार पर एकल संक्रमणीय मतदान पद्धति के द्वारा गुप्त रूप से होता है।

प्रश्न 6—राष्ट्रपति किन-किन परिस्थितियों में संकट काल की घोषणा कर सकता है? (1987)

उत्तर—राष्ट्रपति राष्ट्र की कार्यपालिका का वैधानिक प्रधान होता है। राष्ट्र के सारे कार्य उसी के नाम से होते हैं। इन कार्यों को पूरा करने के लिए संविधान में राष्ट्रपति को कुछ विशेष अधिकार प्रदान किये गये हैं जिन्हें संकट-कालीन अधिकार कहते हैं। राष्ट्रपति निम्न परिस्थितियों में संकटकाल की घोषणा कर सकता है—

(1) देश पर बाहरी आक्रमण हुआ हो अथवा बाहरी युद्ध और सशस्त्र विद्रोह की आशंका हो अथवा देश में आन्तरिक अव्यवस्था उत्पन्न हो गयी हो।

(2) देश के किसी भी राज्य में संविधान के अनुसार शासन नहीं चल रहा हो।

(3) देश में विशेष ढंग का आर्थिक संकट उत्पन्न हो गया हो।

प्रश्न 7—सर्वोच्च न्यायालय अपने प्रारम्भिक अधिकार के अन्तर्गत किन-किन मुकदमों को देख सकता है?

उत्तर—सर्वोच्च न्यायालय में कुछ ऐसे मुकदमें आते हैं, जो सीधे सर्वोच्च न्यायालय में ही दायर किये जाते हैं। इस प्रकार के मामले सर्वोच्च न्यायालय के प्रारम्भिक अधिकार क्षेत्र में आते हैं। इस प्रकार के मामले निम्नलिखित हैं—

(1) दो या अधिक राज्यों के बीच के विवाद।

(2) केन्द्र तथा एक या अधिक राज्यों के बीच के विवाद।

प्रश्न 8—सर्वोच्च न्यायालय मौलिक अधिकारों की रक्षा हेतु कौन-कौन से लेख जारी करता है?

उत्तर—संविधान के द्वारा मूल अधिकारों की रक्षा का अधिकार सर्वोच्च न्यायालय को सौंपा गया है। इसके लिए सर्वोच्च न्यायालय समय-समय पर आदेश, निर्देश तथा लेखा जारी करता रहता है।

प्रश्न 9—केन्द्रीय मन्त्रिपरिषद् में कितने प्रकार के मन्त्री होते हैं? (1987)

उत्तर—केन्द्रीय मन्त्रिपरिषद् में तीन प्रकार के मन्त्री होते हैं—

(1) केबीनेट स्तर के मन्त्री, (2) राज्य मन्त्री,

(3) उपमन्त्री।

परीक्षा में पूछे गये लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 10—भारतीय राष्ट्रपति के कोई दो अधिकार संक्षेप में वर्णन कीजिए। (1984)

उत्तर—भारतीय राष्ट्रपति के मुख्य अधिकार हैं। इनमें से दो अधिकारों का वर्णन निम्नलिखित हैं—

1. न्याय सम्बन्धी अधिकार— राष्ट्रपति उच्चतम न्यायालय और उच्च-न्यायालयों के न्यायाधीशों की नियुक्ति करता है। वह किसी भी अपराधी की सजा को कम कर सकता है अथवा क्षमा कर सकता है। मृत्युदण्ड की सजा को क्षमा करने का अधिकार भी उसी को प्राप्त है।

2. संकट कालीन अधिकार—संकटकाल से निबटने के लिए राष्ट्रपति को कुछ विशेष अधिकार प्राप्त हैं। देश पर बाहरी आक्रमण के समय, देश में आन्तरिक संकट या अशान्ति उत्पन्न होने की दशा में और देश में वित्तीय संकट की स्थिति होने पर राष्ट्रपति संकट काल की घोषणा कर सकता है। संकटकाल की घोषणा होने पर नागरिकों के मूलभूत अधिकार स्थगित हो जाते हैं और देश का शासन राष्ट्रपति और उसके द्वारा नियुक्ति प्रतिनिधियों के हाथों में आ जाता है।

प्रश्न 11—उच्चतम न्यायालय को भारतीय संविधान का संरक्षक क्यों कहते हैं?

उत्तर—उच्चतम न्यायालय— भारतीय न्यायपालिका में सर्वोच्च न्यायालय का महत्वपूर्ण स्थान है। सर्वोच्च न्यायालय संविधान का संरक्षक, संघात्मक व्यवस्था का रक्षक तथा मौलिक अधिकारों का रक्षक है। भारत में लिखित और कठोर संविधान को अपनाया गया है और इसके साथ ही संविधान की सर्वोच्चता के सिद्धान्त को मान्यता प्रदान की गयी है। संविधान की सर्वोच्चता को बनाये रखने का कार्य उच्चतम न्यायालय के द्वारा किया गया है। ये सर्वोच्च न्यायालय के द्वारा बनाये गये ऐसे प्रत्येक कानून को अवैध घोषित कर सकता है जो संविधान के विरुद्ध हो। अपनी सी शक्ति के आधार पर वह संविधान का प्रभुता और सर्वोच्चता की रक्षा करता है। संविधान के सम्बन्ध में किसी प्रकार का विवाद उत्पन्न होने पर विधान हैके अधिकार की पूर्ण व्याख्या उसी के द्वारा की जाती है। इस प्रकार सर्वोच्च न्यायालय संविधान की रक्षा करता है तथा नागरिकों के मौलिक अधिकारों की रक्षा सम्बन्धी व्यवस्था को भी करना उसका महत्वपूर्ण कार्य है।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 12—लोकसभा की रचना तथा कार्यों का वर्णन कीजिए।

(1986, 88, 91)

उत्तर—लोकसभा का गठन—लोकसभा को संसद का प्रथम अथवा निम्न सदन कहा जाता है। इसके सदस्यों का निर्वाचन जनता द्वारा प्रत्यक्ष रूप से किया जाता है। अतः इसे लोकप्रिय सदन भी कहा जाता है। यह राज्यसभा से अधिक शक्तिशाली सदन है।

भारत के मूल संविधान में लोक सभा के सदस्यों की अधिकतम संख्या 500 निश्चित की गई थी। किन्तु बाद में संविधान में संशोधन करके यह व्यवस्था की गई है कि प्रति दस वर्ष पश्चात् होने वाली जनगणना के आधार पर 'परिसीमन आयोग' लोकसभा मे राज्यों व केन्द्र-शासित प्रदेशों के प्रतिनिधियों की संख्या निश्चित करेगी। इस व्यवस्था के अन्तर्गत सन् 1971 की जनगणना के आधार पर लोकसभा के निर्वाचित सदस्यों की संख्या 541 निश्चित की गई। तत्पश्चात जुलाई, 1973 में

संविधान में 31वाँ संशोधन कर लोकसभा के निर्वाचित सदस्यों की अधिकतम संख्या 545 निश्चित कर दी गई। इसके अतिरिक्त दो आंग्ल भारतीय समुदाय के प्रतिनिधि के रूप में राष्ट्रपति के द्वारा मनोनीत किये जा सकते हैं। अप्रैल, सन् 1975 में सिक्किम को भारतीय संघ में सहराज्य का दर्जा प्रदान कर लोकसभा तथा राज्यसभा में सिक्किम से एक-एक निर्वाचित प्रतिनिधि की व्यवस्था की गई।

निर्वाचन—लोकसभा के सदस्यों का निर्वाचन प्रत्यक्ष रूप से व्यस्क मताधिकार के आधार पर होता है। भारत का प्रत्येक नागरिक जिसकी आयु 18 वर्ष हो, वयस्क मतदाता माना जाता है। लोकसभा के सभी निर्वाचन क्षेत्र अब एकल सदस्यीय हैं। लोकसभा के सदस्यों के लिए संयुक्त निर्वाचन पद्धति अपनाई गई है. और अनुसूचित जातियों तथा जनजातियों के लिए सुरक्षित स्थान हैं।

पदाधिकारी—लोकसभा अपने निर्वाचन सदस्यों में से दो पदाधिकारियों का चुनाव करती है जिन्हें सभापति और उपसभापति कहा जाता है। सभापति बैठक की अध्यक्षता करता है, अनुशासन बनाये रखता है, सदन की कार्यवाही का संचालन करता है और मत गणना तथा निर्णायक मत देता है। सभापति की अनुपस्थिति में यही कार्य उपसभापति करता है।

लोकसभा के कार्य (शक्तियाँ)—संविधान द्वारा लोकसभा को व्यापक शक्तियाँ प्रदान की गयी हैं। इसकी शक्तियों को हम निम्नलिखित भागों में बाँट सकते हैं—

(1) **कानून सम्बन्धी कार्य**—लोकसभा का प्रमुख कार्य राष्ट्रीय हितों के लिए कानून बनाना है। कोई भी विधेयक तब तक कानून का रूप धारण नहीं कर सकता, जब तक उसे लोकसभा की स्वीकृति प्राप्त न हो जाये। लोकसभा को नये कानून बनाने, पुराने कानूनों में संशोधन करने तथा रद्द करने का अधिकार है।

(2) **शासन सम्बन्धी अधिकार**- लोकसभा के सदस्य अनेक प्रकार से कार्यपालिका पर नियन्त्रण रखते हैं। उसके सदस्य सरकारी नीति तथा कार्यों के सम्बन्ध में प्रश्न पूछकर उनके विरुद्ध अविश्वास का प्रस्ताव पारित करके. विधेयकों को अस्वीकृत करके, काम रोको प्रस्ताव लाकर, लोकसभा के कार्यों की जाँच करके उन पर नियन्त्रण रखते हैं।

(3) **धन सम्बन्धी अधिकार**—संविधान के द्वारा लगभग समस्त धन सम्बन्धी अधिकार लोकसभा को सौंपे गये हैं। कोई भी धन विधेयक केवल लोकसभा में ही प्रस्तुत किया जा सकता है। इसकी स्वीकृति के बिना न तो कोई नया कर लगाया जा सकता है और न केन्द्रीय कोष से कुछ व्यय ही किया जा सकता है। लोकसभा ही केन्द्रीय सरकार का बजट स्वीकार करती है। अनुदान सम्बन्धी माँगें भी लोकसभा के समक्ष ही रखी जाती हैं।

(4) **निर्वाचन सम्बन्धी कार्य**—लोकसभा निर्वाचन मण्डल के रूप में भी कार्य करती है। लोकसभा के सदस्य राज्य सभा और राज्य विधान सभाओं के सदस्यों के साथ मिलकर राष्ट्रपति का निर्वाचन करते हैं तथा राज्य सभा के सदस्यों के साथ मिलकर उपराष्ट्रपति का निर्वाचन करते हैं इसके अतिरिक्त लोकसभा अपने सदन के अध्यक्ष और उपाध्यक्ष का निर्वाचन करती है तथा उन्हें पदच्युत भी कर सकती है।

(5) **संविधान में संशोधन का अधिकार**—संविधान में संशोधन का अधिकार संसद को ही प्राप्त है। यह कुछ विषयों में साधारण बहुमत से तथा कुछ विषयों में

2/3 बहुमत से संशोधन कर सकती है। यद्यपि संवैधानिक दृष्टि से संविधान के संशोधन के सम्बन्ध में लोकसभा और राज्य सभा की स्थिति समान है किन्तु व्यवहार में संशोधन लोकसभा की इच्छा अनुसार ही होता है क्योंकि राज्य सभा और लोकसभा की संयुक्त बैठक में लोकसभा के सदस्यों की संख्या दुगुनी से अधिक होने के कारण लोकसभा का बहुमत ही मान्य होगा।

प्रश्न 2—राज्यसभा का संगठन किस प्रकार होता है? उसके अधिकार क्या हैं? (1990)

उत्तर—राज्यसभा—राज्यसभा को भारतीय संसद की द्वितीय अथवा उच्च सदन कहा जाता है। यह राज्यों की प्रतिनिधि सभा है। यद्यपि लोकसभा की अपेक्षा इसे बहुत कम शक्तियाँ प्राप्त हैं, परन्तु फिर भी संसदीय शासन व्यवस्था में इसका अपना महत्व और उपयोगिता है।

राज्यसभा की रचना—राज्यसभा की रचना अप्रत्यक्ष निर्वाचन तथा मनोनयन द्वारा होती है।

सदस्य संख्या एवं निर्वाचन- संविधान के द्वारा राज्यसभा के सदस्यों की अधिकतम संख्या 250 उपबन्धित की गई है। इनमें से 238 सदस्य राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशों की विधान सभाओं द्वारा परोक्ष रूप से निर्वाचित किये जायेंगे और शेष 12 सदस्य राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत किये जायेंगे जो साहित्य, कला, विज्ञान अथवा सामाजिक सेवा के क्षेत्र में विशेष ज्ञान और अनुभव रखते हों।

वर्तमान समय में राज्यसभा के सदस्यों की संख्या 244 है। इनमें से 12 सदस्य राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत किये जाते हैं जिन्हें साहित्य, कला, विज्ञान अथवा सामाजिक सेवा के क्षेत्र में ख्याति प्राप्त होती है। शेष 232 सदस्य विभिन्न राज्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं और इसका निर्वाचन जनता द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से किया जाता है। इन सदस्यों का निर्वाचन एकल संक्रमणीय मत एवं आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली के अनुसार राज्यों की विधान सभाओं के सदस्यों द्वारा किया जाता है जिन प्रदेशों में विधान सभाएँ नहीं होती वहाँ राज्य सभा के सदस्यों के निर्वाचन के लिए विशेष निर्वाचक मण्डल गठित किये जाते हैं।

सदस्यता के लिए अर्हतायें—राज्य सभा की सदस्यता के लिए वे सभी अर्हताएं आवश्यक हैं जो लोकसभा की सदस्यता के लिए होनी चाहिए। परन्तु राज्यसभा की सदस्यता के लिए कम से कम 30 वर्ष की आयु होना आवश्यक है।

सदस्यों का कार्यकाल—राज्यसभा एक स्थायी सदन है जो कभी भंग नहीं होता। इसके सदस्यों का कार्यकाल 6 वर्ष होता है। राज्यसभा के एक-तिहाई सदस्य प्रति दो वर्ष बाद अवकाश ग्रहण कर लेते हैं और उनके स्थान पर नये सदस्यों का निर्वाचन हो जाता है।

पदाधिकारी—लोकसभा की भाँति राज्य सभा के दो पदाधिकारी होते हैं—सभापति और उप-सभापति। भारत का उप-राष्ट्रपति राज्यसभा का पदेन सभापति होता है। वह राज्यसभा की बैठकों की अध्यक्षता करता है, अनुशासन बनाये रखता है, सदन की कार्यवाही का संचालन करता है, मत गिनता है तथा आवश्यकता पड़ने पर निर्णायक मत भी देता है। सभापति की अनुपस्थिति में यही कार्य उप-सभापति करता है।

राज्यसभा के कार्य एवं शक्तियाँ—राज्यसभा संसद का उच्च सदन है। इसमें

अपेक्षाकृत अधिक अनुभवी सदस्य होते हैं। इसका मुख्य कार्य लोकसभा के कार्यों में रचनात्मक सहयोग प्रदान करना है। राज्यसभा की निम्नलिखित शक्तियाँ हैं—

(1) **कार्यपालिका सम्बन्धी अधिकार**—राज्यसभा के सदस्य मन्त्रिपरिषद् के सदस्य हो सकते हैं। राज्यसभा के सदस्य मन्त्रियों से प्रश्न तथा पूरक प्रश्न पूछ सकते हैं। बहस में भाग लेकर मन्त्रियों की आलोचना भी कर सकते हैं। परन्तु राज्यसभा को मन्त्रिपरिषद् के विरुद्ध अविश्वास का प्रस्ताव पारित करके अपदस्थ करने का अधिकार नहीं है।

(2) **विधायी शक्तियाँ**– संविधान के अनुसार अवित्तीय विधेयकों के सम्बन्ध में राज्यसभा को लोकसभा के समान ही शक्तियाँ प्राप्त हैं। अवित्तीय विधेयक लोकसभा अथवा राज्यसभा दोनों सदनों में से किसी भी सदन में पहले प्रस्तावित किये जा सकते हैं। राज्यसभा लोकसभा द्वारा पारित अवित्तीय विधेयक को 6 माह तक अपने पास रोक सकती है।

(3) **वित्तीय शक्तियाँ**—वित्तीय शक्तियों के सम्बन्ध में संविधान ने राज्यसभा को लोकसभा की अपेक्षा अत्यन्त निर्बल स्थिति प्रदान की है। वित्त-विधेयक केवल लोकसभा से ही प्रस्तावित किये जा सकते हैं। लोकसभा द्वारा पारित वित्त-विधेयक राज्यसभा में विचारार्थ भेजे जाने पर अधिक से अधिक 14 दिन तक रोका जा सकेगा। राज्यसभा वित्त विधेयक के सम्बन्ध में अपने सुझाव लोकसभा को दे सकती है। परन्तु इन सुझावों को मानना अथवा न मानना लोकसभा की इच्छा पर निर्भर है।

(4) **संविधान में संशोधन की शक्ति**—अवित्तीय विधेयकों के समान संवैधानिक संशोधन की शक्ति भी राज्यसभा को प्राप्त है। संविधान संशोधन सम्बन्धी विधेयक दोनों में से किसी भी सदन में पहले प्रस्तावित किये जा सकते हैं। इस सम्बन्ध में लोकसभा तथा राज्यसभा में मतभेद हो जाने पर राष्ट्रपति साधारण विधेयकों के सम्बन्ध में अपनायी गयी प्रक्रिया के समान संसद की संयुक्त बैठक बुलाता है, जिसमें बहुमत के आधार पर निर्णय किया जाता है।

(5) **अन्य शक्तियाँ**—राज्यसभा को कुछ अन्य शक्तियाँ भी प्राप्त हैं जिनका प्रयोग वह लोकसभा के साथ मिलकर करती है।

(i) राज्यसभा के निर्वाचित सदस्य राष्ट्रपति एवं उपराष्ट्रपति के निर्वाचन में भाग लेते हैं।

(ii) राज्यसभा लोकसभा के साथ मिलकर सर्वोच्च न्यायालय तथा उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों तथा कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण पदाधिकारियों पर महाभियोग लगा सकती है। महाभियोग तभी पारित समझा जाता है जब लोकसभा भी इसको स्वीकार कर ले।

प्रश्न 3—संसद के कार्यों एवं अधिकारों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—संसद के कार्य या अधिकार निम्न भागों में बाँटे जा सकते हैं

(1) **कानून निर्माण सम्बन्धी अधिकार।**

(2) **प्रशासन सम्बन्धी कार्य।**

(3) आर्थिक कार्य।

(4) न्याय सम्बन्धी कार्य।

(1) **कानून निर्माण सम्बन्धी अधिकार**—संसद की संघ सूची के सभी सत्तानवें विषयों पर कानून बनाने का अधिकार है। इसी के अतिरिक्त यदि संसद राज्य सूची के किसी विषय को राष्ट्रीय महत्त्व का घोषित कर देती है तो वह उस पर भी कानून बना सकती है। समवर्ती सूची के विषयों पर यदि राज्य और केन्द्र के नियम में कोई विरोध रहता है तो भी संसद का नियम ही लागू होता है और राज्य का नियम रद्द हो जाता है। इसके अतिरिक्त जो विषय किसी भी सूची में नहीं है उन अविशिष्ट विषयों पर कानून बनाने का अधिकार केवल संसद को है। केन्द्र द्वारा शासित राज्यों के लिए भी संसद ही कानून बनाती है।

(2) **प्रशासन सम्बन्धी कार्य**—संसद देश की गृहनीति तथा वैदेशिक नीति को निश्चित करती है और मन्त्रिपरिषद् पर कामरोको प्रस्ताव, कटौती का प्रस्ताव, प्रश्न पूछकर वाद-विवाद द्वारा तथा अविश्वास के प्रस्ताव द्वारा नियन्त्रण रखती है। अविश्वास के प्रस्ताव द्वारा मन्त्रिपरिषद् को हटा सकती है।

(3) **वित्त सम्बन्धी कार्य**—संसद प्रत्येक वर्ष के लिए बजट पास करती है, और कभी-कभी आवश्यक हो जाने पर पूरक बजट भी पास करती है। वह किसी भी मद में धन की शक्ति को अपने मतदान से घटा-बढ़ा भी सकती है।

(4) **न्याय सम्बन्धी कार्य**—संसद को राष्ट्रपति पर महाभियोग लगाने का अधिकार है। इसी प्रकार उच्चतम न्यायालय तथा उच्च न्यायालयों के न्यायधीशों, महालेखा परीक्षक तथा मुख्य निर्वाचक आयुक्त के विरुद्ध अभियोग लगाकर पदच्युत कर सकती है।

प्रश्न 4—राष्ट्रपति का निर्वाचन किस प्रकार होता है? उसके अधिकारों का संक्षेप में वर्णन करिये। (1984, '89, 90)

उत्तर—राष्ट्रपति का निर्वाचन—राष्ट्रपति भारतीत संघ का अध्यक्ष और सर्वोच्च पदाधिकारी होता है। वह जनता द्वारा प्रत्यक्ष रूप से नहीं चुना जाता है बल्कि उसका निर्वाचन एक निर्वाचक मण्डल द्वारा एकल संक्रमणीय मत पद्धति के द्वारा गुप्त मतदान प्रणाली से किया जाता है। निर्वाचक मण्डल में संसद के दोनों सदनों और राज्यों की विधान सभाओं के निर्वाचित सदस्य होते हैं।

राष्ट्रपति के अधिकार—राष्ट्रपति कार्यपालिका का सर्वोच्च अधिकारी है। केन्द्रीय सरकार का सारा शासन कार्य उसी के नाम पर चलाया जाता है। इन कार्यों को सम्पन्न करने के लिए राष्ट्रपति को कुछ साधारण और कुछ विशेष अधिकार प्राप्त होते हैं जो निम्नलिखित हैं—

1. **शासन सम्बन्धी सुधार**—कार्यपालिका का प्रधान होने के कारण राष्ट्रपति कार्यपालिका सम्बन्धी कार्यों को पूरा करने के लिए प्रधानमन्त्री की नियुक्ति करके उनके कार्यों का विभाजन करता है। वह विभिन्न उच्च पदों जैसे-सर्वोच्च और उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीशों, राज्यपालों, राजदूतों आदि की नियुक्ति करता है। वह प्रधानमन्त्री से शासन सम्बन्धी कोई भी जानकारी प्राप्त कर सकता है। वह स्वयं थल, जल और वायु सेना का सर्वोच्च सेनापति होता है।

2. **कानून निर्माण सम्बन्धी अधिकार**—राष्ट्रपति व्यवस्थापिका का अभिन्न-अंग है। अतः उसे संसद के अधिवेशन बुलाने, उसे स्थगित करने और लोकसभा को

भंग करने का अधिकार है। उसे संसद के दोनों सदनों को सम्बोधित करने अथवा लिखित सन्देश भेजने का अधिकार है। संसद द्वारा पारित कोई भी विधेयक राष्ट्रपति की स्वीकृति के बिना कानून नहीं बन सकता। जिस समय संसद का अधिवेशन न चल रहा हो तो राष्ट्रपति को अध्यादेश जारी करने का अधिकार है। और यह अध्यादेश संसद द्वारा बनाये गये कानूनों के समान ही प्रभावी होता है। वह राज्यसभा के 12 सदस्यों को मनोनीत करता है।

3. धन सम्बन्धी अधिकार—राष्ट्रपति प्रतिवर्ष वित्त मन्त्री के माध्यम से संसद में बजट प्रस्तुत करता है। उसकी अनुमति के विना कोई भी धन सम्बन्धी विधेयक लोकसभा में प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। उसे वित्तीय आयोग नियुक्त करने का भी अधिकार है।

4. न्याय सम्बन्धी अधिकार -राष्ट्रपति के कार्यकाल में उसके विरुद्ध किसी को न्यायालय में कोई कानूनी कार्यवाही करने का अधिकार नहीं है। राष्ट्रपति को यह अधिकार है कि वह किसी भी अपराधी की सजा को कम कर सकता है, बदल सकता है अथवा माफ कर सकता है। उसे मृत्यु दण्ड को माफ करने का भी अधिकार है।

5. संकटकालीन अधिकार—संकटकाल से निपटने के लिए राष्ट्रपति को कुछ विशेष अधिकार प्राप्त है। वह निम्न परिस्थितियों में संकटकाल की घोषणा करके शासन को अपने हाथ में ले सकता है और संकट से निपटने के उपाय कर सकता है—

(1) देश पर बाहरी आक्रमण हुआ हो अथवा युद्ध और सशस्त्र विद्रोह की आशंका हो अथवा देश में आन्तरिक अव्यस्था उत्पन्न हो गयी हो।

(2) देश के किसी राज्य में संविधान के अनुसार शासन न चल पा रहा हो।

(3) देश में विशेष ढंग का आर्थिक संकट उत्पन्न हो गया हो।

प्रश्न 5—केन्द्रीय मन्त्रिपरिषद् का संगठन किस प्रकार होता है? इसकी प्रमुख शक्तियाँ तथा कार्यों का वर्णन कीजिए। (1989)

उत्तर—केन्द्रीय मन्त्रिपरिषद् का संगठन—संविधान के अनुसार राष्ट्रपति प्रधानमन्त्री की नियुक्ति करता है। राष्ट्रपति लोक सभा में बहुमत दल के नेता को प्रधानमन्त्री का पद ग्रहण करने के लिए आमन्त्रित करता है और उसकी नियुक्ति के बाद अन्य मन्त्रियों की नियुक्ति दोनों के परामर्श से की जाती है। इस प्रकार मन्त्रि परिषद् के गठन के उपरान्त प्रधानमन्त्री द्वारा मन्त्रियों के बीच विभागों का विभाजन किया जाता है। मन्त्री को उसके कार्य में सफलता देने के लिए राज्य मन्त्री, उप-मन्त्री, संसदीय सचिव तथा सचिव व अतिरिक्त सचिव आदि के रूप में स्थायी पदाधिकारी रहते हैं। मन्त्रियों की तीन श्रेणियाँ होती हैं—मन्त्रिमण्डल या केबिनेट के के सदस्य, राज्य मन्त्री तथा उपमन्त्री। मन्त्रि मण्डलीय व्यवस्था का सबसे महत्वपूर्ण सिद्धान्त यह है कि मन्त्रिमण्डल संसद के प्रति सामूहिक उत्तरदायित्व के सिद्धान्त के अनुसार सम्पूर्ण मन्त्रि मण्डल एक इकाई के रूप में कार्य करता है और सभी मन्त्री एक-दूसरे के निर्णय तथा कार्य के लिए उत्तरदायी हैं। लॉर्ड मार्ले के शब्दों में, मन्त्रि-मण्डल के सदस्य एक ही साथ तैरते हैं तथा एक साथ डूबते हैं।

मन्त्रि परिषद् के पाँच प्रमुख कार्य अथवा परिषद् की शक्तियाँ और कार्य—हमारे देश में संसदीय सरकार है। संसदीय सरकार में राष्ट्रपति के समस्त अधिकारों का प्रयोग मन्त्रि परिषद् करती है और यही उसके कार्य को पूरा करती है। मन्त्रि परिषद् का संघीय कार्यपालिका में महत्वपूर्ण स्थान है। संसदात्मक सरकार में

राष्ट्रपति केवल संवैधानिक प्रधान होता है। इसकी स्थिति नाममात्र की होती है। संविधान के अनुसार मन्त्रि परिषद् का कार्य राष्ट्रपति को उसके कार्यों में परामर्श तथा सहायता देना है। व्यवहार में उसका कार्य क्षेत्र वही है जो राष्ट्रपति का है। भारत में ब्रिटेन जैसी ही संसदात्मक व्यवस्था है। इसलिए ब्रिटिश केबीनेट के सम्बन्ध में जो कुछ कहा गया है, वह भारतीय केबिनेट या मन्त्रि-मण्डल पर भी पूर्ण रूप से लागू होता है।

मन्त्रि परिषद् की पाँच प्रमुख शक्तियाँ तथा कार्य निम्नलिखित हैं—

(1) **राष्ट्रीय नीति का निर्धारण**—मन्त्रि परिषद् का सबसे महत्वपूर्ण कार्य राष्ट्रीय नीति निर्धारण करना है। संघीय नीति के निर्माण का उत्तरदायित्व मन्त्रि परिषद् का ही है। संघ सरकार की वैदेशिक और गृहनीति को निर्धारित करना मन्त्रि परिषद् का ही काम है। मन्त्रि परिषद् यह निश्चित करती है कि आन्तरिक क्षेत्र में प्रशासन के विभिन्न विभागों द्वारा एवं वैदेशिक क्षेत्रों में दूसरे देशों के साथ सम्बन्ध के विषय में किस प्रकार की नीति अपनायी जायेगी। मन्त्रि-परिषद् द्वारा अपनायी गयी नीति के आधार पर ही समस्त प्रशासनिक व्यवस्था चलती है।

(2) **विधेयकों का प्रस्तुतीकरण**—मन्त्रि-परिषद् के सदस्य संसद का नेतृत्व करते हैं। वे संसद के सामने देश की भिन्न-भिन्न समस्याओं तथा योजनाओं को रखते हैं तथा उनके निवारण के लिए विधेयकों को प्रस्तुत करते हैं। विधि निर्माण से मन्त्रि-परिषद् का बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध है। मन्त्रि-परिषद् के द्वारा ही सरकारी विधेयकों को संसद में पेश किया जाता है। विधेयकों का प्रारूप बनाना, उन्हें संसद में प्रस्तुत करना तथा उनके महत्व पर प्रकाश डालना आदि महत्वपूर्ण कार्य मन्त्रि परिषद द्वारा ही किये जाते हैं।

(3) **प्रशासन का संचालन एवं आय-व्यय का लेखा "बजट" का निर्माण एवं प्रस्तुतीकरण**—मन्त्रि-परिषद् का एक प्रमुख कार्य प्रशासन का संचालन एवं आय-व्यय का लेखा "बजट" का निर्माण एवं प्रस्तुतीकरण है केन्द्रीय सरकार का प्रशासन सम्बन्धी सम्पूर्ण कार्य मन्त्रि-परिषद् करती है। यह देश गृह नीति को निश्चित करती है और उसी के अनुसार कार्य करती है। प्रशासन के विभिन्न भागों की देखभाल अलग-अलग मन्त्री ही करते हैं। जिन अधिकारियों की नियुक्ति करने का अधिकार राष्ट्रपति को है उनकी नियुक्ति वास्तव में मन्त्रि-परिषद् ही करती हैं। इसके साथ ही साथ तथा वित्तीय नीति का निर्धारण भी मन्त्रि-परिषद् के द्वारा ही होता है। समस्त मन्त्रि-परिषद् मिलकर वार्षिक आय का निर्धारण तथा व्यय का ब्यौरा 'बजट" तैयार करती है। कर आदि लगाने का निश्चय भी मन्त्रि-परिषद् द्वारा ही होता है। इस प्रकार मन्त्रि-परिषद् देश की वित्त नीति को निर्धारित करती है। यही वार्षिक बजट बनाकर उसे संसद से स्वीकृत कराती है।

(4) **विदेश नीति का निर्धारण**—मन्त्रि-परिषद् देश की विदेश नीति का निर्धारण करती है। मन्त्रि परिषद् ही दूसरे देशों के साथ सन्धि एवं समझौते करती है तथा अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में मन्त्री लोग भारत का प्रतिनिधित्व करते हैं। भारत के वैदेशिक सम्बन्धों का संचालन मन्त्रि मण्डल के द्वारा ही किया जाता है। इनके द्वारा युद्ध तथा शान्ति सम्बन्धी घोषणाएँ की जाती हैं तथा इस बात का निर्णय किया जाता है कि दूसरे देशों के साथ किस प्रकार के सम्बन्ध स्थापित किये जायें।

मन्त्रि मण्डल समय-समय पर अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति पर विचार कर आवश्यक निर्णय लेता है।

(5) प्रधान मन्त्री के माध्यम से राष्ट्रपति को परामर्श देना—मन्त्रि-परिषद का एक प्रमुख कार्य प्रधानमन्त्री के माध्यम से भिन्न-भिन्न विषयों पर राष्ट्रपति को परामर्श देना है। सैद्धान्तिक दृष्टि से संघ सरकार की समस्त कार्यपालिका शक्ति राष्ट्रपति के हाथों में हैं, लेकिन व्यवहार में इस प्रकार की समस्त कार्यपालिका शक्ति का प्रयोग मन्त्रिमण्डल के द्वारा ही किया जाता है। मन्त्री विभिन्न विभागों के अध्यक्ष होते हैं। वे अपने विभागों का संचालन तथा उनके कार्यों की देखभाल करते हैं। मन्त्रि मण्डल ही आन्तरिक शासन का संचालन करता है और देश की समस्त प्रशासनिक व्यवस्था पर नियन्त्रण रखता है। मन्त्रि मण्डल की राय के आधार पर ही राष्ट्रपति आपात स्थिति की घोषणा कर देता है। संवैधानिक रूप से प्रधान-मन्त्री मन्त्रिमण्डल तथा राष्ट्रपति के बीच कड़ी का काम करता है। इस प्रकार मन्त्रि-मण्डल प्रधानमन्त्री के माध्यम से समय-समय पर आवश्यकता के समय राष्ट्रपति को परामर्श देता है।

अन्य कार्य—उपरोक्त महत्वपूर्ण कार्यों के अतिरिक्त मन्त्रि परिषद् का कार्य अपराधियों को क्षमा प्रदान करने के सम्बन्ध में राष्ट्रपति की सिफारिश करना तथा भिन्न-भिन्न उपाधियों के सम्बन्ध में राष्ट्रपति को सिफारिश करना आदि है।

प्रश्न 6—प्रधानमन्त्री की नियुक्ति किस प्रकार होती है? उसका देश के शासन में क्या स्थान है? (1990)

उत्तर—प्रधानमन्त्री की नियुक्ति—संविधान के अनुसार, प्रधानमन्त्री की नियुक्ति राष्ट्रपति करता है। लेकिन उसकी नियुक्ति के मामले में राष्ट्रपति कदाचित ही अपने स्वविवेक का प्रयोग कर सकता है। वह उसकी नियुक्ति में मनमानी नहीं कर सकता क्योंकि उसे ऐसे व्यक्ति को प्रधानमन्त्री चुनना है जो लोकसभा के बहुमत दल का नेता हो। इस प्रकार राष्ट्रपति का स्वविवेक अधिकार एक सुनिश्चित वैधानिक परम्परा से प्रतिबंधित है। अत: लोकसभा में बहुमत दल के नेता को प्रधानमन्त्री नियुक्त किया जाता है। यहाँ पर यह स्पष्ट कर देना उचित है कि प्रधानमन्त्री राज्य-सभा का भी सदस्य हो सकता है बशर्ते उसे लोकसभा के बहुमत का विश्वास प्राप्त हो और वह उसे अपना नेता चुने।

प्रधानमन्त्री पद के लिए संविधान में किसी प्रकार की अर्हता का उल्लेख नहीं किया गया है। उसे केवल मात्र संसद का सदस्य होना चाहिए। लोकसभा में यदि बहुमत दल किसी ऐसे व्यक्ति को अपना नेता चुन लेता है जो किसी भी सदन का सदस्य नहीं है तो छ: माह के भीतर उसका संसद का सदस्य हो जाना अनिवार्य है, अन्यथा उसे त्याग-पत्र देना पड़ेगा।

देश के शासन में प्रधानमन्त्री का स्थान—संसदात्मक शासन व्यवस्था में प्रधानमन्त्री का पद बड़ा उत्तरदायित्वपूर्ण है। साथ ही साथ शक्ति की दृष्टि से वह देश का सर्वाधिक शक्ति सम्पन्न व्यक्ति होता है केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल का अध्यक्ष होने के कारण शासन का पूर्ण दायित्व प्रधानमन्त्री पर ही होता है। प्रधानमन्त्री को निम्न-लिखित अधिकार प्राप्त हैं जिनके कारण देश के शासन में उसका स्थान अति महत्व-पूर्ण और सर्वोपरि है—

(1) **मन्त्रि परिषद् का निर्माण**—प्रधानमन्त्री पद की शपथ लेने के बाद सबसे पहला कार्य मन्त्रि-परिषद् के नामों का चयन कर राष्ट्रपति से सिफारिश करना होता है। इसी आधार पर राष्ट्रपति द्वारा वे लोग मन्त्रि-परिषद् के सदस्य नियुक्त किये जाते हैं। यद्यपि संविधान द्वारा प्रधानमन्त्री को इस सम्बन्ध में अनियन्त्रित अधिकार प्रदान किया गया है, परन्तु व्यवहार में अपने सहयोगियों का चयन करते हुए उसे अनेक बातों का ध्यान रखना पड़ता है। उसे दल के अधिकारियों की सलाह, विभिन्न वर्गों, देशों के विभिन्न प्रदेशों, धर्मों, समुदायों आदि के हितों को भी ध्यान में रखना होता है। साथ ही साथ उसे यह भी ध्यान रखना पड़ता है कि संसद के दोनों सदनों को प्रतिनिधित्व प्राप्त हो और चयन किये हुए व्यक्ति शासन दक्षतापूर्वक चला सकें।

(2) **शासन का प्रधान प्रबन्धक**—देश के शासन को सुचारु रूप से चलाने के लिए प्रधानमन्त्री मन्त्रियों के विभागों का विभाजन करता है। यद्यपि इस सम्बन्ध में प्रधानमन्त्री को पूर्ण अधिकार प्राप्त है, फिर भी प्रशासनिक दृष्टि से उसे अनेक बातों पर ध्यान देना पड़ता है। विभागों का वितरण वह व्यक्ति की क्षमता और उपयुक्तता के अनुसार करता है, आवश्यकता पड़ने पर वह मन्त्रियों के विभागों का फेर बदल कर सकता है। ऐसा करने से उसे कोई रोक भी नहीं सकता। इसके साथ ही वह शासन को एक इकाई के रूप में चलाने हेतु वह विभिन्न विभागों में समन्वय स्थापित करता है।

(3) **मन्त्रिपरिषद् का कार्य संचालन**—मन्त्रिमण्डल का वह सभापति होता है तथा उसकी समस्त कार्यवाही का संचालन करता है। मन्त्रिमण्डल की बैठक में जिन विषयों पर विचार किया जाता है, उसकी सूची प्रधानमन्त्री ही अन्तिम रूप से तैयार करता है। मन्त्रि परिषद् की बैठक के लिए गणपूर्ति नहीं होती है और वहाँ निर्णय मतों के आधार पर किये जाते हैं वरन् प्रधानमन्त्री के निर्णय से प्रभावित हो आम सहमति के आधार पर फैसले किये जाते हैं। प्रधानमन्त्री व्यवहार में निर्णायक होता है।

(4) **लोकसभा का नेता**—प्रधानमन्त्री लोकसभा में बहुमत दल का नेता होने के कारण संसद का भी नेतृत्व करता है। वह सदन की कार्यवाही में किसी भी विभाग से सम्बन्धित मसले पर हस्तक्षेप कर सकता है। सदन में वह अध्यक्ष को व्यवस्था बनाये रखने में सहायता प्रदान करता है। दल का सचेतक उसी के आदेश के अनुसार दल के सदस्यों को आवश्यक सूचनाएँ देता है। उसके नेतृत्व का एक बहुत महत्वपूर्ण कारण यह भी है कि वह प्रधानमन्त्री की हैसियत से सिफारिश करके राष्ट्रपति से लोकसभा भंग करवा सकता है।

(5) **राष्ट्रपति तथा मन्त्रिमन्डल के बीच की कड़ी**—प्रधानमन्त्री मन्त्रि-परिषद् और राष्ट्रपति के बीच की प्रमुख कड़ी होता है। उसी के द्वारा मन्त्रिमण्डल की नीतियों, निर्णयों आदि की जानकारी राष्ट्रपति को पहुँचती है।

(6) **अन्तर्राष्ट्रीय जगत में भारत का प्रतिनिधित्व**—अन्तर्राष्ट्रीय जगत में भारत का प्रतिनिधित्व करना प्रधान मन्त्री का महत्त्वपूर्ण दायित्व है। इसके लिए यह आवश्यक नहीं कि विदेश मन्त्रालय उसके पास हो। फिर वह विदेश नीति सम्बन्धी निर्णयों को अन्तिम रूप प्रदान करता है। वह अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर दूसरे देशों

के नेताओं से विचार-विमर्श करता है तथा अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों, तथा सम्मेलनों में अपने देश का प्रतिनिधित्व करता है।

(7) शासन का प्रमुख प्रवक्ता—मन्त्रिमण्डल द्वारा निर्धारित समस्त नीतियों का प्रमुख तथा अधिकृत प्रवक्ता प्रधानमन्त्री ही होता है चाहे वह संसद हो, देश हो अथवा विदेश हो। यदि नीति सम्बन्धी दो मन्त्रियों के वक्तव्यों के कारण किसी प्रकार का भ्रम उत्पन्न हो जाता है, ऐसी स्थिति में प्रधानमन्त्री का वक्तव्य ही अधिकृत और निर्णायक होता है।

(8) देश का सर्वोच्च नेता तथा प्रधान नायक—यद्यपि सैद्धान्तिक रूप में यह बात सही नहीं है, परन्तु गत परम्पराओं के आधार पर यह सत्य है कि व्यवहार में देश का समस्त शासन उसकी इच्छानुसार ही चलता है। वह जिस तरह के कानून चाहता है अपने व्यक्तित्व तथा प्रभाव के कारण संसद से बनवा सकता है। वस्तुतः देश के शासन का वही प्रधान संचालक होता है।

प्रश्न 9—भारत के उच्चतम न्यायालय के संगठन और कार्यों का वर्णन कीजिए। (1986)

उत्तर—

उच्चतम न्यायालय

संगठन—उच्चतम न्यायालय भारत में न्याय का अन्तिम न्यायालय है। यह दिल्ली में स्थिति है। उच्चतम न्यायालय में एक मुख्य न्यायाधीश और अनेक न्यायाधीश होते हैं। मुख्य न्यायाधीश की नियुक्ति भारत के राष्ट्रपति के द्वारा की जाती है। इसकी नियुक्ति करते समय राष्ट्रपति उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालय के ऐसे न्यायाधीशों का परामर्श लेता है जिनका परामर्श लेना वह आवश्यक समझता है। अन्य न्यायाधीशों की नियुक्ति वह मुख्य न्यायाधीश के परामर्श से करता है।

मूल रूप से उच्चतम न्यायालय में एक मुख्य न्यायाधीश और 7 अन्य न्यायाधीशों की व्यवस्था थी, परन्तु सन् 1977 के अधिनियम के द्वारा एक मुख्य न्यायाधीश और 17 अन्य न्यायाधीशों की व्यवस्था है।

अधिकार और कार्य—उच्चतम न्यायालय देश का प्रधान न्यायालय है। इस कारण इसे काफी महत्वपूर्ण अधिकार प्रदान किये गये हैं जो निम्नलिखित हैं—

(1) प्रारम्भिक अधिकार—इसके अन्तर्गत कुछ ऐसे मुकद्दमे आते हैं जो सीधे सर्वोच्च न्यायालय में ही दायर किये जाते हैं। प्रारम्भिक क्षेत्राधिकार के अन्तर्गत भारत सरकार तथा राज्यों अथवा केवल राज्यों के परस्पर विवादों के कारण उत्पन्न होने वाले मुकद्दमे यहीं प्रारम्भ हो सकते हैं।

(2) अपील सम्बन्धी अधिकार—सर्वोच्च न्यायालय को प्रदेश के उच्च न्यायालयों के निर्णयों के विरुद्ध अपीलें सुनने का अधिकार है। दीवानी और फौजदारी के उन मुकद्दमों के सम्बन्ध में उच्च न्यायालय के निर्णय के विरुद्ध अपील की जा सकती है जिनमें कि उच्च न्यायालय ने अपील के लिए प्रमाण-पत्र दे दिया हो। दीवानी के मुकद्दमे में 20 हजार से अधिक की लागत का मुकद्दमा हो तथा फौजदारी के मामले में उच्च न्यायालय ने किसी अपराधी के दण्ड को मृत्यु-दण्ड में बदल दिया हो।

(3) सलाहकारी अधिकार—राष्ट्रपति किसी भी कानूनी प्रश्न पर उच्चतम न्यायालय से परामर्श ले सकता है परन्तु राष्ट्रपति उस परामर्श को मानने के लिए बाध्य नहीं है।

(4) **अन्य क्षेत्राधिकार**—इस अधिकार के अन्तर्गत उसे निम्नलिखित अधिकार प्राप्त हैं—

(i) **मूल अधिकारों का रक्षक**—उच्चतम न्यायालय को संविधान द्वारा मूल अधिकारों की रक्षा का अधिकार सौंपा गया है। इसके लिए उच्चतम न्यायालय समय-समय पर आदेश निर्देश और लेख जारी करता है।

(ii) **संविधान का संरक्षक**—उच्चतम न्यायालय को संविधान की रक्षा का अधिकार प्राप्त है। यह संसद द्वारा पारित ऐसे कानूनों को अवैध घोषित कर सकता है जो संविधान की किसी भी धारा के विरुद्ध हैं।

(iii) **अभिलेख न्यायालय**—उच्चतम न्यायालय के निर्णय देश के सभी न्यायालयों में नजीर के रूप में स्वीकार किये जा सकेंगे तथा इसे अपनी मानहानि के विरुद्ध दण्ड देने का अधिकार है।

(iv) **संविधान की व्याख्या करने का अधिकार**—संविधान की व्याख्या करने का अन्तिम अधिकार उच्चतम न्यायालय को ही प्राप्त है।

(v) **पुनरावृत्ति का अधिकार**—सर्वोच्च न्यायालय को अपने द्वारा दिये गये निर्णयों का पुनरावलोकन करने का अधिकार है। पुनर्विचार करने की परिस्थिति तभी ही उत्पन्न होती है जब सर्वोच्च न्यायालय को ऐसी आशंका हो कि किसी पक्ष के प्रति न्याय का अभाव है अथवा सम्बन्धित विवाद पर कुछ नवीन तथ्य सामने आये हों तब वह पुनः अवलोकन कर सकता है।

(vi) **न्यायिक क्षेत्र का प्रशासन**—सर्वोच्च न्यायालय को अपने कर्मचारियों की नियुक्ति तथा उनकी सेवा शर्तें निर्धारित करने का अधिकार है। इस सम्बन्ध में वह उच्च न्यायालयों को भी निर्देश दे सकता है।

परीक्षा में पूछे गये तथा अन्य बहु-विकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1—निम्न में से किस भारतीय अधिकारी का चुनाव समानुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली के अनुसार एकल संक्रमणीय मत द्वारा होता है? (198

(क) प्रधानमन्त्री (ख) लोकसभा का अध्यक्ष
(ग) राष्ट्रपति (घ) सर्वोच्च न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश

उत्तर—(ग) राष्ट्रपति।

प्रश्न 2—राष्ट्रपति पद के लिए कौन-सी योग्यता सही नहीं है? (198

(क) 30 वर्ष की आयु
(ख) भारत की नागरिकता
(ग) लोकसभा का सदस्य होने की योग्यता
(घ) केन्द्रीय अथवा राज्य सरकार के अधीन किसी लाभ के पद पर न होना

उत्तर—(क) 30 वर्ष की आयु।

प्रश्न 3—भारत का प्रधानमन्त्री किसके प्रति उत्तरदायी है? (1990, 9

(क) राष्ट्रपति (ख) राज्यसभा
(ग) लोकसभा (घ) केन्द्रीय मन्त्रिपरिषद्।

उत्तर—(ग) लोकसभा।

प्रश्न 4—भारतीय सेना का सर्वोच्च अधिकारी कौन है? (198

(क) प्रधानमन्त्री (ख) राष्ट्रपति
(ग) प्रतिरक्षामन्त्री (घ) उपराष्ट्रपति।

उत्तर—(ख) राष्ट्रपति।

प्रश्न 5—राज्यसभा का सभापति होता है—

(क) राष्ट्रपति (ख) प्रधानमन्त्री

(ग) स्पीकर (घ) उपराष्ट्रपति ।

उत्तर—(घ) उपराष्ट्रपति ।

प्रश्न 6—देश के शासन का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व होता है—

(क) प्रधानमन्त्री पर (ख) राष्ट्रपति पर

(ग) मन्त्रि परिषद पर (घ) न्यायाधीशों पर ।

उत्तर—(अ) प्रधानमन्त्री पर ।

लोकतन्त्र की मान्यताएँ

[नोट—राजकीय, पुस्तक में अति लघुउत्तरीय प्रश्न नहीं दिये गये हैं ।]

परीक्षा में पूछे गये तथा अन्य अति लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1—जनमत अभिव्यक्त करने के दो साधन लिखिए । (1987)

उत्तर—(1) समाचार पत्र, (2) रेडियो ।

प्रश्न 2—जनमत का क्या उद्देश्य होता है ?

उत्तर—जनमत का उद्देश्य जनकल्याण होता है ।

प्रश्न 3—जनमत का प्रमुख माध्यम क्या है ?

उत्तर—जनमत का प्रमुख माध्यम व्यवस्थापिका है ।

प्रश्न 4—जनमत के निर्माण में आने वाली चार प्रमुख बाधाएं लिखिए ।

उत्तर—(1) गरीबी और बेकारी । (2) निरक्षरता ।
(3) क्षेत्रवाद । (4) अस्वस्थ राजनीतिक दल ।

प्रश्न 5—जनमत के निर्माण में शिक्षण संस्थाओं का क्या योगदान है ?

उत्तर—जनमत के निर्माण में शिक्षा संस्थाओं का यह महत्त्वपूर्ण योगदान है। वे इस कार्य में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती हैं ।

लघु उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—प्रजातन्त्र में नागरिकों का जागरूक होना क्यों आवश्यक है ? (1985, 86, 89)

उत्तर—लोकतन्त्र की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि देश के नागरिक कैसे हैं, यदि नागरिक शिक्षित हैं, जागरूक हैं और अपने चारों ओर की परिस्थितियों से परिचित हैं तो उस देश का जनतन्त्र सफल होगा । गाँधी जी के अनुसार, "प्रजातन्त्र ऐसा नहीं होता जिसमें लोग भेड़ की तरह कार्य करें, इसमें जनता को जागरूक रहना पड़ता है ।" जागरूक नागरिक ही अपने और राष्ट्र के विकास एवं निर्माण में योगदान कर सकता है । प्रजातन्त्र में नागरिक को जागरूक होने के कारण इस प्रकार हैं—

(1) जागरूक नागरिक ही अपने कर्त्तव्यों का पालन करके अपने अधिकारों को प्राप्त कर सकते हैं ।

(2) किसी देश के जागरूक नागरिक ही अपने मताधिकार का उचित प्रयोग कर देश को स्थायी सरकार प्रदान कर सकते हैं और यदि निर्वाचित सरकार जनता की सुख-सुविधाओं की ओर ध्यान नहीं देती है तो उसे अपने मताधिकार के द्वारा पदच्युत किया जा सकता है ।

(1) जागरूक नागरिक ही अपनी योग्यतानुसार कार्य अपनी आवश्यकता के अनुसार सुख-सुविधायें, विकास के समान अवसर, सम्मानजनक जीवन-स्तर तथा सुरक्षा एवं न्याय प्राप्त कर सकते हैं।

(4) जागरूक नागरिक ही प्रजातन्त्र को सफल बना सकते हैं क्योंकि वे ही जातिवाद और साम्प्रदायिकता से मुक्त समाज की स्थापना कर सकते हैं।

प्रश्न 2—जनमत से क्या अभिप्रायः है ?

उत्तर—जनमत सामान्य जनता के स्थायी विचारों पर आधारित वह विवेकपूर्ण विचार होता है जो आवश्यक रूप से जन-कल्याण की भावना से प्रेरित हो।

प्रश्न 3—सामूहिक प्रतिवेदन का क्या महत्व है ?

उत्तर—सामूहिक प्रतिवेदन के द्वारा जनता सरकार का ध्यान एक विशेष महत्त्वपूर्ण विषय की ओर आकर्षित करती है।

प्रश्न 4—सहनशीलता तथा समझौते की भावना लोकतन्त्र की सफलता के लिए क्यों आवश्यक है ?

उत्तर—समाज में विभिन्न प्रकार के लोग रहते हैं। उनके विचार भी भिन्न-भिन्न होते हैं। उनके आचारों-विचारों में भिन्नता होती है। परन्तु व्यक्ति अकेला अपना विकास नहीं कर सकता। आज के युग में "जियो और जीने दो" का सिद्धान्त आवश्यक है। इस सिद्धान्त पर चलकर ही व्यक्ति अपनी उन्नति कर सकता है। ऐसा तभी सम्भव है जब उसमें सहिष्णुता तथा समझौते की भावना हो। व्यक्ति में अपने विचारों तथा सिद्धान्तों को आत्मसात करने की सामर्थ्य हो। अतः लोकतन्त्र की सफलता के लिए सहनशीलता तथा समझौता आवश्यक है।

प्रश्न 5—देश का नेतृत्व कैसे लोगों के हाथ में होना चाहिए ?

उत्तर—देश का नेतृत्व साहसी, ईमानदार तथा जागरूक व्यक्तियों के हाथ में होना चाहिए। इसी कारण समाज के बुद्धिमान तथा चरित्रवान व्यक्तियों के हाथ में देश का नेतृत्व होना चाहिए। प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य है कि वह सुयोग्य तथा ईमानदार नेतृत्व दें जिससे देश का विकास हो सके। आज भी देश में समाज-सेवकों का अभाव नहीं है।

परीक्षा में पूछे गये लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 6—जनमत प्रकट करने के किन्हीं दो साधनों का वर्णन कीजिए। (1987)

अथवा

जनमत की अभिव्यक्ति के प्रमुख साधनों का विवेचन कीजिए। (1990)

उत्तर—जनमत प्रकट करने के अनेक साधन हैं जिनमें निम्नलिखित प्रमुख हैं—

1. समाचार पत्र एवं पत्रिकाएँ, 2. निर्वाचन, 3. सभा, सम्मेलन एवं भाषण, 4. आवेदन पत्र, स्मृति पत्र एवं सामूहिक प्रतिवेदन, 5. व्यवस्थापिक सभा, 6. रेडियो एवं टेलीविजन, 7. राजनीतिक दल।

यहाँ हम जनमत प्रकट करने के दो प्रमुख साधनों का विवरण प्रस्तुत कर रहे हैं—

(1) **समाचार पत्र एवं पत्रिकाएँ**—जनमत प्रकट करने का सबसे महत्वपूर्ण साधन समाचार पत्र एवं पत्रिकाएँ हैं। इनके माध्यम से विभिन्न विचारक अपने

विचारों को अभिव्यक्त करते हैं। जन समस्यों की विवेचना करते हैं तथा सरकारी नीतियों की आलोचना करते हैं।

(2) **निर्वाचन**—जनमत को प्रकट करने का अन्य महत्वपूर्ण साधन निर्वाचन है। निर्वाचन के समय विभिन्न राजनीतिक दल अपने-अपने दल के कार्यक्रमों को जनता के सम्मुख रखकर अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयास करते हैं। निर्वाचन द्वारा जिस दल का प्रत्याशी विजयी होता है, उसके सम्बन्ध में यह मान लिया जाता है कि जनमत उसी दल के सिद्धान्तों को स्वीकार करता है।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—लोकतन्त्र की मान्यताओं का क्या अभिप्राय है ? लोकतन्त्र की मूलभूत मान्यताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर—लोकतन्त्र की मान्यताओं का अभिप्राय—लोकतन्त्र की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि समाज में वे दशायें हों, जिनमें हर व्यक्ति अपने विवेक और समझ का प्रयोग कर सार्वजनिक उत्तरदायित्व को निभा सके। अतः लोकतन्त्र की मान्यताओं का आशय उन दशाओं से है जो लोकतन्त्र को सफल बनाती हैं, लोकतन्त्र की मूलभूत मान्यताएँ निम्नलिखित हैं—

(1) **शिक्षित एवं जागरूक जनता**—लोकतन्त्र का मेरुदण्ड जनता का शिक्षित और जागरूक होना है। बिना शिक्षा के नागरिकों में जन समस्याओं को समझने की क्षमता पैदा नहीं हो सकती और न उनमें राजनीतिक चेतना ही उत्पन्न हो सकती। लोकतन्त्र की सफलता के लिए राजनीतिक चेतना का होना अति आवश्यक है। फिलिप्स ने कहा है कि—"सतत् जागरूकता ही लोकतन्त्र का प्राण है।"

(2) **आर्थिक समानता**—आर्थिक विषमता लोकतन्त्र के लिए खतरनाक है। आर्थिक दृष्टि से हर नागरिक को समान होना चाहिए, क्योंकि आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा हुआ या कमजोर व्यक्ति धनी वर्ग के सामने हीनता का भाव रखता है और वह कभी लोकतन्त्र में अपने को बराबर का भागीदार नहीं समझ सकता। लोकतन्त्र उस देश में कभी भी सफल नहीं हो सकता जहाँ धनी और गरीब के बीच में विशाल खाई होती है।

(3) **सामाजिक समानता**—लोकतन्त्र की सफलता के लिए सामाजिक समानता का होना आवश्यक है। सामाजिक भेदभाव, जाति-पाँति, ऊँच-नीच और प्रान्तीयता आदि लोकतन्त्र के शत्रु हैं। लोकतन्त्र की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि हर व्यक्ति यह महसूस करे कि वह बिना भेद-भाव के समाज में जी रहा है और शासन में बराबर का भागीदार है।

(4) **सहयोग एवं एकता की भावना**—लोकतन्त्र के लिए यह आवश्यक है कि जनता में आपसी सहयोग और एकता की भावना हो। वास्तव में सामुदायिक जीवन की भावना विभिन्न वर्गों के भेद को समाप्त कर देती है। यही भावना अल्पमत को बहुमत के निर्णय का आदर करना सिखाती है और बहुमत को अल्पसंख्यकों की आवश्यकताओं का ध्यान रखना सिखाती है। एकता की भावना और सहयोग के द्वारा ही हम प्रजातन्त्र को सफल बना सकते हैं।

(5) **उच्च नैतिक स्तर** – यदि जनता का नैतिक स्तर ऊँचा है तो सरकार अच्छी होगी और यदि जनता का नैतिक स्तर गिरा हुआ है तो सरकार बुरी होगी।

अतः यह आवश्यक है कि लोकतन्त्र की सफलता के लिए जनता का नैतिक स्तर ऊँचा हो। चरित्रवान व्यक्ति ही सार्वजनिक हित के लिए निजी हित को त्याग पाते हैं। नैतिक व्यक्ति ही देश में निःस्वार्थ भावना से कार्य करता है। नैतिकता सहनशीलता और ईमानदारी को जन्म देती है। यह सभी गुण लोकतन्त्र की सफलता के लिए आवश्यक हैं।

(6) **शान्ति और सुरक्षा**—आज के तनावपूर्ण संसार में लोकतन्त्र डगमगा रहा है। लोकतन्त्र की सफलता के लिए शान्ति और सुरक्षा अति आवश्यक है। यदि किसी देश में आन्तरिक अशान्ति है अथवा असुरक्षा है अथवा बाह्य आक्रमण की स्थिति है तो ऐसी स्थिति में प्रजातन्त्र सफल नहीं हो सकता। अशान्ति की स्थिति लोकतन्त्र के प्रतिकूल है वास्तव में लोकतन्त्र की सफलता के लिए शान्ति और सुरक्षा अति आवश्यक है।

(7) **जनमत**–जनमत लोकतन्त्र का प्राण है। वास्तव में लोकतन्त्र की सरकार जनमत सरकार होती है। जिस सरकार का सम्पर्क जनमत से टूट जाता है, हम उसे लोकतन्त्र सरकार नहीं कह सकते। अतः लोकतन्त्र की सफलता के लिए स्वस्थ जनमत आवश्यक है।

प्रश्न 2—जनमत की परिभाषा दीजिए। जनमत की अभिव्यक्ति के प्रमुख माध्यमों की विवेचना कीजिए। (1987, 88, 89, 90)

उत्तर—जनमत की परिभाषा—जनमत का सामान्य अर्थ है जनता का मत। सामान्यतया जनमत का अर्थ व्यक्तियों के उन सामूहिक विचारों से होता है जो समाज के हित में हों और समाज को प्रभावित करने वाले हों। दूसरे शब्दों में जब समस्त जनता किसी विषय पर एकमत हो तो उसे 'जनमत' कहा जाता है। जनमत लोकतन्त्र (प्रजातन्त्र) का प्राण है क्योंकि जनमत के द्वारा ही आज के युग में राज्यों के शासन चलता है।

जनमत के सम्बन्ध में ब्राइस ने निम्न परिभाषा दी है—"जनमत (लोकमत) मनुष्यों के उन विभिन्न दृष्टिकोणों का योग मात्र है जो वे सार्वजनिक हित से सम्बद्ध विषयों के बारे में रखते हैं।"

डा० बेनीप्रसाद ने जनमत की परिभाषा इस प्रकार दी है—"जो मत लोक कल्याण की भावना से प्रेरित होता है, उसे जनमत कहते हैं।"

जनमत की अभिव्यक्ति के प्रमुख माध्यम (साधन)—जनमत की अभिव्यक्ति मुख्यतः निम्न माध्यमों के द्वारा की जाती है—

(1) **समाचार पत्र एवं पत्रिकाएँ**—जनमत प्रकट करने का सबसे महत्वपूर्ण माध्यम समाचार पत्र एवं पत्रिकाएँ हैं। इनके माध्यम से विभिन्न विचारक जन-समस्याओं की विवेचना और सरकारी नीतियों की आलोचना के विषय में अपने विचारों की अभिव्यक्ति करते हैं।

(2) **निर्वाचन**—जनमत का प्रकट करने का दूसरा महत्वपूर्ण माध्यम निर्वाचन (चुनाव) है। निर्वाचन के समय प्रत्येक राजनीतिक दल अपने दल के कार्यक्रमों को जनता के सम्मुख रखकर अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयास करता है। निर्वाचन द्वारा जिस दल का प्रत्याशी विजयी होता है, उसके सम्बन्ध में यह मान लिया जाता है कि जनमत उसी दल के सिद्धान्तों को स्वीकार करता है।

(3) **सभा, सम्मेलन तथा भाषण**—सभा, सम्मेलन तथा भाषण जनमत प्रकट

करने में काफी सहयोग देते हैं। इनके माध्यमों से होने वाले वैधानिक आन्दोलन विभिन्न प्रश्नों पर जनमत की अभिव्यक्ति करते हैं।

(4) **आवेदन पत्र, स्मृति पत्र तथा सामूहिक प्रतिवेदन**—समय-समय पर सरकार के सम्मुख जनता द्वारा पेश किये आवेदन पत्र, स्मृति पत्र तथा सामूहिक प्रतिवेदन जनमत के माध्यम हैं जिनके द्वारा जनता की मनोभावनाओं का प्रत्यक्ष प्रदर्शन होता है।

(5) **व्यवस्थापिक सभा**—व्यवस्थापिका सभा जनमत की अभिव्यक्ति का एक प्रमुख माध्यम है क्योंकि इस सभा में जनता द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधि सदन में जनता के मत की ही अभिव्यक्ति करते हैं।

(6) **अन्य साधन**—आज के वैज्ञानिक युग में रेडियो, टेलीविजन आदि ऐसी वस्तुएँ हैं जो अभिव्यक्ति के महत्वपूर्ण साधन हैं। इनके अतिरिक्त राजनीतिक दल, साहित्य, संस्थाऐं जनमत की अभिव्यक्ति के माध्यमों में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1—जनमत मत होता है—

(अ) सामान्य जनता का (ब) विशेष वर्ग का

(स) सरकार का (द) शिक्षित वर्ग का।

उत्तर—(अ) सामान्य जनता का।

प्रश्न 2—जनमत अभिव्यक्ति का सबसे महत्वपूर्ण साधन है—

(अ) भाषण (ब) निर्वाचन

(स) आवेदन पत्र (द) रेडियो।

उत्तर—(ब) निर्वाचन।

प्रश्न 3—लोकतन्त्र शासन में शक्ति निहित होती है—

(अ) समस्त जन समूह में (ब) किसी में नहीं

(स) कुछ व्यक्तियों में (द) शिक्षित वर्ग में।

उत्तर—(अ) समस्त जन समूह में।

नागरिकों के कर्त्तव्य तथा अधिकार

अति लघुउत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—परिवार के प्रति हमारे क्या कर्त्तव्य हैं?

उत्तर—परिवार के प्रत्येक सदस्य को सुखी देखना हमारा कर्त्तव्य है। परिवार के किसी सदस्य के अस्वस्थ होने पर उसकी देखभाल करना हमारा कर्त्तव्य है।

प्रश्न 2—राष्ट्रभक्ति से क्या तात्पर्य है?

उत्तर—अपने राष्ट्र के प्रति वफादरी रखना तथा उसका अहित न होने देना राष्ट्रभक्ति कहलाती है।

प्रश्न 3—मतदान का उचित उपयोग क्यों आवश्यक है?

उत्तर—मतदान का उचित उपयोग इस कारण आवश्यक है जिससे सही प्रतिनिधि का चुनाव हो सके।

प्रश्न 4—मौलिक अधिकार किसे कहते हैं? (1990)

उत्तर—मौलिक अधिकार उन अधिकारों को कहते हैं, जो संविधान के द्वारा नागरिकों को अपने सर्वांगीण विकास के लिए प्राप्त हुए हैं।

प्रश्न 5—राजनीतिक अधिकारों से क्या आशय है ? (1990)

उत्तर—राजनीतिक अधिकारों से आशय उन अधिकारों से है जिनके द्वारा किसी राज्य के नागरिकों को अपने राज्य के शासन में भाग लेने का अवसर प्राप्त होता है।

लघुउत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—कर्त्तव्य से क्या आशय है ?

उत्तर—नागरिक अपने राज्य तथा समाज के हितों को ध्यान में रखकर जो आचरण करते हैं, वही कर्त्तव्य कहलाते हैं।

प्रश्न 2—राष्ट्र के प्रति हमारे क्या कर्त्तव्य हैं ? (1984)

उत्तर—राष्ट्र के प्रति हमारे निम्नलिखित कर्त्तव्य हैं—

(1) राज्य के नियमों तथा कानूनों का पालन करना,
(2) राष्ट्र के प्रति भक्ति रखना,
(3) सेना में भर्ती होना,
(4) करों को चुकाना,
(5) मतदान का उचित उपयोग,
(6) सरकारी कर्मचारियों की सहायता करना,
(7) राज्य के कार्यों में सहयोग देना।

नोट—इनका विस्तृत विवेचन विस्तृत उत्तरीय प्रश्न नं० 1 में पढ़ें।

प्रश्न 3—अधिकार कितने प्रकार के होते हैं ?

उत्तर—अधिकार 4 प्रकार के होते हैं—

(1) प्राकृतिक अधिकार,
(2) नैतिक अधिकार,
(3) मौलिक अधिकार,
(4) कानूनी अधिकार—ये दो प्रकार के होते हैं—
  (अ) सामाजिक अधिकार,
  (ब) राजनीतिक अधिकार।

(अ) सामाजिक अधिकार तीन होते हैं—
  (i) जीवन रक्षा का अधिकार,
  (ii) समानता का अधिकार,
  (iii) स्वतन्त्रता का अधिकार,

(ब) राजनीतिक अधिकार छः होते हैं—
  (i) मत देने का अधिकार,
  (ii) निर्वाचित होने का अधिकार,
  (iii) सार्वजनिक पद प्राप्त करने का अधिकार,
  (iv) सरकार की आलोचना करने का अधिकार,
  (v) आवेदन पत्र देने का अधिकार,
  (vi) विदेश में नागरिक सुरक्षा का अधिकार।

प्रश्न 4—नागरिक जीवन में किन-किन स्वतन्त्रताओं का महत्वपूर्ण स्थान है ? (1990)

उत्तर—नागरिक जीवन में निम्नलिखित स्वतन्त्रताओं का महत्वपूर्ण स्थान है—

(1) इच्छानुसार जीवन व्यतीत करने का स्वतन्त्रता,
(2) विचार प्रकट करने की स्वतन्त्रता,
(3) परिवार के संगठन की स्वतन्त्रता,
(4) आवागमन की स्वतन्त्रता;
(5) रोजगार प्राप्त करने की स्वतन्त्रता,
(6) इच्छानुसार धर्माचरण की स्वतन्त्रता।

प्रश्न 5—अधिकारों तथा कर्त्तव्यों का साथ-साथ अस्तित्व क्यों अनिवार्य है? (1989)

उत्तर—अपने व्यक्तित्व के विकास के लिए व्यक्ति को जिन सुविधाओं और अवसरों की आवश्यकता होती है, उन माँगों का अस्तित्व और भोग तभी सम्भव है, जब समाज उसे स्वीकृति प्रदान करे। अतः व्यक्ति को अधिकार देते समय समाज का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि वह व्यक्ति को अपने अधिकारों के भोग का अवसर प्रदान करे, किन्तु व्यक्ति भी अपने अधिकारों का भोग इस प्रकार करे कि जिससे समाज का अहित न हो। उदाहरण के लिए, प्रत्येक को यह अधिकार प्राप्त है कि वह अपने जीवन की सुरक्षा करे, किन्तु इस अधिकार का व्यक्ति द्वारा तभी भोग किया जा सकता है जब समाज अर्थात् अन्य सभी व्यक्ति उसकी जीवन सुरक्षा में सहायता प्रदान करें। अतः समाज का यह कर्त्तव्य है कि वह ऐसी व्यवस्था करे जिससे व्यक्ति को अपनी जीवन रक्षा की स्वतन्त्रता में बाधा न पड़े। यदि दूसरा व्यक्ति या समाज का कोई अन्य व्यक्ति किसी के जीवन की सुरक्षा में बाधा पहुँचाता है तो वह अपने कर्त्तव्य का पालन नहीं करता। अतः जो व्यक्ति का अधिकार होता है, वही दूसरे व्यक्तियों अथवा समाज का कर्त्तव्य होता है। इस प्रकार कर्त्तव्य और अधिकार एक दूसरे के पूरक हैं, एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। अतः अधिकारों एवं कर्त्तव्यों का साथ-साथ अस्तित्व अनिवार्य है।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—कर्त्तव्य से क्या तात्पर्य है? नागरिकों के प्रमुख कर्त्तव्यों का उल्लेख कीजिए। (1984, 86, 89)

उत्तर—कर्त्तव्य से तात्पर्य—नागरिकों को अपने राज्य और समाज-हितों को ध्यान में रखकर जो आचरण करने होते हैं, उन्हें कर्त्तव्य कहते हैं। डॉ० बेनी प्रसाद के अनुसार, **"कर्त्तव्य तथा अधिकार एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। यदि व्यक्ति उनको अपने दृष्टिकोण से देखता है तो अधिकार हैं और इसी को दूसरे के दृष्टिकोण से देखा जाता है तो वे कर्त्तव्य हो जाते हैं।"**

नागरिक के प्रमुख कर्त्तव्य

(अ) समाज के प्रति कर्त्तव्य अथवा नैतिक कर्त्तव्य

(1) अपने प्रति कर्त्तव्य—हर नागरिक का यह कर्त्तव्य है कि उसे अपने शरीर को स्वस्थ रखने और अपने व्यक्तित्व और बुद्धि के विकास के लिए अच्छी आदतें डालनी चाहिए। अच्छी से अच्छी शिक्षा प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिए। यदि सम्भव हो सके तो अपने मानसिक विकास के लिए उच्च शिक्षा प्राप्त

कर, स्वस्थ्य शरीर और मस्तिष्क वाला नागरिक समाज के कल्याण के लिए उपयोगी होता है।

(2) **परिवार के प्रति कर्त्तव्य**—अपने हित के ऊपर परिवार का हित आता है। हर व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि वह अपने परिवार की उन्नति के लिए प्रयत्नशील हो। उसे अपने परिवार की आवश्यकता की पूर्ति के लिए प्रयत्न करना चाहिए तथा अपने बच्चों को शिक्षित बनाकर आदर्श नागरिक बनाने में सहयोग देना चाहिए। उसे स्वार्थ से दूर रहकर सबके हित का ध्यान रखना चाहिए। उसे अपने उत्तरदायित्व जो, परिवार के प्रति हैं, से भागना नहीं चाहिए, अपितु धैर्य और साहस के साथ पूरा करना चाहिए।

(3) **पड़ोसी के प्रति कर्त्तव्य**—नागरिक का यह कर्त्तव्य है कि वह ऐसा कोई कार्य न करे कि जिससे दूसरों को पीड़ा पहुँचे। उसे अपने पड़ोसी के साथ भाई-चारे का व्यवहार करना चाहिए और उसके दुःख-सुख में अपनी क्षमता के अनुसार सहायता करनी चाहिए। उसे यह कभी न सोचना चाहिए कि वह स्वच्छन्द है। अपनी स्वतन्त्रता का उस सीमा तक ही उपभोग करना चाहिए कि समाज और पड़ोसी के लिए हानिकारक न हो।

(ब) राज्य के प्रति अथवा कानूनी कर्त्तव्य

प्रत्येक नागरिक के राज्य के प्रति कुछ कर्त्तव्य हैं। इन कर्त्तव्यों का पालन करने के लिए वह बाध्य है, क्योंकि वह राजनीतिक अधिकारों का उपभोग करता है। यदि वह इन कर्त्तव्यों का पालन नहीं करता है तो वह दण्ड का भागी हो सकता है। यह कर्त्तव्य मुख्य रूप में निम्नलिखित हैं—

(1) **कानून का पालन**—प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य है कि वह राज्य के हर कानून का पालन करे। यदि वह ऐसा नहीं करता है तो समाज में शान्ति एवं व्यवस्था स्थापित नहीं हो सकती। यदि कानून का उल्लंघन करने वाले को दण्ड नहीं मिलता तो दूसरा उसका अनुकरण करेंगे, नतीजा यह होगा कि अराजकता और अशान्ति फैलेगी और सरकार अपने कार्यों को पूरा न कर पायेगी। ऐसी दशा में नागरिकों के अधिकारों की रक्षा राज्य नहीं कर सकेगा। अतः कानून पालन स्वयं नागरिक के हित में है। इस कर्त्तव्य का यह अर्थ नहीं कि हर कानून का अन्धा अनुपालन हो, अगर कानून अनुचित हो तो उसका शान्तिमय और वैधानिक रीति से विरोध करना नागरिक का नैतिक कर्त्तव्य है।

(2) **राज्य के प्रति भक्ति**—नागरिकता की प्रमुख शर्त है राज्य के प्रति भक्ति। इसका अर्थ है कि नागरिक में राज्य की सेवा करने के भाव का होना। नागरिक को राज्य के प्रति वफादार होना चाहिए। राज्य के हर उचित और नैतिक कार्य को करने के लिए तैयार रहना चाहिए। आवश्यकता पड़ने पर यदि राज्य की रक्षा के लिए प्राणों की भी बलि देना पड़े तो हिचकिचाना नहीं चाहिए। दंगा-फसाद तथा अन्य अनैतिक कार्यों को रोकने में सरकारी कर्मचारियों को सहायता देनी चाहिए, राज्य के प्रति घोर अपराध करने वाले व्यक्ति को आश्रय न देना चाहिए।

(3) **सैनिक सेवा**—जब राज्य की सुरक्षा किसी प्रकार से संकट में पड़ जावे तो नागरिक को सेना में भर्ती होकर राज्य की सेवा करनी चाहिए। राज्य को अधिकार है कि किसी भी नागरिक को देश की रक्षा के लिए सेना में भर्ती कर ले, क्योंकि राज्य नागरिक को देश और विदेश में राजनीतिक अधिकारों के द्वारा सुरक्षा

की गारंटी देता है। इसलिए मन से सैनिक सेवा करने को नागरिक को तैयार रहना चाहिए और अपने प्राणों को न्यौछावर कर देश की रक्षा करनी चाहिए।

(4) **करों का चुकाना**—यह नागरिक का कर्त्तव्य है कि वह समय के अन्दर अपने करों को अदा कर दे। सरकार को अपना काम-काज चलाने के लिए धन की आवश्यकता होती है और यह धन करों द्वारा ही प्राप्त होता है। नागरिक का नैतिक कर्त्तव्य है कि वह स्वयं जाकर अपना कर अदा कर दे। उसे कर वसूल करने वाले अधिकारी के आने की प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए।

(5) **मतदान का उचित प्रयोग**—नागरिक का यह महत्त्वपूर्ण कर्त्तव्य है। क्योंकि अपने मत के द्वारा वह शासन चलाने के लिए अपने प्रतिनिधि को चुनता है। मत का प्रयोग बुद्धिमानी, ईमानदारी और न्याय के साथ करना चाहिए। नागरिक को चाहिए कि वह मतदान सूची में नाम लिखवा ले। अच्छा नागरिक कभी स्वार्थ, साम्प्रदायिकता, दलबन्दी आदि संकुचित विचारों के चक्कर में नहीं पड़ता है। वह मत का प्रयोग करते समय प्रत्याशी की योग्यता और सिद्धान्तों को देखता है। भावना के वशीभूत होकर मत का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

प्रश्न 2—अधिकार की परिभाषा दीजिए। नागरिकों के प्रमुख अधिकारों का वर्णन कीजिए। (1984, 85)

उत्तर—अधिकार का अर्थ—व्यक्ति के प्रति राज्य और समाज का कर्त्तव्य ही उसका अधिकार है। अधिकारों का मनुष्य के जीवन में अत्यधिक महत्व है। अधिकार मनुष्य की वे आवश्यकतायें हैं, जिनके बिना उसके व्यक्तित्व का विकास सम्भव ही नहीं। डा० बेनी प्रसाद के शब्दों में, 'अधिकार वे सामाजिक दशाएँ हैं जो व्यक्ति के विकास के लिए आवश्यक हैं।

नागरिकों के प्रमुख अधिकार

अधिकारों को हम दो वर्गों में बाँट सकते हैं—

(1) नैतिक अधिकार

(2) कानूनी अधिकार

(1) नैतिक अधिकार—नैतिक अधिकार वे अधिकार हैं, जो जनमत द्वारा स्वीकृत हैं। इनका सम्बन्ध मनुष्य के नैतिक आचरण से होता है। उनका पालन करना या न करना मनुष्य की इच्छा पर निर्भर है। नैतिक अधिकारों की पूर्ति से समाज का बहुत बड़ा हित होता है। इन्हें समाज की नैतिक चेतना, जन-मत और प्रथाओं के द्वारा मनवाया जाता है, कानूनों के द्वारा नहीं। इन्हें राज्य का संरक्षण प्राप्त नहीं होता।

(2) कानूनी अधिकार—ये वे अधिकार हैं जो राज्य द्वारा प्रदान किये जाते हैं। इन अधिकारों को राज्य की स्वीकृति और संरक्षण प्राप्त होता है। वास्तव में कानूनी अधिकार एक प्रकार का विशेष अधिकार है, जो कि राज्य के द्वारा नागरिकों को प्रयोग करने के लिए प्रदान किया जाता है।

कानूनी अधिकारों को दो वर्गों में बाँटा जाता है—

(अ) सामाजिक अधिकार,

(ब) राजनीतिक अधिकार।

(अ) सामाजिक अधिकार—सामाजिक अधिकार व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास

तथा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए आवश्यक हैं। यह जीवन एवं सम्पत्ति की रक्षा के लिए आवश्यक होते हैं। मनुष्य के स्वतन्त्र और प्रगतिशील जीवन के लिए अत्यन्त आवश्यक अधिकार हैं। जैसे—जीवन की रक्षा का अधिकार, धार्मिक स्वतन्त्रता का अधिकार, सम्पत्ति का अधिकार।

(ब) राजनीतिक अधिकार—राजनीतिक अधिकार वे अधिकार हैं जिनकी प्राप्ति से व्यक्ति नागरिकता प्राप्त करता है। इन अधिकारों की प्राप्ति से व्यक्ति को राज्य के कार्यों में हिस्सा लेने की योग्यता प्राप्त हो जाती है। आजकल प्राचीन यूनान के नगर राज्यों की तरह सभी नागरिकों को प्रत्यक्ष रूप से विधि-निर्माण में भाग लेना सम्भव नहीं है। अतः प्रतिनिधियों के द्वारा शासन चलाने की पद्धति अपनाई जाती है। जैसे—मताधिकार, पद ग्रहण करने का अधिकार, रक्षा का अधिकार आदि।

प्रमुख सामाजिक अधिकार

(1) जीवन का अधिकार—जीवन का अधिकार मनुष्य के लिए सर्वप्रधान तथा अत्यन्त आधारभूत है। क्योंकि जीवन पूर्ति के लिए ही अन्य अधिकारों की आवश्यकता होती है। राज्य कितना ही छोटा क्यों न हो वह सुरक्षा के लिए प्रबन्ध करता है। यह नागरिक की आक्रमण आदि से रक्षा करने की गारण्टी देता है। इस अधिकार का अर्थ केवल जीवन ही नही हैं, वरन् दूसरों के आक्रमण से रक्षा करना है।

(2) पारिवारिक जीवन का अधिकार—पारिवारिक जीवन मनुष्य के लिए स्वाभाविक है। इसे नैसर्गिक भी मानते हैं, क्योंकि सन्तानोत्पत्ति की कामना स्वाभाविक होती है। हर व्यक्ति को पारिवारिक जीवन का आनन्द उठाने का अधिकार है।

(3) काम करने का अधिकार—इसका अर्थ यह है कि हर बेरोजगार को राज्य काम दिलाये। यदि प्रत्यनों के बावजूद भी वह बेकार रहता है तो राज्य को उसकी सहायता करनी चाहिए। इसके लिए जरूरी है कि काम का समय निश्चित हो और साथ में उचित वेतन भी।

(4) शिक्षा का अधिकार—आदर्श नागरिकता के लिए नागरिक का शिक्षित होना आवश्यक है, क्योंकि शिक्षित नागरिक ही अपने दायित्व को अच्छी तरह निभा सकता है। 'शिक्षा का अधिकार' का अर्थ है कि प्रत्येक नागरिक के लिए राज्य द्वारा शिक्षा अनिवार्य कर दी गई है।

(5) सम्पत्ति का अधिकार—हर व्यक्ति को अपनी सम्पत्ति के उपभोग करने का अधिकार हो और उसमें किसी प्रकार की कोई बाधा न हो। उसे सम्पत्ति रखने, हस्तान्तरित करने आदि की स्वतन्त्रता हो।

(6) समझौते का अधिकार—हर व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति के साथ समझौता करने का अधिकार है। पर यह भी निरपेक्ष नहीं है। राज्य इन पर रोक लगा सकता है।

(7) धार्मिक स्वतन्त्रता का अधिकार--सभी उन्नतिशील राज्य धार्मिक स्वतन्त्रता का अधिकार प्रदान करते हैं। इसके अन्तर्गत व्यक्ति को अपनी आस्था के अनुसार अपनी धार्मिक शिक्षा का पालन करने और प्रचार करने का अधिकार होता है। किसी को विशेष धर्म मानने के लिए विवश नहीं किया जा सकता। धर्म निरपेक्ष राज्य धर्म के आधार पर नागरिकों में भेद नहीं करता, परन्तु धार्मिक स्वतन्त्रता का अधिकार भी पूर्ण नहीं है।

(8) **देश में आने-जाने की स्वतन्त्रता का अधिकार**—इसके अनुसार व्यक्ति को राज्य के किसी हिस्से में आने-जाने की पूर्ण स्वतन्त्रता होती है। वह कहीं भी जा सकता है और किसी जगह रह सकता है। इसी के अन्तर्गत यह भी है कि किसी व्यक्ति को अकारण बन्दी न बनाया जाये।

(9) **भाषण तथा अभिव्यक्ति का अधिकार**—प्रत्येक सभ्य राज्य अपने नागरिकों को भाषण तथा अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता का अधिकार देता है। इसका अर्थ यह है कि प्रत्येक नागरिक की इच्छानुसार कहने व लिखने का अधिकार है परन्तु इसका यह कदापि अर्थ नहीं कि अपने भाषण या लेख के द्वारा किसी व्यक्ति की मानहानि हो अथवा हिंसा, घृणा आदि का प्रचार किया जाये। इसीलिए यह अधिकार सीमित होते हैं।

(10) **प्रेस (समाचार पत्रों) की स्वतन्त्रता का अधिकार**—यह बहुत महत्वपूर्ण अधिकार है। किसी देश में निर्भीक प्रेस (समाचार पत्र) नागरिकों के अधिकारों का रक्षक होता है, क्योंकि यह कार्यपालिका की हस्तक्षेप करने की प्रवृत्ति पर रोक लगता है। इस स्वतन्त्रता का अर्थ है कि व्यक्तियों को अपने विचारों की पुस्तकों और समाचार पत्रों के माध्यत से प्रकाशित करने की स्वतन्त्रता है।

(11) **सार्वजनिक सभा तथा संगठन बनाने की स्वतन्त्रता का अधिकार**—इस अधिकार का अर्थ है कि नागरिकों को अपने विचारों के प्रचार करने के लिए सार्वजनिक सभा द्वारा अपने विचार प्रकट करने की स्वतन्त्रता होनी चाहिए। साथ ही साथ संगठन बनाने का अधिकार होना चाहिए। सभा से जनता को शिक्षा मिलती है।

(12) **समता का अधिकार**—सामाजिक अधिकारों में यह अत्यन्त महत्त्व का अधिकार है, विशेष रूप से भारत जैसे देश के लिए। हजारों वर्षों से हमारे देश में ऊँच-नीच, छोटे-बड़े, जाति-कुजाति आदि के भेद समाज में विद्यमान हैं। इन तमाम भेदों का समाप्त होना आवश्यक है। संविधान की दृष्टि में सभी समान हैं।

प्रमुख राजनीतिक अधिकार

(1) **मत देने का अधिकार**—मताधिकार बहुत महत्वपूर्ण है। इसके द्वारा नागरिक को शासन में भाग लेने का अवसर मिलता है। मनुष्य अपनी स्थिति के विषय में जागरूक हो जाता है। उसे अपना शासन चलाने के लिए सदस्यों को चुनने का अधिकार होता है। वर्ण, जाति, लिंग आदि के आधार पर इस अधिकार से बंचित नहीं किया जा सकता है।

(2) **निर्वाचित होने का अधिकार**—यह अधिकार मताधिकार के समान ही महत्वपूर्ण है। इसका अर्थ है कि सभी योग्य नागरिकों को राज्य के पद के लिए चुने जाने का अधिकार हो। वास्तव में जनतन्त्र में किसी व्यक्ति को वर्ग, वर्ण, जाति, लिंग अथवा सम्पति के आधार पर इस अधिकार से वंचित नहीं किया जाना चाहिए।

(3) **सरकारी पद पाने का अधिकार**—इसका अर्थ है कि हर व्यक्ति को सरकारी पद प्राप्त करने का समान योग्यता के आधार पर अधिकार होना चाहिए। किसी प्रकार भी जाति'लिंग, वर्ग का भेद-भाव नहीं होना चाहिए। भारतीय संविधान में अनुसूचित जातियों के लिए विशेष सुविधाएँ दी गयी हैं, और वह उचित भी है।

(4) **याचिका का अधिकार**—कुछ लेखकों ने याचिका देने का अधिकार भी

राजनीतिक अधिकार माना है। हर नागरिक को अपने कष्ट के निवारण हेतु उचित अधिकारी के पास याचिका देने का अधिकार है। वास्तव में इस अधिकार का तात्पर्य यह है कि समाज का कोई वर्ग अपनीं गम्भीर शिकायतों को दूर कराने के लिए राज्य के उच्चतम अधिकारियों के पास अपनी याचिका भेज सकता है।

(5) विदेश में नागरिक की सुरक्षा का अधिकार—इस अधिकार का अर्थ है यदि कोई नागरिक विदेश में ठहरा है, और वहाँ विदेशियों द्वारा उसके साथ अभद्र व्यवहार किया जाता है, अथवा किसी प्रकार की हानि पहुँचाई जाती है तो विदेशी सरकार को अथवा विदेशियों को क्षतिपूर्ति करनी होगी। यदि ऐसा नहीं होता है तब राज्य अपने नागरिक की हानि के लिए दूसरे देश से मुआवजा दिलाने का काम करेगा।

प्रश्न 3—अधिकारों तथा कर्त्तव्यों के सामंजस्य या सम्बन्ध पर एक संक्षिप्त निबन्ध लिखिए। (1989)

उत्तर—अधिकार तथा कर्त्तव्य का सामंजस्य या सम्बन्ध—जो समाज के लिए अधिकार हैं, वे व्यक्ति के लिए कर्त्तव्य हैं। किसी कार्य अथवा सुविधा को जब हम एक व्यक्ति के दृष्टिकोण से देखने हैं तो वे अधिकार कहलाते हैं। वे ही सुविधाएं जब किसी दूसरे व्यक्ति के दृष्टिकोण से देखी जाती हैं तब कर्त्तव्य कहलाते हैं। इस प्रकार सिद्ध होता है कि अधिकार और कर्त्तव्य एक दूसरे के पूरक हैं। उनमें आपस में घनिष्ठ सम्बन्ध है। वे अन्योन्याश्रित हैं। वे दोनों एक सिक्के दो पहलू हैं। दोनों से मिलकर ही समाज का कल्याण सम्भव है। अधिकार और कर्त्तव्य के घनिष्ठ सम्बन्ध को निम्नलिखित रूपों में देखा जा सकता है—

(1) व्यक्ति का अधिकार समाज का कर्त्तव्य होता है—अपने व्यक्तित्व के विकास के लिए व्यक्ति को जिन सुविधाओं और अवसरों की आवश्यकता होती है, उन माँगों का अस्तित्व और भोग तभी सम्भव है, जब समाज उसे स्वीकृति प्रदान करे। अतः व्यक्ति को अधिकार देते समय समाज का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि वह व्यक्ति को अपने अधिकारों के भोग का अवसर प्रदान करे, किन्तु व्यक्ति भी अपने अधिकारों का भोग इस प्रकार करे कि जिससे समाज का अहित न हो। उदाहरण के लिए, प्रत्येक व्यक्ति को यह अधिकार प्राप्त है कि वह अपने जीवन की सुरक्षा करे, किन्तु इस अधिकार का व्यक्ति द्वारा तभी भोग किया जा सकता है जब समाज अर्थात् अन्य सभी व्यक्ति उसकी जीवन-सुरक्षा, में सहायता प्रदान करें। अतः जो व्यक्ति का अधिकार होता है, वही दूसरे व्यक्तियों अथवा समाज का कर्त्तव्य होता है।

(2) व्यक्ति के अधिकार के साथ उसका कर्त्तव्य जुड़ा होता है—प्रत्येक अधिकार के पीछे एक आधार भूत कर्त्तव्य जुड़ा होता है। जब व्यक्ति अपने किसी भी अधिकार का भोग करता है तो उसे अपने इस कर्त्तव्य का ध्यान रखना पड़ता है कि उस अधिकार-भोग से किसी अन्य व्यक्ति का अहित न हो। उदाहरण के लिए, पूरे दिन परिश्रम करने के बाद रात्रि को सोते समय मनोरंजन हेतु आप रेडियो बजाते हैं। यह आपका अधिकार है और इसकी सामाजिक स्वीकृति भी है। राज्य द्वारा आपको संरक्षण भी प्राप्त है कि आप अपने मनोरंजन के लिए रेडियो बजाएं, किन्तु इस अधिकार के साथ यह कर्त्तव्य भी जुड़ा है कि आप रेडियो इतनी तेज न बजायें कि पड़ोसियों की नींद हराम कर दें अथवा उनके पढ़ने-लिखने में बाधा पहुँचे।

अतः प्रत्येक अधिकार का भोग इस प्रकार होना चाहिए जिससे दूसरे के अधिकारों में बाधा न पड़े। अधिकारों का समुचित प्रयोग तभी सम्भव है जब वह अपने कर्त्तव्य का भी ध्यान रखता है।

(3) **कर्त्तव्य पालन में ही अधिकार छिपे होते हैं**—समाज में व्यक्ति को अपने अधिकारों की माँग करने से पूर्व कर्त्तव्यों पर भी ध्यान देना चाहिए। यदि हम सब समाज की इकाइयाँ अपने-अपने कर्त्तव्य का निष्ठापूर्वक पालन करें तो समाज के सभी व्यक्तियों को उनके अधिकार स्वतः ही मिल जाते हैं। यदि कोई व्यक्ति दूसरे के अधिकारों में हस्तक्षेप करता है तो उसके अधिकार उपभोग में दूसरे व्यक्ति हस्तक्षेप करते हैं। इस प्रकार दूसरों के अधिकारों में बाधा डालना अपने ही अधिकारों में बाधा डालना है। उदाहरण के लिए, हम अपने इस कर्त्तव्य का पालन करते हैं कि दूसरों के जीवन की सुरक्षा में बाधा न डालें। जब समाज का प्रत्येक व्यक्ति अपने इस कर्त्तव्य का पालन करता है तो प्रत्येक व्यक्ति को सुरक्षित जीवन-यापन करने का अधिकार स्वतः मिल जाता है। इस सम्बन्ध में नवीन धारणा यह है कि व्यक्ति को अपने अधिकारों का प्रयोग इस ढंग से तो करना चाहिए कि जिससे दूसरे के अधिकारों में बाधा न पहुँचे किन्तु इसके साथ-साथ उसे अपने कर्त्तव्यों पर भी बल देना चाहिए, क्योंकि कर्त्तव्य-पालन में ही अधिकार छिपे रहते हैं।

(4) **अधिकारों का प्रयोग सार्वजनिक हित में होना चाहिए**—प्रत्येक अधिकार का उपभोग इस प्रकार करना चाहिए जिससे व्यक्ति और समाज दोनों का ही हित हो। यदि व्यक्ति द्वारा अधिकार का प्रयोग इस ढंग से किया गया हो, जिससे समाज-कल्याण में बाधा पहुँचती है तो व्यक्ति को उसे त्याग देना चाहिए अन्यथा व्यक्ति और समाज दोनों का अहित होगा।

बहु-विकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1—मत देने का अधिकार है—

(i) मौलिक अधिकार (ii) राजनीतिक अधिकार
(iii) व्यक्तिगत अधिकार (iv) कोई भी अधिकार नहीं।

उत्तर—(i) राजनीतिक अधिकार।

प्रश्न 2—कानूनी अधिकार होते हैं—

(i) दो प्रकार के (ii) तीन प्रकार के
(iii) पाँच प्रकार (iv) सात प्रकार के।

उत्तर—(i) दो प्रकार के।

प्रश्न 3—कर्त्तव्य तथा अधिकार आपस में—

(i) विरोधी हैं (ii) कोई सम्बन्ध नहीं है
(iii) घनिष्ठ सम्बन्ध है (iv) पूरक हैं।

उत्तर—(iv) पूरक हैं।

प्रश्न 4—भारतीय संविधान में किन अधिकारों का उल्लेख किया गया है—

(i) राजनीतिक अधिकार (ii) मौलिक अधिकार
(iii) सामाजिक अधिकार (iv) नैतिक अधिकार।

उत्तर—(ii) मौलिक अधिकार।

चुनाव

अति लघुउत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—भारत में चुनाव सम्बन्धी कार्यों का संचालन कौन करता है ?

उत्तर—चुनाव सम्बन्धी कार्यों का संचालन चुनाव आयोग करता है।

प्रश्न 2—मतदाता किसे कहते हैं ? (1990)

उत्तर—जो व्यक्ति मत देने का अधिकारी होता है, उसे मतदाता कहते हैं।

प्रश्न 3—चुनाव चिह्न क्या होता है ?

उत्तर—चुनाव आयोग द्वारा वितरित किसी दल का पंजीकृत चिन्ह ही उनका चुनाव चिन्ह होता है।

प्रश्न 4—मतपत्र किसे कहते हैं ?

उत्तर—मतपत्र वह पत्र होता है जिसमें मतदान के लिए सभी प्रत्याशियों के नाम तथा चिह्न मुद्रित होते हैं।

प्रश्न 5—भारत में मत देने की आयु कम से कम कितनी रखी गयी है ? (1989)

उत्तर—भारत में मत देने की आयु 18 वर्ष रखी गई है।

प्रश्न 6—विरोधी दलों का मुख्य उद्देश्य क्या होता है ? (1988, 90)

उत्तर—विरोधी दलों का मुख्य उद्देश्य सरकार की गतिविधियों एवं कार्य प्रणाली पर नजर रखना होता है।

लघुउत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—प्रजातन्त्र में चुनाव का क्या महत्व है ?

उत्तर—लोकतन्त्र में चुनाव का विशेष महत्व है। किसी भी लोकतन्त्र में सभी नागरिक शासन नहीं कर सकते। उनके द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधि ही शासन का कार्य सम्पन्न करते हैं। यह सब कुछ चुनाव से ही सम्भव होता है। चुनाव के द्वारा जनता सरकार को बदल सकती है और नई सरकार का गठन कर सकती है। मत देने या वोट देने के अधिकार को मताधिकार कहते हैं।

प्रश्न 2—अधिकांशतः प्रत्याशी राजनैतिक दल के टिकट पर ही क्यों चुनाव लड़ने का प्रयत्न करते हैं ?

उत्तर—अधिकांशतः प्रत्याशी राजनीतिक दल की टिकट पर चुनाव निम्नलिखित कारणों से लड़ते हैं :

(1) चुनाव लड़ने के लिए प्रत्याशियों को राजनैतिक दलों से धन प्राप्त हो जाता है।

(2) चुनाव लड़ने के लिए प्रत्याशियों को राजनैतिक दलों से कार्यकर्त्ता मिल जाते हैं।

(3) चुनाव लड़ने के लिए प्रत्याशियों को एक निश्चित कार्यक्रम मिल जाता है।

प्रश्न 3—मतदान किस प्रकार होता है ?

उत्तर—कोई भी व्यक्ति जिसका नाम मतदाता सूची में हो और जो निर्धारित

योग्यताएँ रखता हो, मतदान के लिए प्रत्याशी हो सकता है। सर्वप्रथम प्रत्याशी को एक निश्चित तिथि तक नामांकन पत्र भरना होता है फिर इसे निर्वाचन अधिकारी के पास जमा करना होता है। इसमें शर्त यह है उसका नाम मतदाताओं द्वारा ही प्रस्तुत तथा अनुमोदित होना चाहिए। नामांकन-पत्र की सक्षम अधिकारी के द्वारा जाँच की जाती है। उसके पश्चात् चुनाव अधिकारी के द्वारा प्रत्येक प्रत्याशी को एक चुनाव चिन्ह दिया जाता है।

उसके पश्चात् प्रत्याशी तथा उसके सहयोगियों के द्वारा चुनाव प्रचार आरम्भ किया जाता है। जिस दिन चुनाव होना होता है, उसके 48 घण्टे पूर्व चुनाव प्रचार रोक देना होता है। जिस दिन चुनाव होता है, मतदाता वोट डालने मतदान-केन्द्र पर जाते हैं। वहाँ उनको मतपत्र दिये जाते हैं। इस मतपत्र पर सभी प्रत्याशियों के नाम और उनके चुनाव चिन्ह छपे होते हैं। मतदाता इच्छित नाम के आगे मोहर द्वारा क्रास का चिन्ह लगा देता है और मतपत्र मतपेटी में डाल देता है। मत पेटियों को सील करके मतगणना के लिए भेज दिया जाता है। मतपत्रों की गणना करके चुनाव अधिकारी परिणाम की घोषणा कर देता है।

प्रश्न 4—चुनाव घोषणा पत्र से क्या अभिप्राय है? *(1991)*

उत्तर—प्रत्येक आम चुनाव में प्रत्येक राजनीतिक दल अपने चुनाव सिद्धान्तों उद्देश्यों और कार्यक्रमों को जनता के सामने रखता है, जिससे जनता प्रभावित होकर उसका समर्थन करे। अतः चुनाव घोषणा-पत्र किसी भी राजनीतिक दल की नीतियों एवं कार्यक्रमों का लेखा-जोखा होता है। यह प्रत्येक राजनीतिक दल के द्वारा घोषित किया जाता है।

प्रश्न 5—राजनीतिक दलों के संगठन के प्रमुख आधार कौन-कौन से हैं?

उत्तर—राजनीतिक दलों के संगठन के प्रमुख आधार निम्नलिखित हैं—

(1) संगठन,
(2) सामान्य सिद्धान्तों की एकता,
(3) संवैधानिक सिद्धान्तों में विश्वास,
(4) शासन प्राप्त करने की इच्छा,
(5) राष्ट्रहित,
(6) राजनीनिक दलों के संगठन का आधार।

प्रश्न 6—विरोधी दल के मुख्य कार्य क्या हैं?

उत्तर—विरोधी दल के मुख्य कार्य इस प्रकार हैं—

(1) सरकार की गतिविधियों पर नजर रखना,
(2) नीतियों एवं कार्यों की आलोचान करना,
(3) विधेयकों की आलोचना करना,
(4) सरकार की भूलों को प्रकाश में लाना,
(5) सरकार पर नियन्त्रण रखना,
(6) जनता और शासन के मध्य सम्बन्ध बनाये रखना।

प्रश्न 7—अध्यक्षात्मक शासन से क्या अभिप्राय है?

उत्तर—अध्यक्षात्मक शासन—अध्यक्षात्मक शासन-प्रणाली शासन के उस रूप को कहते हैं जिसमें कार्यकाल, नीतियों तथा कार्यों की दृष्टि के कार्यपालिका वैधानिक रूप से व्यवस्थापिका से स्वतन्त्र होती है। राज्य का प्रधान वास्तविक प्रधान होता है

जिसका निर्वाचन जनता द्वारा प्रत्यक्ष रूप से किया जाता है। यह शासन के संचालन के लिए एक मन्त्रिमण्डल का गठन करता है जो उसीके प्रति उत्तरदायी होता है और उसकी इच्छा पर्यन्त ही अपने पद पर रह सकता है। राज्य का प्रधान तथा उसके सहयोगी न तो विधानमण्डल के कार्यों में भाग लेते हैं और न उसे भंग कर सकते हैं और न विधानमण्डल ही राष्ट्रपति को उसकी अवधि से पूर्व हटा सकता है।

प्रश्न 8—कुलीन तन्त्र किसे कहते हैं ?

उत्तर—कुलीन तन्त्र—जब राज्य में राज्य सत्ता कुछ सीमित व्यक्तियों के हाथ में होती है तो वह शासन कुलीनतन्त्र होता है। कुलीनतन्त्र वह शासन प्रणाली है जिसमें शासनतन्त्र कुछ श्रेष्ठ व्यक्तियों द्वारा संचालित होता है। इस श्रेष्ठता का आधार वंश, बुद्धि, धन, धर्म या सैनिक शक्ति हो सकती है।

परीक्षा पूछे में गये लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 9—वयस्क मताधिकार से आप क्या समझते हैं ? (1987)

उत्तर—वयस्क मताधिकार—वयस्क मताधिकार का अर्थ है कि राज्यों में रहने वाले देश के समस्त वयस्क नागरिकों को मत देने का अधिकार प्रदान किया जाय। वयस्कता के लिए 18 से 21 वर्ष तक की आयु निर्धारित की गयी है। भारत में 18 वर्ष या उससे ऊपर की आयु के सभी स्त्री-पुरुषों को मत देने के लिए अधिकार प्रदान किया गया है। वर्तमान युग में वयस्क मताधिकार को सर्वमान्य आधार के रूप में अधिकांश देशों द्वारा स्वीकार किया जा चुका है। इससे जनता को राजनीतिक शिक्षा मिलती है तथा सामाजिक कार्यों में रुचि उत्पन्न होती है। इसके समानता पर आधारित होने के कारण राज्य में क्रान्ति की सम्भावना नहीं रहती है। प्रजातन्त्र शासन में वयस्क मताधिकार का बहुत अधिक महत्व है।

प्रश्न 10—प्रजातन्त्र में शक्तिशाली विरोधी दल की उपस्थिति क्यों आवश्यक है ? तर्क सहित उत्तर दीजिए। (1988)

उत्तर—प्रजातन्त्र में शक्तिशाली विरोधी दल का विशेष महत्व है। यदि विरोधी दल शक्तिशाली नहीं होगा तो सत्तादल मनमाने तरीके से कानून बनायेगा और जनसाधारण के हितों की पूर्ति नहीं हो सकेगी। प्रजातन्त्र में विरोधी दल के प्रमुख कार्य इस प्रकार हैं—(1) सरकार की नीतियों एवं कार्य प्रणाली की आलोचना करना। (2) सरकार की जनता विरोधी गतिविधियों पर नियन्त्रण रखना। (3) सरकार पर नियन्त्रण रखना और जनता के हितों को हानि पहुँचाने वाले कानूनों को पारित होने से रोकना। (4) सरकार की गलतियों को जनता के सम्मुख रखना। (5) जनता और शासन के बीच सम्बन्ध बनाये रखना तथा विधेयकों की आलोचना करना तथा अनुचित विधेयकों को पारित होने से रोकना।

उपर्युक्त कार्यों से स्पष्ट होता है कि प्रजातन्त्र में विरोधी दल की इतनी अधिक महत्वपूर्ण भूमिका होने से उसका शक्तिशाली होना अत्यावश्यक है अन्यथा सत्तापक्ष अपनी मनमानी करेगा और जनहित के कार्यों की ओर ध्यान नहीं देगा।

प्रश्न 11—अध्यक्षात्मक शासन प्रणाली की मुख्य विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। (1984)

उत्तर—अध्यक्षात्मक शासन प्रणाली—यह प्रणाली संसदात्मक प्रणाली के ठीक विपरति होती है। इस प्रणाली में राज्य का प्रधान वास्तविक प्रधान होता है

जिसका निर्वाचन जनता द्वारा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से किया जाता है। इसमें शासन के संचालन के लिए एक मन्त्रिमण्डल का गठन होता है। इस प्रणाली में कार्यपालिका व्यवस्थापिका के प्रति उत्तरदायी न होकर राज्य के प्रधान—राष्ट्रपति—के प्रति उत्तरदायी होती है। इस प्रणाली में व्यवस्थापिका राज्य के प्रधान को उसकी अवधि से पूर्व हटा नहीं सकती।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—मतदान प्रणाली से क्या अभिप्राय है? मतदान प्रणाली के आधुनिक स्वरूप की विवेचना कीजिए।

उत्तर—मतदान प्रणाली—लोकतन्त्र में चुनाव का विशेष महत्व है। किसी भी लोकतन्त्र में सभी नागरिक शासन नहीं कर सकते। उनके द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधि ही शासन का कार्य सम्पन्न करते हैं। यह सब कुछ चुनाव से ही सम्भव होता है। चुनाव के द्वारा जनता सरकार को बदल सकती है और नई सरकार का गठन कर सकती है। मत देने या वोट देने के अधिकार को मताधिकार कहते हैं।

कोई भी व्यक्ति जिसका नाम मतदाता सूची में हो और जो निर्धारित योग्यताएँ रखता हो, मतदान के लिए प्रत्याशी हो सकता है। सर्वप्रथम प्रत्याशी को एक निश्चित तिथि तक नामांकन-पत्र भरना होता है, फिर इसे निर्वाचन अधिकारी के पास जमा करना होता है। इसमें शर्त यह होती है कि उसका नाम मतदाताओं द्वारा ही प्रस्तुत तथा अनुमोदित होना चाहिए। नामांकन-पत्र की सक्षम अधिकारी के द्वारा जाँच की जाती है। उसके पश्चात् चुनाव अधिकारी के द्वारा प्रत्येक प्रत्याशी को एक चुनाव चिन्ह दिया जाता है।

उसके पश्चात् प्रत्याशी तथा उसके सहयोगियों के द्वारा चुनाव प्रचार आरम्भ किया जाता है। जिस दिन चुनाव होना होता है उसके 48 घण्टे पूर्व चुनाव प्रचार रोक देना होता है। जिस दिन चुनाव होता है, मतदाता वोट डालने मतदान-केन्द्र पर जाते हैं। वहाँ उनको मतपत्र दिये जाते हैं। इस मतपत्र पर सभी प्रत्याशियों के नाम और उनके चुनाव चिन्ह छपे होते हैं। मतदाता इच्छित नाम के आगे क्रास का चिन्ह लगा देता है और मतपत्र मतपेटी में डाल देता है। मत पेटियों को सील करके मतगणना के लिए भेज दिया जाता है। मतपत्रों की गणना करके चुनाव अधिकारी परिणाम की घोषणा का देता है।

—मताधिकार—आधुनिक काल में राज्य बड़े-बड़े और विस्तृत हैं। विशालता के कारण जनता प्रत्यक्ष रूप से शासन की कार्यवाहियों में भाग नहीं ले सकती है। अतः व्यवस्थापिका में वह अपने प्रतिनिधि चुनकर भेजती है। इस प्रकार वह कानून बनाने एवं शासन के कार्यों में भाग लेती है। प्रतिनिधियों का चयन 'वयस्क मताधिकार' के आधार पर होता है।

प्रश्न 2—वयस्क मताधिकार किसे कहते हैं? अधिकतर देशों ने इसे क्यों अपना रखा है?

उत्तर—वयस्क मताधिकार—आज विश्व के अधिकांश देशों में प्रतिनिध्यात्मक लोकतन्त्र प्रचलित है। जनता अपने प्रतिनिधियों को चुनकर सरकार में भेजती है। इस प्रकार अप्रत्यक्ष रूप से वह शासन में भाग लेती है। प्रतिनिधियों का निर्वाचन करते समय हमारे सामने सबसे बड़ा प्रश्न यह आता है प्रतिनिधि चुनने का अधिकार

सभी नागरिकों को मिलना चाहिए अथवा शिक्षा, सम्पत्ति धर्म, लिंग और वर्ग के आधार पर कुछ सीमित लोगों को ही अधिकार मिलना चाहिए।

कुछ विद्वानों का मत है कि मतदान का पद भी अन्य राजकीय पदों के समान ही महत्त्वपूर्ण है। अतः यह विशेष अधिकार भी विशेष क्षमता और योग्यता प्राप्त वयस्क नागरिकों को शिक्षा, सम्पत्ति, धर्म कुलीनता और लिंग भेद के आधार पर मिलना चाहिए। इस मताधिकार को सीमित मताधिकार कहते हैं। किन्तु जहाँ शिक्षा, सम्पत्ति, लिंग आदि के भेदभाव से रहित देश के सभी वयस्क नागरिकों को समान रूप से मताधिकार प्राप्त होता है उसे सार्वभौम वयस्क मताधिकार कहते हैं। भारत में वयस्क मताधिकार की आयु 18 वर्ष है।

सार्वभौम वयस्क मताधिकार के पक्ष में तर्क

सार्वभौम वयस्क मताधिकार के पक्ष में तर्क इस प्रकार दिये जा सकते हैं—

(1) **लोकतन्त्र के लिए आवश्यक**—लोकतन्त्र का अर्थ जनता का शासन है। देश की सम्पूर्ण जनता तभी शासन में भाग ले सकती है जब उसके सभी वयस्क नागरिकों को मत देने का अधिकार हो।

(2) **समानता के सिद्धान्त पर आधारित**—लोकतन्त्र, समानता, स्वतन्त्रता और बन्धुत्व की भावना पर आधारित होता है। समानता का अर्थ सभी नागरिकों को राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक समानता के समान अवसर उपलब्ध कराना है। यदि सब लोगों को मत देने का समान अधिकार नहीं होगा तो राजनीतिक समानता खोखली होगी।

(3) **समाज के सभी वर्गों के हितों की रक्षा**—वयस्क मताधिकार समाज के सभी वर्गों के हितों की रक्षा करता है। इसमें सभी वर्गों को समान रूप से अपना प्रतिनिधि चुनने का अधिकार होता है।

(4) **लोकप्रिय सम्प्रभुता पर आधारित**—राज्य की सम्प्रभुता का मूल स्रोत देश की सम्पूर्ण जनता होती है। जब सभी वयस्क मत देकर अपना प्रतिनिधि चुनते हैं तो लोकप्रिय तथा सार्वजनिक सम्प्रभुता की अभिव्यक्ति होती है।

(5) **अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा**—अल्पसंख्यकों द्वारा चुने गये प्रतिनिधि व्यवस्थापिका में उनकी समस्याओं को रखते हैं। वे लोकमत तैयार कर कानून बनवाते और अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा करते हैं।

(6) **राजनीतिक जागरूकता का विकास**—देश के जब सभी वयस्कों को अपना मत देने और स्वयं निर्वाचित होने का अधिकार प्राप्त होता है तो उनमें राजनीतिक चेतना का विकास होता है।

(7) **व्यक्तित्व के गौरव और महत्त्व की स्वीकृति**—सभी वयस्कों को मताधिकार प्राप्त होने से इसमें व्यक्ति ही मत देता है और व्यक्ति ही चुना जाता है। बड़े से बड़ा व्यक्ति आकर छोटे से छोटे व्यक्ति से वोट माँगता है। अतः शिक्षा, सम्पत्ति और धर्म आदि की बाधाओं को हटाकर चुनावों में व्यक्ति के गौरव और उसके महत्व की स्वीकृति होती है।

(8) **प्रतिनिधित्व के बिना करों का लगाना अनुचित**—चूंकि शासन द्वारा प्रत्येक व्यक्ति से कर वसूल किया जाता है, अतः लोकतन्त्र का यह आधारभूत सिद्धान्त

है कि शासन में भाग लेने का प्रत्येक नागरिक को अधिकार हो। यह तभी सम्भव है जब नागरिकों को सार्वभौम मताधिकार प्राप्त हो।

प्रश्न 3—राजनीतिक दल किसे कहते हैं ? इसके प्रमुख कार्य क्या हैं ?

उत्तर—राजनीतिक दल—लोकतन्त्र में राजनीतिक दलों का विशेष महत्त्व होता है। इसके बिना लोकतन्त्र शासन व्यवस्था सफल नहीं हो सकती। राजनैतिक दल नागरिकों का एक संगठित समुदाय होता है। इसका एक निश्चित संविधान होता है। इसके नियमों का पालन करना और दलीय अनुशासन में रहना प्रत्येक सदस्य के लिए आवश्यक होता है। दल के प्रत्येक सदस्य को कुछ निश्चित आधार-भूत सिद्धान्तों और नीतियों पर एकमत होना पड़ता है। प्रत्येक राजनैतिक दल अपने समान उद्देश्यों और सिद्धान्तों को व्यावहारिक रूप प्रदान करने तथा उनको प्राप्त करने के लिए वैधानिक साधन अपनाकर शासन प्राप्त करना चाहता है। राजनीतिक दल का उद्देश्य समाज के प्रत्येक वर्ग, दल और समुदाय की उन्नति करते हुए सम्पूर्ण सामाजिक जीवन को उन्नत बनाना तथा लोकहित की अभिवृद्धि करना है। अतः राजनीतिक दल के सिद्धान्त लोकहित पर आधारित होते हैं।

लोकतन्त्र को सफल बनाने के लिए प्रत्येक राजनीतिक दल यदि अपना रचनात्मक योगदान देता है तो दलीय पद्धति आदर्श बन सकती है। दलीय पद्धति में दल अपने सदस्यों पर कठोर अनुशासन रखते हैं। वे संसद के बाहर भी प्रत्येक दल की उचित अथवा अनुचित नीतियों का समर्थन करते हैं। यदि पवित्रता, सत्यता, ईमानदारी और राष्ट्र हित के नाम पर कोई सदस्य अपनी स्वतन्त्र राय प्रकट करता है तो उसे दल के बाहर निकाल दिया जाता है। इस प्रकार दलीय पद्धति में स्वतन्त्रता का हनन होता है।

राजनीतिक दल लोकतन्त्र के सफल संचालन के लिए आवश्यक है। आज संसार के सभी बड़े-बड़े देशों में प्रतिनिध्यात्मक लोकतन्त्र है। प्रत्येक दल व्यवस्थापिका के लिए चुनाव में अपने-अपने प्रत्याशी खड़ा करता है। निर्वाचन में जो दल बहुमत प्राप्त कर लेता है वही दल सरकार का निर्माण करता है। संसदात्मक शासन, प्रणाली में व्यवस्थापिका के बहुमत दल का नेता ही कार्यपालिका का नेता होता है। अतः कार्यपालिका तथा व्यवस्थापिका में घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित हो जाता है। उसमें कहीं भी गत्यावरोध उत्पन्न नहीं होता। दलीय लोकतन्त्रात्मक शासन व्यवस्था में दल अनिवार्य होता है। कोई भी लोकतन्त्र बिना उसके नहीं चल सकता। आज तक कोई भी व्यक्ति यह सिद्ध नहीं कर सका कि प्रतिनिध्यात्मक शासन उसके बिना कैसे चल सकता है।

प्रश्न 4—विरोधी दल की संज्ञा किसे दी जाती है ? प्रजातन्त्र में विरोधी दल की भूमिका पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—राजनीतिक दल को लोकतन्त्र का मेरुदण्ड कहा जाता है। वास्तव में दलबन्दी प्रथा ही लोकतन्त्र का प्राण तत्व है। इसका महत्व शासन के चौथे अंग के रूप में स्वीकार किया जाता है। जब कोई राजनीतिक दल सदन में बहुमत प्राप्त नहीं कर पाता तो वह विरोधी दल के रूप में सरकार की स्वस्थ आलोचना कर उसकी स्वेच्छाचारिता तथा निरंकुशता पर अंकुश लगाता है। लोकतन्त्र में स्वस्थ विरोधी दल की भूमिका भी अत्यन्त महत्वपूर्ण मानी जाती है। वे अपनी ही टीका टिप्पणियों के द्वारा विभिन्न सार्वजनिक विषयों तथा राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय महत्व की समस्याओं

से जनता को अवगत कराते हैं और जनमत का निर्माण करते हैं। दलों में जो सबसे बड़ा दल होता है वह विरोधी दल की भूमिका अदा करता है। व्यवस्थापिका में किसी मुद्दे पर यदि सरकार हार जाती है तो विकल्प की सरकार बनाने के लिए विरोधी दल की नितान्त आवश्यकता होती है। विरोधी दल शासन को सन्तुलित रखते हैं। विरोधी दल सरकार की नीतियों की आलोचना करते हैं। इस प्रकार विरोधी दल के वक्तव्यों, भाषणों तथा टीका-टिप्पणी से जनता में लोकमत का निर्माण होता है। यदि सरकार दलगत स्वार्थों से प्रेरित होकर कोई ऐसा कानून बनाना चाहती है जो लोकहित में नहीं है तो विरोधी दल व्यवस्थापिका के अन्दर उसका विरोध करते हैं। वे जनता को उसके दोषों से अवगत कराते हैं और विधेयक विरोधी लोकमत तैयार करते हैं। इस प्रकार सरकार को लोक विरोधी विधेयक पारित कराने का मोह छोड़ देना पड़ता है। बहुमत दल की सरकार यदि कभी व्यक्ति स्वातंत्र्य तथा नागरिकों के मौलिक अधिकारों पर कुठाराघात कर तानाशाही सरकार स्थापित करना चाहती है तो विरोधी दल संगठित होकर उसका विरोध करते हैं और लोकमत तैयार करके अधिनायकवादी शक्तियों को समाप्त कर देते हैं।

विरोधी दल जनता में राजनीतिक चेतना जाग्रत करने और उसका विकास करने का श्रेष्ठ साधन है। वे अपने भाषणों, सभा सम्मेलनों तथा समाचार पत्रों के द्वारा राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक समस्याओं तथा घटनाओं की जानकारी जनता तक पहुँचाते हैं। वे राजनीति में जनता की रुचि उत्पन्न करते हैं और उसे अपने अधिकारों तथा कर्त्तव्यों के प्रति जागरूक बनाते हैं। विरोधी दल की दो प्रमुख भूमिकाएँ होती हैं—

(1) **सदन में विरोध**—विरोधी दल प्रश्न पूछकर, कामरोको प्रस्ताव या अविश्वास का प्रस्ताव रखकर सरकार को सतर्क रखते हैं।

(2) **सदन के बाहर विरोध**—विपक्षी दल सभाओं के द्वारा, जुलूस के द्वारा समाचार पत्रों तथा अन्य विधियों के द्वारा सत्ताधारी दल के विरुद्ध जनमत तैयार करते हैं। इसके अतिरिक्त सरकार के गलत कार्यों की आलोचना करके वे सरकार को सतर्क रखते हैं।

प्रश्न 5—विश्व की प्रमुख शासन प्रणालियों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—विश्व की शासन प्रणालियों के रूप निम्नलिखित हैं—

1. **राजतन्त्र**—राजतन्त्र में राजपद वंशानुगत होता है और राजसत्ता एक व्यक्ति के हाथ में होती है। सम्पूर्ण शासन एक केन्द्र विशेष से होता है। शासन की सुविधा के लिए स्थानीय और क्षेत्रीय इकाइयाँ केन्द्रीय शासन के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करती हैं।

2. **अधिनायक तन्त्र (तानाशाही)**—अधिनायक तन्त्र में शासन की सारी शक्ति एक ही व्यक्ति के हाथ में होती है। इस शासन प्रणाली में जब कोई व्यक्ति सैनिक शक्ति या अन्य प्रभाव से शासन की बागडोर अपने हाथ में सम्भाल लेता है, तब वह तानाशाह बनकर इच्छानुसार शासन चलाने लगता है। उसके आदेश का उल्लंघन किसी प्रकार स्वीकार नहीं होता। सामान्यतः वह जीवन पर्यन्त अपने पद पर बना रहता है।

3. **कुलीनतन्त्र**—कुलीनतन्त्र कुछ कुलीन व्यक्तियों द्वारा संचालित शासन होता है। कुलीन व्यक्तियों से अभिप्राय उन व्यक्तियों से है जो वंश, विद्या, धन, बुद्धि

सैन्यशक्ति में साधारण लोगों से श्रेष्ठ हों। प्राचीनकाल में यह शासन प्रणाली बहुत लोकप्रिय थी।

4. **जनतन्त्र (लोकतन्त्र)**—जनतन्त्र का अर्थ है जनता का शासन। जनतन्त्र में शासन जनता द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधि द्वारा जनता के हित में शासन संचालित किया जाता है। वास्तव में जनतन्त्र (प्रजातन्त्र) शासन व्यवस्था एक लोक कल्याणी और जनता की इच्छानुकूल चलने वाली शासन प्रणाली है। प्रजातन्त्र में निम्न शासन-प्रणाली प्रचलित हैं—

(i) **संसदात्मक शासन प्रणाली**—इस प्रणाली में शासन का कार्य संसद द्वारा सम्पादित होता है। इस प्रणाली में कार्यपालिका को व्यवस्थापिका के नियन्त्रण में रहकर कार्य करना पड़ता है। कार्यपालिका की शक्ति का प्रयोग मन्त्रिमण्डल करता है, परन्तु व्यवस्थापिका का उस पर पूर्ण नियन्त्रण रहता है।

(ii) **अध्यक्षात्मक शासन प्रणाली**—इस प्रणाली में राज्य का प्रधान वास्तविक प्रधान होता है जिसका निर्वाचन जनता द्वारा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से किया जाता है। इसमें शासन कार्य मन्त्रिमण्डल द्वारा संचालित होता है, किन्तु कार्यपालिका व्यवस्थापिका के प्रति उत्तरदायी न होकर राज्य के प्रधान राष्ट्रपति के प्रति उत्तरदायी होती है।

(iii) **एकात्मक शासन प्रणाली**—इस शासन प्रणाली में शासन की सम्पूर्ण शक्तियाँ एक केन्द्रीय सरकार में निहित होती हैं। इसमें स्थानीय व प्रान्तीय सरकारें केन्द्रीय सरकार के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करती हैं।

(iv) **संघात्मक शासन प्रणाली**—इस शासन प्रणाली में दोहरी शासन-व्यवस्था होती है। शासन की शक्तियाँ केन्द्रीय और प्रान्तीय सरकारों के बीच संविदा द्वारा बँटी होती हैं। दोनों सरकारें अपने-अपने क्षेत्रों में स्वतन्त्र रूप से शासन करती हैं। यदि किसी विषय पर मतभेद हो जाता है तो स्वतन्त्र न्यायपालिका उसका निर्णय करती है जिसका निर्णय दोनों को मान्य होता है।

बहु-विकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1—भारत में मतदाता की न्यूनतम आयु है—

(क) 21 वर्ष (ख) 18 वर्ष
(ग) 20 वर्ष (घ) 19 वर्ष।

उत्तर—(ख) 18 वर्ष।

प्रश्न 2—भारत में कौन-सी शासन-प्रणाली प्रचलित है?

(क) अध्यक्षात्मक। (ख) एकात्मक।
(ग) संसदात्मक। (घ) कुलीन तन्त्र।

उत्तर—(ग) संसदात्मक।

प्रश्न 3—विधेयकों की आलोचना की जाती है—

(क) सरकार के द्वारा (ख) विरोधी दलों के द्वारा
(ग) जनता के द्वारा (घ) किसी के भी द्वारा नहीं।

उत्तर—(ख) विरोधी दलों के द्वारा।

□

13 राष्ट्रीय एकता

अति लघुउत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—हमारे राष्ट्रीय ध्वज में कौन-कौन से रंग हैं ? (1987, 88)

उत्तर—हमारे राष्ट्रीय ध्वज में केसरिया सफेद और हरा रंग है।

प्रश्न 2—राष्ट्रगान के रचयिता कौन हैं ? (1986, 90)

उत्तर—राष्ट्रगान के रचयिता रवीन्द्रनाथ टैगोर है।

प्रश्न 3—हमारे राष्ट्रीय त्योहार कौन-कौन हैं ? (1985, 88)

उत्तर—स्वतन्त्रता दिवस (15 अगस्त) और गणतन्त्र दिवस (26 जनवरी) हमारे राष्ट्रीय त्योहार हैं।

प्रश्न 4—हमारे राष्ट्रीय चिह्न के शीर्ष भाग के नीचे देवनागरी लिपि में क्या लिखा है ?

उत्तर—राष्ट्रीय चिन्ह में शीर्ष के नीचे देवनागरी लिपि में 'सत्यमेव जयते' लिखा है।

परीक्षा में पूछे गये अति लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 5—हमारे राष्ट्र ध्वज के रंग किन भावनाओं के प्रतीक हैं ? (1991)

उत्तर—हमारे राष्ट्र ध्वज का केसरिया रंग शौर्य और त्याग, श्वेत रंग सत्य और पवित्रता तथा हरा रंग शान्ति और समृद्धि का प्रतीक है।

प्रश्न 6– हमारे देश की राष्ट्रभाषा कौन-सी है ? (1989)

उत्तर—हमारे देश की राष्ट्रभाषा हिन्दी है।

प्रश्न 7—हमारे देश में कितनी प्रान्तीय भाषाएँ हैं ? (1990)

उत्तर—हमारे देश में 14 प्रान्तीय भाषाएँ हैं।

प्रश्न 8—हमारा राष्ट्रीय चिन्ह किन-किन वस्तुओं पर देखा जा सकता है ? (1989)

उत्तर—हमारा राष्ट्रीय चिन्ह नोटों, सिक्कों, सरकारी पुस्तकों और सरकारी प्रपत्रों पर देखा जा सकता है।

प्रश्न 9—भारत की राष्ट्रीय एकता के मार्ग में जो तत्व बाधक हैं, उनमें से एक का उल्लेख कीजिए। (1984)

उत्तर—भारत की राष्ट्रीय एकता के मार्ग में बाधक एक तत्व 'साम्प्रदायिकता' है।

प्रश्न 10—भारत की राष्ट्रीय एकता के विकास में सहायक तत्वों में से किसी एक का नाम लिखिए। (1985)

उत्तर—भारत की राष्ट्रीय एकता के विकास में सहायक तत्व 'इकहरी नागरिकता' है।

लघुउत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—भावात्मक एकता का क्या अर्थ है ?

उत्तर—पं० नेहरू के अनुसार, 'भावात्मक एकता से मेरा आशय अपने मस्तिष्कों तथा हृदयों को एक करने तथा पृथकता की भावना को समाप्त करने से है।

के० जी० सैयदैन के अनुसार, "भावात्मक एकता का अर्थ विभिन्नताओं को समाप्त करना नहीं है। इसका अर्थ है—राष्ट्रीय एकता तथा मौलिक निष्ठाओं को ध्यान में रखते हुए व्यक्तियों को विभिन्न होने तथा अपनी विभिन्नताओं को सतर्कता तथा निर्धनता से अभिव्यक्त करने का अधिकार है।"

प्रश्न 2—राष्ट्रीय एकता के विकास में कौन-कौन से तत्व सहायक हैं ? *(1986)*

उत्तर—राष्ट्रीय एकता के विकास में सहायक तत्व—राष्ट्रीय एकता के विकास में निम्नलिखित तत्व सहायक होते हैं—

(1) नागरिकता, (2) संविधान द्वारा मान्य भाषाएँ,
(3) राष्ट्रभाषा, (4) राष्ट्रीय प्रतीक,
(5) राष्ट्रीय त्यौहार (6) सामाजिक समानता।

प्रश्न 3—धार्मिक सहिष्णुता का क्या अर्थ है ?

उत्तर—हमारे देश में सभी धर्मों के प्रति समभाव को धर्म माना गया है। वह धर्म जो अन्य धर्मों को बुरा बताता है, अधर्म कहलाता है। धर्म की कट्टरता ने धर्म की इस मौलिक विशेषता को ही समाप्त कर दिया है, इस प्रकार धार्मिक सहिष्णुता का अर्थ सभी धर्मों के प्रति समभाव रखना है। सर्व धर्म समभाव की इस व्यवस्था ने धार्मिक सहिष्णुता के विकास में सहयोग दिया है। धार्मिक सहिष्णुता ने हमारी धार्मिक एकता को बल प्रदान किया है।

प्रश्न 4—राष्ट्रीय प्रतीक क्या हैं ?

उत्तर—राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रगान और राष्ट्रीय चिन्ह हमारे राष्ट्र के प्रमुख प्रतीक हैं। ये प्रतीक हमारे राष्ट्र की एकरूपता को प्रदर्शित करते हैं। इनसे सम्पूर्ण राष्ट्र की जनता अपने को जुड़ा समझती है।

परीक्षा में पूछे गये तथा अन्य लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 5—राष्ट्रीय एकता हमारे देश के लिए क्यों आवश्यक है ? (1985)

उत्तर—राष्ट्रीय एकता एक भावना है। यह भावना इस बात का संकेत करती हैं कि एक राष्ट्र के निवासी परस्पर एक-दूसरे से राष्ट्र के नागरिक होने के नाते सद्भावना रखते हैं। अतः राष्ट्रीय एकता राष्ट्र के नागरिकों का एकीकरण होना है।

राष्ट्र की एकता बनाये रखना प्रत्येक नागरिक का परम कर्त्तव्य है, किन्तु हम देखते हैं कि नयी स्वतन्त्रता प्राप्त करने वाले देशों को जिस समस्या का सामना करना पड़ता है वह राष्ट्रीय एकता है। जब राष्ट्रीय एकता टूटती है तो राष्ट्र टूट जाता है। विदेशी शक्तियों ने भारत पर हमला किया; देश की सम्पत्ति को

लूटा, शासन किया, शोषण किया और हमें दास बनाया। इसका कारण हमारे देश में राष्ट्रीयता का अभाव रहा। जब पुनः राष्ट्रीय चेतना लौटी, हम एक हुए। इसी एकता ने हमें आजादी दी और हमारा सम्मान बढ़ाया। आज दुनिया में हमारा गौरवपूर्ण स्थान है। अतः राष्ट्रीय एकता राष्ट्र की प्राणदायिनी शक्ति है और भारत जैसे विकासशील राष्ट्र के लिए इसकी आवश्यकता स्वयं सिद्ध है। अतः राष्ट्र की प्रगति के लिए राष्ट्र की एकता परमावश्यक है। जनतन्त्र की सफलता के लिए भी राष्ट्रीय एकता एक मंगलमय वरदान सिद्ध हो सकती है।

प्रश्न 6—हमारे देश में राष्ट्रीय एकता को विकसित करने वाले तत्वों में से किन्हीं दो का उल्लेख कीजिए। (1986)

अथवा

भारतीय संविधान में राष्ट्रीय एकता के विकास की अनेक व्यवस्थाएं हैं। उनमें से दो व्यवस्थाएँ लिखिए। (1984)

उत्तर—भारतीय संविधान में राष्ट्रीय एकता में विकास और पोषण के लिए अनेक व्यवस्थाएँ हैं जिनमें नागरिकता, एक राष्ट्र भाषा, राष्ट्रीय प्रतीक, राष्ट्रीय त्यौहार सामाजिक समानताएँ आदि हैं। यहाँ हम दो का विवरण प्रस्तुत करते हैं—

(1) **नागरिकता**—राष्ट्रीयता के विकास में नागरिकता बहुत सहायक होती है। नागरिकता एक वैधानिक स्थिति है जो व्यक्ति को राज्य से जोड़ती है और राज्य द्वारा दिये गये सामाजिक तथा राजनैतिक अधिकारों के उपभोग तथा उसके बदले में राज्य के प्रति कर्त्तव्यों के पालन का विश्वास दिलाती है। इस प्रकार नागरिकता नागरिकों में राज्य के प्रति अपनेपन का भाव जाग्रत करती है जिससे नागरिक राज्य के उत्थान में अपना उत्थान और उसके पतन में अपना पतन मानते हैं। इस प्रकार नागरिकता देश के. नागरिकों में अपनेपन की यही भावना जगाकर राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ बनाती है। हमारे देश के संविधान में इकहरी नागरिकता की व्यवस्था है। इस इकहरी नागरिकता ने हमारी राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ बनाने में सहयोग दिया है।

(2) **सामाजिक समानता**—सामाजिक समानता राष्ट्रीय एकता का कुंजी है। छूआछूत, अमीर-गरीब, शिक्षित-अशिक्षित जैसी सामाजिक विषमताएँ विभिन्न वर्गों में दूरी बढ़ाती है। कभी-कभी ये दूरी उग्र रूप धारण कर लेती है। इस विषमता को दूर करने के लिए शिक्षा प्रसार, जातिवाद और छूआछूत का अन्त, श्रमिकों में उद्योग की साझेदारी, ग्रामीणों का विकास, कृषि की उन्नति, जन-जाति के कल्याण के लिए कार्य करने के उपाय करने चाहिए जिससे राष्ट्रीय एकता सुदृढ़ हो सकती है।

प्रश्न 7—अपने देश की राष्ट्रीय एकता को विघटित करने वाले चार तत्वों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए। (1988)

उत्तर—भारत एक विकासशील देश है। यहाँ राष्ट्रीय एकता की बहुत आवश्यकता है। दुर्भाग्य है कि लाख प्रयत्न करने पर भी भारत में राष्ट्रीय एकता स्थापित नहीं हो रही है। इस राष्ट्रीय एकता के बाधक तत्व निम्न हैं—

(1) **साम्प्रदायिकता**—भारत में अनेक सम्प्रदायों में विभाजित है और इसी साम्प्रदायिकता के विष से भारत का विभाजन हुआ। आज साम्प्रदायिकता के

कारण आये-दिन दंगे-फसाद होते हैं, जिसके फलस्वरूप कटुता और संघर्ष का वातावरण रहता है। कभी-भी साम्प्रदायिक संघर्षों में जन-जीवन अस्त व्यस्त हो जाता है। अतः साम्प्रदायिकता राष्ट्रीय एकता को विघटित करती है।

(2) **भाषावाद**—हमारे देश में अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं। भाषा के आधार पर नये प्रान्तों के निर्माण का नारा बुलन्द किया जाता है जिसके कारण सीमा-विवाद उत्पन्न हो जाते हैं। ये भाषा विवाद विभिन्न राज्य में परस्पर एकता को उत्पन्न नहीं होने देते। इस प्रकार भाषावाद भी राष्ट्रीय एकता के मार्ग में एक बाधक तत्व है।

(3) **जातिवाद**—भारत में अनेक जातियाँ और उपजातियाँ हैं। इसलिए यहाँ जातिवाद का बोलवाला है। लोग केवल अपनी जाति के हितों का ही ध्यान में रखते हैं। अन्य जातियों के हितों पर ध्यान नहीं दिया जाता। चुनाव का आधार भी जातिवाद ही होता है और चुनाव में विजयी होने वाला व्यक्ति जातिगत भेद-भाव से बँधा रहता है। इस प्रकार जातिवाद हमारी राष्ट्रीय एकता का सबसे बड़ा शत्रु है।

(4) **क्षेत्रीयता की भावना**—भारत में भूगोल, भाषा, संस्कृति आदि की विभिन्नता है। इसी विभिन्नता के आधार पर विभिन्न क्षेत्र हैं। अपने क्षेत्र के प्रति निष्ठा और दूसरे क्षेत्रों के प्रति घृणा ही क्षेत्रीयता का एक प्रमुख उदाहरण है। देश के लोग भारतीय न रहकर पंजाबी, गुजराती, बंगाली, बिहारी आदि वर्गों में बँट जाते हैं जिससे उनमें ईर्ष्या-द्वेष बढ़ता है जिसके फलस्वरूप राष्ट्रीय एकता विघटित होती है। अतः क्षेत्रीयता की भावना राष्ट्रीय एकता का बाधक तत्व है।

प्रश्न 8 – भारत का राष्ट्रीय चिन्ह क्या है तथा यह कहाँ से लिया गया है ?

उत्तर—भारत का राष्ट्रीय चिन्ह—भारत का राष्ट्रीय चिन्ह सारनाथ में अशोक स्तम्भ के शीर्ष की नकल है। मूल अशोक स्तम्भ में चार सिंह है जो एक दूसरे की ओर पीठ किये खड़े हैं। भारत सरकार ने ये चिन्ह 26 जनवरी, 1950 को स्वीकार किया था। राष्ट्रीय चिन्ह के चित्र में केवल 3 सिंह ही दिखलायी पड़ते हैं। चौथा सिंह पीछे आड़ में आ गया है। चिन्ह के नीचे पट्टी पर बीच में चक्र तथा बाँयी ओर एक घोड़ा तथा दाँयी ओर एक बैल है। राष्ट्रीय चिन्ह के नीचे देव नागरीलिपि में मुण्डक उपनिषद् का एक उद्धरण "सत्यमेव जयते" लिखा हुआ। इसका अर्थ है—केवल सत्य की विजय होती है। इस चिन्ह में बने सिंह अशोक की वीरता तथा महानता के सूचक हैं। चक्र इस बात का प्रतीक है कि हमारा राष्ट्र शक्ति चाहता है। चिन्ह पर अंकित सत्यमेव जयते यह बतलाता है कि हम सत्य को सर्वाधिक महत्व देते हैं। इसलिए इस मूर्ति को राष्ट्रीय चिन्ह माना जाता है। यह राष्ट्रीय चिन्ह हमारी राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है।

प्रश्न 9—स्वतन्त्रता दिवस और गणतन्त्र दिवस भिन्न-भिन्न तिथियों पर क्यों मनाये जाते हैं ?

उत्तर—स्वतन्त्रता दिवस और गणतन्त्र दिवस—ये दोनों दिवस स्वतन्त्र भारत के अत्यन्त महत्वपूर्ण राष्ट्रीय त्यौहार हैं। यह त्योहार देश में राष्ट्रीय एवं भावात्मक एकता को स्थापित करने में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करते हैं। इन दोनों

राष्ट्रीय त्योहारों को सभी वर्गों तथा जातियों एवं सम्प्रदाय के लोग बिना किसी भेद-भाव के मनाते हैं। इन राष्ट्रीय त्योहारों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

(1) **स्वतन्त्रता दिवस 15 अगस्त, 1947 ई०**—भारत 15 अगस्त, 1947 को अँग्रेजों के प्रभुत्व से मुक्त हुआ था। यह दिन भारतीय इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अंकित है। इसी दिन शताब्दियों की पराधीनता के बाद भारत वर्ष ने स्वतन्त्र वातावरण में साँस ली थी। इसलिए इस दिन का ऐतिहासिक महत्व है।

(2) **गणतन्त्र दिवस 26 जनवरी, 1950 ई०**—26 जनवरी, 1950 का भारत के राजनीतिक इतिहास में विशेष महत्व है। इस दिन भारत में नवीन संविधान लागू किया गया था जिसके अन्तर्गत इसी दिन से भारत एक सम्पूर्ण प्रभुतासम्पन्न लोकतन्त्रात्मक गणराज्य घोषित हुआ। इस कारण भारत के इतिहास में इस दिन का विशेष महत्व है।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—"वसुधैव कुटुम्बकम्" की संकल्पना पर एक संक्षिप्त निबन्ध लिखिए।

उत्तर—वसुधैव कुटुम्बकम् की संकल्पना—यदि हम सम्पूर्ण विश्व को अपना कुटुम्ब (परिवार) मानें, पृथ्वी के समस्त निवासियों को अपना भाई मानें तो विश्व में शान्ति की स्थापना करना कितना सरल होगा। भारत एक विशाल देश है। विभिन्न प्रकार की जलवायु ने इसको प्रायद्वीप नाम दिया है। हमारे यहाँ अनेक प्रजातियों के लोग रहते हैं। परन्तु वे आपस में भाई-चारा से रहते हैं। राष्ट्रीय एकता एक विचार है। भारत अनेक राज्यों में विभाजित है। यहाँ पर विभिन्न भाषाएँ बोली जाती हैं। प्रत्येक राज्य का निवासी अपने राज्य के विषय में संवेगात्मक अनुभूति रखता है।

धार्मिक सहिष्णुता—भारत जैसे विविधता के देश में सदैव से बुनियादी एकता रही है। भारत में अनेक धर्मों के अनुयायी रहते हैं। उनकी पूजा करने के ढंग पृथक् हैं। उनके उपासना गृह भी भिन्न-भिन्न हैं, परन्तु यहाँ की यह अनूठी विशेषता है कि यहाँ धार्मिक सहिष्णुता है। हिन्दुओं को वेदों, उपनिषदों, गीता और रामायण के प्रति अगाध भक्ति है। इसी प्रकार अन्य धर्म के अनुयायी भी जैसे—बौद्ध, जैन, सिक्ख, ईसाई तथा मुसलमान भी अपने धर्म के प्रति अगाध विश्वास रखते हैं। उनके अनेक धार्मिक विश्वास हिन्दुओं के विश्वासों के समान हैं। वेदान्त दर्शन सूफी मत के सिद्धान्तों के समान हैं। मुसलमान भी भगवान् की अराधना करते हैं। ईसाई लोग भगवान् की पूजा अपनी तरह से करते हैं। भगवान् में सभी विश्वास रखते हैं। सभी धर्म समान रूप से कुछ सिद्धान्तों का प्रतिपादन करते हैं। सत्य और अहिंसा पर सभी विश्वास करते हैं। ईमानदारी सभी धर्मों में अच्छी मानी जाती है। भारत में हिन्दू, मुसलमान, जैन, बौद्ध, ईसाई तथा सिक्ख इतने दिनों से साथ-साथ रह रहे हैं कि वे एक समान दिखाई देते हैं। सभी धर्म एक 'शक्ति' पर विश्वास रखते हैं। सभी धर्म दया, परोपकार, उदारता तथा सहिष्णुता पर बल देते हैं। भारत के दो महाकाव्य—रामायण तथा महाभारत देश के कोने-कोने में पढ़े जाते हैं। भारत का प्रत्येक हिन्दू तीर्थ स्थानों पर विश्वास करता है। सभी धर्म दूसरे धर्मों के प्रति सहिष्णुता रखते हैं। यह धार्मिक सहिष्णुता राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है।

शान्ति की नीति—भारत ने सदैव विश्व-शान्ति स्थापित करने में अपना सहयोग प्रदान किया है। प्राचीन समय में अशोक महान् ने विश्व-शान्ति के लिए विशेष प्रयास किया। सम्राट अशोक ने अहिंसा तथा शान्ति का संदेश दूर-दूर देशों में प्रसारित किया। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने विश्व को प्रेम, सहयोग और अहिंसा का पाठ पढ़ाया।

विश्व-शान्ति में भारत का योगदान—भारत ने विश्व बन्धुत्व तथा अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना बढ़ाने में सदैव विश्वास रखा है। इसी कारण भारत ने प्रेम और अहिंसा का मार्ग अपनाया। इसी कारण भारत किसी गुट में सम्मिलित नहीं हुआ। विश्व के सभी राष्ट्रों ने भारत की तटस्थता की नीति की प्रशंसा की है। भारत ने विश्व-शान्ति का समर्थन किया है और उसके लिए प्रयत्नशील रहा है।

भारत की संयुक्त राष्ट्र संघ में पूर्ण आस्था है, परन्तु भारत किसी गुट में सम्मिलित नहीं है। भारत के प्रयासों से इण्डोनेशिया को स्वाधीनता प्राप्त हुई। उसने कांगो की स्वतन्त्रता को सुरक्षित रखने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। पं० जवाहरलाल नेहरू ने विश्व जनमत को शान्ति और प्रेम की ओर अग्रसर करने के उद्देश्यों से विदेशों की मैत्रीपूर्ण यात्राएँ की थीं।

भारत को पंचशील में पूर्ण विश्वास है।

प्रश्न 2 राष्ट्रीय एकता का अर्थ स्पष्ट करते हुए भारत में राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—राष्ट्रीय एकता का अर्थ—राष्ट्रीय एकता एक भावना है। यह भावना इस ओर संकेत करती है कि एक राष्ट्र के निवासी परस्पर एक दूसरे से एक राष्ट्र के नागरिक होने के नाते सद्भावना रखते हैं। वे राष्ट्र की उन्नति तथा रक्षा के लिए परस्पर मिल-जुलकर सक्रिय रहते हैं। उनमें एकीकरण होता है। एकीकरण की प्रक्रिया सदस्यों के परस्पर सम्बन्धों को व्यक्त करती है।

राष्ट्रीय एकता की परिभाषा—राष्ट्रीय एकता की कुछ परिभाषाएँ इस प्रकार हैं—

(1) **जे० एस० वेदी**—"राष्ट्रीय एकता" से आशय है—देश के विभिन्न राज्यों के नागरिकों को आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और भाषा सम्बन्धी विभिन्नताओं को उचित सीमा के अन्दर रखना और उनमें भारत की एकता को सम्मिलित करना।"

(2) **राष्ट्रीय एकता सम्मेलन**—राष्ट्रीय एकता की परिभाषा इस प्रकार है—"राष्ट्रीय एकता, एक मनोवैज्ञानिक तथा शैक्षिक प्रक्रिया है जिसके आधार पर व्यक्तियों के हृदय में एकता, संगठन एवं निकटता की भावना, सामान्य नागरिकता की भावना तथा राष्ट्र के प्रति प्रेम की भावना विकसित की जाती है।"

राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता

राष्ट्र की एकता बनाये रखना भारतवर्ष के लिए एक गम्भीर समस्या है केवल कुछ देशों को छोड़कर यह समस्या इतने जटिल रूप में किसी भी देश के सम्मुख नहीं है। राष्ट्रीय एकता एक ऐसी भावना है जो यह इंगित करती है कि एक देश के रहने वाले एक राष्ट्र के नागरिक होने के नाते आपस में मिल-जुल कर रहते हैं। वे देश की उन्नति, देश की सुरक्षा और देश के कल्याण के लिए सक्रिय रहते हैं। उन नागरिकों में एकीकरण होता है और देश-प्रेम का स्तर ऊँचा होता है। जो शक्तियाँ

राष्ट्र को एकता के सूत्र में बाँधती हैं, वे सब राष्ट्र के एकीकरण की शक्तियां होती हैं। इस प्रकार एकीकरण वह प्रक्रिया हुई जो विभिन्न भागों को मिलाकर एक सम्पूर्ण राष्ट्र बनाती है। अतएव एकीकरण राष्ट्र के संगठन की प्रक्रिया है।

डा० राधाकृष्णनन् का मत है—"राष्ट्रीय एकता एक ऐसी समस्या है जिससे सभ्य राष्ट्र के रूप में हमारे अस्तित्व का घनिष्ठ सम्बन्ध है।"

भारतवर्ष के इतिहास के पृष्ठ पलटने से हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि इस देश के दुर्भाग्य का एक बहुत बड़ा कारण यहाँ के निवासियों में राष्ट्रीय एकता की चेतना का अभाव है। कुछ थोड़े से विदेशी यहाँ आते हैं और वे यहाँ राज्य करने लगते हैं। यहाँ के लोग कभी भी एक होकर उनका सामना नहीं करते और वे धीरे-धीरे उनसे पराजित हो जाते हैं। इस प्रकार की प्रवृत्ति से यह स्पष्ट हो जाता है कि भारतीयों में राष्ट्रीय एकता की कमी है। किसी देश के निवासियों का राष्ट्र सर्वस्व है और राष्ट्रीय एकता एक मंगलमय वरदान है। इस समय भारत की जनसंख्या लगभग 84 करोड़ है। परन्तु उसमें राष्ट्रीय एकता का अभाव है। जनतन्त्र की सफलता के लिए आवश्यक है कि भारत में राष्ट्रीय एकता स्थापित की जाय।

प्रश्न 3—राष्ट्रीय एवं भावात्मक एकता के सहायक और बाधक तत्त्वों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—राष्ट्रीय एकता के बाधक तत्त्व, पं० नेहरू के अनुसार, 'भावात्मक एकता से मेरा आशय अपने मस्तिष्कों तथा हृदयों को एक करने तथा पृथकता की भावना को समाप्त करने से है।"

के० जी० सैयदैन के अनुसार "भावात्मक एकता का अर्थ विभिन्नताओं को समाप्त करना नहीं है। इसका अर्थ है—राष्ट्रीय एकता तथा मौलिक निष्ठाओं को ध्यान में रखते हुए व्यक्तियों को विभिन्न होने तथा अपनी विभिन्नताओं को सतर्कता तथा निर्भयता से अभिव्यक्ति करने का अधिकार है।"

राष्ट्रीय एकता को विघटित करने वाले तत्त्व—राष्ट्रीय एकात्मकता को विघटित करने वाले तत्त्व इस प्रकार हैं—

(1) क्षेत्रीयता की भावना—भारत सरकार की दुर्बल भाषा नीति ने क्षेत्रीयता की भावना का विकास किया है। देश में यह तो नारा लगाया जाता है कि हिन्दी राष्ट्रभाषा है, परन्तु इसे बहुत कम व्यावहारिक रूप दिया जाता है। हिन्दी के स्थान पर अँग्रेजी भाषा बोलने वालों का एक वर्ग बन गया है। यह वर्ग अपने बच्चों को अँग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में शिक्षा दिलाता है। इससे विपरीत देश के 98% बालक नगरपालिकाओं के विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करते हैं। विदेशी भाषा राष्ट्रीय विघटन की पृष्ठभूमि तैयार करती है। स्पष्ट है कि क्षेत्रीयता की भावना राष्ट्रीय एकात्मकता को विघटित करने वाला एक तत्त्व है।

(2) जातिवाद—हमारे देश में जातिवाद का बोलबाला है। जातिवाद देश की एकता में विशेष रूप से बाधक है। चुनाव का आधार जातिवाद होता है। एक चुनाव क्षेत्र में उसी प्रत्याशी की जीत होती है जिसकी जाति के सदस्यों की संख्या सबसे अधिक होती है। इस चुनाव में विजयी होने वाला व्यक्ति जातिगत भेदभाव से बँधा रहता है। इसी प्रकार विभिन्न विभागों में की जाने वाली नियुक्तियों में भी जातिवाद की प्रधानता रहती है। स्पष्ट है कि जातिवाद लोगों को एक नहीं होने देता।

(3) **साम्प्रदायवाद**—आज देश अनेक सम्प्रदायों में विभाजित है। उनमें सम्प्रदायवाद की भावना उग्र हो गयी है। साम्प्रदायिकता के आधार पर ही चुनाव लड़े जाते हैं। आये दिन साम्प्रदायिक दंगे-फसाद होते हैं। इसके परिणामस्वरूप कटुता और संघर्ष का वातावरण रहता है। ये सभी परिस्थितियाँ राष्ट्र के एकीकरण में अभाव होने के कारण होती हैं। स्पष्ट है कि सम्प्रदायवाद देश की जड़ें खोखली कर रहा है।

(4) **भाषावाद**—राष्ट्रीय एकीकरण के मार्ग में बाधा पहुँचाने वाला एक तत्व भाषावाद भी है। हमारे देश में अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं। भाषा के आधार पर नवीन प्रान्तों के निर्माण का नारा बुलन्द किया जाता रहा है। इसके कारण अनेक अन्तः सीमा वाद-विवाद उत्पन्न हो गये हैं। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है—हरियाणा का पंजाब से, आन्ध्र प्रदेश का उड़ीसा से तथा मैसूर का आन्ध्र प्रदेश से भाषा के आधार पर कतिपय क्षेत्र की माँग किया जाना। ये भाषा विवाद विभिन्न राज्यों में परस्पर एकता उत्पन्न नहीं होने देते हैं। इस प्रकार भाषावाद राष्ट्रीय एकीकरण के अभाव का कारण रहा है। भाषावाद ने राष्ट्रीय एकता को पीछे ढकेल दिया है।

(5) **आर्थिक असमानता**—हमारे देश में आर्थिक असमानता है। एक ओर अगाध सम्पत्ति दिखायी देती है तो दूसरी ओर निर्धनता का तांडव नृत्य होता है। जहाँ एक ओर गगनचूम्बी प्रसाद बने हुए हैं वहाँ दूसरी ओर टूटी झोंपड़ियों के भी दर्शन होते हैं। सरकार ने समाजवाद का नारा तो बुलन्द किया है, परन्तु इसे व्यावहारिक रूप बहुत कम दिया है। ऐसा आर्थिक असमानता का वातावरण राष्ट्रीय एकता उत्पन्न नहीं कर सकता है।

राष्ट्रीय एवं भावात्मक एकता के सहायक तत्त्व

राष्ट्रीय एवं भावात्मक एकता के सहायक तत्त्व इस प्रकार हैं—

(1) **नागरिकता**—डॉ० आर्शीवाद के अनुसार—"अच्छे चरित्र के अनुसार आचरण करना ही नागरिकता है।" इस कथन से नागरिकता का अभिप्राय नैतिक गुणों से प्रतीत होता है, यद्यपि नागरिकता किसी व्यक्ति (नागरिक) की विशेष स्थिति का नाम है। वास्तव में यह जीवन की वह उत्तम दशा है जो नागरिक को राज्य में समस्त राजनीतिक और सामाजिक अधिकारों के उपभोग की गारन्टी देती है। राज्य नागरिक के जीवन, स्वतन्त्रता, सम्पत्ति आदि की रक्षा करता है और नागरिक के व्यक्तित्व के विकास के अवसर प्रदान करता है, इस सबके बदले में वह कानूनों का पालन करता है, तथा राज्य के प्रति भक्ति रखता है। इस प्रकार नागरिकता एक वैधानिक सम्बन्ध है जो कि एक सदस्य के रूप में नागरिक को राज्य से बाँधता है। मनुष्य के उच्चतम विकास के लिए नागरिकता अनिवार्य है और यह तभी सम्भव है जब मनुष्य समाज में **आदान-प्रदान** करता है। नागरिकता प्राप्त होने पर ही कोई व्यक्ति नागरिक कहलाता है। यह एक प्रकार का **वैधानिक दर्जा है**, जिसमें हम राज्य से राजनीतिक और सामाजिक अधिकारों की गारन्टी पाते हैं और राज्य के प्रति निष्ठा और भक्ति व्यक्त करके अपनी वैधानिक स्थिति को स्थिर रखते हैं। जो व्यक्ति समय आने पर भक्ति का परिचय नहीं देता उसे देशद्रोही समझा जाता है और वह नागरिकता से बंचित कर दिया जाता है।

(2) **संविधान द्वारा मान्य भाषाएँ तथा राष्ट्र भाषा**—हिन्दी हमारी राष्ट्र-

भाषा है। प्रत्येक भारतीय को इसका सम्मान करना चाहिए। भारत में अनेक भाषायें बोली जाती हैं। हमारे संविधान ने 14 भाषाओं का उल्लेख किया है। इनके अतिरिक्त अँग्रेजी भी है। हिन्दी जैसी भाषा की अनेक उपभाषायें हैं। हम मातृभाषा बोलते हैं। मातृभाषा से प्रेम होना स्वाभाविक है। भाषा के आधार पर अनेक सीमा-विवाद उठ खड़े होते हैं। उदाहरण के लिए, हरियाणा ने पंजाब से और आन्ध्र ने उड़ीसा से भाषा के आधार पर कुछ क्षेत्रों की माँग की है। यह विवाद राज्यों में परस्पर एकता होने नहीं देते। अतएव राष्ट्र एकता की अपेक्षा विघटन की ओर बढ़ता जाता है। यदि भाषा के आधार पर राज्यों की माँग को स्वीकार कर लिया जाय तो देश के असंख्य छोटे-छोटे खण्ड हो जायेंगे।

(3) **राष्ट्रीय चिन्ह तथा राष्ट्रीय त्यौहार**—भारतीय जनता को अपने राष्ट्रीय चिन्हों से परिचित होना चाहिए। प्रत्येक को उनका आदर करना चाहिए। प्रत्येक नागरिक को राष्ट्रीय त्यौहारों में समान रूप से भाग लेना चाहिए। राष्ट्रीय त्यौहारों को एक साथ मिलकर मनाना चाहिए।

(4) **सामाजिक समानता**—आर्थिक विषमता को दूर किये बिना सामाजिक समानता नहीं लायी जा सकती। यदि समाज में सभी समान हैं, ऊँच-नीच, जाति-पाँति के आधार पर कोई भेद नहीं हैं तो राष्ट्रीय एकता स्थापित करने में सहायता मिलेगी। हमारे देश में आर्थिक असमानता है। कोई निर्धन है, तो कोई धनी। सरकार समाजवाद का नारा तो लगाती है परन्तु धनी और निर्धन के मध्य की खाई पाटने का कार्य नहीं करती। निर्धनता तथा असमानता राष्ट्रीय एकता के घोर शत्रु हैं। निर्धन व्यक्ति राष्ट्रीय एकता स्थापित करने से सहायता नहीं कर सकते। निर्धनता राष्ट्रीय जीवन में अभिशाप बन गई है। इसी प्रकार असमानता, विशेषकर आर्थिक असमानता देश की प्रगति के लिए बाधक हैं। असमानता रहते हुए राष्ट्रीय एकता की आशा नहीं की जा सकती। जनतान्त्रिक और आर्थिक व्यवस्था में परिवर्तन करके निर्धनता और असमानता को दूर किया जा सकता है। निर्धनता और असमानता को दूर करके राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा दिया जा सकता है।

बहु-विकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1—राष्ट्र गान किसने लिखा है—

(i) बंकिमचन्द्र चटर्जी (ii) रवीन्द्रनाथ टैगोर
(iii) मैथिलीशरण गुप्त (iv) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र।

उत्तर—(ii) रवीन्द्रनाथ टैगोर।

प्रश्न 2—राष्ट्र ध्वज का सफेद रंग प्रतीक है—

(i) सत्य और पवित्रता, (ii) जीवन, (iii) प्रेम, (iv) त्याग।

उत्तर—(i) सत्य और पवित्रता।

प्रश्न 3—संविधान में भाषाओं को राज्य भाषा की तरह स्वीकार किया गया है—

(i) 14, (ii) 24, (iii) 10, (iv) 20।

उत्तर—(i) 14।

14 राष्ट्रीय सुरक्षा तथा विदेश नीति

अति लघुउत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—भारत का क्षेत्रफल कितने वर्ग किलोमीटर है ?

उत्तर—भारत का क्षेत्रफल 32,87,782 वर्ग किलोमीटर है।

प्रश्न 2—भारत की उत्तरी सीमा पर कौन-कौन से देश स्थित हैं ?

उत्तर—भारत की उत्तरी सीमा पर चीन, नेपाल तथा भूटान हैं।

प्रश्न 3—भारत की सेना का सर्वोच्च अधिकारी कौन होता है ? (1985, 86)

उत्तर—भारत की सेना का सर्वोच्च अधिकारी भारत का राष्ट्रपति होता है।

प्रश्न 4—भारत के द्वारा छोड़े गये प्रथम भू-उपग्रह का नाम लिखिए। (1985, 87)

उत्तर—भारत के द्वारा छोड़े गये प्रथम भू-उपग्रह का नाम आर्यभट्ट है।

प्रश्न 5—भारत ने प्रथम अणु परीक्षण कब और कहाँ किया ?

उत्तर—भारत ने प्रथम अणु परीक्षण 8 मई, 1974 ई० को राजस्थान के पोखरन स्थान पर किया गया था।

परीक्षा में पूछे गये तथा अन्य अति लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 6—भारतीय सेना के कौन-कौन से अंग हैं ? (1989)

उत्तर—हमारी भारतीय सेना के तीन अंग हैं, 1. थल सेना, 2. वायु सेना, 3. नौ (जल) सेना।

प्रश्न 7—हमारी वायु सेना का मुख्यालय कहाँ है ? (1988)

उत्तर—हमारी वायु सेना का मुख्यालय दिल्ली में है।

प्रश्न 8—हमारी तीनों सेनाओं का मुख्यालय कहाँ है ?

उत्तर—हमारी तीनों सेनाओं का मुख्यालय दिल्ली में है।

प्रश्न 9—सन् 1984 में किस उद्देश्य से भारतीय सेना ने स्वर्णमन्दिर में प्रवेश किया था ? (1988)

उत्तर—सन् 1984 में भारतीय सेना ने उग्रवादी सिक्खों की खालिस्तान की माँग को कुचलने के लिए स्वर्ण मन्दिर में प्रवेश किया।

लघु उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—भारत के सीमावर्ती देशों के नाम बताइए।

उत्तर—भारत के सीमावर्ती देशों के नाम इस प्रकार हैं—

(1) श्रीलंका, (2) वर्मा, (3) नैपाल, (4) भूटान, (5) चीन, (6) बांगला देश, (7) पाकिस्तान, (8) अफगानिस्तान ।

प्रश्न 2—थल सेना की प्रमुख शाखाएँ बताइए ?

उत्तर—थल सेना की प्रमुख शाखाएँ इस प्रकार हैं—

(1) इनफैंटरी, (2) बख्तरबंद कोर,
(3) तोपखाना रेजिमेन्ट (4) इंजीनियर कोर,
(5) सिग्नल कोर, (6) आर्मी सेना कोर,
(7) आर्मी आर्डिनेंस कोर, (8) आर्मी मेडिकल कोर,
(9) आर्मी डेन्टल कोर, (10) इलैक्ट्रिकल और मैकेनिकल कोर,
(11) सेना शिक्षा कोर ।

प्रश्न 3—वायु सेना के मुख्य अधिकारियों के नाम बताइए ।

उत्तर—वायु सेना के मुख्य अधिकारी इस प्रकार हैं—

(1) वायु सेना अध्यक्ष, (2) सह सेना अध्यक्ष,
(3) उप सेना अध्यक्ष, (4) एअर ऑफीसर्स इंचार्ज,
(5) आफीसर इंचार्ज रख-रखाव ।

प्रश्न 4—भारत की सुरक्षा तैयारी की प्रमुख बातें लिखिए ।

उत्तर—भारत की सुरक्षा की तैयारी—भारत पर चीन के आक्रमण ने भारत को नींद से जगा दिया । भारत ने अपनी कमजोरी अनुभव की और उसने किसी भी स्थिति का सामना करने के लिए तैयारियाँ आरम्भ कर दीं । उसने अपनी सैन्य शक्ति को बढ़ाने का प्रयास किया । उसने सैन्य सामान के उत्पादन को भी बढ़ाने का निश्चय किया । भारत ने उत्तरी सीमा की सुरक्षा के लिए विशेष प्रयास किये । युद्ध से सम्बन्धित उत्पादन बढ़ाने के लिए भारत ने अनेक आरडेन्स फैक्टरियाँ खोलीं । पहाड़ी क्षेत्रों में लड़ने के लिए भारत ने अनेक यूनिटें स्थापित कीं ।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—भारत की सीमाओं का उल्लेख कीजिये ।

उत्तर—भारत की सीमाएँ—भारत एक बड़ा देश है । इसकी स्थिति संसार में अत्यन्त महत्वपूर्ण है । भारत 8° उत्तरी अक्षांश से लेकर 37° उत्तरी अक्षांश तक फैला है और 68° पूर्वी देशान्तर से 97° पूर्वी देशान्तर के मध्य फैला हुआ है। 80° पूर्वी देशान्तर रेखा तथा कर्क रेखा 23½° उत्तरी अक्षांश लगभग इसके मध्य से गुजरती है । इसके उत्तर में तिब्बत, पामीर का पठार, दक्षिण में प्रशान्त महासागर, पूर्व की ओर बर्मा तथा पश्चिम की ओर पाकिस्तान तथा अफगानिस्तान आदि देश हैं। उत्तरी भाग में अफगानिस्तान, चीन तथा पाकिस्तान की सीमाएँ मिलती हैं।

प्रश्न 2—भारत की सुरक्षा तैयारी पर एक संक्षिप्त निबन्ध लिखिए ।

उत्तर—सुरक्षा की समस्या—भारत के विस्तार को देखते हुए इसकी सुरक्षा की समस्या बनी रहती हैं । भारत पर चीन तथा पाकिस्तान समय-समय पर आक्रमण करते रहे हैं । इसी कारण भारत को एक सुदृढ़ सशक्त सेना रखनी होती है । हमारी सेनाएँ हमारी सीमाओं की रक्षा करने में सक्षम हैं, पाकिस्तान ने काश्मीर का कुछ भाग 1947 ई० में हड़प लिया । यद्यपि युद्ध विराम हो गया, परन्तु उसने काश्मीर का अधिकृत भाग नहीं छोड़ा । 1965 ई० में पाकिस्तान ने काश्मीर पर फिर आक्रमण

किया, परन्तु 23 सितम्बर को संयुक्त राष्ट्र संघ के हस्तक्षेप से फिर युद्ध विराम हो गया।

काश्मीर के मामले पर किसी समझौते पर पहुँचने के लिए 10 जनवरी, 1966 ई० को ताशकन्द समझौता हुआ। दोनों देशों के द्वारा विजय किये गये प्रदेश लौटाने का समझौता हुआ, परन्तु किसी भी देश के निवासियों ने इसे पसन्द नहीं किया।

3 सितम्बर, 1971 ई० को पाकिस्तान ने भारत पर फिर आक्रमण किया। पाकिस्तान ने भारत के अनेक नगरों पर आक्रमण किया। बांगला देश ने मुक्ति वाहिनी का संगठन किया जिसने पाकिस्तानी सेनाओं के साथ युद्ध किया और अपने देश को मुक्त किया। 17 दिसम्बर, 1971 ई० को भारत ने युद्ध विराम घोषित किया जिसे दूसरे दिन पाकिस्तान ने स्वीकार कर लिया। जून, 1972 में शिमला समझौता हुआ। इस समझौते के अनुसार दोनों देशों ने विजित प्रदेशों तथा युद्ध-बन्दियों को लौटाने का समझौता किया।

इसी प्रकार 20 अक्टूबर, 1962 ई० को चीन ने भारत पर आक्रमण किया। इस समय इंग्लैण्ड और अमेरिका ने भारत का साथ दिया। कुछ समय पश्चात् चीन ने स्वयं युद्ध बन्द कर दिया, परन्तु अब भी हजारों वर्ग किलोमीटर भूमि चीन के कब्जे में है जिसे उसने अनाधिकृत रूप से दबा रखा है।

प्रश्न 3—भारतीय सेना के तीनों अंगों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—थल सेना—थल सेना चीफ ऑफ दी आर्मी स्टॉफ के मातहत कार्य करती है। थल सेना के अन्य अधिकारी क्रम से इस प्रकार हैं—

(i) फील्ड मार्शल
(ii) जनरल
(iii) लेफ्टीनेन्ट जनरल
(iv) मेजर जनरल
(v) ब्रिगेडियर
(vi) कर्नल
(vii) लेफ्टीनेन्ट कर्नल
(viii) मेजर
(ix) कैप्टेन
(x) लेफ्टीनेन्ट
(xi) सैकेण्ड लेफ्टीनेन्ट।

वायु सेना—वायु सेना के पदाधिकारी इस प्रकार हैं—

(i) मार्शल ऑफ दी एअर फोर्स
(ii) एअर चीफ मार्शल
(iii) एअर मार्शल
(iv) एअर वाइस मार्शल
(v) एकर कमोडोर
(vi) ग्रुप कैप्टेन
(vii) विंग कमाण्डर
(viii) स्क्वेड्रन लीडर

(ix) फ्लाइट लैफ्टीनेन्ट
(x) फ्लाईंग आधीसर
(xi) पाइलट आफीसर ।

नौ सेना—नौ सेना के अधिकारी इस प्रकार हैं—

(i) एडमिरल ऑफ दी फ्लीट
(ii) एडमिरल
(iii) वायस एडमिरल
(iv) रियर एडमिरल
(v) कमोडोर
(vi) कैप्टेन
(vii) कमाण्डर
(viii) लैफ्टीनेन्ट कमाण्डर
(ix) लैफ्टीनेन्ट
(x) सब लैफ्टीनेन्ट ।

प्रश्न 4—प्रादेशिक सेना और एन० सी० सी० पर एक संक्षिप्त लेख **लिखिए ।**

उत्तर—(1) **प्रादेशिक सेना**—सन् 1949 ई० में हमारे देश में प्रादेशिक सेना की व्यवस्था की गयी थी। इसमें नागरिकों को सैन्य प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है तथा 18 से 35 वर्ष की आयु वाले युवकों को प्रशिक्षण दिया जाता है, और आवश्यकता पड़ने पर उनको सैनिक सेवा में ले लिया जाता है।

(2) **एन० सी० सी०**—यह एक युवा संगठन है। इस संगठन के अन्तर्गत छात्र तथा छात्राओं को सैनिक शिक्षा दी जाती है। इसके तीन विभाग हैं—(1) सीनियर विभाग, (2) जूनियर विभाग, (3) लड़कियों का विभाग। एन० सी० सी० द्वारा छात्रों में अनुशासन की शिक्षा प्रदान की जाती है। पिछले संकटों में इनका लाभ हमारे देश को मिल चुका है।

भारत की विदेश नीति तथा भारत और संयुक्त राष्ट्रसंघ

अति लघुउत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—पंचशील सिद्धान्त की सर्वप्रथम घोषणा कब हुई ? (198[illegible])

उत्तर—पंचशील सिद्धान्त की घोषणा 1954 ई० में भारत और चीन के मध्य हुई।

प्रश्न 2—बाँडुग सम्मेलन कब हुआ था ?

उत्तर—बाँडुग सम्मेलन अप्रैल, 1955 ई० में हुआ था ।

प्रश्न 3—बर्मा और भारत के बीच स्थल सीमा निर्धारण समझौता किस वर्ष में हुआ था ?

उत्तर—बर्मा और भारत के बीच स्थल सीमा निर्धारण समझौता 1976 ई० में हुआ था।

प्रश्न 4—भारत-पाक सलाह जल-सन्धि कब सम्पन्न हुई ?

उत्तर—1978 ई० में भारत-पाक सलाह जल सन्धि 1978 ई० में सम्पन्न हुई।

प्रश्न 5—यूनेस्को का 7वाँ वार्षिक सम्मेलन कब और कहाँ हुआ ?

उत्तर—यूनेस्को का 7वाँ वार्षिक सम्मेलन नई दिल्ली में 1956 ई० में हुआ था।

परीक्षा में पूछे गये तथा अन्य अति लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 6—चीन ने भारत पर कब आक्रमण किया था ? (1984)

उत्तर—चीन ने भारत पर सन् 1962 में आक्रमण किया था।

प्रश्न 7—भारत पर किन दो पड़ोसी देशों ने आक्रमण किया था।

उत्तर—भारत पर पाकिस्तान और चीन दो पड़ोसी देशों ने आक्रमण किया था ?

प्रश्न 8—पाकिस्तान ने भारत पर कब-कब आक्रमण किया था ?

उत्तर—पाकिस्तान ने भारत पर सन् 1965 और 1971 में आक्रमण किया था।

प्रश्न 9—भारत द्वारा किस पड़ौसी देश को स्वतन्त्रता प्राप्त करने में सहायता मिली थी ? (1986)

उत्तर—भारत द्वारा बाँगला देश को स्वतन्त्रता प्राप्त करने में सहायता मिली थी।

प्रश्न 10—शिमला समझौता कब हुआ था ? (1988, 90)

उत्तर—शिमला समझौता सन् 1972 में हुआ था।

प्रश्न 11—शिमला समझौता किन-किन देशों के बीच हुआ था ? (1989)

उत्तर—शिमला समझौता भारत और पाकिस्तान देशों के बीच हुआ था।

प्रश्न 12—ताशकन्द समझौता कब और किन-किन देशों के मध्य हुआ था ?

उत्तर—ताशकन्द समझौता 10 जनवरी, 1966 ई० को भारत और पाकिस्तान के बीच हुआ था।

प्रश्न 13—भारत की विदेश नीति की सबसे प्रमुख विशेषता क्या है ? (1985)

उत्तर—भारत की विदेश नीति की सबसे प्रमुख विशेषता 'गुट निरपेक्षता' है।

प्रश्न 14—भारत के अतिरिक्त दो गुट निरपेक्ष देशों के नाम लिखिए।

उत्तर—भारत के अतिरिक्त दो गुट निरपेक्ष देशों के नाम—1. इण्डोनेशिया, 2. यूगोस्लाविया।

लघुउत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—भारत के विदेशी नीति के निर्माण और विकास को किन तत्वों ने प्रभावित किया ?

उत्तर—भारत के विदेश नीति के निर्माण और विकास को निम्नलिखित तत्वों ने प्रभावित किया—

(1) गुट निरपेक्षता भारत की विदेश नीति गुटनिरपेक्षता की है। भारत किसी भी गुट का सदस्य नहीं है। भारत को चीन और पाकिस्तान से युद्ध करना पड़ा। परन्तु उसने अपनी गुट निरपेक्षता की नीति को नहीं छोड़ा।

(2) पंचशील—भारत पंचशील के सभी सिद्धान्तों पर विश्वास करता है पंच-शील के सिद्धान्त इस प्रकार हैं—

(3) शान्तिपूर्ण समझौते,

(4) शक्ति-प्रयोग का निषेध,

(5) पारस्परिक सहयोग,

(6) हस्तक्षेप न करने की नीति,

(7) सार्वजनिक हितों की प्रधानता।

पंचशील के सिद्धान्त—भारत की नीति का प्रमुख तत्व पंचशील या शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व है। इनके 5 सिद्धान्त इस प्रकार हैं—

(1) एक-दूसरे की प्रादेशिक अखण्डता और सर्वोच्च सत्ता के प्रति पारस्परिक सम्मान की भावना,

(2) एक-दूसरे क्षेत्र पर आक्रमण का परित्याग,

(3) एक-दूसरे के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप न करने का संकल्प,

(4) समानता और पारस्परिक लाभ के सिद्धान्त के आधार पर मैत्री सम्बन्धों की स्थापना, और

(5) शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व।

प्रश्न 2—पंचशील के 5 सिद्धान्त बताइए। (1985,

उत्तर—पंचशील के सिद्धान्त इस प्रकार हैं—

(1) प्रादेशिक अखण्डता और प्रभुसत्ता का पारस्परिक सम्मान,

(2) अहस्तक्षेप,

(3) समानता और पारस्परिक हित में सहयोग,

(4) मिल-जुलकर शान्तिपूर्वक रहना,

(5) अनाक्रमण।

प्रश्न 3—भारत के पड़ोसी देशों के नाम बताइए।

उत्तर—भारत के पड़ोसी देशों के नाम इस प्रकार हैं—

(1) श्रीलंका, (2) बर्मा,
(3) चीन, (4) बांगला देश,
(5) नैपाल, (6) भूटान,
(7) पाकिस्तान, (8) अफगानिस्तान।

परीक्षा में पूछे गये तथा अन्य लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 4—पंचशील का सिद्धान्त कब प्रारम्भ हुआ पंचशील के सिद्धान्तों का संक्षिप्त परिचय दीजिए। (1984, 85,

उत्तर—पंचशील के सिद्धान्त—पंचशील दो शब्दों से मिलकर बना है पंच और शील, पंच का अर्थ है पाँच और शील का अर्थ है सिद्धान्त अर्थात् पंचशील का अर्थ हुआ पाँच सिद्धान्त ये ऐसे हैं कि यदि इन पर विश्व के सभी देश चलें तो संसार में शान्ति स्थापित हो सकती है। ये पाँच सिद्धान्त स्वतन्त्र भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू के सुझाव द्वारा बनाये गये थे। पंचशील के सिद्धान्त हमारी विदेशी नीति के मूल आधार हैं। इन पंचशील के सिद्धान्तों की घोषणा सर्वप्रथम 29 अप्रैल, 1954 ई० को की गयी थी। ये सिद्धान्त अग्रलिखित हैं—

(1) **प्रभुसता**—प्रत्येक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र की अखण्डता और प्रभुसत्ता का सम्मान करेगा।

(2) **अहस्तक्षेप**—कोई भी राष्ट्र दूसरे राष्ट्र के निजी मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेगा।

(3) **अनाक्रमण**—कोई भी राष्ट्र अन्य किसी राष्ट्र पर आक्रमण नहीं करेगा।

(4) **समानता तथा पारस्परिक हित**—प्रत्येक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को समानता का स्थान देगा और पारस्परिक हित में सहयोग करेगा।

(5) **शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व**—सभी राष्ट्र मिलजुल कर शान्तिपूर्ण वार्तालाप द्वारा आपसी समस्याओं को हल करेंगे।

प्रश्न 5—भारत की विदेश नीति के क्या उद्देश्य हैं? (1985)

उत्तर—भारत की विदेश नीति—विदेश नीति से आशय किसी देश की उस नीति से है जिसके अनुसार वह संसार के अन्य देशों से साथ अपने व्यवहार को निर्धारित करता है। भारत की विदेश नीति के उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

(1) अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति और सुरक्षा बनाये रखना तथा उसको बढ़ावा देना।

(2) अन्तर्राष्ट्रीय झगड़ों को शान्तिपूर्ण समझौता द्वारा हल करना।

(3) संयुक्त राष्ट्र संघ में पूर्ण आस्था रखना।

(4) सैनिक गुटबन्दियों से दूर रहना।

(5) सभी पराधीन देशों की स्वतन्त्रता को प्रोत्साहन देना।

प्रश्न 6—भारत की गुट-निरपेक्षता की नीति का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—भारत की गुट-निरपेक्षता की नीति—भारत की विदेश नीति गुट-निरपेक्षता की नीति कहलाती है। गुट-निरपेक्षता की नीति का अर्थ है—किसी भी बड़ी शक्ति के गुट में सम्मिलित न होना और इस प्रकार विश्व को युद्ध तथा फूट से बचाये रखना। भारत ने विश्व-शन्ति के लिए गुट निरपेक्षता की नीति अपनाई है। इस नीति के आधार पर भारत विश्व के किसी गुट में शामिल नहीं है। उसके दोनों गुटों के साथ मित्रतापूर्ण सम्बन्ध है, और वह दोनों की अन्यायपूर्ण नीति का सदैव ही विरोध करता है। स्वतन्त्रता की प्राप्ति के उपरान्त भारत को अनेकों बार युद्धों का सामना करना पड़ा उसे 1962 में चीन से तथा 1965 और 1971 में पाकिस्तान से युद्ध करना पड़ा परन्तु भारत ने गुट-निरपेक्षता की नीति को नहीं छोड़ा। भारत आज भी किसी गुट में किसी भी उद्देश्य के लिए सम्मिलित नहीं है। भारत की गुट-निरपेक्षता की नीति के प्रमुख सिद्धान्त इस प्रकार हैं—

(1) महाशक्तियों की गुटबन्दी से अलग रहना।

(2) समस्त देशों से मित्रता से सम्बन्ध बनाये रखते हुए विश्व-शान्ति स्थापित करने में सहयोग देना।

(3) उपनिवेशवाद ओर रंग-भेद की नीति का विरोध करना।

(4) पारस्परिक आर्थिक हितों की रक्षा के लिए एशियाई तथा अफ्रीकी देशों को संगठित करना।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1—भारत की विदेशी नीति की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर— भारत की विदेश नीति की प्रमुख विशेषताएँ

अर्थ—प्रत्येक देश अन्य देशों के साथ सम्बन्ध रखता है। इसी नीति को उसकी विदेशी नीति कहा जाता है। एक देश आज के युग में तटस्थ नहीं रह सकता, इसी कारण उसे यह निश्चित करना होता है कि विश्व के अन्य देशों के साथ वह कैसे सम्बन्ध रखे। किसी देश की अन्य देशों के साथ सम्बन्धों की जो नीति होती है, उसे उसकी विदेशी नीति कहते हैं।

गुटनिरपेक्षता—भारत की विदेशी नीति गुटनिरपेक्षता की है। प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात् संसार के अनेक देशों ने अपनी सुरक्षा के लिए सैनिक गुट बना लिये थे—जैसे नाटो (NATO) इसमें अमरीका, कनाडा, इंग्लैण्ड और फ्रान्स आदि सम्मिलित थे। परन्तु भारत किसी गुट में सम्मिलित नहीं हुआ। यह निर्णय भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री पं० नेहरू ने लिया था। इसी कारण इस नीति को गुटनिरपेक्षता की नीति कहते हैं। भारत को 1947 ई० के पश्चात् अनेक बार युद्धों सामना करना पड़ा। उसे 1962 ई० में चीन से, 1665 ई० तथा 1971 ई० में पाकिस्तान से युद्ध करना पड़ा, परन्तु भारत ने गुटनिरपेक्षता की नीति को नहीं छोड़ा। भारत आज भी किसी गुट में किसी भी उद्देश्य के लिए सम्मिलित नहीं है।

पंचशील के सिद्धान्त—भारत की नीति का प्रमुख तत्व पंचशील या शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व है। इसके पाँच सिद्धान्त हैं। ये सिद्धान्त इस प्रकार हैं—

(1) एक-दूसरे की प्रादेशिक अखण्डता और सर्वोच्च सत्ता के प्रति पारस्परिक सम्मान की भावना,

(2) एक-दूसरे के क्षेत्र पर आक्रमण का परित्याग,

(3) एक-दूसरे के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप न करने का संकल्प,

(4) समानता और पारस्परिक लाभ के सिद्धान्त के आधार पर मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों की स्थापना, और

(5) शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व।

पंचशील के सिद्धान्तों की घोषणा के पश्चात् भारत ने यह आशा की थी कि संसार में शान्ति स्थापित होगी। 2 अप्रैल 1955 ई० को बर्मा, इण्डोनेशिया, लाओस, नेपाल तथा वियतनाम ने भी पंचशील के सिद्धान्तों को स्वीकार कर लिया। 1955 ई० में बान्डुंग सम्मेलन में 20 एशिया और अफ्रीका के देशों में आस्ट्रिया, पोलेण्ड, रूस, अमेरिका तथा आस्ट्रेलिया ने भी पंचशील के सिद्धान्तों को स्वीकार कर लिया। विश्व के 82 राष्ट्रों ने संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत के द्वारा प्रस्तावित पंचशील के सिद्धान्त को स्वीकार कर लिया। धीरे-धीरे पंचशील को केवल लोकप्रियता ही नहीं मिली, वरन् यह संयुक्त राष्ट्र संघ के उद्देश्यों का एक अंग बन गया।

भारत ने सदैव शान्ति का समर्थन किया। भारत पर जब चीन ने आक्रमण

किया तो भारत की सह-अस्तित्व की नीति के कारण ही अमेरिका, इंग्लैण्ड और फ्रान्स आदि देशों ने भारत का समर्थन किया।

शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व—पंचशील के उपरोक्त सिद्धान्तों में एक सिद्धान्त शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व का है। शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व का अर्थ यह है कि किसी देश के आन्तरिक मामलों में तटस्थ रहना और सभी देशों के साथ समानता का व्यवहार करना। भारत किसी के राजनीतिक, आर्थिक अथवा सांस्कृतिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करता।

प्रश्न 2—पड़ौसी देशों के साथ भारत के सम्बन्धों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—पड़ौसी देशों के साथ भारत के सम्बन्ध—पड़ौसी देशों के साथ भारत के सम्बन्ध इस प्रकार हैं—

(1) **चीन**—चीन भारत का निकट का देश है। चीन ने तिब्बत पर अधिकार कर रखा है। इस कारण अब चीन और भारत की सीमाएँ मिल गई हैं। पं० नेहरू के समय भारत और चीन के सम्बन्ध मधुर थे। उन्होंने चाउ एन लाई के साथ पंचशील के सिद्धान्तों की घोषणा की थी। परन्तु 1962 ई० में चीन ने भारत पर आक्रमण किया और लद्दाख के एक बड़े क्षेत्र पर कब्जा कर लिया। उस समय से ही भारत चीन के सम्बन्ध बिगड़ गये हैं।

(2) **पाकिस्तान**—पाकिस्तान की स्थापना 1947 ई० में हुई। उसी वर्ष पाकिस्तान ने काश्मीर पर आक्रमण किया और उसके एक भाग पर कब्जा कर लिया। पाकिस्तान ने 1965 ई० में फिर भारत पर आक्रमण किया। इस बार उसने कच्छ और काशमीर पर आक्रमण किया। तभी से भारत के पाकिस्तान से सम्बन्ध अच्छे नहीं हैं। 1971 ई० में पाकिस्तान ने फिर भारत पर आक्रमण किया। इसके फलस्वरूप बांगला देश का निर्माण हुआ। यद्यपि भारत और पाकिस्तान के मध्य शिमला समझौता हो चुका है, तथापि भारत और पाकिस्तान के मध्य तनाव की स्थिति बनी रहती है।

(3) **बांग्ला देश**—1971 ई० से पूर्व बांगला देश पाकिस्तान का ही एक अंग था, परन्तु 1971 ई० में एक स्वतन्त्र राज्य हो गया। इसी वर्ष पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण किया। भारत ने बांग्ला देश के स्वतन्त्रता संग्राम में उसकी सहायता की। जब 1971 ई० में बांगला देश स्वतन्त्र हुआ तो शेख मुजीबुर्रहमान वहाँ के प्रधानमन्त्री बनाये गये। 1975 ई० तक भारत के बांग्ला देश के साथ सम्बन्ध अच्छे रहे, परन्तु 1975 ई० में शेख की हत्या कर दी गई। उसके पश्चात् बांग्ला देश की बागडोर भारत विरोधी लोगों के हाथ में आ गई। तभी से भारत और बांगला देश के सम्बन्ध अच्छे नहीं हैं। गंगा के पानी को लेकर दोनों देशों के मध्य विवाद चल रहा है। बंगाल की खाड़ी में एक नया टापू निकल आया है जिस पर दोनों देश अधिकार करना चाहते हैं।

(4) **श्रीलंका**—भारत के श्रीलंका के साथ पुराने सांस्कृतिक सम्बन्ध हैं। भारत के निवासी श्रीलंका के साथ मधुर सम्बन्ध बनाये हुए हैं। श्रीलंका में भारतीय मूल के कुछ लोग निवास करते हैं। ये लोग अंग्रेजी शासन में वहाँ जाकर बस गये थे। श्रीलंका की सरकार उनको भारत वापिस भेजना चाहती है। भारत और श्रीलंका के मध्य एक समझौता हुआ था। परन्तु उस समझौते पर अभी पूर्णरूप से अमल नहीं हो पाया है। तमिल और सिंहालियों के मध्य भी कभी-कभी झगड़ा उठ खड़ा होता

है। इससे भारत और श्रीलंका के मध्य तनाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है, परन्तु साधारणतया दोनों देशों के मध्य मधुर सम्बन्ध हैं।

(5) **बर्मा**—अंग्रेजों के शासनकाल में बर्मा भारत का एक अंग था परन्तु बाद में बर्मा को भारत से अलग कर दिया गया। भारत के पूर्वी क्षेत्रों—अरुणाचल, नागालैण्ड, मणिपुर और मिजोरम की सीमाएँ बर्मा से मिलती हैं। बर्मा के अधिकतर निवासी बौद्ध हैं। भारत और बर्मा में प्राचीन सांस्कृतिक सम्बन्ध हैं। भारत और बर्मा के सम्बन्ध मधुर हैं।

(6) **नेपाल**—नेपाल और भारत के सम्बन्ध अत्यन्त मधुर हैं क्योंकि दोनों देशों की संस्कृति एक है। भारत प्रायः नेपाल की आर्थिक सहायता करता रहता है। दोनों देशों के मध्य सम्बन्ध मधुर हैं।

(7) **भूटान**—भूटान भारत के उत्तर में एक छोटा-सा राज्य है और भूटान से भारत के सांस्कृतिक सम्बन्ध हैं। भारत ने भूटान के साथ एक सन्धि कर रखी है।

(8) **अफगानिस्तान**—भारत और अफगानिस्तान के सम्बन्ध मधुर हैं। यह दोनों देशों के हित में है।

(9) **रूस**—भारत और रूस के सम्बन्ध भी अत्यन्त मधुर हैं। भारत और रूस ने एक सन्धि कर रखी है, जिसके अनुसार दोनों देश किसी सैनिक समझौते में भाग नहीं लेंगे।

प्रश्न 3—संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत के योगदान का वर्णन कीजिए।

उत्तर—संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत का योगदान—संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत का गौरवपूर्ण स्थान है। भारत प्रारम्भ से ही इस महान संगठन के प्रति आस्था रखता है। इसीलिए भारत ने इस संगठन के उद्देश्यों तथा सिद्धान्तों को अपने संविधान और विदेशी नीति में समावेश किया है।

संयुक्त राष्ट्र संघ मानवीय बुद्धि द्वारा परिकल्पित श्रेष्ठतम अन्तर्राष्ट्रीय संगठन है। भारत इस अन्तर्राष्ट्रीय संगठन का संस्थापक सदस्य है। संगठन के उद्देश्यों और सिद्धान्तों के प्रति उसकी गहरी आस्था है और उन्हें क्रियान्वित करने का उसने सदैव ही प्रयास किया है। अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति और सुरक्षा की स्थापना करना राष्ट्र संघ का सबसे प्रमुख उद्देश्य है। भारत ने इस उद्देश्य की पूर्ति में संयुक्त राष्ट्र संघ को पूरा-पूरा सहयोग दिया है। संयुक्त राष्ट्र संघ ने बहुत सी महत्त्वपूर्ण समस्याओं को हल करने में अपना पूर्ण योगदान किया है।

भारत ने राष्ट्रसंघ में महत्त्वपूर्ण कार्य किये हैं उनके प्रमुख कार्य इस प्रकार हैं—

(1) जाति भेद एवं रंग भेद की नीति का विरोध करता है।
(2) निशस्त्रीकरण की नीति का समर्थन करता है।
(3) उपनिवेश वादी नीति का विरोध करता है।
(4) पराधीन राष्ट्रों की स्वतन्त्रता का समर्थन करता है।
(5) कोरिया, वियतनाम तथा कांगो समस्या के समाधान में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है।
(6) संघ के कार्यों में सक्रिय योगदान प्रदान करता है।

प्रश्न 4—संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रमुख उद्देश्य लिखिए।

उत्तर—संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रमुख उद्देश्य—संयुक्त राष्ट्र संघ की सदस्यता ग्रहणकरने वाले देश को निम्नलिखित सिद्धान्तों का पालन करना होता है—

(1) **समानता**—संयुक्त राष्ट्रसंघ में सम्मिलित होने वाले सभी राष्ट्रों को समाज के अधिकारों को उपयोग करने की पूर्ण स्वतन्त्रता है।

(2) **कर्त्तव्य परायणता**—प्रत्येक राष्ट्र जो राष्ट्रसंघ की सदस्यता ग्रहण करता है, विश्व शान्ति के प्रति कर्त्तव्य परायणता का ध्यान रखता है।

(3) **शान्तिपूर्ण समझौते**—संयुक्त राष्ट्रसंघ के सदस्य राष्ट्रों को यह वचन देना पड़ता है कि वे पारस्परिक संघर्षों को शान्तिपूर्ण तरीकों से सुलझा लेने का प्रयास करेंगे।

(4) **शक्ति प्रयोग का निषेध**—संयुक्त राष्ट्रसंघ का एक यह सिद्धान्त है कि संयुक्त राष्ट्रसंघ का कोई भी सदस्य राष्ट्र दूसरे के विरुद्ध शक्ति का प्रयोग नहीं करेगा। यदि संयुक्त राष्ट्रसंघ के सदस्यों में कोई मतभेद है तो उसको शान्तिपूर्ण तरीकों से दूर किया जायेगा।

(5) **पारस्परिक सहयोग**—संयुक्त राष्ट्रसंघ अपने सदस्य राष्ट्रों को सहयोग देने के लिए वचनबद्ध है। संकट काल में संयुक्त राष्ट्रसंघ अपने सदस्य राष्ट्र को सभी प्रकार का यथाशक्ति सहयोग देने के लिए वचनबद्ध है।

(6) **हस्तक्षेप न करने की नीति**—संयुक्त राष्ट्रसंघ विश्व के सभी राष्ट्रों की आन्तरिक नीति में किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप करने का समर्थन नहीं करता है। प्रत्येक राष्ट्र अपनी आन्तरिक नीति का प्रयोग करने में स्वतन्त्र है। संयुक्त राष्ट्रसंघ के हस्तक्षेप का क्षेत्र राष्ट्रों की बाह्य नीतियों तक ही सीमित है।

(7) **सार्वजनिक हितों की प्रधानता**—संयुक्त राष्ट्रसंघ उन राष्ट्रों से जो संघ के सदस्य नहीं हैं, आशा करता है कि वे भी विश्व शान्ति को बनाये रखने का पूरा-पूरा प्रयास करेंगे।

प्रश्न 5—संयुक्त राष्ट्रसंघ की मुख्य संस्थाओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर—संयुक्त राष्ट्रसंघ की संस्थाएँ—संयुक्त राष्ट्रसंघ के कार्यों का संचालन निम्नलिखित संस्थाओं द्वारा होता है—

(1) **साधारण सभा**—संयुक्त राष्ट्रसंघ की व्यवस्थापिका को साधारण सभा से नाम से पुकारा जाता है। प्रत्येक सदस्य राष्ट्र इस सभा में पाँच प्रतिनिधि भेजता है परन्तु एक राष्ट्र के द्वारा भेजे गये इन पाँचों प्रतिनिधियों का केवल एक ही मत माना जाता है। इस सभा का अधिवेशन वर्ष में कम से कम एक बार होना आवश्यक है। संकटकाल में इसका अधिवेशन कभी भी बुलाया जा सकता है। विश्व की समस्याओं पर विचार करना, सुरक्षा-परिषद् के 18 सदस्यों का निर्वाचन करना, संयुक्त राष्ट्र संघ के बजट को पारित करना, सुरक्षा परिषद् के अध्यक्ष तथा अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय के न्यायाधीशों की नियुक्ति में सहयोग देने आदि कार्य साधारण सभा के हैं।

(2) **सुरक्षा परिषद्**—सुरक्षा परिषद् के सदस्यों की संख्या 15 है। इसमें पाँच स्थायी सदस्य—चीन, फ्रांस, रूस, इंगलैण्ड तथा अमेरिका हैं। अन्य अस्थायी सदस्यों का निर्वाचन साधारण सभा द्वारा किया जाता है। प्रत्येक निर्णय के पक्ष में पाँच स्थायी सदस्यों का एक मत होना अनिवार्य है। यदि कोई स्थायी सदस्य सुरक्षा परिषद् के निर्णय के मत विरुद्ध देता है तो सुरक्षा परिषद् का वह निर्णय समाप्त हो जाता है। स्थायी सदस्यों द्वारा इस प्रकार के अधिकार को वीटो के नाम से पुकारते हैं। इस

प्रकार की व्यवस्था हो जाने से संयुक्त राष्ट्रसंघ के भाग्य विधाता पाँच स्थायी राष्ट्र ही हैं। सुरक्षा-परिषद् संयुक्त राष्ट्रसंघ की एक स्थायी परिषद् है जिसकी बैठक 15 दिन में एक बार अवश्य ही होनी चाहिए। इसकी बैठक सुविधानुसार कहीं भी बुलाई जा सकती है। दो या दो से अधिक राष्ट्रों के बीच मतभेदों को दूर करना, पारस्परिक संघर्षों का शान्तिपूर्ण तरीकों से अन्त करना, शान्ति-भंग होने की सम्भावना को रोकना या भंग हुई शान्ति को पुनः स्थापित करना आदि कार्य परिषद् के हैं।

(3) **अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय**—इसका मुख्य कार्यालय हालैण्ड के हेग नामक नगर में है। इसमें 15 न्यायाधीश होते हैं, जिनका चुनाव सुरक्षापरिषद् की सिफारिश पर साधारण सभा द्वारा किया जाता है। एक राष्ट्र से एक व्यक्ति ही न्यायाधीश के पद पर नियुक्त किया जा सकता है। अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय के न्यायाधीश अपने में से ही एक मुख्य न्यायाधीश का निर्वाचन करते हैं। न्यायाधीशों के बहुमत से निर्णय लिये जाते हैं। सदस्य राष्ट्रों के विवादग्रस्त मामलों का शान्तिपूर्ण तरीकों से निर्णय करना, अन्तर्राष्ट्रीय कानूनों से सम्बन्धित विवादों का फैसला करना, किसी वैधानिक विषय पर साधारण सभा का परामर्श देना आदि अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय के मुख्य कार्य हैं।

(4) **सचिवालय**—इसका प्रधान महासचिव कहलाता है। महासचिव का निर्वाचन, सुरक्षा परिषद् की सिफारिश पर साधारण सभा करती है। महासचिव की सहायता के लिए विभागीय सचिव होते हैं। सचिवालय के सभी कर्मचारियों की नियुक्ति का अधिकार महासचिव को ही होता है।

(3) **आर्थिक व सामाजिक परिषद्**—सदस्य राष्ट्रों की सामाजिक व आर्थिक दशा का उत्थान करने के लिए 17 सदस्यों की एक आर्थिक व सामाजिक परिषद् की स्थापना की गई है। इस परिषद् की वर्ष में तीन बैठकें, बुलाई जाना अनिवार्य है।

(6) **संरक्षण परिषद्**—पिछड़े हुए राष्ट्र जो स्वयं स्वायत्त शासन के योग्य नहीं हैं, संयुक्त राष्ट्र संघ की परिषद् की देख-रेख में छोड़े गये हैं। इन राष्ट्रों को यह परिषद् इस योग्य बनाने का प्रयास करती है कि वे अपने सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक व नैतिक उन्नति करने के योग्य हो जायें।

(7) **विभिन्न संघ**—संयुक्त राष्ट्रसंघ ने अपना कार्य चलाने के लिए 19 अक्टूबर, 1946 ई० को खाद्य व कृषि संघ की स्थापना की थी, जिसका मुख्य कार्य सदस्य राष्ट्रों के रहन-सहन के स्तर को ऊँचा उठाना है। 7 अप्रैल, 1948 ई० को स्वास्थ्य संघ की स्थापना हुई। इस संघ का उद्देश्य विश्व के नागरिकों के स्वास्थ्य की रक्षा करना है। 4 नवम्बर, 1946 ई० को शिक्षा व विज्ञान संघ की स्थापना की गई थी इसका उद्देश्य सदस्य राष्ट्रों की शिक्षा व विज्ञान सम्बन्धी उन्नति करना है।

बहु-विकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1—भारतीय सेना के अंग हैं—

(i) 3 (ii) 5
(iii) 2 (iv) 6।

उत्तर—(i) 3।

प्रश्न 2—चीन ने भारत पर आक्रमण किया था—
(i) 1965 ई० में (ii) 1977 ई० में
(iii) 1962 ई० में (iv) 1909 ई० में।
उत्तर—(iii) 1962 ई० में।

प्रश्न 3—भारतीय सेना का सबसे बड़ा भाग है—
(i) वायु सेना (ii) थल सेना
(iii) नौ सेना (iv) प्रादेशिक सेना।
उत्तर—(ii) थल सेना।

प्रश्न 4—एन० सी० सी० एक संगठन है—
(i) युवा संगठन (ii) नवयुवक संघ
(i) शिक्षार्थी दल (iv) कुछ भी नहीं।
उत्तर—(i) युवा संगठन।

प्रश्न 5—जल सेना कमानों में विभाजित है—
(i) 7 (ii) 5
(iii) 3 (iii) 2।
उत्तर—(iii) 3।

प्रश्न 6—वायु सेना का मुख्यालय है—
(i) नई दिल्ली (ii) बम्बई
(iii) कलकत्ता (iv) आगरा।
उत्तर—(i) नई दिल्ली।

प्रश्न 7—समस्त थल सेना कमांडों में विभाजित है—
(i) 1 (ii) 4
(iii) 7 (iv) 5।
उत्तर—(iv) 5।

प्रश्न 8—भारत में प्रादेशिक सेना प्रारम्भ की गई थी—
(i) 1947 ई० में (ii) 1948 ई० में
(iii) 1949 ई० में. (iv) 1949 ई० में।
उत्तर—(iii) 1949 ई० में।

प्रश्न 9—पाकिस्तान ने भारत पर पहला आक्रमण कब किया—
(i) 1960 ई० में (ii) 1962 ई० में
(iii) 1947 ई० में (iv) 1971 ई० में।
उत्तर—(iii) 1947 ई० में।

प्रश्न 10—सुरक्षा परिषद् के सदस्यों की संख्या है—
(i) 15 (iii) 10
(iii) 5 (iv) 45।
उत्तर—(i) 15।

रंजना

हाईस्कूल

सामाजिक विज्ञान

द्वितीय प्रश्न-पत्र

अनुभाग 3—आधुनिक भारत में जनजीवन

अनुभाग 4—वर्तमान विश्व में जनजीवन

- राजकीय पुस्तक के सभी प्रश्नों का हल।
- बोर्ड परीक्षा में पूछे सभी प्रश्नों का समावेश।
- अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों का चयन।
- विस्तृत उत्तरीय, लघुउत्तरीय, अति लघुउत्तरीय तथा बहु-विकल्पीय प्रश्नों का क्रमबार विवेचन।
- मानचित्र अध्ययन—अभ्यास तथा हल।
- परीक्षा प्रश्न-पत्र।

1 | सुनियोजित आर्थिक विकास

अति लघु उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1. आर्थिक विकास के स्तर के आधार पर विश्व अर्थ-व्यवस्थाओं को कितने भागों में विभाजित किया जा सकता है ? (Imp.)

उत्तर—आर्थिक विकास के स्तर के आधार पर विश्व अर्थ-व्यवस्था को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है—

(1) विकसित देश, (2) विकासशील देश।

प्रश्न 2. विकसित व विकासशील देशों के चार-चार उदाहरण दीजिए।

उत्तर—विकसित देश

(1) संयुक्त राष्ट्र अमेरिका, (2) सोवियत रूस,
(3) फ्रान्स, (4) इंगलैण्ड।

विकासशील देश

(1) भारत, (2) चीन,
(3) क्यूबा, (4) पाकिस्तान।

प्रश्न 3. प्रति व्यक्ति आय क्या है ? (1987, 88, 89)

उत्तर—यदि हम देश की कुल राष्ट्रीय आय को कुल जनसंख्या से भाग दे दें तो हमें प्रति व्यक्ति आय प्राप्त हो जाएगी।

$$\text{सूत्र—प्रति व्यक्ति आय} = \frac{\text{कुल राष्ट्रीय आय}}{\text{कुल जनसंख्या}}$$

प्रश्न 4. आर्थिक विकास का क्या अर्थ है ? (1985) (Imp.)

उत्तर—आर्थिक विकास का अर्थ किसी देश की राष्ट्रीय आय एवं प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि के साथ-साथ उसका सर्वांगीण विकास एवं सामाजिक कल्याण में वृद्धि करना है।

प्रश्न 5. आर्थिक विकास की दो विशेषताएँ बताइए।

उत्तर—आर्थिक विकास की दो विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(1) आर्थिक विकास एक निरन्तर प्रक्रिया है।
(2) यह वृद्धि निरन्तर दीर्घकाल तक चलती रहती है।

परीक्षोपयोगी एवं बोर्ड परीक्षा में पूछे गये प्रश्न

प्रश्न 1. भारत को विकासशील देश क्यों कहा जाता है ? (1989)

उत्तर—भारत अभी तक नियोजन द्वारा निरन्तर विकास की ओर बढ़ रहा है तथा अभी तक पूर्ण विकास नहीं कर पाया है। अतः यह विकासशील देश कहलाता है।

प्रश्न 2. राष्ट्रीय आय किसे कहते हैं ? (1989)

उत्तर—किसी देश में एक वर्ष की अवधि में जितनी वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन होता है, उसे राष्ट्रीय आय कहते हैं।

प्रश्न 3. प्राकृतिक संसाधनों से क्या अभिप्राय है ? (1989)

उत्तर—प्रकृति की ओर से प्रदत्त निःशुल्क उपहार स्वरूप प्राप्त संसाधनों को प्राकृतिक संसाधन कहते हैं।

प्रश्न 4. संसाधन कितने प्रकार के होते हैं ? (1988)

उत्तर—संसाधन दो प्रकार के होते हैं—

(1) प्राकृतिक संसाधन, (2) मानवीय संसाधन।

लघु उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1. आर्थिक विकास का अर्थ एवं विशेषताएँ बताइए। (1986, 88)

उत्तर—आर्थिक विकास एक प्रक्रिया है। इसके द्वारा दीर्घकाल में किसी अर्थ-व्यवस्था की वास्तविक राष्ट्रीय आय अथवा उत्पादन में वृद्धि होती है। किसी देश के द्वारा अपनी वास्तविक आय में वृद्धि करने के लिए समस्त उपलब्ध साधनों का कुशलतम प्रयोग करना ही आर्थिक विकास कहलाता है।

आर्थिक विकास की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—

(1) आर्थिक विकास एक निरन्तर प्रक्रिया है।

(2) आर्थिक विकास वास्तविक राष्ट्रीय विकास में वृद्धि करता है।

(3) आर्थिक विकास प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि करता है।

(4) इसमें समस्त उत्पादन साधनों का कुशलतम उपयोग होता है।

(5) आर्थिक विकास में वास्तविक राष्ट्रीय आय तथा प्रति व्यक्ति आय में निरन्तर वृद्धि होती है।

(6) आर्थिक विकास जनता का जीवन-स्तर ऊँचा उठाता है। इससे आर्थिक कल्याण में वृद्धि होती है।

प्रश्न 2. आर्थिक नियोजन का क्या अर्थ है ? (1986, 88, 91)

उत्तर—आर्थिक नियोजन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा विकास का मार्ग प्रशस्त होता है। इसके द्वारा राष्ट्रीय आय तथा प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि करना सम्भव होता है। किसी भी देश को अपने आर्थिक विकास के लिए नियोजन की सहायता लेनी पड़ती है।

प्रश्न 3. आर्थिक विकास के निर्धारक तत्व कौन-कौन से हैं ? (1987, 89)

उत्तर—आर्थिक विकास के निर्धारक तत्व निम्नलिखित हैं—

(1) प्राकृतिक संसाधन,

(2) मानवीय संसाधन,

(3) पूंजी निर्माण,

तकनीकी प्रगति,

(5) उद्यम और संगठन तथा

(6) सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा राजनैतिक परिस्थितियाँ।

प्रश्न 4. प्राकृतिक संसाधनों का आर्थिक विकास से क्या सम्बन्ध होता है ? (1987, 89)

उत्तर—प्राकृतिक संसाधनों का आर्थिक विकास से सम्बन्ध इस प्रकार है—

(1) प्राकृतिक संसाधनों के प्रयोग से किसी देश के आर्थिक विकास में सहायता पहुँचाई जा सकती है।

(2) जिस देश में प्राकृतिक संसाधन जितने अधिक होते हैं, वह देश उतना ही अधिक आर्थिक विकास कर सकता है।

(3) किसी भी देश के आर्थिक विकास के लिए प्राकृतिक संसाधनों का एक न्यूनतम स्तर होना आवश्यक होता है।

(4) आर्थिक विकास के लिए प्राकृतिक संसाधनों का उचित विदोहन आवश्यक होता है।

परीक्षोपयोगी एवं बोर्ड परीक्षा में पूछे गये अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1—प्राकृतिक संसाधन कौन-कौन से हैं ? (1987)

उत्तर—प्राकृतिक संसाधन निम्नांकित हैं—

(1) भूमि, (2) खनिज, (3) जल, (4) वन सम्पदा, (5) शक्ति के साधन, (7) पशुधन।

प्रश्न 2—आर्थिक नियोजन से क्या लाभ है ? (1990)

उत्तर—आर्थिक नियोजन से निम्नांकित लाभ हैं—

(1) आर्थिक नियोजन राष्ट्र के आर्थिक विकास का एक मात्र सहारा है।
(2) यह आर्थिक विषमता और निर्धनता को दूर करता है।
(3) इसके द्वारा रोजगार अवसरों में अभिवृद्धि होती है।
(4) एकाधिकार प्रवृत्तियों एवं बाजार की अपूर्णताओं का अन्त होता है।
(5) इसके द्वारा शोषण एवं उत्पीड़न का अन्त होता है।
(6) समाज कल्याण में अभिवृद्धि होती है।
(7) राष्ट्र का सर्वांगीण विकास होता है।

प्रश्न 3. आर्थिक विकास के निर्धारक तत्व कौन-कौन से हैं ? (1986, 89)

उत्तर—आर्थिक विकास के निर्धारक तत्व निम्नांकित हैं—

(i) आर्थिक तत्व—इनमें प्राकृतिक एवं मानवीय संसाधन सम्मिलित हैं।
(ii) अनार्थिक तत्व—इनमें देश की सामाजिक, धार्मिक एवं राजनैतिक परिस्थितियाँ सम्मिलित हैं।

प्रश्न 4. नियोजन का क्या अर्थ है ? इसके दो प्रमुख उद्देश्य बताइये। (1984, 86)

उत्तर—नियोजन का अर्थ—कठिनाइयों को रोकने अथवा उनके भार एवं गंभीरता को कम करने के लिए की गई पूर्ण अर्थव्यवस्था नियोजन कहलाती है। इसके द्वारा प्रति व्यक्ति आय एवं राष्ट्रीय आय में वृद्धि होती है।

उद्देश्य—(1) देश के संसाधनों का प्रभावशाली एवं कुशलतम प्रयोग होता है।

(2) राष्ट्र का सर्वांगीण विकास होता है।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1. आर्थिक विकास का अर्थ स्पष्ट करते हुए नियोजन का महत्व बताइए। (1986, 88, 89, 90)

उत्तर—आर्थिक विकास का अर्थ—आधुनिक युग में प्रत्येक राष्ट्र अपना आर्थिक विकास करके भौतिक सम्पन्नता की होड़ में आगे बढ़ने का प्रयत्न कर रहा है। कुछ देश इस होड़ में अपना पूर्ण विकास कर चुके हैं। वे विकसित देश कहलाते हैं और कुछ अब भी विकास के पथ पर आगे बढ़ रहे हैं, वे विकासशील देश कहलाते हैं।

आर्थिक विकास वह प्रक्रिया है जिससे किसी देश के निवासी उपलब्ध साधनों का कुशलतम प्रयोग करके प्रति व्यक्ति वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में निरन्तर वृद्धि करते हैं। अर्थशास्त्रियों ने आर्थिक विकास की निम्नांकित परिभाषाएँ दी हैं—

(1) **मेयर और वाल्डविन के अनुसार—**"आर्थिक विकास एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा दीर्घकाल में किसी अर्थव्यवस्था की राष्ट्रीय आय में वृद्धि होती है।"

(2) **प्रो० बी० सिंह के शब्दों में—**"आर्थिक विकास एक बहुमुखी धारणा है। इसके अन्तर्गत केवल मौद्रिक आय में ही वृद्धि सम्मिलित नहीं है वरन् वास्तविक आदतों, शिक्षा, स्वास्थ्य, अधिक आराम तथा उन सभी सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों में सुधार सम्मिलित है जो जीवन को पूर्ण और सुखी बनाते हैं।"

इस प्रकार आर्थिक विकास वह प्रक्रिया है जिसमें उपलब्ध संसाधनों का कुशलतम प्रयोग होता है प्रति व्यक्ति आय एवं राष्ट्रीय आय में अभिवृद्धि होती है तथा देश वासियों का आर्थिक, सामाजिक एवं नैतिक उत्थान होता है जिससे राष्ट्र का सर्वांगीण विकास होता है।

नियोजन का महत्व—

देश के आर्थिक विकास के लिए आर्थिक नियोजन आवश्यक है। नियोजन का महत्व इस प्रकार है—

(1) नियोजन के द्वारा देश का आर्थिक विकास सुनिश्चित किया जा सकता है।

(2) नियोजन से सामाजिक कल्याण में वृद्धि होती है।

(3) नियोजन से सामाजिक आय में वृद्धि होती है।

(4) नियोजन से बेरोजगारी तथा निर्धनता दूर करने में सहायता मिलती है।

(5) देश के सर्वांगीण विकास के लिए आर्थिक नियोजन आवश्यक होता है।

(6) आर्थिक नियोजन से प्रत्येक देशवासी को लाभ मिलता है।

(7) आर्थिक नियोजन से विकास का मार्ग प्रशस्त होता है।

(8) नियोजन से राष्ट्रीय आय में वृद्धि होती है।

प्रश्न 2. प्राकृतिक संसाधनों का अर्थ तथा इसकी विशेषताओं की व्याख्या कीजिए। (1988, 90)

उत्तर—प्राकृतिक संसाधनों का अर्थ—

मनुष्य को प्रकृति की ओर से जो वस्तुएँ निःशुल्क उपहार की भाँति प्राप्त होती हैं, उनको प्राकृतिक संसाधन कहा जाता है। अग्रलिखित वस्तुओं को प्राकृतिक संसाधनों में सम्मिलित किया जाता है—

(1) भौगोलिक स्थिति, (2) जलवायु, (3) उपलब्ध भूमि, (4) वनसम्पत्ति, (5) जल सम्पत्ति, (6) शक्ति के साधन, (7) खनिज पदार्थ, (8) पशु धन।

प्राकृतिक संसाधनों की विशेषताएँ—

प्राकृतिक संसाधनों की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—

(1) प्राकृतिक संसाधन मनुष्य को निःशुल्क प्राप्त होते हैं।

(2) प्राकृतिक संसाधन स्वयं कोई कार्य नहीं करते। वे निष्क्रिय होते हैं।

(3) प्राकृतिक संसाधनों का विदोहन किए जाने पर ही वे आर्थिक विकास में सहायक होते हैं।

(4) प्राकृतिक संसाधनों में विविधता पाई जाती है। सभी स्थानों पर खनिज नहीं पाए जाते।

(5) कुछ प्राकृतिक संसाधनों का यदि प्रयोग किया जाए तो वे समाप्त हो जाते हैं। परन्तु कुछ ऐसे भी संसाधन होते हैं जिनका प्रकृति नवीनीकरण करती रहती है। उदाहरण के लिए वन, भूमि और जल आदि।

(6) कुछ प्राकृतिक संसाधनों का मनुष्य को ज्ञान होता है। इनको ज्ञात संसाधन कहते हैं। परन्तु कुछ ऐसे भी संसाधन होते हैं जिनका मनुष्य को ज्ञान नहीं होता। इनको अज्ञात संसाधन कहते हैं।

बहु विकल्पीय प्रश्न

सही विकल्प का चयन कीजिए—

प्रश्न 1. आर्थिक नियोजन का अर्थ—

(क) प्रति व्यक्ति आय घटना, (1985, 89)

(ख) संसाधनों का उचित प्रयोग करना,

(ग) बिना नियोजन के कार्य करना,

(घ) आर्थिक विषमता लाना।

उत्तर—(ख) संसाधनों का उचित प्रयोग करना।

प्रश्न 2. निम्नांकित में से आर्थिक नियोजन से जो तथ्य सम्बन्धित हो, उसे छाँटकर लिखिए— (1986)

(क) आर्थिक विकास प्रगति का मापदण्ड है,

(ख) आर्थिक विकास निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है,

(ग) आर्थिक विकास से उद्योगों में वृद्धि होती है,

(घ) आर्थिक विकास से संसाधनों का उपयोग होता है।

उत्तर—(ख) आर्थिक विकास निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है।

प्रश्न 3. वह कौन सा देश है जिसमें प्राकृतिक संसाधन बहुत हैं किन्तु विदोहन कम हुआ है—

(क) जापान, (ख) फ्रांस, (ग) भारत, (घ) स्विट्जरलैण्ड। (1984)

उत्तर—(ग) भारत।

प्रश्न 4. योजना लाभदायक है— (1985)

(क) केवल कुछ व्यक्तियों के लिए,

(ख) केवल एक जाति के लोगों के लिए,

(ग) सम्पूर्ण देशवासियों के लिए,

(घ) केवल पूंजीपति एवं धनी व्यक्तियों के लिए।

उत्तर—(ग) सम्पूर्ण देशवासियों के लिए।

2 प्राकृतिक संसाधन और उनका विकास (1)
[भूमि तथा खनिज]

अति लघु उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1. भूमि का क्या अर्थ है ? (1985)

उत्तर—अर्थशास्त्र में भूमि शब्द को व्यापक अर्थों में प्रयोग किया जाता है। परन्तु यहाँ इस अध्याय में भूमि का अर्थ भूमि के धरातल से है। इसमें देश में मिलने वाली विभिन्न मिट्टियों को सम्मिलित किया गया है।

प्रश्न 2. भारत की भूमि का कितना क्षेत्रफल कृषि कार्यों तथा वन में लगा है ?

उत्तर—भारत की भूमि का क्षेत्रफल 46·1% कृषि कार्यों तथा 22% वनों में लगा है।

प्रश्न 3. भारत की किन्हीं दो प्रकार की मिट्टियों के नाम दो।

उत्तर—भारत की दो मिट्टियों के नाम (i) काली मिट्टी, (ii) लाल मिट्टी है।

प्रश्न 4. भूमि कटाव के प्रकार बताइए। (1987)

उत्तर—भूमि कटाव तीन प्रकार का होता है—

(1) धरातलीय या पर्तदार कटाव,

(2) कछार वाला कटाव,

(3) वायु का कटाव।

प्रश्न 5. भूमि कटाव के तीन दोष बताइए।

उत्तर—भूमि कटाव के तीन दोष निम्नलिखित हैं—

(1) भूमि की उत्पादकता घट जाना,

(2) खेती के लिए भूमि बेकार हो जाना,

(3) नदियों में मिट्टी भर जाने से सिंचाई में कठिनाई होना।

प्रश्न 6. भारत के खनिज पदार्थों में धनी राज्यों के नाम बतलाइये। (1987)

उत्तर—भारत में खनिज पदार्थों की दृष्टि से निम्नलिखित राज्यों को धनी राज्य कहा जाता है।

(1) असम, (2) बिहार, (3) गुजरात, (4) मध्यप्रदेश, (5) पश्चिमी बंगाल।

प्रश्न 7. खनिज पदार्थों के चार आर्थिक महत्व बताइये। (1986)

6. पहाड़ी मिट्टी—यह मिट्टी पर्वतों में पाई जाती है। हिमालय क्षेत्र में इस प्रकार की मिट्टी अधिक पाई जाती है। इसका रूप और गुण ऊँचाई के कारण भिन्न-भिन्न होता है। हिमालय की घाटियाँ और पहाड़ी भागों में मिलने वाली मिट्टियों में आलू व धान की खेती की जाती है। नीलगिरि पहाड़ पर भी इस प्रकार की मिट्टी पाई जाती है।

क्षेत्र—पर्वतीय क्षेत्र में हिमालय के पहाड़ी भाग, विन्ध्य प्रदेश, नीलगिरि पर्वत आदि पर यह मिट्टी पाई जाती है।

आर्थिक महत्व—यह मिट्टी चाय की खेती के लिए सबसे अधिक अच्छी होती है क्योंकि इस मिट्टी में लोहे के अंश की मात्रा अधिक होती है। यही कारण है कि पर्वतीय भागों में चाय अधिक होती है।

प्रश्न 2. भारत सरकार की खनिज नीति का वर्णन कीजिए।

उत्तर—देश की आर्थिक उन्नति में खनिज पदार्थों का विशेष महत्वपूर्ण स्थान है। सन् 1948 ई० में भारत सरकार ने खान एवं खनिज व्यवस्था तथा विकास अधिनियम पारित किया तथा 'खनिज संस्थान' की स्थापना की और 'जियोलोजीकल सर्वे आफ इण्डिया' का विस्तार किया। अनेकों प्रकार के खनिजों की खोज की गयी तथा विकास हेतु 1952 ई० में देश की खनिज नीति की घोषणा की गयी। सरकार के द्वारा खनिज विकास के लिए निम्नलिखित प्रयास किये गए हैं—

(1) देश के विभिन्न खनिजों का सर्वेक्षण करना।
(2) परमाणु शक्ति आयोग की स्थापना।
(3) तेल एवं प्राकृतिक गैस आयोग की स्थापना।
(4) कोयला विभाग का संगठन।
(5) महत्वपूर्ण खनिजों पर सरकारी नियन्त्रण।
(6) सैनिक महत्व के खनिजों का विकास।
(7) खनन क्रिया में सुधार।
(8) हवाई सर्वेक्षण।

प्रश्न 3. भारत के निम्नलिखित खनिज पदार्थों का विवरण दें—
(1) कच्चा लोहा,
(2) अभ्रक,
(3) मैंगनीज।

उत्तर—(1) **कच्चा लोहा**—वर्तमान युग में लोहे का अत्यधिक महत्व है। आज के युग में सभी कार्य मशीनों तथा यन्त्रों के द्वारा किए जाते हैं। भारत में विश्व का 25% अथवा एक चौथाई लौह भण्डार पाया जाता है। भारत अन्य देशों को लोहे का निर्यात करता है। लोहे के उत्पादन क्षेत्र उड़ीसा, बिहार, मध्य प्रदेश, आन्ध्र प्रदेश, महाराष्ट्र तथा मैसूर हैं।

(2) **अभ्रक**—विश्व के अभ्रक उत्पादन में भारत का प्रथम स्थान है। विश्व की 80 प्रतिशत आवश्यकता की पूर्ति अकेले भारत करता है। यह एक उपयोगी खनिज पदार्थ है! बेतार के तार, रेडियो, हवाई जहाज तथा मोटर गाड़ियों में इसका बहुत प्रयोग होता है। अभ्रक के उत्पादन क्षेत्र बिहार, राजस्थान, आन्ध्र प्रदेश, मैसूर तथा उड़ीसा और केरल आदि हैं, बिहार राज्य में सबसे अधिक अभ्रक का उत्पादन होता है।

(4) मैंगनीज—मैंगनीज एक मूल्यवान धातु है। मैंगनीज में भारत का विश्व में तीसरा स्थान है। इसका उपयोग कीट नाशक दवाओं आदि के बनाने में होता है। यह भूरे रंग का होता है। भारत से लगभग 5 प्रतिशत मैंगनीज का निर्यात होता है। मैंगनीज उड़ीसा, कर्नाटक, महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश तथा राजस्थान आदि में पाया जाता है।

बहु विकल्पीय प्रश्न

सही विकल्प का चयन कीजिए—

प्रश्न 1. भारत किस खनिज के उत्पादन में विश्व में प्रथम स्थान पर है— (1987)

(क) मैंगनीज, (ख) अभ्रक, (ग) ताँबा, (घ) सोना।

उत्तर—(ख) अभ्रक।

प्रश्न 2. निम्नांकित में से कौन सा राज्य अभ्रक उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है? (1987, 89)

(क) राजस्थान, (ख) बिहार, (ग) आन्ध्र प्रदेश, (घ) मध्य प्रदेश।

उत्तर—(ग) बिहार।

प्रश्न 3. निम्नांकित में से कौन सा राज्य मैंगनीज उत्पादन में अग्रणी है— (1988, 89)

(क) तमिलनाडु, (ख) राजस्थान, (ग) उड़ीसा, (घ) मध्य प्रदेश।

उत्तर—(ग) उड़ीसा।

प्रश्न 4. मैंगनीज उत्पादन में भारत का स्थान है— (1988)

(क) प्रथम, (ख) तृतीय, (ग) पाँचवाँ, (घ) सातवाँ।

उत्तर—(ख) तृतीय।

प्रश्न 5. कोयले की प्रसिद्ध खान है— (1985)

(क) कोलार, (ख) खेतड़ी, (ग) झरिया, (घ) वोम्बे हाई।

उत्तर—(ग) झरिया।

प्रश्न 6. कालीमिट्टी में सबसे अच्छा उत्पादन होता है—

(क) गेहूँ, (ख) कपास, (ग) चावल, (घ) चाय।

उत्तर—(ख) कपास।

प्रश्न 7. तेल व प्राकृतिक गैस आयोग की स्थापना हुई थी— (1991)

(क) 1956, (ख) 1947, (ग) 1962, (घ) 1976।

उत्तर—(क) 1956।

3 प्राकृतिक संसाधन और उनका विकास (2)

[जल तथा शक्ति के साधन]

अति लघु उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1. भारत के जल संसाधनों को कितने भागों में बाँटा जाता है ?

उत्तर—भारत के जल संसाधनों को दो भागों में विभाजित किया गया है—

(1) भूस्तरीय जल और

(2) भूगर्भ जल या भूमिगत जल ।

प्रश्न 2. भूस्तरीय जल का क्या अर्थ होता है ? (1989)

उत्तर—वर्षा के द्वारा अथवा बर्फ के पिघलने से नदियों में आने वाले जल को भूस्तरीय जल कहते हैं ।

प्रश्न 3. भारत में तीन शक्ति के साधनों का नाम बताइए ।

उत्तर—भारत में तीन शक्ति के साधन इस प्रकार हैं—

(1) कोयला, (2) खनिज तेल, और (3) जल-शक्ति ।

प्रश्न 4. बहुधन्धी नदी घाटी योजना क्या होती है ? (1989)

उत्तर—बहुधन्धी नदी घाटी योजनाएँ वे योजनाएँ हैं, जिनका प्रयोग अनेक कार्यों में किया जाता है । इसमें जल शक्ति को अनेक कार्यों में प्रयोग किया जाता है।

प्रश्न 5. बहुधन्धी नदी घाटी योजना के चार उद्देश्य बताइए । (1988, 90)

उत्तर—बहुधन्धी नदी घाटी योजना के चार उद्देश्य इस प्रकार हैं—

(1) घरेलू उपयोग के लिए जल व्यवस्था,

(2) सिंचाई के लिए प्रबन्ध,

(3) पशुओं के लिए चारा जुटाना, और

(4) बाढ़ को रोकना ।

प्रश्न 6. देश की चार प्रमुख बहुधन्धी योजनाओं के नाम लिखिए । (1988)

उत्तर—देश की चार प्रमुख बहुधन्धी योजनाओं के नाम इस प्रकार हैं—

(1) भाखड़ा नांगल योजना, (2) दामोदर नदी घाटी योजना

(3) कोसी योजना, तथा (4) व्यास योजना ।

प्रश्न 7. नरोरा परमाणु केन्द्र कहां है ? (1987)

उत्तर—नरोरा परमाणु केन्द्र उत्तर प्रदेश में गंगा नदी के किनारे नरोरा पर बनाया गया है ।

प्रश्न 8. जल संसाधन में भारत का विश्व में कौन सा स्थान है ?

उत्तर—जल संसाधन में भारत का विश्व में छठा स्थान है ।

बोर्ड परीक्षा में पूछे गये महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न 1. भारत में तेल उत्पादन करने वाले दो प्रमुख क्षेत्रों के नाम बताइये। (1988)

उत्तर—(1) अंकलेश्वर (गुजरात), (2) बोम्बे हाई (महाराष्ट्र)।

प्रश्न 2. नलकूपों द्वारा सर्वाधिक सिंचाई किस प्रदेश में होती है ? (1988)

उत्तर—उत्तर प्रदेश में।

प्रश्न 3. भारत में दो प्रसिद्ध कोयले की खानों के नाम बताइये। (1987, 89)

उत्तर—(1) झरिया, (2) धनबाद (बिहार)।

प्रश्न 4. भारत के दो परमाणु केन्द्रों के नाम तथा उन राज्यों के नाम बताइए जहाँ वे स्थित हैं। (1988, 90)

उत्तर—(1) नरौरा परमाणु केन्द्र (उत्तर प्रदेश में), (2) राजस्थान परमाणु शक्ति केन्द्र कोटा (राजस्थान)।

प्रश्न 5. उत्तरी भारत में सिंचाई के एक प्रमुख साधन का नाम तथा उसके विकास कारण लिखिए। (1984)

उत्तर—उत्तरी भारत में सिंचाई का प्रमुख साधन नहरें हैं। इस प्रदेश में नहरों के विकास का मुख्य कारण समतल भूमि एवं हिमालय से निकलने वाली सदा-वाहिनी नदियाँ हैं।

प्रश्न 6. भारत का प्रथम परमाणु विस्फोट कहाँ हुआ था ? (1984, 87)

उत्तर—राजस्थान के जैसलमेर जिले के पोखरन नामक स्थान पर।

प्रश्न 7. उत्तर प्रदेश की चार ताप विद्युत योजनाओं के नाम लिखो। (1989)

उत्तर—(1) ओबरा थर्मल स्टेशन, (2) टाँडा थर्मल स्टेशन, (3) अन्पारा थर्मल स्टेशन, (4) सिगरोली थर्मल स्टेशन।

प्रश्न 8. अपने प्रदेश की एक बहु-उद्देशीय नदी घाटी योजना का नाम लिखिए। (1986, 89)

उत्तर—रिहन्द बाँध परियोजना—यह मिर्जापुर जिले में रिहन्द नदी पर बाँध बनाकर तैयार की गई है।

लघु उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1. भारत में भूमिगत जल का विवरण दीजिए। (1985)

उत्तर— जो पानी नदी-नालों के द्वारा रिस कर भूमि के अन्दर पहुँच जाता है उसे भूमिगत जल कहा जाता है। इस भूमिगत जल को कुओं तथा नलकूपों से प्राप्त करके इसे अनेक उपयोगी कार्यों में लगाया जाता है। भूमिगत जल के उपयोग करने योग्य देश के कुल भण्डार 270 लाख हेक्टेयर मीटर है। जब भूमिगत जल का अत्यधिक उपयोग किया जाता हैं तो कुओं का जल-स्तर अधिक नीचा हो जाता है। इस परिस्थिति में उथले कुएँ सूख जाते हैं। इसी कारण यह आवश्यक है कि इस जल का प्रयोग अत्यन्त सावधानी से किया जाए। जलपूर्ति का प्रबन्ध अन्य स्रोतों से किया जाना चाहिए। भारत में जल संसाधनों का उचित प्रयोग नहीं किया जाता है। इसी कारण यह आवश्यक है कि देश के आर्थिक विकास के लिए देश में उपलब्ध जल संसाधनों का प्रयोग वैज्ञानिक ढंग से किया जाए।

प्रश्न 2. भारत में शक्ति के साधन का महत्व बताइए। (1987, 89)

उत्तर—शक्ति के साधन का महत्व

भारत में शक्ति के साधनों का निम्नलिखित महत्व है—

(1) कृषि क्षेत्र—भारत में कृषि क्षेत्र में ट्यूबवैल, ट्रेक्टर तथा अन्य उपकरणों के प्रयोग में शक्ति के साधनों का उपयोग किया जाता है।

(2) उद्योगों के क्षेत्र में—शक्ति साधन उद्योगों के आधार हैं क्योंकि कोयला, विद्युत तथा डीजल आदि के द्वारा ही उद्योग चलाये जाते हैं।

(3) परिवहन के क्षेत्र में—मोटर, रेल, वायुयान, जलयान आदि परिवहन के साधन पेट्रोलियम (खनिज तेल) द्वारा ही चलाये जाते हैं।

(4) दैनिक जीवन में महत्व—हमारे दैनिक जीवन में कोयला, बिजली, खनिज तेल एवं गैस का अधिक महत्व है।

प्रश्न 3. भारत में कोयले के क्षेत्र तथा भण्डार बताइए। (1985, 88)

उत्तर—भारत में कोयले के क्षेत्र तथा भण्डार

कोयला भारत का सबसे महत्वपूर्ण खनिज पदार्थ है। भारत में कोयले की उपलब्ध राशि बड़ी विशाल बतायी जाती है। प्रसिद्ध भूगर्भ वेत्ता सी० एम० फॉक्स के अनुसार भारत में कोयले की उपलब्ध राशि लगभग 8150 करोड़ मी० टन है। लेकिन कोक बनाने योग्य केवल 285 करोड़ मी० टन के लगभग है। भारतीय भू-विज्ञान सर्वेक्षण संस्था के अनुसार भारत में सब प्रकार के कोयले का भण्डार लगभग 8095 करोड़ मी० टन है। भारत के कोयले के दो प्रमुख क्षेत्र हैं—

(1) गोंडवाना क्षेत्र, (2) टरशरी क्षेत्र।

(1) गोंडवाना क्षेत्र—इसमें निम्नलिखित कोयले की खानें सम्मिलित की जाती हैं—

(क) दामोदर घाटी का क्षेत्र—इसमें झरिया, रानीगंज, बोकारो, गिरडीह तथा कर्णपुरा की खानें आती हैं। भारत का 90 प्रतिशत कोयला इन्हीं खानों में निकाला जाता है।

(ख) गोदावरी घाटी का क्षेत्र—इसमें सिंगरेनी की खानें आती हैं।

(ग) इसमें महानदी और सोन नदी की घाटियों का क्षेत्र आता है।

(2) टरशरी क्षेत्र—इसमें असम, जम्मू, बीकानेर आदि के कोयला क्षेत्र आते हैं।

भारत में कोयला क्षेत्रों का विभाजन राज्यों के आधार पर भी किया जा सकता है। कोयले उत्पादन में बिहार का प्रथम स्थान है। झरिया, बोकारो, गिरडीह कर्णपुरा, डाल्टनगंज तथा रामगढ़ की प्रसिद्ध खानें यहीं हैं। दूसरा स्थान पश्चिमी बंगाल का है। रानीगंज यहाँ का प्रमुख कोयला क्षेत्र है। उड़ीसा की ताल-चीर तथा सम्भलपुर की खानें प्रसिद्ध हैं। आन्ध्र की सिंगरेनी की तथा मध्य प्रदेश की बलापुर, सिंगरौली, पेंचघाटी की कोयले की खानें प्रसिद्ध हैं। असम राज्य का अधिकांश कोयला मद्रास और लखीमपुर की खानों से निकाला जाता है। जम्मू राज्य से एन्थ्रेसाइट नामक कोयला निकाला जाता है। मद्रास में न्निवेली नामक स्थान पर लिग्नाइट कोयला निकाला जाता है।

प्रश्न 4. भारत में परमाणु केन्द्रों का विवरण दीजिए। (1987, 88)

उत्तर—परमाणु केन्द्र

परमाणु शक्ति का प्रयोग अनेक कार्यों में किया जाता है। परन्तु भारत में परमाणु शक्ति का प्रयोग केवल शान्तिमय उद्देश्यों के लिए किया जाता है। भारत में परमाणु शक्ति का विकास आरम्भ करने का श्रेय (स्व० एच० ज़े० भाभा) को जाता है। 1948 में उन्हीं के प्रयास से परमाणु ऊर्जा आयोग की स्थापना की गई थी। 1954 में ट्राम्बे परमाणु ऊर्जा संस्थान खोला गया। आजकल इसका नाम भाभा परमाणु अनुसन्धान केन्द्र है।

भारत में निम्नलिखित परमाणु केन्द्रों की स्थापना की गई है—

(1) **तारापुर परमाणु केन्द्र**—यह भारत का पहला परमाणु केन्द्र है जो बम्बई के पास अरब सागर के तट पर बसे तारापुर गाँव में बना है। इसकी स्थापना में अमरीकी परमाणु शक्ति आयोग ने सहायता की थी।

(2) **राजस्थान परमाणु शक्ति केन्द्र**—यह केन्द्र राजस्थान में कोटा नगर के चम्बल नदी पर बने राणा प्रताप सागर जलाशय के किनारे बनाया गया है। इसमें रूस ने सहायता की थी।

(3) **मद्रास परमाणु शक्ति केन्द्र**—देश का तीसरा परमाणु केन्द्र मद्रास प्रदेश में कालापक्कम नामक स्थान पर बना है।

(4) **नरौरा परमाणु शक्ति केन्द्र**—इसे उत्तर प्रदेश में गंगा नदी के किनारे नरौरा पर बनाया गया है। इस विद्युत गृह के लिए ईंधन देश में ही तैयार होगा।

बोर्ड में पूछे गये अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न 1. अपने देश के प्रमुख चार शक्ति के साधनों का नाम बताइए। (1990)

उत्तर—चार शक्ति के साधन—(i) कोयला (ii) खनिज तेल (iii) जल विद्युत (iv) परमाणु शक्ति।

प्रश्न 2. भूमिगत जल का सीमित ढंग से उपयोग करना क्यों उचित है? (1990)

उत्तर—भूमिगत जल का भण्डार सीमित है। इसको अधिक उपयोग करने से जल स्तर नीचे बैठ जाता है। कूये सूख जाते हैं और अकाल पड़ने की सम्भावना रहती है जिससे जीवन कष्टमय बन जाता है।

प्रश्न 3. कोयले की उपयोगिता बताइए। (1984)

उत्तर—कोयले की उपयोगिता—(1) कोयला औद्योगिक ईंधन के रूप में अधिक महत्वपूर्ण है।

(2) कोयले से अनेक वस्तुएँ जैसे बटन, नाइलोन आदि तैयार होता है।

(3) कोयला घरों में ईंधन के रूप में प्रयोग होता है।

(4) कोयलें से रेलें चलती हैं।

(5) इस्पात बनाने में इसका महत्वपूर्ण स्थान है।

(6) कोयले से खाद एवं अन्य रासायनिक पदार्थ तैयार किये जाते हैं।

प्रश्न 4. शक्ति के साधनों में तेल व कोयला की अपेक्षा जलशक्ति को अधिक महत्व क्यों दिया गया है? (उ० प्र० 1984)

उत्तर—कोयला तथा खनिज के भण्डार समाप्त हो सकते हैं किन्तु जलशक्ति समाप्त नहीं होती। यह कोयला तथा खनिज तेल की तुलना में सस्ता साधन है।

कोयला तथा खनिज तेल के प्रयोग से प्रदूषण फैलता है किन्तु जल शक्ति इस दोष से मुक्त है। अतः यह एक महत्वपूर्ण शक्ति का साधन है।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. भारत के जल संसाधनों का महत्व तथा भेदों पर लेख लिखिए।

उत्तर—भारत के जल संसाधनों का महत्व

जल-विद्युत भारत के आर्थिक विकास में निम्न प्रकार सहायक होती है—

(1) **शक्ति का सस्ता साधन**—जल-विद्युत की उत्पादन लागत अन्य सभी साधनों की तुलना से कम बैठती है। फिर इसे एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने में बहुत कम व्यय बैठता है।

(2) **अविरल साधन**—जल-विद्युत शक्ति का एक अविरल साधन है जिसके कम होने की कोई आशंका नहीं, जबकि अन्य साधन जैसे—कोयला, तेल आदि कभी भी समाप्त हो सकते हैं।

(3) **बहुउद्देशीय**—जल-विद्युत योजनाएँ बहुउद्देशीय होती हैं। इनसे विद्युत उत्पन्न करने के अतिरिक्त बाढ़ रोकने, सिंचाई करने, मछली पालने, नौका परिवहन आदि में भी सहायता मिलती है।

(4) **विद्युतीकरण**—सस्ती होने के कारण जल-विद्युत से देश के विद्युतीकरण में सहायता मिलती है। बिजली को गाँवों तक पहुँचाया जा सकता है। इससे गाँवों का विकास होता है। कुटीर उद्योग-धंधे तथा कृषि-विकास में सहायता मिलती है। इससे ग्रामीण जनता का जीवन-स्तर ऊँचा उठता है। जल-विद्युत के विकास के कारण 1980 तक लगभग 2·60 लाख गाँवों को बिजली दी जा चुकी थी।

(5) **औद्योगीकरण में सहायक**—जल-विद्युत से औद्योगिक विकास में अत्यधिक सहायता मिलती है।

(6) **परिवहन व संचार सेवाओं का विस्तार**—जल विद्युत से रेलें चलाने तथा टेलीफोन सेवाओं का विस्तार करने में बड़ी सहायता मिलती है।

(7) **स्वास्थ्यप्रद**—जल विद्युत शक्ति का एक साफ-सुथरा साधन है। इससे स्वास्थ्य पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता। इसके विपरीत कोयला तथा तेल से धुआँ और हानिप्रद गैसें निकलती हैं।

(8) **रहन-सहन के स्तर में वृद्धि**—जल-शक्ति के प्रयोग से जन-साधारण का जीवन स्तर ऊँचा होता है। लोग अनेक प्रकार की आराम देने वाली वस्तुओं, जैसे—रेडियो, पंखा, कूलर, टेलीविजन, रेफ्रीजरेटर, हीटर, आदि का प्रयोग करने लगते हैं।

भारत के जल संसाधनों को 2 भागों में विभाजित किया जा सकता है—

(1) **भूस्तरीय जल**—वर्षा के द्वारा अथवा बर्फ पिघलने से नदियों में आने वाले जल को भूस्तरीय जल कहते हैं।

(2) **भूमिगत जल**—नदियों तथा नालों का पानी जो रिस कर जमीन के अन्दर पहुँच जाता है, उसे भूमिगत जल कहते हैं। इस भूमिगत जल को कुओं तथा नलकूपों के द्वारा प्राप्त करके अनेक प्रकार से उपयोग करके जल की कमी पूरी की जाती है।

प्रश्न 2. भारत में शक्ति के प्रमुख साधनों का विवरण दीजिए।

उत्तर—शक्ति के प्रमुख साधन

भारत में शक्ति के प्रमुख साधन निम्नलिखित हैं—

(1) कोयला,
(2) खनिज तेल,
(3) जल शक्ति तथा
(4) परमाणु शक्ति।

(1) कोयला—कोयला शक्ति प्राप्त करने अथवा औद्योगिक ईंधन का सबसे प्रमुख तथा बड़ा साधन है। कोयला जलाने के काम आता है और इस्पात बनाने में कच्चे माल का काम देता है। भारत में अभी भी अधिकांश रेलें कोयले से चलती हैं।

(2) खनिज तेल—खनिज तेल शक्ति प्राप्त करने का द्वितीय महत्वपूर्ण साधन है। इसका प्रयोग मशीनें चलाने, रेल, बस और ट्राम आदि चलाने में किया जाता है। पैट्रोलियम से अन्य पदार्थ तैयार किए जाते हैं। देश की सुरक्षा की दृष्टि से इसका विशेष महत्व है।

(3) जल शक्ति—जल विद्युत शक्ति गिरते हुए जल की शक्ति के प्रयोग से निर्मित होती है। यह शक्ति अन्य प्रकार की शक्तियों से सस्ती होती है। इसी कारण इसका उपयोग बढ़ता जा रहा है।

(4) परमाणु शक्ति—परमाणु शक्ति का प्रयोग निर्माण कार्य तथा नष्ट करने में किया जाता है। भारत में 4 परमाणु केन्द्र हैं—

(1) तारापुर परमाणु केन्द्र,
(2) राजस्थान परमाणु शक्ति केन्द्र,
(3) मद्रास परमाणु शक्ति केन्द्र तथा
(4) नरोरा परमाणु शक्ति केन्द्र।

प्रश्न 3. बहुउद्देशीय योजनाएँ क्या हैं? भारत की प्रमुख बहुउद्देशीय योजनाओं का वर्णन कीजिए तथा इनका महत्व बताइये। (1988, 90, 91)

उत्तर—जल शक्ति को अनेक प्रयोगों में लाने के लिए बहुउद्देशीय नदी घाटी योजनाओं का निर्माण किया गया है। इनको बहुउद्देशीय योजनाएँ इस कारण कहा जाता है क्योंकि इनको अनेकों कार्यों में लाया जाता है।

इनसे निम्नलिखित लाभ हैं—

(1) घरेलू उपयोग के लिए जल की व्यवस्था।
(2) सस्ती जल विद्युत का उत्पादन।
(3) सिंचाई के लिए महत्वपूर्ण।
(4) पशुओं के लिए चारे का प्रबन्ध।
(5) बाढ़ों पर नियन्त्रण।
(6) नौका विहार।
(7) मत्स्य पालन।
(8) कृषि योग्य भूमि तैयार करना।
(9) प्राकृतिक सौन्दर्य के केन्द्र।

भारत की प्रमुख बहुउद्देशीय योजनाएँ निम्नलिखित हैं—

(1) भाखड़ा-नांगल योजना—भाखड़ा बाँध के दोनों ओर दो बिजलीघर

बनाये गये हैं। इसी प्रकार नांगल हाइडल नहर पर गंगूवाल तथा कोटला नामक स्थानों पर दो बिजलीघर बनाये गये हैं। भाखड़ा के बायीं ओर के बिजली घर तथा गंगूवाल और कोटला के तीनों बिजली घरों की उत्पादन क्षमता 6 लाख किलोवाट है। अब भाखड़ा के दायीं ओर बने बिजली घर ने भी जल-विद्युत का उत्पादन आरम्भ कर दिया है।

(2) **व्यास योजना**—व्यास-सतलज लिंक पर पण्डोह नामक स्थान पर तथा पौंग नामक स्थान पर दो बिजली घरों की स्थापना की जा रही है, जिससे क्रमशः 660 मेगावाट तथा 240 मेगावाट बिजली उत्पन्न होगी।

(3) **थीन-बाँध योजना**—पंजाब में रावी नदी पर एक विशाल बाँध बनाया जा रहा है। इसकी बायीं ओर एक बिजली घर बनाया जायगा जिसकी जल-विद्युत उत्पादन क्षमता लगभग 480 मेगावाट होगी।

(4) **दामोदर घाटी योजना**—इस परियोजना के अन्तर्गत चार बाँध-तिलैया, कोनार, माईथान व पंचेट तथा तीन जल-विद्युत स्टेशन तिलैया, माईथान व पंचेट पर तथा तीन ताप विद्युत गृह बोकारो, चन्द्रपुर व दुर्गापुर में बनाये गये हैं। इनकी बिजली उत्पादन करने की क्षमता 118.1 मेगावाट है।

(5) **रिहन्द योजना**—उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले में रिहन्द नदी पर पिपरी नामक स्थान पर एक विशाल बाँध तथा एक बिजली घर बनाया गया है। इसकी 50-50 मेगावाट की 63 इकाइयाँ चालू की जा चुकी हैं।

(6) **चम्बल परियोजना**—इस योजना के अन्तर्गत प्रथम चरण में गांधी सागर बाँध तथा 115 मेगावाट की क्षमता वाला एक बिजली घर बनाया गया। दूसरे चरण में राणाप्रताप बाँध तथा 172 मेगावाट की क्षमता वाला एक बिजली घर बनाया गया। तीसरे चरण में जवाहर सागर बाँध तथा 99 मेगावाट की क्षमता वाला एक बिजली घर बनाया गया है। अभी इस योजना पर कार्य चालू है।

(7) **कोसी परियोजना**—पूर्वी कोसी नहर पर एक बिजली घर बनाया जा रहा है जिससे 50 हजार किलोवाट बिजली उत्पन्न होगी।

(8) **हीराकुण्ड बाँध परियोजना**—उड़ीसा में हीराकुण्ड बाँध संसार का सबसे ऊँचा बांध है। इस परियोजना के अन्तर्गत बनाये गये बिजली घरों की उत्पादन क्षमता 270·2 मेगावाट है।

(9) **रामगंगा परियोजना**—उत्तर प्रदेश के गढ़वाल जिले में कालागढ़ के पास रामगंगा पर बाँध तथा उसके पास एक बिजली घर बनाया गया है जिसकी उत्पादन क्षमता 198 मेगावाट बिजली होगी।

(10) **तावा परियोजना**—मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले में नर्मदा की सहायक तावा नदी पर एक बाँध तथा दो बिजली घरों का निर्माण किया जा रहा है जिनसे 42 मेगावाट बिजली उत्पन्न होगी।

बहु विकल्पीय प्रश्न

सही विकल्प चुनिए—

प्रश्न 1. तेल शोधक कारखाना उत्तर प्रदेश में स्थित है— (1987)

(क) मथुरा, (ख) इलाहाबाद, (ग) आगरा, (घ) मेरठ।

उत्तर—(क) मथुरा।

प्रश्न 2. तेल व प्राकृतिक गैस आयोग की स्थापना कब हुई— (1991)
(क) 1947, (ख) 1956, (ग) 1962, (घ) 1974।
उत्तर—(ख) 1956।
प्रश्न 3. दक्षिणी भारत में सिंचाई का मुख्य साधन कौन सा है ? (1985)
(क) नहरें, (ख) कूए, (ग) तालाब, (घ) नलकूप।
उत्तर—(ग) नलकूप।
प्रश्न 4. भारत में परमाणु शक्ति का केन्द्र निम्नांकित में से किस स्थान पर है ? (1987)
(क) जमशेदपुर, (ख) तारापुर, (ग) कानपुर, (घ) नागपुर।
उत्तर—(ख) तारापुर।
प्रश्न 5. भाखड़ा बाँध जिस नदी पर बना है उसका नाम छाँटकर लिखिए— (1989)
(क) सतलज, (ख) व्यास, (ग) रिहन्द, (घ) चिनाव।
उत्तर—(क) सतलज।

4 प्राकृतिक संसाधन और उनका विकास (3)

[वन तथा पशुधन]

राष्ट्रीयकृत पाठ्यपुस्तक में दिये गये प्रश्नों के उत्तर

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. अपने देश में वनों का राष्ट्रीय आय में क्या योगदान है ? (1990)
उत्तर—सरकार को वनों का उपयोग करने से राजस्व तथा नीलामी/रायल्टी के रूप में करोड़ों रु० प्राप्त होते हैं। राष्ट्रीय आय में वनों का 1% योगदान है।

प्रश्न 2. भारत के अधिकांश वन किन क्षेत्रों में हैं ?
उत्तर—भारत में अधिकांश वन पहाड़ी क्षेत्रों में हैं। यहाँ असम और मध्य-प्रदेश में अधिक वन पाए जाते हैं।

प्रश्न 3. भारत में कितने प्रकार के वन पाए जाते हैं ?
उत्तर—भारत में छः प्रकार के वन पाए जाते हैं—
(1) सदाबहार वन, (2) मानसूनी वन, (3) शुष्क वन, (4) पर्वतीय वन, (5) नदी तट के वन और, (6) डेल्टाई वन।

प्रश्न 4. सदाबहार वन किसे कहते हैं ?
उत्तर—भारत में जहाँ 200 सेमी से अधिक वर्षा होती है, ऐसे वृक्ष उगते हैं जो सदा हरे-भरे रहते हैं। इन वनों में विभिन्न प्रकार के पेड़ पाए जाते हैं। इनकी ऊँचाई 45 से 90 मीटर तक होती है। अत्यधिक वर्षा तथा तापक्रम के कारण यह वन बहुत घने होते हैं। इन वनों के पेड़ों की पत्तियाँ चौड़ी होती हैं तथा पेड़ पत्तियों

से लदे रहते हैं। पेड़ों के बीच छोटे-छोटे पौधे तथा बेलें उग आती हैं। इनके कारण ये वन और अधिक घने हो जाते हैं।

प्रश्न 5. भारतीय वनों की चार विशेषताएँ बताइए। (1985, 90)

उत्तर—भारतीय वनों की चार विशेषताएँ इस प्रकार हैं—

(1) वनों का क्षेत्रफल काफी कम है।

(2) जलवायु की भिन्नता के कारण भारत में अनेक प्रकार के वन पाए जाते हैं।

(3) मानसूनी वनों में एक बार पतझड़ अवश्य होता है।

(4) देश के विभिन्न राज्यों में वन क्षेत्र का वितरण एक समान नहीं है।

प्रश्न 6. वनों के पाँच प्रत्यक्ष और पाँच परोक्ष लाभ बताइए। (1985)

उत्तर—वनों के प्रत्यक्ष लाभ

वनों से प्रत्यक्ष लाभ इस प्रकार हैं—

(1) वनों से जड़ी बूटियाँ प्राप्त होती हैं जिनसे औषधियाँ बनाई जाती हैं।

(2) बनों से बहुमूल्य लकड़ी प्राप्त होती है। इनका प्रयोग विभिन्न कार्यों के लिए किया जाता है।

(3) वनों से राज्य सरकारों को आय प्राप्त होती है।

(4) वनों से उद्योग-धन्धों के लिए कच्चा माल मिलता है।

(5) वनों से विभिन्न प्रकार के पक्षी मिलते हैं।

वनों से परोक्ष लाभ—

वनों से परोक्ष लाभ इस प्रकार हैं—

(1) वन किसी प्रदेश के तापमान में कमी करते हैं।

(2) वन बाढ़ की रोकथाम करते हैं।

(3) वन वर्षा करने में सहायक होते हैं।

(4) वन मिट्टी उपजाऊ बनाते हैं।

(5) वन हवा के वेग में कमी लाते हैं।

प्रश्न 7. वनों के विकास के लिए सरकार के द्वारा किए गए किन्हीं चार प्रयासों का नामोल्लेख कीजिए। (1989)

उत्तर—वनों के विकास के लिए सरकार ने निम्नलिखित चार प्रयास किए हैं—

(1) वन महोत्सव का आयोजन प्रति वर्ष किया जाता है।

(2) केन्द्रीय वन आयोग की स्थापना की गई है।

(3) देहरादून में वन अनुसन्धान संस्थान स्थापित किया गया है।

(4) वनों में सर्वेक्षण कार्य किया जा रहा है।

परीक्षोपयोगी एवं बोर्ड परीक्षा में पूछे गये अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न 1. वन अनुसन्धान कहाँ स्थित है? (1989)

उत्तर—देहरादून (उत्तर प्रदेश) में

प्रश्न 2. पशुओं पर आधारित दो उद्योग बताइए। (1989)

उत्तर—(1) चमड़ा उद्योग, (2) दुग्ध व्यवसाय।

प्रश्न 3. वन महोत्सव क्या है? यह कब चालू किया गया? (1991)

उत्तर—'अधिक वृक्ष लगाओ' आन्दोलन वन महोत्सव कहलाता है। इसका सूत्रपात सन् 1950 में श्री के० एम० मुन्शी द्वारा हुआ था।

प्रश्न 4. 'आपरेशन फ्लड' क्या है ? (1991)

उत्तर—यह भारत सरकार द्वारा 48·5 करोड़ की लागत से चलाई गई दुग्ध विकास परियोजना है।

प्रश्न 5. केन्द्रीय वन आयोग की स्थापना कब हुई थी ? (1987)

उत्तर—सन् 1965 ई० में।

प्रश्न 6. भारत के उस प्रदेश का नाम लिखिए जहाँ अधिकांश कटीले वन पाए जाते हैं ? (1988)

उत्तर—राजस्थान।

प्रश्न 7. भारत की उस भेड़ का नाम उल्लेख कीजिए जिससे उत्तम प्रकार की ऊन प्राप्त होती है। (1986)

उत्तर—बीकानेरी भेड़।

प्रश्न 8. निम्नांकित क्षेत्रों में किस प्रकार के वृक्षों के जंगल पाए जाते हैं ? (क) मरुस्थलीय प्रदेश, (ख) मानसूनी प्रदेश।

उत्तर—(क) मरुस्थलीय प्रदेश—इनमें कटीले वन जैसे कीकड़, बबूल, नागफनी, बेर, खजूर आदि के वृक्ष उगते हैं।

(ख) मानसूनी वन—इनमें पर्णपाती वन जैसे सागोन, आम, शीशम, चन्दन, सेमल, तल्पू, आदि के वृक्ष उगते हैं।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. भारत में वनों का वितरण असमान है, कैसे ? (1986)

उत्तर—भारतवर्ष के हर प्रान्त में वनों का वितरण असमान है। अरुणाचल प्रदेश (79%), जम्मू कश्मीर (61%) तथा त्रिपुरा (50%) में वनों का वितरण अधिक है जबकि हरियाणा तथा पंजाब (2%), राजस्थान (4%) एवं उत्तर प्रदेश (13%) में वनों का वितरण कम है। इस असमान वितरण का प्रमुख कारण विशाल भारत में धरातल तथा वर्षा की भिन्नता है।

प्रश्न 2. भारतीय वनों की कौन-कौन सी मुख्य विशेषताएँ हैं ? (1985, 89)

उत्तर—भारतीय वनों की कुछ मुख्य विशेषताएँ इस प्रकार हैं—

(1) भारत में वनों का क्षेत्रफल कम है। भारत में वन क्षेत्र कुल भौगोलिक क्षेत्र का 22·7% है। यह क्षेत्रफल अत्यन्त कम है। यह क्षेत्रफल कम से कम $\frac{1}{3}$ होना चाहिए।

(2) भारत में वन ऊँचाई पर हैं। इस कारण उनमें लकड़ी काटना कठिन होता है। वहाँ की सामग्री भी आसानी से प्राप्त नहीं हो पाती है।

(3) भारत में वनों का वितरण असमान है। असम और मध्य प्रदेश में वन अधिक पाए जाते हैं। भारत के अन्य राज्यों में वन कम पाए जाते हैं।

(4) भारत में अनेक प्रकार के वन पाए जाते हैं। यह विशेषता केवल भारतीय वनों की है।

(5) भारतीय वनों में कड़ी लकड़ी के वृक्ष पाए जाते हैं।

(6) भारत में मानसूनी वन पाए जाते हैं। इनमें वर्ष में एक बार पतझड़ अवश्य होता है।

(7) भारत के अधिकतर वन हिमालय पहाड़ के क्षेत्रों में पाए जाते हैं। वहाँ से लकड़ी काटना अपेक्षाकृत कठिन होता है।

(8) भारत में प्रति व्यक्ति वन क्षेत्र लगभग 0·12 हैक्टेयर है।

प्रश्न 3. वनों से होने वाले प्रत्यक्ष लाभों का वर्णन कीजिए। (1987, 88, 91)

उत्तर—प्रत्यक्ष लाभ—वनों से निम्नलिखित प्रत्यक्ष लाभ होते हैं—

(1) **वनों से लकड़ी प्राप्त होती है**—भारतीय वनों से प्रतिवर्ष लगभग 150 करोड़ घन मीटर लकड़ी प्राप्त होती है। इसमें लगभग एक-तिहाई लकड़ी औद्योगिक होती है जो विभिन्न उद्योगों, जैसे—रेल के डिब्बे तथा स्लीपर, पानी के जहाज, मोटर, फर्नीचर तथा मकान बनाने के प्रयोग में आती है। शेष ईंधन की तरह प्रयोग की जाती है।

(2) **वनों से उद्योग-धन्धों के लिए कच्चा माल प्राप्त होता है**—वनों से अनेक उद्योगों, जैसे—कागज उद्योग, दियासिलाई उद्योग, लाख का उद्योग, कत्था बनाने का उद्योग, रेजिन, तारपीन तथा विरोजा का उद्योग, चमड़ा कमाने के लिए पदार्थ तैयार करने का उद्योग आदि के लिए कच्चा माल मिलता है।

(3) **वनों से पशुओं को चरागाह की सुविधा मिलती है**—वनों से पशुओं को चारा मिलता है। एक अनुमान के अनुसार प्रतिवर्ष भारतीय वनों में 1 करोड़ 40 लाख पशु चरते हैं।

(4) **वनों से मूल्यवान औषधियाँ प्राप्त होती हैं**—वनों में अनेक प्रकार की जड़ी-बूटियाँ प्राप्त होती हैं, जो औषधियाँ बनाने के लिए प्रयोग की जाती हैं।

(5) **विभिन्न प्रकार के पशु-पक्षियों का मिलना**—वनों में अनेक प्रकार के पशु-पक्षी पाये जाते हैं तथा शिकार के लिए वन्य पशु मिलते हैं। इनका चमड़ा तथा बाल अनेक प्रकार से काम में लाया जाता है।

(6) **राज्य सरकार की आय के साधन**—वनों से राज्य सरकारों को आय प्राप्त होती है। ऐसा अनुमान किया जाता है कि प्रतिवर्ष वनों से राज्यों को लगभग 48 करोड़ रुपये की आय प्राप्त होती है।

प्रश्न 4. पशुओं की हीन दशा सुधारने के कौन-कौन से उपाय बताये गये हैं? (1987)

उत्तर—भारतीय पशुओं की दशा बहुत ही हीन है। पशुओं की हीन दशा को सुधारने के लिए निम्नलिखित दो उपाय हैं—

(1) **व्यक्तिगत उपाय**—(1) चारागाहों का विकास होना चाहिये। (2) पशु चिकित्सालयों की व्यवस्था होनी चाहिए। (3) अनुपयोगी पशुओं को समाप्त करके उन्नतिशील नस्ल का विकास करना चाहिए। (4) भारत में पशु चिकित्सा का प्रसार होना चाहिए। (5) पौष्टिक आहार की व्यवस्था होनी चाहिए।

(2) **सरकार द्वारा किए गए उपाय**—(1) कृत्रिम गर्भाधान केन्द्रों की स्थापना, (2) सरकार द्वारा अच्छी नस्ल के सांडों की व्यवस्था करना। (3) पशुओं की बीमा योजना शुरू करके पशुओं की दशा में सुधार करना। (4) पशुओं के रोगों की रोकथाम करना।

परीक्षोपयोगी एवं बोर्ड परीक्षा में पूछे गये अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न 1. भारतीय पशुओं पर आधारित चार उद्योग-धन्धे लिखिए। (1986, 88)

उत्तर—पशुओं पर आधारित उद्योग धन्धे निम्नांकित हैं—

(1) **दुग्ध उद्योग**—भारतीय पशुओं से लगभग 2·5 करोड़ टन दूध प्रतिवर्ष प्राप्त होता है जिससे घी, पनीर, खोया, दही, मक्खन आदि पैदा होता है।

(2) **माँस उद्योग**—भारत में 2800 बूचड़खाने हैं जिनसे 820 लाख टन सूअर का माँस तथा बकरे और अन्य जानवरों का माँस तथा चमड़ा प्राप्त होता है।

(3) **चमड़ा उद्योग**—भारतीय पशुओं से प्राप्त चमड़े से उत्तर प्रदेश, पश्चिमी बंगाल, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, उड़ीसा आदि राज्यों में चमड़ा उद्योग का विकास हुआ है।

(4) **ऊन उद्योग**—भारत में भेड़ और बकरियों से प्राप्त ऊन से श्रीनगर, अमृतसर, लुधियाना, गढ़वाल, जबलपुर तथा बीकानेर आदि में ऊनी वस्त्र, स्वेटर, शाल आदि तैयार किये जाते हैं।

प्रश्न 2. वनों पर आधारित चार उद्योग-धन्धे लिखिए। (1987, 89)

उत्तर—(1) **लकड़ी उद्योग**—अनेक मजदूर भारतीय वनों में लकड़ी काटने का उद्योग करके अपनी जीविका चलाते हैं।

(2) **फर्नीचर उद्योग**—मेज, कुर्सी, डेस्क एवं इमारती सामान जैसे—स्लीपर, चीड़, किवाड़ आदि का बनाना वनों की लकड़ी पर आधारित है।

(3) **कागज उद्योग**—वनों में उगने वाली मुलायम घास, वनों के पत्तों, कूड़े आदि से कागज बनाने की लुगदी बनाई जाती है।

(4) **रबड़ उद्योग**—वनों में रबड़ के वृक्ष उगते हैं जिनके दूध से रबड़ प्राप्त होती है।

(5) **दियासलाई उद्योग**—वनों से प्राप्त मुलायम लकड़ी से ही दियासलाई की डिबिया तथा तीलियाँ बनाई जाती हैं।

(6) **प्लाई बोर्ड उद्योग**—दफ्ती एवं कार्ड बोर्ड उद्योग वनों पर ही आधारित है।

(7) **लाख, गोंद एवं तारपीन का तेल उद्योग**—वनों से प्राप्त लाख, गोंद एवं चीड़ से प्राप्त दूध पर तारपीन का तेल उद्योग आधारित है।

प्रश्न 3. भारतीय पशुओं की हीन दशा के कारण बताइए। (1984, 86, 89)

उत्तर—भारतीय पशुओं की हीन दशा के निम्नांकित कारण हैं—

(1) **पौष्टिक चारे की कमी**—भारतीय पशुओं को पर्याप्त मात्रा में पौष्टिक चारा नहीं मिल पाता है। इस कारण उनका स्वास्थ्य खराब है और दुग्ध उत्पादन क्षमता कम है।

(2) **पशुओं की नस्ल का खराब होना**—भारत में पशुओं की नस्ल खराब है। अच्छी नस्ल उत्पन्न करने का समुचित प्रबन्ध नहीं है।

(3) **पशुओं की रोगग्रस्तता**—भारतीय पशुओं के आवास गन्दे हैं। पीने के लिए पोखर एवं तालाबों का गन्दा जल है। इस कारण पशु रोगग्रस्त रहते हैं।

(4) **पशु चिकित्सालयों की कमी**—भारत में पशुओं की संख्या को देखते हुए अभी पशु चिकित्सालय बहुत कम हैं। इन चिकित्सालयों में अच्छे डाक्टरों का अभाव है।

(5) **भारतीय किसान की निर्धनता एवं अशिक्षा**—हमारे देश के कृषक अशिक्षित एवं निर्धन होने के कारण अपने पशुओं की उचित देख-भाल एवं व्यवस्था नहीं कर पाते हैं।

(6) **अनुपयोगी पशुओं की समस्या**—भारत में ऐसे पशु भी हैं जो चारा अधिक खाते हैं किन्तु लाभ कम देते हैं। इनका प्रभाव उपयोगी पशुओं पर पड़ता है।

(7) **पशु पालन में रुचि का अभाव**—भारत में पशु पालन करने के व्यवसाय में कम रुचि लेते हैं।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. भारतीय अर्थ-व्यवस्था में वनों का महत्व बताओ।

अथवा (उ० प्र०, 1984)

भारतीय वनों से प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष दो-दो लाभ लिखो।

अथवा (उ० प्र०, 1987 C.P.J.)

"वन राष्ट्र की अमूल्य निधि है।" इस कथन की व्याख्या कीजिए।

(उ० प्र०, 1985, 89)

उत्तर—भारतीय अर्थ-व्यवस्था में वनों के निम्नलिखित लाभ (महत्व) हैं—

(क) प्रत्यक्ष लाभ—

1. **लकड़ी की प्राप्ति**—वनों से हमें अनेक प्रकार की लकड़ियाँ प्राप्त होती हैं जो जलाने के साथ-साथ अनेक कार्यों में उपयोग की जाती हैं। व्यापारिक दृष्टि से भी लकड़ी का बहुत बड़ा महत्व है।

2. **विभिन्न उद्योगों का आश्रय**—वनों से लकड़ी के साथ-साथ अनेक सहायक सामग्री प्राप्त होती है जो अनेक उद्योगों में कच्चे माल के रूप में प्रयोग होती है। कागज उद्योग, दियासलाई उद्योग, तेल उद्योग, औषधि उद्योग आदि वनों की ही देन हैं।

3. **लघु उद्योगों की स्थापना**—वनों की वस्तुओं से अनेक लघु उद्योगों तथा कुटीर उद्योगों की स्थापना होती है और अनेक उपयोगी वस्तुएँ तैयार की जाती हैं।

4. **व्यक्तियों के लिए रोजगार**—वनों पर आधारित अनेक उद्योगों एवं निगमों की स्थापना होने से अनेक लोगों को रोजगार प्राप्त हुआ है। भारत के लगभग 7·8 करोड़ लोगों की जीविका वनों पर आधारित है।

5. **पशुओं को चारा**—वनों से पशुओं को चारा प्राप्त होता है। इन वनों में अनेक जंगली पशु एवं पक्षी स्वतः चरते हैं।

6. **सरकार को राजस्व की प्राप्ति**—सरकार को वनों से राजस्व अथवा नीलामी रायल्टी के रूप में करोड़ों रुपये प्राप्त होते हैं। इस समय वनों से भारत सरकार को लगभग 400 करोड़ रुपये की आय होती है।

7. **विदेशी मुद्रा की प्राप्ति**—विभिन्न पदार्थ जैसे लाख, तारपीन का तेल, चन्दन का तेल तथा उनसे बनी अनेक वस्तुएँ निर्यात करके भारत सरकार को

विदेशी मुद्रा की प्राप्ति होती है। लगभग 50 करोड़ की विदेशी मुद्रा की प्राप्ति का अनुमान है।

8. आयुर्वेदिक तथा अन्य जड़ी-बूटियाँ—भारतीय वनों में ऐसी अनेक जड़ी-बूटियाँ पायी जाती हैं जिनमें अनेक औषधियाँ बनाई जाती हैं।

(ख) अप्रत्यक्ष लाभ—

1. जलवायु पर नियन्त्रण—वन ताप, नमी और वातावरण तथा वायु प्रवाह को नियन्त्रित रखते हैं। आँधी व तूफान तथा गर्म हवाओं से हमारी रक्षा करते हैं।

2. वर्षा को आकर्षित करना—जब बादल वनों के ऊपर से गुजरते हैं तो वे ठण्डे हो जाते हैं तथा वर्षा करते हैं। अतः वर्षा होने में वन बहुत सहायता करते हैं।

3. भूमि कटाव को रोकना—जब जल प्रवाह होता है तो भूमि की मिट्टी को पेड़ों की जड़ें जकड़े रहती हैं तथा जल प्रवाह से भूमि कटाव को रोकने में सहायक होते हैं।

4. बाढ़ नियन्त्रण में सहायक—पेड़ जल प्रवाह को कम करते हैं जिससे नदी एवं जलाशय मिट्टी से नहीं भर पाते हैं और बाढ़ की सम्भावना कम हो जाती है।

5. रेगिस्तान के प्रसार पर रोक—वर्षा को आकर्षित करके वन रेगिस्तान के प्रसार को रोकते हैं। वृक्षों की जड़ें मिट्टी को नम बनाये रखती हैं तथा जकड़े रहती हैं जिससे रेगिस्तान में वृद्धि रुक जाती है।

6. पर्यावरण सन्तुलन—पेड़-पौधे वायुमण्डल में कार्बन डाई-आक्साइड ग्रहण करके ऑक्सीजन निकालते हैं एवं वातावरण को नम करते हैं। अतः पर्यावरण में सन्तुलन रखते हैं।

7. पानी के स्तर में वृद्धि—पेड़-पौधों की जड़ों द्वारा जल की वृद्धि होने से जल का स्तर जमीन के अन्दर से ऊपर आ जाता है।

8. रमणीक स्थान—वनों के सहारे अनेक रमणीक स्थान बन जाते हैं जो पर्यटकों के मनोरंजन एवं स्वास्थ्यप्रद स्थान बन जाते हैं।

प्रश्न 2. वनों से सम्बन्धित मुख्य समस्याओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—वनों से सम्बन्धित मुख्य समस्याएँ निम्नलिखित हैं—

(1) भारत में वनों का वितरण असमान है। असम और मध्य प्रदेश में वन अधिक पाए जाते हैं। भारत के अन्य राज्यों में वन कम पाये जाते हैं।

(2) भारत में वनों का क्षेत्रफल कम है। भारत में वन क्षेत्र कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 22·7% है। यह अत्यन्त कम है। आर्थिक महत्व की दृष्टि से वनों का क्षेत्रफल कुल भौगोलिक क्षेत्र का 33% होना चाहिए। भारत में इसी कारण अधिक वृक्ष लगाए जा रहे हैं।

(3) भारत में वन ऊँचाई पर पाए जाते हैं। इसी कारण वहाँ लकड़ी काटने में कठिनाई होती है। वहाँ की उपलब्ध सामग्री भी मैदानी भाग तक नहीं आ पाती।

(4) वनों तक पहुँचने के लिए यातायात के साधनों की कमी है। इस समस्या के कारण वनों का उचित विदोहन नहीं हो पा रहा है।

(5) नगरों के विकास के कारण वनों को निरन्तर साफ किया जा रहा है। इससे देश के वन क्षेत्रों में निरन्तर कमी आ रही है।

(6) भारत में अभी तक वनों की लकड़ी काटने की परम्परात्मक तकनीक चली आ रही है। इससे समय और धन अधिक व्यय होता है।

(7) हमारे यहाँ ग्रामीण और पहाड़ी क्षेत्रों में लकड़ी ईंधन की तरह प्रयोग की जाती है। यह लकड़ी वनों के पेड़ काटकर प्राप्त की जाती है। 1952 से अब तक एक करोड़ एकड़ क्षेत्र में से वन काटे जा चुके हैं। इस तरह वन क्षेत्र समाप्त होते जा रहे हैं।

प्रश्न 3. वन विकास हेतु सरकार के द्वारा किए गए प्रयासों की समीक्षा कीजिए। (1985, 89)

उत्तर—वनों की उन्नति के लिए सरकार द्वारा किए गए प्रयत्न

जब से देश स्वतन्त्र हुआ है भारत सरकार ने वनों के विकास तथा उनकी रक्षा के लिए काफी प्रयत्न किये हैं। सन् 1950 के तत्कालीन खाद्य मन्त्री श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी ने 'वन महोत्सव' आन्दोलन चलाया। उस समय से प्रतिवर्ष 1 जुलाई से लेकर 8 जुलाई तक देश में लाखों की संख्या में पेड़ लगाये जाते हैं। सन् 1951 में भारत सरकार ने देश के समुचित आर्थिक विकास के लिए पंचवर्षीय योजनाएँ आरम्भ कीं। उसी समय सरकार ने राष्ट्रीय वन-नीति की घोषणा की। पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत वनों के विकास पर पर्याप्त ध्यान दिया है। वनों के विकास कार्यक्रम पर प्रथम पंचवर्षीय योजना में 8·5 करोड़ रुपये, द्वितीय पंचवर्षीय योजना में 21·02 करोड़ रुपये तथा तीसरी पंचवर्षीय योजना में 46 करोड़ रुपये व्यय किये गये। प्रथम और दूसरी योजनाओं के अन्तर्गत वनों के क्षेत्र में विस्तार किया गया। 22·55 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में दियासलाई के तथा 103 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में इमारती लकड़ी के उपयुक्त वृक्ष लगाए गये। 1,45,000 किलोमीटर लम्बी सड़कें बनाई गईं जिनके किनारे वृक्ष लगाये गये। 9·88 लाख हेक्टेयर वन क्षेत्र का सुधार किया गया। तृतीय पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत 24,090 किलोमीटर लम्बी सड़कें बनाईं तथा 29·65 लाख हेक्टेयर में वन लगाये गये।

चौथी पंचवर्षीय योजना से वनों के विकास पर विशेष ध्यान दिया गया है तथा 89 करोड़ रुपया व्यय किया गया। इस योजना काल में 4·37 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में यूकिलिप्टस, 2 लाख हेक्टेयर में बाँस तथा कनिफर, 6 लाख हेक्टेयर में कोमल तथा कठोर लकड़ी के वन तथा 10 लाख हेक्टेयर में जलाने योग्य लकड़ी के पेड़ लगाने की व्यवस्था की गई।

पाँचवीं और छठवीं पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत वन विकास पर क्रमशः 220·5 करोड़ तथा 692·6 करोड़ रुपये की व्यय व्यवस्था की गई। वन विकास के लिए विभिन्न कार्यक्रम चलाये गये हैं, जैसे—वृक्षारोपण, शीघ्र बढ़ने वाले वृक्षों के लगाने के लिए शत-प्रतिशत केन्द्रीय सहायता, वन अधिकारियों को प्रशिक्षण, आधुनिक तकनीकी का विकास, वन यातायात का विकास आदि।

प्रश्न 4. भारतीय अर्थ-व्यवस्था में पशुधन की उपादेयता पर प्रकाश डालिए। (उ० प्र० 1984, 87, 88)

उत्तर— भारतीय अर्थ-व्यवस्था में पशुधन की उपादेयता

भारतीय अर्थ-व्यवस्था में पशुधन का विशेष महत्व है। भारतीय अर्थ-व्यवस्था में विभिन्न उद्योगों का महत्वपूर्ण स्थान है। इन उद्योगों में पशुओं पर आधारित उद्योगों का भी बड़ा योगदान है। पशुओं पर आधारित उद्योगों में प्रमुख उद्योग दुग्ध उद्योग, माँस उद्योग, ऊन उद्योग, चमड़ा, मछली तथा मुर्गीपालन आदि उद्योग हैं। इन सभी उद्योगों में पशुओं की उपादेयता बहुत अधिक है।

भारतीय अर्थ-व्यवस्था में पशुओं की उपादेयता को निम्न तथ्यों द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है—

(1) **दूध की प्राप्ति**—दूध की प्राप्ति पशुओं से होती है। दूध से दही, मक्खन, पनीर तथा विभिन्न प्रकार की मिठाइयाँ बनायी जाती हैं। दूध एक पौष्टिक तरल पदार्थ है जो शारीरिक तथा मानसिक विकास के लिए आवश्यक है।

(2) **माँस तथा चर्बी की प्राप्ति**—माँस तथा चर्बी पशुओं से ही प्राप्त होती है। माँस का प्रयोग खाने के लिए किया जाता है तथा चर्बी का प्रयोग विभिन्न कार्यों में किया जाता है।

(3) **यातायात के साधनों के रूप में प्रयोग**—भारतीय ग्रामों में आज भी पशुओं को यातायात के रूप में प्रयोग किया जाता है। आज भी स्थानीय तथा रेगिस्तानी यातायात के लिए पशुओं का बहुत अधिक महत्व है।

(4) **कृषि के क्षेत्र में प्रयोग**—भारत एक कृषि प्रधान देश है। भारत में पशुओं का कृषि के जोतने तथा अन्य महत्व के कार्यों में प्रयोग किया जाता है। पशुओं की खाद का प्रयोग किया जाता है। कृषि उत्पादन को बाजारों में पशुओं के द्वारा ही पहुँचाया जाता है।

उपरोक्त कार्यों के अतिरिक्त पशुओं को विभिन्न उद्योगों में प्रयोग किया जाता है। पशुओं के विभिन्न अंगों का प्रयोग घरेलू उपयोगी वस्तुओं के निर्माण में भी किया जाता है।

परीक्षोपयोगी तथा बोर्ड परीक्षा में पूछे गये प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न 1. भारत में पाये जाने वाले वनों का वर्णन कीजिए। (1986, 88)

उत्तर—भारत में निम्नलिखित प्रकार के वन पाये जाते हैं—

(1) **सदाबहार वन**—हमारे देश के उन भागों में जहाँ 200 सेमी० से अधिक वर्षा होती है ऐसे वृक्ष उगते हैं जो सदा हरे-भरे रहते हैं। इन वनों में विभिन्न जातियों के पेड़ पाये जाते हैं जिनकी ऊँचाई 45 से 90 मीटर तक होती है। अधिक वर्षा और समान ऊँचे तापक्रम के कारण वन बहुत घने होते हैं। इन पेड़ों की पत्तियाँ चौड़ी होती हैं और पेड़-पत्तियों से लदे रहते हैं। पेड़ों के बीच-बीच में छोटे-छोटे पौधे तथा अनेक प्रकार की बेलें उग आती हैं जिनके कारण ये और भी अधिक घने हो जाते हैं। यहाँ उगने वाले पेड़ों में ताड़, नारियल, बाँस, सिनकोना, गुरजन, महोगिनी, पीलाचम्पा बेंत, रोजवुड, आबनूस आदि मुख्य हैं। भारतवर्ष में इस प्रकार के वन लगभग 25 हजार वर्ग किलोमीटर में फैले हुए हैं। ये वन महाराष्ट्र, केरल, मैसूर, गुजरात, असम, बंगाल, नेफा, मनीपुर, त्रिपुरा तथा अण्डमान द्वीप समूह में पाये जाते हैं।

(2) **पतझड़ वाले वन**—इस प्रकार के वन उन क्षेत्रों में पाये जाते हैं जहाँ अधिक वर्षा 100 से 200 सेमी० तक होती है। इन वनों की पत्तियाँ भी चौड़ी

होती हैं। लेकिन यह वर्ष भर हरे-भरे नहीं रहते। हेमन्त ऋतु में ये वृक्ष अपनी पत्तियाँ गिरा देते हैं ताकि पत्तियों द्वारा अधिक नमीं न निकल जाय। वसन्त ऋतु आने पर इनमें फिर नवीन पत्तियाँ आ जाती हैं और चारों ओर बहार छा जाती है। भारतवर्ष में ये वन प्रदेश लगभग 9 लाख वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में छाये हुए हैं। लकड़ी की दृष्टि से इन वनों का महत्व सबसे अधिक है। बढ़िया इमारती लकड़ी इन्हीं वनों से प्राप्त होती है। ये वन मुख्यतया मध्यप्रदेश, उड़ीसा, आन्ध्रप्रदेश, मद्रास, मैसूर, महाराष्ट्र, पश्चिमी असम तथा बिहार और उत्तर प्रदेश के मैदानी भाग में पाये जाते हैं। पतझड़ वाले वनों में सागौन, साल, एबोनी, शीशम, सैमल, आम, नीम, बरगद, चन्दन, सिरस, हल्दू आदि वृक्ष पाये जाते हैं।

(3) **पर्वतीय वन**—हिमालय पर्वत प्रदेश तथा पर्वतों पर पाये जाने वाले वन पर्वतीय वन कहलाते हैं। पर्वतों की ऊँचाई तथा वर्षा की भिन्नता के कारण इन वनों में मिलने वाली वनस्पति में काफी भिन्नता पाई जाती है। पूर्वी हिमालय में 1000 से 2000 मीटर की ऊँचाई तक सदाबहार वन मिलते हैं। इनमें ओकलारेल, पाइन मगनोलिया के पेड़ अधिकता से पाये जाते हैं। सम्पूर्ण हिमालय में 2000 से 2500 मीटर की ऊँचाई तक देवदार के पेड़ अधिकता से पाये जाते हैं। इससे अधिक ऊँचाई पर चीड़, फर, सनोवर, स्प्रूस आदि के पेड़ अधिक पाये जाते हैं। 5000 मीटर से अधिक ऊँचाई पर सर्वत्र बर्फ जमी रहती है।

(4) **मरुस्थली तथा अर्द्ध मरुस्थली वन**—इस प्रकार के वन मुख्यतया राजस्थान, गुजरात तथा दक्षिणी पंजाब के उन शुष्क प्रदेश में पाये जाते हैं जहाँ वर्षा 50 सेमी० से कम होती है। इन वनों में काँटेदार वृक्ष, जैसे—कीकड़, बबूल, खजेड़ा, छोंकरा आदि पाये जाते हैं। करील के कुंज तथा नागफली की झाड़ियाँ यहाँ बहुत मिलती हैं। पश्चिमी राजस्थान के अत्यन्त शुष्क प्रदेशों में खजूर के पेड़ मिलते हैं। इन वनों में पाये जाने वाले पेड़ों की छाल कठोर तथा पत्तियाँ नुकीली काँटेदार अथवा गूदेदार होती हैं। मोटी छाल तथा काँटेदार पत्तियों के कारण वाष्पीकरण कम होता है तथा गूदेदार पत्तियाँ नमी रोके रहती हैं।

(5) **डेल्टाई वन**—जो वन नदियों के डेल्टाओं में पाये जाते हैं उन्हें डेल्टाई वन कहते हैं। इन्हें 'ज्वारीय' वन भी कहते हैं क्योंकि जब समुद्र में ज्वार आता है तो इन वनों में समुद्र का खारी पानी भर आता है। यहाँ की भूमि दलदली तथा उपजाऊ होती है। इन वनों में सुन्दरी, मैंनग्रोव तथा कैसूरिमा के पेड़ विशेष रूप से उगते हैं। गंगा, ब्रह्मपुत्र के डेल्टाओं में पाये जाने वाले 'सुन्दर वन' कहलाते हैं क्योंकि यहाँ सुन्दरी नामक वृक्ष विशेष रूप से पाया जाता है। ये वन कृष्णा, कावेरी, गोदावरी तथा महानदी के डेल्टाओं में पाये जाते हैं। इन वनों में नारियल तथा ताड़ के वृक्ष भी पाये जाते हैं।

(6) **समुद्रतटीय वन**—ये वन समुद्र के रेतीले तट पर पाये जाते हैं। इनमें ताड़ी, नारियल तथा कैसूरिया के वृक्ष विशेष रूप से पाये जाते हैं।

(7) **नदी तटीय वन**—उत्तरी भारत की नदियों में पाये जाने वाले वन नदी-तटीय वन कहलाते हैं। इन वनों में सिसू, खैर तथा तैमारिक्स के पेड़ अधिकता से पाये जाते हैं।

बहु विकल्पीय प्रश्न

सही विकल्प चुनिये—

प्रश्न 1. वन महोत्सव कब प्रारम्भ हुआ था— (1986, 87)

(क) 1950, (ख) 1955, (ग) 1960, (घ) 1945 ।

उत्तर—(क) 1950 ।

प्रश्न 2. वन महोत्सव के प्रणेता थे— (M. Imp.)

(क) पं० जवाहरलाल नेहरू, (ख) श्रीमती इन्दिरा गाँधी,
(ग) गुलजारी लाल नन्दा, (घ) कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी ।

उत्तर—(घ) कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी ।

प्रश्न 3. भारत में वन अनुसंधान केन्द्र स्थापित है—

(क) देहरादून, (ख) मथुरा, (ग) वम्वई, (घ) मद्रास ।

उत्तर—(क) देहरादून ।

प्रश्न 4. केन्द्रीय वन आयोग की स्थापना हुई थी—

(क) 1947, (ख) 1956, (ग) 1965, (घ) 1974 ।

उत्तर—(ग) 1965 ।

प्रश्न 5. निम्नांकित में से कौन सा वृक्ष मानसूनी वनों से सम्बन्धित नहीं है—

(क) सागोन, (ख) चन्दन, (ग) देवदार, (घ) साल ।

उत्तर—(ग) देवदार ।

5 मानवीय संसाधन

राष्ट्रीयकृत पाठ्य पुस्तक में दिये गये प्रश्न तथा उनके उत्तर (पृष्ठ 64)

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. क्या अधिक जनसंख्या हर स्थिति में हानिकारक होती है ? (1986)

उत्तर—यदि देश में प्राकृतिक संसाधन के दोहन के लिए अधिक व्यक्तियों की आवश्यकता है तो अधिक जनसंख्या हानिकारक नहीं होती है । यदि संसाधनों की कमी है तो अधिक जनसंख्या हानिकारक होती है ।

प्रश्न 2. अतिरिक्त जनसंख्या के लिए सरकार को क्या-क्या प्रबन्ध करने होते हैं ?

उत्तर—अतिरिक्त जनसंख्या के लिए सरकार को खाद्यान्न जुटाना तथा रोजगार की व्यवस्था करनी पड़ती है तथा आवास आदि का प्रबन्ध करना पड़ता है।

प्रश्न 3. अपने देश की जनसंख्या और उसका घनत्व कितना है ? (1989)

उत्तर—1981 ई० की जनगणना के अनुसार भारत की जनसंख्या 68·5 करोड़ है । जनसंख्या का घनत्व 221 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है ।

प्रश्न 4. पिछले दस वर्षों में जनसंख्या वृद्धि की वार्षिक दर क्या थी ? (1986)

उत्तर—पिछले दस वर्षों में जनसंख्या की वृद्धि की वार्षिक दर 2·5% थी।

प्रश्न 5. भारत में जन्म-दर तथा मृत्यु-दर कितनी है ? (1988, 89)

उत्तर—भारत में जन्म-दर का औसत 36·0 प्रति हजार तथा मृत्यु-दर का औसत 14·8 प्रति हजार है।

प्रश्न 6. जनसंख्या घनत्व के पाँच निर्धारक तत्व बताइए।

उत्तर—जनसंख्या घनत्व के पाँच निर्धारक तत्व इस प्रकार हैं—

(1) धार्मिक स्थान, (2) शिक्षण केन्द्र,
(3) जलवायु, (4) यातायात के साधन और
(5) भूमि की बनावट।

प्रश्न 7. देश में ग्रामीण तथा शहरी जनसंख्या का क्या अनुपात है ? (1985)

उत्तर—1981 ई० की जनगणना के अनुसार ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत 77·8 और शहरी जनसंख्या का प्रतिशत 22·2 है।

प्रश्न 8. 1971 में 14 वर्ष तक के बच्चों की जनसंख्या कुल की कितने प्रतिशत थी ?

उत्तर—सन् 1971 में 14 वर्ष के बच्चों की जनसंख्या कुल की 42% थी।

परीक्षोपयोगी एवं बोर्ड परीक्षा में पूछे गये अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न 1. जन्म दर किसे कहते हैं ? (1988, 91)

उत्तर—जन्म दर—प्रति हजार जनसंख्या के पीछे जन्म लेने वाले शिशुओं की संख्या को जन्म दर कहते हैं।

प्रश्न 2. मृत्यु दर किसे कहते हैं ? (1988, 89, 91)

उत्तर—प्रति हजार जनसंख्या के पीछे मरने वालों की संख्या को मृत्यु दर कहते हैं।

प्रश्न 3. जनसंख्या का घनत्व किसे कहते हैं ? (1988)

उत्तर—प्रति वर्ग किलो मीटर में निवास करने वाले व्यक्तियों की संख्या को जनसंख्या का घनत्व कहते हैं।

प्रश्न 4. भारत में स्त्री-पुरुष अनुपात क्या है ? (1991)

उत्तर—भारत में 1000 पुरुषों की संख्या के पीछे 935 स्त्रियाँ हैं।

प्रश्न 5. भारतवर्ष में लोगों की औसत आयु क्या है ?

उत्तर—54 वर्ष।

प्रश्न 6. विकासशील देशों के आर्थिक विकास में सबसे बड़ी बाधा क्या है ?

उत्तर—जनसंख्या की अधिकता।

प्रश्न 7. वर्तमान समय में भारत की जनसंख्या विश्व की जनसंख्या के कितने प्रतिशत है ? (1984)

उत्तर—वर्तमान समय में भारत की जनसंख्या विश्व जनसंख्या का 15% है।

प्रश्न 8. भारत में स्त्रियों की जनसंख्या कम होने के क्या कारण हैं ? (1989)

उत्तर—भारत में स्त्रियों की जनसंख्या कम होने के अग्रलिखित कारण हैं—

(1) पुरुष शिशुओं का अधिक जन्म, (2) बाल्यावस्था में लड़कियों की देख-भाल के अभाव में मृत्यु, (3) बाल विवाह होने के कारण प्रसव में स्त्रियों की मृत्यु ।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. जनसंख्या घनत्व किन बातों पर निर्भर करता है ?

उत्तर—जनसंख्या का घनत्व निम्नलिखित बातों पर निर्भर करता है—

(1) जलवायु, (2) सिंचाई की सुविधाएँ, (3) भूमि की बनावट, (4) शान्ति तथा सुरक्षा की व्यवस्था, (5) रोजगार के अवसर, (6) यातायात के साधन, (7) ऐतिहासिक स्थान, (8) तीर्थ स्थान, (9) राजधानी और (10) शिक्षा के केन्द्र ।

प्रश्न 2. मानवीय संसाधन और आर्थिक विकास के बीच क्या सम्बन्ध है ?

उत्तर—किसी देश के आर्थिक विकास एवं औद्योगिक उन्नति तथा उस देश की जनसंख्या के घनत्व, उसके आकार, उसकी शिक्षा, कुशलता, दूरदर्शिता एवं उत्पादकता में गहरा सम्बन्ध होता है । जनसंख्या का किसी देश की आर्थिक स्थिति पर गहरा प्रभाव पड़ता है । आधुनिक युग में मानवीय संसाधन को प्राकृतिक संसाधनों से अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है । प्राकृतिक संसाधनों का उचित उपयोग देश की जनसंख्या तथा उसके गुणों पर निर्भर करता है । जनसंख्या के अध्ययन के अभाव में देश के आर्थिक विकास की कोई भी योजना नहीं बनाई जा सकती । अतः जनसंख्या का अध्ययन करना आवश्यक है ।

प्रश्न 3. हमारे देश में आर्थिक विकास होने के बावजूद गरीबी व बेकारी क्यों है ?

उत्तर—हमारे देश में आर्थिक विकास होने के बावजूद भी गरीबी तथा बेकारी बढ़ रही है । इसके निम्नांकित कारण हैं—

(1) भारत की जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ रही है । इससे आर्थिक समस्या पैदा हुई है ।

(2) बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए सरकार को अतिरिक्त भोजन, आवास, वस्त्र एवं जनसुविधाएँ जुटानी पड़ती हैं तथा अतिरिक्त व्यय करना पड़ता है ।

(3) देश में उत्पादन बढ़ता है किन्तु उसका उपयोग नव निर्माण में न होकर बढ़ती हुई जनसंख्या के पोषण में होता है ।

(4) अधिक जनसंख्या होने से प्रति व्यक्ति आय घट रही है तथा देश का आर्थिक विकास होने के बावजूद भी गरीबी तथा बेकारी बढ़ रही है ।

प्रश्न 4. जन्म दर और मृत्यु दर निकालने के लिए किन सूत्रों का प्रयोग किया जाता है ?

सूत्र—(1) $\text{जन्म दर} = \dfrac{\text{एक वर्ष की अवधि में जन्मे शिशुओं की संख्या}}{\text{देश की कुल जनसंख्या}} \times 1000$

(2) $\text{मृत्यु दर} = \dfrac{\text{एक वर्ष में मृतकों की कुल संख्या}}{\text{देश की कुल जनसंख्या}} \times 1000$

प्रश्न 5. जनसंख्या पिरामिड से क्या निष्कर्ष निकलते हैं ?

उत्तर—जनसंख्या पिरामिड से निम्नांकित निष्कर्ष निकलते हैं—

(1) विकासशील तथा विकसित देशों की जनसंख्या का अन्तर ज्ञात हो जाता है।

(2) मृत्यु-दर ज्ञात हो जाती है।

(3) जन शक्ति का प्रतिशत ज्ञात हो जाता है।

(4) जनसंख्या निर्भरता का अनुपात ज्ञात हो जाता है।

परीक्षोपयोगी एवं बोर्ड परीक्षा में पूछे गये अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न 1. भारत में जनसंख्या वृद्धि रोकने के उपाय बताइये। (1986, 88)

उत्तर—भारत में जनसंख्या वृद्धि उसके आर्थिक विकास में सबसे बड़ी बाधा है। इस वृद्धि को रोकने के लिए निम्नांकित उपाय किये जा सकते हैं—

(1) विवाह की आयु में वृद्धि की जाय।

(2) परिवार में बच्चों की संख्या निश्चित की जाय।

(3) परिवार कल्याण कार्यक्रमों को विस्तार पूर्वक प्रभावी बनाया जाय।

(4) सन्तान निरोध के साधन निःशुल्क वितरित किये जायें तथा उनका प्रयोग सिखाया जाय।

(5) बाल विवाहों पर कानूनन रोक लगा दी जाय।

(6) स्त्रियों को शिक्षित किया जाय।

(7) गाँवों में मनोरंजन के साधनों का विस्तार किया जाय।

प्रश्न 2. जनसंख्या का विस्फोट क्या है? (1985, 86)

उत्तर—**जनसंख्या का विस्फोट**—जब किसी देश में खाद्यान्नों के उत्पादन की तुलना में जनसंख्या अधिक बढ़ जाती है और उसके दुष्परिणाम सामने आने लगते हैं, उसे जनसंख्या का विस्फोट कहते हैं।

प्रश्न 3. तीव्र जनसंख्या वृद्धि के दुष्परिणाम बताइए। (1989)

उत्तर—तीव्र जनसंख्या वृद्धि के दुष्परिणाम निम्नांकित हैं—

(1) बेकारी, निर्धनता व बीमारी में वृद्धि, (2) प्रति व्यक्ति आय में कमी, (3) मँहगाई में वृद्धि, (4) खाद्य पदार्थों में कमी, (5) कृषि विकास में बाधा, (6) शहरी समस्याओं में वृद्धि, (7) विकास की धीमी गति, (8) आश्रितों की संख्या में वृद्धि, (9) आवास की समस्या, (10) अपराधों में वृद्धि, (11) जनोपयोगी सेवाओं के भार में वृद्धि, (12) बचत तथा पूंजी निर्माण में कमी।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. जनसंख्या घनत्व का क्या अर्थ है? भारत में जनसंख्या के असमान घनत्व के कारणों पर प्रकाश डालिए। (1985, 88, 87, 91)

उत्तर—किसी देश में प्रति वर्ग किलोमीटर में निवास करने वाले व्यक्तियों की औसत संख्या को ही जनसंख्या का घनत्व कहते हैं। जनसंख्या का घनत्व देश की कुल जनसंख्या में देश के कुल क्षेत्रफल का भाग देकर निकाला जाता है।

$$\text{जनसंख्या का घनत्व} = \frac{\text{देश की कुल जनसंख्या}}{\text{देश का कुल क्षेत्रफल}}$$

भारत में जनसंख्या के असमान घनत्व के कारण—

भारत में जनसंख्या के असमान घनत्व के कारण इस प्रकार हैं—

(1) भारत में प्रत्येक स्थान की जलवायु अनुकूल नहीं है।

(2) भारत के प्रत्येक राज्य में सिंचाई की सुविधाएँ प्राप्त नहीं हैं।

(3) भारत के प्रत्येक स्थान की भूमि की बनावट एक समान नहीं है। यह भूमि कहीं समतल, कहीं पर्वतीय और कहीं ऊबड़-खाबड़ है।

(4) भारत के कुछ स्थानों पर सुरक्षा की समस्या बनी रहती है।

(5) भारत के कुछ राज्यों में यातायात के साधन उपलब्ध नहीं हैं।

(6) भारत के राज्यों की राजधानी में जनसंख्या का घनत्व अधिक रहता है।

(7) भारत के धार्मिक तीर्थों में जनसंख्या अधिक रहती है।

(8) भारत के उन स्थानों पर जहाँ रोजगार के अवसर अधिक प्राप्त रहते हैं, जनसंख्या का घनत्व अधिक रहता है।

(9) भारत के उन स्थानों का जनसंख्या का घनत्व अधिक होता है जो शिक्षा के केन्द्र होते हैं।

प्रश्न 2. प्राकृतिक साधनों का विदोहन करने के लिए मानवीय संसाधनों का होना आवश्यक है। किन्तु हमारे देश में जनसंख्या की समस्या एक मुख्य आर्थिक समस्या बनी हुई है। क्यों ? (1986, 87)

उत्तर—जनसंख्या विस्फोट के आर्थिक प्रभाव

भारत के सभी लोग इस बात से सहमत हैं कि तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या भारत के आर्थिक विकास में सबसे बड़ी बाधा है। यह भारत के लिए अभिशाप है इससे प्रति व्यक्ति आय घटती है, पूंजी निर्माण में बाधा पड़ती है, खाद्यान्न की समस्या उत्पन्न हो जाती है, मुद्रा प्रसार होता है, भुगतान सन्तुलन बिगड़ जाता है। नीचे जनसंख्या विस्फोट के आर्थिक प्रभावों की विस्तृत व्याख्या की गई है—

(1) **खाद्यान्न पूर्ति की समस्या**—जनसंख्या विस्फोट के कारण खाद्यान्नों का उत्पादन बढ़ने पर भी खाद्यान्नों की कमी प्रतीत होती है। अतः करोड़ों रुपये का खाद्यान्न विदेशों से मँगाना पड़ता है।

(2) **आय-बचत व विनियोग की दर में कमी**—जब जनसंख्या अधिक बढ़ जाती है तो प्रति व्यक्ति आय घट जाती है, लोगों की बचत करने की शक्ति घट जाती है। बचत कम होने से विनियोग की दर भी गिर जाती है। इससे पूंजी निर्माण की गति भी धीमी पड़ जाती है।

(3) **बेरोजगारी की समस्या**—जनसंख्या में वृद्धि से बेरोजगारी की समस्या उत्पन्न हो जाती है। इसका देश के आर्थिक विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। आज बेरोजगारों की संख्या लगभग 4 करोड़ है।

(4) **कृषि पर भार में वृद्धि**—बढ़ती हुई जनसंख्या का कृषि-विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। एक ओर तो कृषि पर निर्भर जनसंख्या बढ़ जाती है, दूसरी ओर भूमि के उप-विभाजन तथा विखण्डन के कारण नयी-नयी समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं।

(5) **आश्रितों की संख्या में वृद्धि**—तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण देश में आश्रितों की संख्या बहुत बढ़ जाती है। 1961 ई० की जनगणना के अनुसार भारत की जनसंख्या का 57·3% भाग आश्रित था। 1971 ई० की जनगणना के अनुसार जनसंख्या में वृद्धि के साथ आश्रितों की संख्या में भी वृद्धि हो गई और

(3) ग्रामीण क्षेत्रों में मनोरंजन साधनों का अभाव।
(4) ग्रामीण क्षेत्रों में परिवार नियोजन एवं गर्भ निरोधक सुविधाओं का अभाव।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. अतिशय जनसंख्या का देश के आर्थिक विकास पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर—अतिशय जनसंख्या का प्रभाव—अतिशय जनसंख्या ने भारतीय अर्थव्यवस्था को निम्नलिखित प्रकार से प्रभावित किया है—

(1) **कृषि भूमि पर जनसंख्या का अत्यधिक भार**—भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहाँ की जनसंख्या का लगभग 20% भाग कृषि पर निर्भर रहता है। अतः जनसंख्या वृद्धि का सबसे अधिक प्रभाव कृषि-भूमि पर पड़ता है। इसके कारण प्रति व्यक्ति कृषि-भूमि का अनुपात निरन्तर घट रहा है। सन् 1921 में भारत में प्रति व्यक्ति कृषि-भूमि 1·1 एकड़ थी जो घटकर सन् 1971 में ·6 एकड़ ही रह गई। इसके कारण ग्रामीण जनता की स्थिति निरन्तर खराब होती जा रही है। गाँवों में निर्धनता, बेरोजगारी तथा भुखमरी की स्थिति उत्पन्न होती जा रही है। अनार्थिक जोतों के कारण कृषकों की अपनी अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हो पाती है। इसका देश के आर्थिक विकास पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

(2) **श्रम शक्ति में वृद्धि**—जनसंख्या वृद्धि के कारण श्रम-शक्ति में वृद्धि होती है। श्रमिकों को रोज़गार नहीं मिलता। प्रति व्यक्ति आय कम हो जाती है। उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। श्रमिकों का जीवन-स्तर गिरता है। देश में बेरोज़गारी, निर्धनता, भुखमरी की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। इससे देश की अर्थ-व्यवस्था बिगड़ जाती है तथा आर्थिक विकास में बाधा उत्पन्न हो जाती है।

(3) **खाद्य पदार्थों का आयात**—देश में कृषि तथा औद्योगिक उत्पादन उस अनुपात में नहीं बढ़ता जिस अनुपात में जनसंख्या बढ़ती है। अतः खाद्य पदार्थ विदेशों से मँगाने पड़ते हैं। भारत में सन् 1961 से लेकर सन् 1972 तक लगभग 191 लाख मीटर टन खाद्यान्न विदेशों से मँगाना पड़ा था। इसमें देश की बहुमूल्य मुद्रा चली जाती है। यदि खाद्यान्नों का आयात नहीं किया गया होता तो विदेशी मुद्रा का प्रयोग पूँजीगत वस्तुओं के लिए किया जाता जिससे देश के आर्थिक विकास को गति मिलती।

भारत में प्राकृतिक तथा मानवीय संसाधनों की कमी नहीं है। लेकिन अभी तक प्राकृतिक साधनों का पूर्ण तथा उचित संदोहन नहीं किया जा सका है। अतः उत्पादन भी आवश्यकतानुसार नहीं हो रहा है। जनाधिक्य की समस्या को हल करने के लिए प्राकृतिक साधनों का पूर्ण संदोहन किया जाय, कृषि उत्पादन में वृद्धि की जाय, लघु तथा कुटीर उद्योगों के विकास पर जोर दिया जाय, जनसंख्या वृद्धि को रोकने के लिए परिवार नियोजन कार्यक्रम को प्रभावी ढंग से लागू किया जाय।

प्रश्न 2. भारत में तीव्र जनसंख्या वृद्धि के कारणों पर प्रकाश डालते हुए इसे नियन्त्रित करने के लिए तीन मुख्य उपाय बताइए।

उत्तर—तीव्र जनसंख्या वृद्धि के कारण—तीव्र जनसंख्या वृद्धि के निम्नांकित कारण हैं—

1. कम आयु में विवाह—देश में लड़के व लड़कियों का कम आयु में विवाह हो जाने से प्रजनन अवधि बढ़ जाती है अतः सन्तान अधिक पैदा हो जाती है।

2. मृत्यु दर में कमी तथा औसत आयु में वृद्धि—मृत्यु दर में चिकित्सा सुविधाओं से कमी आ जाने से तथा औसत आयु बढ़ जाने से भी जनसंख्या में वृद्धि हो गई है। पिछले 50 वर्षों में भारतीयों की औसत आयु 23 वर्ष से बढ़कर 54 वर्ष हो गई है।

3. विवाह की अनिवार्यता—हमारे देश में प्रायः विवाह ऐच्छिक नहीं, अनिवार्य है। अतः प्रत्येक के विवाहित होने से जन्म दर बढ़ती है।

4. अशिक्षा तथा परिवार नियोजन के प्रति अज्ञानता—ग्रामीण लोगों के शिक्षित न होने के कारण वे परिवार नियोजन के नियमों तथा लाभों को नहीं समझते हैं।

5. सामाजिक व आर्थिक अन्धविश्वास—हमारे देश में कुछ लोग परिवार नियोजन को धर्म विरुद्ध मानते हैं तथा सन्तान उत्पत्ति ईश्वर का वरदान मानते हैं। वे स्त्री-पुरुष जिनके सन्तान नहीं होती है उनका समाज में अनादर होता है।

6. निम्न जीवन स्तर—जिन परिवारों का जीवन-स्तर निम्न है उनमें सन्तान पैदा हो जाने से बच्चे मेहनत मजदूरी करके परिवार का काम चला लेते हैं। अतः वे सन्तान अधिक उत्पन्न करते हैं।

7. सामाजिक सुरक्षा की भावना—मनुष्य अपनी सामाजिक सुरक्षा के लिए सन्तान उत्पन्न करता है जिससे उसकी वृद्धावस्था आराम से कट सके। इससे जन्म-दर को प्रोत्साहन मिलता है।

8. शरणार्थियों का आगमन—देश की स्वतन्त्रता के बाद पाकिस्तान तथा बंगला देश से शरणार्थियों के आ जाने से देश की जनसंख्या बढ़ी है।

9. संयमी जीवन का अभाव—वर्तमान भौतिकवादी एवं वैज्ञानिक युग में जीवन संयमी न रहकर विलासपूर्ण हो गया है। इसका प्रभाव सन्तानोत्पत्ति पर पड़ा है।

जनसंख्या वृद्धि को रोकने के उपाय निम्नलिखित हैं—

1. शिक्षा विस्तार एवं स्त्री शिक्षा पर विशेष बल—शिक्षित व्यक्ति सन्तानों की अधिकता के दुष्परिणाम को समझता है। अशिक्षित स्त्रियाँ ही अधिक सन्तान को जन्म देती हैं। अतः शिक्षा पर अधिक बल दिया जाना चाहिए।

2. विवाह सम्बन्धी कानूनों का सख्ती से पालन—यद्यपि बाल-विवाह वर्जित हैं, फिर भी समाज में अधिकतर बाल-विवाह हो जाते हैं। इनको रोकने के लिए कानून व सरकार को सख्ती का पालन करना चाहिए।

3. मनोरंजन के साधनों में वृद्धि—ग्रामीण तथा पिछड़े क्षेत्रों में सस्ते मनोरंजनों में वृद्धि की जानी चाहिए। सिनेमा, सार्वजनिक रेडियो, दूरदर्शन व्यवस्था आदि इसके उदाहरण हैं।

4. आत्म-संयम तथा नैतिक शिक्षा का प्रसार—आत्म-संयमी तथा नैतिक जीवन जनसंख्या को सीमित करने का आदर्श है। अतः अच्छा शारीरिक स्वास्थ्य, सुखद पारिवारिक जीवन तथा देश के उज्ज्वल भविष्य के लिए संयमी जीवन कितना लाभदायक है इस बात का समुचित प्रचार किया जाना चाहिए।

5. **ग्रामीण क्षेत्रों में परिवार नियोजन का प्रचार**—ग्रामीण क्षेत्र में परिवार नियोजन का विस्तृत प्रचार किया जाना चाहिए जिससे वे बड़े परिवार के दुष्परिणाम को समझ जाएँ और जन्म दर को स्वतः ही घटाने के लिए तत्पर हों।

बहु विकल्पीय प्रश्न

सही विकल्प चुनिए—

प्रश्न 1. भारत में आर्थिक विकास की गति—

(अ) धीमी है, (ब) तेज है,
(स) कभी कम कभी तेज है, (द) अत्यन्त कम है।

उत्तर—(अ) धीमी है।

प्रश्न 2. भारत में प्रति व्यक्ति आय है—

(अ) 600 रु०, (ब) 884 रु०,
(स) 900 रु०, (द) 678 रु०।

उत्तर—(द) 678 रु०।

प्रश्न 3. सन् 1981 की जनगणना के अनुसार जनसंख्या वृद्धि का प्रतिशत है—

(अ) 10%, (ब) 60%,
(स) 24·8%, (द) 13·3%।

उत्तर—(स) 24·8%।

प्रश्न 4. देश में जनसंख्या वृद्धि का मुख्य कारण है—

(अ) देश का औद्योगिक विकास, (ब) बेरोजगारी,
(स) ऊँची जन्म दर, (द) नगरीकरण का विकास।

उत्तर—(स) ऊँची जन्म दर।

8 हमारी आर्थिक समस्यायें एवं आर्थिक विकास (2)

[पूँजी की कमी, बचत की अक्षमता तथा तकनीकी का अभाव]

अति लघु उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1. पूँजी किसे कहते हैं ? (1989)

उत्तर—पूँजी धन के उस भाग को कहते हैं जिसका प्रयोग उत्पादन कार्यों में किया जाता है।

प्रश्न 2. पूँजी संचय किसका परिणाम है ?

उत्तर—पूँजी संचय नागरिकों की बचत का परिणाम होती है।

प्रश्न 3. नियोजन तथा आर्थिक विकास के लिए पूँजी क्यों आवश्यक है ? (1988)

उत्तर—पूंजी के अभाव में किसी प्रकार का नियोजन या आर्थिक विकास नहीं किया जा सकता। किसी भी परियोजना को पूरा करने के लिए पूंजी की आवश्यकता होती है।

प्रश्न 4. भारत मे पूंजी की कमी के चार कारण बताइए। (1986, 88, 90)

उत्तर—भारत में पूंजी की कमी के चार कारण इस प्रकार हैं—

(1) निर्धनता,
(2) बेकारी,
(3) जनसंख्या में वृद्धि,
(5) प्रति व्यक्ति आय का निम्न स्तर।

प्रश्न 5. पूँजी निर्माण क्या है ? यह किन तीन तत्त्वों पर निर्भर करता है ? (1988)

उत्तर—पूंजी की मात्रा बढ़ाने की प्रक्रिया को पूंजी निर्माण कहा जाता है। यह निम्नलिखित तीन तत्वों पर निर्भर करता है—

(1) बचत,
(2) वित्तीय संस्थाएँ,
(3) निवेश।

प्रश्न 6. वर्तमान समय में भारत की पूंजी निर्माण दर कितनी है ?

उत्तर—वर्तमान समय में पूंजी निर्माण की दर 22·7% है।

प्रश्न 7. बचत की अक्षमता तथा पूँजी की कमी के पाँच आर्थिक प्रभाव बताइए।

उत्तर—बचत की अक्षमता तथा पूंजी की कमी के पाँच आर्थिक प्रभाव इस प्रकार हैं—

(1) आर्थिक विकास की गति मन्दी,
(2) बेरोजगारी,
(3) उत्पादन में वृद्धि नहीं,
(4) वस्तुएँ महँगी होना,
(5) रहन-सहन का स्तर घटना।

प्रश्न 8. भारत में बचत अक्षमता कम होने के पाँच कारण बताइए।

उत्तर—भारत में बचत अक्षमता कम होने के पाँच कारण इस प्रकार हैं—

(1) प्रति व्यक्ति आय कम होना,
(2) आय की असमानता,
(3) करों की अधिकता,
(4) रूढ़िवादिता तथा
(5) कार्यक्षमता में कमी।

प्रश्न 9. तकनीकी प्रतिभा के पलायन का क्या अर्थ है ? (1985, 86, 88)

उत्तर—तकनीकी प्रतिभा के पलायन का अर्थ डाक्टरों, इन्जीनियरों तथा तकनीकों का धन अथवा अन्य सुविधाओं के कारण विदेश चला जाना है।

लघु उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1. पूँजी का निर्माण किन तत्वों पर आधारित होता है ? (1988)

उत्तर—पूँजी का निर्माण

पूँजी का निर्माण निम्नलिखित तीन तत्वों पर आधारित होता है—

1—वचत।

2—वित्तीय संस्थाएँ।

(i) बैंक,

(ii) डाकखाना,

(iii) बीमा कम्पनियाँ।

3—निवेश।

निवेश के लिए उद्यमियों तथा साहसियों की आवश्यकता होती है।

प्रश्न 2. देश में पूँजी निर्माण की गति शिथिल होने के पाँच मुख्य कारणों को बताइए। (1988, 90)

उत्तर—पूँजी निर्माण की गति शिथिल होने के 5 कारण

पूँजी-निर्माण की गति के शिथिल होने के कारण निम्नलिखित हैं—

(1) जनसंख्या की वृद्धि,

(2) निर्धनता,

(3) निम्न उत्पादकता,

(4) करों की अधिकता और

(5) घाटे की अर्थव्यवस्था।

प्रश्न 3. बचत क्षमता बढ़ाने के लिए क्या उपाय करने चाहिए ?

उत्तर—वचत क्षमता बढ़ाने के उपाय

वचत क्षमता बढ़ाने के निम्नलिखित उपाय हैं—

(1) बचतों को प्रोत्साहित करना,

(2) बचतों का उत्पादक कार्यों में प्रयोग,

(3) उत्पादन विधियों में सुधार,

(4) कृषि का विकास,

(5) जनसंख्या वृद्धि पर नियन्त्रण,

(6) कर नीति में संशोधन,

(7) प्राकृतिक साधनों का अधिक प्रयोग,

(8) मूल्यों में स्थिरता,

(9) कुटीर तथा लघु उद्योगों का विकास।

प्रश्न 4. देश में तकनीकी ज्ञान की वर्तमान स्थिति क्या है ?

उत्तर—देश में तकनीकी ज्ञान की वर्तमान स्थिति इस प्रकार है—

(1) अनेक मशीनों तथा कल पुर्जों का निर्माण किया जाने लगा है।

(2) भारत ने आर्यभट्ट, रोहिणी, भास्कर तथा इनसेट I अन्तरिक्ष में भेजे हैं।

(3) भारत इन्जीनियरिंग वस्तुएँ निर्यात करने लगा है।

(4) भारतीय इन्जीनियर अनेक परियोजनाओं में विदेशों की सहायता करते हैं।

(5) भारत में अनेक तकनीकी संस्थानों की स्थापना की गई है।

प्रश्न 7. भारत में तकनीकी अभाव की स्थिति है। क्यों ?

उत्तर—भारत में तकनीकी अभाव की कमी निम्नलिखित कारणों से है—

(1) उच्च स्तर के तकनीकी संस्थानों की कमी,
(2) अत्यधिक विकसित तकनीकी का अभाव,
(3) उपलब्ध तकनीकी का उचित प्रयोग न किया जाना,
(4) कुशल श्रमिकों का अभाव,
(5) अनुसंधान तथा शोध कार्य का अभाव और
(6) कुशल इन्जीनियरों का विदेश गमन।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1. भारत में पूँजी की कमी के कारण बताइए। इस कमी को दूर करने के लिए देश में क्या प्रयास किए गए हैं ? (1985, 87)

उत्तर—भारत में पूँजी की कमी के कारण—

भारत में पूंजी की कमी के निम्नांकित कारण हैं—

(1) जनसंख्या में वृद्धि—भारत में 2·5% की दर से जनसंख्या में वृद्धि हो रही है। इससे उपभोग व्यय बढ़ रहा है। बचत के घटने के कारण पूंजी निर्माण की दर में निरन्तर कमी आ रही है।

(2) कम उत्पादन—भारत में जनसंख्या के अनुपात में उत्पादन कम है। उपभोग व्यय अधिक है। अतः बचत और पूंजी निर्माण की दर घटी है।

(3) निर्धनता का दुष्चक्र—भारत में निर्धनता का दुष्चक्र चल रहा है। इससे प्रति व्यक्ति आय एवं राष्ट्रीय आय में कमी आई है। इसी कारण पूंजी निर्माण बहुत कम है।

(4) बैंकिंग सुविधाओं की कमी—हमारे देश में बैंक, डाकघर, बीमा आदि सुविधाओं के अभाव में लोग अधिक बचत नहीं कर पाते हैं। अतः पूंजी निर्माण कम है।

(5) अशिक्षा एवं अज्ञानता—देश में अशिक्षा एवं अज्ञानता के कारण बचत नहीं कर पाते हैं। इससे पूंजी निर्माण में कमी आई है।

(6) साहस की कमी—पूंजी निर्माण में पूंजी निवेश करते समय जोखिम की सम्भावना होती है किन्तु हमारे देश में जोखिम उठाने वाले साहसी व्यक्तियों का अभाव है।

(7) करों की अधिकता—करों की अधिकता के कारण भी लोग पूंजी निर्माण नहीं कर पाते हैं।

(8) प्रभावी माँग की कमी—देश में व्यक्तियों की कम आय होने के कारण उपभोग वस्तुओं की माँग में कमी आई है। इससे उत्पादन में वृद्धि नहीं हो पाती तथा पूंजी निर्माण की गति धीमी रहती है।

(9) आधारभूत सुविधाओं का अभाव—देश में परिवहन, संचार, विद्युत, शिक्षा, चिकित्सा आदि की कमी के कारण उद्योगों का विकास कम हुआ है। इससे विनियोग दर घटी है।

(10) **घाटे की अर्थव्यवस्था**—इस व्यवस्था में बजट में घाटा दिखाकर जनता पर कर भार बढ़ाया जाता है। इन करों के बोझ के कारण लोग अच्छी बचत नहीं कर पाते हैं। इससे पूँजी निर्माण कम होता है।

पूँजी निर्माण की कमी को दूर करने के उपाय

(1) **बचत को प्रोत्साहित करना**—भारत में पूँजी निर्माण की धीमी गति को दूर करने के लिए लोगों को बचत करने के लिए प्रोत्साहन देना चाहिए। इसके लिए सरकार ने देश में डाकघर, बचत बैंक, राष्ट्रीय बचत पत्र, डाकघर उपहार कूपन की योजना लागू की है।

(2) **जनसंख्या वृद्धि पर नियन्त्रण**—हमारी प्रत्येक कठिनाई का कारण जनसंख्या की अधिकता है। हमें अपनी जनसंख्या वृद्धि पर नियन्त्रण रखना चाहिए। इस प्रकार आय की दर में विकास किया जा सकेगा तथा पूँजी निर्माण में सहायता होगी।

(3) **बचत का उत्पादन कार्यों में प्रयोग**—पूँजी को निवेश कार्यों में लगाने के लिए प्रोत्साहन देना चाहिए। गहने, मकान, विवाह आदि अनुत्पादक कार्यों पर कम व्यय करके व्यापार व उद्योग में पूँजी आकर्षित करनी चाहिए।

(4) **कृषि का विकास**—पूँजी निर्माण की धीमी गति को दूर करने के लिए कृषि का विकास किया जाना चाहिए क्योंकि हमारा देश कृषि प्रधान देश है और देश का 71% भाग कृषि में लगा है। अतः कृषि के विकास पर धन व्यय करके पूँजी निर्माण की धीमी गति को दूर किया जा सकता है।

(5) **प्राकृतिक साधनों का कुशलतम उपयोग**—देश के खनिज, जल शक्ति, वन शक्ति, पशु शक्ति का अधिक से अधिक उपयोग करके उत्पादन बढ़ाना चाहिए ताकि हमारी राष्ट्रीय आय तथा राष्ट्रीय उत्पादन बढ़ सके और पूंजी निर्माण की धीमी गति दूर हो सके।

(6) **मूल्य की स्थिरता**—सरकार को वस्तुओं के मूल्य स्थिर करने का प्रयत्न करना चाहिए ताकि मँहगाई का भार अधिक न बढ़ने पाए और पूंजी का निर्माण हो सके।

प्रश्न 2. निम्नलिखित समस्यायें क्या हैं? उनमें से किसी एक के कारणों तथा आर्थिक प्रभावों को स्पष्ट कीजिए।

(क) तकनीकी ज्ञान का अभाव (1986)
(ख) बचत की अक्षमता (1986)

उत्तर—(क) तकनीकी ज्ञान का अभाव

अमेरिका तथा यूरोप के विकसित देशों ने अपना आर्थिक विकास टैक्नोलोजी के आधार पर किया है। इन देशों की तकनीक अत्यन्त विकसित है। यह कृषि तथा उद्योग-धन्धों का विकास तकनीकी विकास के कारण ही सम्भव हुआ है। लेकिन भारत में तकनीकी ज्ञान की बड़ी कमी है। उसके लिए बहुधा हमें विदेशों पर निर्भर रहना पड़ता है। आज विश्व के अनेक देशों, जैसे—अमेरिका, कनाडा, आस्ट्रेलिया, अर्जेण्टाइना आदि में आधुनिकतम तरीकों से तकनीकी आधार पर खेती की जाती है। लेकिन भारत में तकनीकी अभाव के कारण आधुनिक तथा वैज्ञानिक ढंग से खेती करना संभव नहीं। अतः इन देशों की तुलना में भारत में प्रति एकड़

उत्पादन बहुत कम होता है। यही बात कुछ हद तक उद्योग-धन्धों पर लागू होती है। तकनीकी ज्ञान के अभाव के कारण ही प्राकृतिक दृष्टि से धनी देश के निवासी आज भी निर्धन ही हैं। तकनीकी ज्ञान की कमी के कारण हम अपने प्राकृतिक संसाधनों का पूर्ण तथा समुचित उपयोग नहीं कर पा रहे हैं। इस प्रकार तकनीकी ज्ञान का अभाव देश के आर्थिक विकास में बाधक है।

तकनीकी ज्ञान का अभाव की समस्या को दूर करने के लिए देश में तकनीकी शिक्षा की समुचित व्यवस्था की जानी चाहिए तथा उस ज्ञान को सचाई व ईमानदारी के साथ व्यवहार में लाना चाहिए। इसके लिए वैज्ञानिक अनुसन्धानों को भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

(ख) बचत की अक्षमता

बचत की क्षमता का अभिप्राय है—बचत करने की शक्ति। बचत करने की शक्ति व्यक्ति की आय पर निर्भर करती है। किसी व्यक्ति में बचत करने की इच्छा कितनी ही प्रबल क्यों न हो, यदि उसमें बचत करने की क्षमता नहीं है, अर्थात् उसकी आय इतनी नहीं है कि वह कुछ बचत कर सके तो वह बचत नहीं कर सकता। भारत में प्रति व्यक्ति औसत आय बहुत कम है। भारत में सन् 1979 में प्रति व्यक्ति आय केवल 190 डालर वार्षिक थी। उसी वर्ष अमेरिका तथा जापान में प्रति व्यक्ति वार्षिक आय क्रमशः 9770 डालर तथा 7700 डालर थी। स्पष्ट है कि अमेरिका और जापान के लोगों की बचत करने की क्षमता भारतीयों की तुलना में बहुत अधिक है। फिर आय का एक बड़ा भाग उपभोग में खर्च हो जाता है: हमारे देश में बचत कम होती है।

इस बचत की कमी के निम्नांकित कारण हैं—

(1) देश में तीव्र गति से बढ़ती हुई जनसंख्या, (2) उद्योगों तथा कृषि का असन्तुलित विकास, (3) संसाधनों का पूर्ण विदोहन न होना, (4) देश में मुद्रा स्फूर्ति, (5) अविकसित बैंकिंग प्रणाली, (6) करों की अधिकता, (7) जन सामान्य सुविधाओं का अभाव, (8) अशिक्षा, निर्धनता एवं बेरोजगारी।

उपरोक्त सभी कारणों को दूर कर बचत को बढ़ाया जा सकता है। देश के आर्थिक विकास के लिए यह अत्यन्त आवश्यक एवं महत्वपूर्ण कदम है।

बहु विकल्पीय प्रश्न

सही विकल्प चुनिए—

प्रश्न 1. पूंजी निर्माण में सहायक तत्व है—

(क) बचत, (ख) उद्योगों का विकास,
(ग) उपभोग में कमी, (घ) कृषि का विकास।

उत्तर—(क) बचत

प्रश्न 2. निम्नांकित में से कौन सा तत्व पूंजी निर्माण में सहायक नहीं है—

(क) बचत की सुविधा, (ख) बचत की क्षमता,
(ग) वित्तीय संस्थाएँ, (घ) पूंजी की कमी का दुष्चक्र।

उत्तर—(घ) पूंजी की कमी का दुष्चक्र।

प्रश्न 3. वर्तमान में भारत में पूंजी निर्माण की दर कितनी है—

(क) 19·4%, (ख) 14 2%, (ग) 10·5%, (घ) 6·5%।
उत्तर—(क) 19·4%

प्रश्न 4. पूँजी निर्माण में कौन सा तत्व सहायक है—
(क) भूमि, (ख) श्रम, (ग) साहस, (घ) बचत।
उत्तर—(घ) बचत।

9 हमारी आर्थिक समस्यायें एवं आर्थिक विकास (3)

[आय में असमानता, क्षेत्रीय असन्तुलन, निर्धनता तथा बेरोजगारी]

अति लघु उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1. देश में असमानता की समस्या को स्पष्ट करने वाले तीन तथ्यों का नामोल्लेख कीजिए।

उत्तर—देश में असमानता प्रकट करने वाले तीन तथ्य—
(1) बेरोजगारी की असमानता,
(2) निर्धनता की असमानता,
(3) उद्योग धन्धों के विकास में असमानता।

प्रश्न 2. देश में कृषि क्षेत्र में प्रति व्यक्ति शुद्ध वार्षिक आय कितनी है ?
उत्तर—देश में कृषि क्षेत्र में प्रति व्यक्ति शुद्ध वार्षिक आय 500 रु० है।

प्रश्न 3. पूँजी के केन्द्रीकरण का क्या अर्थ है ?
उत्तर—पूँजी के केन्द्रीकरण का अर्थ है कि पूंजी का निर्माण कुछ ही व्यक्तियों के हाथ में होना।

प्रश्न 4. आय की असमानता के पाँच आर्थिक प्रभाव बताइए ?
उत्तर—देश में आय की असमानता के प्रभाव इस प्रकार हैं—
(1) अधिकतर लोगों को निम्न जीवन स्तर बिताना पड़ता है।
(2) आर्थिक विकास का लाभ केवल धनी वर्ग को प्राप्त होता है।
(3) स्वरोजगार प्राप्त लोगों की संख्या कम होती है।
(4) आर्थिक विकास की गति मन्दी होती है।
(5) देश में भ्रष्टाचार बढ़ता है।

प्रश्न 5. क्षेत्रीय असन्तुलन का क्या अर्थ है ? (1988)
उत्तर—क्षेत्रीय असन्तुलन का अर्थ विभिन्न क्षेत्रों में पाई जाने वाली असमानताएँ हैं।

प्रश्न 6. क्षेत्रीय असन्तुलन कम करने के दो मुख्य उपाय बताइए। (1990)
उत्तर—क्षेत्रीय असन्तुलन दूर करने के दो उपाय इस प्रकार हैं—

(1) पिछड़े क्षेत्रों में (जहाँ उद्योगों की कमी हो) उद्योगों की स्थापना की जानी चाहिए।

(2) कम विकसित राज्यों को अधिक आर्थिक सहायता दी जानी चाहिए।

प्रश्न 7. निर्धनता स्तर का क्या अर्थ है ?

उत्तर—निर्धनता से उस स्थिति का बोध होता है जिसमें समाज का एक बड़ा भाग अपने जीवन की न्यूनतम आवश्यकताओं को भी पूर्ण नहीं कर पाता।

प्रश्न 8. आज देश की कितनी जनसंख्या गरीबी की रेखा से नीचे का जीवन गुजार रही है ?

उत्तर—27·7 करोड़ जनसंख्या गरीबी की रेखा से नीचे का जीवन गुजार रही है।

प्रश्न 9. 1980-81 में भारत की प्रति व्यक्ति आय कितनी थी ?

उत्तर—प्रति व्यक्ति आय 744 रुपये वार्षिक थी।

प्रश्न 10. देश में निर्धनता के पाँच मुख्य कारण बताइए। (1988)

उत्तर—देश में निर्धनता के कारण इस प्रकार हैं—

(1) लम्बी दासता,
(2) जनसंख्या में तेजी से वृद्धि,
(3) कृषि का पिछड़ापन,
(4) कुटीर तथा लघु उद्योगों का पतन और
(5) दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली।

प्रश्न 11. निर्धनता का दुष्चक्र क्या है ?

उत्तर—निर्धनता के दुष्चक्र का अर्थ यह है कि भारत के निवासी लगातार निर्धन बने रहते हैं।

प्रश्न 12. भारत में बढ़ती हुई बेरोजगारी के चार कारण बताइए। (1988)

उत्तर—भारत में बेरोजगारी के कारण इस प्रकार हैं—

(1) तीव्र गति से बढ़ती जनसंख्या,
(2) व्यावसायिक शिक्षा का अभाव,
(3) त्रुटिपूर्ण नियोजन और
(4) कृषि कार्यों की अनिश्चितता।

परीक्षोपयोगी एवं बोर्ड परीक्षा में पूछे गये अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1. बेरोजगारी का अर्थ क्या है ?

उत्तर—जब किसी व्यक्ति को अपने जीवन निर्वाह के लिए कोई कार्य नहीं मिलता है तो उस व्यक्ति को बेरोजगार और उसकी इस समस्या को बेरोजगारी कहते हैं।

प्रश्न 2. भारत में बेरोजगारी के दो कारण बताइये। (1986, 88)

उत्तर—(1) जनसंख्या में वृद्धि,
(2) लघु एवं कुटीर उद्योगों का विकास होना।

प्रश्न 3. सन् 1980-81 में कितने शिक्षित बेरोजगार थे ? (1986)

उत्तर—69 लाख शिक्षित बेरोजगार थे।

लघु उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1. आय की असमानता के आर्थिक प्रभावों का विवरण दीजिए।

उत्तर—आय की असमानता के आर्थिक प्रभाव—

(1) देश में धनी वर्ग का अधिक धनी होना तथा गरीब वर्ग का अधिक निर्धन होना।
(2) पूंजीपतियों और श्रमिकों के संघर्ष में वृद्धि।
(3) पूंजीपतियों द्वारा श्रमिकों का शोषण।
(4) आर्थिक विकास की मन्द गति।
(5) श्रमिक वर्ग की कार्यक्षमता में कमी।
(6) शिक्षा के प्रसार में बाधा।
(7) स्वरोजगार प्राप्त व्यक्तियों की संख्या कम।
(8) हड़ताल, दंगा-फसाद एवं औद्योगिक अशान्ति।

प्रश्न 2. क्षेत्रीय असन्तुलन को स्पष्ट करने वाले कुछ तथ्यों का विवरण दीजिए।

उत्तर—क्षेत्रीय असन्तुलन

भारत में क्षेत्रीय असन्तुलन की स्थिति विद्यमान है। कुछ क्षेत्र पूरी तरह विकसित हैं, कुछ अल्प विकसित हैं तो कुछ पूर्णतया अविकसित हैं। कुछ क्षेत्र ऐसे हैं जो औद्योगिक अथवा व्यावसायिक दृष्टि से बहुत उन्नत हैं। दूसरी ओर कुछ क्षेत्र ऐसे हैं जो औद्योगिक अथवा व्यापारिक दृष्टि से बहुत पिछड़े हैं। कुछ क्षेत्र कृषि की दृष्टि से उन्नत हैं तो कहीं खनिज-पदार्थों की अधिकता है। कहीं रोजगार के अत्यधिक अवसर उपलब्ध हैं तो कहीं बेरोजग़ारी का बोल बाला है। इन सब बातों के कारण भारत में क्षेत्रीय असन्तुलन पाया जाता है। बम्बई, कलकत्ता, कानपुर, अहमदाबाद, दिल्ली आदि स्थानों पर अनेक प्रकार के उद्योगों का स्थानीयकरण हो गया है। लोग अनेक प्रकार के व्यवसाय करते हैं, परिवहन तथा संचार की सुविधायें भी पर्याप्त मात्रा में मिलती हैं। इन स्थानों पर रोजगार पाने की दृष्टि से बड़ी संख्या में लोग पहुँच जाते हैं जिसके कारण जनाधिक्य की समस्या उत्पन्न हो जाती है। लोगों को आवास, पेयजल, स्वच्छ वातावरण आदि नहीं मिल पाता। अनेक सामाजिक तथा आर्थिक बुराइयाँ उत्पन्न हो जाती हैं। इसके विपरीत पिछड़े हुए क्षेत्रों में बेरोजगारी, निर्धनता, भुखमरी आदि समस्याओं का सामना करना पड़ता है। यह क्षेत्रीय विषमता आर्थिक विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है।

प्रश्न 3. भारत एक धनी देश है। यह बात किन तथ्यों से स्पष्ट होती है? (1988)

उत्तर—निम्नलिखित तथ्य यह स्पष्ट करते हैं कि भारत एक धनी देश है—

(1) भारत में प्राकृतिक संसाधन प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं।
(2) भारत की अधिकांश जनता कृषि करती है।
(3) भारत अनेक वस्तुओं का निर्यात करता है।
(4) भारत की भूमि में उर्वरा शक्ति है।

प्रश्न 4. देश में निर्धनता के 5 सूचक कौन-कौन हैं? (1988)

उत्तर—देश में निर्धनता के 5 सूचक इस प्रकार हैं—

राम राम राम राम

(1) भारत में प्रति व्यक्ति मासिक उपभोग व्यय 62 रु० से भी कम है।
(2) भारत के निवासियों का जीवन स्तर निम्न है।
(3) भारत के कृषि में पिछड़ापन है।
(4) भारत के निवासी अपने बालकों के लिए उचित शिक्षा की व्यवस्था नहीं कर पाते।
(5) भारत के निवासियों की आय में असमानता।

प्रश्न 5. निर्धनता के दुष्चक्र का संक्षिप्त विवरण दीजिए।

उत्तर—निर्धनता का दुष्चक्र—

—पूँजी की कमी——→निम्न उत्पादकता
तथा
अर्द्ध विकसित साधन
↑
निम्न विनियोग——निम्न बचत←——निम्न वास्तविक आय

निम्न उत्पादकता से वास्तविक आय में कमी आती है और वास्तविक आय कम होने से बचत नहीं हो पातीं। इसके कारण विनियोग भी निम्न रहता है। यही पूँजी की कमी का कारण है। पूँजी की कमी निर्धनता के दुष्चक्र की सूचक है।

प्रश्न 6. बेरोजगारी कितने प्रकार की होती है? **(1988, 90, 91)**

उत्तर—बेरोजगारी निम्नलिखित प्रकार की होती है—

(1) **गुप्त बेरोजगारी**—जिन व्यक्तियों के द्वारा उत्पादन में कोई योगदान नहीं मिलता, परन्तु फिर भी उत्पादन में लगे रहते हैं, ऐसी रोजगारी बेरोजगारी कहलाती है।

(2) **अल्प रोजगार**—जब किसी व्यक्ति को अपनी क्षमता के अनुसार रोजगार नहीं मिलता तो ऐसी रोजगारी अल्प रोजगारी कहलाती है।

(3) **खुली बेरोजगारी**—जब व्यक्ति कार्य करने योग्य हो और कार्य करना भी चाहे, परन्तु उसे रोजगार न मिले तो ऐसी स्थिति को खुली बेरोजगारी कहते हैं।

(4) **मौसमी बेरोजगारी**—जब कृषक या मजदूर कुछ दिनों के लिए बेरोजगार हो जाएं और वर्ष भर कुछ कार्य करते रहें तो ऐसी स्थिति मौसमी बेरोजगारी कहलाती है।

प्रश्न 7. बेरोजगारी के चार आर्थिक प्रभावों का विवरण दीजिए।

उत्तर—बेरोजगारी के चार आर्थिक प्रभाव इस प्रकार हैं—
(1) आर्थिक सम्पन्नता में कमी आती है।
(2) मानव शक्ति व्यर्थ जाती है।
(3) बेरोजगारी राजनैतिक अस्थिरता उत्पन्न करती है।
(4) औद्योगिक संघर्षों में वृद्धि होती है।

प्रश्न 8. भारत में बेरोजगारी दूर करने के लिए सरकार ने क्या उपाय किए हैं? किन्हीं पाँच का उल्लेख कीजिए। **(1985)**

उत्तर—बेरोजगारी दूर करने के लिए सरकार ने अग्रलिखित उपाय किए हैं—

(1) रोजगार कार्यालयों की स्थापना की है।
(2) लघु तथा कुटीर उद्योगों के विकास के लिए व्यापक प्रबन्ध किए हैं।
(3) बेरोजगारी भत्ता देने का प्रबन्ध किया है।
(4) देश भर में कृषि सेवा केन्द्र खोले जा रहे हैं।
(5) तकनीकी श्रमिकों को स्वयं रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए हैं।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. आय की असमानता को प्रकट करने वाले 5 तथ्यों का उल्लेख कीजिए तथा इसे दूर करने के पाँच उपायों का विवरण दीजिए।

उत्तर—हमारे देश में आय में असमानता है, इस आय की असमानता के निम्नलिखित कारण हैं—

1. **प्रति व्यक्ति आय**—स्वतन्त्रता के पिछले तीस वर्षों में प्रति व्यक्ति आय 1950-51 में 267 रुपये से बढ़कर 1979-80 में 1379 रुपये वार्षिक हो गई किन्तु गरीबी की रेखा से नीचे जीवन-यापन करने वाले लगभग 46%लोगों की प्रति व्यक्ति वार्षिक आय केवल 744 रु० ही है।

2. **भूमि के वितरण में असमानता**—कृषि हमारे देश का सबसे बड़ा व्यवसाय है। इसमें देश की 70% से अधिक जनसंख्या लगी हुई है। कृषि भूमि का वितरण समान न होने के कारण लगभग 20% कृषक परिवारों पर अपनी निजी भूमि नहीं है। वे भूमिहीन कृषक के रूप में बड़े किसानों के खेतों पर बटाई दर के रूप से कार्य करते हैं। इस कारण से किसानों की आय में असमानता है।

3. **विभिन्न व्यवसायों की उत्पादकता तथा आय में असमानता**—देश के विभिन्न व्यवसायों में लगे लोगों की उत्पादकता तथा आय में व्यापक असमानता है। उदाहरण के लिए प्रति व्यक्ति शुद्ध वार्षिक आय कृषि क्षेत्र में 500 रु०, लघु उद्योगों में 800 रु० तथा फैक्ट्रियों, रेल तथा संचार और बैंकिंग व्यापार में क्रमशः 1700 रु०, 1600 रु०, 1500 रु० और सरकारी साधनों में 1100 रुपये है।

4. **राष्ट्रीय आय के वितरण की असमानता**—भारतीय रिजर्व बैंक के आँकड़ों के आधार पर द्वितीय योजना के आरम्भ में ग्रामीण क्षेत्र में जनसंख्या के उच्चतम आधे भाग को कुल आय का 69% तथा निम्नतम आधे भाग को कुल आय का केवल 31% प्रतिशत प्राप्त होता था। जबकि नगरीय क्षेत्रों में यह प्रतिशत क्रमशः 75% तथा 25% था।

5. **पूँजी का केन्द्रीयकरण**—देश में स्वतन्त्रता के बाद संरक्षण नीति अपनाई गई जिसके कारण भारतीय पूँजीपतियों के लाभ में अत्यन्त वृद्धि हुई। देश के अनेक व्यवसाय तथा उद्योग पूँजीपतियों के हाथ में हैं जिनको विकास तथा राष्ट्रीय आय में वृद्धि का सर्वाधिक लाभ हुआ है। 1946-47 में पूँजीपतियों की आय राष्ट्रीय आय की 66% थी, 1966-67 में बढ़कर 11·1% हो गई।

6. **विभिन्न औद्योगिक घराने**—विभिन्न अध्ययनों से पता चला है कि 20 बड़े औद्योगिक घरानों (टाटा, बिड़ला, मफतलाल, मोदी आदि) की सम्पत्ति 1963-64 में 1326 करोड़ रु० थी जो बढ़कर 1978 में 5794 करोड़ रु० हो गई। इस प्रकार पूँजी का केन्द्रीयकरण हो गया है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि देश की आय में असमानता है। इसके कारण आर्थिक विकास का लाभ केवल धनी लोग ही ले रहे हैं। समाज का एक बड़ा वर्ग

आर्थिक रूप से निर्बल है। इससे असन्तोष, भ्रष्टाचार, जनता के शोषण में वृद्धि हो रही है और शिक्षा का समुचित विकास नहीं हो पा रहा है।

आय की असमानता को दूर करने के उपाय

आय की असमानता को दूर करने के निम्नलिखित उपाय हैं—

1. राष्ट्रीय आय का उचित वितरण— राष्ट्रीय आय का वितरण इस प्रकार हो जिससे सभी को लगभग उसका समान भाग प्राप्त हो सके।

2. कृषकों के बीच भूमि का उचित वितरण—भूमिहीन कृषकों को अधिक जोत वाले कृषकों से भूमि दिलानी चाहिए जिससे असमानता की समस्या दूर हो जाय।

3. गरीबी की रेखा से ऊपर उत्थान—उस वर्ग का उत्थान अनिवार्यतः गरीबी की रेखा स ऊपर आने तक किया जाय जो अपना जीवन अब भी बहुत बुरी स्थिति में व्यतीत कर रहा है।

4. उत्पादन साधन सभी को उपलब्ध—कुछ ही पूंजीपति उत्पादन साधन पर अधिकार किये हुए हैं। इन साधनों का लाभ समान रूप से सभी को दिया जाय।

5. औद्योगिक घरानों की सम्पत्ति का उपयोग—औद्योगिक घरानों व सम्पत्ति जो कुटीर या लघु उद्योगों में लग सकती है, लगाई जाय और छोटे वर्ग को उठाकर असमानता कम की जाय।

प्रश्न 2. क्षेत्रीय असन्तुलन के क्या आर्थिक प्रभाव होते हैं ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—कुछ क्षेत्रों का पर्याप्त मात्रा में विकास हो जाना तथा अन्य का पिछड़ी अवस्था में पड़े रहना क्षेत्रीय असन्तुलन कहलाता है।

स्वतन्त्रता के बाद देश ने उत्पादन, उद्योग, विद्युत उत्पादन तथा अनेक नवीन उद्योगों में बड़ी उन्नति की है परन्तु कुछ राज्यों का विकास तो बहुत अच्छी तरह हो गया जबकि अन्य पिछड़े पड़े हैं। इस कारण देश में आज क्षेत्रीय असन्तुलन पैदा हो गया है।

पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, कर्नाटक तथा तमिलनाडु में कृषि विकास अधिक हुआ है जबकि अन्य राज्य कृषि के क्षेत्र में काफी पिछड़े हुए पड़े हैं।

कुछ राज्यों जैसे—महाराष्ट्र, पश्चिमी बंगाल, तमिलनाडु, गुजरात, उत्तर प्रदेश, कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार तथा केन्द्र प्रशासित प्रदेश दिल्ली में औद्योगिक विकास कम हुआ है। देश के कई राज्य तो अब भी विकास की दृष्टि से पिछड़े हुए हैं। जैसे—आसाम तथा अन्य पूर्वी राज्य।

अपने उत्तर प्रदेश में ही पूर्वी आन्ध्र प्रदेश के बजाय पश्चिमी आन्ध्र प्रदेश का विकास कम हुआ है। पूर्वी प्रदेश में अब भी पश्चिमी की अपेक्षा बेरोजगारी अधिक है।

किसी क्षेत्र का आर्थिक विकास अन्य की तुलना में कम हुआ है। कम विकास वाले क्षेत्र में गरीबी और बढ़ गई। जनता की कार्य क्षमता कम हो गई है। कुछ ही स्थानों पर बैंकों, उद्योगों आदि के केन्द्रीयभूत हो जाने से देश का आर्थिक विकास कम हो पाया है।

इसका अग्रलिखित आर्थिक प्रभाव पड़ा है—

(1) देश में असमान आर्थिक वितरण हुआ है और आर्थिक विषमता आई है।

(2) इससे धनी क्षेत्र अधिक धनी और निर्धन क्षेत्र अधिक निर्धन बनते जा रहे हैं।

(3) समाजवाद की भावना पर कुठाराघात हुआ है।

(4) देश के अधिकांश भागों में गरीबी और बेरोजगारी में वृद्धि हुई है।

(5) जनता की कार्यक्षमता कम हुई है और उसमें असन्तोष की भावना जाग्रत हुई है।

(6) शहरों में औद्योगिक केन्द्रीकरण होने से अनेक समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं।

(7) सभी क्षेत्रों का समान रूप से विकास नहीं हुआ।

(8) देश में कृषि एवं उद्योग धन्धों का विकास असन्तुलित रूप से हुआ है।

प्रश्न 3. "भारत एक धनी देश है जिसके निवासी निर्धन हैं।" स्पष्ट कीजिए।

अथवा

"भारतीय किसान निर्धनता में जन्म लेता है, पलता है और निर्धनता में मरता है।" इस कथन की पुष्टि कीजिए।

अथवा

भारत में निर्धनता के मुख्य कारण बताइए। (उ०प्र० 1988)

उत्तर—भारत एक प्राकृतिक संसाधनों से परिपूर्ण देश है। किन्तु एक लम्बे समय से गुलामी की जंजीरों में जकड़े रहने के कारण विदेशी सत्ता ने इसके आर्थिक विकास की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। इसके अतिरिक्त देश की आबादी निरन्तर बढ़ती रही है। आज यह जनसंख्या की वृद्धि अपनी चरम सीमा पर पहुँच चुकी है। इन दो प्रमुख कारणों से देश के उद्योग-धन्धे और कृषि उत्पादन कम हुआ है। इससे देश निर्धनता का शिकार हो गया। यह निर्धनता भारत जैसे विकासशील देश के आर्थिक विकास में अभिशाप बनकर खड़ी हुई है, इसके निम्नलिखित कारण हैं—

1. **लम्बी दासता**—सैकड़ों वर्ष तक गुलाम रहने के कारण भारत की अर्थ-व्यवस्था जर्जर हो गई थी। विदेशी शासकों के यहाँ के प्राकृतिक साधनों का प्रयोग अपने देश के लिए किया, भारत के लिए नहीं। इससे भारतीय जनता की आर्थिक स्थिति खराब होती चली गई।

2. **तीव्र जनसंख्या वृद्धि**—देश में जनसंख्या की तेजी से वृद्धि होने के कारण बेरोजगारी, निर्धनता, निम्न जीवन स्तर आदि की समस्याएँ पैदा हो गईं जिससे निर्धनता बढ़ गई है।

3. **कृषि का पिछड़ापन**—कृषि में नई तकनीकों तथा विकसित बीजों की समुचित व्यवस्था न होने से उत्पादन में कमी बनी हुई है।

4. **कुटीर व लघु उद्योगों का पतन**—प्राचीन भारत में कुटीर उद्योग काफी विकसित थे परन्तु अब उनकी कमी आ जाने से बेरोजगारी बढ़ गई है। धन पूँजीपतियों के पास केन्द्रित हो गया है। इससे गरीबी और बढ़ गई है।

5. **दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली**—देश में शिक्षा-प्रणाली व्यवसाय तथा रोजगार मूलक न होने के कारण बेरोजगारों की संख्या में वृद्धि कर रही है। रोजगारमूलक

शिक्षा के अभाव में देशवासी प्रगति की दौड़ में काफी पीछे रह गए हैं। देश में अब भी अशिक्षित लोग बहुत हैं। इस कारण गरीबी पनप रही है।

6. **आय में असमानता**—देश में आय और सम्पत्ति का समान वितरण न होने से विकास कार्यों का लाभ गरीब वर्गों तक नहीं पहुँच पा रहा है जिसके कारण उनकी निर्धनता स्थायी बनी हुई है।

7. **यातायात के साधनों की कमी**—ग्रामीण क्षेत्रों में जहाँ देश की अधिकांश जनसंख्या रहती है, यातायात के साधनों की भारी कमी, सड़कों के अभाव के कारण आर्थिक विकास के प्रयास अधिक सफल नहीं हो सके हैं। अतः ग्रामीण जनता अब भी निर्धनता में दिन काट रही है।

8. **निर्धनता का कुचक्र**—जब देश में गरीबी का चक्र बना रहता है तो देशवासी कुपोषण के शिकार होते हैं जिससे उनका स्वास्थ्य खराब रहता है। उनकी कार्यक्षमता निम्न रहती है जिससे कम मजदूरी मिलने से वे निर्धन ही बने हुए हैं।

प्रश्न 4. अन्तर स्पष्ट कीजिये—
(क) छिपी बेरोजगारी तथा खुली बेरोजगारी।
(ख) मौसमी बेरोजगारी तथा अल्प रोजगार।

उत्तर—(क) छिपी बेरोजगारी तथा खुली बेरोजगारी।

छिपी बेरोजगारी उस बेरोजगारी को कहते हैं जो प्रत्यक्ष रूप से दिखलाई नहीं पड़ती है। भारत में कृषि व्यवसाय ऐसा ही व्यवसाय है जिसमें एक ही परिवार के कई व्यक्ति काम न होते हुए भी सम्बन्धित रहते हैं तथा खाली बिना किसी कार्य के बैठे रहते हैं।

इसके विपरीत काम करने की इच्छा होते हुए भी जब आदमी को काम नहीं मिलता है वह व्यर्थ ही इधर उधर घूमता फिरता रहे तो उसे खुली बेरोजगारी कहते हैं। लोगों को तकनीकी ज्ञान भी होता है फिर भी काम नहीं। यह खुली बेरोजगारी कहलाती है।

(ख) मौसमी बेरोजगारी तथा अल्प रोजगार—

मौसमी बेरोजगारी को आंशिक बेरोजगारी कहते हैं। मौसमी बेरोजगारी कृषि तथा कृषि पर आश्रित रोजगारों में मिलती है। जब फसल बोई तथा काटी जाती है तब मजदूरी मिलती है तब शेष समय में मजदूर बेकार रहते हैं।

इसके विपरीत जब किसी व्यक्ति को पूरे समय के लिए कार्य नहीं मिलता तो इसे अल्प रोजगार के नाम से पुकारा जाता है। ऐसा व्यक्ति कार्य तो करता है लेकिन उसकी क्षमता का पूर्ण रूप से उपयोग नहीं हो पाता। यदि एक इन्जीनियर को क्लर्क का काम दिया जाय तो उसकी पूरी क्षमता का उपयोग नहीं होगा।

इस प्रकार मौसमी बेरोजगारी तथा अल्प रोजगार के अन्तर को स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है।

प्रश्न 5. बेरोजगारी का देश के आर्थिक जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है? भारत में बेरोजगारी दूर करने के लिए सरकार ने क्या कदम उठाये हैं?

उत्तर—भारत एक विशाल देश है। देश की गम्भीर समस्याओं में बेरोजगारी की समस्या एक महत्वपूर्ण समस्या है। इसका देश के आर्थिक विकास पर

बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। भारत में बेरोजगारी के आर्थिक जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों को निम्न प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है—

(1) जीवन स्तर का नीचा हो जाना, (2) आर्थिक जीवन में स्थिरता, (3) मानव शक्ति का व्यर्थ नष्ट होना, (4) कानून व्यवस्था में गिरावट आना, (5) सामाजिक समस्याओं का उत्पन्न हो जाना, (6) राजनैतिक अस्थिरता उत्पन्न हो जाना, (7) ऋण का बोझ, (8) अपराधों में वृद्धि, (9) आर्थिक सम्पन्नता में कमी, (10) अन्य दुष्यपरिणाम।

बेरोजगारी दूर करने के सरकारी प्रयास (कदम)—

(1) लघु एवं कुटीर उद्योगों के विकास का प्रबन्ध।
(2) रोजगार कार्यालय खोलना।
(3) कृषि सेवा केन्द्रों को खोलना तथा सिंचाई सुविधाओं में वृद्धि।
(4) कार्यालयों की संख्या में वृद्धि।
(5) बेरोजगारी भत्ता आदि-आदि।

बहु विकल्पीय प्रश्न

सही विकल्प चुनिए—

प्रश्न 1. एक बी० ए० पास व्यक्ति किस प्रकार की बेरोजगारी का उदाहरण है— (1986)

(क) छिपी; (ख) खुली, (ग) अल्प, (घ) मौसमी।

उत्तर—(ग) अल्प।

प्रश्न 2. भारत में निर्धनता का मुख्य कारण है—

(क) दोष पूर्ण शिक्षा नीति,
(ख) बेरोजगारी,
(ग) निम्न जीवन स्तर,
(घ) तीव्र जनसंख्या वृद्धि।

उत्तर—(घ) तीव्र जनसंख्या वृद्धि।

प्रश्न 3. विश्व में सबसे बड़ा जनसंख्या वाला देश है—

(क) भारत, (ख) चीन,
(ग) सोवियत रूस, (घ) सं० रा० अमेरिका

उत्तर—(ख) चीन।

प्रश्न 4. बेरोजगारी दूर करने का सबसे बड़ा प्रभावी उपाय कौन-सा है?

(क) औद्योगीकरण,
(ख) जनसंख्या वृद्धि पर नियन्त्रण,
(ग) प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि,
(घ) आय का समान वितरण।

उत्तर—(ख) जनसंख्या वृद्धि पर नियन्त्रण।

10 विकास के प्रभावी पक्ष (1)

[हमारी कृषि, भूमि सुधार, तकनीकी विकास, हरित क्रान्ति एवं आत्मनिर्भरता]

अति लघु उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1. भारत में कृषि का राष्ट्रीय आय में कितना योगदान है? (V. Imp.)

उत्तर—भारत की राष्ट्रीय आय का 50% भाग कृषि क्षेत्र से प्राप्त होता है।

प्रश्न 2. देश में वनों के अन्तर्गत कितना क्षेत्र है?

उत्तर—देश में वनों के अन्तर्गत लगभग 675 लाख हेक्टेयर क्षेत्र है।

प्रश्न 3. भारत में मुख्यतया कितने प्रकार की फसलें होती हैं?

उत्तर—भारतवर्ष में मुख्यत: तीन प्रकार की फसलें होती हैं—

(1) खाद्यान्न, (2) व्यापारिक फसलें, (3) पेय फसलें।

प्रश्न 4. चावल तथा गेहूँ उत्पादन के किन्हीं दो प्रमुख राज्यों के नाम बताइये। (1989)

उत्तर—(i) चावल—पश्चिमी बंगाल, बिहार।

(ii) गेहूँ—उत्तर प्रदेश, पंजाब।

प्रश्न 5. देश में कृषि उपजों की विभिन्नता के क्या कारण हैं?

उत्तर—देश में कृषि उपजों की भिन्नता के कारण यहाँ की जलवायु तथा मिट्टी की भिन्नता है।

प्रश्न 6. भारतीय कृषि की किन्हीं चार विशेषताओं का नामोल्लेख कीजिए। (1988)

उत्तर—भारतीय कृषि की कुछ विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

(1) भारत में खेत छोटे तथा बिखरी अवस्था में हैं।

(2) भारत में कृषि परम्परात्मक ढंग से की जाती है।

(3) अन्य देशों की तुलना में यहाँ की प्रति हेक्टेयर कृषि उत्पादन कम है।

(4) यद्यपि भारत में कृषि के लिए सिंचाई के साधन उपलब्ध हैं, परन्तु फिर भी यहाँ की कृषि मौसम और वर्षा पर आधारित है।

प्रश्न 7. चाय और तम्बाकू उत्पादन में भारत का विश्व में कौन-सा स्थान है? (1986)

उत्तर—भारत का चाय उत्पादन में प्रथम तथा तम्बाकू उत्पादन में तीसरा स्थान है।

प्रश्न 8. भूमि सुधार कार्यक्रम के अन्तर्गत किए गये किन्हीं तीन प्रयासों का वर्णन कीजिए। (V. Imp.)

उत्तर—भूमि सुधार के लिए निम्नलिखित प्रयास किए गए हैं—

(1) चकबन्दी, (2) सहकारी खेती,
(3) भूदान आन्दोलन।

प्रश्न 9. चकबन्दी का क्या अर्थ है ? (1987, 88, 89)

उत्तर—बिखरे हुए खेतों को एक स्थान पर संगठित करना चकबन्दी कहलाता है।

प्रश्न 10. काम के बदले अनाज योजना के केवल दो लाभ बताइए। (1985, 88, 89)

उत्तर—अनाज योजना के दो लाभ इस प्रकार हैं—

(1) खेतिहर मजदूरों को काम मिलना,
(2) नगरीय क्षेत्रों की ओर पलायन रुका है।

परीक्षोपयोगी एवं बोर्ड परीक्षा में पूछे गये अन्य प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न 1. रबी तथा खरीफ की फसलों के बोने तथा काटने का समय बताइए।

उत्तर—रबी की फसल—यह अक्टूबर नवम्बर में बोई जाती है और मार्च अप्रेल में काटी जाती है।

खरीफ की फसल—यह जुलाई अगस्त में बोई जाती है और अक्टूबर में काटी जाती है।

प्रश्न 2. रबी तथा खरीफ की फसलों की दो-दो उपजों के नाम बताओ। (1989)

रबी की फसलें—(1) गेहूँ, (2) चना-मटर, (3) जौ, (4) तिलहन (सरसों)।
खरीफ की फसलें—(1) ज्वार-बाजरा, (2) मक्का, (3) धान, (4) कपास।

प्रश्न 3. दो व्यापारिक तथा पेय फसलों के नाम लिखिये। (1989)

उत्तर—(1) व्यापारिक फसलें—(1) जूट, (ii) कपास।
(2) पेय फसलें—(1) चाय, (2) कहवा।

प्रश्न 4. भूदान क्या है ? इसके प्रणेता कौन थे ? (1985, 88)

उत्तर—भूमि को अधिक भूमि वालों से दान में लेकर उसे भूमिहीन कृषकों में वितरित कर देना भूदान कहलाता है। इसके प्रणेता विनोबा भावे थे।

प्रश्न 5. भारत के ऐसे दो राज्यों के नाम लिखो जहाँ गेहूँ और चावल साथ-साथ पैदा होते हैं ? (1990)

उत्तर—(1) पंजाब, (2) उत्तर प्रदेश।

प्रश्न 6. हरित क्रान्ति क्या है ? (1988, 89)

उत्तर—कृषि करने के तरीकों में सुधार करना तथा उत्पादन बढ़ाना ही हरित क्रान्ति है।

लघु उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1. हरित क्रान्ति का अर्थ तथा लाभ बताइए। (1988, 89

उत्तर—हरित क्रान्ति का अर्थ तथा लाभ

हरित-क्रान्ति से अर्थ कृषि की उत्पादन तकनीक में सुधार तथा कृषि उत्पादन में वृद्धि से लगाया जाता है।

हरित क्रान्ति के लाभ—

(1) **उत्पादन में वृद्धि**—हरित क्रान्ति के फलस्वरूप हमारा उत्पादन प्रति हेक्टेयर कई गुना बढ़ा है।

(2) **रोजगार अवसरों में वृद्धि**—हरित क्रान्ति ने खेतिहर किसानों को रोजगार के अवसर प्रदान किए हैं।

(3) **नवीन तकनीकी का विकास**—हरित क्रान्ति के फलस्वरूप कृषि में नवीन तकनीकी का विकास हुआ है और उत्पादन बढ़ा है।

(4) **पूंजी निर्माण में वृद्धि**—हरित क्रान्ति के कारण बचत क्षमता बढ़ी है और पंजी निर्माण की दर बढ़ी है।

(5) **भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव**—हरित क्रान्ति के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था सुधार की ओर बढ़ी है।

प्रश्न 2. भारतीय कृषि के पिछड़ेपन के कारण लिखिए। (1984, 85)

उत्तर—भारतीय कृषि के पिछड़ेपन के निम्नलिखित प्रमुख कारण हैं—

(1) कृषि जोतों का छोटा और छिटका होना, (2) निम्नस्तरीय तकनीक, (3) भूमि पर जनसंख्या का अधिक दवाब, (4) भू-स्वामित्व प्रणाली का अनुचित होना, (5) आर्थिक या धन-सम्बन्धी सुविधाओं का अभाव।

प्रश्न 3. भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्व स्पष्ट कीजिये। (1987)

उत्तर—भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का विशेष महत्व है। राष्ट्रीय आय का लगभग 50 प्रतिशत भाग कृषि से प्राप्त होता है। **भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का अपना महत्व निम्न कारणों से है**—(1) रोजगार का मुख्य स्रोत, (2) राष्ट्रीय आय का प्रमुख स्रोत, (3) उद्योगों के लिये कच्चे माल की प्राप्ति, (4) सरकार को आय, (5) विदेशी मुद्रा की प्राप्ति।

प्रश्न 4. कृषि की प्रमुख विशेषतायें लिखिये।

अथवा

भारतीय कृषि की प्रमुख समस्यायें क्या हैं? संक्षेप में लिखिए। (1984, 88)

उत्तर—कृषि की प्रमुख विशेषतायें निम्नलिखित हैं—

(1) भारत में खेत छोटे और बिखरे हैं, (2) भारतीय कृषि मौसम पर आधारित है, (3) भारतीय किसान परम्परागत साधनों का प्रयोग करते हैं, (4) जलवायु तथा मिट्टी की दृष्टि से असमानता पाई जाती है, (5) अन्य विकसित देशों की तुलना में उत्पादन कम है।

प्रश्न 5. तकनीकी विकास का कृषि पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर—तकनीकी विकास

सन् 1966-67 में हमारे देश में कृषि विकास के सम्बन्ध में नई नीति अपनाई गई और तकनीकी विकास भी हुआ जिसका भारतीय कृषि पर निम्नांकित प्रभाव पड़ा—

(1) सिंचाई साधनों का विकास हुआ जिससे उत्पादन बढ़ा।
(2) उत्तम प्रकार के बीजों से अधिक उत्पादन सम्भव हुआ।
(3) रसायनिक खादों के कारण उत्पादन में वृद्धि हुई।
(4) कृषि में यंत्रीकरण एवं नवीन उपकरणों के प्रयोग से उत्पादन में वृद्धि हुई।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1. योजना विधि में खाद्यान्न उत्पादनों की वृद्धि पर प्रकाश डालिये।

उत्तर—भारत में प्रमुख खाद्यान्नों के उत्पादन में वृद्धि—भारत कृषि प्रधान देश है। भारत में खाद्यान्न उत्पादन के क्षेत्र में पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत अनेकों प्रयास किये गये हैं तथा उत्पादनों में काफी वृद्धि हुई है। सभी पंचवर्षीय योजनाओं में कृषि विकास तथा उत्पादनों को प्राथमिकता दी गयी है। अच्छे बीजों, रासायनिक खादों तथा नवीन कृषि विधियों के द्वारा खाद्यान्नों के उत्पादनों में काफी वृद्धि हुई है। **प्रमुख खाद्य फसलों में निम्न प्रकार प्रगति हुई।**

(1) **चावल**—चावल भारत का प्रमुख खाद्य पदार्थ है। स्वतन्त्रता की प्राप्ति पश्चात् अच्छे बीजों तथा खादों उर्वरकों के उचित प्रयोग से चावल के उत्पादन में बहुत अधिक वृद्धि हुई है। भारत का चीन के पश्चात चावल उत्पन्न करने के क्षेत्र में संसार में द्वितीय स्थान है।

(2) **गेहूँ**—भारत में खाद्यान्नों के अन्तर्गत चावलों के पश्चात् गेहूँ का द्वितीय स्थान है। गेहूँ के उत्पादन में वृद्धि का प्रमुख कारण अधिक उपज देने वाले बीजों का प्रयोग है। पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत अच्छी श्रेणी के बीजों के कारण उत्पादम में बहुत अधिक वृद्धि हुई है।

(3) **मोटे अनाज तथा दालें**—मोटे अनाजों के अन्तर्गत जौ, ज्वार, बाजरा, तथा मक्का आदि हैं। इनका उत्पादन भी हमारे देश में होता है। दालों में चना, अरहर, मूंग, मसूर तथा उर्द आदि हैं। इन दालों के उत्पादन में भी वृद्धि हुई है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि योजना अवधि में भारत में खाद्यान्न उत्पादन में बहुत अधिक वृद्धि हुई है।

प्रश्न 2. हरित क्रान्ति के गुण-दोषों का विवेचन कीजिए।

उत्तर—हरित क्रान्ति के गुण—

(1) **उन्नत बीजों के प्रयोग में वृद्धि**—अधिक उपज देनें वाली किस्मों के बीजों का उपयोग बढ़ा है तथा नयी-नयी किस्मों की खोज की गयी है। अभी तक यह कार्यक्रम गेहूँ, धान, बाजरा, मक्का व ज़्वार पर ही लागू किया गया है। यह कार्यक्रम 1966-67 ई० में आरम्भ किया गया था। उस समय उन्नत बीजों का प्रयोग 19 लाख हेक्टेयर भूमि में किया गया था। लेकिन 1979-80 ई० में बढ़कर यह क्षेत्रफल 352 लाख हेक्टेयर हो गया था।

(2) **रासायनिक खादों के उपयोग में वृद्धि**—हरित क्रान्ति कार्यक्रम के अन्तर्गत रासायनिक खादों के प्रयोग में तीव्र गति से वृद्धि हुई है। 1960-61 ई० में भारत में रासायनिक खादों की कुल खपत 3 लाख टन थी जो बढ़कर 1980-81 ई० में 60 लाख हो गयी थी।

(3) **लघु सिंचाई योजनाओं पर बल**—हरित क्रान्ति योजना का तीसरा महत्वपूर्ण अंग सिंचाई है। सिंचाई में लघु सिंचाई योजनाओं को विशेष महत्व दिया

गया। लघु सिंचाई की अनेक योजनायें स्वीकार की गईं। 1979-80 ई० तक 30 मिलियन क्षेत्रफल इनके अन्तर्गत आ चुका था।

(4) **पौध-संरक्षण**—हरित क्रान्ति के अन्तर्गत पौध-संरक्षण को भी महत्व दिया गया है। इसके अन्तर्गत फसलों पर दवा छिड़कने का कार्य किया जाता है।

(5) **बहुफसल कार्यक्रम**—इसका अर्थ भूमि पर एक वर्ष में एक से अधिक फसल उगाना है। सन् 1967-68 ई० में यह कार्यक्रम 36 लाख हेक्टेयर भूमि पर लागू किया गया था। 1979-80 ई० में यह क्षेत्रफल बढ़कर 358 लाख हेक्टेयर हो गया था।

(6) **आधुनिक कृषि उपकरणों का उपयोग**—हरित क्रान्ति के अन्तर्गत आधुनिक कृषि यन्त्रों तथा उपकरणों के उपयोग में बड़ी वृद्धि हुई है। भारत में 1961 ई० में कुल 31,000 ट्रैक्टर थे जबकि आज ट्रैक्टरों की संख्या 4 लाख है। शक्ति से चलने वाले पम्प सैटों की संख्या 1965-66 ई० में 5 लाख से बढ़कर 14 लाख हो गई है।

(7) **कृषि सेवा केन्द्र**—अब तक देश में 3128 कृषि सेवा केन्द्र स्थापित किये जा चुके हैं। इनका उद्देश्य तकनीकी व्यक्तियों में व्यावसायिक साहस की क्षमता का विकास करना है।

(8) **कृषि उद्योग निगमों की स्थापना**—प्रायः सभी राज्यों में कृषि उद्योग निगमों की स्थापना की गई है। ये निगम किराया क्रय पद्धति के आधार पर कृषि उपकरण तथा यन्त्रों का वितरण करते हैं तथा भण्डारण को प्रोत्साहित करते हैं।

(9) **कृषकों को उचित मूल्य की गारण्टी**—किसानों को उनकी फसल का उचित मूल्य देने की गारण्टी सरकार द्वारा दी जाती है। सरकार 'कृषि मूल्य आयोग' की सिफारिश पर क्रय-मूल्य निर्धारित करती है। ये मूल्य सरकारी क्रय-मूल्य कहलाते हैं।

(10) **ग्रामीण विद्युतीकरण**—गाँवों में रहने वाले लोगों का जीवन-स्तर ऊँचा करने तथा कृषि के लिए बिजली व्यवस्था करने के उद्देश्य से ग्रामीण विद्युतीकरण की योजना लागू की गई है अब तक 2·61 लाख गाँवों को बिजली दी जा चुकी है।

(11) **भू-संरक्षण**—हरित क्रान्ति के अन्तर्गत भू-संरक्षण कार्यक्रम अपनाया गया है। इसके दो कार्य प्रमुख हैं—(1) कृषि योग्य को क्षरण से रोकना, (2) ऊबड़-खाबड़ भूमि को समतल करके कृषि योग्य बनाना।

हरित क्रान्ति के दोष—

(1) हरित क्रान्ति का प्रभाव कुछ फसलों जैसे गेहूँ, चावल, मक्का, ज्वार, बाजरा तक ही सीमित रहा है।

(2) हरित क्रान्ति का देश में असन्तुलित विकास हुआ है। यह देश में केवल उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, महाराष्ट्र तथा तमिलनाडु तक ही सीमित रही है।

(3) हरित क्रान्ति का लाभ बड़े कृषकों को ही हुआ है क्योंकि वे ही कृषि यंत्र, वैज्ञानिक बीज, उर्वरक क्रय करने में समर्थ रहे हैं।

(4) हरित क्रान्ति से फसलों में अनुमान से कम उत्पादन हुआ है।

प्रश्न 3. भारत में प्रति हेक्टेयर उत्पादन कम है। इसके कौन-कौन से प्रमुख कारण हैं?

उत्तर—भारत में कम उत्पादन के प्रमुख कारण—भारत का कृषि व्यवसाय संसार के अनेक प्रगतिशील देशों की तुलना में बहुत पिछड़ा हुआ है। भारत में प्रति हेक्टेयर पैदावार अन्य देशों की अपेक्षा कम है। कृषि के पिछड़े होने के मुख्य कारण निम्नलिखित हैं—

(1) प्राकृतिक कारण—भारत में अधिकांश कृषि वर्षा पर निर्भर रहती है। वर्षा मानसूनी हवाओं से होती है जिनके आने का समय सदा अनिश्चित रहता है। कभी वर्षा से पहले कभी बाद में तथा अनावृष्टि के कारण सूखा और कभी अतिवृष्टि के कारण आदि से फसलों को भारी हानि होती है। वर्षा की अनिश्चितता के अतिरिक्त पाला, ओले, टिड्डी आदि से भी फसलों को बड़ी हानि पहुँचती रहती है।

(2) खाद की कमी— भारतीय कृषक अपनी निर्धनता के कारण खेतों में उत्तम प्रकार की खाद डालने में भी असमर्थ रहता है। गरीबी के कारण यह गोबर की भी खाद नहीं बना पाता और उसे ईंधन की जगह काम में लाता है। रासायनिक खादें उसके लिए और भी अधिक मँहगी पड़ती हैं। अतः खाद की कमी के कारण उत्पादन कम होता है।

(3) अच्छे बीजों का अभाव—उपज का अच्छा होना अच्छे बीजों पर ही निर्भर रहता है। लेकिन दुर्भाग्य से भारतीय कृषक अच्छे बीजों का भी प्रयोग नहीं कर पाता है। पिछली फसल के बचे अनाज को ही बीज के रूप में प्रयोग करते हैं। अतः उत्पादन कम होता है।

(4) सिंचाई के अपर्याप्त साधन—भारत में मानसूनी हवाओं से वर्षा अनिश्चित, असमान एवं अपर्याप्त होती है। अतः वर्षा के दोषों को दूर करने के लिए सिंचाई के साधनों की बड़ी आवश्यकता है। किन्तु यहाँ सिंचाई के साधनों का अभाव है। खेती की जाने वाली भूमि के केवल 1/5 भाग में ही सिंचाई हो पाती है।

(5) प्राचीन कृषि यन्त्रों का प्रयोग—आज दुनिया के दूसरे देशों में जहाँ ट्रैक्टर तथा अन्य आधुनिक कृषि यन्त्रों के द्वारा खेती होती है वहाँ भारतीय किसान आज भी अधिकांश में उसी पुराने हल तथा अन्य प्राचीन औजारों का ही प्रयोग करता है। पुराना हल खेती के लिए बिल्कुल अनुपयुक्त हो चुका है।

(6) दुर्बल पशु—भारतीय कृषि बैलों के द्वारा की जाती है। यहाँ के बैल कमजोर तथा खराब नस्ल के होने के कारण उल्टे खेती पर भार बन गये हैं। इनसे खेतों की जुताई भली-भाँति नहीं हो पाती। अतः फसल भी अच्छी नहीं होती।

(7) किसानों की अशिक्षा, अज्ञानता और रूढ़िवादिता—भारत के अधिकांश किसान अशिक्षित हैं। वे अपनी अज्ञानता के कारण कृषि के नवीन तरीकों को अपनाने में डरते हैं। वे नई बातों को आसानी से नहीं समझते।

(8) खेतों का छोटा और बिखरा होना—हमारे देश में जनसंख्या के आधिक्य के कारण अधिकांश किसानों के पास खेती के लिए पर्याप्त मात्रा में भूमि नहीं है। फिर उत्तराधिकार के नियम ऐसे हैं कि खेतों का निरन्तर बँटवारा होता रहता है। अतः खेत छोटे और बिखरे हुए हैं। इसके कारण नवीन औजारों एवं यन्त्रों का प्रयोग करना प्रायः असम्भव है।

(9) **किसानों की निर्धनता**—भारत के किसान बड़े गरीब हैं। उनके लिए अच्छी खाद, अच्छे बीज तथा नवीन औजारों का प्रयोग कर सकना प्रायः असम्भव है। अधिकांश किसान ऋणी हैं। अतः कृषि प्रणाली में सुधार करना उनके लिए एक कठिन समस्या है।

(10) **बिक्री की कठिनाइयाँ**—भारतीय किसान को अपनी पैदावार को बेचने में यातायात के साधनों के अभाव में कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं। उनको उनकी अशिक्षा एवं निर्धनता के कारण फसलों का उचित मूल्य नहीं मिल पाता है।

प्रश्न 4. देश में भूमि सुधार एवं उत्पादन वृद्धि के लिए किए गए उपायों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—भारत में भूमि सुधार

भूमि सुधार के लिए हमारे देश में अग्रलिखित कार्यक्रम लागू किये गये हैं—

(1) मध्यस्थों तथा जमींदारों का उन्मूलन, (2) काश्तकारी व्यवस्था में सुधार, (3) जोतों की अधिकतम सीमा का निर्धारण, (4) कृषि का पुनंगठन: (क) चकबन्दी, (ख) सहकारी खेती, (ग) भूदान।

1. **मध्यस्थों तथा जमींदारों का उन्मूलन**—भूमि सुधारों में सर्वप्रथम मध्यस्थों तथा जमींदारों की समाप्ति के लिए राज्यों द्वारा कानून बनाये गये। सबसे पहले मद्रास में जमींदारों का उन्मूलन 1948 ई० में किया गया है। उत्तर प्रदेश में 1 जुलाई, 1952 ई०.को जमींदारी प्रथा समाप्त कर दी गई तथा भूमि का स्वामित्व सरकार ने अपने हाथ में ले लिया। इसी प्रकार अन्य राज्यों में भी कानून बनाकर जमींदारों तथा मध्यस्थों का उन्मूलन कर दिया गया।

जमींदारी उन्मूलन के प्रभाव—

(1) **शोषण का अन्त**—जमींदारों द्वारा काश्तकारों का शोषण किया जाता था। अब उसका अन्त हो गया।

(2) **कृषि उत्पादन में वृद्धि**—भूमि का स्वामित्व मिल जाने के कारण काश्तकार अपनी भूमि पर स्थायी सुधार करने लगे हैं। इससे उत्पादन बढ़ा है।

(3) **सरकारी आय में वृद्धि**—जमींदारी उन्मूलन से सरकार की आय में बहुत वृद्धि हुई है।

(4) **भूमि सुधार में सहायता**—जमींदारी उन्मूलन के कारण भूमि सुधार के अन्य कार्यक्रमों, जैसे—चकबन्दी, सहकारी खेती, जोत की सीमाओं का निर्धारण आदि में बहुत सुविधा हो गयी है।

(5) **काश्तकारों का सरकार से सीधा सम्बन्ध**—काश्तकारों का सरकार से सीधा सम्बन्ध स्थापित हो जाने के कारण उन्हें सरकारी सहायता प्राप्त करने में सुविधा रहती है।

(6) **सामन्तवाद का अन्त**—जमींदारों के अन्त से सामन्तवाद का अन्त हो गया है।

2. **काश्तकारी व्यवस्था में सुधार**—जमींदारी उन्मूलन कानूनों के अन्तर्गत विभिन्न राज्यों में विधवाओं, नाबालिगों, सैनिकों तथा अपंग लोगों को यह सुविधा दी गई थी कि वे अपनी भूमि दूसरों को जोतने के लिए दे सकते थे। यह व्यवस्था

पट्टेदारी कहलाती है। लेकिन बाद में पट्टेदारी प्रथा में भी सुधार की आवश्यकता अनुभव की गई। लगान का नियमन किया गया। लगान के नियमन से पूर्व पट्टेदार को सामान्यतः कुल उपज का आधा भाग भूमि के मालिक को लगान के रूप में देना पड़ता था, लेकिन अब यह दर विभिन्न राज्यों में 25% से लेकर 40% तक है। उत्तर प्रदेश सहित अधिकांश राज्यों में यह दर 25% ही है।

3. **जोतों की अधिकतम सीमा का निर्धारण**—विभिन्न राज्यों में भूमि सुधार कार्यक्रमों के अन्तर्गत जोतों की अधिकतम सीमा निर्धारण कर दी गई है। इसके निम्नलिखित चार उद्देश्य हैं—

(1) बड़े-बड़े भूखण्डों को उचित आकार के भूखण्डों में परिवर्तित करना ताकि उनका प्रबन्ध ठीक प्रकार से किया जा सके तथा उत्पादन में वृद्धि की जा सके।

(2) अधिशेष भूमि को भूमिहीनों में वितरण कर सामाजिक न्याय किया जा सके।

(3) रोजगार की मात्रा में वृद्धि की जा सके।

(4) अधिशेष बन्जर भूमि पर किसानों, कारीगरों तथा शिल्पियों को मकान बनाने की सुविधा प्रदान की जा सके।

उत्तर प्रदेश में भूमि की अधिकतम सीमा 7·3 हेक्टेयर से लेकर 18·3 हेक्टेयर तक है।

4. **कृषि का पुनर्गठन**—भूमि सुधार कार्यक्रमों के अन्तर्गत भूमि का पुनर्गठन भी किया गया है। इसके लिए तीन उपाय किये गये हैं—

(क) चकबन्दी, (ख) सहकारी खेती, (ग) भूदान।

प्रश्न 5. क्या भारत खाद्यान्न उत्पादन में आत्म-निर्भर हो गया है? सप्रमाण अपने कथन की पुष्टि कीजिए।

उत्तर—खाद्यान्न उत्पादन में भारत की आत्म-निर्भरता

हरित क्रान्ति कार्यक्रम को आरम्भ हुए 15 वर्ष हो चुके हैं। इस अवधि में भारतीय कृषि ने आशातीत उन्नति की है। हरित क्रान्ति से पूर्व भारत विदेशों से खाद्य पदार्थों का आयात करता था। लेकिन आज यह खाद्यान्नों के मामले में आत्म-निर्भर है। गेहूँ के उत्पादन में भारत ने पूर्ण आत्म-निर्भरता प्राप्त कर ली है। 1965-66 ई० में खाद्यान्नों का कुल उत्पादन 724 लाख टन हुआ था। लेकिन 1978-79 ई० में देश में 1320 लाख टन खाद्यान्न का उत्पादन हुआ था। इससे खाद्यान्न के मामले में देश आत्म-निर्भर ही नहीं हुआ था अपितु खाद्यान्नों का निर्यात भी करने लगा था। व्यापारिक फसलों के उत्पादन में भी पर्याप्त वृद्धि हुई। गन्ने के उत्पादन में सबसे अधिक वृद्धि हुई। छठी पंचवर्षीय योजना में खाद्यान्नों के उत्पादन का लक्ष्य 1405 लाख टन निर्धारित किया गया है। यह सब हरित क्रान्ति का ही परिणाम है।

परीक्षोपयोगी एवं बोर्ड परीक्षा में पूछे गये प्रश्न तथा उनके उत्तर

प्रश्न 1. भारत में कृषि का क्या महत्व है? स्पष्ट कीजिए। (1989)

उत्तर—भारत में कृषि का महत्व—

भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहाँ की जनसंख्या का लगभग 70% भाग प्रत्यक्ष व, परोक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है। अतः कृषि का भारतीय अर्थ-व्यवस्था में बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है। कृषि का महत्व निम्नलिखित बातों से जाना जा सकता है—

(1) **अधिकांश जनसंख्या का कृषि पर आश्रित होना**—भारत की लगभग 70% जनसंख्या प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर आश्रित है। कृषि भारत का एक प्रमुख उद्योग है और भारत के आर्थिक जीवन में इसका बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है।

(2) **राष्ट्रीय आय का प्रधान स्रोत**—कृषि राष्ट्रीय आय का प्रधान स्रोत है। राष्ट्रीय आय का लगभग 50% भाग कृषि तथा पशुपालन उद्योगों से प्राप्त होता है।

(3) **सरकारी आय का स्रोत**—केन्द्रीय तथा राज्य सरकारों को कृषि तथा सम्बन्धित उद्योगों से पर्याप्त आय प्राप्त होती है। केन्द्रीय सरकार को निर्यात कर तथा उत्पादन शुल्क के रूप में चाय, तम्बाकू, तिलहन आदि से आय होती है। राज्य सरकारों को मालगुजारी, सिंचाई कर, कृषि आय कर, स्टाल फीस, रजिस्ट्रेशन फीस आदि के रूप में पर्याप्त आय प्राप्त होती है।

(4) **उद्योगों के लिये कच्चे माल की प्राप्ति**—अनेक महत्वपूर्ण उद्योग वस्त्र उद्योग, जूट उद्योग, चीनी उद्योग, तेल उद्योग, वनस्पति-घी उद्योग आदि को कच्चे माल के लिए कृषि पर रहना पड़ता है।

(5) **देशी व विदेशी व्यापार**—भारत के आन्तरिक व्यापार में कृषि उपजों का महत्वपूर्ण स्थान है। इसी प्रकार देश के निर्यात व्यापार में चाय, तम्बाकू, जूट, तिलहन, मसाले व वस्त्रों का प्रमुख स्थान है। इस प्रकार के देशी व विदेशी व्यापार में कृषि का बड़ा महत्व है।

(6) **खाद्य पदार्थों की प्राप्ति**—देश की जनसंख्या को अपने भरण-पोषण के लिए खाद्य पदार्थ मुख्यतः कृषि से ही प्राप्त होते हैं।

(7) **आर्थिक नियोजन की सफलता**—देश के नियोजित आर्थिक विकास में कृषि का महत्वपूर्ण स्थान है। आर्थिक नियोजन की सफलता बहुत कुछ कृषि उपजों की वृद्धि पर निर्भर करती है। यही कारण है कि पंचवर्षीय योजना में कृषि पर इतना अधिक बल दिया गया है।

प्रश्न 2. चकबन्दी किसे कहते हैं ? इसके लाभ बताइए ? (1989)

उत्तर—चकबन्दी का अर्थ—

खेतों के उपविभाजन एवं विखण्डन की समस्या का सबसे महत्वपूर्ण हल खेतों की चकबन्दी करना है। चकबन्दी के लिए एक कृषक से सम्बन्धित समस्त खेतों का उपज-मूल्य मालूम कर लिया जाता है। फिर उतनी उपज-मूल्य वाली भूमि उसे एक स्थान पर दे दी जाती है। इस प्रकार उसके बिखरे छोटे-छोटे खेत एक बड़े चक में बदल दिये जाते हैं। यही चकबन्दी है।

चकबन्दी के लाभ—चकबन्दी से निम्नलिखित लाभ प्राप्त होते हैं—

(1) **उपविभाजन एवं विखण्डन के दोषों का अन्त**—चकबन्दी में कृषि-जोतों के उपविभाजन तथा विखण्डन के दोष दूर हो जाते हैं। चकबन्दी से कृषकों को बिखरे हुए छोटे-छोटे खेतों के स्थान पर एक चक के रूप में एक ही स्थान पर

भूमि मिल जाती है। अतः उन्हें एक ही स्थान पर एक बड़े चक में खेती करने का लाभ प्राप्त होता है।

(2) **स्थायी सुधार एवं वैज्ञानिक खेती सम्भव हो जाती है**—चकबन्दी के उपरान्त बड़े खेतों पर स्थायी सुधार करना, वैज्ञानिक ढंग से खेती करना तथा आधुनिक यन्त्रों और औजारों का प्रयोग करना सम्भव हो जाता है। इससे प्रति हेक्टेयर उपज में वृद्धि की जा सकती है।

(3) **श्रम व पूंजी की बचत**—खेतों के बिखरे होने के कारण कृषकों के समय श्रम व पूंजी का जो अपव्यय होता था, उसकी बचत हो जाती है। मेड़ों, रास्तों व पानी की नालियों को लेकर कृषकों के बीच छोटी-छोटी बातों पर जो झगड़े होते थे उनका अन्त हो जाता है। इससे मुकद्दमेबाजी भी कम हो जाती है।

(4) **सार्वजनिक कार्यों के लिए कृषि की व्यवस्था**—चकबन्दी गाँव की सार्वजनिक भूमि, सड़कों, स्कूल, पार्क, खेल के मैदान, खाद के गड्ढे, पानी के विकास की नालियों आदि की नियोजित ढंग से व्यवस्था करने के अवसर प्रदान करती है।

(5) **सिंचाई की व्यवस्था**—छोटे तथा दूर-दूर स्थित खेतों पर सिंचाई की सुविधायें उपलब्ध करना किसान के लिए व्यंग्यपूर्ण तथा कठिन होता है। चकबन्दी के उपरान्त एक ही स्थान पर सिंचाई की व्यवस्था करना सुगम एवं मितव्ययी होता है।

(6) **बड़े पैमाने पर खेती सम्भव**—छोटे तथा बिखरे खेतों पर खेती करना सम्भव नहीं होता। लेकिन चकबन्दी के उपरान्त भूमि बड़े-बड़े खेतों में बँट जाती है। अतः बड़े पैमाने की खेती की सम्भावनायें बढ़ जाती हैं।

(7) **भूमि की बचत**—पर्याप्त कृषि योग्य भूमि जो खेतों के छोटे तथा बिखरे होने के कारण मेड़ों, रास्तों तथा नालियों में व्यर्थ नष्ट होती थी तथा जो कभी-कभी खेत के अत्यन्त छोटे होने के कारण खाली पड़ी रहती थी, चकबन्दी के कारण बच जाती है और उसका लाभप्रद प्रयोग होता है।

(8) **कृषि उपज में वृद्धि**—चकबन्दी के उपरान्त बड़े-बड़े खेतों पर आधुनिक यन्त्रों की सहायता से वैज्ञानिक ढंग से बड़े पैमाने पर खेती करके कृषि उपज को काफी बढ़ाया जा सकता है।

(9) **कृषकों के जीवन-स्तर में सुधार**—चकबन्दी से आर्थिक जोतों का निर्माण होगा। इससे कृषक की आय में वृद्धि होगी। इससे उसका जीवन-स्तर ऊँचा होगा। वह सुखी जीवन व्यतीत कर सकेगा।

बहु विकल्पीय प्रश्न

सही विकल्प चुनिए—

प्रश्न 1. भूमि सुधार के अन्तर्गत भारत में कौन सा कार्यक्रम सर्वाधिक महत्वपूर्ण है— (1985)

(क) चकबन्दी, (ख) मेड़बन्दी, (ग) वृक्षारोपण, (घ) हदबन्दी।

उत्तर—(क) चकबन्दी।

प्रश्न 2. निम्नांकित में से कौन सा राज्य अन्त्योदय कार्यक्रम क्रियान्वित करने में अग्रणी है— (1985)

(क) उत्तर प्रदेश, (ख) राजस्थान, (ग) हिमाचल प्रदेश, (घ) बिहार।

उत्तर—(क) उत्तर प्रदेश।

प्रश्न 3. भूदान आन्दोलन कब चलाया गया— (1985, 88)

(क) 1947, (ख) 1948, (ग) 1950, (घ) 1952।

उत्तर—(घ) 1952।

प्रश्न 4. हरित क्रान्ति का प्रधान आधार क्या है—

(क) जमींदारी उन्मूलन, (ख) चकबन्दी,
(ग) वृक्षारोपण, (घ) हदबन्दी।

उत्तर—(ग) वृक्षारोपण।

प्रश्न 5. भारत का प्रमुख चावल उत्पादक राज्य कौन सा है— (1987)

(क) उत्तर प्रदेश, (ख) पश्चिमी बंगाल, (ग) केरल, (घ) बिहार।

उत्तर—(ख) पश्चिमी बंगाल।

प्रश्न 6. भूदान आन्दोलन के कर्णधार थे— (1988)

(क) महात्मा गाँधी, (ख) मदनमोहन मालवीय,
(ग) जय प्रकाश नारायण, (घ) विनोबा भावे।

उत्तर—(घ) विनोबा भावे।

11 विकास के प्रभावी पक्ष (2)

[हमारे प्रमुख उद्योग धन्धे]

अति लघु उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1. कुटीर उद्योग से क्या अभिप्राय है? (1985, 88)

उत्तर—वे उद्योग जो छोटे स्तर पर कम पूँजी से घरेलू ढंग से चलाये जाते हैं, कुटीर उद्योग कहलाते हैं।

प्रश्न 2. भारत के प्रमुख इस्पात के कारखाने कहाँ-कहाँ हैं? (1985, 87, 88)

उत्तर—भारत में प्रमुख इस्पात के कारखाने निम्नलिखित स्थानों पर हैं—

(1) जमशेदपुर (बिहार) (2) आसनसोल (पं० बंगाल)
(3) भद्रावती (कर्नाटक) (4) भिलाई (मध्य प्रदेश)
(5) राउरकेला (उड़ीसा) (6) दुर्गापुर (पश्चिमी बंगाल)
(7) बोकारो (बिहार)

प्रश्न 3. भारत में सीमेण्ट कारखानों के 5 प्रमुख केन्द्र बताइए। (1988, 90)

उत्तर—भारत में सीमेण्ट कारखानों के प्रमुख केन्द्र इस प्रकार हैं—

(i) डालमिया नगर, (ii) कटनी,
(iii) सतना, (iv) जापाला,
(v) जामनगर।

प्रश्न 4. भारत और उत्तर प्रदेश में चीनी की कितनी मिलें हैं ? (1987)

उत्तर---भारत में चीनी मिलों की संख्या 383 और उत्तर प्रदेश में चीनी मिलों की संख्या 103 है ।

प्रश्न 5. भारत में रेल-इन्जिन तथा वायुयान बनाने वाले दो-दो केन्द्रों के नाम बताइए ।

उत्तर—(क) रेल-इन्जिन—(i) वाराणसी (ii) पेराम्बूर ।
(ख) वायुयान बनाने के केन्द्र—(i) कानपुर (ii) बंगलौर ।

प्रश्न 6. भारत में प्राचीनकाल में उद्योगों की क्या स्थिति थी ?

उत्तर--प्राचीनकाल में उद्योगों की दशा अच्छी नहीं थी ।

प्रश्न 7. स्वतन्त्रता के पश्चात् उद्योगों की स्थिति में क्या परिवर्तन हुआ ?

उत्तर—स्वतन्त्रता के पश्चात् भारत सरकार ने उद्योगों की स्थापना के लिए विशेष प्रयास किए और इनकी स्थापना तीव्र गति से हुई ।

प्रश्न 8. आधारभूत उद्योग से क्या आशय है ?

उत्तर—जो उद्योग अन्य उद्योगों के विकास के लिए आधार बनते हैं, उन उद्योगों को आधारभूत अथवा बुनियादी उद्योग कहा जाता है ।

प्रश्न 9. अपने प्रदेश में विकसित किन्हीं चार उद्योगों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये ।

उत्तर—उत्तर प्रदेश में विकसित चार उद्योगों के नाम—(i) चीनी उद्योग, (ii) सूती वस्त्र उद्योग, (iii) रेशमी वस्त्र उद्योग तथा (iv) रसायन उद्योग ।

परीक्षोपयोगी एवं बोर्ड परीक्षा में पूछे गये अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न 1. भारत के दो कुटीर उद्योगों के नाम बताइये । (1988)

उत्तर—(i) गुड़ उद्योग, (ii) चमड़ा उद्योग, (iii) दरी एवं गलीचा उद्योग ।

प्रश्न 2. भारत में निजी क्षेत्र तथा सार्वजनिक क्षेत्र में दो-दो लोहा-इस्पात कारखानों के नाम लिखो । (1984, 85, 88)

उत्तर—निजी क्षेत्र—(i) टाटा आयरन एण्ड स्टील वर्क्स जमशेदपुर,
(ii) इण्डियन आयरन एण्ड स्टील वर्क्स आसनसोल ।
सार्वजनिक क्षेत्र—(i) भिलाई इस्पात लिमिटेड (भिलाई),
(ii) राउरकेला इस्पात लिमिटेड (राउरकेला) ।

प्रश्न 3. भारत में जलयान बनाने के दो केन्द्र बताइये । (1988)

उत्तर—(1) कोचीन, (2) विशाखापट्टनम् ।

प्रश्न 4. नेपानगर किस उद्योग के लिए प्रसिद्ध है ? (1987, 89)

उत्तर—कागज उद्योग के लिए ।

प्रश्न 5. भारत में सोने की खान कहाँ है ? (1987)

उत्तर—कोलार (कर्नाटक) में ।

प्रश्न 6. रासायनिक उद्योगों के दो उदाहरण दीजिए । (1990)

उत्तर—(1) सीरा उद्योग, (2) प्लास्टिक उद्योग ।

प्रश्न 7. सूती वस्त्र बनाने वाले दो क्षेत्र लिखिए । (1988)

उत्तर—(1) बम्बई (महाराष्ट्र), (2) अहमदाबाद (गुजरात)।

प्रश्न 8. चीनी, जूट व वस्त्र उद्योगों का स्थानीयकरण किन-किन राज्यों में हुआ है ? (1988)

चीनी उद्योग—उत्तर प्रदेश।

जूट उद्योग—पश्चिमी बंगाल।

वस्त्र उद्योग—महाराष्ट्र, गुजरात।

प्रश्न 9. उत्तर प्रदेश के दो सीमेण्ट के कारखानों के नाम लिखिए। (1990)

उत्तर—(1) चुर्क (मिर्जापुर), (2) शाहबाद।

प्रश्न 10. भारत के उस नगर का नाम लिखो जहाँ निजी क्षेत्र का सबसे बड़ा लोहा तथा इस्पात उद्योग स्थापित है। (1991)

उत्तर—जमशेदपुर।

लघु उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1. कुटीर तथा लघु उद्योगों में क्या अन्तर है ? (1985, 87, 88)

उत्तर—(i) कुटीर उद्योग—

"वे उद्योग जो ग्रामीण क्षेत्र में पाये जाते हैं और जिनमें कृषकों को सहायक कार्य मिलते हैं, उन्हें कुटीर उद्योग कहते हैं।" इनको घरेलू ढंग से चलाया जाता है।

लघु उद्योग से आशय उन छोटे उद्योगों से है जिनमें 50 से 100 व्यक्ति तक काम करते हैं और जिसमें 7·5 लाख रु० की या उससे कम की पूंजी लगाई जाती है।

प्रश्न 2. भारतीय अर्थव्यवस्था में कुटीर व लघु उद्योग का क्या महत्व है ? (1987, 88)

उत्तर—भारतीय अर्थव्यवस्था में कुटीर तथा लघु उद्योग का निम्नलिखित महत्व है—

(1) **रोजगार के अधिक अवसर**—कुटीर उद्योगों द्वारा बड़े उद्योगों की अपेक्षा अधिक लोगों को रोजगार दिया जा सकता है। आज भी लगभग 2 करोड़ व्यक्ति इन उद्योगों में लगे हुए हैं।

(2) **ग्रामीण अर्थव्यवस्था के अनुकूल होना**—कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग-धन्धे भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था के सर्वथा अनुकूल हैं। यदि ग्रामीण क्षेत्र में इन उद्योगों को विकसित किया जाता है तो भूमिहीन कृषकों को तो काम मिलेगा ही, साथ ही अन्य कृषक भी अपने फालतू समय में इन्हें अपनाकर अपनी आय में वृद्धि कर सकते हैं। इनके विकास से कृषि पर निर्भर जनसंख्या का भार कम होगा।

(3) **श्रमिकों के शोषण का अन्त**—कुटीर एवं ग्रामीण उद्योगों के मालिक स्वयं कारीगर होते हैं अतः उनके शोषण का प्रश्न ही नहीं उठता।

(4) **धन का विकेन्द्रीकरण**—बड़े उद्योगों की भाँति कुटीर उद्योगों में धन के कुछ ही व्यक्तियों के हाथों में केन्द्रित होने का बढ़ावा नहीं मिलता। कुटीर उद्योगों के द्वारा कारीगरों की आय तो बढ़ जाती है; किन्तु वे अधिक मात्रा में पूंजी एकत्रित नहीं कर पाते हैं।

(5) **उद्योगों का विकेन्द्रीकरण**—कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग-धन्धों की स्थापना तथा विकास से विशाल उद्योगों की बुराइयों का लोप हो जाता है। मजदूरों का शोषण, गन्दे मकान, गन्दी बस्तियाँ, शहरी आबादी का आवश्यक रूप मे बढ़ जाना आदि समस्यायें उत्पन्न ही नहीं होतीं।

(6) **समाजवाद के लिए आवश्यक**—कुटीर उद्योग-धन्धों की स्थापना समाजवादी व्यवस्था को प्रोत्साहन मिलता है। कुटीर उद्योग शोषण तथा आय के असमान वितरण को समाप्त करते हैं। इस प्रकार शान्तिपूर्ण ढंग से समाजवाद की स्थापना में सहायता प्रदान करते हैं।

(7) **विदेशी व्यापार के महत्व**—देश के विदेशी व्यापार में भी इनकी महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। हाथों की बनी अनेक वस्तुओं, जैसे—हथकरघे पर तैयार किये गये कुछ विशेष प्रकार के वस्त्र, कालीन, चटाइयाँ, लकड़ी की वस्तुएँ आदि की विदेशों में मांग रहती है।

प्रश्न 3. उद्योगों के स्थानीयकरण से आप क्या समझते हैं? (1990)

उत्तर—जब एक ही उद्योग एक ही स्थान पर केन्द्रित हो जाता है तो उसे उद्योगों का स्थानीयकरण कहते हैं। यह उद्योग अनुकूल परिस्थितियाँ पाकर केन्द्र विशेष पर केन्द्रित होता है।

परीक्षोपयोगी एवं बोर्ड परीक्षा में पूछे गये अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न 1—भारत में सूती वस्त्र उद्योग की चार प्रमुख समस्याएँ लिखिये। (1987, 88)

उत्तर—(1) देश में उत्तम किस्म के कपास का अभाव,
(2) उत्पादन क्रिया परम्परागत,
(3) उद्योग की अधिकांश इकाइयाँ अनार्थिक,
(4) उत्पादन लागत अधिक होने के कारण विदेशी प्रतियोगिता में पीछे।

प्रश्न 2—कुटीर उद्योग धन्धों के पिछड़े होने के चार कारण बताइये।

उत्तर—(1) पूंजी की कमी, (2) तकनीकी ज्ञान का अभाव,
(3) कच्चे माल की कमी, (4) बाजार सम्बन्धी कठिनाइयाँ।

प्रश्न 3—अपने प्रदेश में सूती वस्त्र उद्योग के विकास का विवरण दीजिये। (1988)

उत्तर—अपने प्रदेश (उत्तर प्रदेश) में सूती वस्त्र उद्योग का विकास कम हुआ है। इसका प्रमुख कारण कपास की कमी तथा उपयुक्त जलवायु का अभाव है। फिर भी कानपुर तथा बनारस में यह कार्य सम्भव हुआ। आगरा के सूत कातने के कारखाने प्रायः बन्द पड़े हैं। मेरठ, सहारनपुर, पिलखुआ, मुजफ्फरनगर में हथकरघा उद्योग का विकास हुआ है।

प्रश्न 4—कुटीर उद्योगों के चार प्रमुख लक्षण बताइये। (1988)

उत्तर—(1) ये उद्योग ग्रामीण क्षेत्रों से ही प्रायः सम्बद्ध होते हैं।
(2) ये कम पूंजी से चलाये जा सकते हैं।
(3) इनके सम्पन्न करने में अधिकांश मानवीय श्रम ही लगता है।

(4) ये उद्योग घरेलू ढंग से परम्परागत परिवार के सदस्यों के सहयोग से चलाये जाते हैं।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. भारत में निम्नलिखित उद्योगों के विकास का वर्णन कीजिए—

(i) सूती वस्त्र उद्योग,

(ii) सीमेण्ट उद्योग,

(iii) चीनी उद्योग और

(iv) जूट उद्योग।

उत्तर—(i) सूती वस्त्र उद्योग—

सूती वस्त्र उद्योग भारत का सबसे बड़ा एवं पुराना उद्योग है। सर्वप्रथम सूती मिल एक पारसी उद्योगपति श्री कोपारसी डावा के प्रयत्न से बम्बई में स्थापित हुई थी। इसके उपरान्त सन् 1859 ई० में दूसरी मिल अहमदाबाद में स्थापित हुई। आज यह उद्योग बम्बई और अहमदाबाद में विशेष रूप से केन्द्रित है। इन स्थानों के अतिरिक्त मद्रास, नागपुर, कानपुर, पूना, सूरत, दिल्ली आदि स्थानों पर भी यह उद्योग बड़े पैमाने पर किया जाता है। रुई की खपत की दृष्टि से भारत का संसार में दूसरा स्थान है तथा चरखों और करघों की दृष्टि से तीसरा। आजकल इस उद्योग में 1 करोड़ 9 लाख व्यक्ति लगे हुए हैं। इससे स्पष्ट है कि सूती वस्त्र उद्योग भारत का एक विशाल एवं महत्वपूर्ण उद्योग है।

उद्योग की वर्तमान दशा—हमारे देश में यह उद्योग कारखानों तथा कुटीर उद्योग दोनों प्रकार से किया जाता है। इस समय देश में 700 सूती वस्त्र मिलें हैं। वर्तमान में इस उद्योग में 1200 करोड़ रुपये की पूंजी लगी हुई है। यह उद्योग निरन्तर उन्नति कर रहा है। निर्यात को बढ़ावा दिया जा रहा है।

सूती वस्त्र उद्योग का स्थानीयकरण—सूती वस्त्र उद्योग का सबसे अधिक स्थानीयकरण महाराष्ट्र एवं गुजरात में हुआ है। बम्बई सूती वस्त्र उद्योग का सबसे बड़ा केन्द्र है। इसका मुख्य कारण पास ही में कपास की काली मिट्टी मिलने के कारण कच्चे माल की उपलब्धता, इस उद्योग के लिए अनुकूल नम जलवायु का होना, कुशल श्रमिकों की प्राप्ति, कुशल निरीक्षक एवं यन्त्र आदि सुगमता से मिल जाना है।

सूती वस्त्र उद्योग के केन्द्र—

(1) **महाराष्ट्र**—बम्बई के अतिरिक्त पूना, शोलापुर नागपुर, तथा वर्धा में सूती मिलें हैं।

(2) **गुजरात**—अहमदाबाद के अतिरिक्त बड़ौदा, राजकोट, सूरत, भावनगर तथा पोरबन्दर में यह उद्योग केन्द्रित है।

(3) **आन्ध्र प्रदेश**—हैदराबाद, औरंगाबाद, सिकन्दराबाद तथा गण्टूर में सूती मिलें हैं।

(4) **मध्य प्रदेश**—ग्वालियर, भोपाल, इन्दौर तथा जबलपुर में सूती मिलें हैं।

(5) **मैसूर**—मैसूर तथा बंगलौर की सूती मिलों में बढ़िया कपड़ा तैयार किया जाता है।

(6) तमिलनाडु—तमिलनाडु, त्रिचनापल्ली, पाण्डिचेरी, सलेम तथा कोयम्बटूर में सूती मिलें हैं।

(7) केरल—केवल क्विलोन में सूती मिलें हैं।

(8) उत्तर प्रदेश—कानपुर सबसे बड़ा केन्द्र है। इसके अलावा मोदीनगर, सहारनपुर, वाराणसी तथा हाथरस में भी सूती वस्त्र उद्योग स्थापित हैं।

(9) राजस्थान—अजमेर, कोटा, जयपुर, ब्यावर तथा किशनगढ़ में सूती मिलें हैं।

(10) पंजाब—लुधियाना और अमृतसर इस उद्योग के केन्द्र हैं।

(11) हरियाणा—हिसार और भिवानी में सूती मिलें हैं।

(12) दिल्ली—यहाँ सात मिलें हैं जो प्रतिवर्ष 15 करोड़ मीटर सूती कपड़ा तैयार करतीं हैं।

(13) पश्चिमी बंगाल—कलकत्ता, हावड़ा और चौबीस परगना में सूती मिलें हैं।

(14) बिहार—केवल गया में सूती कपड़े के कारखाने हैं।

(15) असम—सिल्चर में सूती मिलें हैं।

(ii) भारत का चीनी उद्योग—

चीनी उद्योग भारत का दूसरा सबसे बड़ा राष्ट्रीय उद्योग है। इस उद्योग में 600 करोड़ रुपये की पूँजी लगी हुई है। आजकल इस उद्योग में 2·5 लाख व्यक्ति लगे हुए हैं। भारत की अर्थव्यवस्था में इस उद्योग का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है। सर्वप्रथम चीनी मिल 1930 ई० में तमिलनाडु राज्य के कोयम्बटूर नामक स्थान पर खोली गई थी। इसके उपरान्त उत्तर प्रदेश में घुंधली नामक स्थान पर एक चीनी मिल स्थापित की गई थी। इस मिल की सफलता देखकर अन्य मिलें खुलीं।

पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत चीनी उद्योग ने बड़ी प्रगति की है। 1950-1951 ई० में भारत में 138 चीनी मिलें थीं जिनसे 113 लाख टन चीनी का उत्पादन हुआ। वर्ष 1979-80 ई० में मिलों की संख्या 397 थी लेकिन उत्पादन केवल 38·6 लाख टन ही हुआ था। इस वर्ष चीनी का निर्यात 9·6 लाख टन हुआ था।

इस समय देश में चीनी मिलों की संख्या 350 है जिनकी उत्पादन क्षमता 76 लाख टन है। आठवीं योजना में चीनी का लक्ष्य भी 96 लाख टन ही रखा गया है।

चीनी उद्योग का स्थानीयकरण

चीनी उद्योग में उत्तर-प्रदेश का स्थान सर्वप्रथम है। इसका मुख्य कारण यह है कि यहां समस्त भारत का आधे से अधिक गन्ना उत्पन्न होता है। उत्तर प्रदेश में देवरिया, गोरखपुर, बस्ती, गोंडा, मेरठ, मुजफ्फर नगर, सहारनपुर, बरेली, पीलीभीत, हरदोई, सीतापुर, मुरादाबाद, कानपुर, इलाहाबाद आदि जिलों में चीनी उद्योग मुख्यतया केन्द्रित है। उत्तर प्रदेश में 70 चीनी मिलें हैं। इसके अतिरिक्त महाराष्ट्र, बिहार, आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडु, हरियाणा तथा पंजाब राज्य में भी कुछ मिलें केन्द्रित हैं।

(iii) भारत का जूट उद्योग—

जूट उद्योग भारत का एक महत्वपूर्ण उद्योग है यह उद्याग हमारे देश में लगभग एक शताब्दी से चला आ रहा है। जूट का पहला सूत कातने का कारखाना सर्वप्रथम 1955 ई० में आकलैण्ड महोदय के प्रयासों सें सिरापुर के निकट रिसरा में स्थापित किया गया था। इसके पश्चात् 1895 ई० में कलकत्ता में जूट की बुनाई का कारखाना खोला गया। इसके पश्चात् इस उद्योग का भारी विकास हुआ तथा जूट के कारखाने पश्चिमी बंगाल में कलकत्ता के ऊपर हुगली नदी के तट पर केन्द्रित होने लगें। आजकल भारत में 112 जूट के कारखाने हैं जिनमें अधिकांश कारखाने पश्चिमी बंगाल में कलकत्ता से 56 किमी दूर हुगली नदी के तट पर ही केन्द्रित हैं शेष कारखाने देश के अन्य भागों में फैले हुए हैं।

हुगली नदी के तट पर जूट उद्योग का केन्द्रीयकरण होने के कारण—

(1) पर्याप्त मात्रा में कच्चे माल की प्राप्ति—गंगा तथा ब्रह्मपुत्र की घाटी में पर्याप्त मात्रा में जूट की खेती होती है। नदियों के द्वारा जूट कारखानों तक लाया जाता है। इस कारण यहाँ जूट उद्योग का केन्द्रीकरण हो गया है।

(2) बन्दरगाह की निकटता—हुगली नदी कलकत्ता का प्रसिद्ध बन्दरगाह इन कारखानों के अति समीप है। फलस्वरूप जूट का सामान आसानी से निर्यात कर दिया जाता है। यही नहीं विदेशों से जूट उद्योग के लिए आवश्यक रासायनिक सामिग्री, मशीनें आदि भी इस बन्दरगाह पर आसानी से आयात कर ली जाती हैं।

(3) कोयले की खानों की निकटता—इन कारखानों के निकट ही कोयले की विशाल खानें स्थित हैं। अतः पर्याप्त मात्रा में संचालन शक्ति (कोयला) प्राप्त हो जाती है। अतएव यहां पर कारखानों के केन्द्रीकरण के लिए कोयले की निकटता भी काफी महत्वपूर्ण हैं।

(4) कुशल व सस्ते श्रमिकों की प्राप्ति—इस क्षेत्र में जनसंख्या का घनत्व भी अधिक है। अतः सस्ते मजदूर पर्याप्त मात्रा में मिल जाते हैं जिन्हें जूट उत्पादन तथा जूट का सामान बनाने में विशेष ज्ञान होता है।

(5) पर्याप्त जल की सुविधा—जूट को धोने तथा साफ करने के लिए पर्याप्त मात्रा में जल की आवश्यकता होती है। अतः हुगली नदी से पर्याप्त जल प्राप्त कर लिया जाता है।

(6) यातायात व संवादवाहन की उन्नति—इस क्षेत्र में यातायात व संवादवाहन की पर्याप्त सुविधाएँ उपलब्ध हैं। कच्चा माल लाने तथा पक्का माल ले जाने के लिए नहरों, सड़कों, रेलों तथा नदियों की समुचित सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

(7) अनुकूल जलवायु—जूट उद्योग के लिए गर्म व नम जलवायु अधिक उपयुक्त होती है। बंगाल की वायु ऐसी ही है। अतः यह क्षेत्र जूट उद्योग के लिए अधिक उपयुक्त बन गया है।

(8) पूर्व प्रारम्भ—जूट उद्योग के कारखाने पहले यहीं स्थापित हुए। अतः प्रारम्भ में ही औद्योगिक सुविधाएँ उपलब्ध होने के कारण जूट उद्योग की अन्य मिलें भी स्थापित होती गयीं।

हुगली नदी के तट के अतिरिक्त जूट उद्योग के कुछ कारखाने बिहार, उत्तर प्रदेश तथा मद्रास में स्थित हैं। किन्तु ये कारखाने आन्तरिक माँग को भी पूरा नहीं कर पाते हैं। विदेशी व्यापार में उनका कोई महत्व नहीं है।

(iv) सीमेण्ट उद्योग

भारत में यह नवीन उद्योग है। 1904 ई० में सर्वप्रथम मद्रास में एक कारखाना खोला गया था। किन्तु वह शीघ्र ही बन्द हो गया। तदुपरान्त 1912-13 ई० में पोरबन्दर, बूंदी और मध्य प्रदेश में तीन कारखाने स्थापित किये जो लगभग 1 लाख टन सीमेण्ट तैयार करते थे। युद्ध काल में सात कारखाने और स्थापित किये गये। 1923 ई० में भारत में लगभग 5 लाख टन सीमेण्ट तैयार होने लगा। लेकिन कारखानों की आपसी प्रतियोगिता के कारण इस उद्योग की स्थिति खराब होने लगी। फलतः 1925 ई० में टैरिफ बोर्ड की सिफारिशों पर 'इण्डियन सीमेण्ट मैन्यूफैक्चर्स एसोसिएशन' बना। इसी प्रकार 1960 ई० में सीमेण्ट मार्केटिंग कम्पनी बनी। इससे उद्योग को सहारा मिला और 1934-35 ई० में 10 लाख टन सीमेण्ट तैयार होने लगा। 1936 ई० में 12 कारखाने थे। उन्होंने मिलकर 'एसोसियेटेड सीमेण्ट कम्पनी लिमिटेड' की स्थापना की। 1938 ई० में सेठ डालमियाँ ने 5 नवीन कारखाने खोले जो लगभग 5 लाख टन सीमेण्ट तैयार करते लगे।

इस समय हमारे देश में सीमेण्ट के 60 कारखाने हैं। इन समस्त कारखानों की उत्पादन शक्ति 186 लाख टन है। सीमेण्ट के कारखाने डालमिया नगर, जापाला, चौवासा, खालारी, कल्यानपुर और सिन्द्री (बिहार में) कटनी, सतना, महागाँव, बानमोर और कैमूर (मध्य प्रदेश में) ओखा मण्डल, द्वारका, पोरबन्दर और जामनगर (गुजरात में), शाहबाद (हैदराबाद में), मंगलौर (मैसूर में) चौबीस परगना (पश्चिमी बंगाल में), मधुकरी, वेजवाड़ा, डालमियापुरम और मंगलहारी (मद्रास में) केन्द्रित हैं।

प्रश्न 2. भारत में लोहा तथा इस्पात उद्योग के विकास का विवरण दीजिए।

उत्तर—लोहा-इस्पात उद्योग का महत्व—

आधुनिक सभ्यता के युग में लोहा और इस्पात हवा और पानी से भी अधिक उपयोगी है। आज संसार की कोई भी वस्तु ऐसी नहीं है जो लोहा अथवा लोहे से बने यन्त्र व औजार की सहायता से न बनाई जाती हो। अतः लोहा और इस्पात उद्योग आधार उद्योगों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण माने जाते हैं। औद्योगिक प्रगति, राष्ट्रीय सुरक्षा, व्यापार, यातायात एवं संवादवाहन के साधन, वैज्ञानिक कृषि आदि सभी की उन्नति इस उद्योग की उन्नति पर निर्भर है। इस उद्योग का महत्व राजनैतिक एवं सामाजिक दृष्टि से भी बहुत अधिक है। एक बार लार्ड कीन्स ने कहा था, "जर्मन साम्राज्य की नींव खून पर नहीं, लोहे और कोयले पर पड़ी थी।"

विकास—भारत में लोहा और इस्पात का उद्योग अत्यन्त प्राचीन है। अशोक की लाट आज भी इसके प्रमाण के रूप में विद्यमान है। संगठित उद्योग के रूप में लोहा और इस्पात उद्योग का विकास 1830 ई० से प्रारम्भ होता है जबकि ईस्ट इण्डिया कम्पनी के एक कर्मचारी ने मद्रास के पास अरकाट में एक कारखाने की स्थापना की। लेकिन अनुकूल परिस्थितियाँ न होने के कारण 1874 ई० में यह कारखाना बन्द हो गया।

1871 ई० में मैसफ एण्ड कम्पनी ने कुल्टी में वाराकर आयरन वर्क्स नाम से एक कारखाना खोला। 1889 ई० में इस कारखाने को 'बंगाल आयरन

एण्ड स्टील कम्पनी' ने खरीद लिया। 1939 ई० से इसे 'इण्डियन आयरन एण्ड स्टील कम्पनी' नाम दिया गया है। लेकिन वास्तव में भारत में इस उद्योग का श्री गणेश 1907 ई० से होता है जबकि भारत के एक महान् सपूत जमशेद जी नसरवान् जी टाटा ने बिहार में सांकची नामक स्थान पर 'टाटा आयरन एण्ड स्टील कम्पनी' के नाम से एक विशाल कारखाने की स्थापना की। आज भी वह कारखाना एशिया के महानतम कारखानों में गिना जाता है। इस कारखाने ने बड़ी प्रगति की। इसकी प्रगति को देखकर 1918 ई० में हीरापुर में 'इण्डियन एण्ड स्टील कम्पनी' की स्थापना हुई। इसके उपरान्त 1923 ई० में मैसूर में 'भद्रावती आयरन वर्क्स' की स्थापना की गई। 1936 ई० में कलकत्ता में 'दी स्टील कारपोरेशन ऑफ बंगाल' की स्थापना हुई। 1953 ई० में इण्डियन आयरन एण्ड स्टील कम्पनी तथा स्टील कारपोरेशन ऑफ बंगाल को मिला दिया। आजकल कुलटी व हीरापुर के कारखाने इसके नियन्त्रण में चल रहे हैं। नेसुरिया में इसका एक निजी कारखाना है। युद्ध से पूर्व भारत में लोहा और इस्पात का उद्योग प्रमुख रूप से (1) टाटा आयरन एण्ड स्टील कम्पनी जमशेदपुर, (2) इण्डियन आयरन एण्ड स्टील कम्पनी, कुलटी तथा हीरापुर और (3) मैसूर आयरन एण्ड स्टील कम्पनी, भद्रावती मैसूर के हाथ में था।

सार्वजनिक क्षेत्र में लोहा इस्पात के कारखाने—

योजना काल में इस उद्योग ने वड़ी उन्नति की है। द्वितीय पंचवर्षीय योजना काल में तथा उसके उपरान्त निम्नलिखित कारखानों की स्थापना सार्वजनिक क्षेत्र में हुई—

(1) राउरकेला हिन्दुस्तान स्टील वर्क्स—यह कारखाना पश्चिमी जर्मनी की संसार प्रसिद्ध क्रुप कम्पनी की सहायता से स्थापित किया गया है। यह कारखाना उड़ीसा में राउरकेला नामक स्थान पर स्थित है। इस पर 170 करोड़ रुपया व्यय हुआ है। आजकल यह कारखाने प्रतिवर्ष 18 लाख मीट्रिक टन लोहा व इस्पात तैयार करता है। इसे बढ़ाकर 35 लाख मीटरी टन किया जा रहा है।

(2) भिलाई का लोहा व इस्पात का कारखाना—यह कारखाना बहुत विशाल है। इसकी स्थापना रूस की सहायता से मध्य प्रदेश में भिलाई नामक स्थान पर की गई है। इस कारखाने में भी फरवरी 1959 ई० से उत्पादन हो रहा है। आजकल यह कारखाना प्रतिवर्ष 25 लाख मीट्रिक टन लोहा व इस्पात का सामान तैयार करता है। इसे बढ़ाकर 40 लाख टन मीटरी टन किया जा रहा है।

(3) दुर्गापुर का लोहा व इस्पात का कारखाना—यह कारखाना ब्रिटेन की सहायता से पश्चिमी बंगाल में दुर्गापुर नामक स्थान पर स्थापित किया गया है। इसके निर्माण पर 140 करोड़ रुपया व्यय हुआ है। इसमें 10 लाख मीट्रिक टन से अधिक लोहे और इस्पात का सामान तैयार किया जाता है।

(4) बोकारो का लोहा व इस्पात का कारखाना—पहले इस कारखाने को अमेरिका के सहयोग से स्थापित करने की योजना बनाई गई थी। किन्तु शर्तों के सम्बन्ध में मतभेद होने के कारण अब यह कारखाना सोवियत रूस की सहायता से बिहार में बोकारो नामक स्थान पर स्थापित किया गया है।

(5) **सलेम का स्टेनलैस स्टील का कारखाना**—यह कारखाना तमिलनाडु में सलेम शहर से 16 किलोमीटर दूर स्थित है। इसका निर्माण कार्य जनवरी, 1898 ई० में आरम्भ हुआ था। भारत में स्टेनलैस स्टील बनाने का यह प्रथम कारखाना है।

(6) **विशाखापट्टम का लोहा व इस्पात का कारखाना**—यह कारखाना 1979 ई० से बनाया जा रहा है। इसकी अनुमानित लागत 2256 करोड़ रुपया है। इसकी प्रतिष्ठापित क्षमता 1·2 मिलियन टन होगी।

प्रश्न 3. देश के आर्थिक विकास में उद्योगों के योगदान पर संक्षिप्त निबन्ध लिखिए।

उत्तर—देश के आर्थिक विकास में उद्योगों का महत्वपूर्ण स्थान है। किसी देश के उद्योग धन्धे देश की आर्थिक व्यवस्था के मुख्य आधार स्तम्भ होते हैं। उद्योग धन्धों की स्थापना में औद्योगिक क्रान्ति ने बहुत महत्वपूर्ण योग प्रदान किया है। आर्थिक विकास पर उद्योग धन्धों का बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। संयुक्त राज्य अमेरिका, सोवियत संघ, जापान, ब्रिटेन आदि देशों ने उद्योग धन्धों के कारण ही ख्याति प्राप्त की है। इन उद्योग धन्धों का महत्व निम्न प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है—

(1) राष्ट्रीय आय में वृद्धि हुई है। (2) देश में बेरोजगारी की समस्या हल हुई है। (3) कृषि पर जनसंख्या के दबाव में कमी आई है। (4) कुशल श्रमिकों की गतिशीलता में वृद्धि हुई है। (5) उद्योग विदेशी मुद्रा प्राप्त करने में सहायता कर रहे हैं। (6) देश की निर्धनता कम हुई है। (7) देश के लोगों के रहन-सहन के स्तर में वृद्धि हुई है। (8) कृषि पर जनसंख्या के दबाव में कमी हुई है। (9) आवागमन की सुविधा हुई है। (10) हरित क्रान्ति की सफलता सम्भव हो सकी है।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि देश के आर्थिक विकास में उद्योगों का महत्वपूर्ण स्थान है।

बहु विकल्पीय प्रश्न

सही विकल्प चुनिए—

प्रश्न 1. उत्तर प्रदेश में तेल परिष्करण का कारखाना स्थापित किया गया है—

(अ) मथुरा, (ब) आगरा, (स) कानपुर, (द) लखनऊ।

उत्तर—(अ) मथुरा।

प्रश्न 2. भारत में सूती वस्त्र के कारखाने किस राज्य में सबसे अधिक हैं— (1985, 89)

(क) गुजरात, (ख) मध्य प्रदेश, (ग) उत्तर प्रदेश, (घ) कर्नाटक।

उत्तर—(क) गुजरात।

प्रश्न 3. निम्नांकित में से लोहा इस्पात का कारखाना जो निजी क्षेत्र में है, उसका चयन कीजिए— (1989)

(क) राउरकेला, (ख) भिलाई, (ग) दुर्गापुर, (घ) जमशेदपुर।

उत्तर—(घ) जमशेदपुर।

प्रश्न 4. जूट उद्योग का विकास सर्वाधिक किस राज्य में हुआ है— (1984, 87)

(क) बिहार, (ख) उत्तर प्रदेश, (ग) पश्चिमी बंगाल, (घ) उड़ीसा।

उत्तर—(ग) पश्चिमी बंगाल।

प्रश्न 5. रेशमी वस्त्र उद्योग का प्रमुख केन्द्र है—

(अ) ग्वालियर, (ब) आगरा, (स) मथुरा, (द) इलाहाबाद।

उत्तर—(अ) ग्वालियर।

प्रश्न 6. भारत में चीनी मिलें किस राज्य में सबसे अधिक हैं— (1985, 86, 89)

(क) उत्तर प्रदेश,
(ख) महाराष्ट्र,
(ग) पश्चिमी बंगाल,
(घ) कर्नाटक।

उत्तर—(क) उत्तर प्रदेश।

12 राज्यों की अन्योन्याश्रयता (1)

[हमारे यातायात तथा संचार के साधन]

अति लघु उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1. यातायात व्यवस्था का क्या अर्थ है ?

उत्तर—मनुष्य तथा माल को एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जाने की व्यवस्था को यातायात कहते हैं।

प्रश्न 2. यातायात के साधनों का वर्गीकरण कीजिए। (1985, 88, 90)

उत्तर—यातायात के साधन इस प्रकार हैं—

(1) रेल, (2) सड़क, (3) जल परिवहन, (4) वायु परिवहन।

प्रश्न 3. यातायात व्यवस्था से होने वाले किन्हीं तीन लाभों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—यातायात व्यवस्था के तीन लाभ इस प्रकार हैं—

(1) पारस्परिक सम्पर्क में वृद्धि,
(2) शासन व्यवस्था चलाने में सहायता,
(3) युद्ध के समय सहयोग।

प्रश्न 4. भारत की कुछ प्रमुख सड़कों के नाम बताइए।

उत्तर—इस प्रश्न के उत्तर के लिए प्रश्न संख्या 5 का उत्तर देखिए।

प्रश्न 5. अपने देश में प्रतिदिन चलने वाली रेलगाड़ियों की संख्या बताइए।
उत्तर—इस समय देश में 11 हजार रेलगाड़ियाँ प्रतिदिन चलाई जा रही हैं।
प्रश्न 6. रेल मार्गों के प्रकार पर प्रकाश डालिए।
उत्तर—रेल मार्ग चार प्रकार के होते हैं—
(1) ब्राड गेज, (2) मीटर गेज, (3) नैरो गेज तथा (4) हिल गेज।
प्रश्न 7. उत्तर रेलवे के क्षेत्रों का नामोल्लेख कीजिए।
उत्तर—उत्तर रेलवे के क्षेत्र इस प्रकार हैं—
(1) दिल्ली से अमृतसर,
(2) दिल्ली से फ़ीरोजपुर,
(3) दिल्ली से मुगलसराय,
(4) सहारनपुर से मुगलसराय।
प्रश्न 8. जल यातायात को किन दो भागों में बाँटा गया है?
उत्तर—जल यातायात दो प्रकार का होता है—
(1) आन्तरिक जल यातायात
(2) समुद्री यातायात।
प्रश्न 9. अपने देश में वायु यातायात का राष्ट्रीयकरण कब हुआ?
(1987, 89, 90)
उत्तर—भारत में वायु यातायात का राष्ट्रीयकरण 1953 ई० में किया गया।
प्रश्न 10. देश के कुछ प्रमुख हवाई अड्डों के नाम लिखिए।
उत्तर—देश के कुछ प्रमुख हवाई अड्डे इस प्रकार हैं—
(1) सान्ताक्रूज, (2) दमदम, (3) पालम, (4) गौहाटी, (5) अगरतल्ला, (6) अहमदाबाद, (7) सफदरजंग, (8) मद्रास, (9) नागपुर, (10) कानपुर, (11) इलाहाबाद।

परीक्षोपयोगी एवं बोर्ड परीक्षा में पूछे गये महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न 1. किस रेलवे जोन का कार्यालय उत्तर प्रदेश में है और कहाँ है?
(1990)
उत्तर—उत्तरी-पूर्वी रेल मण्डल का कार्यालय उत्तर प्रदेश के नगर गोरखपुर में है।
प्रश्न 2. मुगल सराय से कलकत्ता तक का रेल मार्ग किस मण्डल में आता है?
(1989)
उत्तर—पूर्वी रेल मार्ग के अन्तर्गत।
प्रश्न 3. भारत में कौन सी संस्था विदेशी वायु सेवा परिवहन की व्यवस्था करती है?
(1988)
उत्तर—एयर इण्डिया इन्टरनेशनल।
प्रश्न 4. भारत में राष्ट्रीय राज मार्गों की देख-भाल का उत्तरदायित्व किस पर है?
(1984, 86)
उत्तर—केन्द्रीय सरकार के केन्द्रीय सार्वजनिक निर्माण विभाग पर।
प्रश्न 5. भारत में वायु सेवा संस्थानों के नाम बताइये।

उत्तर—(1) इण्डियन एअर लाइन्स कारपोरेशन।
(2) एअर इण्डिया इन्टरनेशनल कारपोरेशन।

प्रश्न 6. राष्ट्रीय राज पथ किसे कहते हैं ? (1984)

उत्तर—जो सड़कें दो या अधिक राज्यों में होकर गुजरती हैं उन्हें राष्ट्रीय राज मार्ग कहते हैं।

प्रश्न 7. भारत में अन्तर्राष्ट्रीय महत्व के दो हवाई अड्डों के नाम लिखो। (1988)

उत्तर—(1) पालम (दिल्ली), (2) शान्ताक्रुज (बम्बई)।

प्रश्न 8. भारत के दो रेलवे प्रशिक्षण केन्द्रों के नाम लिखिए। (1988)

उत्तर—(1) बम्बई, (2) मद्रास।

लघु उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1. आधुनिक समय में यातायात के साधनों का क्या महत्व है ?

उत्तर—आधुनिक समय में यातायात के साधनों का महत्व बहुत अधिक बढ़ गया है : (1) यातायात के साधनों से कृषि तथा उद्योगों के क्षेत्र में बहुत अधिक प्रगति हुई है। (2) संकट काल की स्थिति में इन साधनों का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है। (3) नगरीकरण तथा औद्योगीकरण के विकास में यातायात के साधन बहुत ही लाभ-दायक सिद्ध होते हैं। (4) देश का आर्थिक विकास यातायात पर ही आधारित होता है। अतः यातायात के साधन देश की प्रगति के प्रमुख आधार हैं।

प्रश्न 2. देश में पक्की सड़कों के विभाजन का विवरण प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर—देश में पक्की सड़कों का विभाजन निम्न प्रकार है—

(1) राजकीय सड़कें, (2) सरकारी सड़कें,
(3) जनपदीय सड़कें, (4) शहरी एवं ग्रामीण सड़कें।

प्रश्न 3. रेलों के महत्व पर प्रकाश डालिए। (1988)

उत्तर—आधुनिक समय में रेलों का महत्व बहुत अधिक बढ़ गया है। इनका महत्व इस प्रकार से है—(1) रेल यातायात बहुत सस्ता तथा तीव्र गामी साधन है। (2) रेलों के द्वारा सामान एक स्थान से दूसरे स्थान शीघ्रता से पहुँचता है। (3) रेलें डाक वितरण तथा औद्योगीकरण में भी बहुत अधिक सहायक हैं। (4) बड़े-बड़े उद्योगों के विकास में रेलों का बहुत अधिक योगदान है। (5) रेलों से लोगों को रोजगार मिला है। (6) रेलें कृषि के विकास में भी बहुत अधिक सहायक हैं।

प्रश्न 4. आन्तरिक जल यातायात का अर्थ स्पष्ट कीजिए। (1987)

उत्तर—देश के अन्दर बहने वाली नदियों और नहरों द्वारा जो यातायात किया जाता है उसे आन्तरिक जल यातायात कहते हैं। उत्तर भारत में समतल मैदानों में धीमी गति से बहने वाली नदियाँ तथा नहरें आन्तरिक जल यातायात के लिए उपयुक्त हैं। हुगली नदी का उपयोग जल यातायात के लिए किया जाता है।

प्रश्न 5. देश में मुख्य सन्देश वाहन संचार के साधनों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—देश में सन्देश वाहन (संचार) के प्रमुख साधन इस प्रकार हैं—

(1) डाकतार विभाग, (2) तारघर,
(3) बेतार का तार, (4) केबिल ग्राम,
(5) रेडियोग्राम, (6) टेलीविजन।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1. सड़क यातायात तथा रेल यातायात एक-दूसरे के पूरक हैं। सोदाहरण समझाइए। (1987)

उत्तर—रेल यातायात द्वारा बड़े-बड़े भार एक स्थान से दूसरे स्थान तक द्रुत गति से भेजे जा सकते हैं। यही सामान सड़कों द्वारा भी भेजा जा सकता है। जहाँ रेल मार्ग नहीं हैं या कम हैं वहाँ सड़कों द्वारा ही माल एक स्थान से दूसरे स्थान तक भेजा जाता है। देश में लगभग प्रत्येक रेल मार्ग के साथ एक पक्की सड़क का निर्माण भी किया गया है। इससे यह लाभ होता है कि रेल परिवहन द्वारा असुविधा होने पर माल सड़क परिवहन द्वारा और सड़क परिवहन द्वारा असुविधा होने पर रेल परिवहन द्वारा भेजा जा सकता है। अतः हम कह सकते हैं कि वे दोनों मार्ग एक दूसरे के पूरक हैं। क्योंकि दोनों ही परिवहन साधनों से समान लाभ होते हैं। ये लाभ निम्न प्रकार से हैं—

दोनों का समान महत्व

(1) सड़क परिवहन द्वारा पारस्परिक सम्बन्धों में वृद्धि हो रही है और एक क्षेत्र के लोगों का सम्बन्ध दूसरे क्षेत्र के लोगों के साथ बढ़ता जा रहा है। यही लाभ रेल परिवहन द्वारा भी हो रहे हैं।

(2) दोनों ही साधनों से छुआ-छूत रूढ़िवादिता तथा अन्य कुरीतियों के दमन में सहायता मिलती है।

(3) दोनों ही साधन शान्ति व्यवस्था एवं शासन संचालन में सहायक हैं।

(4) देश की सुरक्षा में दोनों ही साधनों का महत्वपूर्ण योगदान है।

(5) व्यापार एवं वस्तु विपणन में दोनों से समान रूप से सहायता प्राप्त होती है।

(6) आपात काल, अकाल, बाढ़ तथा बीमारी और दुर्घटनाओं के समय दोनों हीं साधनों से महत्वपूर्ण योगदान प्राप्त होता है।

(7) सभ्यता के विकास में दोनों का महत्वपूर्ण स्थान है।

(8) दोनों ही साधनो से बड़ी मात्रा में रोजगार प्राप्त हुए हैं।

इस प्रकार उपरोक्त महत्वपूर्ण तथ्यों को ध्यान में रखते हुए हम कह सकते हैं कि एक साधन के अभाव में दूसरा साधन हमें उसके स्थान पर महत्वपूर्ण योगदान देने के लिए उचित है। इस प्रकार दोनों साधन एक दूसरे के पूरक हैं।

प्रश्न 2. वायु यातायात के महत्व पर प्रकाश डालिए। (1986)

उत्तर—वायु यातायात का महत्व—

वायु परिवहन, परिवहन का आधुनिकतम रूप है। अतः परिवहन के अन्य साधनों की अपेक्षा इससे कुछ विशेष लाभ प्राप्त हैं, जो निम्न प्रकार हैं—

(1) **कृषि क्षेत्र में लाभ**—वायु परिवहन कृषि सम्बन्धी कार्यों में अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुआ है। वायुयानों के प्रयोग से समय की बचत होती है। पश्चिमी

देशों में वायुयानों का प्रयोग खेतों में अनाज बोने तथा खेतों में खाद डालने, कीट नाशक दवाएँ छिड़कने में किया जाता है।

(2) **व्यावसायिक क्षेत्र में लाभ**—शीघ्र नष्ट होने वाले तथा कोमल पदार्थ के ढोने में वायु-परिवहन अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुआ है। इन वस्तुओं का वायुयान द्वारा थोड़े समय में ही तीव्रगति से उत्पादन केन्द्रों से मंडियों तक पहुँचाया जा सका है।

(3) **राजनीतिक क्षेत्र में लाभ**—देश-विदेशों की सरकारों तथा उनके उच्च अधिकारियों के मध्य शीघ्र सम्पर्क स्थापित करने में वायुयानों से बड़ी सहायता मिलती है। अंतः उच्चस्तरीय प्रशासनिक कर्मचारी आने-जाने के लिए वायुयानों का ही प्रयोग करते हैं। इससे समय नष्ट नहीं होता।

(4) **अन्य लाभ**—(क) वर्तमान युग में वायु परिवहन का सामरिक महत्व बहुत अधिक है। युद्ध के समय वायुयानों का प्रयोग शत्रु देशों पर बम बरसाने, अस्त्र-शस्त्र, गोला बारूद, दवायें, खाद्य सामग्री आदि शीघ्रता से पहुँचाने तथा अग्रिम मोर्चा पर सैनिक तथा युद्ध सामग्री पहुँचाने में वायुयानों का ही प्रयोग किया जाता है। (ख) वायु परिवहन विपत्ति काल में विशेष रूप से उपयोगी सिद्ध होता है। बाढ़, भूकम्प, तूफान आदि दैवीय विपत्तियों में फँसे लोगों को बचाने तथा उन्हें विभिन्न प्रकार की सहायता पहुँचाने में वायु परिवहन विशेषरूप से उपयोगी सिद्ध हुआ है। (ग) डाक ले जाने के लिए भी वायुयानों का प्रयोग किया जाता है। (घ) वायु परिवहन से पर्यटकों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक आने-जाने में विशेष सुविधायें प्राप्त होती हैं। इससे विदेशी मुद्रा अर्जित करने में भी सहायता मिलती है। (ङ) वायुयानों की सहायता से ऋतु विज्ञान के विषय में उपयोगी जानकारी प्राप्त की जाती है। उनसे मौसम तथा जलवायु के सम्बन्ध में विशेष ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। (च) वायु परिवहन का सबसे बड़ा लाभ यह है कि इससे सभी प्रकार की भौगोलिक बाधाओं, जैसे—समुद्र, पर्वत, रेगिस्तान आदि को आसानी से पार किया जा सकता है।

प्रश्न 3. यातायात तथा सन्देश वाहन के मुख्य साधनों का उल्लेख करते हुए भारतीय अर्थव्यवस्था पर उनके प्रभावों का उल्लेख कीजिए। (1985)

उत्तर—यातायात के मुख्य साधन—

देश की प्रगति के लिए यातायात के साधनों का सबसे अधिक महत्व है। देश की अर्थव्यवस्था में यह अपना महत्वपूर्ण योग प्रदान करते हैं।

यातायात के मुख्य साधन इस प्रकार हैं—

(1) सड़क यातायात, (2) रेल यातायात, (3) जल यातायात। (1987)

सन्देश वाहन या संचार के मुख्य साधन—

हमारे देश में समाचार भेजने के साधन निम्नलिखित हैं :—

(1) **डाक**—डाक ढोने का कार्य रेलों, बसों, हवाई जहाजों तथा पानी के जहाजों द्वारा किया जाता है। इसका संचालन डाकघरों द्वारा होता है।

(2) **तार**—तार भेजने व प्राप्त करने की व्यवस्था तारघर करता है। तार साधारण व एक्सप्रेस दो प्रकार के होते हैं। तार सेवा रात-दिन उपलब्ध रहती है। गुप्त तार सेवा व्यापारी वर्ग के लिए उपलब्ध रहती है।

(3) केबिलग्राम—समुद्र में तार बिछा दिये गए हैं, इन्हें केबिल कहते हैं। इनके माध्यम से विदेशों को जो सन्देश भेजे व प्राप्त किए जाते हैं उन्हें केबिलग्राम कहते हैं।

(4) टेलीफोन—यह संचार शीघ्रगामी है। कुछ शहरों में सीधे डायल द्वारा बात करने का प्रावधान है। अन्य देशों से भी सीधे बात करने का प्रावधान है। भारत में 28 देशों से सीधे बात की जा सकती है। भारत में 17 स्वचालित टंक ऐक्सचेंज हैं।

(5) वायरलैस—इस साधन के लिए किसी प्रकार के तार की आवश्यकता नहीं होती है। यह अन्तर्राष्ट्रीय समाचार भेजने का साधन है।

(6) रेडियो—इसका संचालन 'आकाशवाणी केन्द्र' द्वारा होता है। इसके द्वारा देश-विदेशों के समाचार तुरन्त सुने जा सकते हैं।

(7) टेलीविजन—टेलीविजन द्वारा न केवल समाचार परन्तु समाचार प्रसारण करने वाले का फोटो भी सामने आ जाता है।

(8) टेलीप्रिंटर्स—इस सेवा का प्रारम्भ भारत में 16 जून, 1960 से हुआ। इसके द्वारा समाचार सीधे ही छप जाता है। यह टैलेक्स के माध्यम से होता है।

(9) उपग्रह दूर संचार—यह पद्धति देश में सन् 1979 से लागू हुई है। भारत में 5 भू-केन्द्रों की स्थापना की गई है, जिन पर वायुमण्डल के मौसम के समाचार निरन्तर प्राप्त होते रहते हैं।

(10) समाचार-पत्र एवं पत्रिकाएँ—संसार की राजनैतिक, सामाजिक सभी तरह की सूचना समाचार-पत्रों से प्रतिदिन प्राप्त होती रहती है। आजकल सबसे सस्ता साधन समाचार-पत्र ही हैं।

भारतीय अर्थव्यवस्था पर यातायात तथा सन्देश वाहन के साधनों का प्रभाव—

यातायात तथा संचार के साधनों का देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान है। व्यापारिक दृष्टिकोण से इनका बहुत अधिक महत्व है। यातायात तथा संचार के उन्नतिशील साधनों के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था पर व्यापक प्रभाव पड़ा है। अतः देश के आर्थिक विकास में तेजी लाने के लिए यातायात और संचार साधनों का बड़ा महत्व है। देश के औद्योगिक तथा कृषि सम्बन्धी-विकास के यह आधार स्तम्भ हैं।

परीक्षोपयोगी एवं बोर्ड परीक्षा में पूछे गये प्रश्न एवं उनके उत्तर

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. रेलों का भारत वासियों पर क्या प्रभाव पड़ा है? स्पष्ट कीजिए। (1989)

उत्तर—रेलों का प्रभाव—

रेल-निर्माण ने हमारे देशवासियों के जीवन को विभिन्न प्रकार से प्रभावित किया है। रेलों ने भारतीय कृषि, कुटीर उद्योग-धन्धे, वन उद्योग तथा व्यापार पर जो प्रभाव डाला है, उसका विवरण नीचे दिया जाता है।

(1) **रेल निर्माण का कृषि पर प्रभाव**—रेल निर्माण ने भारतीय कृषि को निम्न प्रकार प्रभावित किया है—

(क) कृषि का व्यापारीकरण—रेलों के बनने से भारतीय गाँवों का सम्बन्ध मन्डियों तथा बन्दरगाहों से स्थापित हो गया है। इसके कारण भारतीय कृषि में एक विशेष परिवर्तन आया है। अब भारतीय किसान व्यापारिक फसलों के उत्पादन पर अधिक जोर देने लगा है। जिन वस्तुओं की माँग विदेशों में अथवा देश के अन्य भागों में अधिक रहती है, जैसे—गन्ना, चाय, कपास, जूट, तिलहन आदि।

(ख) कृषि का विशिष्टीकरण—रेलों के बनने से पूर्व किसान अपनी स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु ही कृषि-उपजें उत्पन्न करते थे। किन्तु व्यापारिक फसलों के महत्व के बढ़ जाने के कारण कृषि क्षेत्रों में विशिष्टीकरण की प्रवृत्ति उत्पन्न हुई है।

(ग) कृषि विधियों में सुधार—रेलों के बन जाने से खेती करने के तरीकों में सुधार हुआ है। रेलों द्वारा नवीन कृषि-यन्त्र, उन्नत बीज, रासायनिक खादें, तकनीकी सहायता आदि सुविधाएँ कृषकों को सस्ती तथा शीघ्रता से प्राप्त हो जाती हैं।

(घ) अकालों की सम्भावनायें कम हुई हैं—रेलों के बनने से अकालों की तीव्रता कम हो गई है। आजकल यदि किसी कारणवश किसी स्थान पर अकालों की स्थिति उत्पन्न हो जाती है तो वहाँ पर रेलों की सहायता से तुरन्त ही खाद्य सामग्री भेज दी जाती है।

(ङ) कृषि पर जनसंख्या का प्रभाव पड़ा है—रेलों के कारण भारतीय कुटीर तथा घरेलू उद्योग-धन्धों का विनाश हुआ है। इनके कारण एक बड़ी संख्या में कारीगर बेकार हो गये और वे भी खेती करने लगे। इसके कारण भूमि पर जनसंख्या का भार बढ़ा और खेतों का विखन्डन हुआ।

(च) कृषि-मजदूरों में गतिशीलता—रेलों के कारण कृषि-मजदूरों में गतिशीलता उत्पन्न हुई है। वे अब रेलों द्वारा रोजगार की तलाश में दूर तक जा सकते हैं। इससे उनकी आर्थिक स्थिति में बड़ा सुधार हुआ है।

(2) घरेलू तथा कुटीर उद्योग-धन्धों पर प्रभाव—रेलों के बनने से पूर्व भारत अपनी दस्तकारी तथा कुटीर शिल्पों के लिए सारे संसार में प्रसिद्ध था। यहाँ की बनी हुई वस्तुएं विदेशों में बहुत पसन्द की जाती थीं। ढाका की मलमल, काश्मीर के शाल-दुशाले आदि संसार में प्रसिद्ध थे। लेकिन जब इंगलैण्ड में औद्योगिक क्रान्ति हुई तो वहाँ माल का उत्पादन बड़े पैमाने पर होने लगा। भारत पर अंग्रेजी का अधिकार था। अतः वे अपने देश के बने माल को भारतीय बाजारों में बेचने लगे। रेलों द्वारा यह माल भारत के भीतरी भागों में पहुँचाया जाने लगा। यह माल अपेक्षाकृत सस्ता था। अतः भारतीय कुटीर उद्योग इसका मुकाबला न कर सके। भारतीय कारीगर व शिल्पी बेकार हो गये।

(3) बड़े पैमाने के उद्योगों पर प्रभाव—बड़े पैमाने के उद्योग-धन्धों की उन्नति पूर्णतया रेल परिवहन पर ही अवलम्बित है। औद्योगिक केन्द्रों पर कच्चे माल, कोयला, मशीनें तथा मजदूरों को लाने के लिए रेल-परिवहन एक महत्वपूर्ण साधन हैं। इसी प्रकार बड़े-बड़े कारखानों में तैयार माल को देश के भीतरी भागों तथा बन्दरगाहों तक पहुँचाने में भी रेलें बड़ी सहायता प्रदान करती हैं।

(4) व्यापार पर रेलों का प्रभाव—परिवहन के साधनों का किसी देश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान होता है। रेलों के बनने से परिवहन-व्यय काफी कम हो

गया और देश के आन्तरिक व्यापार में पर्याप्त वृद्धि हुई। इसी प्रकार रेलें देश में बने माल को निर्यात के लिए बन्दरगाहों तक पहुँचाती हैं तथा विदेशों से आयात किये गये माल को देश के आन्तरिक भागों तक पहुँचाती हैं। इस तरह रेलों के बनने से भारत के विदेशी व्यापार को भी बड़ा प्रोत्साहन मिला है।

(5) **रोजगार पर प्रभाव**—रेलों के बन जाने से रोजगार में वृद्धि हुई है। रेल-निर्माण के कारण देश का आर्थिक विकास हुआ है, अनेक नवीन उद्योग-धन्धे खुले हैं तथा व्यापार में वृद्धि हुई है। इससे मजदूरों को अधिक रोजगार मिला है।

प्रश्न 2. भारत की प्रमुख सड़कों के नाम लिखिए।

उत्तर—भारत की प्रमुख सड़कें—

(1) **ग्राण्ड ट्रंक रोड**—यह देश की सबसे बड़ी राष्ट्रीय सड़क है। इसे सबसे पहले शेरशाह सूरी ने बनवाया था। बाद में ब्रिटिश सरकार ने इसका नवीनीकरण किया तथा इसका नाम ग्राण्ड ट्रंक रोड रक्खा। यह सड़क कलकत्ते से शुरू होती है तथा आसनसोल, पटना, वाराणसी, इलाहाबाद, अलीगढ़, देहली, करनाल, अम्बाला तथा लुधियाना होती हुई अमृतसर तक जाती है। वहाँ से यह पाकिस्तान में पेशावर तक जाती है।

(2) **कलकत्ता-मद्रास रोड**—यह सड़क भी कलकत्ता से आरम्भ होती है और सम्बलपुर, रायपुर, विजय नगेर, बेजवाड़ा तथा गण्टूर होती हुई मद्रास तक जाती है।

(3) **कलकत्ता-बम्बई रोड**—यह सड़क भी कलकत्ता से आरम्भ होती है तथा बम्बई के निकट आमलनेर में बम्बई-आगरा रोड में मिल जाती है।

(4) **बम्बई-आगरा रोड**—यह सड़क बम्बई से आरम्भ होती है और नासिक, इन्दौर, भोपाल, ग्वालियर होती हुई आगरा पहुँचती है।

(5) **मद्रास-बम्बई रोड**—यह सड़क बम्बई से आरम्भ होकर पूना होती हुई मद्रास पहुँचती है।

(6) **दी ग्रेट डेकन रोड**—यह सड़क उत्तर प्रदेश में मिर्जापुर से आरम्भ होती है और जबलपुर, नागपुर, हैदराबाद होती हुई बम्बई के निकट आमलनेर में बम्बई-आगरा रोड से मिल जाती है। इसका एक भाग बंगलौर तक जाता है।

(7) **देहली-बम्बई रोड**—यह सड़क देहली से आरम्भ होती है और जयपुर तथा अहमदाबाद होती हुई बम्बई तक जाती है।

(8) **देहली-लखनऊ रोड**—यह सड़क भी देहली से आरम्भ होती है और मुरादाबाद होती हुई लखनऊ तक जाती है।

(9) **लखनऊ-बरौनी रोड**—यह सड़क लखनऊ से आरम्भ होती है तथा मुजफ्फरपुर होती हुई बरौनी तक जाती है। इसी सड़क की एक शाखा नैपाल को चली जाती है।

(10) **असम ट्रंक रोड**—यह सैनिक महत्व की सड़क है। यह सड़क असम के मध्य से होती हुई मणिपुर तक जाती है। आगे यह सड़क बर्मा तक चली जाती है।

(11) **हिन्दुस्तान-तिब्बत रोड**—यह भी एक सैनिक महत्व की सड़क है। यह सड़क शिमला से आरम्भ होकर तिब्बत तक जाती है।

(12) **अन्य सड़कें**—उपर्युक्त बड़ी सड़कों के अतिरिक्त अन्य महत्वपूर्ण सड़कों में पठानकोट-जम्मू रोड, पठानकोट-कुल्लू रोड, देहरादून-मंसूरी रोड, गोहाटी-चेरापूंजी रोड, मनीपुर-कोहिमा-इम्फाल रोड, पूनिया दार्जिलिंग रोड तथा मद्रास-कालीकट रोड विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

प्रश्न 3. भारत की अर्थव्यवस्था में सड़कों का क्या महत्व है ?

उत्तर—भारत की अर्थव्यवस्था में सड़कों का महत्व इस प्रकार है—

(1) **आवागमन का सस्ता साधन**—सड़कें आवागमन का एक सस्ता साधन हैं। यह निर्दिष्ट स्थान तक पहुँचाती हैं। जहाँ रेलें बन्द होती हैं, वहाँ ये सीधी पहुँच कर समय की बचत करती हैं।

(2) **गाँवों की आर्थिक उन्नति का आधार**—भारत एक गाँवों का देश है। देश की आर्थिक उन्नति गाँवों की उन्नति पर निर्भर है। किन्तु गाँवों के आर्थिक विकास के लिए आवश्यक है कि ग्रामीण क्षेत्रों में सड़कों का विकास किया जाय।

(3) **देश के अन्तर्देशीय व्यापार में सहायक**—सड़कें देश के अन्तर्देशीय व्यापार के लिए आवश्यक होती हैं। इनके द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान तक माल बड़ी आसानी व शीघ्रता से भेजा जा सकता है।

(4) **उद्योग-धन्धों की वृद्धि में सहायक**—उत्पादन केन्द्रों से कच्चे माल को कारखानों तक पहुँचाने, कोयले आदि शक्ति के साधनों को खानों से औद्योगिक स्थान तक ढोने तथा पक्के माल को बाजार में ले जाने में सड़कें एक महत्वपूर्ण कार्य करती हैं। इससे उद्योग-धन्धों को प्रोत्साहन मिलता है।

(5) **उद्योगों के विकेन्द्रीयकरण में सहायक**—आज देश में उद्योगों के विकेन्द्रीयकरण पर विशेष जोर दिया जा रहा है ताकि औद्योगिक केन्द्रों में आवास की समस्या सुलझाई जा सके तथा भारतीय श्रमिकों की कार्यक्षमता का पूरा-पूरा लाभ उठाया जा सके। उद्योग के विकेन्द्रीयकरण में सड़कें महत्वपूर्ण कार्य करती हैं।

(6) **वन-सम्पदा के पूर्ण उपयोग में सहायक**—भारत में अपार वन-सम्पदा है। किन्तु हम इसका पूरा-पूरा लाभ नहीं उठा पाते हैं। इसका कारण सड़कों का अभाव है। यदि वन प्रदेशों में सड़कों का विकास कर लिया जाय तो हम अपनी वन-सम्पत्ति का पूरा लाभ उठा सकते हैं।

(7) **खनिज विकास में सहायता**--सड़कों के बन जाने से देश के विभिन्न भागों में स्थित खानों का विकास सम्भव हुआ है। सड़क परिवहन के कारण धीरे-धीरे खनिज उत्पादन में वृद्धि होती है। सड़कों का पूर्ण विकास हो जाने पर देश की अपार खनिज-सम्पदा का पूरा-पूरा लाभ उठाया जा सकेगा।

(8) **कृषि विकास में सहायक**—रेलों की भाँति सड़कों का भी देश के कृषि विकास में महत्वपूर्ण स्थान है। सड़कें विस्तृत खेती में विशेष योग प्रदान करती हैं। बेकार पड़ी हुई भूमि पर खेती करने में सड़कों से बड़ी सहायता मिलती है। सड़कों के द्वारा कृषि-यन्त्र व औज़ार, उन्नत बीज, रासायनिक खादें आदि गाँवों तक सुगमता से भेजी जा सकती हैं। इससे कृषि विकास सम्भव हुआ है।

(9) **कृषि में व्यापारीकरण को सम्भव बनाती हैं**—रेलों की भाँति सड़कों के निर्माण से भारतीय कृषि का व्यापारीकरण सम्भव हुआ है। अब कृषक अपनी

उपजों को सड़क परिवहन के द्वारा दूर-दूर नगरों तथा मण्डियों में बेचकर नकद रुपया प्राप्त कर सकता है। अतः वह खाद्य फसलों की अपेक्षा व्यापारिक फसलों जैसे कपास, तिलहन, गन्ना, जूट की उपज को अधिक महत्व देने लगा है।

(10) जीवन-स्तर को ऊँचा उठाने में सहायता—सड़क परिवहन ने गाँवों का सम्बन्ध नगरों से स्थापित कर दिया है। गाँव को शिक्षा, चिकित्सा तथा अन्य सामाजिक सेवाओं का लाभ प्राप्त होने लगा है। इस प्रकार ग्रामीण जनता का रहन-सहन का स्तर धीरे-धीरे ऊँचा उठ रहा है।

बहु-विकल्पीय प्रश्न

सही विकल्प चुनिए—

प्रश्न 1. भारत में मध्य रेलवे का मुख्य कार्यालय कहाँ है? (1985, 87)
(क) बम्बई; (ख) बंगलौर,
(ग) हैदराबाद, (घ) गोरखपुर।
उत्तर—(क) बम्बई।

प्रश्न 2. भारत में वायु यातायात का राष्ट्रीयकरण किया गया— (1985, 86, 87, 89)
(क) 1951 ई०, (ख) 1957 ई०,
(ग) 1953 ई०, (घ) 1960 ई०।
उत्तर—(ख) 1953 ई०।

प्रश्न 3. भारत में उत्तर रेलवे का मुख्यालय कहाँ है— (1985, 87, 91)
(क) कलकत्ता, (ख) दिल्ली, (ग) गोरखपुर, (घ) इलाहाबाद।
उत्तर—(ग) दिल्ली।

प्रश्न 4. भारत में दक्षिण मध्य रेलवे का मुख्यालय कहाँ है? (1987)
(क) बंगलोर, (ख) सिकन्दराबाद, (ग) मद्रास, (घ) भोपाल।
उत्तर—(ख) सिकन्दराबाद।

प्रश्न 5. दक्षिण रेलवे का मुख्यालय कहाँ है? (1989)
(क) बम्बई, (ख) सिकन्दराबाद, (ग) मद्रास, (घ) बंगलौर।
उत्तर—(ग) मद्रास।

प्रश्न 6. भारत में पूर्वी उत्तर रेलवे का मुख्यालय कहाँ है? (1988)
(क) गोहाटी, (ख) पटना, (ग) गोरखपुर, (घ) इलाहाबाद।
उत्तर—(ग) गोरखपुर।

13

राज्यों की अन्योन्याश्रयता (2)

[हमारा विदेशों से व्यापार, आयात एवं निर्यात—उसका राष्ट्र के आर्थिक विकास पर प्रभाव]

अति लघु उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1. विदेशी व्यापार के कौन से दो पहलू होते हैं ? (1986)

उत्तर—विदेशी व्यापार के दो पहलू आयात तथा निर्यात होते हैं।

प्रश्न 2. स्वतन्त्रता से पूर्व देश का व्यापार किस देश से अधिक होता था ?

उत्तर—स्वतन्त्रता से पूर्व देश का व्यापार मुख्यतः इंग्लैण्ड व राष्ट्रमण्डल के देशों से होता था।

प्रश्न 3. भारत की किन्हीं चार आयातित वस्तुओं के नाम लिखिये। (1986, 88)

उत्तर—भारत की चार आयातित वस्तुओं के नाम—(i) धातुएँ, (ii) मशीन तथा पुर्जे, (iii) पैट्रोल तथा पेट्रोलियम पदार्थ और (iv) खाद्यान्न हैं।

प्रश्न 4. भारत की दो परम्परागत तथा दो गैर परम्परागत निर्यातित वस्तुओं के नाम लिखिये। (1987, 88, 89)

उत्तर—भारत की दो परम्परागत निर्यातित वस्तुओं के नाम—(i) चाय, (ii) जूट का माल।

गैर निर्यातित वस्तुओं के नाम—(i) पंखे (ii) साइकिलें।

प्रश्न 5. विदेशी व्यापार का आर्थिक विकास पर प्रभाव डालने वाले दो तथ्यों को बतलाइए।

उत्तर—विदेशी व्यापार का आर्थिक विकास पर प्रभाव डालने वाले दो तथ्य निम्नलिखित प्रकार से हैं—

(1) विदेशी मुद्राओं की पूर्ति,

(2) निर्यात व्यापार का आर्थिक विकास में योगदान।

परीक्षोपयोगी एवं बोर्ड परीक्षा में पूछे गये अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न 1. आयात-निर्यात का क्या अर्थ है ? (1985, 86, 89)

उत्तर—आयात—देश में वस्तुओं को दूसरे देशों से क्रय करके मँगाने को आयात कहते हैं।

निर्यात—देश से वस्तुओं को दूसरे देशों को विक्रय करके भेजने को निर्यात कहते हैं।

प्रश्न 2. राज्यों की अन्योन्याश्रयता का क्या आशय है ? (1989)

उत्तर—दो या दो से अधिक राज्यों की एक दूसरे पर निर्भरता या सामंजस्य राज्यों की अन्योन्याश्रियता कहते हैं।

प्रश्न 3. विदेशी व्यापार का आर्थिक विकास पर प्रभाव डालने वाले दो तथ्य बताइये।

उत्तर—(1) नवीनतम तकनीकी का विकास (2) राष्ट्रीय आय में वृद्धि।

प्रश्न 4. देशी तथा विदेशी व्यापार में क्या अन्तर है ? (1985)

उत्तर—जो व्यापार देश की सीमाओं के अन्दर होता है उसे देशी व्यापार तथा जो देश की सीमा से बाहर विदेशों से होता है उसे विदेशी व्यापार कहते हैं।

प्रश्न 5. भारत की चार निर्यातित वस्तुओं के नाम बताओ। (1991)

उत्तर—(1) चमड़ा (2) चाय (3) जूट का सामान (4) तिलहन।

प्रश्न 6. भारत की चार आयातित वस्तुएँ बताइये।

उत्तर—(1) पेट्रोलियम (2) भारी मशीनें (3) विज्ञान के उपकरण (4) औषधियाँ।

प्रश्न 7. भारत के कृषि सम्बन्धी दो निर्यातों के नाम लिखो। (1991)

उत्तर—(1) तिलहन (2) चाय।

लघु उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1. देशी तथा विदेशी व्यापार में क्या अन्तर है ?

उत्तर—देशी व्यापार देश की सीमा के अन्दर सम्पन्न किया जाता है।

विदेशी व्यापार अन्य देशों के साथ किया जाता है। यह देश की सीमाओं के बाहर किया जाता है।

प्रश्न 2. देश के प्रमुख निर्यातों की किन्हीं चार वस्तुओं का विवरण दें। (1988, 91)

उत्तर—भारत के प्रमुख निर्यात—

भारत के चार प्रमुख निर्यात निम्नलिखित हैं—

(1) **चाय**—भारत में काली पत्ती की चाय पैदा होती है। यह भारत का प्रमुख निर्यात है। प्रतिवर्ष लगभग 400 करोड़ रुपया इंगलैण्ड को निर्यात की जाती है। इसके अतिरिक्त सं० रा० अमेरिका, कनाडा, रूस, सूडान, मिश्र तथा ईरान आदि देशों को इसका निर्यात होता है।

(2) **जूट तथा जूट का सामान**—यह भारत का प्रमुख निर्यात उत्पादन है। प्रतिवर्ष लगभग 243 करोड़ रुपया का जूट तथा उससे निर्मित सामान अमेरिका, कनाडा यूरोप के अन्य देश, जापान, सोवियत रूस को निर्यात किया जाता है।

(3) **चमड़ा**—प्रति वर्ष लगभग 400 करोड़ रुपया का चमड़ा एवं उससे निर्मित सामान भारत से रूस, अमेरिका, ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस आदि देशों को निर्यात किया जाता है।

(4) **सूती वस्त्र**—भारत से ग्रेट-ब्रिटेन, मिश्र, सं० रा० अमेरिका, ईरान को लगभग 290 करोड़ रुपया के सूती वस्त्र प्रति वर्ष निर्यात किये जाते हैं।

प्रश्न 3. परम्परागत व गैर परम्परागत निर्यातों को बताइए। (1988)

उत्तर—परम्परागत निर्यात—

(i) चाय, (ii) कहवा, (iii) सूती वस्त्र, (iv) जूट का माल, (v) तम्बाकू, (vi) चमड़ा।

गैर परम्परागत निर्यात—

(i) इंजीनियरी का सामान, (ii) सिलाई की मशीनें, (iii) पंखे, (iv) साइकिलें, (v) दस्तकारी का सामान।

परीक्षोपयोगी एवं बोर्ड परीक्षा में पूछे गये अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न 1. भारत के प्रमुख आयात कौन-कौन से हैं? (1988, 90)

उत्तर—भारत के प्रमुख आयात निम्नलिखित हैं—

(1) भारी मशीनें तथा पुर्जे, (2) पैट्रोलियम, (3) ऊन, (4) कपास, (5) जूट, (6) खाद्यान्न, (7) उर्वरक एवं उर्वरकों का कच्चा माल, (8) रासायनिक पदार्थ तथा दवाएँ, (9) लोहा-इस्पात व अन्य धातुएँ, (10) विज्ञान सम्बन्धी सामिग्री एवं उपकरण।

प्रश्न 2. परम्परागत तथा गैर परम्परागत निर्यातों में क्या अन्तर है?

उत्तर—परम्परागत निर्यात—जिन वस्तुओं का निर्यात भारत सुनियोजित आर्थिक विकास के पहले से ही करता आया है उसे परम्परागत निर्यात कहते हैं। जैसे—चमड़ा, चाय, तिलहन, कपड़ा, कहवा, जूट का निर्यात।

गैर परम्परागत निर्यात—जिन वस्तुओं का निर्यात सुनियोजित आर्थिक विकास के बाद भारत ने प्रारम्भ किया है वे गैर परम्परागत निर्यात कहलाते हैं। जैसे—पंखे, साइकिल, सिलाई की मशीनें, स्कूटर आदि।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1. भारत के विदेशी व्यापार का राष्ट्र के आर्थिक विकास पर पड़ने वाले प्रभाव पर एक लेख लिखिए। (1989)

उत्तर—भारत के विदेशी व्यापार का आर्थिक विकास पर प्रभाव निम्नलिखित तत्वों से स्पष्ट होता है—

(1) विदेशी मुद्राओं की पूर्ति—देश के निर्यात में वृद्धि होने से विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है जो हमें विदेशों से वस्तुएँ व सेवाएँ खरीदने में एवं देश के विकास में सहायक है।

(2) वास्तविक आय व पूँजी निर्माण में वृद्धि—विदेशी व्यापार के द्वारा देश में प्राकृतिक साधनों का अनुकूलतम प्रयोग किया जाता है, जिससे वास्तविक उत्पादन एवं आय में वृद्धि हुई है। आय की वृद्धि से देश की पूँजी निर्माण को प्रोत्साहन मिला है।

(3) औद्योगिक विकास—देश में नए-नए उद्योगों की स्थापना और औद्योगिक विकास विदेशी व्यापार द्वारा ही सम्भव है। हम विदेशी व्यापार द्वारा कच्चा माल, मशीनें आदि आयात करते हैं।

(4) निर्यात व्यापार का आर्थिक विकास में योगदान—भारत के विदेशी व्यापार में निर्यात वृद्धि द्वारा निर्यात क्षेत्र के उद्योगों का विकास अन्य क्षेत्रों में

विकास को प्रोत्साहन दे रहा है। निर्यात वृद्धि से आय में वृद्धि होने के कारण देश में वस्तुओं और सेवाओं की माँग बढ़ रही है, जो निवेश को प्रोत्साहन दे रही है।

(5) **खाद्यान्नों की पूर्ति और मूल्य स्थायित्व की सुविधा**—विदेशी व्यापार के माध्यम से आवश्यक खाद्यान्नों एवं वस्तुओं की आपूर्ति विदेशों से कर ली जाती है।

(6) **औद्योगिक ज्ञान एवं तकनीकी संसाधनों का विकास**—विदेशी व्यापार द्वारा तकनीकी संसाधनों एवं औद्योगिक ज्ञान में निरन्तर वृद्धि हो रही है। इससे देश का आर्थिक विकास हो रहा है।

(7) **कृषि के लिए साज-सज्जा**—कृषि के लिए नवीन यन्त्र, उर्वरक, आदि विदेशी व्यापार से प्राप्त हो जाते हैं, जिससे नवीन ढंग से कृषि कार्य सम्भव हो सकता है।

(8) **पेट्रोल की पूर्ति**—हमारे देश में खनिज तेल की कमी को पूरा करने के लिए हम विदेशी व्यापार द्वारा दूसरे देशों से तेल मँगाते हैं।

(9) **सुरक्षा सामग्री**—अनेक सुरक्षा सामग्री की पूर्ति भी विदेशी व्यापार के द्वारा की जाती है।

बहु विकल्पीय प्रश्न

सही विकल्प चुनिए—

प्रश्न 1. भारत का प्रमुख निर्यात है— (1984)

(क) कपास, (ख) गेहूँ,
(ग) चाय, (घ) मशीनें।

उत्तर—(ग) चाय।

प्रश्न 2. भारत में जूट का निर्यात कहाँ से किया जाता है— (1986)

(क) असम, (ख) पश्चिमी बंगाल,
(ग) बिहार, (घ) उड़ीसा।

उत्तर—(ख) पश्चिमी बंगाल।

प्रश्न 3. भारत का मुख्य आयात हैं—

(क) खनिज तेल, (ख) मशीनें,
(ग) दवाइयाँ, (घ) लोहा-इस्पात।

उत्तर—(क) खनिज तेल।

प्रश्न 4. निम्नांकित में से किस बन्दरगाह से भारत का विदेशी व्यापार सर्वाधिक होता है— (1990)

(क) कलकत्ता, (ख) बम्बई,
(ग) कांदला, (घ) मद्रास।

उत्तर—(ख) बम्बई।

14 | राज्यों की अन्योन्याश्रयता (3)
[सहकारिता तथा सामुदायिक विकास]

अति लघु उत्तरीय प्रश्न (राजकोय पुस्तक से)

प्रश्न 1. सहकारिता का क्या अर्थ है ? (1988, 90)

उत्तर—सहकारिता का अर्थ मिलकर कार्य करना है। यह एक प्रजातांत्रिक संगठन है जिसमें व्यक्ति स्वेच्छा से अपनी आर्थिक उन्नति के लिए सम्मिलित होते हैं।

प्रश्न 2. सहकारिता की 5 विशेषताएँ बताइए। (1990)

उत्तर—सहकारिता की 5 विशेषताएँ इस प्रकार हैं—

(1) **ऐच्छिक संगठन**—सहकारिता व्यक्तियों का ऐच्छिक संगठन है।
(2) **परस्पर संगठन**—सहकारिता में ये व्यक्ति परस्पर सहयोग करते हैं।
(3) **समानता**—यह सहयोग समानता के आधार पर होता है।
(4) **लोकतन्त्रीय व्यवस्था**—संगठन की व्यवस्था लोकतन्त्रीय होती है।
(5) **आर्थिक उद्देश्य**—इस संगठन का उद्देश्य आर्थिक होता है।

प्रश्न 3. सहकारिता के 5 आधारभूत सिद्धान्तों के नाम बताइए। (1986)

उत्तर—(1) ऐच्छिक संगठन (2) पारस्परिक सहायता द्वारा आत्म सहायता (3) लाभ के वितरण का सिद्धान्त (4) एकता व भाई चारे का सिद्धान्त (5) प्रजातान्त्रिक नियन्त्रण।

प्रश्न 4. कृषि क्षेत्र में सहकारिता के दो लाभ बताइए। (1988)

उत्तर—सहकारिता के कृषि क्षेत्र में निम्नलिखित लाभ हैं—

(1) सहकारी खेती होने लगी है।
(2) कृषकों को कम ब्याज पर ऋण मिलता है।

प्रश्न 5. बहुउद्देशीय सहकारी समितियाँ क्या होती हैं ? (1988)

उत्तर—ऐसी सहकारी समितियाँ जिनकी स्थापना के अनेक उद्देश्य होते हैं, बहुउद्देशीय सहकारी समितियाँ कहलाती हैं।

प्रश्न 6. सहकारी उपभोक्ता भण्डारों के क्या उद्देश्य होते हैं ? (1986)

उत्तर—सहकारी उपभोक्ता भण्डार के कुछ उद्देश्य इस प्रकार हैं—

(1) शुद्ध वस्तुएँ उपलब्ध कराना,
(2) उचित वितरण प्रणाली स्थापित करना,
(3) बिचौलियों के लाभ समाप्त करना,
(4) उत्पादकों की मनमानी से उपभोक्ताओं को बचाना।

प्रश्न 7. आज देश में कितनी सहकारी समितियाँ हैं ?
उत्तर—आज देश में 1 लाख 44 हजार सहकारी साख समितियाँ हैं।
प्रश्न 8. पाँच प्रकार की सहकारी समितियों के नाम गिनाइए।
उत्तर—(i) साख समितियाँ,
(ii) विपणन समितियाँ,
(iii) सिंचाई समितियाँ,
(iv) औद्योगिक समितियाँ,
(v) उपभोक्ता समितियाँ।
प्रश्न 9. सहकारी आन्दोलन की चार कमियों के नाम बताइए। (1987)
उत्तर—(i) सरकारी सहायता पर अधिक निर्भरता,
(ii) साख समितियों की अधिकता,
(iii) भ्रष्टाचार तथा स्वार्थ,
(iv) अकुशल प्रबन्ध,
(v) निष्क्रिय समितियों की स्थापना।
प्रश्न 10. सामुदायिक विकास योजना की पाँच विशेषतायें बताइए
उत्तर—(1) सभी वर्गों का विकास,
(2) स्वावलम्बन पर विशेष बल,
(3) सामाजिक सुधार कार्यक्रम,
(4) व्यक्ति के जीवन के सभी पहलुओं का विकास,
(5) स्थानीय आवश्यकताओं पर बल।

परीक्षोपयोगी एवं बोर्ड परीक्षा में पूछे गये अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न 1. भारत में सहकारिता का जन्म कब हुआ ? (1986)
उत्तर—भारत में सहकारिता का जन्म सन् 1904 ई० में हुआ।
प्रश्न 2. देश में सामुदायिक विकास योजनाएँ कब प्रारम्भ हुई ? (1991)
उत्तर—हमारे देश में सामुदायिक विकास योजनाएँ सन् 1952 में प्रारम्भ हुईं।

लघु उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1. सहकारिता का अर्थ उदाहरण देकर समझाइए। (1990)

उत्तर—'सहकारिता' शब्द दो शब्द से मिलकर बना है सह + कारिता इस प्रकार सहकारिता का अर्थ मिलकर कार्य करना है। जैसे उपभोक्ता मिलकर सहकारी उपभोक्ता भण्डार को चलायें। सहकारिता के अन्तर्गत पारस्परिक सहयोग की भावना का व्यापक प्रभाव होता है।

प्रश्न 2. सहकारिता के चार प्रमुख सिद्धान्तों का विवरण दीजिए। (1987, 88, 89)

उत्तर—सहकारिता के चार प्रमुख सिद्धान्त निम्नलिखित हैं—
(1) ऐच्छिक संगठन, (2) पारस्परिक सहयोग,
(3) प्रजातन्त्रीय व्यवस्था, (4) लाभ का समान वितरण।
प्रश्न 3. सहकारिता के चार आर्थिक लाभों को समझाइए।

उत्तर—सहकारी समितियों की स्थापना किसी न किसी आर्थिक उद्देश्य को प्राप्त करने की दृष्टि से की जाती है। अतः इनसे अनेक प्रकार के आर्थिक लाभ प्राप्त होते हैं—

(क) कृषकों व कारीगरों को कम ब्याज पर ऋण मिलता है। इससे उन्हें साहूकारों और महाजनों के द्वारा किये जाने वाले शोषण से कुछ राहत मिल है। उन्हें ही मजबूर होकर अपनी ब्याज की दरें कम करनी पड़ी हैं।

(ख) किसानों को अपने ऋण चुकाने और कृषि में स्थायी सुधार करने के अवसर प्राप्त हुए हैं। इससे उनकी आर्थिक स्थिति में काफी सुधार हुआ है।

(ग) सहकारी क्रय समितियों के माध्यम से कृषि यन्त्र व कृषि के लिए आवश्यक अन्य वस्तुएँ खरीदने में कृषकों को बड़ी सहायता प्राप्त हुई है। इसी प्रकार विक्रय समितियों के माध्यम से अपनी उपज का उचित मूल्य प्राप्त करने में उन्हें सहायता मिली है। क्रय-विक्रय समितियों की स्थापना से मध्यस्थों का प्रायः सफाया ही हो गया है।

(घ) शहरी क्षेत्रों में उपभोक्ता भण्डारों की स्थापना से उपभोक्ता हितों की रक्षा हुई है।

प्रश्न 4. सामुदायिक विकास योजना के क्या उद्देश्य हैं? (1985, 90)

उत्तर—सामुदायिक विकास योजना के निम्नलिखित प्रमुख उद्देश्य हैं—

(1) सहकारिता का प्रचार करना, (2) उत्पादन में वृद्धि करना, (3) सिंचाई के साधनों का विकास करना, (4) रोजगार के अवसर प्रदान करना, (5) ग्रामीण मनोरंजन के साधनों का प्रबन्ध करना, (6) ग्रामीण किसानों को कर्ज की सुविधा प्रदान करना, (7) गाँवों में सड़कों तथा स्कूलों का प्रवन्ध करना, (8) गाँवों में कुटीर उद्योग-धन्धे खोलना।

प्रश्न 5. सामुदायिक विकास कार्यक्रम की प्रगति का विवरण दीजिए। (1987)

उत्तर—सामुदायिक विकास कार्यक्रम का प्रारम्भ 2 अक्टूबर 1952 ई० को किया गया था। इस समय देश में 5028 सामुदायिक विकास कार्यक्रम की उपलब्धियाँ निम्न प्रकार हैं—

(1) भूमि का काफी सुधार हुआ है,
(2) कृषि का विकास हुआ है,
(3) परिवहन का विकास हुआ है,
(4) पशुपालन को प्रोत्साहन मिला है,
(5) समाज शिक्षा का प्रबन्ध किया गया है,
(6) कुटीर तथा लघु उद्योगों का विकास किया गया है,
(7) सम्पूर्ण विकास कार्यक्रम,
(8) स्वास्थ्य एवं सफाई।

परीक्षोपयोगी एवं बोर्ड परीक्षा में पूछे गये अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों का उत्तर

प्रश्न 1. प्रजातांत्रिक नियन्त्रण सहकारिता का मूल सिद्धान्त क्यों माना जाता है? (1989)

उत्तर—सहकारिता में समितियों का गठन लोकतांत्रिक ढंग से किया जाता है, जिसमें प्रत्येक का समान महत्व होता है। सम्पूर्ण शक्ति सदस्यों के हाथ

में रहती है। चुनाव प्रजातांत्रिक प्रणाली द्वारा होता है। इसमें एक मत और एक व्यक्ति को अपनाया गया है। इसी कारण प्रजातांत्रिक नियन्त्रण सहकारिता का मूल सिद्धान्त माना गया है।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1. सहकारिता से आप क्या समझते हैं? ग्रामीण विकास में सहकारिता का क्या योगदान है?

उत्तर—सहकारिता का अर्थ—

साधारण बोलचाल की भाषा में 'सहकारिता' का अर्थ होता है 'मिल-जुलकर काम करना।" किन्तु अर्थशास्त्र में 'सहकारिता' शब्द का प्रयोग अधिक व्यापक अर्थ में किया जाता है। आर्थिक दृष्टि से सहकारिता वह आर्थिक व्यवस्था है जिसमें लोग किसी आर्थिक उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए समानता के आधार पर स्वेच्छा से मिलजुल कर कार्य करते हैं। सहकारिता सहयोग और सद्भावना पर आधारित है। नीचे कुछ विद्वानों द्वारा की गयी सहकारिता की परिभाषायें दी गयी हैं—

(1) "व्यक्तियों का प्रत्येक समुदाय जो एक सम्मिलित प्रयत्न से सार्वजनिक हित की प्राप्ति करता है, सहकारी समुदाय कहलाता है और कार्य करने की विधि सहकारिता है।"

—स्ट्रिकलैण्ड

(2) "सहकारिता ऐसा संगठन है जिसमें व्यक्ति स्वेच्छापूर्वक समानता के आधार पर आर्थिक हितों को पूर्ण करने के लिए आपस में सहयोग करते हैं।"

—काल्वर्ट

सहकारिता के लक्षण—

उपर्युक्त परिभाषाओं से सहकारिता के पाँच लक्षण प्रकट होते हैं—

(1) **ऐच्छिक संगठन**—सहकारिता व्यक्तियों का ऐच्छिक संगठन है।
(2) **परस्पर संगठन**—सहकारिता में ये व्यक्ति परस्पर सहयोग करते हैं।
(3) **समानता**—यह सहयोग समानता के आधार पर होता है।
(4) **लोकतन्त्रीय व्यवस्था**—संगठन की व्यवस्था लोकतन्त्रीय होती है।
(5) **आर्थिक उद्देश्य**—इस संगठन का उद्देश्य आर्थिक होता है।

ग्रामीण विकास में सहकारिता का योगदान

ग्रामीण विकास में सहकारिता का विशेष योगदान है। सहकारिता के माध्यम से गाँवों के किसानों को आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ है। आर्थिक विकास के साथ ही साथ विकास योजनाओं में योग प्राप्त हुआ है तथा सामाजिक विकास हुआ है और राजनीतिक चेतना जागृत हुई है तथा नैतिकता के विकास के साथ ही साथ महाजनों से मुक्ति मिली है। इस प्रकार ग्रामीण विकास में इसका विशेष योगदान है।

प्रश्न 2. सहकारिता के मुख्य सिद्धान्त क्या हैं? सहकारिता से उपभोक्ताओं को क्या लाभ होता है? (1986, 88)

उत्तर—सहकारिता के सिद्धान्त—

सहकारिता के सिद्धान्त निम्नलिखित हैं—

(1) **सहकारिता व्यक्तियों का संगठन**—सहकारी संगठन में व्यक्ति का महत्व पूंजी से अधिक होता है। कम्पनियों तथा व्यावसायिक संस्थानों में जो व्यक्ति

अधिक पूँजी लगाता है, उसका महत्व अन्य व्यक्तियों से अधिक होता है। इसी आधार पर इस प्रकार के संगठनों को पूँजी के संगठन तथा सहकारी संगठनों को व्यक्तियों का संगठन कहा जाता है।

(2) समानता का सिद्धान्त—सहकारिता की यह विशेषता है कि इसमें सभी सदस्यों को समानता का अधिकार प्राप्त होता है। सभी सदस्यों को एक ही मत प्राप्त होता है।

(3) खुली सदस्यता—सहकारी संगठन में किसी भी व्यक्ति को जाति, धर्म, व्यवसाय आदि के आधार पर इसकी सदस्यता से वंचित नहीं किया जा सकता। कोई भी व्यक्ति जो सहकारी संस्था के उद्देश्यों को स्वीकार करता है उसका सदस्य बन सकता है।

(4) आय का उचित वितरण—सहकारी संगठनों में पूँजीवादी संगठनों की भाँति विशेष शोषण नहीं होता। इनमें आय का उचित और न्यायपूर्ण वितरण होता है। सदस्यों को उचित ब्याज पर ऋण, उचित मजदूरी तथा उचित मूल्य पर वस्तुयें प्रदान की जाती हैं।

(5) स्वेच्छा का सिद्धान्त—कोई भी व्यक्ति कभी भी सहकारी संस्था का सदस्य बन सकता है अथवा उसकी सदस्यता का परित्याग कर सकता है। उस पर किसी भी प्रकार का जोर या दवाव नहीं डाला जाता। इस प्रकार सहकारी संगठन व्यक्तियों का ऐच्छिक संगठन होता है।

(6) मितव्ययिता का सिद्धान्त—सहकारी संस्थायें अपने सदस्यों को मितव्ययी बनाने का प्रयत्न करती हैं। उनकी फिजूलखर्ची को रोकने का प्रयत्न करती हैं।

(7) सामूहिक सत्ता—सहकारी समितियों की सम्पत्ति पर किसी व्यक्ति विशेष का अधिकार नहीं होता। समस्त सदस्यों की सामूहिक सत्ता स्वीकार की जाती है।

सहकारिता से उपभोक्ताओं को लाभ—

सहकारिता से उपभोक्ताओं को सबसे अधिक लाभ हुआ है। उन्हें अच्छी किस्म की वस्तुओं की प्राप्ति होती है तथा सस्ते मूल्य पर वस्तुओं की उपलब्धि होती है। बचत तथा विनियोग में वृद्धि होती है और महाजनों से छुटकारा मिलता है। सहकारिता के आधार पर कृषकों को खेती की नई तकनीकों का ज्ञान हुआ है।

सहकारिता से उपभोक्ताओं को मिलने वाले लाभ इस प्रकार हैं—

(1) खेती के लिये बीज एवं खाद की व्यवस्था।
(2) उत्पादन में वृद्धि।
(3) बिचौलियों के लाभ की समाप्ति।
(4) कृषकों को उनके उत्पादन का उचित मूल्य मिलना।
(5) उपभोक्ताओं को शुद्ध वस्तुओं की प्राप्ति।
(6) महाजनों के शोषण से किसानों को मुक्ति।
(7) बचत में वृद्धि।
(8) मूल्य वृद्धि रोकने में सहायता।

प्रश्न 3. भारत में सामुदायिक विकास योजना के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए इसकी उपलब्धियों का मूल्यांकन कीजिये। (1986, 87, 89, 90)

अथवा

सामुदायिक विकास के क्या उद्देश्य हैं ? स्पष्ट कीजिये।

उत्तर—सामुदायिक विकास योजना के उद्देश्य इस प्रकार हैं—

(1) जनता के दृष्टिकोण में परिवर्तन करना—सामुदायिक विकास का उद्देश्य ग्रामीण जनता के दृष्टिकोण को विस्तृत करना तथा उसे रूढ़िवादिता एवं अन्धविश्वास से छुटकारा दिलाना है ताकि वह समाज एवं राष्ट्र के प्रति अपने कर्त्तव्यों का पालन करके उन्नति कर सके।

(2) सहकारिता के प्रति रुचि उत्पन्न करना—सामुदायिक विकास में सहकारी विधियों का प्रयोग करके ग्रामीण जनता में सहकारिता के प्रति रुचि उत्पन्न करना है।

(3) उत्पादन में वृद्धि करना—सामुदायिक विकास का तीसरा उद्देश्य कृषि, बागवानी, पशुपालन तथा मछली पालन में वैज्ञानिक प्रणालियों तथा नवीन तकनीकों का प्रयोग करके उत्पादन में वृद्धि करना है।

(4) रोजगार की मात्रा में वृद्धि करना—सामुदायिक विकास का चौथा उद्देश्य कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग-धन्धों का विकास कर रोजगार के अवसरों में वृद्धि करना है।

(5) गाँवों को आत्मनिर्भर बनाना—सामुदायिक विकास का पाँचवाँ उद्देश्य खाना, कपड़ा तथा मकान के सम्बन्ध में गाँवों को आत्मनिर्भर बनाना है।

(6) शिक्षा का प्रसार—सामुदायिक विकास का छठवाँ उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का प्रसार करना है।

(7) स्वास्थ्य सम्बन्धी सुविधायें प्रदान करना—सामुदायिक विकास का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में सफाई का प्रबन्ध करना, शुद्ध पेयजल की व्यवस्था, बीमारियों पर नियन्त्रण पाना तथा इन कार्यों को सम्पन्न करने के लिए स्वास्थ्य केन्द्रों की स्थापना करना है।

(8) यातायात के साधनों का विकास—सामुदायिक विकास का उद्देश्य अपने क्षेत्रों में पक्की तथा कच्ची सड़कों का निर्माण करना, पशु परिवहन का विकास करना तथा मोटर परिवहन की व्यवस्था करना भी है।

(9) आय में वृद्धि करना—सामुदायिक विकास का एक प्रमुख उद्देश्य ग्रामीण जनता की आय में वृद्धि करना है ताकि उसका जीवन-स्तर ऊँचा हो सके।

(10) ग्राम विकास करना—सामुदायिक विकास का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य गाँवों में सार्वजनिक सेवाओं का प्रसार करके उनका विकास करना है।

सामुदायिक विकास योजना की उपलब्धियाँ—

सामुदायिक विकास योजना की उपलब्धियाँ इस प्रकार हैं—

(1) भूमि सुधार, (2) कृषि सुधार, (3) परिवहन विकास, (4) पशुपालन, (5) स्वास्थ्य एवं ग्राम सफाई, (6) कुटीर एवं लघु कुटीर उद्योगों का विकास, (7) आपसी असमानता को समाप्त करना, (8) आदिवासी पहाड़ी क्षेत्रों के लिए विशेष कार्यक्रम।

बहु विकल्पीय प्रश्न

सही विकल्प चुनिए—

प्रश्न 1. सहकारी समितियों का महत्व है क्योंकि—
(i) व्यापारी उपभोक्ताओं से उचित मूल्य लेते हैं।
(ii) व्यापारी उपभोक्ताओं को ठगते हैं।
(iii) व्यापारी अनुचित लाभ कमाते हैं।
(iv) व्यापारी उपर्युक्त में से कुछ भी नहीं करते।

उत्तर—(ii) व्यापारी उपभोक्ताओं को ठगते हैं।

प्रश्न 2. आज देश में कितनी हजार साख समितियाँ हैं—
(i) 153 हजार, (ii) 144 हजार, (iii) 201 हजार, (iv) 192 हजार।

उत्तर—(ii) 144 हजार साख समितियाँ हैं।

प्रश्न 3. भारत में सामुदायिक विकास योजनायें प्रारम्भ हुईं— (1990)
(क) 1947, (ख) 1948, (ग) 1950, (घ) 1952।

उत्तर—(घ) 1952

प्रश्न 4. भारत में सहकारिता का जन्म हुआ—
(क) 1904, (ख) 1920, (ग) 1947, (घ) 1950।

उत्तर—(क) 1904

प्रश्न 5. सामुदायिक विकास कार्यक्रम की प्रमुख उपलब्धि है—
(क) चकबन्दी, (ख) कृषि में सुधार, (ग) शिक्षा प्रसार, (घ) भूमि सुधार।

उत्तर—(ख) कृषि में सुधार।

15 | सामाजिक परिवर्तन तथा विकास

अति लघु उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1. सामाजिक परिवर्तन के रेखीय रूप का क्या अर्थ है ? (1988)

उत्तर—रेखीय परिवर्तन निरन्तर एक ही दिशा में और आगे की ओर ही होता है; जैसे—विज्ञान तथा तकनीकी में परिवर्तन।

प्रश्न 2. सामाजिक परिवर्तन के चक्रवत रूप का क्या तात्पर्य है ?

उत्तर—इसमें परिवर्तन कभी आगे की ओर और कभी पीछे की ओर होता है। जैसे—फैशन की लहर।

प्रश्न 3. परिवार के कार्यों को किन-किन दो भागों में बाँटा जा सकता है ?

उत्तर—परिवार के कार्यों को इस प्रकार विभाजित किया जा सकता है—
(1) गौण कार्य, और (2) मूलभूत कार्य।

प्रश्न 4. शुद्ध उत्तर लिखकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(अ) सामाजिक परिवर्तन के औद्योगिकीय कारक पर..........ने निर्णायक माना है। (सोरोकिन, कार्ल मार्क्स)

(ब) सामाजिक परिवर्तन के सांस्कृतिक कारक पर..........ने निर्णायक माना है। (सोरोकिन, डेविस)

उत्तर—(अ) कार्ल मार्क्स, (ब) सोरोकिन।

लघु उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1. सामाजिक परिवर्तन का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—सामाजिक परिवर्तन का अर्थ—जो परिवर्तन समाज के संगठन अर्थात् समाज के ढाँचे और कार्यों में घटित होते हैं उन्हें सामाजिक परिवर्तन कहते हैं। सामाजिक परिवर्तन की परिभाषा—

सामाजिक परिवर्तन की कुछ परिभाषाएँ इस प्रकार हैं—

(1) डासन तथा गेटीज—"सांस्कृतिक परिवर्तन सामाजिक परिवर्तन है क्योंकि समस्त संस्कृति अपनी उत्पत्ति, अर्थ तथा प्रयोग में सामाजिक है।"

(2) के० डेविस—"सामाजिक परिवर्तन वे परिवर्तन हैं जो कि सामाजिक संगठन अर्थात् समाज के ढाँचे और कार्य में घटित होते हैं।"

(3) मैकाइवर तथा पेज—"समाजशास्त्री के नाते हमारा प्रत्यक्ष सम्बन्ध सामाजिक सम्बन्धों से है। इसलिए इनमें होने वाले परिवर्तन को ही हम सामाजिक परिवर्तन मानते हैं।"

प्रश्न 2. परिवार के गौण कार्य किन-किन संस्थाओं को हस्तान्तरित हो गये हैं ?

उत्तर—परिवार के गौण कार्य निम्नलिखित संस्थाओं को हस्तान्तरित हो गये हैं—

(1) राज्य की विभिन्न संस्थाओं को सुरक्षा के कार्य,
(2) चर्च आदि को धार्मिक कार्य,
(3) विद्यालयों को शिक्षा सम्बन्धी कार्य,
(4) विभिन्न आर्थिक संस्थाओं को आर्थिक कार्य,
(5) अस्पतालों को स्वास्थ्य सम्बन्धी कार्य,
(6) सिनेमा आदि को मनोरंजन के कार्य।

प्रश्न 3. पारिवारिक विघटन में किन-किन कानूनों का योगदान है ? (1989)

उत्तर—पारिवारिक विघटन में निम्नलिखित कानूनों ने योगदान दिया है—
(1) हिन्दू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम 1956 ई०।
(2) हिन्दू स्त्रियों की सम्पत्ति का अधिकार अधिनियम 1937 ई०।
(3) विशेष विवाह अधिनियम 1954 ई०।
(4) हिन्दू विवाह तथा विच्छेद अधिनियम 1955 ई० तथा
(5) हिन्दू उत्तराधिकार अधिकार 1956 ई०।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1. सामाजिक परिवर्तनों के प्रमुख स्वरूप और कारकों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—

सामाजिक परिवर्तन

परिभाषा—(1) समाज की परिस्थितियों, व्यवस्थाओं और मान्यताओं के बदलाव को सामाजिक परिवर्तन कहते हैं।

(2) फिक्टर के अनुसार—"परिवर्तन पहले की अवस्था से आये हुए अन्तर को कहते हैं।"

(3) गिलिन एवं गिलिन के अनुसार—"सामाजिक परिवर्तन का अर्थ जीवन की स्वीकृत विधियों में होने वाले परिवर्तनों से है। चाहे ये परिवर्तन भौगोलिक दशाओं के कारण हों, सांस्कृतिक उपकरणों, जनसंख्याओं के रूप, अथवा विचारों के कारण हों, अथवा समूह में आविष्कार या संस्कृति के प्रकार से उत्पन्न हों।"

सामाजिक परिवर्तन के रूप

दो अमेरिकी समाजवादी मैकाईवर और पेज ने अपनी पुस्तक 'सोसाइटी' में सामाजिक परिवर्तन के तीन रूप बताए हैं—

(1) रेखीय परिवर्तन—इसमें परिवर्तन सदैव एक ही दिशा में और आगे ही होता है। इस प्रकार का परिवर्तन तकनीकी और वैज्ञानिक क्षेत्र में होता है। जैसे—अनेक वस्तुओं के आविष्कार। ऐसे परिवर्तन अचानक नहीं, धीरे-धीरे आगे की ओर होते रहते हैं।

(2) अनिश्चित परिवर्तन—इसमें परिवर्तन आगे की ही ओर होता है परन्तु एक लम्बे समय के बाद परिवर्तन में कुछ रुकावट आती है या उसका ह्रास होता है जैसे नगरों का उदय एवं पतन। व्यापार की वृद्धि होती है फिर भी मूल्यों में गिरावट आती है। इस प्रकार के परिवर्तन की दिशा निश्चित नहीं होती है।

(3) चक्रीय परिवर्तन—इसमें परिवर्तन कभी आगे की ओर होता है और कभी विपरीत दिशा की ओर होता है। इसमें उतराव-चढ़ाव की स्थिति क्रम से आती रहती है। इसे लहर के समान टेढ़ी-मेढ़ी रेखा द्वारा आसानी से समझा जा सकता है।

जैसे फैशन की लहर आती है तथा कुछ समय बाद समाप्त हो जाती है। इसके बाद फिर उसी फैशन की लहर आती है।

सामान्यतः सामाजिक परिवर्तन के दो रूप देखने को मिलते हैं :

1. रेखीय परिवर्तन।
2. चक्रीय परिवर्तन।

1. रेखीय परिवर्तन सदैव एक ही दिशा में आगे की ओर होता है।

2. चक्रीय परिवर्तन कुछ विशेष तत्वों के बीच ही होता है, घूम-फिर कर वही स्थिति पुनः आ जाती है जो प्रारम्भ में परिवर्तन के कारण समाप्त हो चुकी थी।

(4) आन्दोलन व क्रांतिकारी परिवर्तन—किसी भी समाज में प्रचलित मान्यताओं व व्यवस्थाओं से असन्तुष्ट होने पर उन्हें नई दिशा देने के लिए सामूहिक प्रयास आन्दोलन का रूप ले लेते हैं।

उदाहरण के लिए—महिलाओं, पिछड़े वर्गों और युवकों को नए अधिकार और समाज में अधिक सुविधाएँ दिलाने के लिए किए गये प्रयत्न।

सामाजिक परिवर्तन के कारक—

सामाजिक परिवर्तन एक जटिल प्रक्रिया है जिसमें कई कारकों का योगदान होता है। इन कारणों में निम्नलिखित प्रमुख हैं :—

(1) **जनसंख्यात्मक कारक**—जनसंख्या के घटने या बढ़ने से सामाजिक परिवर्तन होता है। जन्म दर एवं मृत्यु दर का समाज पर प्रभाव पड़ता है। सभी पुरुषों के समान अनुपात में न होने पर सामाजिक मूल्यों में अन्तर आता है। जब समाज में युवकों की संख्या बढ़ जाती है तो समाज का सक्रिय भाग बढ़ता है।

(2) **औद्योगिक कारक**—जब बाढ़, तूफान या भूकम्प आते हैं तो सामाजिक जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है जिससे सामाजिक परिवर्तन होता है।

(3) **प्रौद्योगिकीय कारक**—नई-नई मशीनों के आविष्कार, नए-नए यातायात, कृषि, मनोरंजन आदि के साधन आज सामाजिक परिवर्तन कर रहे हैं।

(4) **सांस्कृतिक कारक**—हमारा समाज धर्म प्रधान एवं पुरानी रूढ़ियों पर आधारित है। अतः धर्म और रूढ़ियों में परिवर्तन आने से समाज में परिवर्तन आता है। संस्कृति के दो पहलू होते हैं—भौतिक एवं आध्यात्मिक। भौतिक परिवर्तन एक निश्चित अवधि के बाद अपने आप होने लगता है। जब संस्कृति अधिक भौतिकवादी हो जाती है तो पुनः मानवीय मूल्यों अथवा आध्यात्मवाद की ओर लौटना आरम्भ हो जाता है। इस प्रकार आध्यात्मिकी चरम सीमा पर पहुँच कर पुनः भौतिकवाद की ओर बढ़ जाती है।

प्रश्न 2. पारिवारिक विघटन का क्या अर्थ है? पारिवारिक विघटन के कारण बताइये। (उ० प्र० 1984, 87, 88, 91)

उत्तर—पारिवारिक विघटन—वह प्रक्रिया जिसमें परिवार के सदस्यों के आपसी सम्बन्ध बिगड़ने लगते हैं और तनाव की स्थिति रहने लगती है, उसे पारिवारिक विघटन कहते हैं।

पारिवारिक विघटन के कारण

(1) **पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति का प्रभाव**—बदलती हुई मान्यताओं के कारण अधिकांश भारतीय पश्चिमी सभ्यता एवं संस्कृति को महत्वपूर्ण मानने लगे हैं। पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव से लोगों ने अपना पैतृक कारोबार छोड़कर नौकरी की खोज में शहर में बस गये हैं।

(2) **व्यक्तिवाद**—आधुनिक युग में बढ़ते हुए स्वार्थ के कारण व्यक्ति सामूहिक हितों को छोड़कर अपने परिवार और बच्चों के हितों में ही केन्द्रित हो गया है, जिससे परिवार विघटित हो रहे हैं।

(3) **परिवार के कार्यों का विघटन**—वे कार्य जो परिवार द्वारा किये जाते थे, आज समाज तथा समितियों द्वारा किये जा रहे हैं। इससे संयुक्त परिवार का महत्त्व घट गया है।

(4) **नारी जाग्रति**—स्त्री शिक्षा के प्रसार और उनको लोकतन्त्रात्मक अधिकार के मिल जाने के कारण उनमें जाग्रति आई है। आज वे भी देश के विकास में योगदान देने के लिए अपने घरों से निकल कर मनुष्य के साथ सभी क्षेत्रों में

कार्य कर रही हैं। जो पुरुष स्त्रियों की स्वतन्त्रता को मान्यता नहीं देते हैं वहाँ मन-मुटाव उत्पन्न हो जाता है और पारिवारिक विघटन होता है।

(5) **कानूनी कारण**—पारिवारिक विघटन में हमारे कानूनों का महत्वपूर्ण योगदान है। हिन्दू स्त्रियों को सम्पत्ति का अधिकार अधिनियम 1937, विशेष विवाह अधिनियम 1954, हिन्दू विवाह एवं विवाह विच्छेद अधिनियम 1955, आदि कानूनों से महिलाओं के आर्थिक एवं सामाजिक जीवन में वृद्धि हुई है।

बहु विकल्पीय प्रश्न

सही विकल्प का चयन कीजिए—

प्रश्न 1. परिवार विघटन का मुख्य कारण है— (1986)

(क) समाजवादी आदर्श, (ख) व्यक्तिवादी दृष्टिकोण,
(ग) नैतिकता का पतन, (घ) उपरोक्त में से कोई नहीं।

उत्तर—(ख) व्यक्तिवादी दृष्टिकोण।

प्रश्न 2. टैलीफोन का आविष्कार किस प्रकार का सामाजिक परिवर्तन है— (1989)

(क) रेखीय, (ख) अनिश्चित,
(ग) चक्रीय, (घ) आन्दोलनकारी।

उत्तर—(क) रेखीय।

प्रश्न 3. 'सोसाइटी' पुस्तक के लेखक हैं—

(क) काल मार्क्स, (ख) सारोकिन, (ग) मैकाइवर, (घ) पेज।

उत्तर—(ग) मैकाइवर।

प्रश्न 4. भारत में दहेज विरोधी अधिनियम पारित हुआ—

(क) 1947, (ख) 1956, (ग) 1961, (घ) 1965।

उत्तर—(ग) 1961।

प्रश्न 5. फैशन में परिवर्तन किस प्रकार का सामाजिक परिवर्तन है—

(क) रेखीय, (ख) चक्रीय, (ग) अनिश्चित, (घ) आन्दोलनकारी।

उत्तर—(ख) चक्रीय।

16 अनुसूचित जाति एवं जन-जाति तथा अन्य कमजोर वर्ग

अति लघु उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1. उत्तर प्रदेश में निवास करने वाली चार अनुसूचित जातियों के नाम लिखिए। (1985, 90)

उत्तर—(1) चमार, (2) घुसिया, (3) जाटव, (4) धोबी।

प्रश्न 2. उत्तर प्रदेश में निवास करने वाली अनुसूचित जन-जातियों में से किन्हीं चार के नाम लिखिए। (1985, 86, 89)

उत्तर—(1) थारू, (2) भोक्सा, (3) भोटिया, (4) राजी।

प्रश्न 3. भारत में अनुसूचित जन-जातियाँ प्रमुख रूप से कहाँ निवास करती हैं? (1986)

उत्तर—भारत की जन-जातियाँ जंगली व पहाड़ी स्थानों पर रहती हैं। मध्य प्रदेश तथा उड़ीसा में अधिकांश जन-जातियाँ निवास करती हैं।

प्रश्न 4. अस्पृश्यता अपराध अधिनियम कब पारित किया गया?

उत्तर—अस्पृश्यता अधिनियम 1955 ई० में पारित किया गया।

प्रश्न 5. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(i) अनुसूचित जातियों के लिए लोकसभा में······तथा विधान सभाओं में······स्थान आरक्षित हैं।

(ii) अनुसूचित जन-जातियों के लिए लोकसभा में·······तथा विधान सभाओं में·······स्थान आरक्षित हैं।

उत्तर—(i) लोकसभा में 79, विधान सभाओं में 557।

(ii) लोकसभा में 40, विधान सभाओं में 303।

परीक्षोपयोगी एवं बोर्ड परीक्षा में पूछे गये अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न 1. अपने प्रदेश की किसी एक जन-जाति का नाम लिखो। (1986, 87)

उत्तर—भोटिया।

प्रश्न 2. समाज कल्याण के क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर पर कार्य करने वाली दो संस्थाओं के नाम लिखो। (1989)

उत्तर—(1) रामकृष्ण मिशन, (2) अखिल भारतीय हरिजन सेवक संघ।

प्रश्न 3. अस्पृश्यता दूर करने के दो उपाय बताइए। (1985, 87)

उत्तर—(1) अस्पृश्यता अपराध अधिनियम 1955 के द्वारा,

(2) राज्य द्वारा विभिन्न उपायों द्वारा जनता में समानता का सन्देश फैलाना।

प्रश्न 4. अस्पृश्यता अपराध अधिनियम कब पारित हुआ था ?

उत्तर—सन् 1955 में।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. अनुसूचित जातियों की किन्हीं दो समस्याओं का विवेचन कीजिए।

उत्तर—अनुसूचित जातियों की बहुत-सी समस्यायें हैं। इन समस्याओं के कारण वह अपना विकास नहीं कर सके हैं। सरकार ने उनके विकास के लिए बहुत सुविधायें प्रदान की हैं। साधारण रूप से उनकी समस्यायें सामाजिक तथा आर्थिक हैं। उनकी दो प्रमुख समस्यायें हैं—(1) अशिक्षा की समस्या, (2) निर्धनता की समस्या।

प्रश्न 2. समाज के कमजोर वर्गों के लिए किन्हीं दो कल्याणकारी विधियों पर प्रकाश डालिए। (1986)

उत्तर—समाज के कमजोर वर्ग के लिए कुछ कल्याणकारी योजनाएँ इस प्रकार हैं—

(1) **जनता का जनतान्त्रिक ढंग से भाग लेना**—भारत सरकार ने उन व्यक्तियों को भी सार्वजनिक क्रियाकलापों में भाग लेने का अवसर दिया है जो समाज में अपेक्षाकृत कमजोर वर्ग के हैं। परन्तु उनको क्रियाकलापों में जनतान्त्रिक ढंग से भाग लेना चाहिए।

(2) **स्थानीय परिस्थितियों पर विशेष बल**—प्रत्येक स्थान की स्थानीय परिस्थितियाँ भिन्न-भिन्न होती हैं। इसी कारण कमजोर वर्गों की सहायता के लिए स्थानीय परिस्थितियों पर विशेष बल दिया जाना चाहिए।

प्रश्न 3. सामुदायिक योजना से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर—सामुदायिक योजना का अर्थ गाँवों के बहुमुखी विकास से है। प्रथम पंचवर्षीय योजना के अनुसार,

"सामुदायिक विकास का आशय ग्रामीण जनता के सर्वांगीण अथवा सर्वतोन्मुखी विकास से है।"

भारत सरकार की पत्रिका 'भारत' (India) के अनुसार—

"सामुदायिक विकास आत्म सहायता का कार्यक्रम है अर्थात् ग्रामीण जनता स्वयं ही योजना बनाये और उन्हें कार्यान्वित करे और सरकार की ओर से उन्हें केवल तकनीकी मार्ग-दर्शन तथा वित्तीय सहायता मिले।"

प्रश्न 4. सामुदायिक विकास केन्द्रों के मुख्य उद्देश्यों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—सामुदायिक विकास केन्द्रों के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार हैं—

1. ग्रामीण साधनों के विकास द्वारा ग्रामवासियों में आत्म-निर्भरता की भावना उत्पन्न करना।
2. ग्रामीण जनता के रूढ़िवादी व अन्ध-विश्वास पूर्ण दृष्टिकोण में परिवर्तन करना।
3. वैज्ञानिक तरीके लागू करके उत्पादन में वृद्धि करना।
4. गाँवों के मार्गों, तालाबों, स्कूलों आदि का निर्माण करना।
5. खाना, कपड़ा, मकान आदि के मामले में गाँवों को आत्म-निर्भर बनाना।
6. गाँवों में शिक्षा का प्रसार।

प्रश्न 5. ऐच्छिक संगठनों का संक्षिप्त विवरण दीजिए। (1986)

उत्तर—समाज-कल्याण कार्य करने के लिए जिन संगठनों की स्थापना व्यक्ति स्वेच्छा से करता है उन संगठनों को ऐच्छिक संगठन कहते हैं।

ऐच्छिक संगठन इस प्रकार हैं—(1) भारतीय हरिजन सेवक संघ, (2) महिला सुधार केन्द्र, (3) श्रीरामकृष्ण मिशन, (4) महिला मण्डल, (5) रेड क्रास सोसाइटी आदि।

परीक्षोपयोगी एवं बोर्ड परीक्षा में पूछे गये अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न 1. अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित जन-जातियों में क्या अन्तर है? (1989)

उत्तर—अनुसूचित जातियाँ—भारतीय समाज में चतुर्थ वर्ण (शूद्र) की जातियाँ जो अपने कर्म के अनुसार प्राचीन काल से ही अस्पृश्य मानी जाती हैं तथा उनकी भाषा एवं सभ्यता सामान्य वर्ग के लोगों से मिलती-जुलती है, अनुसूचित जाति कहलाती है।

अनुसूचित जन-जातियाँ—ये भारत की आदि निवासी जातियाँ है जो अपनी-अपनी जाति एवं कबीलों के अनुसार विभिन्न प्रकार की बोलियाँ एवं सभ्यता पर चल रही हैं। सामान्य वर्ग के लोगों से इनकी सामाजिक परम्पराएँ, रीति-रिवाज, एवं बोलियाँ प्रथक-प्रथक हैं।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1. अस्पृश्यता का अर्थ स्पष्ट कीजिए। इसके निवारण के लिए उठाए गए कदमों की समीक्षा कीजिए।

उत्तर—अस्पृश्यता—

वैदिक काल से वर्तमान युग तक समाज में अछूतों की स्थिति अत्यन्त निम्न रही है। समय-समय पर इन अछूतों पर अनेक निषेध लगाये गये हैं। इन अछूतों को इन निषेधों के विरुद्ध कुछ भी कहने का अधिकार नहीं होता है। हिन्दू सामाजिक व्यवस्था में अछूतों के लिए अनेक निर्योग्यताएँ बनायी गयी हैं। इन निर्योग्यताओं के परिणामस्वरूप उनकी सामाजिक स्थिति अत्यधिक निम्न हो गयी है। निर्योग्यताओं से आशय उन कार्यों से है जिन्हें अस्पृश्य जातियों को करने का निषेध है।

अस्पृश्यता के निवारण के लिए सरकार ने निम्नलिखित कदम उठाए हैं—

"अस्पृश्यता (अपराध) अधिनियम, 1955 ई० में वर्णित परिभाषा के अनुसार अस्पृश्यता के आधार पर किसी व्यक्ति को—

(अ) समान धर्म के मानने वाले अन्य व्यक्तियों के लिए खुले सार्वजनिक पूजा के स्थान में प्रवेश से।

(ब) किसी पवित्र जलाशय, कूप से पानी भरने या जल स्रोत को उसी रूप में जैसा समान धर्म के अनुयायियों को प्रयोग की अनुमति है, प्रयोग करने से।

(स) दुकान, होटल, सार्वजनिक जलपान गृह या सार्वजनिक स्थल या सार्वजनिक आवागमन के साधन, अस्पताल, औषधालय, शैक्षणिक संस्था या दातव्य ट्रस्ट में पहुँचने से रोकना अस्पृश्यता है।" यह अधिनियम सम्पूर्ण भारत में 1 जून 1955 ई० को लागू कर दिया।

अस्पृश्यता (अपराध) अधिनियम, 1955 ई० की मुख्य बातें इस प्रकार हैं—

(i) प्रत्येक व्यक्ति को सार्वजनिक स्थान, नदी, तालाब आदि के उपयोग करने का अधिकार होगा।

(ii) यदि कोई व्यक्ति अस्पृश्यता के आधार पर उपर्युक्त स्थानों के प्रयोग को रोकेगा तो उसे 6 माह का कारावास या 500 रु० जुर्माना या दोनों की सजा दी जा सकती है।

(iii) प्रत्येक व्यक्ति को किसी भी दुकान, जलपानगृह, स्नानगृह, धर्मशाला आदि के प्रयोग का अधिकार होगा।

(iv) अस्पृश्यता के आधार पर किसी भी व्यक्ति को शिक्षण संस्थाओं, छात्रावासों या सार्वजनिक प्रतिष्ठानों के प्रवेश से वंचित नहीं किया जा सकता।

(v) अस्पृश्यता के आधार पर किसी व्यक्ति को कोई वस्तु बेचने से नहीं मना किया जा सकता है।

(vi) जो व्यक्ति अस्पृश्यों को मिले अधिकारों को रोकेगा, उसे दण्डित किया जायगा।

प्रश्न 2. अनुसूचित जातियों की समस्याओं का विवरण देते हुए उनके समाधान हेतु सरकार के द्वारा किए गए प्रयासों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—अनुसूचित जातियों की समस्याएँ—

अनुसूचित जातियों की कुछ समस्याएँ इस प्रकार हैं—

(1) उनको मन्दिरों, मठों तथा श्मशान घाटों में प्रवेश करने तथा उनसे सहयोग करने का अधिकार नहीं है। ऐसा समझा जाता है कि उनके प्रवेश से ये स्थान अपवित्र हो जायेंगे। इस प्रकार हरिजन मन्दिरों में पूजा नहीं कर सकते हैं और न देवी-देवताओं के दर्शन कर सकते हैं।

(2) तमिलनाडु में एक अस्पृश्य जाति के सदस्य सड़क पर दिन में नहीं चल सकते। वे रात्रि को ही बाहर निकल सकते हैं।

(3) भारत के ग्रामों में हरिजन सार्वजनिक कुओं का प्रयोग नहीं कर सकते। भारत के कुछ स्थानों पर तो हरिजन कुओं के पास तक नहीं जा सकते।

(4) अभी कुछ समय पूर्व तक हरिजन बालकों को विद्यालयों में प्रवेश करने का अधिकार नहीं था। वे सवर्ण जाति के छात्रों के साथ बैठकर नहीं पढ़ सकते थे। उनके लिए शिक्षा आवश्यक नहीं समझी जाती थी।

(5) प्राचीन समय में हरिजन वर-वधू पालकी में नहीं बैठ सकते थे। वे अच्छे वस्त्र और आभूषण नहीं पहन सकते थे। धोबी उनके कपड़े नहीं धोते और दूकानदार उनको खाना नहीं देते थे।

(6) हरिजनों को परम्परागत व्यवसाय अपनाने पड़ते हैं। इसी कारण वे निर्धन हैं। उनके आजीविका के साधन सीमित हैं।

अनुसूचित जातियों की समस्याओं के निवारण हेतु सरकारी कदम

(1) लोक सभा तथा विधान सभाओं में स्थान आरक्षित करना।
(2) सरकारी सेवाओं में आरक्षण।
(3) शैक्षिक कार्यक्रमों का प्रारम्भ।

(4) आर्थिक सहायता कार्यक्रमों का प्रारम्भ।
(5) स्वास्थ्य, आवास तथा रहन-सहन की योजना।
(6) अस्पृश्यता निवारण अधिनियम 1955 का निर्माण।
(7) नागरिक सुरक्षा अधिनियम 1961 का निर्माण।

प्रश्न 3. सामुदायिक विकास का अर्थ स्पष्ट करते हुए इसके उद्देश्य, महत्व तथा कार्य प्रणाली का विवरण दीजिए।

उत्तर—

सामुदायिक विकास

अर्थ—गाँवों के सर्वांगीर्ण विकास के उद्देश्य से देश में 1952 ई० से सामुदायिक विकास योजना आरम्भ की गयी। साधारण शब्दों में "सामुदायिक विकास का अर्थ ग्रामीण जनता के सर्वांगीर्ण विकास से है।" सामुदायिक विकास में कृषि, पशुपालन, सिंचाई, सहकारिता, स्वास्थ्य, शिक्षा, ग्राम पंचायत तथा ग्रामीण जीवन के सभी पक्ष सम्मिलित होते हैं।

सामुदायिक विकास के उद्देश्य—

सामुदायिक विकास के उद्देश्य इस प्रकार हैं—

(1) जनता के दृष्टिकोण में परिवर्तन करना—सामुदायिक विकास का उद्देश्य ग्रामीण जनता के दृष्टिकोण को विस्तृत करना तथा उसे रूढ़िवादिता एवं अन्धविश्वास से छुटकारा दिलाना है ताकि वह समाज एवं राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्यों का पालन कर उन्नति कर सके है।

(2) सहकारिता के प्रति रुचि उत्पन्न करना—सामुदायिक विकास में सहकारी विधियों का प्रयोग करके जनता में सहकारिता के प्रति रुचि उत्पन्न करना है।

(3) उत्पादन में वृद्धि करना—सामुदायिक विकास का तीसरा उद्देश्य कृषि, बागवानी, पशु पालन तथा मछली पालन में वैज्ञानिक प्रणालियों तथा नवीन तकनीकों का प्रयोग करके उत्पादन में वृद्धि करना।

(4) रोजगार की मात्रा में वृद्धि करना—सामुदायिक विकास का चौथा उद्देश्य कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग-धन्धों का विकास कर रोजगार के अवसर में वृद्धि करना है।

(5) गाँवों को आत्मनिर्भर बनाना—सामुदायिक विकास का पाँचवाँ उद्देश्य खाना, कपड़ा तथा मकान के सम्बन्ध में गाँवों को आत्मनिर्भर बनाना है।

(6) शिक्षा का प्रसार—सामुदायिक विकास का छठवाँ उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का प्रसार करना है।

(7) स्वास्थ्य सम्बन्धी सुविधायें प्रदान करना—सामुदायिक विकास का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में सफाई का प्रबन्ध करना, शुद्ध पेयजल की व्यवस्था करना, बीमारियों पर नियन्त्रण पाना तथा इन कार्यों को सम्पन्न करने के लिए स्वास्थ्य केन्द्रों की स्थापना करना है।

(8) यातायात के साधनों का विकास—सामुदायिक विकास का उद्देश्य गाँवों क्षेत्रों में पक्की तथा कच्ची सड़कों का निर्माण करना, पशु परिवहन का विकास करना तथा मोटर परिवहन की व्यवस्था करना भी है।

(9) आय में वृद्धि करना—सामुदायिक विकास का एक प्रमुख उद्देश्य ग्रामीण जनता की आय में वृद्धि करना है ताकि उसका जीवन-स्तर ऊँचा हो सके।

(10) ग्राम विकास करना—सामुदायिक विकास का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य गाँवों में सार्वजनिक सेवाओं का प्रसार करके विकास करना है।

सामुदायिक विकास की उपयोगिता—सामुदायिक विकास की उपयोगिता निम्न प्रकार है—

(1) कृषि विकास—इन योजनाओं के कारण कृषि का पर्याप्त विकास हुआ है। उन्नत बीज, रासायनिक खाद, सिंचाई सुविधाएँ, कृषि-यन्त्रों तथा उपकरणों के प्रयोग से कृषि उत्पादन में पर्याप्त वृद्धि तथा बागवानी का भी पर्याप्त विकास हुआ है।

(2) ग्रामीण तथा कुटीर उद्योगों का विकास—ग्रामीण तथा कुटीर उद्योगों को अनुदान तथा वित्तीय सहायता देकर विकास किया गया है। इस समय देश में 5000 या अधिक जनसंख्या वाले गाँवों में 25 हजार से भी अधिक इकाइयाँ कार्य कर रही हैं।

(3) यातायात के साधनों का विकास—ग्रामीण क्षेत्र में कच्ची तथा पक्की सड़कों का विकास किया गया है। पशु परिवहन तथा मोटर परिवहन का भी विकास हुआ है।

(4) स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार—गाँवों में स्वास्थ्य तथा परिवार नियोजन सम्बन्धी सुविधायें उपलब्ध कराने के लिए प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र तथा 43,232 उपकेन्द्र कार्यरत थे।

(5) सामाजिक शिक्षा का प्रसार—गाँवों में सामाजिक शिक्षा का प्रसार करने के लिए 31 मार्च, 1979 ई० तक 18 हजार से भी अधिक साक्षरता केन्द्र स्थापित किये जा चुके थे। इनमें पढ़ने वालों की संख्या लगभग 3·5 लाख थी।

(6) पौष्टिक पदार्थ कार्यक्रम—ग्रामीण जनता का फल, सब्जियाँ, मछली तथा अण्डे जैसे पौष्टिक पदार्थों का उत्पादन व उपभोग करने के उद्देश्य से एक कार्यक्रम चलाया गया है। इससे गाँव वालों को लाभ पहुँचा है।

कार्य प्रणाली

सामुदायिक विकास योजनाओं को लागू करने के लिए पूरे देश को 5028 विकास खण्डों में बाँटा गया है तथा प्रत्येक विकास खण्ड का एक सर्वोच्च अधिकारी होता है जिसे खण्ड विकास अधिकारी (B.D.O) कहते हैं। खण्ड विकास अधिकारी के अधीन विभिन्न विभागों के सहायक विकास अधिकारी (A.D O.) तथा न्याय पंचायत के हिसाब से ग्राम विकास अधिकारी (V.D.O.) होते हैं।

इस प्रकार सरकार विकास खण्डों के माध्यम से लोगों के विकास में प्रयत्नशील है।

बहु विकल्पीय प्रश्न

सही विकल्प चुनिए—

प्रश्न 1. खण्ड के सर्वोच्च अधिकारी को कहा जाता है—

(अ) खण्ड विकास अधिकारी, (ब) प्रबन्धक,

(स) ग्राम अधिकारी, (द) योजना अधिकारी।

उत्तर—(अ) खण्ड विकास अधिकारी।

प्रश्न 2. सरकारी सेवाओं में अनुसूचित जातियों के लिए स्थान आरक्षित है—

(अ) 20%, (ब) 18%,
(स) 10%, (द) 15%।

उत्तर—(द) 15%।

प्रश्न 3. उत्तर प्रदेश में निवास करने वाली अनुसूचित जनजाति है— (1988)

(क) भोटिया, (ख) जाटव,
(ग) धोबी, (घ) बाल्मीक।

प्रश्न 4. हमारी सामाजिक समस्या कौन-सी है— (1986)

(क) दहेज प्रथा, (ख) निर्धनता,
(ग) बेरोजगारी, (घ) साम्प्रदायिकता।

उत्तर—(क) दहेज प्रथा।

प्रश्न 5. पूर्ण मद्य निषेध किस राज्य में है— (1985)

(क) दिल्ली, (ख) गुजरात,
(ग) केरल, (घ) पंजाब।

प्रश्न 6. कमजोर वर्ग के कल्याण का सर्वोत्तम साधन है— (1988)

(क) मद्य निषेध, (ख) अस्पृश्यता निवारण,
(ग) सामाजिक कानून, (घ) सामुदायिक विकास।

उत्तर—(घ) सामुदायिक विकास।

17 | सामाजिक समस्यायें और समाज कल्याण

अति लघु उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1. हमारे समाज में कौन-कौन सी प्रमुख कुरीतियाँ व्याप्त हैं ? (1991)

उत्तर—हमारे समाज में निम्नलिखित प्रमुख कुरीतियाँ व्याप्त हैं—

(1) अन्धविश्वास, (2) पर्दा-प्रथा, (3) बाल विवाह (4) दहेज, प्रथा, (5) भिक्षावृत्ति।

प्रश्न 2. बाल विवाह निरोधक अधिनियम में विवाह के लिए वर व कन्या की क्या आयु निर्धारित की गई है ? (1989) (Imp.)

उत्तर—भारत में विवाह के लिए वर की आयु 21 वर्ष और कन्या की आयु 18 वर्ष निश्चित की गयी हैं।

प्रश्न 3. भिक्षावृत्ति को रद्द करने के लिए बनाए गए अधिनियमों के नाम लिखिए।

उत्तर—(1) बंगाल आवारागर्दी निरोधक अधिनियम 1943 ई०।
(2) मद्रास भिक्षावृत्ति निरोधक अधिनियम 1944 ई०।
(3) भोपाल भिक्षावृत्ति निरोधक अधिनियम 1947 ई०।
(4) बिहार भिक्षावृत्ति अधिनियम 1959 ई०।
(5) दिल्ली भिक्षावृत्ति अधिनियम 1960 ई०।

प्रश्न 4. दहेज विरोधी अधिनियम कब पारित हुआ ? (Imp.)

उत्तर—दहेज विरोधी अधिनियम 1961 ई० में पारित हुआ।

प्रश्न 5. किन्हीं दो प्रमुख समाज सुधारकों के नाम लिखिए। (1988)

उत्तर—1. राजा राम मोहन राय,
2. स्वामी दयानन्द सरस्वती।

परीक्षोपयोगी एवं बोर्ड परीक्षा में पूछे गये अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1—भारतीय नारी के जीवन को प्रभावित करने वाली दो प्रमुख सामाजिक कुप्रथाओं के नाम लिखो। (1990)

उत्तर—(1) बाल-विवाह (2) दहेज प्रथा।

प्रश्न 2. बाल-विवाह के चार कारण लिखो। (1984, 87)

उत्तर—(1) कौमार्य भंग होने का भय, (2) दहेज प्रथा से छुटकारा, (3) प्राचीन काल में मुसलमानों के आक्रमण के भय से, (4) हिन्दू शास्त्रों के अनुसार पुण्य प्राप्त करने के लिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1. सामाजिक कुरीतियों से सम्बन्धित समस्याओं के समाधान का कोई एक उपाय बताइए।

उत्तर—सामाजिक कुरीतियों से सम्बन्धित समस्याओं के समाधान का कारगर उपाय इन कुरीतियों के खिलाफ जनमत तैयार किया जाए।

प्रश्न 2. केन्द्रीय समाज कल्याण परिषद की स्थापना किस उद्देश्य से की गई है ? (1986)

उत्तर—समाज कल्याण में ऐच्छिक संगठनों को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से केन्द्रीय समाज कल्याण परिषद की स्थापना की गई है।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. सामाजिक समस्याओं के निराकरण के लिए क्या-क्या उपाय किये गये हैं ?

उत्तर—सामाजिक समस्याओं के निराकरण के लिए अग्रलिखित कदम उठाए गए हैं—

(1) अस्पृश्यता (अपराध) अधिनियम 1955 ई०

(पिछले अध्याय में इसका वर्णन किया जा चुका है।)

(2) बाल विवाह निरोधक अधिनियम 1929 ई०

1929 ई० में बाल-विवाह निरोधक अधिनियम पास किया गया। इसको शारदा एक्ट 1929 ई० के नाम से भी जाना जाता है। रायबहादुर श्री हरविलास शारदा के प्रयत्नों से ही अधिनियम पास हुआ था। इस एक्ट की कुछ प्रमुख बातें इस प्रकार हैं—

(i) विवाह के समय वर-वधू की आयु क्रमश: 18 व 15 वर्ष होनी चाहिए। इस आयु से कम में होने वाले विवाहों को इस एक्ट के अन्तर्गत दण्ड दिया जायगा।

(ii) यदि कोई व्यक्ति जिसकी आयु 18 वर्ष से ऊपर तथा 21 वर्ष से कम है, 15 वर्ष से कम की लड़की से विवाह करता है तो उसे 15 दिन का कठोर कारावास या 1000 रु० का दण्ड दिया जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में दोनों दण्ड भी दिये जा सकते हैं।

(iii) जो व्यक्ति इस प्रकार के विवाह में सहयोग देगा अथवा जिस व्यक्ति पर विवाह का उत्तरदायित्व होगा उसे 3 मास की साधारण सजा या 500 रु० तक का जुर्माना देना होगा।

(iv) इस अधिनियम की प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें स्त्री को दण्ड नहीं दिया जायेगा।

(v) प्रथम श्रेणी का न्यायाधीश ही इस प्रकार के अपराधों की जाँच कर सकता है।

(vi) न्यायालय इस प्रकार के विवाहों को रोकने की निषेधाज्ञा जारी कर सकता है। आज्ञा न मानने पर साधारण अथवा कठोर कारावास तथा 1 हजार रु० तक का जुर्माना किया जा सकता है।

(vii) बाल विवाह हो जाने पर उसे रद्द नहीं किया जा सकता।

(viii) यदि विवाह हुए एक वर्ष हो चुका है तो उस विवाह के विरुद्ध कोई भी कार्यवाही नहीं हो सकेगी।

(3) हिन्दू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम, 1856 ई०

भारत में विधवा विवाह सम्बन्धी विचार सर्वप्रथम ईश्वर चन्द विद्यासागर ने प्रस्तुत किया। उन्होंने 1885 ई० में पाराशर स्मृति तथा अन्य शास्त्रीय प्रमाणों के आधार पर समाज का ध्यान इस ओर आकर्षित किया। इसके फलस्वरूप विधवा विवाह अधिनियम, 1856 ई० में पास हुआ। इस अधिनियम ने विधवा पुनर्विवाह को वैधता प्रदान कर दी है। इस अधिनियम की मुख्य धारायें इस प्रकार हैं—

(i) इस अधिनियम के अनुसार विधवा पुनर्विवाह तथा उससे उत्पन्न पुत्र तथा पुत्रियों को वैध समझा जायेगा।

(ii) इस अधिनियम के अनुसार किसी स्त्री का विवाह तभी वैध माना जायगा जब कि विवाह के समय उसके पति की मृत्यु हो चुकी हो।

(iii) दूसरा विवाह करने के पश्चात् ऐसी स्त्री को अपने मृत पति की सम्पत्ति पर कोई अधिकार नहीं होगा।

(iv) यदि पुनर्विवाह करने वाली विधवा अल्पवयस्क है तथा उसने अपने पति से सहवास नहीं किया है तो उसे अपने विवाह के लिए पिता या संरक्षक से अनुमति प्राप्त करनी होगी। अनुमति से किया गया विवाह ही वैध माना जायगा।

(v) यदि विधवा वयस्क है और वह अपने पति से सहवास कर चुकी है तो पुनर्विवाह के लिए उसकी स्वीकृति ही पर्याप्त है। ऐसा विवाह वैध माना जाएगा।

(vi) यदि पति के वसीयतनामे या परिवार के सदस्यों के समझौते के अनुसार, विधवा को अपने पति की सम्पत्ति पर कोई अधिकार मिल गया है तो ऐसी विधवा पुनर्विवाह के पश्चात् भी सम्पत्ति की अधिकारिणी बनी रहेगी।

(vii) विधवा पुनर्विवाह में सभी सामाजिक विधियों का प्रयोग किया जायगा। इसका आशय यह है कि विधवा का विवाह उसी प्रकार सम्पन्न होगा जिस प्रकार एक कुमारी कन्या का विवाह होता है।

(viii) यदि विधवा को अपने मृत पति के अतिरिक्त कहीं अन्यत्र से आर्थिक सहायता प्राप्त होती रही है तो पुनर्विवाह के पश्चात् भी उसे वह सहायता मिलती रहेगी। इस प्रकार पुनर्विवाह उसकी आय के स्रोत में बाधक नहीं होगा।

प्रश्न 2. अन्धविश्वास से क्या तात्पर्य है ? समाज में अन्धविश्वास प्रचलित करने के क्या कारण हैं ?

उत्तर—अन्धविश्वास—

भारत में अज्ञानता और निरक्षरता का बोलवाला है। इसी अज्ञानता के कारण अन्धविश्वास पनपता रहता है। भारत के लोग भाग्यवादी हैं। यदि कोई घटना हो जाती है तो वे उसके लिए अपने भाग्य को कोसते हैं। अन्धविश्वास के कारण यहाँ के निवासियों में काम करने की प्रवृत्ति कम होती जा रही है। अन्धविश्वास के कारण यहाँ बीमार पड़ने पर लोग वैद्य या डाक्टर के पास नहीं जाते। वे झाड़-फूंक पर विश्वास करते हैं। इसी प्रकार यहाँ के निवासी विवाह मृत्यु तथा अन्य विशेष अवसरों पर अनाप-शनाप व्यय करते हैं। इस प्रकार वे अनजाने में ही ऋण के बोझ से दबे रहते हैं। उनकी प्रगति रुक जाती है। अन्ध विश्वासों में जकड़ा समाज निर्धनता का जीवन व्यतीत करता है। अन्धविश्वासों के कारण ही अस्पृश्य कहे जाने वाले लोग नारकीय जीवन व्यतीत करते रहते हैं।

प्रश्न 3. दहेज जैसे असाध्य रोगों से मुक्ति दिलाने के उपाय बताइए। (1985)

उत्तर—दहेज प्रथा निम्नलिखित प्रकार से दूर की जा सकती है—

(1) दहेज विरोधी जनमत तैयार किया जाए।

(2) दहेज विरोधी चलचित्र तैयार किये जाएँ जो मनोरंजन कर से मुक्त हों।

(3) नाटकों का मंचन किया जाए जो दहेज की समस्याओं से सम्बन्धित हों।

(4) छात्रों में यह भावना भरी जाए कि दहेज लेना एक सामाजिक बुराई है।

(5) कड़ा कानून बनाया जाए।

प्रश्न 4. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये—

राज्यस्तरीय संगठन, केन्द्रीय समाज कल्याण परिषद्।

उत्तर—(क) राज्य स्तरीय संगठन—कमजोर वर्गों के उत्थान तथा समाज कल्याण की दृष्टि से राज्य में अनेकों संगठनों का निर्माण किया गया है जैसे अनुसूचित जाति विकास निगम। इसका उद्देश्य अनुसूचित जाति के लोगों को उन सुविधाओं का ज्ञान कराना है जो उनको राज्य की ओर से प्रदान की गयी हैं। इसके अतिरिक्त हरिजन सेवक संघ, समाज कल्याण सलाहकार मण्डल, महिला समाज कल्याण संघ, विकलांग संघ तथा सामुदायिक विकास केन्द्र आदि।

(ख) केन्द्रीय समाज कल्याण परिषद्—केन्द्रीय समाज कल्याण परिषद् की स्थापना समाज कल्याण कार्य में लगे हुए ऐच्छिक संगठनों को प्रोत्साहन देने के लिए की गयी है। केन्द्रीय समाज कल्याण परिषद् ने महिलाओं, बच्चों और विकलांगों के लिये अनेक कार्यक्रम चलाये हैं।

बहु विकल्पीय प्रश्न

सही विकल्प चुनिए—

प्रश्न 1. अन्धविश्वास एक—

(अ) सामाजिक बुराई है, (ब) राजनीतिक बुराई है,
(स) आर्थिक बुराई है, (द) कोई बुराई नहीं है।

उत्तर—(अ) सामाजिक बुराई है।

प्रश्न 2. भिक्षावृत्ति का कारण है—

(अ) आर्थिक कारण, (ब) सामाजिक कारण,
(स) धार्मिक कारण, (द) अनेक कारण।

उत्तर—(अ) आर्थिक कारण।

प्रश्न 3. दहेज विरोधी अधिनियम पारित हुआ— (1988)

(अ) 1950 में, (ब) 1951 में,
(स) 1952 में, (द) 1953 में।

उत्तर—(ब) 1951 में।

प्रश्न 4. राजा राममोहन राय ने स्थापना की थी— (1988)

(अ) ब्रह्म समाज, (ब) आर्य समाज,
(स) रामकृष्ण मिशन, (द) प्रार्थना समाज।

उत्तर—(अ) ब्रह्म समाज।

18 | अन्य सामाजिक समस्यायें

अति लघु उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1. सामान्यतः कितने प्रकार का प्रदूषण देखने को मिलता है ? (1989)

उत्तर—(1) वायु प्रदूषण, (2) जल प्रदूषण,
(3) ध्वनि प्रदूषण।

प्रश्न 2. सामाजिक जीवन की किन्हीं चार समस्याओं का नाम लिखिए। (1989)

उत्तर—(1) अज्ञानता, (2) साम्प्रदायिकता,
(3) जातिवाद, (4) क्षेत्रवाद।

परीक्षोपयोगी एवं बोर्ड परीक्षा में पूछे गए अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1. प्रदूषण से क्या अभिप्राय है ? (1987)

उत्तर—गन्दगी के कारण वायु तथा जल के अशुद्ध हो जाने को प्रदूषण कहते हैं।

प्रश्न 2 वायु प्रदूषण क्या है ? (1986)

उत्तर—गन्दगी एवं विभिन्न विषैली गैसों के कारण वायुमण्डल के दूषित हो जाने को वायु प्रदूषण कहते हैं।

प्रश्न 3. नगरों में प्रदूषण के दो प्रमुख कारक बताइए। (1988)

उत्तर—(1) कल-कारखानों का धुँआ, (2) गन्दे पानी की निकासी।

प्रश्न 4. प्रदूषण के मुख्य तीन कारक बताइये। (1990)

उत्तर—(1) तीव्र औद्योगीकरण, (2) नगरीकरण, (3) वृक्षों का कटना।

प्रश्न 5. साम्प्रदायिकता से होने वाली एक प्रमुख हानि बताइए।

उत्तर—देश में राष्ट्रीय एकता को खतरा।

प्रश्न 6. प्रदूषण से उत्पन्न दो रोगों के नाम बताइए :

उत्तर—(1) चेचक, (2) चर्म रोग, (3) मलेरिया।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. साम्प्रदायिकता की समस्या का समाधान किस प्रकार सम्भव है ?

उत्तर—साम्प्रदायिकता की समस्या का समाधान इस प्रकार किया जा सकता है—

(1) धर्म-निरपेक्षता को व्यावहारिक रूप दिया जाए।
(2) सभी धर्मों के लोगों के मध्य सद्भावना बढ़ाई जाए।

(3) सरकार की ओर से यह प्रयास किया जाये कि सभी धर्मों के अनुयायी एक साथ रहें।

प्रश्न 2. प्रदूषण की समस्या किन कारणों से है ?

उत्तर—प्रदूषण की समस्या के कारण निम्नलिखित हैं—

(1) नये कारखानों की स्थापना,
(2) वनों को काटना,
(3) शहरीकरण,
(4) वाहनों की संख्या में वृद्धि।

प्रश्न 3. क्षेत्रवाद का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—

क्षेत्रवाद—भारत में कुछ लोग अपने-अपने लिए अलग-अलग क्षेत्रों की माँग करते रहते हैं। उदाहरण के लिए सिक्ख अपने लिए पृथक राज्य की माँग करते हैं। पंजाब में खालिस्तान की माँग की जा रही है। लोग क्षेत्रीय हितों को सामने रखकर राष्ट्रीय हितों का बलिदान करते हैं। भारत में प्रान्तीयता कितनी प्रबल है, इसे इस प्रकार समझा जा सकता है कि कुछ लोग केरल को अपना देश कहते हैं। भारत के निवासी अपने को मद्रासी, पंजाबी, बंगाली या गुजराती कहते हैं। एक राज्य में अन्य राज्यों के लोगों के साथ बुरा व्यवहार किया जाता है। सभी राज्यों में किसी न किसी बात को लेकर झगड़े हो रहे हैं। इस प्रकार क्षेत्रवाद के समर्थक लोग अपने क्षेत्र को श्रेष्ठ समझते हैं, उसी के हित की कामना करते हैं तथा उसी के विकास के लिए सतत् प्रयत्नशील रहते हैं। देश के लोग जो अपने को नेता कहते हैं क्षेत्रीय भावनाओं को उभारकर अपना हित पूरा करने का प्रयास करते हैं। एक राज्य के अन्तर्गत भी क्षेत्रीयता की भावना पाई जाती है।

परीक्षोपयोगी एवं बोर्ड परीक्षा में पूछे गये अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न 1. पर्यावरण प्रदूषण क्या है ? (1987, 88)

उत्तर—पर्यावरण प्रदूषण का अर्थ पर्यावरण के दूषित होने की प्रक्रिया से है। जब तीव्र औद्योगीकरण, नगरीकरण, जनसंख्या की अतिशय वृद्धि के कारण पर्यावरण प्रदूषित हो जाता है तो उसे पर्यावरण प्रदूषण कहते हैं। यह दूषित जल, विषैली गैसों, वाहनों का शोरगुल एवं धुआँ आदि के कारण होता है।

प्रश्न 2. राष्ट्रीय एकता को विघटित करने वाले तत्व कौन-कौन से हैं ? (1984, 89)

उत्तर—राष्ट्रीय एकता को विघटित करने वाले तत्व निम्नलिखित हैं—

(1) साम्प्रदायिकता, (2) क्षेत्रीयता की भावना,
(3) जातिवाद, (4) भाषावाद।

प्रश्न 3. जल प्रदूषण क्या है ? (1991)

उत्तर—पानी में घुली हुई गन्दगी, कीटाणु एवं विभिन्न लवणों के कारण जल दूषित हो जाता है। उसे जल प्रदूषण कहते हैं।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1. जातिवाद से क्या तात्पर्य है ? जातिवाद से होने वाली हानियों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—जातिवाद—

जातिवाद एक जाति के सदस्यों की वह भावना है जो अपनी जाति के हित के समक्ष अन्य जातियों के हितों की उपेक्षा करने के लिये प्रेरणा देती है।

जातिवाद के दुष्परिणाम—

भारतीय समाज पर जातिवाद का अत्यन्त अहितकर प्रभाव पड़ा है। जातिवाद ने अनेक समस्याएँ उत्पन्न कर दी हैं।

जातिवाद से उत्पन्न दुष्परिणाम इस प्रकार हैं—

(1) **भ्रष्टाचार को बढ़ावा**—जातिवाद ने भ्रष्टाचार को बढ़ावा दिया है। प्रत्येक जाति के लोग अपनी-अपनी जाति की उन्नति के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। ऐसा करने में वे अनुचित साधनों का प्रयोग करने में भी नहीं हिचकिचाते हैं। अनुचित साधनों का प्रयोग समाज में भ्रष्टाचार फैलाता है।

(2) **प्रजातन्त्र के लिए घातक**—जातिवाद प्रजातन्त्र के लिये घातक है। प्रजातन्त्र में निर्वाचन के समय जाति के आधार पर वोट दिये जाते हैं। प्रत्येक जाति वाले अपनी जाति के प्रत्याशी को ही वोट देते हैं। उनका प्रमुख ध्येय अपनी जाति के प्रत्याशी को चुनाव में विजयी बनाना होता है। उन्हें इस बात की तनिक भी चिन्ता नहीं होती है कि उनका प्रत्याशी वास्तव में उस पद के योग्य है भी अथवा नहीं। इस प्रकार शासन में अयोग्य व्यक्ति आ जाते हैं।

(3) **आर्थिक प्रगति में बाधक**—जातिवाद देश की आर्थिक प्रगति में बाधक होती है। प्रायः सरकारी तथा गैर-सरकारी नौकरियों में जाति के आधार पर ही नियुक्तियाँ कर दी जाती हैं। सदस्यों की योग्यता पर ध्यान नहीं दिया जाता है। ऐसे अयोग्य व्यक्ति अपना कार्य कुशलतापूर्वक नहीं चला पाते हैं। इसके फलस्वरूप देश की आर्थिक प्रगति अवरुद्ध हो जाती है।

(4) **राष्ट्रीय एकता के विकास में बाधक**—जातिवाद राष्ट्रीय एकता की स्थापना में बाधक सिद्ध हुआ है। जातिवाद ने समाज को अनेक समूहों में विभाजित कर दिया है। ये समूह अपने हितों को प्राथमिकता देते हैं। उन्हें दूसरों के हितों की चिन्ता नहीं रहती है।

प्रश्न 2. जातिवाद, क्षेत्रवाद व भाषावाद की समस्या का समाधान किस प्रकार सम्भव है?

उत्तर—जातिवाद—जातिवाद एक जाति के सदस्यों की वह भावना है जो अपनी जाति के हित के समक्ष अन्य जातियों के हितों की उपेक्षा करने के लिए प्रेरणा देती है।

क्षेत्रवाद—किसी एक क्षेत्र विशेष से सम्बन्धित व्यक्ति की भावनाओं को क्षेत्रवाद कहते हैं। पूरे राष्ट्र के हितों की अपेक्षा क्षेत्र के हित की भावना ही क्षेत्रवाद है।

भाषावाद—किसी एक भाषा के प्रति विशेष लगाव भाषावाद है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात इन तीनों भावनाओं ने जोर पकड़ा है और ये सभी समस्यायें भारत की गम्भीर समस्यायें बन गई हैं।

जातिवाद, क्षेत्रवाद एवं भाषावाद की समस्या का समाधान

जातिवाद, क्षेत्रवाद तथा भाषावाद की समस्या के समाधान हेतु अग्रलिखित उपाय हैं।

(1) इन सभी समस्याओं के विरुद्ध जनमत तैयार करना चाहिए।
(2) लोगों के नाम के साथ जाति नहीं लगानी चाहिये।
(3) अन्तर्जातीय विवाहों को प्रोत्साहन देना चाहिये।
(4) छात्रों में प्रारम्भ से ही राष्ट्रीयता की प्रबल भावना विकसित की जानी चाहिये।
(5) मनोरंजन के साधनों की व्यवस्था करनी चाहिये तथा चल चित्र और टेलीविजन के माध्यम से संकीर्णता दूर करनी चाहिये।
(6) राजनैतिक दलों तथा पत्रिकाओं तथा संस्थाओं पर प्रतिबन्ध लगाया जाना चाहिये। इस प्रकार की पत्रिकाओं से भाषावाद तथा क्षेत्रवाद को अधिक प्रोत्साहन मिलता है।

प्रश्न 3. साम्प्रदायिकता का अर्थ स्पष्ट कीजिए तथा इसको दूर करने के उपाय बतलाइए।

उत्तर—साम्प्रदायिकता का अर्थ—

अपने समुदाय के प्रति आस्था रखना तथा उसके कल्याण के लिए सोचना व दूसरे सम्प्रदाय के प्रति घृणा की भावना रखकर उसे हानि पहुँचाकर, अपने सम्प्रदाय के कल्याण की भावना ही साम्प्रदायिकता है।

भारत में विभिन्न धर्मों के लोग रहते हैं। लोगों की धार्मिक मनोवृत्ति अत्यन्त संकुचित है। वे अपने धर्म की उन्नति तथा दूसरों के धर्म का अहित चाहते हैं। देश में इस प्रकार की भावनाएँ अस्वथ्यकर वातावरण उत्पन्न कर देती हैं। चुनाव में संकुचित धार्मिक मनोवृत्ति की प्रधानता रहती है। हिन्दू अपने दल के उम्मीदवार की विजय के लिए प्रयत्नशील रहता है। इस प्रकार से अयोग्य व्यक्तियों को चुन लिया जाता है और राष्ट्र की उन्नति में बाधा पहुँचती है। शिक्षा संस्थाओं में सरकारी तथा गैर-सरकारी नौकरियों में भी संकुचित धार्मिक मनोवृत्ति की ही प्रधानता रहती हैं। धर्म के प्रति संकुचित दृष्टिकोण रखने के परिणामस्वरूप ही समय-समय पर दंगे-फसाद होते हैं। संकुचित धार्मिक मनोवृत्ति के कारण ही हमारे देश का विभाजन हुआ, अनेक साम्प्रदायिक दंगे हुए, लाखों लोगों की जानें गयीं। आज भी देश की जनता का धार्मिक दृष्टिकोण अत्यन्त संकुचित है। उनकी यह मनोवृत्ति राष्ट्र के हित में बाधक है।

साम्प्रदायिकता की समस्या को दूर करने के उपाय

साम्प्रदायिकता की समस्या को दूर करने के उपाय निम्नलिखित हैं—
(1) धर्म निरपेक्षता को व्यावहारिक रूप देना।
(2) सभी धर्मों के लोगों के मध्य सदभावना उत्पन्न करना।
(3) सभी धर्मों के व्यक्तियों में भाई-चारा उत्पन्न करना।

बहु विकल्पीय प्रश्न

सही विकल्प चुनिए—

प्रश्न 1. भारतीयों की साक्षरता का कितना प्रतिशत है ?

(अ) 50%, (ब) 37%,
(स) 20%, (द) 10%।

उत्तर—(ब) 37%।

प्रश्न 2. प्रदूषण का कारण है—
(अ) शहरीकरण, (ब) अज्ञानता,
(स) गर्म जलवायु, (द) अन्ध विश्वास।
उत्तर—(अ) शहरीकरण।
प्रश्न 3. राष्ट्रीय एकता के लिए घातक है—
(क) सामाजिक असमानता, (ख) आर्थिक असमानता,
(ग) धार्मिक भावना, (घ) जातिवाद।
उत्तर—(घ) जातिवाद।
प्रश्न 4. साम्प्रदायिकता को दूर करने का उपाय है—
(क) स्वस्थ मनोरंजन, (ख) शिक्षा का प्रचार,
(ग) राष्ट्रीय पर्वों का सामूहिक रूप से मनाना,
(घ) जातीय सम्मेलन करना।
उत्तर—(ग) राष्ट्रीय पर्वों का सामूहिक रूप से मनाना।

19 | प्रधान प्राकृतिक प्रदेश : संकल्पना तथा विभाजन

अति लघु उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1. ऐसे दो प्रदेशों के नाम बताइए जहाँ वर्ष भर वर्षा होती है। (1989)
उत्तर—(1) विषुवतीय प्रदेश, (2) शीतोष्ण प्रदेश।
प्रश्न 2. किस क्षेत्र में गर्मी की ऋतु के उत्तरार्द्ध में वर्षा होती है ?
उत्तर—मानसूनी प्रदेश में गर्मी की ऋतु के उत्तरार्द्ध में वर्षा होती है।
प्रश्न 3. कहाँ पर केवल जाड़े में वर्षा होती है ?
उत्तर—भूमध्य सागर के आसपास स्थित प्रदेशों में केवल जाड़े में वर्षा होती है।
प्रश्न 4. कोणधारी दो वृक्षों के नाम बताइए। (1986, 88)
उत्तर—(1) चीड़, (2) देवदार।
प्रश्न 5. उष्ण कटिबन्ध किन अक्षांशों के मध्य स्थित है ? (1985)
उत्तर—$23\frac{1}{2}°$ उत्तर से $23\frac{1}{2}°$ दक्षिण का भाग उष्ण कटिबन्ध कहलाता है।

परीक्षोपयोगी एवं बोर्ड परीक्षा में पूछे गए अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1. पर्यावरण कितने प्रकार का होता है ?
उत्तर—(1) सामाजिक पर्यावरण, (2) प्राकृतिक पर्यावरण।
प्रश्न 2. जीवोम किसे कहते हैं ? (1984)
उत्तर—एक समान जैव परिस्थितिकी या परितन्त्र को जीवोम कहते हैं।

प्रश्न 3. शीत प्रदेशों में प्रायः किस प्रकार के वन पाए जाते हैं ?

उत्तर—शीत प्रदेशों में प्रायः कोणधारी वन पाये जाते हैं।

प्रश्न 4. संसार में किस स्थान पर सर्वाधिक वर्षा होती है ?

उत्तर—चेरापूंजी।

प्रश्न 5. जलवायु के दो पक्ष कौन-कौन से हैं ?

उत्तर—(1) तापमान, (2) वर्षा।

प्रश्न 6. प्राकृतिक प्रदेश किसे कहते हैं ?

उत्तर—पृथ्वी पर मानव जीवन को प्रभावित करने वाली समान प्राकृतिक दशाओं वाले क्षेत्र के समूह को प्राकृतिक प्रदेश कहते हैं।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. प्राकृतिक तथा सामाजिक पर्यावरण में क्या अन्तर है ? (1986)

उत्तर—प्राकृतिक पर्यावरण प्राकृतिक शक्तियों के द्वारा तैयार किया जाता है, जैसे—भूमि, वर्षा, जलवायु तथा वनस्पति आदि।

सामाजिक पर्यावरण का निर्माण मनुष्यों के द्वारा किया जाता है। यह अप्राकृतिक होता है। मनुष्य इनको स्वयं बनाता या पैदा करता है।

प्रश्न 2. प्राकृतिक पर्यावरण के प्रमुख अंग क्या हैं ? (1985)

उत्तर—प्राकृतिक पर्यावरण के प्रमुख अंग वायु, भूमि, तापमान, वर्षा, पशु पक्षी तथा वृक्ष हैं।

प्रश्न 3. "परिस्थितिकी" किसे कहते हैं ? (1986, 88)

उत्तर—"परिस्थितिकी" पर्यावरणीय परिस्थिति से सन्तुलित अनुकूलन को कहते हैं।

प्रश्न 4. प्रदेश की क्या संकल्पना है ? (1987)

उत्तर—जब किसी भू-भाग को किसी एक या अनेक आधारों पर विशेष रूप से निर्दिष्ट करते हैं तो उसके लिए प्र+देश (प्रदेश) शब्द का प्रयोग किया जाता है। उदाहरण के लिये पश्चिमी प्रदेश, उत्तर प्रदेश, शीतोष्ण प्रदेश आदि।

प्रश्न 5. प्रधान प्राकृतिक प्रदेश का क्या तात्पर्य है ?

उत्तर—प्राकृतिक पर्यावरण पर आधारित विभेदीकरण अथवा वर्गीकरण प्रस्तावित होने के कारण विभागों को प्राकृतिक प्रदेश की संज्ञा दी जाती है। चूंकि इस प्रकार का प्रस्तावित विभाजन समस्त विश्व को ध्यान में रखकर किया जाता है, अतः इन प्राकृतिक प्रदेशों को "प्रधान प्राकृतिक प्रदेश" कहा जाता है।

प्रश्न 6. मन्दोष्ण तथा शीतल शीतोष्ण जलवायु के अन्तर का क्या आधार है ?

उत्तर—मन्दोष्ण प्रदेश वे प्रदेश हैं जहाँ ठण्डे से ठण्डे माह का औसत तापमान 10° से० ग्रे०. से कम नहीं होता है। यहाँ जाड़े तथा गर्मी दोनों में फसलें अच्छी तरह से उगाई जा सकती हैं।

शीतल शीतोष्ण प्रदेशों में जाड़े में कड़ी ठंडक पड़ती है। इस ऋतु में सामान्यतः कोई फसल नहीं उगाई जाती है। कोणधारी वृक्षों को छोड़कर अन्य वृक्ष पत्ती गिराकर जाड़े में पड़ने वाले तुषार का सामना करते हैं।

प्रश्न 7. घास बहुल प्रदेशों की जलवायु की क्या विशेषता है ?

उत्तर—घास बहुल प्रदेशों की जलवायु की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—

(1) वर्षा केवल गर्मी में होती है।

(2) वर्षा की मात्रा कम होती है।

(3) जलवायु घास उपजाने के लिए अनुकूल होती है।

प्रश्न 8. सवाना का क्या अर्थ है ? इसके प्रयोग का क्या औचित्य है ?

उत्तर—स्पेनी भाषा में सवाना का अर्थ चादर है। यहाँ घास चादर की भाँति बिछ जाती है।

(1988)

प्रश्न 9. जीवोम किसे कहते हैं ?

उत्तर—एक समानजैव परिस्थितिकी या परितन्त्र को "जीवोम" कहते हैं।

प्रश्न 10. कम से कम 20° से० ग्रे० मासिक औसत तापमान किस बात का द्योतक है ?

उत्तर—ऐसे प्रदेशों को उष्ण प्रदेश कहते हैं। यहाँ जाड़े में विशेष ठण्डक नहीं पड़ती है।

प्रश्न 11. वर्ष में किसी स्थान के अधिकतम 10° से० ग्रे० मासिक औसत तापमान से क्या निष्कर्ष निकाल सकते हैं ?

उत्तर—ऐसे प्रदेशों को मन्दोष्ण प्रदेश कहते हैं। यहाँ गर्मी और जाड़े दोनों ऋतुओं में फसलें उगाई जा सकती हैं।

प्रश्न 12. ऊँचे पर्वतीय भागों को शीत प्रदेशों की श्रेणी में अध्ययन करने का क्या आधार हो सकता है ?

उत्तर—इनका आधार तापमान, दशा तथा ऊँचाई है।

प्रश्न 13. रेखाचित्र कटिबन्धों का विभाजन स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—रेखाचित्र द्वारा कटिबन्धों का विभाजन निम्न प्रकार है—

3 क शीत कटिबन्ध,

2 क शीतोष्ण कटिबन्ध,

1 उष्ण कटिबन्ध,

2 ख शीत कटिबन्ध,

3 ख शीत कटिबन्ध।
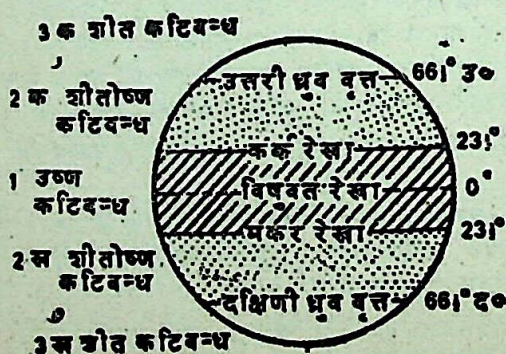
चित्र—सूर्य की वार्षिक गति तथा कटिबन्ध योजना

प्रश्न 14. किन वनस्पति प्रदेशों में पतझड़ किसी ऋतु विशेष में होता है और क्यों ?

उत्तर—मानसूनी वनों में ग्रीष्मकाल के आरम्भ में वृक्ष अपनी पत्तियाँ गिरा देते हैं।

प्रश्न 15. उष्ण कटिबन्धीय प्रधान प्रदेशों के नाम बताइये। उनके वर्गीकरण का सबसे प्रमुख आधार क्या हो सकता है ?

उत्तर—(1) विषुवतीय प्रदेश, (2) मानसूनी प्रदेश, (3) सवाना प्रदेश, और (4) उष्ण मरुस्थल।

इनके वर्गीकरण का प्रधान आधार तापमान, वर्षा, तापपरिसर तथा जलवायु है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. विश्व की प्रमुख तापमान पेटियों के नाम बताइये तथा उनके विभेदीकरण के आधार स्पष्ट कीजिए। (उ० प्र०, 1984 प्राइवेट)

उत्तर—विश्व के सभी स्थान सूर्य से समान दूरी पर नहीं हैं। अतः विभिन्न दूरियों के कारण तापमान में भी विशेष अन्तर आ जाता है। जैसे—विषुवत रेखा पर सूर्य की लम्बवत् दूरी है। अतः ये प्रदेश अधिक गर्म हैं और इसके ठीक विपरीत ध्रुवों पर सूर्य की किरणें तिरछी पड़ने पर उनको अधिक दूरी तय करनी पड़ती है। अतः ये प्रदेश शीत प्रधान प्रदेश हैं। इसी विचार से विश्व की प्रमुख तापमान पेटियाँ निम्नलिखित हैं—

(1) उष्ण प्रदेश, (2) शीतोष्ण प्रदेश, (3) मन्दोष्ण प्रदेश, (4) शीतल शीतोष्ण प्रदेश, (5) शीतल प्रदेश, (6) ध्रुवीय प्रदेश।

(1) उष्ण प्रदेश—यह वह प्रदेश है जहाँ वास्तविक जाड़े की ऋतु होती ही नहीं है। यहाँ फसलें हर ऋतु में उगायी जा सकती हैं। यहाँ तुषारपात कभी नहीं होता। मनुष्य साधारण कपड़ों से काम चला लेता है।

(2) शीतोष्ण प्रदेश—ये वे प्रदेश हैं जहाँ कुछ महीनों को छोड़कर मासिक तापमान शून्य से कम नहीं होता है। यह क्षेत्र विस्तार की दृष्टि से बहुत बड़ा है। अतः इसे दो भागों में विभाजित कर सकते हैं—मन्दोष्ण प्रदेश और शीतल शीतोष्ण प्रदेश।

(अ) मन्दोष्ण प्रदेश—इस प्रदेश के ठंडे से ठंडे महीने का तापमान 10°C से कम नहीं होता है, जाड़े व गर्मी दोनों ही ऋतुओं में फसल भली प्रकार उगाई जा सकती है।

(ब) शीतल शीतोष्ण प्रदेश—इन प्रदेशों में जाड़े में इस ऋतु में सामान्यतया कोई फसल नहीं उगाई जाती है। कोणधारी वृक्षों को छोड़कर अन्य वृक्ष पत्ती गिरा कर जाड़े में पड़ने वाले तुषार का सामना करते हैं। सबसे ठंडे महीनों का तापमान शून्य के आस-पास पहुँच जाता है।

(3) शीत प्रदेश—यह अति ठण्डे प्रदेश हैं, जहाँ गर्मियों में तापमान 10°C से 20°C तक पहुँच जाता है परन्तु जाड़ों में 4 से 6 महीने तक शून्य से नीचे रहता है। वनस्पति के बढ़ने के लिए शून्य से अधिक तापमान चाहिए। अतः यहाँ अल्पकालिक वनस्पति पैदा होती है।

(4) ध्रुवीय प्रदेश—यहाँ पर गर्मी की ऋतु में भी तापमान 10°C से अधिक नहीं होता है। वृक्ष जैसा तना विकसित होने के लिए कम से कम 10°C ताप चाहिए। अतः यहाँ काई जैसी वनस्पति उगती है।

इन पेटियों के विभेदीकरण के निम्नलिखित आधार हैं—

(1) तापमान,
(2) वर्षा,
(3) वर्षा होने की ऋतु (अवधि),
(4) वर्षा की मात्रा।

प्रश्न 2. वर्षा के आधार पर प्रादेशिक विभाजन के क्या मुख्य आधार हैं? विभाजन को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—वर्षा के आधार पर प्रादेशिक विभाजन के मुख्य आधार निम्नलिखित हैं—

(1) वर्षा की मात्रा, (2) वर्षा होने की ऋतु तथा अवधि।

(1) वर्षा की मात्रा—उष्ण प्रदेशों में जितनी वर्षा पर्याप्त होती है, उससे कम शीतोष्ण प्रदेशों के लिए समुचित मानी जा सकती है। उदाहरण के लिए उष्ण प्रदेश में स्थित दिल्ली में 66 सेमी वर्षा होती है तथा शीत शीतोष्ण प्रदेश स्थित लन्दन में 58 सेमी वर्षा होती है किन्तु दिल्ली के आस-पास (की शुष्क प्रदेशों में गणना की जाती है। जबकि लन्दन को आर्द्र प्रदेश में गिना जाता है।

(2) वर्षा होने की ऋतु तथा अवधि—वर्षा होने की ऋतु (अवधि) का एक महत्वपूर्ण स्थान है। कुछ प्रदेशों में वर्ष भर समान रूप से वर्षा होती रहती है। किसी प्रदेश में एक ऋतु में कम तथा दूसरे में अधिक होती है तथा वर्ष भर थोड़ी-थोड़ी वर्षा होती रहती है। तीसरा वर्ग ऐसे प्रदेशों का है जिनमें गर्मी में वर्षा होती है। चौथा वर्ग जाड़े में वर्षा होने वाले प्रदेशों का है तथा पाँचवाँ वर्ग ऐसा है जहाँ वर्षा इतनी कम होती है कि समुचित रूप से वनस्पति नहीं पनप सकती है।

अतः वर्षा के आधार पर निम्नलिखित प्रदेश हो सकते हैं :—

1. वर्ष भर वर्षा वाले प्रदेश—

इन प्रदेशों को दो भागों में बाँट सकते हैं :—

(क) वर्ष भर लगभग समान वर्षा वाले प्रदेश—ये वे प्रदेश हैं जिनमें साल भर समान रूप से वर्षा होती रहती है। ऐसे प्रदेश हैं, **विषुवतीय प्रदेश।**

(ख) एक ऋतु में अधिक वर्षा वाले प्रदेश—वे प्रदेश जिनमें एक ऋतु में अधिक वर्षा होती है। वैसे तो वर्ष भर वर्षा होती ही रहती है। इस प्रकार की जलवायु के अधिक वर्षा वाले प्रदेश **पश्चिमी यूरोप** जैसे तथा समान्य प्रदेश वर्षा वाले **मध्य यूरोप** जैसे प्रदेश हैं।

2. गर्मी में वर्षा वाले प्रदेश—

इन प्रदेशों को अग्र भागों में बाँटा गया है—

(क) अधिक वर्षा वाले प्रदेश—आर्द्र मानसूनी प्रदेश।

(ख) सामान्य वर्षा वाले प्रदेश—सामान्य मानसूनी प्रदेश (सूडानी जलवायु के प्रदेश)।

कम वर्षा वाले प्रदेश—प्रेरी जैसी जलवायु वाले तथा मरुस्थलीय प्रदेश।

3. जाड़े में वर्षा वाले प्रदेश

इन प्रदेश को दो भागों में विभाजित कर सकते हैं—

(क) सामान्य वर्षा वाले प्रदेश—भूमध्य सागरीय प्रदेश।

(ख) कम वर्षा वाले प्रदेश—मरुस्थलीय प्रदेश।

प्रश्न 3. संसार में कितने प्रकार के सदाबहार वन पाये जाते हैं ? उनको विभिन्नता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—संसार में निम्नलिखित प्रकार के वन पाये जाते हैं—

(1) विषुवतीय सदाबहार वन—विषुवत रेखा पर सूर्य की गर्मी अधिक पड़ती है। वहाँ के भू स्थलों की वायु दोपहर तक कड़ी गर्मी के कारण हल्की होकर ऊपर उठ जाती है और उसकी पूर्ति के लिए समुद्रों की ओर से भाप से भरी हवाएँ चलती हैं जो दोपहर के बाद तीसरे पहर घनघोर वर्षा कर देती हैं। यहाँ पर नित्य वर्षा होती है। इसके कारण यहाँ घने वन उगते हैं। इन वनों में पतझड़ नहीं होता है। वन इतने अधिक घने होते हैं कि सूर्य की किरणें बहुत से स्थानों पर भूमि तक वनों को चीर कर नहीं पहुँच पाती हैं। वन पक्षी मरने के बाद उनके अवशेष पेड़ों पर ही अटके रह जाते हैं। इन वनों में उगने वाले वृक्ष अधिक ऊँचे होते हैं जो एक-दूसरे की होड़ में बढ़ते रहते हैं। इन वनों में बांस, बेंत, महोगनी आदि के वृक्ष मुख्य हैं।

(2) कोणधारी सदाबहार वन—ये वे वन होते हैं जहाँ ठण्डे प्रदेश होते हैं। इनकी पत्तियाँ नुकीली सींकों वाली हो जाती हैं। ऐसी पत्तियाँ जाड़ा सहन कर लेती हैं। इनके फल "कोण" जैसे होते हैं उदाहरण—चीड़ एवं देवदार के वृक्षों वाले वन।

(3) भूमध्य-सागरीय सदाबहार वन—यहाँ जाड़े की ऋतु में वर्षा होती है और तापमान शीतोष्ण स्तर का होता है। ग्रीष्म ऋतु शुष्क एवं तीव्र गर्मी वाली होती है। यहाँ वृक्ष अपनी सुरक्षा के हित में लम्बी जड़ें, मोटी छाल और मोटी सींक की तथा छोटी पत्तियों का सहारा लेते हैं। गर्मी में भी पत्ती नहीं गिराते; जैसे—नीबू, सन्तरा, जैतून आदि। इस प्रकार के वनों को भूमध्य-सागरीय सदाबहार वन कहते हैं।

इन वनों की भिन्नता के निम्नलिखित आधार हैं—

(1) तापमान, (2) वर्षा।

तापमान की भिन्नता के कारण वनस्पति में परिवर्तन एवं वर्षा की भिन्नता के कारण वनस्पति में परिवर्तन पाया जाता है। इन्हीं भिन्नताओं के कारण वनस्पति सदाबहार होते हुए भी भिन्नता लिए हुए है।

प्रश्न 4. संसार के प्रधान प्राकृतिक प्रदेश बताइए तथा उन्हें संसार के मानचित्र में प्रदर्शित कीजिए।

उत्तर—संसार में मुख्य प्राकृतिक प्रदेश अग्रलिखित हैं :—

(क) उष्ण प्रदेश

(1) विषुवतीय प्रदेश, (2) मानसूनी प्रदेश,

(3) सवाना प्रदेश, (4) उष्ण मरुस्थल ।

(ख) शीतोष्ण प्रदेश

(5) भूमध्य सागरीय प्रदेश, (6) मन्दोष्ण पूर्वी प्रदेश,
(7) शीतल शीतोष्ण पश्चिमी प्रदेश, (8) शीतल शीतोष्ण पूर्वी प्रदेश,
(9) शीतोष्ण घास के मैदान (स्टेनी प्रदेश,) (10) शीतोष्ण मरुस्थल ।

(ग) शीत प्रदेश

(11) शीत वन प्रदेश, (12) टुण्ड्रा प्रदेश,
(13) निर्जन बर्फीले प्रदेश, (14) ऊँचे पर्वतीय प्रदेश ।

प्रश्न 5. पर्यावरणीय सन्तुलन से आप क्या समझते हैं ? पर्यावरणीय सन्तुलन का महत्व बताइये । मनुष्य का हस्तक्षेप इनमें किस प्रकार हानिकारक सिद्ध होता है ? (उ० प्र० 1985)

उत्तर—पर्यावरणीय सन्तुलन—जो कुछ भी हमारे आस-पास है, हम उससे प्रभावित होते हैं और उसे भी प्रभावित करते हैं, उसे पर्यावरण कहते हैं । प्रत्येक जीव का गुण है कि वह अपने पर्यावरण के साथ सन्तुलन बना लेता है । अतः पेड़-पौधे या वनस्पति अपने पर्यावरण के अनुसार ही अपने को परिवर्तित करके उसके साथ उचित समायोजन को पर्यावरणीय सन्तुलन कहते हैं ।

पर्यावरणीय सन्तुलन का महत्व

(1) पर्यावरणीय सन्तुलन से ही मानव जीवन सुचारु रूप से चल सकता है । पर्यावरणीय सन्तुलन बिगाड़ने से उसे अति हानि होती है ।

(2) पर्यावरणीय सन्तुलन से ही उचित जलवायु एवं मानव के लिए उचित वातावरण प्रकृति प्रदान करती है ।

(3) पर्यावरणीय सन्तुलन से ही समय पर वर्षा तथा उचित ताप मिलता है ।

(4) पर्यावरणीय सन्तुलन से ही मानव को अपने विकास के अवसर मिलते हैं ।

(5) मानव क्रियाओं से पर्यावरणीय सन्तुलन बनाए रखना उचित है, नहीं तो उसे बहुत बड़ी हानि हो सकती है ।

(6) मनुष्य पर्यावरण का दास है, अतः उसे उसके साथ सन्तुलन बनाए रखना ही उचित है ।

मनुष्य के हस्तक्षेप से हानि—मनुष्य को प्राकृतिक पर्यावरण में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए । इससे बड़ी हानि उठानी पड़ती है । जैसे—उत्तर प्रदेश में अधिक वनों के कटने के परिणामस्वरूप यहाँ पर अधिक भूमि कटाव हुआ और नदियों में अधिक बाढ़ें आयीं जिससे हुगली नदी का मुहाना पट गया तथा नदी उथली हो गई और कलकत्ता के बन्दरगाह का स्वरूप बदलने लगा । फरक्का बाँध हुगली नदी में जल प्रवाह को तेज करना पड़ा ।

इसी प्रकार अन्य पर्यावरण के जो अंग हैं उनका सन्तुलित प्रयोग ही होना चाहिए । अधिक हस्तक्षेप करने पर हानि हो सकती है ।

प्रश्न 6. नीचे दिये गए रेखाचित्र का अध्ययन कीजिए। बताइए क, ख, ग, तथा घ स्थानों पर किस प्रकार की वनस्पति पाए जाने की सम्भावना है और क्यों ?
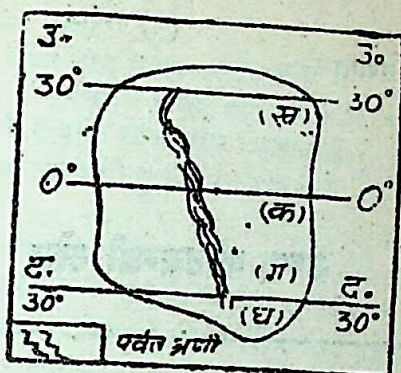
उत्तर—

(क) 0°—0° में अल्पकालिक वनस्पति अथवा धीरे-धीरे बढ़ने वाले वृक्ष पाये जाते हैं।

(ख) 30°—30°, उपयोगी काष्ठ वृक्ष तथा नागफनी वृक्ष वनस्पति पायी जाती है।

(ग) द०—द० में कोई समान वनस्पति पाये जाने की सम्भावना नहीं है :

(घ) 30°—30° में बाँस तथा बेंत, काँटेदार झाड़ियों वाली वनस्पति पाये जाने की सम्भावना है।

बहु विकल्पीय प्रश्न

सही विकल्प चुनिए—

प्रश्न 1. किन प्रदेशों में जाड़े की ऋतु के अन्त में पतझड़ होता है—(1987)

(क) विषुवतीय प्रदेश, (ख) भूमध्य सागरीय प्रदेश,
(ग) सवाना प्रदेश, (घ) मानसूनी प्रदेश।

उत्तर—(घ) मानसूनी प्रदेश।

प्रश्न 2. ग्लिटर टिण्डन में हिम रेखा की ऊँचाई है—

(क) 1000 मीटर, (ख) 1200 मीटर,
(ग) 1500 मीटर, (घ) 2000 मीटर।

उत्तर—(ख) 1200 मीटर।

प्रश्न 3. निम्नांकित में से किस प्राकृतिक प्रदेश में सबसे अधिक वर्षा होती है—(1989)

(क) विषुवतीय प्रदेश, (ख) भूमध्य सागरीय प्रदेश,
(ग) मानसूनी प्रदेश, (घ) पश्चिमी यूरोपीय प्रदेश।

उत्तर—(क) विषुवतीय प्रदेश।

प्रश्न 4. विषुवतीय सदाबहारी वनों का मुख्य वृक्ष है—

(क) रबड़, (ख) साल,

(ग) देवदार, (घ) सागोन।
उत्तर—(क) रबड़।
प्रश्न 5. अफ्रीका में घास के मैदान क्या कहलाते हैं— (1984, 87)
(क) सवाना, (ख) प्रेरी,
(ग) स्टैप्स, (घ) पम्पास।
उत्तर—(क) सवाना।

20 उष्ण कटिबन्धी क्षेत्र

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. सितम्बर में 'डोलड्रम' की किन अक्षांशों के मध्य स्थिर होने की सम्भावना है ?

उत्तर—सितम्बर में 'डोलड्रम' 5° से 15° अक्षांशों के मध्य दोनों गोलार्द्धों में बराबर दूरी तक फैले रहने की सम्भावना होती है।

प्रश्न 2. सागौन किस प्राकृतिक प्रदेश का वृक्ष है ? (1988)

उत्तर—सागौन मानसूनी प्रदेश का वृक्ष है।

प्रश्न 3. एक ऐसे नगर का नाम बताइये जहाँ हमेशा बसन्त जैसा तापमान रहता है ?

उत्तर—क्वेटो (इक्वेडोर-दक्षिणी अमेरिका में)।

प्रश्न 4. अस्वान बाँध किस नदी पर बन रहा है ?

उत्तर—अस्वान बाँध नील नदी पर बन रहा है। यह नदी अफ्रीका महाद्वीप में है।

प्रश्न 5. रबड़, चाय तथा कहवा, तीनों की पैदावार करने वाले किन्हीं 2 क्षेत्रों के नाम बताइए।

उत्तर—(1) विषुवतीय प्रदेश, (2) मानसूनी प्रदेश।

परीक्षोपयोगी एवं बोर्ड परीक्षा में पूछे गये अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1. डोलड्रम किसे कहते हैं ? (1988)

उत्तर—विषुवतीय लघु भार क्षेत्र को डोलड्रम कहते हैं।

प्रश्न 2. सूडानी प्रदेशों में पशुपालन उद्योग के विकास में दो बाधाएं बताइये। (1987)

उत्तर—(1) समुचित चारे की कमी, (2) पशुओं के रोग।

प्रश्न 3. निम्नांकित प्रदेशों में किस प्रकार के वृक्ष पाये जाते हैं ? (1986)
(क) मरुस्थलीय प्रदेश (ख) मानसूनी प्रदेश।

उत्तर—(क) मरुस्थलीय प्रदेश—काँटेदार वन।

(ख) मानसूनी प्रदेश—पर्णपाती वन।

प्रश्न 4. किस प्राकृतिक प्रदेश में प्रायः दोपहर के बाद वर्षा होती है? (1989)

उत्तर—विषुवतीय प्रदेश।

प्रश्न 5. वृष्टि छाया प्रदेश से क्या अभिप्राय है? (1989)

उत्तर—पहाड़ों का हवाओं के विमुख वह ढाल जहाँ पर्वतों की आड़ के कारण वर्षा नहीं हो पाती है वृष्टि छाया प्रदेश कहलाता है।

प्रश्न 6. उष्ण मरुस्थलों की मुख्य उपज क्या है? (1989)

उत्तर—खजूर।

प्रश्न 7. तरल स्वर्ण किसे कहते हैं? (1986)

उत्तर—द्वितीय महायुद्ध के बाद पैट्रोलियम को तरल स्वर्ण कहते हैं।

प्रश्न 8. किस प्राकृतिक प्रदेश में सबसे अधिक वर्षा होती है? (1989)

उत्तर—विषुवतीय प्रदेश।

प्रश्न 9. काँगो बेसिन तथा अमेजिन बेसिन किस जलवायु के अन्तर्गत है? (1989)

उत्तर—विषुवतीय जलवायु का प्रदेश। (1989)

प्रश्न 10. कालाहारी मरुस्थल किस जलवायु के अन्तर्गत है? (1984, 87)

उत्तर—उष्ण मरुस्थलीय जलवायु।

प्रश्न 11. वर्ष भर वर्षा प्राप्त करने वाले दो जलवायु के प्रदेश बताइये। (1991)

उत्तर—(1) विषुवतीय प्रदेश (2) पश्चिमी यूरोपीय जलवायु के प्रदेश।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. विषुवतीय प्रदेश में वार्षिक ताप परिसर क्यों बहुत कम होता है?

उत्तर—विषुवतीय प्रदेशों में वर्ष भर ऊँचा तापमान रहता है। इस कारण वर्ष भर यहाँ पर ताप परिसर बहुत कम रहता है। वार्षिक ताप परिसर वर्ष में कभी 3 से० ग्रे० से अधिक नहीं रहता है।

प्रश्न 2. अमेजिन् बेसिन के विकास की प्रधान बाधाओं को बताइए। (1984, 86)

उत्तर—अमेजिन बेसिन के विकास की निम्नलिखित बाधाएँ हैं—

(1) यहाँ भयंकर गर्मी पड़ती है।
(2) यहाँ प्रति दिन वर्षा होती है।
(3) गर्मी के कारण शरीर की कार्य करने की क्षमता कम हो जाती है।
(4) सर्वत्र कीचड़ रहती है।
(5) कीड़े-मकोड़े तथा मक्खियों का प्रकोप रहता है।
(6) जलवायु स्वास्थ्य के लिए प्रतिकूल है।
(7) वन इतने घने होते हैं कि यातायात के साधन नहीं हैं।
(8) घनघोर वर्षा मिट्टी को काटकर बहा ले जाती है।

प्रश्न 3. बागानी कृषि का क्या अर्थ है? उदाहरण के द्वारा स्पष्ट कीजिए। (Imp.)

उत्तर—अमेजन घाटी में जब यूरोपीय विजेताओं ने अपना आधिपत्य जमाया तो उन्होंने रबड़, चाय, कहवा, सिनकोना, गन्ना आदि की बड़े पैमाने पर कृषि बागों के रूप में प्रारम्भ की। इसी को 'बागानी' खेती कहा जाता है।

प्रश्न 4. मानसूनी प्रदेश महाद्वीपों के पूर्वी भाग में बहुधा क्यों पाये जाते हैं ?

उत्तर—यह प्रदेश महाद्वीपों के पूर्वी भाग में पाये जाते हैं क्योंकि इन प्रदेशों में गर्मी में समुद्र की ओर से चलने वाली पवनों द्वारा पूर्वी भागों में वर्षा होती है। गर्मी पड़ने से लघु वायु-दाब क्षेत्र पैदा हो जाता है। समुद्री पवन स्थल की ओर से चलने लगते हैं और वर्षा करते हैं। यहाँ एक मौसम विशेष में सागरीय पवनों के चलने से वर्षा होती है, अतः इसे "मानसूनी" अर्थात् मौसमी वर्षा कहते हैं।

प्रश्न 5. मानसूनी प्रदेशों में बाढ़ अधिक क्यों आती है ? (1985, 88)

उत्तर—मानसूनी प्रदेशों में एक विशेष ऋतु में वर्षा होती है। उस समय प्रदेश के कुछ भागों में घनघोर वर्षा होती है। घनघोर वर्षा के कारण नदियों में बाढ़ आ जाती है। पहाड़ों पर बर्फ पिघलने से भी नदियों में पानी का आधिक्य हो जाता है। इस कारण नदियों में बाढ़ आ जाती है।

प्रश्न 6. सूडानी प्रदेशों में वृक्ष क्यों नहीं अधिक पनपते हैं ? (V. Imp.) (1988)

उत्तर—सूडानी प्रदेशों में अधिक वृक्ष न पनपने के निम्नलिखित कारण हैं—

(1) यहाँ गर्मी खूब पड़ती है।
(2) तापमान को देखते हुए वर्षा कम होती है।
(3) यहाँ की जलवायु शुष्क है।
(4) गर्मी अधिक पड़ने, परन्तु वर्षा कम होने के कारण पेड़ पनप नहीं पाते हैं।

प्रश्न 7. उष्ण मरुस्थल महाद्वीपों के पश्चिमी भाग में समुद्र तट तक क्यों पाये जाते हैं ? (1986, 87)

उत्तर—महाद्वीपों के पश्चिमी तटों पर व्यापारिक पवनें उत्तर-पूर्व तथा दक्षिण पूर्व दिशा से चलने के कारण पश्चिमी तटों पर पहुँचते-पहुँचते शुष्क हो जाती हैं और वर्षा करने में असमर्थ हो जाती हैं। इन प्रदेशों में हवाएँ ऊपर से नीचे को उतरती हैं तथा शुष्क हो जाती हैं और वर्षा नहीं हो पाती है। इसी कारण महाद्वीपों के पश्चिमी भागों में वर्षा के अभाव में शुष्क मरुस्थल पाये जाते हैं।

प्रश्न 8. शीतोष्ण मरुस्थलों की जलवायु अधिक विषम क्यों होती है ?

उत्तर—यहाँ जाड़े में तापमान हिमांक से नीचे चला जाता है। बर्फ गिरती है। यहाँ का वार्षिक तापमान परिसर 25° से० ग्रे० से अधिक होता है। इसी कारण शीतोष्ण कटिबन्धी मरुस्थलों की जलवायु अधिक विषम तथा कठिन होती है।

प्रश्न 9. एशिया तथा दक्षिणी अमेरिका के शीतोष्ण मरुस्थलों के कारणों में क्या अन्तर है ? (V. Imp.)

उत्तर—एशियां के शीतोष्ण मरुस्थलों में जाड़ों में वर्फ पड़ती है तथा गर्मियों में वर्षा होती है जबकि दक्षिणी अमेरिका में शीतोष्ण मरुस्थल 'वृष्टिछाया' के कारण वर्षा विहीन रह जाते हैं।

प्रश्न 10. मरुस्थलों में नमक तथा तत्सम्वन्धी खनिजों के मिलने के क्या कारण हैं ?

उत्तर—मरुस्थलों में नमक तथा तत्सम्वन्धी खनिजों के मिलने के कारण यहाँ की धरातल सम्वन्धी तथा जलवायु सम्बन्धी दशायें तथा मिट्टी का क्षारीय होना है।

प्रश्न 11. मानसूनी तथा सूडानी प्रदेशों में वर्षा के स्वरूप में क्या प्रमुख अन्तर है ?

उत्तर—मानसूनी प्रदेशों में वर्षा मानसूनी हवाओं द्वारा होती है। इसके विपरीत सूडानी प्रदेशों की वर्षा में बहुत अधिक विषमत पायी जाती है। सूडानी प्रदेशों में वायुपेटियाँ खिसकने के कारण वर्ष भर हल्की वर्षा होती है।

प्रश्न 12. सूडानी प्रदेशों में पशु पालन उद्योग के विकास में क्या बाधायें हैं ? (1987)

उत्तर—सूडानी प्रदेशों में पशु पालन उद्योग के विकास में निम्नलिखित बाधाएँ हैं—

(1) घास उगने के पश्चात् शीघ्र सूख जाती है।

(2) यहाँ पर उगने वाली घास लम्बी होती है जो चारे के योग्य नहीं होती है।

(3) घास का स्थान कटीली झाड़ियाँ लेने लगती हैं।

(4) शुष्क ऋतु में जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है।

प्रश्न 13. मानसूनी प्रदेश में मकान बनवाने में खपरैल का विशेष प्रयोग क्यों होता है ?

उत्तर—खपरैल मानसूनी मूसलाधार वर्षा को सरलता से बहा देती है। यह गर्म आद्र वायु को आसानी से वाहर निकाल देती है। इसी कारण मानसूनी प्रदेश में मकान वनवाने में खपरैल का विशेष प्रयोग होता है।

प्रश्न 14. मिस्र को नील नदी का वरदान क्यों कहा जाता है ?

उत्तर—नील नदी ने मिश्र की भूमि को उर्वरा बना दिया है। यहाँ अच्छी खेती की जाती है।

नील नदी के जल को बाँध वनाकर उद्योग-धन्धों, सिंचाई एवं जल विद्युत के लिए प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार मिश्र देश जो सहारा मरुस्थल का एक भाग है नील-नदी के कारण ही खुशियाल है। इसी कारण मिश्र नील नदी का वरदान है।

प्रश्न 15—रेखाचित्र द्वारा वायुदाब पेटियों के खिसकने तथा सूडानी प्रदेशों की स्थिति का सम्बन्ध स्पष्ट कीजिये।

उत्तर—
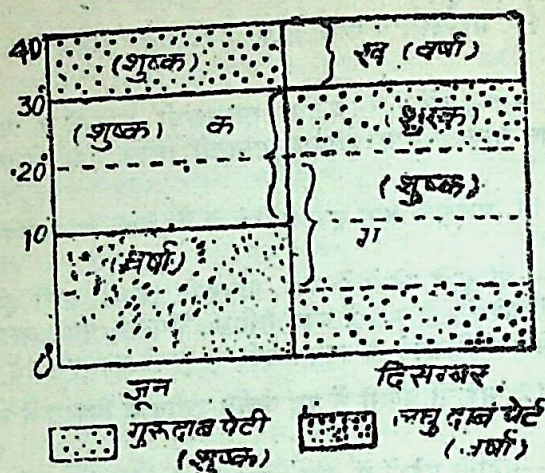
विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. एशिया तथा अफ्रीका के विषुवतीय क्षेत्रों के विकास की तुलना कीजिए। अन्तर के भौगोलिक कारण बताइए।

उत्तर—एशिया के विषुवतीय क्षेत्र

भारत के सम्पर्क में आकर एशिया के क्षेत्र सभ्यता की परिधि में आ गए थे। बाली द्वीप में आज भी भारतीय संस्कृति विद्यमान है। यहाँ प्रारम्भ से ही रबड़, चाय, कहवा, सिनकोना, आदि बड़े पैमाने पर उगाया जाता है। इसे बागानी खेती कहते हैं। इन क्षेत्रों में धीरे-धीरे विकास हो रहा है।

अफ्रीका के विषुवतीय क्षेत्र—

अफ्रीका में अब विकास हो रहा है। उगांडा, कीनिया तथा तन्जानिया के ऊँचे भागों में फार्मों के रूप में खेती की जाती थी। अब नीचे भागों का भी विकास हो रहा है।

विकास के अन्तर का कारण इन प्रदेशों की जलवायु है। यहाँ जनसंख्या में भी अन्तर पाया जाता है। दक्षिणी-पूर्वी एशिया के कुछ भाग अपनी जनसंख्या की सघनता के लिए विख्यात हैं। जनसंख्या की भिन्नता के कारण भी यहाँ के विकास में अन्तर पाया जाता है।

प्रश्न 2. संवाहनिक वर्षा किसे कहते हैं? विषुवतीय प्रदेशों में इस प्रकार की वर्षा होने का क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर—जब सूर्य लम्बवत् चमकता है और वर्षा प्रतिदिन दोपहर के पश्चात् बिजली की तेज कड़क के साथ होती है तो उसे संवाहनिक वर्षा कहते हैं।

प्रभाव—यह वर्षा नित्य प्रति होती है। अतः जिन स्थानों पर यह वर्षा होती है वहाँ दल-दल पाये जाते हैं। घने सदाबहार वन उगते हैं। इन प्रदेशों में मच्छर एवं विषैले जीव-जन्तु इन प्रदेशों के निवासियों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव

डालते हैं। इन प्रदेशों के निवासी मलेरिया तथा अन्य रोगों से पीड़ित रहते हैं। ये लोग आलसी बन जाते हैं। यहाँ के निवासी अपने स्थाई निवास भूमि पर नहीं बनाते हैं, पेड़ों पर मचान बनाकर रहते हैं। जलवायु अत्यन्त ही असह्य होती है। वर्षा की अधिकता एवं दलदल और घने वनों के कारण यातायात के साधनों का विकास नहीं हो पाया है। भूमध्य रेखीय प्रदेश इस प्रकार की वर्षा के उदाहरण हैं।

प्रश्न 3. मानसूनी प्रदेश में वर्षा की अनिश्चतता के कारण तथा इसके प्रभाव का विवेचन कीजिए।

उत्तर—यहाँ मौसम विशेष में ही सागरीय पवनों के चलने से ही वर्षा होती है। यहाँ वर्षा का होना लघु वायु दाब क्षेत्र के स्वरूप पर निर्भर करता है। अतः वर्षा के समय तथा मात्रा में काफी अनिश्चितता देखने में आती है।

अनिश्चितता के फलस्वरूप कभी-कभी घनघोर वर्षा के कारण नदियों में बाढ़ आ जाती है। नदियों की बाढ़ यातायात को भारी क्षति पहुँचाती। जब वर्षा कम अथवा नहीं के समान होती है तो सूखा पड़ जाता है। 25 सेमी० से कम वर्षा वाले भाग मरुस्थल में परिणित हो जाते हैं। खेती-बाड़ी नष्ट हो जाती है।

प्रश्न 4. सूडानी प्रदेश की जलवायु उसके आर्थिक विकास में किस प्रकार बाधा डालती है ?

उत्तर—यहाँ 5° से 10° अक्षांशों के मध्य 6 से 8 माह तक 10°—15° के मध्य 4-5 माह तथा इसके आगे 2-3 माह तक वर्षा होती है। उच्च अक्षांशों की ओर वर्षा की गहनता भी कम होती जाती है। 20° अक्षांशों के आगे तो मरुस्थली दशा उत्पन्न हो जाती है। यहाँ वर्षा कम होती है और गर्मी खूब पड़ती है, अतः जलवायु शुष्क रहती है। ऐसी जलवायु विकास कार्यों में बाधा पहुँचाती है। जलवायु के कारण अनेक रोग उत्पन्न हो जाते हैं। ये रोग मनुष्य को कार्य करने से रोकते हैं। सिंचाई के साधन पर्याप्त न होने के कारण कृषि कार्य में बाधा पड़ती है।

प्रश्न 5. मानसूनी तथा विषुवतीय वनों के स्वरूप तथा उपयोगिता की तुलना कीजिये।

उत्तर—मानसूनी तथा विषुवतीय वनों का स्वरूप तथा उनकी उपयोगिता—

जो वन विषुवतीय प्रदेशों में पाये जाते हैं उन्हें विषुवतीय वन और जो मानसूनी प्रदेशों में पाये जाते हैं उन्हें मानसूनी वन कहते हैं। मानसूनी वनों की विशेषता वनस्पति में विभिन्नता है। इसका मुख्य आधार वर्षा है। वर्षा की अधिकता और कमी के साथ-साथ इनका स्वरूप भी बदलता रहता है। इसके विपरीत विषुवतीय वनों में अधिक वर्षा के कारण एक से ही वन पाये जाते हैं मानसूनी वनों की लकड़ी बहुत उपयोगी होती है। इन वनों में इमारती लकड़ी पायी जाती है जैसे सागौन, साल, शीशम और सेमल आदि।

उपयोगिता के आधार पर तुलना—

मानसूनी वनों की लकड़ी मुलायम होती है जो फर्नीचर बनाने के काम आती है। इन वनों में बहुत जड़ी बूटियाँ पायी जाती हैं। इन जड़ी बूटियों से औषधियों का निर्माण होता है। इसके विपरीत विषुवतीय वनों में लकड़ी कठोर होती है। इसका फर्नीचर बनाया जा सकता है। परन्तु यह कागज तथा दियासलाई के उपयोग में नहीं आ पाते हैं।

निष्कर्ष यह है कि विषुवतीय वनों की अपेक्षा मानसूनी वन अधिक उपयोगी हैं।

परीक्षोपयोगी एवं बोर्ड परीक्षा में पूछे गये अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न 1. विश्व के भूमध्यरेखीय (विषुवत रेखीय) प्रदेशों का वर्णन निम्नलिखित शीर्षकों के आधार पर करो— (1984, 85)

(स्थिति तथा विस्तार, जलवायु, वनस्पति, पशु, कृषि उपज, मानव-जीवन।)

उत्तर— विश्व के भूमध्यरेखीय प्रदेशों का वर्णन

स्थिति तथा विस्तार—भूमध्यरेखीय जलवायु भूमण्डल के भूमध्य रेखा के दोनों ओर 5° उत्तरी अक्षांश तथा 5° दक्षिणी अक्षांशों के मध्य पायी जाती है। कहीं-कहीं पर इसका विस्तार 10° अक्षांश तक भी है। इस जलवायु में अमेजन नदी का बेसिन, गयाना तट, कांगो नदी का बेसिन, गिनी तट तथा पूर्वी द्वीप समूह शामिल हैं।

जलवायु—इन प्रदेशों में सूर्य वर्ष पर्यन्त सिर के ऊपर चमकता है। अतः यहाँ बारह महीने कड़ी गर्मी पड़ती है। तापक्रम वर्ष भर प्रायः समान ही रहता है। गर्मी का तापमान लगभग 80° फ० तथा जाड़े का 76° फ० रहता है। इन प्रदेशों में वर्षा प्रायः वर्ष भर होती है। वर्षा साधारणतया दोपहर के बाद होती है। वार्षिक वर्षा का माध्यम लगभग 80 सेमी० होता है।

वनस्पति—गर्मी तथा वर्षा की अधिकता के कारण यहाँ घने वन पाये जाते हैं। ये वन इतने घने होते हैं कि सूर्य की किरणें जमीन तक नहीं पहुँच पातीं। वृक्षों के ऊपर अनेक बेलें तथा लताएँ चढ़ी होती हैं। वृक्ष 100 फुट से 200 फुट तक ऊँचे होते हैं। उनकी लकड़ी अत्यन्त कठोर होती है। पेड़ों के नीचे अन्धेरा छाया रहता है। इन वनों में कई प्रकार के वृक्ष पाए जाते हैं जिनमें से अधिक प्रसिद्ध वृक्ष महोगनी, रबड़, आबनूस, सिनकोना, ताड़, कोको और तट के साथ-साथ नारियल है।

कृषि उपज—इस खण्ड के तटीय भागों में जहाँ वन काट दिए गए हैं विशेषतया जावा और मलाया में कृषि की जाती है। प्रसिद्ध उपज गन्ना, कहवा, रबड़, नारियल, कोको, केला और गर्म मसाला हैं। ब्राजील में संसार भर में सबसे अधिक कहवा होता है। मलाया रबड़ की उपज के लिए संसार में प्रथम है। जावा चीनी के लिए प्रसिद्ध है। पूर्वी द्वीप समूह में गर्म मसाला बहुत होता है।

पशु—यहाँ पर बन्दर, साँप, छिपकली, चमगादड़, मेंढक, हाथी, गैंडा, दरयाई घोड़े, मगरमच्छ, रंग-बिरंगे पक्षी, कीड़े-मकोड़े आदि पाए जाते हैं।

मानव जीवन—इन देशों की जलवायु स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है और हरियाली अति घनी है। अतः जनसंख्या बहुत कम है। बस्तियाँ प्रायः नदियों के तट अथवा वनों के साफ किए हुए भागों में मिलती हैं। यहाँ के लोग कद के छोटे, रंग काला तथा नाक चपटी होती है। गर्मी अधिक पड़ने के कारण प्रायः नंगे रहते हैं। ये लोग जंगली जानवरों का शिकार करके, वन के फलों को खाकर तथा केले खाकर अपना निर्वाह करते हैं। लकड़ी काटना, रबड़ इकट्ठा करना, हाथी दाँत इकट्ठा करना तथा मछली पकड़ना यहाँ के मनुष्यों का मुख्य उद्यम है। ये लोग

पेड़ों की शाखाओं पर अपने रहने के लिए मकान बनाते हैं। ये लोग शिकार करने के लिए अधिकतर धनुषवाण का प्रयोग करते हैं। ये लोग जंगली तथा असभ्य हैं। इन लोगों को शरीर गुदवाने का बहुत शौक होता है। यहाँ नदियों के अतिरिक्त आवागमन के अन्य साधन प्राप्त नहीं हैं।

प्रश्न 2. विश्व के मानसूनी प्रदेशों का वर्णन निम्नांकित शीर्षकों के आधार पर प्रस्तुत कीजिए— (1987, 88, 90)

(1) स्थिति विस्तार, (2) जलवायु, (3) प्राकृतिक वनस्पति, (4) कृषि, (5) आर्थिक विकास।

उत्तर—

मानसूनी प्रदेश

(1) स्थिति तथा विस्तार—मानसूनी प्रदेश महाद्वीपों के पूर्वी भागों में विषुवतीय प्रदेश के उत्तर तथा दक्षिण 30° अक्षांश तक पाये जाते हैं। यह जलवायु भारत, पाकिस्तान, बंगला देश, बर्मा, थाईलैण्ड, लाओस, वियतनाम, कम्बोडिया, चीन का दक्षिणी भाग, उत्तरी पूर्वी आस्ट्रेलिया, पूर्वी अफ्रीका, मालागासी द्वीप, दक्षिणी पूर्वी ब्राजील तट, मध्य अमेरिका, यू० एस० ए० का फ्लोरिडा राज्य, कैरीबियन सागर के द्वीप तथा सीमावर्ती दक्षिणी अमेरिका का उत्तरी तट इस जलवायु के अन्तर्गत आता है।

(2) जलवायु—इस प्रदेश से गर्मी की ऋतु में समुद्र की ओर से चलने वाली मौसमी पवनों द्वारा वर्षा होती है। जाड़े की ऋतु में यहाँ सामान्य रूप से ट्रेड पवन चलते हैं और मौसम शुष्क रहता है। इन प्रदेशों में दो ऋतुएँ जाड़ा और गर्मी स्पष्ट दिखाई देती हैं। यहाँ का औसत तापमान 26·7° से० होता है। यहाँ पर वर्षा 50 सेमी से 200 सेमी तक होती है। कहीं-कहीं वर्षा 50 सेमी से कम भी होती है। वर्षा की मात्रा और समय अनिश्चित होता है। अधिक वर्षा वाले भागों में बाढ़ आ जाती है।

(3) प्राकृतिक वनस्पति—अधिक वर्षा वाले भागों में घने मानसूनी वन उगते हैं। 100 सेमी से 200 सेमी तक के वर्षा वाले भागों में विरल वन तथा 50 सेमी वर्षा वाले भागों में शुष्क वन पाये जाते हैं। इससे कम वर्षा वाले भाग मरुस्थलों में परिणित हो जाते हैं। इन वनों की विशेषता यह है कि यहाँ एक विशेष ऋतु में पतझड़ हो जाता है। इन वनों में उपयोगी काष्ठ वाले वृक्ष उगते हैं। सागौन, साल, शीशम, तून, हल्दू, अर्जुन, आम, सेमल, महुआ, चन्दन आदि के वृक्ष प्रसिद्ध हैं। बाँस, बेंत तथा नारियल भी उगता है।

(4) कृषि—मानसूनी प्रदेश कृषि प्रधान प्रदेश हैं। इन प्रदेशों में संसार का 80% चावल, 90% गन्ना, 98% जूट, 70% तिलहन, 70% दालें, 80% चाय, 90% कहवा और 20% कपास पैदा होता है। इसके अतिरिक्त जौ, चना, गेहूँ, तम्बाकू, दालें आदि भी पैदा होती हैं। यहाँ के निवासियों का प्रधान पेशा कृषि है। ये लोग प्राचीन काल से ही सभ्य हैं।

(5) आर्थिक विकास—विश्व की अनेक सभ्यताओं का विकास यहाँ से हुआ है। मानसूनी प्रदेशों में पशु पालन भी विशेष महत्वपूर्ण है। इन प्रदेशों में जहाँ खनिज पदार्थ मिलते हैं वहाँ आधारित उद्योग-धन्धे खूब विकसित हैं। लोहा-कोयला पर आधारित उद्योग का खूब विकास हुआ है। इन प्रदेशों में लोहा-इस्पात, चीनी, सीमेण्ट, जूट, कागज, वैज्ञानिक उपकरण, रसायन, सिगरेट आदि के उद्योग-धन्धे अधिक विकसित हैं।

मानसूनी प्रदेश अपनी घनी आबादी के लिए प्रसिद्ध हैं। एशिया और मध्य अमेरिका के मानसूनी क्षेत्र तो अति प्राचीन सभ्यताओं के केन्द्र स्थल रहे हैं।

मानसूनी प्रदेश सभ्यता की दौड़ में बहुत आगे बढ़ रहे हैं। इन प्रदेशों की गणना विकासशील देशों में की जाती है। यहाँ के लोगों का पर्याप्त आर्थिक विकास हो गया है। ये प्रदेश विश्व में अपनी प्राचीन सभ्यता, कृषि, पैदावार, वन सम्पदा, उद्योग-धन्धों तथा घनी जनसंख्या के लिए प्रसिद्ध हैं। इनका संसार के आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन में प्रमुख स्थान है। इन प्रदेशों में संसार के अनेक बड़े नगर भी पाये जाते हैं, जैसे—कलकत्ता, दिल्ली, ढाका, रंगून, बैंकाक, रियोडिजेनेरो आदि।

प्रश्न 3. उष्ण मरुस्थलीय जलवायु (सहारा तुल्य प्रदेशों) का वर्णन निम्नलिखित बिन्दुओं के सापेक्ष करो— (उ० प्र०, 1985, 86)

(स्थिति विस्तार, जलवायु, प्राकृतिक वनस्पति, मानव क्रिया-कलाप।)

उत्तर—

उष्ण मरुस्थलीय प्रदेश

(1) स्थिति तथा विस्तार—उष्ण मरुस्थलीय प्रदेश महाद्वीपों के पश्चिमी भागों में 15° से 30° अक्षांश तक के बीच फैले हुए हैं। इनमें सहारा मरुस्थल, कालाहारी मरुस्थल, आटाकामा का मरुस्थल, कोलोरेडो का रेगिस्तान प्रमुख है।

(2) जलवायु—उष्ण मरुस्थलों में वर्षा का अभाव है। घोर गर्मी पड़ती है। दिन में तापमान 50° सें० तक पहुँच जाता है सबसे अधिक तापमान 54·4° सें० तक पहुँच जाता है। दिन और रात के तापमान में बड़ा अन्तर होता है। रातों में तापमान गिर जाता है। दैनिक ताप का अन्तर (परिसर) 20° सें० तक मापा गया है।

इसका अर्थ यह हुआ कि रात को कड़ाके की ठण्ड पड़ती है। यहाँ पर दिन-रात के ताप में विशेष अन्तर आने के कारण चट्टानें फैलती और सिकुड़ती हैं और इस क्रिया से चूर्ण-चूर्ण होकर रेत में परिणित हो जाती हैं। अतः यहाँ रेत की अधिकता है। यहाँ धूल भरी आँधियाँ चला करती हैं। भारत की 'लू', सहारा की 'हरमत्ताना' पवन बड़ी कष्टदायक होती है। यहाँ वार्षिक वर्षा 10 सेमी० से भी कम होती है।

(3) वनस्पति—शुष्क जलवायु एवं वर्षा की कमी के कारण यहाँ कटीली झाड़ियाँ उगती हैं। यहाँ कीकड़, बबूल, झरबेरी, नागफनी, कटहेरी आदि उगती हैं। नदियों या स्रोतों के पास जहाँ कुछ जल उपलब्ध होता है वहाँ खजूर के पेड़ उगते हैं और साधारण कृषि की फसलें उत्पन्न कर ली जाती हैं। इनमें ज्वार, बाजरा, मक्का, तरबूज मुख्य हैं। हरे-भरे प्रदेशों का मरुद्यान (नखलिस्तान) कहते हैं। नील, सिन्धु, दजला-फरात, सर-आमू, कोलोरेडो, आदि नदियाँ इन प्रदेशों में होकर बहती हैं। अतः नदियों की घाटियाँ बड़ी उपजाऊ हैं।

(4) मानव कार्य-कलाप तथा जन-जीवन—मरुस्थलों को दो भागों में बाँटा जा सकता है। (1) रेतीले, (2) चट्टानी। यहाँ के बालू के ढेर जमा होते रहते हैं। इन प्रदेशों के लोग दो प्रकार के होते हैं—(1) सौदागर, (2) पशुओं को चराने वाले (बद्दू)। सौदागर लोग ऊँटों पर सामान लाद कर काफिलों के रूप में एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करते रहते हैं। बद्दू लोग, भेड़-बकरियाँ, घोड़े-गधे पालते हैं। अवसर पाकर ये सौदागरों पर आक्रमण भी कर देते हैं। मरुस्थलों में बस्तियाँ दूर

होती हैं। यहाँ के लोग कच्ची ईंटों के छोटे-मोटे घर बनाते हैं। भयंकर आँधियों में मार्ग अवरुद्ध हो जाते हैं। अतः रास्तों में यहाँ के लोग तारागणों की चाल के सहारे दिशा ज्ञात करते हैं। ज्योतिष विद्या और गणित में ये लोग बड़े निपुण होते हैं। तारागणों का इन्हें अच्छा ज्ञान होता है। मरुस्थलों में खनिज पदार्थ भी मिलते हैं। मरुस्थलों में 'पेट्रोलियम' का अतुल भण्डार है। नदियों की घाटी में निवास करने वाले लोग खेती करते हैं और स्थायी जीवन व्यतीत करते हैं। जैसे—मिस्र, ईराक, ईरान आदि के निवासी।

प्रसिद्ध नगर—काहिरा, सिकन्दरिया, बसरा, बगदाद, अदन, तेहरान, दमिश्क, ऐन्टोफेगस्ता, जद्दा, कुवैत, स्वेज, काँदली आदि प्रसिद्ध नगर हैं।

प्रश्न 4. सवाना तुल्य जलवायु (सूडानी जलवायु) का भौगोलिक वर्णन निम्नलिखित शीर्षकों के आधार पर कीजिए—

(स्थिति—विस्तार, जलवायु, प्राकृतिक सम्पदा, उपज एवं मानव जीवन)।

उत्तर—(1) स्थिति तथा विस्तार—ये प्रदेश भूमध्य रेखा के दोनों ओर 5° अक्षांस से 20° अक्षांसों उत्तर व दक्षिण में पाये जाते हैं। इसकी जलवायु अफ्रीका, दक्षिणी अमेरिका और आस्ट्रेलिया में पाई जाती है। कहीं-कहीं इनका विस्तार 30° अक्षांसों तक भी है।

(2) जलवायु—भूमध्य रेखीय प्रदेशों के सीमावर्ती भागों में वर्षा अधिक होती है। ज्यों-ज्यों उत्तर-दक्षिण दूर हटते जाते हैं वर्षा की मात्रा में कमी आती जाती है। भूमध्य रेखा के पास वाले भागों में वर्षा 200 सेमी० तक होती है। दूसरे क्षेत्रों में वर्षा 25 सेमी० ही रह जाती है। इस प्रदेश की यह विशेषता है कि यहाँ ऋतुओं का अभाव होने लगता है। गर्मी में अधिक गर्मी पड़ती है और दिन का तापमान 26° सेग्रे० से 33° सेग्रे० तक रहता है। शीतकाल का औसत तापमान 21° सेग्रे० के लगभग रहता है।

(3) प्राकृतिक सम्पदा—यहाँ पर भूमध्य रेखीयप्र देशों से सटे भागों में घने वन उगते हैं ज्यों-ज्यों दूर हटते जाते हैं, त्यों-त्यों वर्षा की मात्रा में कमी होती जाती है और वनस्पति में अन्तर आता जाता है। मध्यवर्ती भागों में घास के मैदान उगते हैं जिनको अफ्रीका में 'सवाना' तथा दक्षिणी अमेरिका में 'पम्पास' कहते हैं। इन घास के मैदानों के मध्य में कहीं-कहीं वृक्ष उगते हैं। इन वृक्षों में यूकेलिप्टस, क्यूबराको, इमली तथा ताड़ के वृक्ष मुख्य हैं। यहाँ की घास लम्बी तथा भूरी होती है। यह घास $1\frac{1}{2}$ मी० से $4\frac{1}{2}$ मी० तक लम्बी होती है।

(4) कृषि उपज—यहाँ पर घास के मैदानों के मध्य सिंचाई सुविधा के आधार पर गेहूँ, चावल, मक्का, ज्वार, बाजरा, तम्बाकू तथा शाक-भाजी पैदा की जाती है।

(5) जीव-जन्तु—यहाँ पर दो प्रकार के जीव-जन्तु पाये जाते हैं—(1) हिंसक जीव, (2) अहिंसक जीव। अहिंसक जीवों में हिरन, जिराफ, जेबरा, नीलगाय, कंगारू, बारहसिंगा, खरगोश, लोमड़ी आदि। हिंसक जीवों में शेर, तेंदुआ, चीता, जंगली कुत्ता, लकड़बग्घा आदि हैं। इन हिंसक जीवों का रंग घास के रंग जैसा होता है और घास में छिपे रहते हैं। जब अहिंसक जीव घास चरने आते हैं तो उन पर अचानक आक्रमण कर देते हैं। इसके अतिरिक्त, अधिक वर्षा वाले भागों में दरियाई

घोड़ा, घड़ियाल, मगरमच्छ आदि पाये जाते हैं। यहाँ पर 'जी-जी' नामक जहरीली मक्खी भी पाई जाती है जिसके काटने से पशुओं और मनुष्यों को भयंकर रोग उत्पन्न हो जाते हैं। इन प्रदेशों में 'शिकार' पर्याप्त मात्रा के मिलते हैं। इसलिए ये प्रदेश संसार के 'आखेट स्थल' कहलाते हैं।

(6) मानव जीवन—यहाँ के निवासी 'हब्शी' कहलाते हैं जिनका कद छोटा, रंग काला, होंठ मोटे, नाक चपटी तथा बाल घुँघराले होते हैं। ये लोग बड़े सहनशील तथा आलसी होते हैं। यूरोप के गोरे लोग इनका व्यापार भी करते थे।

गोरे लोगों के सम्पर्क से इनकी उत्पन्न सन्तान को 'वण्टू' कहा जाता है। ये लोग मिट्टी के कच्चे मकान एवं घास फूँस के बने झोपड़ों में रहते हैं। इनके गाँवों के चारों ओर मिट्टी की दीवार का परकोटा होता है। इस परकोटे के बाहर खाइयाँ खुदी रहती हैं। आस-पास विषयुक्त लकड़ियाँ बिखरी रहती हैं। जिससे दुश्मन आक्रमण करके अन्दर न घुस सके। इनका मुख्य भोजन गेहूँ, मक्का की रोटी, दूध एवं माँस है। ये लोग गर्मी के कारण वस्त्रों का कम से कम प्रयोग करते हैं। आभूषण पहिनने के बड़े शौकीन होते हैं। ये लोग जादू-टोना एवं मूर्ति पूजा में विश्वास करते हैं।

(7) व्यवसाय—इनका मुख्य व्यवसाय कृषि एवं पशुपालन है। ये लोग गाय, बैल, घोड़े, खच्चर तथा बकरियाँ पालते हैं। इसके अतिरिक्त घोड़े के जीन, लगाम, थैलियाँ, मिट्टी के बर्तन, चाकू, कैंची, तलवार, कड़े, हार आदि वस्तुओं को बनाते हैं।

(8) प्रसिद्ध नगर—खारतून, किन्शासा, लैगोस, कानो, रेसिक, रेपडी जीनरो प्रमुख नगर हैं।

बहु विकल्पीय प्रश्न

सही विकल्प चुनिए—

प्रश्न 1. उष्ण मरुस्थलों की मुख्य उपज निम्नलिखित में से कौन सी है— (1986)

(क) केला, (ख) रबड़,
(ग) खजूर, (घ) जैतून।

उत्तर—(ग) खजूर।

प्रश्न 2. अनन्नास किस प्राकृतिक प्रदेश की मुख्य उपज है— (1986)

(क) मानसूनी प्रदेश, (ख) भूमध्य रेखीय प्रदेश,
(ग) मरुस्थलीय प्रदेश, (घ) प्रेरी प्रदेश।

उत्तर—(ख) भूमध्य रेखीय प्रदेश।

प्रश्न 3. बुशमैन किस मरुस्थल के निवासी हैं— (1987)

(क) थार मरुस्थल, (ख) गोबी का मरुस्थल,
(ग) आटाकामा का मरुस्थल, (घ) कालाहारी का मरुस्थल।

उत्तर—(घ) आटाकामा का मरुस्थल।

प्रश्न 4. गोभी का रेगिस्तान किस महाद्वीप में है— (1987)

(क) अफ्रीका, (ख) एशिया,
(ग) उत्तरी अमेरिका, (घ) आस्ट्रेलिया।

उत्तर—(ख) एशिया।

प्रश्न 5. अफ्रीका में घास के मैदान क्या कहलाते हैं— (1984, 91)

(क) सवाना, (ख) प्रेरी,
(ग) स्टैप्स, (घ) पम्पास।

उत्तर—(क) सवाना।

प्रश्न 6. निम्नलिखित में से किस प्राकृतिक प्रदेश में सबसे अधिक वर्षा होती है— (1989)

(क) विषुवतीय प्रदेश, (ख) भूमध्य सागरीय प्रदेश,
(ग) मानसूनी प्रदेश, (घ) पश्चिमी यूरोपीय प्रदेश।

उत्तर—(क) विषुवतीय प्रदेश।

21 शीतोष्ण कटिबन्धी प्रदेश

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. पश्चिमी यूरोपीय सदृश प्रदेश में स्थित दो औद्योगिक केन्द्रों के नाम बताइये। (1987)

उत्तर—(1) बर्मिंघम—लोहा-इस्पात (ब्रिटेन)।
(2) मास्को—लोहा-इस्पात (सोवियत संघ)।

प्रश्न 2. शीतोष्ण घास के प्रदेश के कौन से दो उप-विभाग किये जाते हैं?

उत्तर—(1) मन्दोष्ण,
(2) शीतल शीतोष्ण।

प्रश्न 3. जैतून का तेल, रेशम तथा किसमिस ये तीनों किस एक प्रदेश से प्राप्त किए जा सकते हैं?

उत्तर—भूमध्य सागरीय प्रदेश से प्राप्त किए जा सकते हैं।

प्रश्न 4. टोकियो, न्यूयार्क तथा लन्दन में कौन नगर शेष दो से भिन्न प्राकृतिक प्रदेश में स्थित है?

उत्तर—लन्दन (पश्चिमी यूरोपीय प्रदेशों में)।

प्रश्न 5. विनीपेग के आस-पास का क्षेत्र किस कृषि उपज के लिए प्रसिद्ध है? (1985)

उत्तर—गेहूँ की उपज के लिए प्रसिद्ध है।

परीक्षोपयोगी एवं बोर्ड परीक्षा में पूछे गये अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न 1. दुग्ध व्यवसाय संसार के किस देश में सबसे अधिक विकसित है? (1984, 86, 89, 90)

उत्तर—डेनमार्क।

प्रश्न 2. विश्व का सबसे बड़ा बूचड़खाना कहाँ है ? (1987)

उत्तर—शिकागो (सं० रा० अमेरिका) ।

प्रश्न 3. निम्नांकित स्थान किस देश से सम्बन्धित हैं— (1984)

(क) पिट्सवर्ग (ख) रूर

उत्तर—(क) पिट्सवर्ग—सं० रा० अमेरिका ।

(ख) रूर—पश्चिमी जर्मनी ।

प्रश्न 4. खिरगीज किस प्राकृतिक प्रदेश के निवासी हैं ? (1989)

उत्तर—स्टेप्स प्रदेश के निवासी हैं ।

प्रश्न 5. सोयाबीन किस देश की देन है ? (1986)

उत्तर—चीन ।

प्रश्न 6. लन्दन किस नदी के किनारे बसा है ? (1984)

उत्तर—टेम्स नदी पर बसा है ।

प्रश्न 7. पोत निर्माण में कौन-सा देश अग्रसर है ? (1987)

उत्तर—जापान ।

प्रश्न 8. दक्षिणी अमेरिका में घास के मैदान क्या कहलाते हैं ?

उत्तर—पम्पास ।

प्रश्न 9. भूमध्य सागरीय जलवायु में उगने वाले दो फलों के नाम बताओ ।

उत्तर—(1) नाबू, (2) नारंगी ।

प्रश्न 10. 'हरिकेन' क्या हैं ?

उत्तर—मैक्सिको की खाड़ी से चलने वाले झंझावात को 'हरिकेन' कहते हैं । ये सं० रा० अमेरिका में आते हैं ।

प्रश्न 11. 'टाइफून' कहाँ आते हैं ?

उत्तर—प्रशान्त महासागर में चीनी तट पर चलने वाले झंझावात टाइफून कहलाते हैं । ये चीन तथा जापान में आते हैं ।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. शीतोष्ण प्रदेश की जलवायु की विशेषताएँ बताइए ।

उत्तर—(1) यहाँ की जलवायु मरुस्थलों की भाँति शुष्क नहीं है ।

(2) गर्मी की ऋतु में चक्रवात आते हैं जिनसे वर्षा होती है ।

(3) कभी-कभी संवहनिक क्रिया के द्वारा हल्की वर्षा होती है ।

(4) यहाँ वृक्षों के पनपने योग्य वर्षा नहीं होती है ।

प्रश्न 2. मन्दोष्ण जलवायु की विशेषताएँ बताइए ।

उत्तर—मन्दोष्ण जलवायु—

(1) यहाँ सर्दियों में अत्यधिक सर्दी पड़ती है ।

(2) सागरीय प्रभाव के कारण दक्षिणी गोलार्द्ध के क्षेत्र अधिक ठण्डे नहीं होते ।

(3) उत्तरी गोलार्द्ध के क्षेत्र कम गर्म होते हैं ।

(4) इन क्षेत्रों में वर्षा अधिकांश गर्मी में होती है ।

प्रश्न 3. महाद्वीपों के मन्दोष्ण पश्चिमी भाग में जाड़ों में मुख्यतया वर्षा क्यों होती है ?

उत्तर—जाड़े के दिनों में शीतकालीन चक्रवात ध्रुवीय ठण्डी तथा वाष्पपूर्ण मन्दोष्ण पवनों के सम्मिश्रण से पैदा हो जाते हैं। इसी कारण यहाँ सर्दियों में वर्षा होती है।

प्रश्न 4. भूमध्य सागरीय प्रदेश में गर्मी की शुष्क ऋतु होते हुए भी वृक्ष सदाबहारी क्यों रह पाते हैं ?

उत्तर—भूमध्य सागरीय प्रदेश में जाड़ों में वर्षा होती है। सीमित अवधि में वर्षा सामान्य स्तर की होती है। परन्तु इस ऋतु में वाष्पीकरण अपेक्षाकृत कम होने से प्रभावी सिद्ध होती है। क्योंकि भूमि की अधिक मात्रा में जल सोखने का समय मिल जाता है। गर्मी के दिनों में गर्मी अपेक्षाकृत कम पड़ती है, अतः वृक्ष सदावहारी रहते हैं।

प्रश्न 5. मन्दोष्ण पूर्वी प्रदेश में जाड़े की अपेक्षा गर्मी में क्यों अधिक वर्षा होती है ?

उत्तर—जाड़ों में महाद्वीपीय ठन्डी हवाएँ नहीं चलतीं। वर्षा गर्मी में अधिक होती है। वर्षा मानसूनी पवनों से होती है। यहाँ झंझावातों का भी प्रयोग रहता है। परन्तु ये झंझावात ग्रीष्म कालीन वर्षा के दिनों में चलते हैं। इसी कारण गर्मी में अधिक वर्षा होती है।

प्रश्न 6. चीन सदृश्य प्रदेश में कृषि उपजों में वहुत विविधता क्यों है ?

उत्तर—वर्षा तथा तापमान की भिन्नता एवं उपयुक्तता के कारण यहाँ साल-भर खेती की जाती है। मक्का, चावल, गन्ना, कपास तथा तम्बाकू पैदा की जाती है। चूंकि यहाँ आर्द्र वन पाये जाते हैं।

प्रश्न 7. शीतल शीतोष्ण पश्चिमी प्रदेश का सबसे अधिक विस्तार किस महाद्वीप में है और क्यों ?

उत्तर—शीतल शीतोष्ण पश्चिमी प्रदेश का विस्तार सबसे अधिक यूरोप महाद्वीप में है। यह पेटी 45° से 65° या 70° अक्षांश तक फैली हुई है। यह प्रदेश पश्चिम में समुद्र तट से पूर्व की ओर उस स्थान तक फैले हैं जहाँ से आगे जाड़े के 3 महीनों से अधिक समय का तापमान हिमांक के नीचे चला जाता है।

प्रश्न 8. सागरीय धाराओं का जलवायु पर क्या और कैसे प्रभाव पड़ता है ?

उत्तर—यदि सागरीय धारा गर्म होती है तो उस प्रदेश की जलवायु को गर्म कर देती है और यदि धारा ठन्डी होती है तो उस प्रदेश की जलवायु को ठन्डी कर देती है। इनसे वर्षा, तापमान, कोहरा तथा तूफानों की उत्पत्ति होती है। कालाहारी मरुस्थल एवं ओटाकामा के मरुस्थल की उत्पत्ति समीप बहने वाली ठन्डी धाराओं के कारण हुई है। जापान तट तथा न्यूफाउण्ड लैण्ड में घना कोहरा धाराओं के मिलने के कारण छाया रहता है।

प्रश्न 9. शीतोष्ण घास में मैदानों में पशु पलन तथा कृषि प्रसार में क्या सम्बन्ध है ?

उत्तर—इन प्रदेशों में छोटी मुलायम घास के मैदान होते हैं, जिनमें पशु चारण आसानी से किया जा सकता है। घास के मैदान वहाँ उगते हैं जहाँ वर्षा

अच्छी हो जाती है। अच्छी वर्षा तथा उर्वरा भूमि कृषि कार्य में सहायक होती है। अब यहाँ कृषि कार्य चरवाही को खदेड़ कर बड़े पैमाने पर होने लगा है।

प्रश्न 10. पोल्डर क्या है ? (1988)

उत्तर—हालैण्ड में पुश्ते बाँधकर समुद्र का पानी निकालकर काफी भूमि प्राप्त कर ली है। यहाँ डेरी फार्म अति विकसित हैं। इस क्षेत्र को पोल्डर क्षेत्र कहते हैं।

प्रश्न 11. उत्तरी अमेरिका में वृहत झीलों का आर्थिक विकास में क्या महत्व है ?

उत्तर—यहाँ की वृहत झीलों के समूह महाद्वीप के पर्याप्त अन्दर तक यातायात का साधन बना हुआ है। यह झील समूह जलवायु की विषमता को भी कम कर देता है। इस प्रकार यह झील समूह यहाँ के आर्थिक विकास में सहायक होता है। इन झीलों के पास के क्षेत्रों में उद्योगों का काफी विकास हुआ है। क्लीव लैण्ड और डेट्राइट औद्योगिक नगर मिशीगन झील के किनारे स्थित हैं।

प्रश्न 12. चीन सदृश प्रदेश में जनसंख्या की सघनता क्यों पाई जाती है ?

उत्तर—ये भाग खेती के लिए अत्यधिक उपयुक्त है। यहाँ पर पशु पालन भी किया जाता है। माँस के लिए सुअर भी पाले जाते हैं। जापान मछली मारने में बहुत आगे है। इसी कारण इस प्रदेश में जनसंख्या सघन है।

प्रश्न 13. पश्चिमी यूरोप सदृश प्रदेश में दुग्ध व्यवसाय क्यों उन्नतिशील है ? (1987)

उत्तर—इस प्रदेश में घास को उगाना तथा चरागाह विकसित करना यहाँ की विशेषता है। इसी कारण यहाँ पशु पाले जाते हैं। दूध देने वाले पशुओं की अधिकता के कारण दुग्ध व्यवसाय उन्नतिशील है।

प्रश्न 14. भूमध्य सागरीय प्रदेश को विश्व का उद्यान क्यों कहते हैं ?

उत्तर—यह प्रदेश संसार का उद्यान कहा जाता है क्योंकि यहाँ अनेक प्रकार के फल के पेड़ उगाये जाते हैं। यहाँ सुगन्धित फल भी उगाये जाते हैं जिनसे इत्र तैयार किए जाते हैं। यहाँ पर उगने वाले वृक्ष फल उत्पादन के अतिरिक्त सुन्दर उद्यानों के दृश्य उपस्थित करते हैं। अतः ये विश्व उद्यान कहलाते हैं।

प्रश्न 15. प्रेरी प्रदेश में कृषि में यन्त्रों का क्यों अधिक प्रयोग होता है ?

उत्तर—इन क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर खेती होती है। दो सौ हेक्टेयर के क्षेत्र भी छोटे माने जाते हैं। इसी कारण जुताई, बुवाई तथा मड़ाई का काम मशीनों से होता है। खेतों के बड़े-बड़े आकार एवं जनसंख्या की कमी के कारण खेती करने में यन्त्रों का प्रयोग किया जाता है।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. पश्चिमी यूरोप में औद्योगिक विकास के क्या आधार हैं ? वहाँ के उद्योग-धन्धों पर प्रकाश डालिए। (1987)

उत्तर—पश्चिमी यूरोप विश्व का एक पूर्ण विकसित क्षेत्र है। इस क्षेत्र में स्थित सभी देशों जैसे रूस, फ्रांस, जर्मनी, इंग्लैण्ड आदि ने औद्योगिक क्षेत्र में बहुत बड़ी उन्नति की है। इस प्रदेश के औद्योगिक विकास के अग्रलिखित आधार हैं—

(1) **उत्तम जलवायु**—पश्चिमी योरोप की जलवायु उत्तम है जिसमें मनुष्य भली-भाँति कार्य कर सकते हैं। यह जलवायु उद्योग-धन्धों की स्थापना के लिए भी अनुकूल है। इस जलवायु पर समुद्र तट का पूर्ण प्रभाव है। जलवायु सम शीतोष्ण है जो स्वास्थ्यवर्धक है।

(2) **खनिजों की अधिकता**—पश्चिमी यूरोप में लोहा, कोयला एवं अन्य खनिज पदार्थ अधिक मात्रा में उपलब्ध हैं। ये सभी खनिज औद्योगिक विकास का प्रमुख आधार हैं।

(3) **वन सम्पदा**—पश्चिमी यूरोप के वनों में उत्तम प्रकार की लकड़ी मिलती है। जिससे फर्नीचर तथा कागज तैयार किया जाता है। इसके लिए नार्वे, स्वीडन अधिक प्रसिद्ध हैं।

(4) **पशु धन**—पश्चिमी यूरोप में पशु धन अधिक विकसित है, इस आधार पर डेरी तथा माँस पेकिंग के उद्योग चलते हैं।

(5) **वैज्ञानिक तकनीकी का विकास**—पश्चिमी यूरोप के सभी देश आधुनिक वैज्ञानिक तकनीकी के विकास में अधिक बढ़े-चढ़े हैं। इंजीनियरिंग तथा रसायन में इन देशों ने काफी उन्नति की है।

(6) **परिश्रमी तथा कार्यकुशल व्यक्ति**—पश्चिमी यूरोप के देशों के निवासी बड़े मेहनती एवं कार्यकुशल हैं। इसका प्रमुख कारण यह है कि वहाँ की जलवायु स्फूर्तिदायक है जिसमें मनुष्य कई घण्टों लगातार कार्य कर सकते हैं।

पश्चिमी यूरोप के प्रमुख उद्योग-धन्धे

(1) **मत्स्य उद्योग**—उत्तरी अमेरिका के पश्चिमी तट पर एवं यूरोप के उत्तर पश्चिमी तट पर मछली उद्योग का बहुत विकास हुआ है। पश्चिमी यूरोप के तटीय भाग में उत्तरी सागर में मछली पकड़ने का एक प्रमुख केन्द्र है—"डौगर बैंक।" इस स्थान पर मेकरेल, काड, हैरिंग, साल्मन आदि मछलियाँ पकड़ी जाती हैं।

(2) **खान उद्योग**—ये प्रदेश खनिज पदार्थों में संतृप्त होने के कारण यहाँ कोयला और लोहा भारी मात्रा मे पाए जाते हैं। ग्रेट ब्रिटेन, जर्मनी और टस्मानिया कोयले की विशाल खानों के लिए प्रसिद्ध हैं। कोयले के कारण ही ग्रेट ब्रिटेन उन्नति को प्राप्त है। फ्रांस, जर्मनी एवं संयुक्त राज्य अमेरिका में लोहा अधिक मात्रा में पाया जाता है। इसके अतिरिक्त यहाँ सोना, चाँदी, सीसा, जस्ता, ताँबा, आदि खनिज पदार्थ पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं।

(3) **वन उद्योग**—यहाँ के वन शीतोष्ण प्रदेश के वन हैं अतः मूल्यवान एवं मुलायम लकड़ी प्राप्त होती है। इन प्रदेशों की लकड़ी की लुगदी से कागज, दियासलाई और कृत्रिम रेशम बनाया जाता है। इस प्रकार इस प्रदेश के वन बड़े उपयोगी हैं।

(4) **पशु पालन**—पश्चिमी यूरोपीय प्रदेशों में पशु पालन उद्योग अति विकसित है। डेनमार्क और न्यूजीलैण्ड संसार में दुग्ध व्यवसाय के लिए प्रसिद्ध हैं। यहाँ की गाएँ अच्छी नस्ल की और अधिक दूध देने वाली होती हैं। यहाँ दूध से मक्खन, पनीर तथा दूध का पाउडर बहुत अधिक मात्रा में तैयार होता है। ग्रेट ब्रिटेन, हालैण्ड, फ्रांस में पशु पालन बहुत उन्नतिशील अवस्था में है।

(5) **आधुनिक उद्योग-धन्धे**—आधुनिक उद्योगों का विकास, ग्रेट ब्रिटेन, पश्चिमी जर्मनी, बेल्जियम, फ्रांस आदि में बहुत उच्च स्तर पर हुआ है। आधुनिक वस्त्र उद्योग का जन्मदाता ग्रेट ब्रिटेन को ही माना जाता है। ग्रेट ब्रिटेन में लोहा-इस्पात उद्योग तथा अन्य नये उद्योग भी अति विकसित हैं। पश्चिमी जर्मनी में वस्त्र उद्योग, रासायनिक उद्योग तथा लोहा-इस्पात उद्योग का विकास अन्य देशों की तुलना में बहुत अधिक है।

प्रश्न 2. पम्पाज तथा प्रेरी एक दूसरे से भिन्न हैं। इनकी सकारण तुलना कीजिए।

उत्तर— **पम्पाज तथा प्रेरी क्षेत्रों में अन्तर**

पम्पाज	प्रेरी
(1) **विस्तार**—ये भाग 30° से 40° अक्षांशों के बीच महाद्वीपों के भीतरी भागों में होते हैं।	(1) इनका विस्तार 45° से 60° अक्षांश तक महाद्वीपों के मध्य-भागों में होता है।
(2) **प्रदेश**—ये प्रदेश तूरानी जलवायु में हैं, तूरान ताशकन्द (मध्य एशिया) के आस-पास का क्षेत्र है।	(2) प्रेरी—विनपिग, मध्य कनाडा के आस-पास का क्षेत्र है।
(3) **तापमान**—ये कम ठण्डे हैं।	(3) ये अधिक ठण्डे हैं।
(4) **पैदावार**—यहाँ कपास, मक्का आदि की फसलें होती हैं।	(4) यहाँ पैदावार सम्भव नहीं है।
(5) **फसलें**—यहाँ वर्ष भर फसलें उगती हैं।	(5) यहाँ बर्फ पिघलते ही केवल 5 माह तक खेती होती है।
(6) **घास का नाम**—यहाँ पैदा होने वाली घास का नाम अल्फाफा है।	(6) यहाँ पैदा होने वाली घास का नाम क्लोवर है।
(7) **मानव जाति**—यहाँ की मानव जाति "खिरगीज" कहलाती है।	(7) यहाँ की चरवाहा जाति को 'कज्जाक' के नाम से पुकारते हैं।

प्रश्न 3. शीतोष्ण तथा उष्ण घास बहुल प्रदेशों की मानव के कार्य-कलापों की दृष्टि से सकारण तुलना कीजिये। (1985)

उत्तर—उष्ण घास के प्रदेशों को हम सूडान तुल्य जलवायु के प्रदेश पुकारते हैं। शीतोष्ण घास के मैदानों में दो प्रकार के प्रदेश सम्मिलित हैं—

(1) मन्दोष्ण जलवायु प्रदेश, (2) शीतल शीतोष्ण जलवायु प्रदेश।

मानव कार्य-कलाप की दृष्टि से शीतोष्ण एवं उष्ण घास के प्रदेशों की तुलना निम्न प्रकार है—

उष्ण घास के मैदान	शीतोष्ण घास के मैदान
(1) **पशु पालन**—इन प्रदेशों में पशु पालन उद्योग विकसित नहीं हो पाया है।	(1) इन प्रदेशों में पशु पालन उद्योग विकसित हो चुका है।

(2) हानिकारक जन्तु—इन प्रदेशों में एक जहरीली मक्खी "जी-जी" नाम की पाई जाती है जो पशुओं को बहुत हानिकारक है।	(2) यहाँ इस प्रकार का कोई जीव-जन्तु नहीं पाया जाता जो पशुओं को हानिकारक हो।
(3) घास—यहाँ घास अधिक लम्बी तथा कड़ी होती है।	(3) यहाँ घास लम्बाई में कम तथा मुलायम होती है।
(4) विज्ञान व तकनीकी विकास—इन प्रदेशों में विज्ञान व तकनीकी विकास नहीं हुआ है।	(4) इन प्रदेशों में विज्ञान व तकनीकी का विकास अधिक हुआ है।
(5) कृषि—यहाँ कृषि साधारण तरीकों से होती है। मशीनों का अधिक प्रयोग नहीं होता है।	(5) यहाँ कृषि उन्नतिशील ढंग से आधुनिक कृषि तकनीकी व मशीनों द्वारा होती है।

प्रश्न 4. जापान किस प्राकृतिक प्रदेश में स्थित है? इस स्थिति ने उसके विकास को कैसे प्रभावित किया है? स्पष्ट कीजिए। (1986)

उत्तर—जापान, चीन सदृश प्रदेश में स्थित है। इस देश की स्थिति और विस्तार ने उसके विकास को प्रभावित किया है। समुद्र तट पर होने के कारण यहाँ गर्मी की वर्षा के साथ-साथ जाड़े की वर्षा का लाभ भी मिल जाता है। यहाँ न तो अधिक गर्मी पड़ती है और न अधिक सर्दी। यहाँ शहतूत के वृक्षों पर रेशम के कीड़े पाले जाते हैं। यहाँ चाय की खेती उत्तम ढंग से होती है। खेती के साथ-साथ लोग पशुपालन का कार्य भी करते हैं।

जापान में मनुष्यों के उद्योग हैं—मछली पालन, कागज उद्योग, रेशम वस्त्र उद्योग, ऊनी वस्त्र उद्योग, लोहा-इस्पात उद्योग तथा मशीनरी उद्योग आदि हैं।

जापान की उपरोक्त स्थिति से उसके विकास पर अग्रलिखित प्रभाव पड़ा है—

(1) सम जलवायु में लोगों की कार्यक्षमता में वृद्धि—सम जलवायु होने से जापानी लोग कठिन परिश्रमी एवं अधिक समय तक कार्य करते हैं। इस प्रकार कार्यक्षमता बढ़ने से देश के विकास को सहारा मिल गया है।

(2) औद्योगिक विकास—एशिया में लोहा-इस्पात उद्योग का विकास सबसे अधिक जापान में हुआ। जापान में प्रत्येक प्रकार की मशीनरी का उत्पादन होता है।

(3) शिक्षा एवं संस्कृति—देश समृद्ध होने के कारण उसकी शिक्षा और संस्कृति बहुत उन्नति की ओर अग्रसर है तथा निकट भविष्य में जापान और विकास करेगा।

(4) सुख साधनों में वृद्धि—कार्यक्षमता बढ़ने से ही सुख समृद्धि प्राप्त होती है। जापान के निवासियों के लिए सभी सुख के साधन उपलब्ध हैं जिससे मानव जीवन बड़ा आनन्दमय हो गया है।

प्रश्न 5. शीतोष्ण घास बहुल प्रदेश के पुराने तथा आधुनिक महत्व का विवेचन कीजिये तथा स्पष्ट कीजिये कि वहाँ के पर्यावरण का इसमें क्या योगदान है?

उत्तर—शीतोष्ण घास बाहुल्य प्रदेशों का पुराना तथा आधुनिक महत्व

पुराना महत्व—इन प्रदेशों के निवासी अति प्राचीन काल से ही खानाबदोश जातियों का सा जीवन व्यतीत करते थे। भारतवर्ष में भी इन जातियों का प्रवेश हुआ। आक्रमणकारियों के रूप में भारत, ईरान, योरोप में ये घुस पड़े। इन लोगों का मुख्य उद्यम पशुपालन था। अपने पशुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान तक घुमा-फिरा कर चराया करते थे। इनके घर स्थाई नहीं थे। बहुत कम लोग खेती-बाड़ी करते थ। भेड़-बकरियाँ, ऊँट, गधे, घोड़े, गाय आदि इनके पालतू पशु थे। चरागाहों पर अधिकार जमाने की दृष्टि से इनमें आपस में संघर्ष होता रहता था। चरवाही तथा स्फुट खेती में लगे ये लोग स्वाभाविक रूप से घुमन्तू थे। लगातार वर्षों सूखा पड़ जाने से इन लोगों में संघर्ष और भी बढ़ जाते थे। शक्तिशाली अनेक जातियों ने कमजोर जातियों को पड़ौसी खेतिहर देशों में धकेल दिया। प्राचीन काल में यहां औद्योगिक विकास न था। लोगों को खनिज सम्पदा के महत्व एवं वितरण का पता न था।

आधुनिक महत्व—18वीं तथा 19वीं शताब्दी में यहाँ यूरोप की सभ्य जातियों ने प्रवेश किया। पहले इन्होंने चरवाही का कार्य प्रारम्भ किया। फिर कृषि कार्य प्रारम्भ हुआ। चरवाही कार्य को कृषि कार्य ने धकेल दिया। धीरे-धीरे यहां कृषि का इतना विकास हुआ कि अब यहाँ बड़े पैमाने पर खेती होती है। यहां अब खेत बड़े होते हैं जिनमें मशीनों से कार्य किया जाता है। सौ, दो सौ हेक्टेयर के खेत भी अब छोटे-छोटे माने जाते हैं। यहाँ हजार, पाँच सौ हेक्टेयर के खेत तो मध्यम वर्ग के माने जाते हैं। जुताई, बुवाई, मढ़ाई का सभी कार्य मशीनों से होता है। ट्रैक्टर और हारवेस्टर मशीन के स्थान पर कम्बाइन नामक मशीन का प्रचार बढ़ रहा है। यहाँ व्यक्तिगत जोतों के स्थान पर सहकारी तथा सामूहिक फार्म बनाए गये हैं। यहाँ की भूमि बड़ी उपजाऊ है और 'अनाज की खत्ती' कहलाती है। इन क्षेत्रों में गेहूँ, जौ, जई, राई, चुकन्दर, अलसी, सूरजमुखी, सोयाबीन की खेती खूब उन्नति पर है। इन क्षेत्रों में अनाज, तिलहन, माँस, खालें, ऊन का भारी मात्रा में निर्यात होता है। कृषि तथा पशुओं से सम्बन्धित उद्योगों का अधिक विकास हुआ है।

जहाँ खनिज पदार्थ मिलते हैं वहाँ अन्य उद्योग भी अधिक विकसित हुए हैं जैसे लोहा-इस्पात तथा मशीनरी उद्योग आदि।

पशु पालन का आधुनिक ढंग से विकास हुआ है। पशु दूध तथा मांस दोनों दृष्टियों से पाले जाते हैं।

इन प्रदेशों में अब बड़े-बड़े नगर विकसित हुए हैं। जैसे—ताशकन्द, विनीपेग, बुडापेस्ट, एडीलेड आदि।

इस प्रकार शीतोष्ण घास बहुल प्रदेशों के पुराने और आधुनिक जीवन में विशेष अन्तर आया है।

परीक्षोपयोगी एवं बोर्ड परीक्षा में पूछे गये अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1. विश्व के भूमध्य सागरीय प्रदेशों का वर्णन निम्न केन्द्र बिन्दुओं के सापेक्ष में कीजिए— (1985, 86, 88)

स्थिति विस्तार, जलवायु, प्राकृतिक वनस्पति एवं उपज, मानव कार्य-कलाप तथा जन-जीवन, प्रसिद्ध नगर। (उ० प्र० 1984, 88)

उत्तर—(1) स्थिति तथा विस्तार—भूमध्य सागरीय जलवायु के प्रदेश उष्ण मरुस्थलों के आगे 30° से 45° अक्षांशों के बीच उत्तरी तथा दक्षिणी गोलार्द्धों में महाद्वीपों के पश्चिमी भागों में पाये जाते हैं। इस प्रकार की जलवायु भूमध्य सागर के तटीय भागों में अधिक पाई जाती है, इसलिये इसे भूमध्य सागरीय जलवायु कहते हैं। इसका विस्तार निम्न प्रकार से है :—

यूरोप में—पुर्तगाल, स्पेन, दक्षिणी फ्रान्स, यूगोस्लाविया, बुल्गारियां, यूनान।
एशिया में—सीरिया, तुर्की, इजरायल, लेबनान।
अफ्रीका में—मोरक्को, अल्जीरिया।
उत्तरी अमेरिका में—केलीफोर्निया की घाटी।
दक्षिणी अमेरिका—मध्य चिली।
आस्ट्रेलिया में—दक्षिणी-पश्चिमी कोना तथा तस्मानिया द्वीप, उत्तरी न्यूजीलैण्ड।

(2) जलवायु—इन प्रदेशों में वायु दाब पेटियों के खिसकने के कारण जाड़े की ऋतु में वर्षा होती है। ग्रीष्म ऋतु शुष्क रहती है। इन प्रदेशों में गर्मी की ऋतु में तापमान 21°C से 27°C तक रहता है। शीत ऋतु में तापमान 7°C से 10°C तक रहता है। इस प्रकार गर्मी और सर्दी की ऋतु के तापमान में 15°C से अधिक अन्तर नहीं आ पाता है। इन प्रदेशों में 40 सेमी से 80 सेमी तक वर्षा होती है। यहाँ जाड़े में ठण्डक रहती है परन्तु बर्फ सामान्यतः नहीं पड़ती है। बसन्त तथा शरद ऋतु अति आकर्षक होती है। इन ऋतुओं में सैलानी लोगों का यहाँ अधिक आवागमन होता रहता है।

(3) वनस्पति—शुष्क ग्रीष्म ऋतु तथा शीतकालीन वर्षा के कारण यहाँ पर उगने वाली वनस्पति भी अपनी विशेषता रखती है। यहाँ पर बड़े आकार के वृक्ष नहीं उगते हैं। वृक्षों की छाल मोटी, पत्तियाँ मोटे दल की एवं चिकनी तथा कटी-फटी व नुकीली होती हैं, जिससे वाष्पीकरण द्वारा अधिक नमी बाहर न निकलने पाये। वृक्षों की जड़ें गहरी होती हैं जो ग्रीष्म ऋतु की शुष्कता में भी भूमि से अपना भोजन ग्रहण कर सकें। इन वृक्षों में कार्क, ओक, यूकेलिप्टस, साइप्रस, चेस्टनस्ट, पोपलर, लारेल, शहतूत, जैतून आदि प्रमुख हैं। ये प्रदेश संसार के उद्यान (बाग) कहे जाते हैं। यहाँ पर नींबू, नारंगी, माल्टा, अंजीर, अनार, खुमानी, आड़ू, अलूचा, बादाम, अखरोट, पिस्ता, अंगूर आदि की बागवानी होती है। भूमध्य सागरीय प्रदेशों में फलों के बाग खूब लगाये जाते हैं। जाड़े और गर्मियों दोनों में यहाँ फसलें पैदा होती हैं। गेहूँ, जौ, जई, राई, चुकन्दर की खेती खूब होती है।

(4) मानव कार्य-कलाप तथा जन-जीवन—भूमध्य सागरीय प्रदेश प्राचीन काल से ही सभ्यताओं के केन्द्र रहे हैं। इन प्रदेशों में मनुष्य खेती करते हैं, बागवानी का कार्य करते हैं तथा पशुपालन भी करते हैं। फलों से मेवे, मुरब्बे तथा अंगूर से शराब तैयार करते हैं। शहतूत के वृक्षों पर रेशम के कीड़े पालते हैं और रेशम प्राप्त करते हैं। यहाँ पर गेहूँ, चावल, मक्का, तम्बाकू मुख्य फसलें हैं। गाय, भेड़ तथा बकरी पाली जाती हैं।

इन प्रदेशों में कहीं-कहीं खनिज भी मिलते हैं और उनसे सम्बन्धित उद्योगों का विकास हुआ है। भूमध्य सागरीय जलवायु के सुहावने मौसम तथा स्वच्छ आकाश में फिल्म व्यवसाय को अधिक प्रोत्साहन मिला है। यहाँ इंजीनियरिंग, वस्त्र उद्योग, सिगरेट, कागज, रेशम, रसायन, लोहा-इस्पात के उद्योगों का अधिक विकास हुआ है। फलों पर आधारित उद्योग अधिक विकसित हुए हैं।

(5) **प्रसिद्ध नगर**—मिलान, बार्सेलोना, फ्रान्सिसको, मेलबोर्न, पर्थ, मार्सेल्ज, लासएंजलस, रोम, इस्तम्बोल, सेंटियागो, केपटाऊन इस प्रदेश के बड़े-बड़े एवं प्रसिद्ध नगर हैं।

प्रश्न 2. पश्चिमी यूरोप तुल्य प्रदेशों की स्थिति, विस्तार, जलवायु, वनस्पति और मानव-जीवन का वर्णन कीजिए। (1986, 87)

उत्तर—स्थिति एवं विस्तार—ये प्रदेश महाद्वीपों के पश्चिमी तटों पर स्थित हैं। इनका विस्तार 45° अक्षांस से 60° अक्षांश के बीच है। यूरोप में—डेनमार्क, नार्वे, हालैण्ड, जर्मनी, फ्रांस, बेल्जियम, उत्तरी स्पेन, ब्रिटिश द्वीप समूह, उत्तरी अमेरिका में—ब्रिटिश, कोलम्बिया, दक्षिणी अमेरिका में—दक्षिण चिली, आस्ट्रेलिया में—न्यूजीलैण्ड और तस्मानिया द्वीप में यह जलवायु पाई जाती है।

जलवायु—इन प्रदेशों में पछुआ हवाएँ चलती हैं। अतः पछुआ हवाओं का प्रभाव रहता है। इन भागों में पछुआ हवाओं के प्रभाव से वर्ष भर वर्षा होती रहती है। इन प्रदेशों में गर्मी का औसत तापमान 15° से 18° तक रहता है। शरद ऋतु में यहाँ का तापमान लगभग 15° रहता है। शरद ऋतु में यहाँ बर्फ गिरती है। पर्वतीय क्षेत्रों के तराई वाले भागों में 100 सेमी से 150 सेमी तक वर्षा होती है। गर्मी का समय भी अधिक गर्मी वाला नहीं होता है, क्योंकि आकाश में बादल छाए रहते हैं।

प्राकृतिक वनस्पति—यहाँ चौड़ी पत्ती वाले पतझड़ वाले वन पाए जाते हैं। इन वनों में मुख्य वृक्ष बर्च, ओक, एरा, ऐस्पिन, एल्म, मैपल, चीड़, फर, पाइन, सीडार आदि पाए जाते हैं। इन प्रदेशों की लकड़ी बहुत उपयोगी होती है। ये वन अधिक घने नहीं होते हैं।

मानव जीवन—पश्चिमी यूरोपीय प्रदेश में आधुनिक ढंग से खेती होती है। यन्त्रों के प्रयोग द्वारा खेती करने का विकसित रूप प्रतीत होता है। यहाँ की उपज संसार के अन्य देशों की तुलना में सबसे अधिक है। यहाँ की मुख्य उपज गेहूँ, जौ, सेव और चुकन्दर आदि है।

इन प्रदेशों में खनिज पदार्थ भी पाए जाते हैं। पश्चिमी जर्मनी, ब्रिटिश कोलम्बिया और न्यूजीलैण्ड में कोयले की खानें हैं।

ब्रिटिश कोलम्बिया में सोना, चाँदी, बाक्साइट, सीसा और ताँबा भी पाया जाता है।

इन प्रदेशों में मशीनरी उद्योग, कोयला उद्योग, लोहा-इस्पात उद्योग, सूती वस्त्र उद्योग, ऊन उद्योग, दूध उद्योग, सीमेन्ट उद्योग, मछली एवं चमड़ा उद्योग तथा रासायनिक उद्योग बहुत विकसित हैं। यहाँ प्रति व्यक्ति आय अधिक है। यहाँ का जीवन-स्तर बहुत ऊँचा है। यहाँ पर कला-कौशल की उन्नति आश्चर्यजनक है। इन प्रदेशों के देश विकसित एवं उन्नतिशील गिने जाते हैं।

प्रश्न 3. विश्व के चीन तुल्य प्रदेशों का भौगोलिक वर्णन करो ।

(1986, 91)

उत्तर—(1) स्थिति एवं विस्तार—ये प्रदेश उ० व द० गोलार्द्धों में भूमध्य रेखा के दोनों ओर 30° अक्षांश तथा 45° अक्षांशों के बीच में पाये जाते हैं, जो महाद्वीप के पूर्वी भाग हैं—ये निम्नलिखित देशों में पायी जाती हैं। मध्य तथा उत्तरी चीन, आस्ट्रेलिया का दक्षिणी पूर्वी तटीय भाग, दक्षिणी जापान, अफ्रीका में नेटाल, यूरोप और पूर्वी ब्राजील, पूर्वी संयुक्त राज्य के भाग हैं।

(2) जलवायु—इस प्रदेश की जलवायु कड़ी है। गर्मी की ऋतु में गर्मी अधिक तथा शीत ऋतु में ठण्ड पड़ती है। इस जलवायु के प्रदेशों में धरातल की असमानताओं के कारण उनकी जलवायु में कुछ अन्तर पाया जाता है। गर्मी का औसत ताप 55° से 60°F है। शीत ऋतु का 23° से 55° F तक है। उत्तरी गोलार्द्ध में वार्षिक तापान्तर दक्षिणी गोलार्द्ध की अपेक्षा अधिक है। इसका कारण यह है कि उत्तरी गोलार्द्ध प्रदेश की जलवायु समुद्री प्रभाव से प्रभावित है। यहाँ पर वर्षा का वार्षिक औसत 30" से 45" तक है। धरातलीय असमानता के कारण वर्षा में भी असमानता पाई जाती है। वर्षा अधिकतर गर्मी के मौसम में होती है। वैसे प्रत्येक मास में छुट-पुट वर्षा होती रहती है। अमेरिका तथा एशिया में बड़े-बड़े तूफान और आँधियाँ आती हैं। चीन में जाड़ों में चक्रवातों के द्वारा वर्षा होती है। मानसूनी वर्षा यहाँ पर होती है। लेकिन तापक्रम कम पाया जाता है। शीत ऋतु में बर्फ तक पड़ जाती है। उत्तरी चीन में नदियाँ तक जम जाती हैं।

(3) वनस्पति—ग्रीष्मकालीन वर्षा होने के कारण वनस्पति खूब उगती है। इन प्रदेशों में चौड़ी पत्ती वाले सदाबहार वृक्ष मिलते हैं। जिनमें ओक, मैपल, वालन्ट, कैम्फर, बीच के लियालिरिल मुख्य हैं। इन भागों में चाय खूब पैदा होती है। वनस्पति सघन नहीं है। जहाँ वर्षा की अधिकता है, वहाँ बाँस, शहतूत, सीडर आदि के वृक्ष उगते हैं। चौड़ी पत्ती वाले वृक्ष मिलते हैं, जो छतरीनुमा होते हैं। आस्ट्रेलिया में यूकेलिप्टस के वृक्ष मिलते हैं।

(4) कृषि—जलवायु कृषि के लिए उत्तम है। खेती में यहाँ विशेष उन्नति हुई है। यहाँ पर गेहूँ, ज्वार, बाजरा, नील, अफीम, कपास, चावल, चाय, तम्बाकू, गन्ना आदि की खेती होती है। चीन में चावल काफी मात्रा में होता है। चाय यहाँ की एक मुख्य उपज तथा धन्धा है। ब्राजील कहवा के लिए प्रसिद्ध है।

(5) खनिज—चीन के रोंसी रमांसी क्षेत्र में कोयला, संयुक्त राज्य में कोयला तथा आस्ट्रेलिया में सिडनी और न्यूकेसिल के बीच में भी थोड़ा-बहुत कोयला मिलता है। चीन में हुयेव प्रान्त में लोहा मिलता है। कुछ देशों में मिट्टी का तेल निकाला जाता है।

(6) उद्योग-धन्धे—खेती यहाँ का विशेष धन्धा है। चीन में रेशम का उद्योग, दक्षिणी पूर्वी आस्ट्रेलिया के तटीय भागों में पशुपालन, ब्राजील व यूराग्वे में ऊन तथा ब्राजील में सूअर के माँस का उद्योग, यू० एस० ए० में सूती वस्त्र का उद्योग काफी तरक्की पर है। यहाँ पर उद्योगों की काफी तरक्की हो रही है।

प्रश्न 4. शीतोष्ण घास के मैदानों (स्टैपी सदृश्य प्रदेशों) का भौगोलिक वर्णन करो ।

(1989)

उत्तर—स्थिति तथा विस्तार—ये प्रदेश यूरेशिया में प्रशान्त महासागर से लेकर वाल्टिक महासागर तक फैला हुआ है। इसका विस्तार उत्तरी गोलार्द्ध में 45° से 60° अक्षांश तक पाया जाता है। उत्तरी गोलार्द्ध में ये भाग महाद्वीपों के अन्दर मुख्य भागों में स्थित हैं। दक्षिणी गोलार्द्ध में भी इन्हीं अक्षांशों में ये भाग पाये जाते हैं।

विस्तार—यूरेशिया में यह क्षेत्र कारापेथियन तथा जर्मनी की पहाड़ियों से लेकर दक्षिण में हिन्दूकुश तथा काकेशस पर्वत, पूर्व में थ्यानशान तथा अल्टाई पर्वत मालाओं से घिरा हुआ है। यह भाग सोवियत रूस के अन्तर्गत आता है। सोवियत रूस के यूक्रेन, कजाकिस्तान, तुर्कमान, खिरगीज, उजबेग आदि रियासतें इस भाग में शामिल हैं। इसे स्टेपी या स्टेप्स प्रदेश कहते हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका में टेक्सास रियासत से कनैडा के अलवर्टा प्रान्त तक विस्तार है। दक्षिणी अमेरिका में अर्जेन्टाइना और आस्ट्रेलिया में मरे-डार्लिन नदियों का वेसिन है। दक्षिणी अफ्रीका में ड्रेकेन्स वर्ग पर्वत माला के पश्चिम में लगभग समतल या पठारी प्रदेश हैं।

जलवायु—यहाँ की जलवायु अधिक शीतल है। इन प्रदेशों में शीत ऋतु 8 माह तक रहती है और तापमान हिमांक से नीचे उतर जाता है। यहाँ 30 सेमी से 50 सेमी तक वर्षा होती है। गर्मियों में इसका तापमान 15°C रहता है।

प्राकृतिक वनस्पति—इन प्रदेशों में मुलायम, छोटी प्राकृतिक घास के बड़े-बड़े मैदान हैं इसका मुख्य कारण वर्षा की कमी है। इन मैदानों में पशुचारण का कार्य होता है। यहाँ अल्फाफा और क्लोवर नाम की घासें उगती हैं जो पशुओं के चारे के लिए उत्तम होती है। पेड़-पौधे कम उगते हैं। उत्तरी भागों में कोणधारी वृक्ष देखने को मिलते हैं।

उपज—इन मैदानी भागों में सिंचाई की सुविधा उपलब्ध करके खेती-बाड़ी बड़े पैमाने पर होने लगी है। खेत बड़े-बड़े होते हैं। इन खेतों का विस्तार चार-पाँच सौ हेक्टेयर तक होता है। इनमें आधुनिक मशीनों जैसे ट्रेक्टर, हारवेस्टर तथा थ्रेसर का प्रयोग जुताई, बुवाई एवं फसल की मढ़ाई के लिए किया जाता है। यहाँ पर सहकारी तथा सामूहिक फार्म हैं जो 10 हजार हेक्टेयर तक के होते हैं। इनमें अब कम्वाइन मशीन का प्रयोग किया जाता है। इन प्रदेशों में गेहूँ की खेती बड़े पैमाने पर होती है। इसके अतिरिक्त जौ, जई, राई, आलू, चुकन्दर की फसलें भी उगाई जाती हैं। इन प्रदेशों को 'अनाज की खत्ती' की संज्ञा दी जाती है।

पालतू पशु—इन प्रदेशों में भेड़, बकरियाँ, घोड़े, गधे, गाय, बैल आदि पालतू पशु हैं जो दूध, मक्खन, पनीर, खाल एवं मांस सभी दृष्टियों से उपयोगी हैं। ये कृषि कार्यों में भी सहायक होते हैं।

मानव कार्य-कलाप तथा जन-जीवन—यहाँ पर प्राचीन काल से ही मनुष्य पशुपालन का धन्धा करते आये हैं। मध्य एशिया की अनेक जातियाँ भारत तथा यूरोप के देशों में चली गईं और वहीं बस गईं। इन लोगों का जीवन घुमन्तू (खानाबदोश) है। एक चरागाह से दूसरे चरागाह तक पशुओं को चराते-फिरते हैं। गर्मी के दिनों में ये लोग उत्तर की ओर और जाड़े के दिनों में दक्षिण की ओर बढ़ जाते हैं। यह इनका प्राचीन धन्धा है। परन्तु आज वैज्ञानिक उन्नति के आधार पर ये चरागाह बड़े-बड़े सामूहिक कृषि फार्मों के रूप में बदल गये हैं। अब पशुपालन के

साथ-साथ कृषि भी इनका प्रमुख धन्धा है। ये प्रदेश गेहूँ उत्पादन के घर हैं। यहाँ के मूल निवासी अब भी शिकार करते हैं जानवरों की खाल के वस्त्र बनाते हैं। माँस को खाते हैं। पश्चिमी साइबेरिया के लोग धर्म के कट्टर हैं। ये 'कज्जाक' कहलाते हैं। ये संयुक्त परिवार के रूप में रहते हैं।

इन प्रदेशों से तिलहन, मांस, ऊन, अनाज का भारी निर्यात होता है। जहाँ खनिज पदार्थ मिलते हैं वहाँ उद्योग-धन्धे भी विकसित हुए हैं। जैसे रूस के यूक्रेन क्षेत्र में किपेफ और खारकोफ के पास डान नदी की घाटी में लोहा-इस्पात तथा मशीनरी उद्योग स्थापित है। कैनाडा में टैक्सास में मिट्टी के तेल का भण्डार है। अफ्रीका में इस प्रदेश में जोन्सवर्ग और किम्बरले में हीरा और सोने की खानें हैं।

प्रसिद्ध नगर—इस प्रदेश में विनीपेग, ताशकन्द, बुडापेस्ट, ओमस्क, किपेफ, खारकोक, ऐडीलेड, ओकलाहामा प्रमुख नगर हैं।

बहु विकल्पीय प्रश्न

सही विकल्प चुनिए—

प्रश्न 1. विश्व का 60% कच्चा रेशम प्राप्त होता है— (1984)
(क) भारत, (ख) चीन, (ग) जापान, (घ) कोरिया।
उत्तर—(ग) जापान।

प्रश्न 2. दुग्ध व्यवसाय में विश्व में किस देश का प्रथम स्थान है— (1985, 87, 89)
(क) सं० रा० अमेरिका, (ख) सोवियत संघ, (ग) फ्रान्स, (घ) डेनमार्क।
उत्तर—(ख) सोवियत संघ।

प्रश्न 3. 'कज्जाक' लोग किस प्राकृतिक प्रदेश के निवासी हैं— (1986)
(क) भूमध्य रेखीय प्रदेश, (ख) भूमध्य सागरीय प्रदेश,
(ग) सूडानी प्रदेश, (घ) शीतोष्ण घास के मैदान।
उत्तर—(घ) शीतोष्ण घास के मैदान।

प्रश्न 4. विश्व का सबसे बड़ा पत्तन है— (1989, 88)
(क) न्यूयार्क, (ख) सिडनी, (ग) ग्रुआरलियंस, (घ) केपटाऊन।
उत्तर—(क) न्यूयार्क।

प्रश्न 5. किस जलवायु में रसदार फलों का अधिक उत्पादन होता है— (1986)
(क) भूमध्य सागरीय प्रदेश, (ख) चीन तुल्य प्रदेश,
(ग) मानसूनी प्रदेश, (घ) पश्चिमी यूरोपीय जलवायु के प्रदेश।
उत्तर—(क) भूमध्य सागरीय प्रदेश।

प्रश्न 6. अंगूर की शराब किस जलवायु में अधिक बनाई जाती है— (1986)
(क) चीन तुल्य जलवायु, (ख) भूमध्य सागरीय जलवायु,
(ग) मानसूनी जलवायु, (घ) भूमध्य रेखीय जलवायु।
उत्तर—(ख) भूमध्य सागरीय जलवायु।

22 शीत प्रदेश

राष्ट्रीयकृत पाठ्य पुस्तक में दिये गये प्रश्नों के उत्तर
अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. किन महाद्वीपों में विस्तृत कोणधारी वन प्रदेश पाये जाते हैं ? (1989)

उत्तर—कोणधारी वन एशिया तथा यूरोप महाद्वीपों में सबसे अधिक पाए जाते हैं।

प्रश्न 2. किस राष्ट्र में कोणधारी वनों का सबसे अधिक विस्तार है ?

उत्तर—कनैडा में सबसे अधिक कोणधारी वन पाये जाते हैं।

प्रश्न 3. मूल्यवान समूर वाले किन्हीं दो प्रमुख जन्तुओं के नाम बताइए।

उत्तर—(1) सेविल, (2) मार्टिन।

प्रश्न 4. हिमालय में स्थायी हिमरेखा किस ऊँचाई पर मिलती है ?

उत्तर—4500 मी॰ ऊँचाई पर।

प्रश्न 5. एस्कीमो किस क्षेत्र के वासी हैं ? (1985, 89)

उत्तर—एस्कीमो टुण्ड्रा प्रदेश (ग्रीन लैण्ड तथा कनाडा) के निवासी हैं।

परीक्षोपयोगी एवं बोर्ड परीक्षा में पूछे गये अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1. टुण्ड्रा का क्या अर्थ है ? (1986)

उत्तर—टुण्ड्रा रूसी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है—ध्रुवीय तटवर्ती मैदान या दलदली मैदान।

प्रश्न 2. कम्पास किसे कहते हैं ? (1984)

उत्तर—टुण्ड्रा प्रदेश के आदिवासियों की 'नाव' को कम्पास कहते हैं।

प्रश्न 3. रेडियर कहाँ मिलता है ? (1987, 89)

उत्तर—रेडियर नामक पशु टुण्ड्रा प्रदेश में मिलता है।

प्रश्न 4. इगलू किसे कहते हैं ? (1988)

उत्तर—टुण्ड्रा प्रदेश में जाड़े के दिनों में बर्फ की सिल्लियों से गुम्मदनुमा बने घर इगलू कहलाते हैं।

प्रश्न 5. पेंग्विन चिड़िया किस प्रदेश में पाई जाती है ? (1988)

उत्तर—ध्रुवीय बर्फिस्तान में।

प्रश्न 6. समोयड प्रजाति किस प्रदेश में रहती है ? (1989)

उत्तर—यूरेशिया के टुण्ड्रा प्रदेश में।

प्रश्न 7. बुग्याल किसे कहते हैं ? (1989)

उत्तर—हिमालय पर्वत के चरागाहों को बुग्याल कहते हैं।

प्रश्न 8. अर्द्ध रात्रि के सूर्य दृश्य कहाँ मिलता है ?
उत्तर—टुण्ड्रा प्रदेश में ।

प्रश्न 9. टैगा प्रदेश में किस प्रकार के वन पाये जाते हैं ?
उत्तर—कोणधारी वन ।

प्रश्न 10. 'स्लेज' किसे कहते हैं ?
उत्तर—टुण्ड्रा प्रदेश में रेडियर की हड्डी से निर्मित विना पहियों की गाड़ी स्लेज कहलाती हैं ।

प्रश्न 11. टैगा प्रदेश में उगने वाले दो वृक्ष के नाम लिखो ।
उत्तर—(1) सीडर, (2) स्प्रूस ।

प्रश्न 12. टुण्ड्रा प्रदेश किन अक्षांसों के बोच स्थित है ?
उत्तर—टुण्ड्रा प्रदेश 70° से 80° उत्तरी अक्षांस के वीच स्थित है ।

प्रश्न 13. विस्तृत कोणधारी वन किन अक्षांसों में पाये जाते हैं ?
उत्तर—विस्तृत कोणधारी वन 55° से 65° अक्षांसों में स्थित हैं । कहीं इनका विस्तार 70° उत्तरी अक्षांस तक भी है ।

प्रश्न 14. याक कहाँ पाया जाता है ?
उत्तर—तिव्वत में । (1991)

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. महाद्वीपों के पश्चिमी भाग में कोणधारी वनों के विस्तार की अक्षांसीय सीमाएँ उनके पूर्वी भागों से क्यों भिन्न हैं ?

उत्तर—कोणधारी वन पश्चिमी छोर पर 65° अक्षांश के आस-पास प्रारम्भ हो जाते हैं जहाँ पर चौड़ी पत्ती वाले वृक्षों की कमी देखी जा सकती है । पूर्वी छोर पर यह 55° अक्षांश तक खिसक जाते हैं क्योंकि पूर्वी सीमान्त क्षेत्र अधिक ठण्डे होते हैं । इसका कारण महासागर की ठण्डी धाराएँ हैं ।

प्रश्न 2. कोणधारी वन धीरे-धीरे क्यों बढ़ते हैं ? (1986)

उत्तर—कोणधारी वनों के वृक्ष अपनी सींक जैसी पत्तियों के कारण कठिन ठण्डक झेल लेते हैं । इन वृक्षों की जड़ें भी ऐसी होती हैं जो स्थायी तुषार की स्थिति वाली भूमि से आवश्यकतानुसार जल प्राप्त कर लेती हैं । अतः ये धीरे-धीरे बढ़ते हैं ।

प्रश्न 3. शीत प्रदेशों में खेती क्यों नहीं हो पाती है ?

उत्तर—शीत प्रदेशों में साल भर बर्फ पड़ती है । एक मीटर मोटी बर्फ साधारण बात है । यहाँ इतनी ठण्डक पड़ती है कि पृथ्वी के नीचे का पानी तक जम जाता है । यहाँ स्थाई तुषार स्थिति रहती है । अतः भूमि पानी नहीं सोख पाती है । पानी ऊपर ही बिखर जाता है । यह दलदल का रूप ले लेता है । अतः खेती नहीं होती है ।

प्रश्न 4. भूमि में स्थायी तुषार स्थिति का क्या तात्पर्य है ? इसका पर्यावरण पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

उत्तर—जब किसी स्थान पर इतनी अधिक ठण्डक पड़ती है कि भीतर का पानी जम जाता है तो इसे "स्थाई तुषार स्थिति" कहा जाता है । ऐसी स्थिति के कारण भूमि पानी नहीं सोख पाती है । अतः पानी बिखर कर दलदल का रूप ले लेता है ।

प्रश्न 5. दक्षिणी गोलार्द्ध में विस्तृत कोणधारी वन क्यों नहीं पाए जाते हैं ?

उत्तर—यह अति ठण्डा क्षेत्र है। चार से आठ महीनों का तापमान हिमांक से नीचे रहता है। गर्मी के दिनों का तापमान हमारे यहाँ के कड़ाके की सर्दी की भाँति होता है। बर्फ खूब पड़ती है। अतः इस गोलार्द्ध में विस्तृत कोणधारी वन नहीं पाये जाते हैं।

प्रश्न 6. कोणधारी वनों में स्थायी बस्तियों की कमी क्यों है ? (1984)

उत्तर—कोणधारी वन अपनी अपूर्व वन सम्पदा के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। परन्तु ये वन स्थायी निवास के लिए अधिक आकर्षक नहीं हैं। इसी कारण लोग यहाँ अपने काम या व्यापार के लिए आते हैं, बसने के लिए नहीं। इसी कारण यहाँ स्थाई बस्तियाँ नहीं हैं।

प्रश्न 7. कागज के कारखाने कोणधारी वन प्रदेश की दक्षिणी सीमा पर क्यों विकसित हुए ?

उत्तर—यातायात के साधन उपलब्ध होने के कारण कागज के कारखाने कोणधारी वन प्रदेश की दक्षिणी सीमा पर विकसित हुए हैं। दूसरा कारण मुलायम लकड़ी पास होना भी है।

प्रश्न 8. समूर के फार्म का क्या तात्पर्य है ? इनको स्थापित करने की क्या उपयोगिता है ? (1985, 87, 89)

उत्तर—शीत वन प्रदेशों में जिस स्थान पर समूर वाले जानवर पाए जाते तथा पाले जाते हैं, उनको समूर के फार्म कहते हैं। यहाँ पर जानवरों से समूर प्राप्त करना ही लोगों का उद्देश्य है। समूर मूल्यवान वस्तु है जिससे फर तथा मिन्क कोट बनाये जाते हैं।

प्रश्न 9. टुण्ड्रा प्रदेश को "अल्पकालिक पुष्प वाटिका" क्यों कहा जा सकता है ? (1986)

उत्तर—टुण्ड्रा में कोई भी पौधा एक मीटर से अधिक ऊँचा नहीं हो पाता। इन उगने वाले पौधों में जुलाई-अगस्त में रंग-बिरंगे फूल आते हैं। इस समय टुण्ड्रा को "अल्पकालिक पुष्प वाटिका" कहा जा सकता है।

प्रश्न 10. टुण्ड्रा प्रदेशीय तट पर बन्दरगाह स्थापित करने का क्या महत्व है ? (1987)

उत्तर—टुण्ड्रा प्रदेशीय तट पर बन्दरगाह स्थापित करने का राजनैतिक महत्व है। सोवियत रूस और संयुक्त राज्य अमेरिका दोनों ही इस क्षेत्र पर अपना प्रभुत्व स्थापित करना चाहते हैं। अतः यहाँ चर्चिल (कनाडा), हैमरफास्ट (नोर्वे) कारा (सोवियत संघ) के बन्दरगाह अति महत्वपूर्ण हैं। इन बन्दरगाहों का अपना सामरिक महत्व भी है।

प्रश्न 11. रेनडियर की क्या उपयोगिता है ? (1986, 88, 89)

उत्तर—टुण्ड्रा प्रदेश में रेनडियर गाड़ी खींचने के काम आता है। इस गाड़ी का नाम स्लेज होता है और इसमें पहिए नहीं लगे होते हैं। रेनडियर का दूध तथा गोश्त टुण्ड्रा प्रदेश के निवासियों का मुख्य भोजन है। इसकी खाल से तम्बू तथा चर्बी घरों में जलाने के काम आती है।

प्रश्न 12. अन्टार्कटिका महाद्वीप क्यों वीरान है ?

उत्तर—वहाँ वर्ष भर बर्फ जमी रहती है तथा स्थान रहने योग्य नहीं है। अतः यह महाद्वीप वीरान है। यहाँ बर्फीली आँधियाँ, भीषण वर्षा तथा कठोर सर्दी पड़ती है। अतः यहाँ मानव जीवन सम्भव नहीं है।

प्रश्न 13. पर्यटक उद्योग पर्वतीय भागों में क्यों बढ़ रहा है ? (1986)

उत्तर—पर्वतीय भागों में अनेक पर्यटन स्थल विकसित हो गए हैं। यहाँ अनेक व्यक्ति स्वास्थ्य लाभ के लिए आते हैं। अतः यहाँ पर्यटक उद्योग (होटल उद्योग) का विकास हो रहा है।

प्रश्न 14. वनों को काटने के साथ-साथ उनका लगाना भी क्यों आवश्यक है ?

उत्तर—पेड़ों को काटने से वर्षा, जलवायु तथा पर्यावरण पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। इस विपरीत प्रभाव को दूर करने के लिए वनों को लगाना आवश्यक है।

प्रश्न 15. बुग्याल क्या है ? उनका क्या महत्व है ?

उत्तर—हिमालय में चरागाहों को 'बुग्याल' कहते हैं। पशुपालन तथा फूलों की वाटिका के लिए इनका विशेष महत्व है। इन चरागाहों में भेड़-बकरियाँ पाली जाती हैं जिनसे ऊन तथा दूध प्राप्त किया जाता है।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. बोगोटा नगर के प्रस्तुत (पाठ में) जलवायु आंकड़ों की जाँच कीजिए तथा स्पष्ट कीजिए कि वहाँ सदैव बसन्त ऋतु जैसा तापमान क्यों रहता है ? बोगोटा की जलवायु की श्रीनगर की जलवायु से सकारात्मक तुलना कीजिए।

उत्तर—बोगोटा नगर ऊँचे पर्वतीय प्रदेशों के अन्तर्गत आता है। बोगोटा नगर के तापमान का अध्ययन करने से पता चलता है कि यहाँ 14·4 डिग्री से० ग्रे० से अधिक तापमान नहीं हो पाता। जून तथा जनवरी में एकसा तापमान रहता है तथा किसी भी ऋतु में तापक्रम ऊँचा नहीं होता अर्थात् बोगोटा में औसत तापमान तथा दैनिक तापमान सदैव एक ही रहता है। यही कारण है कि बोगोटा में सदैव बसन्त जैसा ताप ही रहता है।

बोगोटा की तुलना में श्रीनगर की स्थिति बिल्कुल भिन्न है। वहाँ जाड़े में तापमान बहुत गिर जाता है। जून-जौलाई में यह तापमान ऊँचा उठ जाता है अर्थात् 24° से० ग्रे० तक पहुँच जाता है तथा अक्टूबर में 13° से० ग्रे० हो जाता है। गर्मी की ऋतु में यहाँ सुहावना मौसम रहता है जबकि बोगोटा में वर्ष भर तापमान समान रहता है। दोनों की जलवायु के आँकड़े निम्न हैं—

जलवायु का चार्ट

श्रीनगर 34° उ०		जन०	अप्रैल०	जु०	अक्टूबर	वार्षिक
	ताप	1°	13°	24°	13°	13°
	वर्षा	7 सेमी.	7 सेमी.	6 सेमी.	3 सेमी.	63 सेमी.
बोगोटा 40° उ०		जन०	अप्रैल०	जु०	अक्टू०	वार्षिक
	ताप	14°	15°	14°	14°	142°
	वर्षा	6 सेमी.	15 सेमी.	6 सेमी.	17 सेमी.	105 सेमी.

उपर्युक्त चार्ट देखने से ज्ञात होता है कि श्रीनगर जनवरी में अत्यधिक ठण्डा रहता है जबकि जुलाई में सबसे अधिक गर्म रहता है। अप्रैल तथा अक्टूबर में तापमान लगभग समान रहता है।

श्रीनगर में अप्रैल के माह में सबसे अधिक वर्षा होती है अक्टूबर के माह में वर्षा सबसे कम होती है।

बोगोटा में वर्ष भर तापमान लगभग समान रहता है। वर्षा जनवरी तथा जुलाई में लगभग समान (6 सेमी०) रहती है। वर्षा अप्रैल तथा अक्टूबर में सबसे अधिक होती है।

श्रीनगर तथा बोगोटा की जलवायु में पर्याप्त अन्तर है।

प्रश्न 2. पर्वतीय प्रदेशों में जलवायु में नीचे से ऊपर की ओर क्यों और कैसे परिवर्तन आता है? हिमालय पर्वत से उदाहरण लेकर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—पर्वतीय प्रदेशों में मैदानों की अपेक्षा तापमान कम रहता है। ज्यों-ज्यों पर्वतों की ओर बढ़ते जाते हैं यह तापमान घटता चला जाता है। यहाँ तक कि 4500 मीटर की ऊँचाई पर हिम रेखा आ जाती है अर्थात् बर्फ जमना शुरू हो जाती है। हिमालय की पर्वत श्रेणियाँ जैसे एवरेस्ट कंचनजंगा आदि प्रसिद्ध चोटियाँ सदैव हिमाच्छादित रहती हैं। इस प्रकार पर्वतों में अक्षांशीय स्थिति तथा ऊँचाई के अनुसार मन्दोष्ण व शीतोष्ण व शीत जलवायु में अन्तर सदैव नीचे से ऊपर की ओर रहता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि ऊँचाई पर जाने पर वर्षा की दशाओं में अन्तर आ जाता है। मैदानों की अपेक्षा पहाड़ों पर अधिक वर्षा होती है।

प्रश्न 3. कश्मीर तथा स्विट्जरलैण्ड की पर्यटन स्थली के रूप में तुलना कीजिए।

उत्तर—कश्मीर को पृथ्वी का स्वर्ग कहते हैं। इसे भारत का स्विट्जरलैण्ड भी कहते हैं अर्थात् पर्यटन स्थली के रूप में जो महत्व यूरोप में स्विट्जरलैण्ड का है उससे बढ़कर भारत में कश्मीर का है। स्विट्जरलैण्ड में केवल शीतकाल ही देखने को मिलता है जबकि काश्मीर में मन्दोषण तथा शीत दोनों ही मौसम देखने को मिलते हैं। स्विट्जरलैण्ड घाटियों के लिए प्रसिद्ध है जबकि काश्मीर ऊनी तथा रेशमी वस्त्रों के लिए तथा लकड़ी के काम के लिए प्रसिद्ध है। स्विट्जरलैण्ड तथा काश्मीर दोनों ही झीलों के लिए प्रसिद्ध हैं। स्विट्जरलैण्ड का जेनेवा नगर इसी झील के किनारे बसा है जो अनेक अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों के लिए प्रसिद्ध है।

प्रश्न 4. टुण्ड्रा प्रदेश का आधुनिक युग में बढ़ते हुए महत्व का सकारण विवरण दीजिए।

उत्तर—परिचय—टुण्ड्रा प्रदेश दोनों गोलार्द्धों के 60° से 66° उत्तरी अक्षांशों के मध्य पाये जाते हैं। इनका फैलाव यूरेशिया और उत्तरी अमरीका में हैं। यूरेशिया में टुण्ड्रा और उत्तरी अमरीका में उजाड़ खण्ड कहते हैं। कुछ लोग इसे ध्रुव के पास होने के कारण ध्रुवीय निम्न प्रदेश अथवा शीत मरुस्थल की संज्ञा भी देते हैं। (1988)

टुण्ड्रा प्रदेश में जन-जीवन का सामान्य सर्वेक्षण

निवासी और उनका रहन-सहन—इस प्रदेश में खानाबदोश जातियाँ निवास करती हैं। यूरेशिया के टुण्ड्रा प्रदेश में लैम्प, फ़िन्स, समोयड़ी, याकत और टंगस

आदि जातियाँ निवास करती हैं। उत्तरी अमरीका वाले एस्किमो तथा अल्यूटस कहलाते हैं। यह लोग घुमक्कड़ प्रवृत्ति के होते हैं। इनका रहन-सहन बहुत ही निम्न कोटि का है। यह लोग अपना जीवन असभ्य और आदिम जीवन व्यतीत करते हैं।

भोजन—इस प्रदेश के लोगों का भोजन पूर्णरूपेण माँसाहारी है जो कि शिकार के द्वारा प्राप्त किया जाता है। यह लोग कच्चा माँस खाते हैं। ये ह्वेल, सील, बालरस मछली का माँस अधिक खाते हैं। बारहसिंगों तथा ध्रुवीय भालुओं का भी माँस खाया जाता है। यह लोग भोजन भविष्य के लिए नहीं बचाते हैं। कभी-कभी शीतकाल में शिकार न मिलने पर इन लोगों को भूखा ही रहना पड़ता है।

वस्त्र—शीत प्रधान क्षेत्र में गर्म कपड़ों की आवश्यकता होती है। अतः यहाँ पर सील की खाल के वस्त्र पहने जाते हैं। अन्य पशुओं और पक्षियों के चमड़े को भी वस्त्र के रूप में प्रयोग करते हैं। ये लोग चमड़े को दाँतों से छीलकर तैयार करते हैं। ये लोग वस्त्रों को कलात्मक ढंग से बनाते हैं।

निवास और व्यवसाय—इस प्रदेश के लोग स्थाई रूप से मकान बनाकर नहीं रहते हैं और न ही किसी क्षेत्र से जुड़े हुए होते हैं। शिकार की खोज में यह लोग स्थानान्तरित होते रहते हैं। शीत ऋतु में इन्हें सुरक्षित गृह की आवश्यकता पड़ती है। गर्मी की ऋतु में तो ये लोग तम्बू, जो कि खाल के बने होते हैं, से ही काम चलाते हैं।

इन लोगों का मुख्य धन्धा शिकार करना है। यह लोग शीत ऋतु में सील मछली का शिकार करते हैं। सील साँस लेने के लिए बर्फ में छिद्र बना लेती है। ये लोग छिद्रों की सहायता से उसकी उपस्थिति समझकर उस पर प्रहार कर देते हैं और शिकार कर लेते हैं। गर्मियों में वनस्पति आदि उग आती है और जीव-जन्तु दिखाई देने लगते हैं तो उनका शिकार आसानी से किया जा सकता है।

प्राकृतिक सम्पदा एवं उपज—इस प्रदेश में अधिक सर्दी पड़ने के कारण भूमि पर प्रायः हिम ही जमी रहती है। वनस्पति उग ही नहीं पाती है। अतः वनस्पति का अभाव मिलता है। ग्रीष्मकाल में जब बर्फ पिघलती है तो कुछ झाड़ियाँ घास, फूलदार वृक्ष तथा काई, लिचिन, वर्च तथा एल्डर वृक्ष उग आते हैं। अन्य खनिज तथा उपजों का यहाँ पूर्णतः अभाव है।

प्रश्न 5. कोणधारी तथा विषुवतीय वनों के आर्थिक महत्व की सकारण तुलना कीजिए।

उत्तर—कोणधारी तथा विषुवतीय दोनों प्रकार के वन सदाबहार वन होते हैं। कोणधारी वन कम वर्षा वाले और ठण्डे प्रदेशों में पाये जाते हैं। कोणधारी वनों में मुलायम लकड़ी मिलती है। इन लकड़ियों में मुख्य एल्डर, बर्च, स्प्रूस और फर के वृक्ष होते हैं।

इसके विपरीत विषुवतीय वनों में लकड़ी गर्मी के कारण बहुत कठोर है। इन वनों में रवड़ का उत्पादन होता है। वनों का घना और जलवायु खराब होने के कारण विषुवतीय वनों का कम उपयोग हुआ है। यहाँ आवागमन की सुविधायें नहीं हैं। अतः सम्बन्धित उद्योग पनप नहीं पाये हैं।

इस प्रकार कोणधारी वन विषुवतीय वनों से कहीं अधिक उन्नतिशील और महत्वपूर्ण हैं।

प्रश्न 6. बर्फिस्तान कहाँ और क्यों स्थित है ? यहाँ के जन-जीवन का वर्णन कीजिए।

उत्तर— यह प्रदेश उत्तरी तथा दक्षिणी ध्रुवों के समीप पाए जाते हैं। इनके अन्तर्गत ग्रीनलैण्ड, अण्टार्कटिका तथा अन्य छोटे-छोटे द्वीप जो इनके निकट पाये जाते हैं सम्मिलित हैं। ध्रुवों के समीप होने के कारण यहाँ पर सदैव बर्फ जमी रहती है।

हिमाच्छादित प्रदेश में जन-जीवन का सामान्य सर्वेक्षण

निवासी और इनका रहन-सहन—इस प्रदेश में सदैव बर्फ जमी रहने के कारण मानव शून्य पाया जाता है। कुछ लोग ग्रीनलैण्ड के तटों पर निवास करते हैं। जो एस्किमो जाति के हैं, वह लोग मछलियों को पकड़ कर तथा शिकार करके अपना जीवन-यापन करते हैं।

भोजन—यह प्रदेश मानव शून्य प्रदेश है। ग्रीनलैंड में नाम मात्र के एस्किमो लोग रहते हैं जिनका भोजन माँस है। यह लोग मछलियों को मारकर कच्चा ही माँस खा जाते हैं।

वस्त्र—एस्किमो लोग शीत से बचने के लिए सील की खाल से बने वस्त्र पहनते हैं और भी पशुओं के चमड़े से बने वस्त्रों को ही पहनते हैं। यह सील की खाल से वस्त्रों का निर्माण स्वयं ही करते हैं।

निवास और व्यवसाय—इस प्रदेश में नाममात्र की जनसंख्या रहती है जो कि खानाबदोश है। अतः इनका निवास स्थाई नहीं है। शिकारी जीवन-यापन करने की बजह से निवास अस्थाई है। इनका व्यवसाय मछलियाँ पकड़ना तथा शिकार करना है। यह लोग बहुत ही पिछड़े हुए हैं।

प्राकृतिक सम्पदा और उपज—इस प्रदेश में प्राकृतिक सम्पदा बिल्कुल ही देखने को नहीं मिलती है क्योंकि यहाँ की जलवायु इतनी कठोर पायी जाती है कि वनस्पति का उगना सम्भव नहीं है। भूमि सदैव ही हिम से ढकी रहती है। गर्मियों में कहीं-कहीं काई लिचिन, समुद्री घास दिखायी पड़ती है। इसके अलावा कोई भी वनस्पति नहीं उगती है।

अन्य विशेषताएँ—यहाँ की प्रमुख विशेषता यह है कि यहाँ पर हमेशा हिम जमी रहती है जो कभी भी नहीं घुलती है। यहाँ पर लोग निवास नहीं कर सकते हैं क्योंकि जलवायु अत्यन्त शीत और कठोर है। अतः यह क्षेत्र जनशून्य पाया जाता है।

परीक्षोपयोगी एवं बोर्ड परीक्षा में पूछे गये अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न 1. टैगा तुल्य प्रदेशों की विशेषताओं का वर्णन निम्नांकित शीर्षकों के आधार पर कीजिए—

(1) स्थिति-विस्तार, (2) जलवायु, (3) प्राकृतिक वनस्पति, (4) जीव-जन्तु, (5) आर्थिक विकास, (6) मानव जीवन।

उत्तर—

टैगा तुल्य प्रदेश

(1) स्थिति-विस्तार—टैगा प्रदेश उत्तरी गोलार्द्ध में 60° से 70° उत्तरी अक्षांशों के मध्य स्थित है। इस जलवायु के प्रदेश यूरेशि... उत्तरी भाग, यूरोप में नार्वे, फिन्लैण्ड, उत्तरी तथा मध्य रूस, एशिया में रूस क... डा, कनाडा का मध्यवर्ती भाग तथा अलास्का में स्थित हैं।

(2) जलवायु—यहाँ शीत ऋतु लम्बी तथा ठण्डी होती है जिसमें भारी हिमपात होता है। ग्रीष्म ऋतु छोटी होती है जिसमें सामान्य गर्मी पड़ती है। वर्षा वर्ष भर होती है किन्तु शीत ऋतु में हिम कणों के रूप में वर्षा होती है। यहाँ उत्तरी ध्रुव की ओर से बर्फीली हवाएँ चलती हैं।

(3) प्राकृतिक वनस्पति—इन प्रदेशों में शंकुल वन पाये जाते हैं। इन पेड़ों की पत्तियाँ सुई की तरह नुकीली, कठोर तथा लटकी हुई होती हैं। वृक्ष ढालू होते हैं जिनके ऊपर से बर्फ फिसलती रहती है तथा कठोर हिमपात को भी सह लेते हैं। टैगा वनों में सीडर, पाइन, स्प्रूस, लार्च, फर आदि के वृक्ष उगते हैं।

(4) जीव-जन्तु—इन प्रदेशों में समूर वाले पशु पाये जाते हैं। इनमें रेनडियर, कैरीबो, हिरन, बारहसिंगा, बीवर, फिशर, मार्टिन, मिन्क, मस्केट, रीछ, लोमड़ी तथा भेड़िये आदि पशु एवं जीन पाये जाते हैं।

(5) आर्थिक विकास—आर्थिक दृष्टि से यह पिछड़ा प्रदेश है। विषम जलवायु, असमान धरातल, अकुशल निवासियों के कारण उद्योग-धन्धों का विकास नहीं हो पाया है। यहाँ के निवासियों के मुख्य धन्धे लकड़ी काटना, समूर इकट्ठा करना तथा पशु पालना है। रेंडियर पाला जाता है। कनाडा में नाव, जलयान, दियासलाई, कागज की लुगदी बनाई जाती है। अलास्का में सोना, स्वीडन में लोहा, साइबेरिया में लोहा, सोना तथा कोयला निकाला जाता है।

(6) मानव-जीवन—टैगा प्रदेश के निवासी पिछड़े, अविकसित तथा अशिक्षित हैं। जनसंख्या विरल है। विज्ञान, कला और शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़े हुए हैं। किन्तु साहसी, परिश्रमी और ईमानदार हैं। आबादी बिखरी हुई है। बड़े-बड़े नगरों का प्रायः अभाव पाया जाता है।

प्रश्न 2. टुण्ड्रा प्रदेशों का विवरण निम्नलिखित शीर्षकों में दीजिए—

(1) स्थिति एवं विस्तार, (2) जलवायु, (3) प्राकृतिक वनस्पति, (4) जीव-जन्तु, (5) आर्थिक विकास। (1991)

उत्तर—

टुण्ड्रा प्रदेश

(1) स्थिति एवं विस्तार—टुण्ड्रा प्रदेश महाद्वीपों के केवल उत्तरी गोलार्द्ध में $66\frac{1}{2}°$ से लेकर 90° रेखाओं के बीच पाये जाते हैं। इन प्रदेशों का विस्तार कोणधारी वन प्रदेश के ठीक उत्तर में समुद्र तट तक एक सकरी पेटी के रूप में है। यूरेशिया में ये प्रदेश नार्वे, फिनलैण्ड और सोवियत रूस के उत्तरी भाग में तथा उत्तरी अमेरिका में अलास्का और कनाडा के उत्तरी भाग में पाये जाते हैं। ग्रीनलैण्ड और बेफिन द्वीपों के दक्षिणी भाग भी इसी प्रदेश में आते हैं।

(2) जलवायु—ये प्रदेश संसार का सबसे अधिक ठण्डा प्रदेश है। इस प्रदेश में लगभग 8-9 महीने शीत ऋतु रहती है। तुषार तो साल भर पड़ता है। अधिकांश

नमी बर्फ के रूप में पायी जाती है और वर्षा भी बर्फ के रूप में होती है। जाड़े की ऋतु में न्यूनतम तापमान —30°C तक पहुँच जाता है और ग्रीष्म ऋतु का औसत तापमान 10°C से अधिक नहीं होता। गर्मी की ऋतु में बर्फ पिघलकर इधर-उधर बिखर जाती है जिससे भूमि दलदली बन जाती है। यहाँ सूर्य के दर्शन बहुत कम होते हैं। केवल ग[illegible] दिनों में सूर्य क्षितिज पर दिखायी देता है।

(3) प्राकृतिक [illegible]—ध्रुवों के निकट होने और अधिक शीत पड़ने के कारण यहाँ की भूमि वर्ष के अधिकांश महीनों में बर्फ से ढकी रहती है। इसलिए यहाँ प्राकृतिक वनस्पति का उगना सम्भव नहीं है। जब गर्मी के दिनों में 2-3 महीने बर्फ पिघलकर दलदल बना देती है तब यहाँ पर काई और फर्न नाम की घास उग आती है। इसी समय यहाँ कुछ रंग-बिरंगे फूल भी खिल आते हैं। कोणधारी वन प्रदेश की ओर के सिरे पर छोटे-छोटे झाड़ी-झंकुटें उग आते हैं। इस प्रदेश में शायद ही कोई पौधा ऐसा हो जिसकी ऊँचाई एक मीटर से अधिक हो।

(4) जीव-जन्तु—इस प्रदेश का मुख्य पशु रेनडियर है। यह पशु माल ढोने, सवारी चलाने आदि के काम आता है। इसके अलावा कुछ समूर वाले पशु जैसे—सफेद भालू, गिलहरी, लोमड़ी, खरगोश आदि भी यहाँ पाये जाते हैं। समुद्र में ह्वेल और सील मछलियाँ पायी जाती हैं। गर्मी की ऋतु में यहाँ अनेक प्रकार के पक्षी हजारों किलोमीटर की दूरी से आकर बस जाते हैं और शीत ऋतु आते ही अपने-अपने देशों को वापस हो जाते हैं।

(5) आर्थिक विकास—इन प्रदेशों की प्राकृतिक परिस्थितियाँ इतनी विषम हैं कि यहाँ का मानव जीवन बड़ा ही कठिन है। यहाँ के लोग सभ्यता की दौड़ में बहुत पीछे हैं और इनका आर्थिक विकास नाममात्र को है। इन प्रदेशों में घुमक्कड़ जाति के लोग रहते हैं। जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण करते रहते हैं। शिकार करना और मछली पकड़ना इनका मुख्य व्यवसाय है। इनके घर खाल के तम्बुओं के बने होते हैं, जाड़े की ऋतु में यहाँ के लोग बर्फ का घर बनाकर रहते हैं, जिसमें एक छोटा-सा दरवाजा होता है। इस दरवाजे में लेटकर बाहर-भीतर आते-जाते हैं। उनके इन मकानों को इग्लू कहते हैं। रेनडियर इनका मुख्य पशु है। इसी का वह गोश्त खाते हैं और दूध पीते हैं। स्लेज नाम की गाड़ी खींचने और माल ढोने में इसी पशु का प्रयोग किया जाता है। अतः रेनडियर पशु इनके लिए उसी प्रकार वरदान है जिस प्रकार गर्म मरुस्थलों के लिए ऊँट। आजकल इन प्रदेशों का आर्थिक विकास होने लगा है। कोणधारी वन प्रदेशों की ओर के भागों का विकास अधिक हो गया है। साइबेरिया और कनाडा के कुछ भागों में यूरेनियम और सोना मिलने से यहाँ का आर्थिक विकास हो रहा है। अलास्का प्रान्त में यूकन नदी की घाटी में सोना, मिट्टी का तेल और कोयला मिलने से यहाँ का भी आर्थिक विकास हो रहा है।

बहु विकल्पीय प्रश्न

सही विकल्प चुनिए—

प्रश्न 1. टुण्ड्रा प्रदेश के निवासी कहलाते हैं— (1984)

(क) एस्किमो, (ख) बुशमैन, (ग) बद्दू (घ) खिरगीज।

उत्तर—(क) एस्किमो।

प्रश्न 2. तिब्बत का मुख्य पशु है— (1987)
(क) बाइसन, (ख) भालू, (ग) याक, (घ) रेनडियर।
उत्तर—(ग) याक।

प्रश्न 3. निम्न में से मध्य रात्रि के सूर्य के प्रदेश का चयन कीजिए— (1987)
(क) टैगा प्रदेश, (ख) टुण्ड्रा प्रदेश, (ग) ध्रुवीय बर्फिस्तान,
(घ) हिमालय सदृश्य प्रदेश।
उत्तर—(ख) टुण्ड्रा प्रदेश।

प्रश्न 4. कोणधारी वृक्ष मुख्य रूप से किस प्रदेश में उगते हैं — (1987)
(क) मानसूनी प्रदेश, (ख) भूमध्य सागरीय प्रदेश,
(ग) टैगा प्रदेश, (घ) टुण्ड्रा प्रदेश।
उत्तर—(ग) टैगा प्रदेश।

प्रश्न 5. टुण्ड्रा प्रदेश के निवासियों का मुख्य धन माना गया है— (1986)
(क) रेनडियर, (ख) भालू, (ग) ह्वेल, (घ) कुत्ता।
उत्तर—(क) रेनडियर।

प्रश्न 6. रेनडियर पशु पाया जाता है— (1987)
(क) टैगा प्रदेश में, (ख) टुण्ड्रा प्रदेश, (ग) तूरानी प्रदेश में,
(घ) सूडानी प्रदेश में।
उत्तर—(ख) टुण्ड्रा प्रदेश में।

प्रश्न 7. ऐस्किमो लोग कहाँ पाये जाते हैं— (1985)
(क) भूमध्य रेखीय प्रदेश, (ख) सवाना प्रदेश,
(ग) टुण्ड्रा प्रदेश, (घ) टैगा प्रदेश।
उत्तर—(ग) टुण्ड्रा प्रदेश।

प्रश्न 8. समूर फार्म से सम्बन्धित पशु है—
(क) जेबरा, (ख) याक, (ग) रेनडियर, (घ) मिन्क।
उत्तर—(घ) मिन्क।

23 | विकसित देशों में जन-जीवन

राष्ट्रीयकृत पाठ्य पुस्तक में दिये गये प्रश्नों के उत्तर

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. संसाधन कितने प्रकार के होते हैं ? (1988)
उत्तर—संसाधन दो प्रकार के होते हैं—
(i) प्राकृतिक संसाधन, (ii) मानवीय संसाधन।

प्रश्न 2. लोह-इस्पात उद्योग किस देश में सर्वाधिक विकसित है ? (1989)
उत्तर—सोवियत संघ में।

प्रश्न 3. रसायन सम्बन्धित प्रमुख उद्योग कौन-कौन से हैं ?
उत्तर—(1) कास्टिक सोडा, (2) उर्वरक, (3) रंग, (4) रेयन, (5) कृत्रिम रेशे, (6) प्लास्टिक, (7) कास्मेटिक, (8) दियासलाई।

प्रश्न 4. विरल तथा सघन कृषि प्रतिरूपों में क्या अन्तर है ? (1987)
उत्तर—विस्तृत फार्मों में की जाने वाली कृषि विरल कृषि तथा छोटे-छोटे फार्मों में की जाने वाली कृषि सघन कृषि कहलाती है।

प्रश्न 5. बाजार के लिए बागवानी कृषि किसे कहते हैं ?
उत्तर—व्यापारिक स्तर पर फलों तथा सब्जियों का उत्पादन कृषि के लिए बागवानी कहलाता है।

प्रश्न 6. पशुपालन किन देशों में उन्नत अवस्था में है ?
उत्तर—संयुक्त राज्य अमेरिका, सोवियत संघ, फ्रांस, पश्चिमी जर्मनी, डेनमार्क, ब्रिटेन, कनाडा, डेनमार्क, हालैण्ड, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड आदि में।

प्रश्न 7. विकसित देशों में प्रमुख दुग्ध उत्पादक देश कौन है ? (1988, 89)
उत्तर—सोवियत संघ प्रमुख दुग्ध उत्पादक देश है।

प्रश्न 8. विश्व का सबसे लम्बा मार्ग किस देश में है ? (1984, 86, 89, 90)
उत्तर—सोवियत रूस में ट्रान्स साइबेरियन रेलमार्ग है।

प्रश्न 9. औरियन्टल एक्सप्रेस रेलमार्ग यूरोप के किन-किन देशों से होकर गुजरता है ?
उत्तर—यह रेलमार्ग पेरिस से इस्तम्बूल तक जाता है तथा यूरोप के आठ देशों को जोड़ता है। फ्रान्स, स्विट्जरलैण्ड, इटली, आस्ट्रिया, हंगरी, यूगोस्लाविया, बुल्गारिया तथा चेकोस्लोवाकिया देशों में होकर गुजरता है।

प्रश्न 10. विश्व का सबसे बड़ा शहर कौन सा है ? (1984, 86, 87, 88)
उत्तर—न्यूयार्क।

प्रश्न 11. विश्व में सर्वाधिक टेलीफोन सेवाओं का उपयोग कौन सा देश करता है ? (1986, 89)
उत्तर—संयुक्त राज्य अमेरिका।

प्रश्न 12. संचार उपग्रह किसे कहते हैं ? (1986)
उत्तर—बेतार के दूरस्थ क्षेत्रों में प्रसारण की सुविधा को संचार उपग्रह कहते हैं।

परीक्षोपयोगी एवं बोर्ड परीक्षा में पूछे गये अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1. विकसित देशों की दो विशेषताएँ बताइये। (1988, 90)
उत्तर—(1) उच्च स्तर का औद्योगीकरण, (2) विकसित यातायात एवं संचार व्यवस्था।

प्रश्न 2. विकसित देशों के दो प्रसिद्ध रेल मार्ग बताइए।
उत्तर—(1) ट्रान्स साइबेरियन रेल मार्ग, (2) औरियन्टल एक्सप्रेस रेलमार्ग।

प्रश्न 3. संसार का कौन सा देश पोत निर्माण में अग्रसर है? (1988, 89)
उत्तर—जापान।

प्रश्न 4. भारत में कौन सा संचार उपग्रह पृथ्वी की कक्षा में स्थापित किया गया? (1988)
उत्तर—इन्सैट 1 बी० नामक उपग्रह।

प्रश्न 5. विश्व का सबसे लम्बा रेल मार्ग कौन सा है? (1984)

अथवा

एशिया का सबसे बड़ा रेल मार्ग कौन सा है? (1984)
उत्तर—ट्रान्स साइबेरियन रेल मार्ग।

प्रश्न 6. विश्व का सबसे बड़ा पत्तन कौन सा है? (1984)
उत्तर—न्यूयार्क।

प्रश्न 7. विकसित देशों में शिक्षा का स्तर कैसा है? (1986, 89)
उत्तर—शिक्षा का स्तर उच्च कोटि का है।

प्रश्न 8. सोवियत संघ के दो लोहा-इस्पात उत्पादक क्षेत्र बताओ। (1986)
उत्तर—(1) यूराल क्षेत्र, (2) यूक्रेन क्षेत्र।

प्रश्न 9. विश्व में कपास का उत्पादन सर्वाधिक किस देश में होता है? (1984)
उत्तर—सं० रा० अमेरिका।

प्रश्न 10. विश्व का सबसे बड़ा मोटर निर्माण केन्द्र कहाँ है? (1987)
उत्तर—सं० रा० अमेरिका का 'डिट्राइट' नगर विश्व का सबसे बड़ा मोटर निर्माण केन्द्र है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. निम्न में से किन्हीं दो उद्योगों पर टिप्पणी लिखिए—
(1) रसायन उद्योग, (2) मोटर निर्माण उद्योग, (3) इन्जीनियरी उद्योग।

उत्तर—(1) रसायन उद्योग—यह उद्योग जापान, सोवियत संघ, ब्रिटेन, फ्रांस तथा पश्चिमी जर्मनी आदि देशों में विकसित है। इस उद्योग के अन्तर्गत गन्धक का अम्ल, दियासलाई, साबुन, दवाइयाँ तथा कृत्रिम रेशम आदि पदार्थ आते हैं।

(2) मोटर निर्माण उद्योग—जापान, ब्रिटेन, इटली, फ्रान्स तथा सोवियत संघ आदि देशों में इस उद्योग ने बहुत प्रगति की है। इन देशों में मोटर कारें बनायी जाती हैं।

(3) इन्जीनियरी उद्योग—इन्जीनियरी उद्योग में जापान, फ्रान्स, स्वीडन, नार्वे, कनाडा तथा संयुक्त राज्य अमेरिका आदि देशों ने बहुत उन्नति की है। इस उद्योग के अन्तर्गत वायुयान निर्माण, मोटरगाड़ी तथा जलयान निर्माण आदि आते हैं। यह एक प्रमुख उद्योग है।

प्रश्न 2. विकसित देशों के जल यातायात पर एक नोट लिखिए।
उत्तर—विकसित देशों के जल यातायात को दो श्रेणियों में बाँटा जाता है—

(1) आन्तरिक जल यातायात, (2) अन्तर्राष्ट्रीय जल यातायात। जल यातायात में समुद्री तथा नदी यातायात प्रमुख हैं। विश्व के महासागरीय यातायात मार्गों का केन्द्र पश्चिमी यूरोप है।

प्रश्न 3. विकसित देशों के प्रमुख रेल मार्गों का परिचय दीजिए।

उत्तर—रेल परिवहन का वर्तमान समय में बहुत अधिक महत्व है। विकसित देशों में रेलों का बहुत अधिक विकास हुआ है। विकसित देशों में रेलें अधिकांश रूप में बिजली से चलायी जाती हैं। विकसित देशों के प्रमुख रेलमार्ग निम्नलिखित हैं—(1) ट्रान्ससाइबेरियन रेलमार्ग, (2) ओरियन्टल एक्सप्रेस रेलमार्ग, (3) यूनियन एण्ड सेन्ट्रल पैसेफिक रेलमार्ग, (4) कनाडियन नेशनल तथा पैसेफिक रेलमार्ग।

प्रश्न 4. विकसित देशों की संचार व्यवस्था पर एक टिप्पणी लिखिये।

उत्तर—विकसित देशों की संचार व्यवस्था वैज्ञानिक है। टेलीफोन, दूरदर्शन तथा अन्तरिक्ष संचार व्यवस्था आदि विकसित देशों की संचार व्यवस्था के प्रमुख आधार स्तम्भ हैं। विकसित देशों की संचार व्यवस्था में राज्य संयुक्त अमेरिका का प्रथम स्थान है।

प्रश्न 5. विकसित देशों की प्रमुख विशेषताओं का सोदाहरण उल्लेख कीजिये। (1985, 87, 90)

उत्तर—विकसित देशों की प्रमुख विशेषतायें निम्नलिखित हैं—

(1) यातायात के साधनों का विकास, (2) प्रति व्यक्ति अधिक आय, (3) ऊँचा जीवन-स्तर, (4) व्यापार वृद्धि, (5) प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग, (6) तकनीकी का विकास।

परीक्षोपयोगी एवं बोर्ड परीक्षा में पूछे गये अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1. जापान में सूती वस्त्र उद्योग की उन्नति के कारण बताइये। (1986)

उत्तर—जापान में सूती वस्त्र उद्योग की उन्नति के निम्नांकित कारण हैं—

1. सस्ती जल विद्युत 2. नम जलवायु 3. कच्चे माल की बाहर से अच्छी आयात 4. कुशल श्रमिक 5. यातायात की सुविधा।

प्रश्न 2. जापान को विकसित देशों की श्रेणी में क्यों रखा गया है? (1990)

उत्तर—जापान एशिया का सबसे महत्वपूर्ण औद्योगिक केन्द्र है। यह देश रेशम तथा मत्स्य पालन में विश्व में अग्रणी है। जापान एक पहाड़ी देश है जहाँ लगभग 1500 जल विद्युत केन्द्र हैं जो प्रति घण्टे 500 अरब किलोवाट विद्युत उत्पादन करते हैं। जापान ने पोत निर्माण, सूती वस्त्र निर्माण, मोटरकार उद्योग तथा इलैक्ट्रोनिक उद्योग में महत्वपूर्ण उन्नति की है। इस प्रकार आर्थिक दृष्टि से यह सम्पन्न देश है। इसलिये जापान की गणना विकसित देशों की श्रेणी में की जाती है।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. विकसित देशों की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—विकसित देशों की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(1) **प्राकृतिक संसाधनों का कुशलतम उपयोग**—विकसित देशों द्वारा प्राप्त प्राकृतिक संसाधनों का वैज्ञानिक ढंग से उच्च तकनीकी द्वारा कुशलतम उपयोग किया गया है।

(2) वृहत स्तर पर औद्योगीकरण—विकसित देशों में बड़े पैमाने पर औद्योगीकरण हो गया है। इन देशों में मानव शक्ति, प्राकृतिक संसाधन और वैज्ञानिक तकनीकी तीनों उद्योगों के विकास एवं विस्तार में सहायक हुए हैं।

(3) कृषि का अभिनवीकरण एवं यंत्रीकरण—इन देशों में कृषि के नवीन वैज्ञानिक तकनीकों को अपनाकर यन्त्रों की सहायता से सघन एवं विरल दोनों ही प्रकार की कृषि की जाती है तथा उच्च स्तर का उत्पादन किया जाता है।

(4) व्यापारिक आधार पर उद्यानों का विकास—विकसित देशों में अधिक आबादी के लिए फल एवं सब्जियाँ उपलब्ध कराने हेतु उद्यानों का विकास व्यापारिक आधार पर किया गया है।

(5) उन्नत स्तरीय पशुपालन एवं दुग्ध व्यवसाय—विकसित देशों में पशुपालन की ओर ठीक प्रकार से ध्यान दिया जाता है। अच्छी नस्ल के दुधारू पशुओं का वैज्ञानिक ढंग से पालन किया जाता है। इन देशों का दुग्ध व्यवसाय उन्नत स्तरीय है। सोवियत संघ विश्व का सबसे बड़ा दुग्ध व्यवसायक देश है। डेनमार्क, हालैण्ड, सं० रा० अमेरिका में दुग्ध व्यवसाय उन्नतशील है।

(6) विकसित यातायात एवं संचार व्यवस्था—विकसित देशों में यातायात व संचार व्यवस्था का प्रमुख स्थान है। यातायात के तीनों साधन—जलमार्ग, वायु मार्ग तथा स्थल मार्गों का विकास हुआ है तथा अन्तर्महाद्वीपी तथा अन्तर्राष्ट्रीय संचार व्यवस्था विकसित हुई है।

प्रश्न 2. किस प्रकार प्राकृतिक साधनों के कुशलतम उपयोग द्वारा कोई राष्ट्र आर्थिक विकास कर सकता है? विकसित देशों के सन्दर्भ में उपयुक्त उदाहरण देते हुए स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—प्राकृतिक संसाधनों के अन्तर्गत भूमि, जलवायु, वनस्पति, जलाशय तथा खनिज सम्पदा को सम्मिलित किया जाता है। प्राकृतिक संसाधन देश के विकास की दिशा निर्धारित करते हैं, उपजाऊ भूमि तथा सिंचाई की सुविधाएँ उत्पादन में वृद्धि करती हैं। परन्तु प्राकृतिक संसाधनों का उचित प्रयोग आवश्यक है।

प्रश्न 3. विकसित देशों में तीव्र औद्योगीकरण के लिए उत्तरदायी कारकों को स्पष्ट कीजिए तथा वर्तमान औद्योगिक स्तर की समीक्षा कीजिए।

उत्तर—विकसित देश विश्व की महान शक्तियाँ हैं। इन महान शक्तियों में संयुक्त राज्य अमेरिका, सोवियत रूस, ब्रिटेन तथा अन्य पश्चिमी देश हैं। इन सभी देशों ने तकनीकी ज्ञान तथा संसाधनों के आधार पर औद्योगिक प्रगति की है। 19वीं शताब्दी में औद्योगिक क्रान्ति भी इन्हीं देशों में प्रारम्भ हुई।

विकसित देशों में तीव्र औद्योगीकरण के लिए उत्तरदायी कारक

(1) यातायात तथा संचार के विकसित साधन (2) जनसंख्या की अधिक आवश्यकतायें (3) विश्व व्यापार में अत्यधिक प्रतियोगिता (4) राष्ट्रीय आर्थिक व्यापार हेतु प्रयास (5) शीघ्र उत्पादन का होना (6) वैज्ञानिक मशीन युग का विस्तार।

प्रश्न 4. विकसित देशों में लोहा इस्पात उद्योग की स्थिति की व्याख्या कीजिए।

उत्तर— **विकसित देशों में लोहा-इस्पात उद्योग**

लोह-इस्पात उद्योग विकसित देशों का सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथा उन्नतिशील आधार स्तम्भ है। विकसित देशों में लोह-इस्पात उद्योग के कारखाने हैं। ब्रिटेन, कनाडा, आस्ट्रेलिया तथा पूर्वी जर्मनी में यह उद्योग बहुत उन्नतिशील हैं। लोह इस्पात कारखानों को प्रायः कोयले की खानों के पास ही स्थापित किया जाता है क्योंकि कोयला लोह-इस्पात उद्योग के लिये आवश्यक है।

लोहा-इस्पात उद्योग में सोवियत रूस का विश्व में दूसरा स्थान है। विश्व के कुल उत्पादन का 25 प्रतिशत भाग यहाँ उत्पन्न होता है।

ग्रेट ब्रिटेन में लोहे तथा कोयले की खानें पास-पास हैं तथा चारों ओर समुद्र होने से आयात तथा निर्यात की सुविधायें हैं। ग्रेट ब्रिटेन के पश्चात जर्मनी का नम्बर आता है। यहाँ भी कोयला तथा लोहे की खानें साथ-साथ पायी जाती हैं। पश्चिमी जर्मनी में रूस तथा साइबेरिया प्रमुख लोह क्षेत्र हैं जहाँ भारी मशीनें, कृषियन्त्र, मोटरें, वैज्ञानिक यन्त्र और बिजली का सामान तैयार होता है।

यद्यपि जापान में लोहे और कोयले की कमी है फिर भी यह अन्य देशों से आयात करके इस्पात का उत्पादन करता है। यहाँ चीन, भारत, संयुक्त राज्य अमेरिका आदि देशों से लोहा मंगाया जाता है।

प्रश्न 5. "व्यापारिक आधार पर उद्यान विकसित देशों की कृषि प्रणाली का एक प्रमुख अंग बन गया है।" स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—व्यापारिक आधार पर उद्यानों का विकास—

व्यापारिक आधार पर फलों के उद्यान, तम्बाकू, कपास, कहवा आदि को सम्मिलित किया जाता है।

1. **कहवा**—यह चाय की तरह एक पीने वाला पदार्थ है। इसकी जन्म भूमि अबीसीनिया है। इसके बीज को पीसकर चूर्ण बनाया जाता है।

उत्पादन क्षेत्र—कहवा पैदा करने के मुख्य क्षेत्र निम्नलिखित हैं—

ब्राजील—संसार में सबसे अधिक कहवा ब्राजील में पैदा होता है। ब्राजील में साओ पोलो और मिनास जिरास राज्य इसकी खेती में सबसे आगे है। पूरे संसार का 50 प्रतिशत कहवा ब्राजील ही पैदा करता है।

कोलम्बिया—यहाँ का कहवा बहुत ही अच्छी किस्म का होता है। इसका स्वाद व सुगन्ध बहुत अच्छी होती है। यह पूरे संसार का 12 प्रतिशत कहवा उगाता है। कहवा पैदा करने में इसका संसार में दूसरा स्थान है। जलवायु भी कहवा के लिए अनुकूल है।

दक्षिणी अमेरिका—दक्षिणी अमेरिका के सभी राज्य मिलकर 15 प्रतिशत कहवा पैदा करते हैं। इसमें मुख्य राज्य गयाना, कोलम्बिया, ब्राजील तथा वेनेज्युला हैं।

अफ्रीका—अफ्रीका में अबीसीनिया इसका जन्म स्थान है। इसके अलावा टैंकानिका कोंगो तथा युगाण्डा में भी पैदा किया जाता है।

उत्तरी अमेरिका—यहाँ पर कहवा, पनामा, क्यूबा, जमैका, हाडूराम, निकारगुआ तथा मेक्सिको आदि में उगाया जाता है।

एशिया—यहाँ कहवा हिन्देशिया, भारत, फारमोसा, श्री लंका, अरब तथा फारमोसा में पैदा किया जाता है। यहाँ कहवा के लिए अनुकूल जलवायु तथा भूमि पाई जाती है।

विश्व व्यापार—ब्राजील सारे संसार में सबसे अधिक कहवा बाहर भेजता है। सारी उपज का 50 प्रतिशत से अधिक निर्यात कर देता है। इसके अलावा कहवा बाहर भेजने वाले मुख्य देश कोलम्बिया, जावा, वेनेज्युला तथा पश्चिमी द्वीप समूह हैं। कहवा मंगाने वाले देश संयुक्त राज्य अमरीका, अकेला पूरे संसार का 60 प्रतिशत कहवा मंगाता है। इसके अलावा कहवा फ्रांस, जर्मनी, नार्वे, स्वीडन, स्विट्जरलैण्ड तथा डेनमार्क आदि देश मंगाते हैं।

2. कपास—कपड़ा बनाने वाली चीजों में कपास का मुख्य स्थान है। यह एक झाड़ीदार पौधा होता है जिसकी कली से चिपटा हुआ रेशा प्राप्त होता है। इसका बीज बिनौला कहलाता है। यह रेशेदार फसलों में मुख्य व्यापारिक फसल है।

उत्पादन क्षेत्र—संसार में इसका उत्पादन इस प्रकार है :

संयुक्त राज्य अमेरिका—यह कपास पैदा करने में संसार में पहला स्थान रखता है। यह पूरे संसार का 33 प्रतिशत कपास पैदा करता है, यहाँ पर कपास की पेटी भी पाई जाती है। यहाँ की कपास बहुत अच्छी तथा लम्बे रेशे की होती है। इसे 'कपास का राजा' कहते हैं। यहाँ कपास की खेती मशीनों द्वारा की जाती है। यहाँ की कपास पेटी 100° पश्चिमी देशान्तर से अन्ध महासागर के किनारे तक फैली है।

मिश्र— यह संसार में सबसे अच्छी किस्म का कपास पैदा करता है। इसका रेशा 4 या 5 सेन्टीमीटर होता है। यह मात्रा में अवश्य कम होता है, परन्तु किस्म अच्छी होती है। यहाँ पर कपास नील नदी के डैल्टे में उगाया जाता है। यह कपास अपने रंग, चमक तथा मजबूती में सारे संसार में प्रसिद्ध है।

भारत—संसार में कपास पैदा करने वाले देशों में भारत का दूसरा स्थान है। यह पूरे संसार का 20 प्रतिशत कपास पैदा करता है। यहाँ की कपास छोटे रेशे की होती है। दकन का पठार जो लावा मिट्टी से बना है कपास की उपज के लिए अच्छा है। इसकी खेती भारत में अधिकतर मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, आन्ध्र तथा मद्रास में होती है।

चीन—चीन में मंगोलिया की तरफ से पीली मिट्टी उड़कर जाती है जिससे लोएस का मैदान बना है। यह मैदान कपास की उपज के लिए बहुत अच्छा है। इसके अलावा यंगटिसीक्यांग नदी की घाटी भी कपास की उपज के लिए अच्छी होती है।

अन्य देश—संसार में इन देशों के अलावा रूस, टर्की, पीरू, ब्राजील, अर्जेण्टायना, वेनेज्युला, ईराक, नाइजीरिया, रोडेशिया, दक्षिणी अफ्रीका, आस्ट्रेलिया तथा न्यूसाउथवेल्स में भी कपास पैदा होता है। लेकिन इनमें से अधिकतर देश अपनी आवश्यकता को पूरा नहीं कर पाते। इसलिए बाहर से मँगाते हैं।

विश्व व्यापार—कपास के बने वस्त्रों का प्रयोग संसार के प्रत्येक देश में होता है। इस कारण वह अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की फसल है। कपास बाहर भेजने वाले देश संयुक्त राज्य अमरीका, मिश्र, ब्राजील, पाकिस्तान तथा भारत हैं तथा

मँगाने वाले देश ब्रिटेन, फ्रांस, इटली, जर्मनी, चीन, चेकोस्लावाकिया, कनाडा तथा बेल्जियम हैं।

3. तम्बाकू—इसका प्रयोग आजकल काफी मात्रा में किया जाता है। संसार के अनेक देशों में इसे किसी न किसी रूप में काम में लाते हैं।

उत्पादन क्षेत्र—संसार के अधिकतर देशो में इसकी खेती होती है। संसार में इसकी उपज इस प्रकार है—

संयुक्त राज्य अमेरिका—संसार में तम्बाकू पैदा करने में संयुक्त राज्य अमेरिका पहला स्थान रखता है। यह पूरे संसार का 40 प्रतिशत तम्बाकू पैदा करता है। दक्षिणी-पूर्वी संयुक्त राज्य अमेरिका इसकी खेती के लिए उत्तम है क्योंकि इसकी उपज की सभी अनुकूल बातें इस भाग में पाई जाती हैं।

भारत—यह तम्बाकू पैदा करने में दूसरा स्थान रखता है। यहाँ इसकी खेती लगभग सभी राज्यों में की जाती है जैसे गुजरात, राजस्थान, आन्ध्र, उत्तर प्रदेश, बिहार, मद्रास, उड़ीसा, पश्चिमी बंगाल आदि। भारत में सभी राज्यों में इनकी उपज के लिए अनुकूल बातें पाई जाती हैं।

प्रश्न 6. परिवहन के साधन कौन-कौन से हैं ? प्रमुख विकसित देशों में रेल-मार्गों का विवरण प्रस्तुत कीजिये।

उत्तर—वर्तमान समय में यातायात के साधनों का बहुत अधिक विकास हुआ है। विश्व में यातायात तथा संचार व्यवस्था के साधनों ने आश्चर्यजनक प्रगति की है। यातायात के साधनों के कारण आज हजारों किलोमीटर की दूरी को कुछ घण्टों में तय किया जा सकता है। जहाँ तक रेल मार्गों का सम्बन्ध है इसका विकास विकसित देशों में बहुत अधिक हुआ है। संयुक्त राज्य अमेरिका तथा कनाडा में तो रेलों का जाल सा बिछा हुआ है। विकसित देशों के प्रमुख रेलमार्ग निम्नलिखित हैं—

(1) ट्रान्ससाईबेरियन रेलवे (रूस),
(2) ओरियन्ट एक्सप्रेस रेलमार्ग (यूरोप),
(3) कनाडियन पैसेफिक रेलवे मार्ग (कनाडा),
(4) कनाडियन नेशनल रेलवे (अटलांटिक तट पर स्थित),
(5) यूनियन एण्ड सैन्ट्रल पैसेफिक रेलवे मार्ग (संयुक्त राज्य अमेरिका)।

परीक्षोपयोगी एवं बोर्ड परीक्षा में पूछे गए प्रश्न और उनके उत्तर

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. विकसित यातायात तथा संचार व्यवस्था का वर्णन कीजिए।

उत्तर—विकसित यातायात और संचार व्यवस्था—

विकसित यातायात में रेल मार्ग, जल मार्ग तथा वायु मार्ग को सम्मिलित किया जाता है।

(अ) विश्व के रेल मार्ग

सभी देशों में रेलें बनायी गयी हैं। रेलें स्थल परिवहन का उपयोगी साधन हैं। यूरोप के सभी देशों में रेलें हैं। पेरिस, वियाना, रोम, बर्लिन आदि जैसे देश, परस्पर रेलो से मिले हुए हैं। भारत, चीन तथा जापान में अधिक रेलें हैं। उत्तरी अमेरिका में संयुक्त राज्य तथा कनाडा में बहुत अधिक रेलें हैं। यहाँ की मुख्य रेलवे कनेडियन पैसिफिक रेलवे है। यह हैलीफेक्स से बैंकुअर तक लगभग 5600 किमी॰

लम्बाई में फैली है। अफ्रीका के पठारी, रेगिस्तानी तथा जंगली भागों में रेलें कम हैं।

(ब) विश्व के जलमार्ग

(1) अटलांटिक महासागर के जल मार्ग—अटलांटिक महासागर के सभी जलमार्ग पश्चिमी यूरोप से आरम्भ होते हैं। यहाँ से ये मार्ग कनाडा, पश्चिमी द्वीप समूह, पनामा नहर तथा ब्राजील और अर्जेन्टाइना को जाते हैं। संयुक्त राज्य तथा कनाडा के बीच का मार्ग इन सभी मार्गों में से सबसे अधिक महत्वपूर्ण मार्ग है। यूरोपीय देशों को कच्चा माल तथा खाद्य वस्तुयें भेजे जाने वाला यह प्रमुख मार्ग है। लन्दन, लिवरपूल, लिस्बन, न्यूयार्क, रियोडीजेनिरो आदि इस मार्ग के प्रमुख बन्दरगाह हैं।

(2) स्वेज नहर का जल मार्ग—स्वेज नहर का मार्ग इंग्लैण्ड में रूमसागर में होकर स्वेज नहर की ओर आता है। स्वेज नहर से जहाज, अन्दर के मार्ग से होकर कोलम्बो, करांची अथवा बम्बई जाते हैं। एक मार्ग कोलम्बो से होकर आस्ट्रेलिया जाता है। यूरोप, भारत तथा आस्ट्रेलिया का व्यापार इस मार्ग द्वारा होता है।

(3) केप का मार्ग—पश्चिमी यूरोप से अटलांटिक महासागर में होकर केपटाउन तक जाने का यह समुद्री मार्ग है।

(4) पनामा का नहर मार्ग—पनामा नहर के बन जाने से यूरोप तथा पूर्वी संयुक्त राज्य से होकर, उत्तरी तथा दक्षिणी अमेरिका के पश्चिमी तटों का व्यापार बहुत अधिक आसान हो गया है।

(5) प्रशान्त महासागर के मार्ग—प्रशान्त महासागर के मुख्य रूप से दो मार्ग हैं। प्रथम मार्ग जापान से वैंकुअर अथवा सेनफ्रांसिस्को तक जाने वाला है तथा द्वितीय मार्ग हवाई द्वीप से होकर जाता है।

(स) विश्व के वायु मार्ग

व्यापार तथा मात्रा की दृष्टि से वायुयानों का अधिक उपयोग किया जाता है।

(1) अटलांटिक महासागर के मार्ग—इस मार्ग के अनेक भाग हैं। प्रथम लन्दन तथा आयरलैंड से होकर मांट्रियल तथा वैंकुअर तक जाता है। द्वितीय मार्ग न्यूफाउण्डलेण्ड से होता हुआ न्यूयार्क जाता है। दक्षिणी अटलांटिक के मार्गों में लिस्बन, डाकर तथा रियोडीजेनिरो होकर जाने वाला मार्ग मुख्य है।

(2) प्रशान्त महासागर के वायु मार्ग—प्रशान्त महासागर के निम्नलिखित तीन मार्ग मुख्य हैं—

(अ) सैनफ्रांसिस्को से अलास्का होकर टोकियो तक जाने वाला मार्ग।

(ब) सैनफ्रांसिस्को से होनेलूलू होकर मनीला तथा शंघाई तक जाने वाला।

(स) सिडनी और आकलैण्ड से वैंकुअर अथवा सैनफ्रांसिस्को तक।

(3) यूरोप तथा सोवियत रूस के वायु मार्ग—यूरोप के सभी बड़े नगरों लन्दन, पेरिस, बर्लिन, रोम तथा ब्रूसेल्स आदि में हवाई अड्डे हैं। पश्चिमी साइबेरिया, दक्षिण रूस तथा ईरान के नगरों से मास्को का वायु मार्ग से सम्बन्ध है।

(4) मध्य पूर्व तथा सुदूर पूर्व के मार्ग—तेहरान, बगदाद, दमिश्क आदि का विश्व के प्रमुख हवाई मार्गों से सम्बन्ध है। एक महत्वपूर्ण मार्ग इंगलैण्ड से आस्ट्रेलिया तक जाता है। बैंकाक से हांगकांग तथा जापान भी वायु-मार्ग से जुड़े हुए हैं।

संचार के साधन

विकसित देशों में संचार के प्रमुख साधन इस प्रकार हैं—

(1) डाक तार, (2) रेडियो, (3) टेलीफोन, (4) टेलीविजन, (5) टेली-प्रिन्टर, (6) समाचार पत्र, (7) उपग्रह।

वर्तमान समय में रूस और अमेरिका चन्द्रमा तथा शुक्र ग्रह तक की सूचनाएं एकत्रित कर रहा है। आज मानव चन्द्रमा तक पहुँच गया है जो विज्ञान तथा तक-नीक के विकास का ही परिणाम है!

बहु विकल्पीय प्रश्न

सही विकल्प चुनिए—

प्रश्न 1. विश्व का सबसे बड़ा सूती वस्त्र निर्यातक देश कौन सा है— (1984)

(क) जापान, (ख) सं० रा० अमेरिका, (ग) फ्रान्स, (घ) जर्मनी।

उत्तर—(ख) सं० रा० अमेरिका।

प्रश्न 2. कौन सा देश विश्व का 60% कच्चा रेशम तैयार करता है— (1987)

(क) भारत, (ख) फ्रान्स, (ग) रूस, (घ) जापान।

उत्तर—(घ) जापान।

प्रश्न 3. विश्व का सबसे बड़ा पत्तन कौन-सा है— (1984, 86, 88)

(क) काहिरा, (ख) न्यूयार्क, (ग) सिंगापुर, (घ) टोकियो।

उत्तर—(ख) न्यूयार्क।

प्रश्न 4. विश्व में सबसे अधिक दुग्ध व मक्खन उत्पन्न करने वाला देश निम्नलिखित में से कौन सा है— (1987, 89)

(क) कनाडा, (ख) फ्रान्स, (ग) डैनमार्क, (घ) सोवियत संघ।

उत्तर—(घ) सोवियत संघ।

प्रश्न 5. मोटर निर्माण उद्योग में कौन सा देश अग्रणी है— (1987, 88)

(क) सं. रा. अमेरिका, (ख) सोवियत संघ, (ग) चीन, (घ) ग्रेट-ब्रिटेन।

उत्तर—(क) सं. रा. अमेरिका।

प्रश्न 6. निम्नलिखित में से कौन सा देश विकसित है— (1990)

(क) ब्राजील, (ख) चीन, (ग) मिश्र, (घ) जापान।

उत्तर—(घ) जापान।

प्रश्न 7. विश्व का कौन सा देश टेलीफोन सेवाओं का सर्वाधिक उपयोग करता है—

(क) सोवियत संघ, (ख) सं. रा. अमेरिका, (ग) इंगलैण्ड, (घ) फ्रांस।

उत्तर—(ख) सं. रा. अमेरिका।

24 | विकासशील देशों में जनजीवन

राष्ट्रीयकृत पाठ्य-पुस्तक में दिये गये प्रश्नों के उत्तर
अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. विकासशील देशों की प्रमुख समस्यायें कौन-कौन हैं ? (1987)

उत्तर—(1) पिछड़ी कृषि,
(2) उद्योग धन्धों का पिछड़ापन,
(3) निम्न कोटि का यातायात एवं संचार व्यवस्था,
(4) अल्प विकसित प्राकृतिक संसाधन,
(5) जनसंख्या की समस्या,
(6) अल्प साक्षरता तथा निम्न तकनीकी शिक्षा का स्तर, तथा
(7) नारी की हीन दशा।

प्रश्न 2. विकासशील देशों की प्रमुख खाद्य फसलों के नाम बताइए।

उत्तर—(1) गेहूँ, (2) गन्ना, (3) चावल, (4) मक्का, (5) ज्वार।

प्रश्न 3. विकासशील देशों की प्रमुख व्यापारिक फसलों के नाम बताइए।

उत्तर—(1) चाय, (2) कहवा, (3) जूट, (4) तम्बाकू, (5) रबड़, और (6) खजूर।

प्रश्न 4. विकासशील देशों में पेट्रोलियम किन-किन देशों से प्राप्त होता है ? (1985)

उत्तर—(1) ईरान, (2) ईराक, (3) अरब देश, (4) भारत।

प्रश्न 5. विकासशील देशों में जनसंख्या की किस प्रकार की समस्याएँ हैं ?

उत्तर—(1) जनसंख्या का आधिक्य,
(2) कार्यशील जनसंख्या की कमी,
(3) शहरी क्षेत्रों में जनसंख्या का दबाव,
(4) जन्म दर अधिक तथा मृत्यु दर कम।

परीक्षोपयोगी एवं बोर्ड परीक्षा में पूछे गए अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1. विकासशील देशों में शिक्षा का स्तर कैसा है ? (1985)

उत्तर—शिक्षा का स्तर निम्न कोटि का है।

प्रश्न 2. विकासशील देशों में नारी दशा कैसी है ? (1986)

उत्तर—नारी दशा निम्न कोटि की है।

प्रश्न 3. विकासशील देशों में उद्योग-धन्धों का स्तर कैसा है ?

उत्तर—निम्न कोटि का औद्योगीकरण है।

प्रश्न 4. विकासशील देशों के आर्थिक विकास में दो बाधक तत्व बताइए।

उत्तर—(1) पूंजी की कमी, (2) तकनीकी ज्ञान का अभाव।

प्रश्न 5. विकासशील देशों की दो विशेषताएँ बताइए। (1988)

उत्तर—(1) पिछड़ी कृषि, (2) अविकसित संचार व्यवस्था।

प्रश्न 6. विकासशील देशों का प्रमुख व्यवसाय कौन सा है ?

उत्तर—कृषि।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. विकासशील देशों की निम्नलिखित समस्याओं पर एक टिप्पणी तैयार कीजिए—

(i) जनसंख्या की समस्या,
(ii) अल्प विकसित यातायात एवं संचार व्यवस्था,
(iii) अविकसित उद्योग-धन्धे,
(iv) नारी की दशा।

उत्तर—इस प्रश्न के उत्तर के लिए देखिए इसी अध्याय के प्रश्न संख्या एक का उत्तर।

प्रश्न 2. विकासशील देशों के विकास के लिए उपाय सुझाइए।

उत्तर—इस प्रश्न के उत्तर के लिए देखिए इसी अध्याय के विस्तृत उत्तरीय प्र० सं० 2 का उत्तर।

प्रश्न 3. विकासशील देशों के उद्योग धन्धों के पिछड़ेपन के क्या कारण हैं ?

उत्तर—उद्योग धन्धों के पिछड़ेपन के कारण—

विकासशील देशों में उद्योग-धन्धों के पिछड़ेपन के निम्नलिखित कारण हैं—

(1) विकासशील देशों में अधिकतर देश उपनिवेश रहे हैं। यहाँ शासकों ने उद्योगों के विकास पर ध्यान नहीं दिया।

(2) तकनीकी का पर्याप्त विकास नहीं हुआ है।

(3) पूंजी का अभाव है।

(4) सामाजिक वातावरण सन्तोषजनक नहीं है।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. विकासशील देशों की प्रमुख समस्याओं का उल्लेख करते हुए उनके समाधान के उपाय प्रस्तुत कीजिए। (1984, 86)

उत्तर—विकासशील देशों की प्रमुख समस्याएँ—

विकासशील देशों की प्रमुख समस्याएँ इस प्रकार हैं—

(1) कृषि प्रधान व्यवसाय—विकासशील देशों में वहाँ के निवासियों का प्रमुख व्यवसाय कृषि है। परन्तु यहाँ कृषि उन्नत दशा में नहीं होती है। इसके अतिरिक्त भूमि की उत्पादन-क्षमता का भी पूर्ण प्रयोग नहीं हो पाता। भारत की भूमि उर्वरा है। परन्तु अभी तक कृषि का पूर्ण रूप से यन्त्रीकरण नहीं हो पाया है।

इसी कारण भारत में उपज कम होती है। विकसित देशों की जनसंख्या कृषि पर निर्भर नहीं रहती है। संयुक्त राज्य अमेरिका में केवल 2% जनता कृषि पर निर्भर रहती है।

(2) प्राकृतिक संसाधनों का कम प्रयोग—विकासशील देशों में प्राकृतिक संसाधनों का पूर्ण प्रयोग नहीं हो पाया है। इसका कारण यह है कि इन देशों में प्राकृतिक संसाधनों के दोहन में विज्ञान तथा नवीन तकनीकी का प्रयोग नहीं हो पाता है। विकासशील देशों में प्राकृतिक संसाधनों की पूर्ण जानकारी भी नहीं होती है। इसी कारण वे उनका उचित प्रयोग नहीं कर पाते। ऐसे अनेक विकासशील देश हैं, जहाँ कोयला, लोहा तथा पेट्रोलियम आदि का विशाल भंडार है। परन्तु तकनीकी ज्ञान के अभाव में उनका उचित दोहन नहीं हो पाता।

(3) पिछड़े हुए उद्योग धन्धे—विकासशील देशों में उद्योग धन्धे बहुत पिछड़ी हुई अवस्था में हैं, इसी कारण देश में उत्पादन कम होता है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि विकासशील देशों में आधारभूत उद्योगों तथा पूंजीगत उद्योगों का अभाव रहता है। चूंकि यहां के निवासियों का मुख्य व्यवसाय कृषि होता है, अतः वे केवल कुटीर उद्योग-धन्धों तक ही सीमित रहते हैं। इस प्रकार देश में औद्योगिक पिछड़ापन रहता है। पिछड़ेपन के प्रमुख कारण पूंजी की कमी, तकनीनी ज्ञान की जानकारी न होना, कुशल कर्मचारियों की कमी और प्राकृतिक साधनों का प्रयोग न किया जाना है।

(4) निम्न कोटि की यातायात और संचार व्यवस्था—विकासशील देशों में सड़क परिवहन यातायात का मुख्य साधन होता है। परन्तु सड़कों की दशा शोचनीय रहती है। उदाहरण के लिए भारत की अधिकांश सड़कें कच्ची हैं। इसके अतिरिक्त, भारतवर्ष में यातायात के साधनों की कमी है। सभी स्थान सड़कों से जुड़े हुए नहीं हैं। विकासशील देशों में अधिकतर लोग एक स्थान से दूसरे स्थान जाने के लिए या तो पैदल जाते हैं, या पशुओं का प्रयोग करते हैं। लगभग सभी विकासशील देशों में यातायात और संचार व्यवस्था निम्नकोटि की है। विकासशील देशों में संचार व्यवस्था और भी शोचनीय होती है। सभी स्थानों पर टेलीफोन तथा डाकतार की सुविधा उपलब्ध नहीं होती। इन देशों में जो साधन उपलब्ध भी हैं, उनको विश्वसनीय नहीं कहा जा सकता।

(5) जनसंख्या की समस्या—विकासशील देशों में जनाधिक्य है। जनाधिक्य की समस्या देश के विकास को रोके रहती है। भारत और चीन इनके उदाहरण हैं। जनसंख्या की दृष्टि से विश्व में चीन का प्रथम स्थान है और भारत का द्वितीय। जनाधिक्य के कारण ही इन देशों में निर्धनता और बेकारी है। देश की अधिकांश जनसंख्या गाँवों में निवास करती है। गाँवों में अज्ञानता, निरक्षरता और रूढ़िवादिता का बोलबाला रहता है। यह तत्व देश के आर्थिक और सामाजिक विकास में बाधा डालते हैं।

(6) साक्षरता तथा शिक्षा का निम्न स्तर—विकासशील देशों में लोग अधिकतर अशिक्षित हैं। जो लोग शिक्षित हैं, उनकी शिक्षा का स्तर निम्न होता है। विकासशील देशों में साक्षरता मुश्किल से 30% होती है, जबकि विकसित देशों में निरक्षरता 5% से भी कम होती है। इस निरक्षरता के कारण ही लोगों में अज्ञानता रहती है। जिसके कारण वे नवीन परिवर्तनों का विरोध करते हैं। यहाँ पर

विज्ञान का स्थान धर्म ने ले रखा है, और वे कट्टरवादिता में पड़कर भाग्यवादी बने रहते हैं। इससे देश में उत्पादन कम होता है और देश में निर्धनता फैली रहती है।

विकासशील देशों में शिक्षा का स्तर भी अत्यन्त निम्न है। देश के नवयुवक किसी प्रकार विश्वविद्यालय की डिग्री तो प्राप्त कर लेते हैं परन्तु उनको अपने विषय का ज्ञान अल्प मात्रा में ही होता है। इसका एक कारण हमारी दूषित शिक्षा प्रणाली भी है। जिसमें परीक्षा पास करने पर अधिक बल दिया जाता है। इन देशों में इस प्रकार निरन्तर शिक्षा का स्तर गिरता ही चला जाता है।

(7) **पूंजी निर्माण का निम्न स्तर**—विकासशील देशों में बैंकिंग व्यवस्था का अभाव है जिसके कारण पूंजी का निर्माण नहीं हो पाता और देश औद्योगिक रूप से पिछड़ा रहता है।

(8) **नारी की दशा**—विकासशील देशों में स्त्रियों की दशा भी विशेष सन्तोषजनक नहीं कही जा सकती। सभी स्त्रियों को पढ़ने का अवसर नहीं मिलता। अधिकतर स्त्रियाँ उच्च शिक्षा से वन्चित रहती हैं। उनको सभी प्रकार की नौकरियाँ (Jobs) नहीं मिलतीं। इसी कारण वे समाज में पिछड़ी रहती हैं। उनको सभी अवसरों पर पुरुषों के समान अधिकार नहीं मिलते। विकासशील देशों में उनकी दशा सन्तोषजनक नहीं कही जा सकती।

समस्याओं के समाधान के उपाय

विकासशील देशों की कुछ समस्याओं का समाधान इस प्रकार किया जा सकता है—

(1) कृषि पर दबाव को कम किया जाय।
(2) प्राकृतिक संसाधनों के अधिक दोहन के प्रयास किए जाएँ।
(3) उद्योग-धन्धों का विकास किया जाना चाहिए।
(4) यातायात के साधनों का विकास किया जाना चाहिए।
(5) जनसंख्या की समस्या का समाधान किया जाना चाहिए।
(6) साक्षरता का प्रसार किया जाना चाहिए।
(7) स्त्रियों की दशा सुधारी जानी चाहिए।

प्रश्न 2. "विकासशील देशों में आर्थिक विकास की पर्याप्त सम्भावनाएं विद्यमान हैं।" उपरोक्त कथन के आधार पर एक निबन्ध तैयार कीजिए।
(1985, 89)

उत्तर—विकास के लिए सुझाव—

विकासशील देशों के विकास के लिए निम्नलिखित सुझाव दिए जा सकते हैं—

(1) **विकसित देशों के साथ सम्बन्ध**—आज विश्व छोटा हो गया है। संसार का कोई भी देश अपने को दूसरे देशों से पृथक नहीं रख सकता। इसी कारण कहा जाता है कि आज विश्व एक आर्थिक इकाई बन गया है। आज के युग में प्रत्येक देश को एक-दूसरे पर निर्भर रहना पड़ता है। एक देश अन्य देशों से अलग रहकर अपना विकास नहीं कर सकता। विकासशील देश विकसित देशों के साथ सम्बन्ध रखकर ही अपना विकास कर पाए हैं। विकसित देश विकासशील देशों को नवीन तकनीकी का ज्ञान कराते हैं। वे प्राकृतिक संसाधनों के दोहन के लिए विकासशील देशों को आर्थिक सहायता देते हैं। आवश्यकता होने पर वे विकासशील देशों को

अपने वैज्ञानिकों की सेवाएँ भी उपलब्ध कराते हैं। भारत के आधारभूत बड़े उद्योग विकसित देशों की ही देन हैं। भारत में इस समय 740 ऐसी कम्पनियाँ हैं जिनमें विदेशी पूँजी लगी हुई है। एक रिपोर्ट के अनुसार भारत के निजी औद्योगिक क्षेत्र में 2816 करोड़ रु० की पूँजी लगी हुई है। भारत में- अमेरिका और रूस ने अपनी पूँजी लगा रक्खी है। इसी कारण भारत जैसे विकासशील देशों के लिए यह आवश्यक है कि वह विकसित देशों के साथ सम्बन्ध बनाए रखे और उन आविष्कारों तथा तकनीकी का लाभ उठाता रहे जिसे उन्होंने अपने यहाँ विकसित कर रक्खा है। उनसे व्यापारिक सम्बन्ध भी बनाए रखने चाहिए।

(2) क्षेत्रीय सहयोग का प्रयास—विकासशील देशों के लिए यह आवश्यक है कि वे क्षेत्रीय असन्तुलन दूर करें और यह प्रयास करें कि उनको क्षेत्रीय सहयोग अधिक से अधिक मिल सके। विकासशील देशों के लिए यह आवश्यक है कि अपने विकास के लिए अधिक से अधिक क्षेत्रीय सहयोग प्राप्त करें। इसके लिए यह आवश्यक है कि विकासशील देश अपने पड़ोसी देशों के साथ मैत्री-सम्बन्ध बनाएँ तथा आर्थिक विकास में एक-दूसरे की सहायता करें।

(3) विदेशी व्यापार—विकासशील देशों को अपने विदेशी व्यापार में वृद्धि करनी चाहिए। विदेशी व्यापार से प्रादेशिक श्रम विभाजन के समस्त लाभ प्राप्त किये जा सकते हैं। किसी देश के निवासियों का जीवन स्तर उच्च बनाने के लिए आवश्यक है कि उसके निवासियों को सस्ते मूल्य पर उपभोग वस्तुएँ प्राप्त हो सकें। विदेशी व्यापार के कारण ही कच्चा माल, मशीनरी, तकनीकी सहायता तथा आर्थिक सहायता मिल सकती है। भारत इसी कारण अनेक वस्तुओं का आयात करता है और निर्यात भी करता है। विकसित देश आर्थिक संकट में विकासशील देशों की सहायता करते हैं।

प्रश्न 3. विकासशील देशों की जनसंख्या की समस्या पर एक नोट लिखिए।

उत्तर—विकासशील देशों में जनसंख्या की समस्या बहुत ही महत्वपूर्ण है वहाँ जनसंख्या वृद्धि आर्थिक विकास में बाधक सिद्ध हो रही है। विकासशील देशों में विश्व की लगभग दो तिहाई जनसंख्या है तथा जनसंख्या वृद्धि की दर 2 से 3 प्रतिशत वार्षिक है जबकि मृत्यु दर बहुत कम है। इन देशों में संख्यात्मक दृष्टि से ही जनसंख्या अधिक है गुणात्मक दृष्टि से नहीं इसका परिणाम यह है कि प्राकृतिक संसाधनों का कुशलता पूर्वक उपयोग न होने से बेकारी की समस्या पायी जाती है।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि विकासशील देशों में तीव्र जनसंख्या वृद्धि एक प्रमुख समस्या है। इस समस्या का समाधान अथवा हल खोजना अति आवश्यक है।

प्रश्न 4. विकासशील देशों में उन्नत कृषि सम्भावना पर नोट तैयार कीजिए।

उत्तर—विकासशील देशों का मुख्य व्यवसाय कृषि है। इन देशों के अधिकांश व्यक्ति कृषि द्वारा अपनी जीविका का उपार्जन करते हैं। इन विकासशील देशों में कृषि विकास की पर्याप्त सम्भावनायें पायी जाती हैं जैसे पर्याप्त उपजाऊ भूमि, उपयुक्त जलवायु, कृषि कार्य के लिये श्रमिकों की उपलब्धि तथा सिचाई की सम्पूर्ण सुविधाएँ आदि फिर भी इन देशों में कृषि व्यवसाय पिछड़ी हुई दशा में है। यदि वैज्ञानिक कृषि यन्त्रों को प्रयोग में लाया जाय तो विकासशील देश कृषि के क्षेत्र में

बहुत अधिक विकास कर सकते हैं तथा आर्थिक दशा को सुधार सकते हैं। अत: देशों की उन्नति का प्रमुख आधार कृषि की उन्नतिशील दशा का होना है।

बहु विकल्पीय प्रश्न

सही विकल्प चुनिए—

प्रश्न 1. विकासशील देशों में सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश कौन सा है—

(क) भारत, (ख) चीन, (ग) ब्राजील, (घ) ईरान।

उत्तर—(ख) चीन।

प्रश्न 2. विकासशील देशों का प्रमुख व्यवसाय है—

(क) कृषि, (ख) पशुपालन, (ग) पर्यटन, (घ) व्यापार।

उत्तर—(क) कृषि।

प्रश्न 3. विकासशील देशों में सबसे अधिक रेल मार्ग किस देश में हैं ?

(क) ब्राजील, (ख) चीन, (ग) भारत, (घ) ईरान।

उत्तर—(ग) भारत।

प्रश्न 4. विकासशील देशों में आर्थिक क्षेत्र में नारी का योगदान न होने का क्या कारण है—

(क) रूढ़िवादी संरचना, (ख) पर्दा,
(ग) अशिक्षा, (घ) अन्ध विश्वास।

उत्तर—(ग) अशिक्षा।

प्रश्न 5. निम्नांकित में से कौन सी विशेषता विकासशील देशों की श्रेणी में नहीं आती है—

(क) कृषि का पिछड़ापन,
(ख) प्राकृतिक संसाधनों का अल्प विकसित होना,
(ग) विकसित उद्योग-धन्धे, (घ) निम्न कोटि की संचार व्यवस्था।

उत्तर—(ग) विकसित उद्योग-धन्धे।

25 | वर्तमान विश्व की प्रमुख विशिष्टतायें [राष्ट्रों की अन्योन्याश्रितता]

राष्ट्रीयकृत पाठ्य पुस्तक में दिये गये प्रश्नों के उत्तर

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. वर्तमान युग में संसार के अनेक देश एक-दूसरे पर आश्रित क्यों हैं ? (1985)

उत्तर—संसार के अधिकांश देश पारस्परिक एवं अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति तथा सुरक्षा की दृष्टि से एक-दूसरे पर आश्रित हैं।

प्रश्न 2. विकास की प्रारम्भिक अवस्था में मनुष्यों की आवश्यकताओं की क्या विशेषता थी ?

उत्तर—मनुष्य स्वयं अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कर लेता था।

प्रश्न 3. किसी देश की वैज्ञानिक व तकनीकी प्रगति का अन्य देशों पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

उत्तर—अन्य देश विकसित देश पर आश्रित हो जाते हैं और उससे लाभ उठाते हैं।

प्रश्न 4. अन्तर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक सहयोग कार्यक्रम किस संस्था के सहयोग से किए जाते हैं ? (1987)

उत्तर—यूनेस्को।

प्रश्न 5. 1979 ई० में विश्व शान्ति का नोबेल पुरस्कार किसे मिला था ? (1984)

उत्तर—मदर टैरेसा।

प्रश्न 6. आज विश्व के विचारों के आदान-प्रदान की प्रमुख भाषा कौन-सी है ? (1986)

उत्तर—अंग्रेजी।

प्रश्न 7. पुस्तकों के आदान-प्रदान के लिए अन्तर्राष्ट्रीय मेले तथा पुस्तक प्रदर्शनियों का आयोजन किस संस्था के द्वारा किया जाता है ?

उत्तर—नेशनल बुक ट्रस्ट।

प्रश्न 8. छापेखाने का आविष्कार सर्वप्रथम किसने किया था ? (1986)

उत्तर—चीन देश ने।

प्रश्न 9. हौट लाइन की व्यवस्था क्यों की जाती है ? (1988)

उत्तर—सीधा सम्पर्क स्थापित करने के लिए हौट लाइन की व्यवस्था की जाती है।

प्रश्न 10. भारत में सर्वप्रथम तारघर की स्थापना कब हुई ? (1985, 90)

उत्तर—1853 ई० में।

प्रश्न 11. मारकोनी ने किस यन्त्र का आविष्कार किया ? (1986)

उत्तर—बे-तार का तार।

प्रश्न 12. बोलती हुई फिल्मों का प्रदर्शन सर्वप्रथम कहाँ हुआ था ? (1986, 89)

उत्तर—अमेरिका के हालीवुड नगर में सन् 1928 में।

प्रश्न 13. आर्थिक अन्योन्याश्रितता को उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए। (1989)

उत्तर—अन्योन्याश्रितता का तात्पर्य विभिन्न राष्ट्रों को अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए एक दूसरे पर निर्भर रहना है। रूस के खाद्यान्नों की पूर्ति अमेरिका करता है तथा अमेरिका को कच्चा माल रूस देता है।

परीक्षोपयोगी एवं बोर्ड परीक्षा में पूछे गये अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1. विश्व की प्रमुख दो समाचार एजेन्सियों के नाम लिखिए। (1988)

उत्तर—(1) राइटर (ब्रिटेन), (2) प्रेस ट्रस्ट आफ इण्डिया (भारत)।

प्रश्न 2. प्रमुख जन संचार माध्यम कौन से हैं ? (1987)

उत्तर—(1) प्रेस, (2) रेडियो, (3) बेतार का तार, (4) टेलीविजन (5) टेलीफोन आदि।

प्रश्न 3. भारत में सर्वप्रथम दूरदर्शन केन्द्र कब और कहाँ स्थापित हुआ था ?

उत्तर—दिल्ली में सन् 1969 ई० में।

प्रश्न 4. वृत्त चित्र किसे कहते हैं ?

उत्तर—जो चल चित्र ज्ञान वर्द्धक होते हैं वे वृत्त-चित्र कहलाते हैं।

प्रश्न 5. टेलीफोन का आविष्कार कब और किसने किया था ? (1991)

उत्तर—सं० रा० अमेरिका के ग्रेहमबेल ने सन् 1876 ई० में।

प्रश्न 6. सांस्कृतिक शिष्ट मण्डल क्यों आते हैं ?

उत्तर—सांस्कृतिक शिष्ट मण्डल मैत्री और सद्भाव बढ़ाने के लिए आते हैं।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. विकास की प्रारम्भिक अवस्था में मानव किस प्रकार अपने विचारों तथा भावनाओं को व्यक्त करता था ?

उत्तर—विकास की प्रारम्भिक अवस्था में मानव अपने विचारों तथा भावनाओं को संकेत तथा विचित्र आवाजों से प्रकट करता था।

प्रश्न 2. भारत की प्रमुख समाचार एजेन्सियों के नाम लिखिए। (1991)

उत्तर—(1) प्रेस ट्रस्ट ऑफ इण्डिया, (2) यूनाइटेड न्यूज ऑफ इण्डिया, (3) हिन्दुस्तान समाचार, (4) समाचार भारती।

प्रश्न 3. विदेशों में सन्देश भेजने के प्रमुख साधन क्या हैं ? (1991)

उत्तर—(1) तार (2) बे-तार का तार
(3) केबिल ग्राम (4) टेलीफोन
(5) चलचित्र एवं दूरदर्शन।

प्रश्न 4. ज्ञान वर्द्धन एवं मनोरंजन की दृष्टि से रेडियो और ट्रान्जिस्टर का क्या महत्व है ? (1985)

उत्तर—ज्ञानवर्द्धन एवं मनोरंजन की दृष्टि से रेडियो एवं ट्रान्जिस्टर का विशेष महत्व है। यह शिक्षित तथा अशिक्षित दोनों ही व्यक्तियों के लिये लाभदायक है। इनकी सहायता से सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा नाटक आदि देख सकते हैं तथा मनोरंजन कर सकते हैं।

प्रश्न 5. आज चलचित्र तथा दूरदर्शन शिक्षा एवं मनोरंजन के सुलभ साधन क्यों माने जाते हैं ?

उत्तर—वर्तमान समय में चलचित्र तथा दूरदर्शन शिक्षा तथा मनोरंजन के महत्वपूर्ण साधन हैं। सर्वसाधारण जनता हेतु चलचित्र एवं दूरदर्शन शिक्षा एवं

मनोरंजन के लिये उपयोगी हैं। चलचित्र अथवा सिनेमा के द्वारा विचारों का आदान प्रदान होता है। फिल्मों के द्वारा लोग अन्य राष्ट्रों के विचारों तथा वहाँ के जनजीवन के बारे में जानकारी प्राप्त कर लेते हैं।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. राष्ट्रों की अन्योन्याश्रितता से क्या तात्पर्य है ? ये राष्ट्र एक दूसरे पर किस प्रकार आश्रित हैं ? स्पष्ट कीजिए। (1989)

उत्तर—पारस्परिक निर्भरता को राष्ट्रों की अन्योन्याश्रितता कहते हैं। प्रत्येक राष्ट्र सभी वस्तुओं का उत्पादन अकेला नहीं कर सकता है उसे इनकी पूर्ति के लिये दूसरे राष्ट्रों पर निर्भर रहना पड़ता है। इसी को राष्ट्रों की निर्भरता अथवा अन्योन्याश्रितता कहते हैं।

वर्तमान युग विज्ञान का युग है। विज्ञान तथा तकनीकी का विकास होने से एक देश के लोग दूसरे देश के लोगों के तेजी से निकट आते जा रहे हैं। संसार के अधिकांश देश पारस्परिक एवं अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति तथा सुरक्षा की दृष्टि से एक दूसरे पर निर्भर हैं। ये देश सामान्य रूप से निम्न क्षेत्रों में एक दूसरे पर निर्भर हैं—

(1) मानवीय अन्योन्याश्रितता, (2) राजनैतिक अन्योन्याश्रितता, (3) आर्थिक अन्योन्याश्रितता, (4) वैज्ञानिक और तकनीकी अन्योन्याश्रितता, (5) सांस्कृतिक अन्योन्याश्रितता।

प्रश्न 2. वर्तमान समय में विचारों के आदान-प्रदान के विभिन्न साधनों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—

विचारों का आदान-प्रदान

(1) भाषा एवं साहित्य—हम अपने विचार भाषा के माध्यम से ही प्रकट करते हैं। यदि हम दूसरे देश से सम्बन्ध रखना चाहते हैं तो हमें उनकी भाषा तथा साहित्य का अध्ययन करना पड़ेगा। आज अंग्रेजी इतनी अधिक लोकप्रिय हो रही है। इसका एक मात्र कारण यह है कि यह विश्व की एक भाषा है। संसार के लगभग सभी विकसित देश इस भाषा का प्रयोग रहते हैं।

किसी देश की सांस्कृतिक, वैज्ञानिक प्रगति को जानने के लिये वहाँ के साहित्य का अध्ययन आवश्यक है। भाषा और साहित्य के माध्यम से हम अपने तथा दूसरों के प्रगतिशील भावों और विचारों एवं राजनैतिक साहित्यिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं।

स्पष्ट है कि प्रत्येक देश को अन्य देशों पर निर्भर रहने के कारण दूसरी भाषाओं तथा साहित्य का अध्ययन करना आवश्यक है।

(ii) विचारों के आदान-प्रदान करने के माध्यम—विचारों के आदान-प्रदान के माध्यम निम्नलिखित हैं—

(अ) प्रेस—प्रेस विचारों के आदान-प्रदान का सबसे आसान तथा प्रत्येक स्थान पर सुलभ होने वाला साधन है। प्रेस के अन्तर्गत समाचार-पत्र, पत्र-पत्रिकाएँ तथा पुस्तकों को सम्मिलित किया जाता है। एक देश की पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएँ तथा समाचार-पत्र दूसरे देशों में पढ़े जाते हैं। इस प्रकार विचारों का आदान-प्रदान होता है। एक भाषा की पुस्तकों का दूसरी भाषा में अनुवाद किया जाता है। इससे वे व्यक्ति भी बहुत लाभान्वित होते हैं जो केवल एक भाषा ही जानते हैं।

(ब) टेलीफोन—टेलीफोन के द्वारा व्यक्ति अपने नगर में तथा नगर के बाहर भी बात कर सकते हैं। अब तो अपने देश के बाहर भी टेलीफोन से बातचीत की जा सकती है। भारत के निवासी इंगलैण्ड, रूस, अमेरिका और फ्रांस आदि विकसित देशों से कुछ मिनटों में बातचीत कर सकते हैं। आज टेलीफोन अत्यन्त लोकप्रिय हो रहा है।

(स) टेलीग्राफ—टेलीग्राफ के द्वारा समाचार एक स्थान से दूसरे स्थान को भेजे जाते हैं। तार के द्वारा संकेतों के माध्यम से समाचार तुरन्त भेजे जा सकते हैं। टेलिफोन प्रत्येक व्यक्ति नहीं लगवा सकता। यह साधन एक महंगा साधन है। परन्तु तार एक सस्ता साधन है जो प्रत्येक व्यक्ति को आसानी से सुलभ हो सकता है। इस माध्यम से विचारों का आदान-प्रदान होता है।

(द) रेडियो—देश अथवा विदेश के समाचारों की जानकारी के लिए रेडियो सबसे अच्छा साधन है। हम घर बैठे एक मिनट में ही हजार मील दूर के समाचार सुन सकते हैं। रेडियो पर प्रमुख व्यक्ति अपने भाषण प्रसारित करते हैं। कभी-कभी स्त्रियों तथा बच्चों के प्रोग्राम भी प्रसारित किये जाते हैं। रेडियो आजकल इतना लोकप्रिय है कि इसके विषय में अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं है।

(य) टेलीविजन—रेडियो का एक और परिष्कृत रूप टेलीविजन है। इसमें बोलने वाले व्यक्ति को देखा भी जा सकता है। टेलीविजन भी वह कार्य करता है जो रेडियो करता है। टेलीविजन मनोरंजन का बहुत अच्छा साधन है। क्रिकेट का मैच, हाकी या बालीवाल का मैच देखने के लिए टेलीविजन अत्यन्त लोकप्रिय हो रहा है।

(र) डाक—विचारों के आदान-प्रदान के लिए डाक एक अत्यन्त सस्ता साधन है। निर्धन व्यक्ति इससे अत्यन्त लाभान्वित होते हैं।

(ल) चलचित्र—चलचित्रों के द्वारा समाज की परिस्थितियों का प्रदर्शन किया जाता है। जब हम दूसरे देशों के चलचित्र देखते हैं तो हमें उन देशों के बारे में जानकारी होती है। चलचित्र के माध्यम से विभिन्न विचारधाराओं, सामाजिक तथा सांस्कृतिक समस्याओं तथा अन्य-बातों की जानकारी कराई जाती है। इसके माध्यम से हम अन्य देशों की संस्कृतियों की जानकारी करते हैं।

प्रश्न 3. आज सांस्कृतिक शिष्ट मण्डलों के कार्यक्रमों का क्या महत्व है? इसे किस प्रकार प्रोत्साहित किया जा रहा है? (1985)

उत्तर—सांस्कृतिक शिष्टमण्डलों का विचारों के आदान-प्रदान की दृष्टि में विशेष महत्व है। सांस्कृतिक शिष्ट मण्डलों का प्रमुख कार्य विचारों, संस्कृति, सभ्यता, भाषा एवं साहित्य का आदान-प्रदान अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों द्वारा एक देश का दूसरे देश के साथ सम्बन्ध स्थापित करना तथा आदान-प्रदान करना होता है।

छात्र, अध्यापक विद्वानों तथा सांस्कृतिक शिष्ट मण्डलों के आदान-प्रदान की व्यवस्था—अत्यन्त प्राचीन समय से ही एक देश के छात्र दूसरे देशों में अध्ययन के लिए जाते रहते हैं। भारत में तक्षशिला और नालन्दा विश्वविद्यालयों में दूर-दूर से लोग पढ़ने आते थे। इस प्रकार वे अपनी संस्कृति का यहाँ प्रसार करते थे और अपने देश को यहाँ की संस्कृति ले जाते थे। भारत के मुसलमान अरबी साहित्य के अध्ययन के लिए मक्का-मदीना तक जाते थे।

आधुनिक समय में विश्व में विद्वान शिक्षकों के आदान-प्रदान की भी प्रथा आरम्भ हो गई है। एक देश के शिक्षक अन्य देशों में भाषण देने के लिए आमन्त्रित किये जाते हैं। भारतीय दार्शनिक डॉ० राधाकृष्णन विदेशों में भारतीय दर्शन पर भाषण देने के लिए जाया करते थे। आधुनिक समय में यूनेस्को इस कार्य में सहायता करता है। यूनेस्को विशेषज्ञों का चयन करता है और उनकी आवश्यकता के स्थान भेजने का प्रवन्ध करता है।

आजकल सांस्कृतिक शिष्ट मण्डल अन्य देशों का दौरा करते हैं। हमारे यहाँ भी नृत्य करने वाले नाटककार तथा अन्य प्रकार के कलाकार आते रहते हैं। भारतीय नर्तक विदेशों में अत्यन्त लोकप्रिय हो रहे हैं। सोनाल मानसिंह का नाम कौन नहीं जानता ? मैत्री सम्बन्ध स्थापित करने के लिए शिष्टमण्डलों का आदान-प्रदान आवश्यक है। प्रायः समस्याओं के अध्ययन करने के लिए शिष्टमण्डल अन्य देशों का दौरा करते हैं।

बहु विकल्पीय प्रश्न

सही विकल्प चुनिए—

प्रश्न 1. निम्नलिखित में से कौन सा राष्ट्र बहु भाषीय, बहुजातीय तथा बहु धार्मिक है— (1990)

(क) सं. रा. अमेरिका, (ख) सोवियत संघ, (ग) ब्राज़ील, (घ) चीन।

उत्तर—(ख) सोवियत संघ।

प्रश्न 2. भारत में दूरदर्शन का प्रथम केन्द्र किस वर्ष स्थापित किया गया—

(क) 1929, (ख) 1959, (ग) 1979, (घ) 1969।

उत्तर—(घ) 1969।

प्रश्न 3. बोलती फिल्मों का प्रदर्शन हालीवुड में किस वर्ष हुआ ? (1988)

(क) 1828, (ख) 1829, (ग) 1928, (घ) 1929।

उत्तर—(ग) 1928।

प्रश्न 4. टेलीफोन का आविष्कार किस वर्ष हुआ था ? (1991)

(क) 1883, (ख) 1853, (ग) 1876, (घ) 1872।

उत्तर—(ग) 1876।

26 अन्तर्राष्ट्रीय तकनीकी एवं आर्थिक सहयोग, व्यापार तथा व्यापारिक मार्ग

राष्ट्रीयकृत पाठ्य पुस्तक में दिये गये प्रश्नों के उत्तर
अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. भिलाई इस्पात कारखाना खोलने में हमें किस देश का तकनीकी सहयोग मिला है ?

उत्तर—सोवियत रूस का।

प्रश्न 2. कौन अन्तर्राष्ट्रीय संगठन हमें स्वास्थ्य तथा तकनीकी सहयोग देता है ?

उत्तर—विश्व स्वास्थ्य संगठन (W.H.O.)।

प्रश्न 3. संयुक्त राष्ट्र संघ की कौन-सी संस्था कृषि सम्बन्धी तकनीकी सहयोग प्रदान करती है ? (1985)

उत्तर—विश्व खाद्य तथा कृषि संगठन (W.F.A.O.)।

प्रश्न 4. यूनेस्को का पूरा हिन्दी नाम लिखिए। (1986, 89)

उत्तर—संयुक्त राज्य शैक्षिक, वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक संगठन।

प्रश्न 5. निम्नलिखित के मुख्यालय बताइये—

(i) अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष।

(ii) विश्व बैंक।

(iii) यूनेस्को। (1988)

(iv) विश्व डाक संगठन। (1987)

उत्तर—(i) वाशिंगटन, (ii) वाशिंगटन; (iii) पेरिस, (iv) बर्न (स्विट्जरलैण्ड)।

प्रश्न 6. लाइनर पोत और ट्राम्प पोत का एक प्रमुख अन्तर बताइए। (1985, 88)

उत्तर—नियमित पथ का अन्तर। लाइनर के मार्ग निश्चित होते हैं। ट्राम्प का मार्ग निश्चित नहीं होता है।

प्रश्न 7. भारत से इण्डोनेशिया जाने वाले पोत जलमार्ग किस जल सन्धि से गुजरते हैं ?

उत्तर—मलक्का जल सन्धि।

प्रश्न 8. भारत से ब्रिटेन जाने वाले जहाज को कौन-सी सागरीय नहर पार करनी होती है ?

उत्तर—स्वेज नहर।

प्रश्न 9. पनामा नहर किस-किस महासागर को जोड़ती है? (1988)

उत्तर—प्रशान्त तथा अटलान्टिक महासागर।

प्रश्न 10. भारत के अन्तर्राष्ट्रीय वायु मार्ग निगम का नाम बताइए। (1987)

उत्तर—एअर इण्डिया (Air India)।

परीक्षोपयोगी एवं बोर्ड परीक्षा में पूछे गये अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1. स्वेज नहर किन-किन महासागरों को जोड़ती है? (1991)

उत्तर—लाल सागर और भूमध्य सागर।

प्रश्न 2. स्वेज नहर का निर्माण कब हुआ था? (1985, 88)

उत्तर—सन् 1869 ई० में।

प्रश्न 3. पनामा नहर किस महाद्वीप में है? (1988)

उत्तर—दक्षिणी अमेरिका।

प्रश्न 4. पनामा नहर का निर्माण कब हुआ था? (1986)

उत्तर—सन् 1914 ई० में।

प्रश्न 5. विश्व की सबसे बड़ी रेलवे लाइन कौन सी है? (1989)

उत्तर—ट्रान्स साइबेरियन रेल मार्ग।

प्रश्न 6. ट्रान्स इण्डियन रेल मार्ग किन दो देशों को जोड़ता है? (1990)

उत्तर—भारत और पाकिस्तान।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार किसे कहते हैं? (1987)

उत्तर—अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का अर्थ उस व्यापार से है जिसके अन्तर्गत दो या दो से अधिक देशों के बीच वस्तुओं तथा सेवाओं का आदान-प्रदान होता है।

प्रश्न 2. आयात-निर्यात किसे कहते हैं? (1985, 86, 87, 88, 89)

उत्तर—विदेशों को भेजा जाने वाला माल निर्यात और मँगाया जा वाला माल आयात कहलाता है।

प्रश्न 3. अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की आवश्यकता के सम्बन्ध में किन्हीं चार बातों को बतलाइए।

उत्तर—(1) विशिष्टीकरण,

(2) कच्चे माल की प्राप्ति,

(3) प्राकृतिक साधनों के पूर्ण उपयोग के लिए,

(4) विदेशी मुद्रा की प्राप्ति,

(5) विविध उपभोक्ता पदार्थ।

प्रश्न 4. आयात निर्यात कर लगाने के उद्देश्य समझाइए। (1989)

उत्तर—(1) विदेशी मुद्रा की प्राप्ति,

(2) विशेष वस्तुओं की उपलब्धता,

(3) कच्चे माल की प्राप्ति,

(4) प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग।

प्रश्न 5. तकनीकी का क्या अर्थ है ? इसका विज्ञान से क्या सम्बन्ध है ?

उत्तर—किसी उद्देश्य या उद्देश्यों की पूर्ति के लिए द्वितीय व उच्च स्तर के साधनों की व्यवस्था को तकनीकी कहते हैं।

विज्ञान का तकनीकी से घनिष्ठ सम्बन्ध है क्योंकि विज्ञान तकनीकी को जन्म देता है।

प्रश्न 6. मध्ययुग के पश्चात् पश्चिम के देश पूरब के देशों से तकनीकी में क्यों आगे निकल गये ?

उत्तर—मध्ययुग के पश्चात विश्व में कृषि के पश्चात् मशीन युग प्रारम्भ होता है। मध्य युग के पश्चात पश्चिम के देश तकनीकी में पूरब के देशों से इस कारण आगे निकल गये क्योंकि पश्चिम में औद्योगिक क्रान्ति तथा राजनैतिक चेतना और आर्थिक विकास आदि तीव्रगति से पहले हुए तथा वहाँ जागृति थी।

प्रश्न 7. तकनीकी सहयोग के प्रमुख स्रोत क्या हो सकते हैं ?

उत्तर—(1) संयुक्त राष्ट्र संघ। (2) बहु राष्ट्र सहयोग संघ।
(3) बहु राष्ट्रीय उद्योग निगम। (4) व्यक्तिगत उद्योग सहयोग।
(5) राष्ट्रों के मध्य तकनीकी सहयोग के समझौते।

प्रश्न 8. यूरोपीय समुदाय क्या है ? यह किस आधुनिक प्रवृत्ति का द्योतक है ? (1986)

उत्तर—इसमें यूरोप के 6 राष्ट्र सम्मिलित हैं। यह बहुराष्ट्रीय सहयोगी संघ है। यह यूरोपीय देशों के आर्थिक विकास का द्योतक है।

प्रश्न 9. पाइप लाइन का क्या महत्व है ? (1986)

उत्तर—इस लाइन से तरल तथा गैस के पदार्थ जैसे खनिज तेल, प्राकृतिक गैस, कोयले का चूर्ण पानी के घोल के रूप में एक देश से दूसरे देश तक भेजे जाते हैं।

प्रश्न 10. चीजों की पैकिंग (सन्दूक बन्दी) में मानकता का क्या महत्व है ?

उत्तर—चीजों की पैकिंग में मानकता का बहुत अधिक महत्व है। यह सर्वसम्मत अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार नियमावली को क्रियान्वित करने के लिए बहुत आवश्यक है।

प्रश्न 11. स्वेज नहर का क्या महत्व है ?

उत्तर—यह नहर लाल सागर तथा भूमध्य सागर को जोड़ती है। इसका निर्माण सन् 1865 में हुआ था। इसके बनने से पूर्व एशिया से यूरोप तथा यूरोप से एशिया की ओर आने-जाने वाले जहाजों को दक्षिणी अफ्रीका का चक्कर लगाकर आना पड़ता था। इससे समय तथा धन अधिक व्यय होता था। किन्तु नहर के बन जाने से यूरोप और एशिया के देश अधिक निकट आ गये हैं। इस प्रकार समय, धन और दूरी की बचत हुई है। विश्व का 21% व्यापार इसी मार्ग से होता है। उचित मात्रा में खनिज तेल इसी मार्ग द्वारा भेजा जाता है।

प्रश्न 12. वृहत वृतमार्ग का क्या महत्व है ?

उत्तर—वृहत-वृत मार्ग का बहुत अधिक महत्व है। अन्तर्राष्ट्रीय वायु मार्ग से प्रधान मार्गों को मिलाते हुए वृहत-वृत सिद्धान्त पर छोटे से छोटा मार्ग अपनाते हैं, जिससे दूरी की कमी के कारण समय तथा खर्चे की बचत होती है।

प्रश्न 13. डेन्यूब नदी अन्तर्राष्ट्रीय जलमार्ग के रूप में क्यों महत्वपूर्ण है ?

उत्तर—अन्तर्राष्ट्रीय जलमार्गों से डेन्यूब नदी का बहुत अधिक महत्व है। यह सोवियत रूस, पश्चिमी जर्मनी, यूगोस्लाविया, हंगरी तथा रोमानिया आदि के लिए व्यापारिक मार्ग है।

प्रश्न 14. सीमा शुल्क किसे कहते हैं ? इसकी क्या आवश्यकता है ?

उत्तर—आयात तथा निर्यात कर को सीमा-शुल्क कहते हैं। सरकार इसके द्वारा अपनी आय में वृद्धि करती है।

प्रश्न 15. विनिमय दर क्या है ?

उत्तर—विदेशों में भुगतान के लिए मुद्रा की जिस दर का प्रयोग किया जाता है उसे विनिमय दर कहते हैं।

प्रश्न 16. व्यापार सन्तुलन का क्या अर्थ है ?

उत्तर—आयात और निर्यात व्यापार में सन्तुलन स्थापित करना व्यापार सन्तुलन कहलाता है।

प्रश्न 17. भारत का अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार स्थल मार्गों की तुलना में जल मार्गों से क्यों अधिक होता है ?

उत्तर—भारत के तीन ओर समुद्र है। अत: समुद्री मार्गों को पर्याप्त सुविधायें उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त सड़कों तथा रेलों का मार्ग मँहगा पड़ता है तथा माल की ढुलाई भी कम होती है। अत: भारत का अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार समुद्री मार्गों से ही होता है।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. तकनीकी सहयोग का क्या अर्थ है ? आर्थिक विकास के लिए इसकी क्या आवश्यकता है ?

उत्तर—आधुनिक युग सभ्यता का युग है। आज के विश्व में विज्ञान की प्राप्ति अपनी चरम सीमा पर पहुँच चुकी है। विश्व के सभी राष्ट्रों का विकास समान नहीं है। कुछ राष्ट्र अपने विकास कार्यों में बहुत आगे बढ़े-चढ़े हुए हैं, कुछ राष्ट्रों में विकास की गति धीमी है। तकनीकी शब्द का अर्थ है 'विधि' या 'तरीका'। विकसित वैज्ञानिक तरीकों को ही तकनीकी संज्ञा दी गई है। सभी राष्ट्रों में विकसित वैज्ञानिक तकनीकी समान नहीं है। कुछ राष्ट्र इस दिशा में पिछड़े हुए हैं। वे अन्य विकसित देशों से अपनी कृषि एवं उद्योग-धन्धों के क्षेत्र में तकनीकी सहायता प्राप्त करते हैं। या कुछ विकसित देश विकासशील देशों को अपनी आधुनिक वैज्ञानिक तकनीकी द्वारा सहयोग प्रदान करते हैं। इस प्रकार कृषि, उद्योग-धन्धों एवं अन्य उत्पादन क्षेत्रों में इस प्रकार के वैज्ञानिक अनुसंधानों द्वारा दिये गये पारस्परिक सहयोग को ही तकनीकी सहयोग कहते हैं। जैसे भारत ने कृषि उत्पादन क्षेत्रों में सं० राज्य अमेरिका से तथा धान उत्पादन क्षेत्र में जापान से तकनीकी सहयोग प्राप्त किया है। भारत में गेहूँ की नई किस्म के बीजों के अनुसंधान में अमेरिकन 'प्रोफेसर बोरलाग' से बड़ा सहयोग मिला। इसी प्रकार लोहा-इस्पात के कारखाने स्थापित करने में सोवियत रूस, पश्चिमी जर्मनी, ब्रिटेन आदि देशों का सहयोग मिला।

तकनीकी सहयोग के अन्तर्गत निम्नलिखित सहयोग प्राप्त है—

(1) वैज्ञानिक उपकरणों का सहयोग।

(2) विशेषज्ञों का सहयोग।

(3) पूंजी का सहयोग।

(4) विशेष प्रकार के प्रशिक्षणों का सहयोग।

तकनीकी सहयोग की आवश्यकता

(1) तकनीकी सहयोग द्वारा विकासशील देश अपनी कृषि को समुन्नत करके प्रति हेक्टेयर उत्पादन बढ़ा सकते हैं।

(2) तकनीकी सहयोग द्वारा उद्योग-धन्धों का विकास किया जाता है।

(3) तकनीकी सहयोग द्वारा कमजोर राष्ट्र अपना आर्थिक विकास कर सकते हैं।

(4) तकनीकी सहयोग द्वारा विकासशील देशों के अल्प विकसित प्राकृतिक संसाधनों का विकास किया जा सकता है।

(5) तकनीकी सहयोग सामाजिक तथा आर्थिक सहयोग का आधारभूत पक्ष है।

प्रश्न 2. तकनीकी सहयोग प्राप्त करने में किन बातों पर ध्यान देना जरूरी है ?

उत्तर—तकनीकी सहयोग आधुनिक सामाजिक एवं आर्थिक विकास की आधार शिला है। प्रत्येक राष्ट्र अन्य राष्ट्रों से इस प्रकार का सहयोग प्राप्त करने की अपेक्षा रखता है। तकनीकी सहयोग प्राप्त करने में निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना आवश्यक है :—

(1) तकनीकी सहयोग अपने देश के भौगोलिक पर्यावरण के अनुसार ही प्राप्त करना चाहिए। उदाहरण के लिये रेगिस्तान में सूती मिलें स्थापित करना नितान्त भ्रामक है।

(2) तकनीकी सहयोग अपनी आर्थिक स्थिति (सामर्थ्य) के अनुसार ही प्राप्त करना उचित है। इससे अधिक प्राप्त करने पर देश दिवालिया बन सकता है। क्योंकि सहयोग के रूप में आर्थिक सहायता को चुकाना कठिन पड़ जायगा।

(3) तकनीकी सहयोग आवश्यकता एवं परिस्थिति को ध्यान में रखकर प्राप्त करना चाहिए।

(4) तकनीकी सहयोग प्राप्त करके उसे पूर्णतौर से सीखने, उसको आगे बढ़ाने तथा उसके अनुरूप विशेषज्ञों एवं कारीगरों को तैयार करना आवश्यक है।

(5) तकनीकी सहयोग राष्ट्र के अपने स्तर का होना चाहिए।

(6) किसी देश से प्राप्त तकनीकी को जैसा का तैसा प्रयोग नहीं करना चाहिए बल्कि अपने राष्ट्र के अनुकूल बनाकर उसमें आवश्यक परिवर्तन करके (यदि आवश्यकता हो तो) करना चाहिए।

प्रश्न 3. यातायात के प्रमुख साधन क्या हैं ? उनमें से कौन-कौन अन्तर्राष्ट्रीय महत्व के हैं और क्यों ?

उत्तर—यातायात के निम्नलिखित साधन हैं—

1. मानव,

2. पशु बोझा लादकर तथा गाड़ी खींचकर

3. मोटर, 4. रेल मार्ग,
5. रज्जु मार्ग, 6. पाइप लाइन,
7. आन्तरिक जल मार्ग, 8. समुद्री मार्ग,
9. वायु मार्ग, 10. अन्तरिक्ष मार्ग ।

इन 10 साधनों में से केवल 6 साधन ही अन्तर्राष्ट्रीय महत्व के हैं—

1. वायु मार्ग, 2. जल मार्ग,
3. अन्तरिक्ष मार्ग, 4. पाइप लाइन,
5. रेलगाड़ियाँ, 6. मोटर गाड़ियाँ।

ये इसलिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि आज के विश्व में पुराने मन्दगति वाले साधनों को छोड़कर विश्व नये प्रयोगों की ओर जा रहा है। अनेक नवीन साधनों से तीव्रतम गति से हम जा सकते हैं। ये सभी मार्ग एक-दूसरे राष्ट्र तक जाते हैं और समस्त विश्व को एक सूत्र में पिरोये हुए हैं।

प्रश्न 4—पनामा नहर और स्वेज नहर की तुलना कीजिए।

उत्तर—

स्वेज नहर	पनामा नहर
1. इसका निर्माण 1869 में हुआ था।	1. इसका निर्माण 1914 में हुआ था।
2. इस नहर का मार्ग समतल होने से पार करने में कम समय लगता है।	2. इसका मार्ग समतल नहीं है अतः समय अधिक लगता है।
3. यह लालसागर और भूमध्य सागर को मिलाती है।	3. यह प्रशान्त महासागर और अन्ध-महासागर को मिलाती है।
4. इस नहर में एक ही ओर से (One way) जहाज चलाये जाते हैं।	4. इसमें दोनों ओर से एक साथ जहाज प्रवेश कर सकते हैं।
5. यह मार्ग अनेक विकसित देशों की पूर्ति करता है।	5. यह मार्ग केवल संयुक्त राज्य अमेरिका की पूर्ति करता है।
6. इसके निर्माण में कम खर्च हुआ है।	6. इसके निर्माण में अधिक खर्च हुआ है।
7. इस मार्ग में पनामा से दुगुना माल आता है। विश्व का 21% व्यापार इस मार्ग से होता है।	7. इस मार्ग से कम माल ढोया जाता है।

प्रश्न 5. अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की क्या आवश्यकता है? स्पष्ट कीजिये एवं इसका अर्थ बताइये।

उत्तर—अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का अर्थ—आज के युग में प्रत्येक राष्ट्र दो प्रकार का व्यापार करता है—

(1) देश की सीमा के अन्तर्गत का व्यापार—यह व्यापार देश के भीतर सीमाओं के अन्तर्गत किया जाता है। इसे आन्तरिक व्यापार या देशी व्यापार की संज्ञा भी दी जाती है।

(2) देश की सीमा से बाहर का व्यापार—यह व्यापार अन्य देशों के साथ किया जाता है। इसे विदेशी या अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार भी कहते हैं।

"वह व्यापार जिसके अन्तर्गत दो या दो से अधिक देशों के बीच वस्तुओं और सेवाओं को मंगाया या भेजा जाता है अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार कहलाता है ।

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की आवश्यकता

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की आवश्यकता निम्न कारणों से होती है :—

(1) **विशिष्टीकरण**—इसमें कोई देश कुछ विशेष वस्तुओं का उत्पादन करता है और उनका निर्यात करके अपनी आवश्यकता की वस्तुओं को इनके बदले आयात करता है ।

(2) **कच्चे माल की प्राप्ति के लिए**—कुछ देश वैज्ञानिक तकनीकी में आगे बढ़े हुए हैं किन्तु उनके यहाँ कच्चे माल का अभाव होता है अतः अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार द्वारा वह अन्य देशों से कच्चे माल का आयात करता है जैसे जापान ।

(3) **प्राकृतिक साधनों के उपयोग के लिए**—कुछ देशों में प्राकृतिक संसाधन अधिक होते हैं उनका उपयोग अधिक मात्रा में करके उत्पादन किया जाता है जो देश की आवश्यकता से अधिक होता है उसका विदेशों में निर्यात करने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की आवश्यकता होती है ।

(4) **विदेशी मुद्रा की प्राप्ति के लिए**—अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है । जिसके द्वारा विदेशों के आर्थिक भुगतान किये जाते हैं ।

(5) **कुशलता की वृद्धि के लिए**—अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में देश-विदेशों की वस्तुओं में प्रतियोगिता होती है, जिससे उद्योगों की कुशलता बढ़ाने में सहायता मिलती है ।

(6) **विविध उपभोग पदार्थ**—कोई भी राष्ट्र विविध उपभोग पदार्थों का निर्माण अकेले ही नहीं कर सकता । उसे उनको अन्य देशों से भी मँगाना पड़ता है । जैसे भारत की चाय एवं कहवा इंग्लैण्ड अमेरिका आदि देशों को भेजा जाता है । इसी प्रकार भारत सुगन्धित पदार्थ अरब राष्ट्रों से मँगाता है । इसके लिए अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की आवश्यकता होती है ।

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से देश-विदेश के लोगों से सहयोग एवं शान्ति की भावना का विकास होता है ।

प्रश्न 6. ऐसे कौन से नये तकनीकी विकास हुए हैं जो मार्गों के अन्तर्राष्ट्रीय विकास में विशेष रूप से सहायक हैं ? (1985)

उत्तर—मार्गों के अन्तर्राष्ट्रीय विकास में निम्नलिखित तकनीकी साधनों का विकास हुआ है :—

(1) **विशाल मालवाहक जलपोतों का प्रयोग**—आजकल विशाल जलपोतों का निर्माण करने की तकनीकी का विकास हुआ है, जो 80,000 टन भार वहन की क्षमता तक पहुँच गये हैं । अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में सामान्यतः जलपोत 4000 टन भार की क्षमता से अधिक बड़े आकार के होते हैं । ये जलपोत माल के स्वरूप के अनुसार होते हैं ।

(2) **सामान्य प्रकार के माल जैसे मशीनरी आदि के लिए मानव आकार की सन्दूक बन्दी की व्यवस्था**—इस प्रकार पैकिंग किये गए माल को यांत्रिकीय ढंग से उतारने-चढ़ाने में तथा जहाज में रखने की सुविधा होती है ।

(3) तीव्रगामी तथा दूर-दूर रुकने वाली रेलगाड़ियाँ—विद्युत और डीजल से चलने वाली रेलगाड़ियाँ बिना रुके दिन-रात चल सकती हैं। लम्बे-लम्बे रेल मार्गों द्वारा सामान आसानी से एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाया जाता है।

(4, बड़ी तथा चौड़ी सड़कों की व्यवस्था—आजकल बड़ी-बड़ी तथा चौड़ी सड़कों का निर्माण हो रहा है ताकि ट्रैफिक में किसी प्रकार का अवरोध उत्पन्न न हो। प्लाई-ओवर तथा ओवर-ब्रिज सड़कों की विशेष चौराहों पर व्यवस्था की गई हैं।

(5) बड़े तथा तीव्रगामी वायुयानों की तथा बड़े-बड़े यंत्रों से सुसज्जित हवाई अड्डों की व्यवस्था—जम्बोजेट, कोनकोर्ड, एअर बस आदि प्रकार के वायुयानों ने यात्रियों तथा माल को ढोने में बहुत बड़ा परिवर्तन पैदा कर दिया है। आजकल यंत्रों से सुसज्जित हवाई अड्डों का निर्माण हो रहा है। रेगिस्तानी प्रदेशों तथा पहाड़ी क्षेत्रों में वायु सेवा का विस्तार किया जा रहा है।

(6) पाइप लाइन का प्रयोग—तरल पदार्थों तथा गैस की पाइप लाइनों द्वारा इन्हें लाने ले जाने की प्रक्रिया ने तो बहुत बड़ा परिवर्तन ला दिया है। मिट्टी का तेल, डीजल आदि एक देश की सीमा पार कर दूसरे देश तक पहुँचाये जा सकते हैं। इसी प्रकार ईंधन गैस को पहुँचाया जा सकता है। कोयले को पानी में घोल कर एक स्थान से दूसरे स्थान तक पाइप लाइनों द्वारा पहुँचाने की व्यवस्था की जा रही है।

(7) विशिष्ट प्रकार के माल. जैसे ओवर-क्राफ्ट आदि—नये नये आविष्कार उतरने-चढ़ने एवं गति को बढ़ाने के विषय में किये जा रहे हैं। बड़े-बड़े जहाज से ओवर-क्राफ्ट द्वारा तेजी से किनारे तक आया जा सकता है। इलोक्ट्रोनिक तकनीकी की वृद्धि से वायुयानों को सुरक्षा एवं आसानी से उतारा-चलाया जा सकता है।

इस प्रकार तकनीकी विकास मार्गों की दूरी पर अधिक से अधिक विजय प्राप्त करने की सामर्थ्य प्रदान कर रहा है। दलदली भूमि या शहरों में सड़कें खम्भों पर ले जाई जाती हैं। पहाड़ों में लम्बी-लम्बी सुरंगें बनाई जाती हैं।

प्रश्न 7. अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक सहयोग की क्यों आवश्यकता है? इसके प्रधान स्रोत क्या हैं? आर्थिक सहायता प्राप्त करने में किन बातों पर ध्यान देना चाहिए?

उत्तर—अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग की आवश्यकता—तकनीकी सहयोग के साथ-साथ आर्थिक सहयोग की आवश्यता पड़ती है। उद्योग-धन्धों के विकास के लिए पूँजी, मशीन, भूमि. कर्मचारी आदि चाहिये। इनके संग्रह के लिए अधिक धन की आवश्यकता होनी है। सभी राष्ट्र समान रूप से धनवान नहीं हैं। आर्थिक दृष्टि से कमजोर राष्ट्रों को दूसरे देशों से आर्थिक सहयोग लेकर ही अपने देश की योजनाओं को कार्यान्वित करना पड़ता है। भारत इसका सजीव उदाहरण है। भारत ने अपनी पंचवर्षीय योजनाएँ चलाने के लिए आर्थिक सहयोग विदेशों से प्राप्त किया है। इस प्रकार विकासशील देशों को अपनी कृषि, उद्योग-धन्धों एवं प्राकृतिक संसाधनों का सफलतम प्रयोग करने के लिये अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक सहयोग की परम आवश्यकता हो रही है। ये राष्ट्र निरन्तर इस सहयोग को प्राप्त भी कर रहे हैं। इस सहयोग के आधार पर उनका आर्थिक विकास भी हो रहा है।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक सहयोग के मुख्य स्रोत

ये स्रोत निम्नलिखित हैं :—

(1) अन्तर्राष्ट्रीय ऋण,
(2) पारस्परिक मैत्री सहायता,
(3) अनुदान।

(1) अन्तर्राष्ट्रीय ऋण— ये ऋण राष्ट्रों के बीच पारस्परिक समझौते, बड़ी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों से समझौते तथा अन्तर्राष्ट्रीय उधार देने वाली बैंकों के समझौतों द्वारा प्राप्त किया जाता है।

(2) पारस्परिक मैत्री सहायता— इसके अनेक रूप हैं। जब किन्हीं राष्ट्रों के बीच पारस्परिक हित-अहित की समस्या आती है तो उनको लेकर एक-दूसरे की सहायता के लिये राष्ट्र अपना हाथ आगे बढ़ाते हैं। सुरक्षा की दृष्टि से भी पारस्परिक सहायता एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को प्रदान करते हैं।

(3) अनुदान— प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद 'लीग ऑफ नेशन्स' तथा द्वितीय महायुद्ध की समाप्ति के बाद संयुक्त राष्ट्र संघ के तत्वाधान में अनुदान के रूप में आर्थिक सहयोग प्रदान किया गया है। 'विश्व स्वास्थ्य संगठन (W H O.) यूनीसेफ तथा यूनेस्को (U.N.E.S.C.O) इस क्षेत्र में अधिक अनुदान देते हैं। इन संस्थाओं के पास चन्दे के रूप में धन प्राप्त होता है। जो राष्ट्र इनके सदस्य हैं वे प्रति वर्ष चन्दा देते हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक सहयोग की प्राप्ति के लिए निम्न बातों को ध्यान में रखना परम आवश्यक है—

(1) अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक सहयोग अपने कर्ज चुकाने की सामर्थ्य के अनुसार प्राप्त करना चाहिए।

(2) अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक सहयोग का सदुपयोग करना अति आवश्यक है।

(3) अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक सहयोग को जन-कल्याणकारी कार्यों एवं उत्पादक कार्यों मे लगाना चाहिये। जिससे सामाजिक तथा आर्थिक विकास हो।

(4) अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक सहयोग को शर्त के अनुसार भुगतान कर देना अति आवश्यक है। ऐसा न करने पर राष्ट्र की साख गिर जाती है।

वहु विकल्पीय प्रश्न

सही विकल्प चुनिए —

प्रश्न 1. विश्व की अन्तर्राष्ट्रीय भाषा कौन-सी है— (1986)
(क) रूसी, (ख) हिन्दी, (ग) अंग्रेजी, (घ) जर्मन।
उत्तर—(ग) अंग्रेजी।

प्रश्न 2. बेतार के तार के आविष्कारक थे— (1986)
(क) मार्कोनी, (2) आर्कमिडीज, (ग) डीजल, (घ) स्टीवेन्सन।
उत्तर—(क) मारकोनी।

प्रश्न 3. स्वेज नहर का निर्माण कब हुआ — (1985, 88, 90)
(क) 1869, (ख) 1890, (ग) 1914, (घ) 1932।
उत्तर—(क) 1869।

प्रश्न 4. विश्व की सबसे पहली समुद्र पार संचार लाइन लगाई गई थी— (1985, 88)

(क) 1866, (ख) 1877, (ग) 1906, (घ) 1966।

उत्तर—(ग) 1906।

प्रश्न 5. यूरोप-एशिया-आस्ट्रेलिया (पश्चिम-पूर्व) जलमार्ग का मुख्य बन्दरगाह कौन सा है— (1991)

(क) न्यूयार्क, (ख) कोलम्बो, (ग) टोकियो, (घ) पनामा।

उत्तर—(ख) कोलम्बो।

प्रश्न 6. विश्व का कौनसा देश सर्वाधिक टेलीफोन सेवाओं का उपयोग करता है— (1990)

(क) जापान, (ख) सं० रा० अमेरिका, (ग) सोवियत संघ, (घ) कनाडा।

उत्तर—(ख) सं० रा० अमेरिका।

27 अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग तथा शान्ति (1)

[प्रथम विश्व युद्ध तथा लीग ऑफ नेशन्स]

अति लघु उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1. प्रथम विश्व युद्ध कब से कब तक चलता रहा ? (1989)

उत्तर—यह युद्ध 28 जुलाई 1914 से 11 नवम्बर 1918 ई० तक चला।

प्रश्न 2. प्रथम विश्व युद्ध की किस घटना ने विश्व युद्ध का रूप ले लिया ?

उत्तर—आस्ट्रिया—हंगरी के युवराज की हत्या, जो 28 जून 1914 को की गई थी।

प्रश्न 3. प्रथम विश्व युद्ध में किन देशों की पराजय हुई ?

उत्तर—जर्मनी, आस्ट्रिया, हंगरी, बुलगेरिया तथा टर्की की पराजय हुई।

प्रश्न 4. वर्साय की सन्धि कब हुई ?

उत्तर—28 जून 1919 को।

प्रश्न 5. लीग ऑफ नेशन्स का कार्यालय कहाँ था ? (1986)

उत्तर—जिनेवा (स्विट्जरलैण्ड)

परीक्षोपयोगी एवं बोर्ड परीक्षा में पूछे गये अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1. लीग ऑफ नेशन्स (राष्ट्र संघ) की स्थापना कब हुई थी ? (1988)

उत्तर—सन् 1920 ई० में फ्रांस के वारसा नगर में हुई।

प्रश्न 2. वर्साय सन्धि का सम्बन्ध किस युद्ध से था ? (1988)
उत्तर—प्रथम विश्व युद्ध से सम्बन्ध था।
प्रश्न 3. विश्व की समाप्ति के बाद विश्व शान्ति स्थापित करने के लिए किस संस्था की स्थापना हुई ?
उत्तर—लीग ऑफ नेशन्स (राष्ट्र संघ) की स्थापना हुई।
प्रश्न 4. लीग ऑफ नेशन्स का प्रमुख उद्देश्य क्या था ?
उत्तर—विश्व में शान्ति स्थापित करना और विश्व को भावी युद्धों की विभीषिका से बचाना।
प्रश्न 5. अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय कहाँ है ? (1985, 88, 89)
उत्तर—नीदरलैण्ड की राजधानी हेग नगर में है।

लघु उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1. प्रथम विश्व युद्ध के कोई दो प्रमुख कारणों का उल्लेख कीजिए।
उत्तर—(1) आर्थिक साम्राज्यवाद, (2) सैनिक गुटबन्दी।
प्रश्न 2. विश्व युद्ध में बालकन की समस्या क्या थी ?
उत्तर—बालकन के कुछ प्रदेशों ने तुर्क साम्राज्य के विरुद्ध युद्ध आरम्भ कर दिया था।
प्रश्न 3. मित्र राष्ट्र संघ में कौन-कौन से देश थे ?
उत्तर—(1) इंगलैण्ड, (2) फ्रान्स, (3) रूस, (4) बैल्जियम, (5) जापान, (6) अमेरिका, (7) इटली, (8) सर्बिया।
प्रश्न 4. प्रथम विश्व युद्ध किन-किन देशों के मध्य हुआ ?
उत्तर—(1) मित्र राष्ट्र, (2) जर्मनी, आस्ट्रिया, हंगरी, बुल्गेरिया और तुर्की।
प्रश्न 5. लीग ऑफ नेशन्स की स्थापना क्यों की गई ?
उत्तर—प्रथम विश्व युद्ध में अपार जनशक्ति तथा धन का विनाश हुआ था। इस विनाश को रोकने के लिये अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति विलसन के प्रयासों से 1920 ई० में लीग ऑफ नेशन्स की स्थापना की गयी थी।
प्रश्न 6. लीग ऑफ नेशन्स के प्रधान अंगों का उल्लेख कीजिए।
उत्तर—(1) साधारण सभा,
(2) परिषद,
(3) सचिवालय,
(4) स्थायी अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय, (5) अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संघ।
प्रश्न 7. लीग ऑफ नेशन्स के कोई चार उद्देश्य लिखिये।
उत्तर—(1) विश्व में शान्ति तथा सुरक्षा की स्थापना करना, (2) विभिन्न देशों के आपसी झगड़ों को निबटाना, (3) युद्ध की पुनरावृत्ति को रोकना, (4) सभी राष्ट्रों का सम्मान करना।
प्रश्न 8. लीग ऑफ नेशन्स के प्रारम्भिक महत्वपूर्ण कार्यों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—राष्ट्र संघ ने 20 वर्षों तक विश्व में शान्ति स्थापित करने के प्रयास किये तथा फिनलैण्ड और स्वीडन, पोलैण्ड तथा जर्मनी के विवादों को निपटाया।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1. प्रथम विश्व युद्ध के कारणों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—प्रथम विश्व युद्ध के कारण—

प्रथम विश्व युद्ध के कारण निम्नलिखित थे—

(1) **आर्थिक साम्राज्यवाद**—1890 ई० के पश्चात् आर्थिक साम्राज्यवाद के कारण इंगलैण्ड और जर्मनी को आपस में शत्रु बना दिया था। उस समय जर्मनी ने विश्व के बाजार पर अपना अधिकार कर रक्खा था। इससे इंगलैण्ड में निर्मित सामान नहीं बिक पाता था। दोनों देश अपनी औद्योगिक उन्नति में एक-दूसरे से आगे निकलना चाहते थे।

(2) **औपनिवेशिक साम्राज्यवाद**—उस समय यूरोप के देश इस कारण अपने उपनिवेश बनाना चाहते थे कि जिससे वे वहाँ अपना माल बेच सकें। इंगलैण्ड, जर्मनी और अमेरिका एक दूसरे से आगे निकलना चाहते थे। इसी स्वार्थ के कारण वे एक-दूसरे को नीचा दिखाना चाहते थे।

(3) **फ्रांस और जर्मनी की शत्रुता**—1871 ई० में जर्मनी ने फ्रांस को पराजित करके उनके अनेक क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया था। फ्रांस उन स्थानों को फिर से वापिस लेना चाहता था। अत: फ्रांस जर्मनी के विरुद्ध युद्ध लड़ा।

(4) **रूस और तुर्की की शत्रुता**—बहुत समय से रूस और तुर्की की शत्रुता चली आ रही थी। 19वीं शताब्दी म दोनो क मध्य अनेक युद्ध भी हो चुके थे। रूस तुर्की के कुछ क्षेत्रों को अपने राज्य में मिलाना चाहता था। प्रथम विश्व युद्ध का यह एक महत्वपूर्ण कारण था।

(5) **जर्मनी और इंगलैण्ड**—जर्मनी और इंगलैण्ड में प्रतिस्पर्धा चल रही थी। इसी कारण वे एक-दूसरे के शत्रु बन चुके थे। जर्मनी अपनी नौ सेना को अधिक शक्तिशाली बनाने का प्रयास कर रहा था। इंगलैण्ड जर्मनी को अपने लिए खतरा समझता था।

(6) **सैनिक गुटबन्दी**—जर्मनी ने आस्ट्रेलिया तथा हंगरी से एक सन्धि कर ली थी जिसके अन्तर्गत उनको एक-दूसरे की रक्षा करनी थी। इटली भी इस सन्धि में सम्मिलित हो गया था। इसी संधि के फलस्वरूप इंगलैण्ड, फ्रांस और रूस ने भी आपस में एक सन्धि कर ली। इस प्रकार यूरोप दो सैनिक गुटों में विभाजित हो गया। प्रथम विश्व युद्ध इन दोनों गुटों के मध्य हुआ।

(7) **उग्र राष्ट्रीयता**—उस समय यूरोप म उग्र राष्ट्रीयता पनप रही थी। इसी कारण यूरोप के देश आपस में लड़ने लग गए थे। इसी कारण विभिन्न देश आपस में मन मुटाव रखने लगे थे।

(8) **तात्कालिक कारण**—जून 1914 ई० में आस्ट्रेलिया के सम्राट के भतीजे तथा उसकी पत्नी की किसी ने हत्या कर दी। इसके लिए आस्ट्रेलिया ने सर्बिया को दोषी ठहरा कर उसके विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। रूस ने सर्बिया की सहायता करने के लिए जर्मनी के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया। जर्मनी, तुर्की और आस्ट्रिया इस युद्ध में एक तरफ थे। कुछ समय के पश्चात् इंगलैण्ड भी युद्ध में कूद पड़ा। इस प्रकार लगभग सम्पूर्ण यूरोप युद्ध में कूद पड़ा।

प्रश्न 2. प्रथम विश्व युद्ध के क्या परिणाम हुए ?

उत्तर—प्रथम विश्व युद्ध के परिणाम—

(1) प्रथम विश्व युद्ध में लगभग 58·5 करोड़ रु० नष्ट हुआ। 13,200 करोड़ रु० की सम्पत्ति नष्ट हुई। लगभग 80 लाख मनुष्यों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा। यूरोप को भारी आर्थिक हानि हुई।

(2) रूस, इटली, जर्मनी, तुर्की और पोलैण्ड में अधिनायकवादी शासन स्थापित हुआ। पोलैण्ड, चैकोस्लोवाकिया, युगोस्लोविया तथा फिनलैण्ड आदि नए देशों का उदय हुआ।

(3) इस युद्ध में अत्यधिक पुरुष मारे गए। इससे श्रम शक्ति की कमी हो गई। इसकी पूर्ति स्त्रियों ने की। उन्होंने पुरुषों के साथ मिलकर कार्य करना आरम्भ किया। उनको समाज में सम्मान मिलने लगा।

(4) विभिन्न जातियों के मध्य भेदभाव समाप्त हो गया। वे जातियाँ अधिक निकट आ गईं।

(5) युद्ध के फलस्वरूप अनेक कलात्मक भवन तथा वस्तुएँ नष्ट हो गईं।

(6) यूरोप में गणतन्त्र शासन प्रणालियों की स्थापना हुई।

(7) अब नए अस्त्रों का निर्माण आरम्भ हो गया। अब पनडुब्बियाँ बनाई जाने लगीं।

प्रश्न 3. लीग आफ नेशन्स के प्रमुख अंगों के कार्यों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—लीग ऑफ नेशन्स की स्थापना—

1920 ई० में अमेरिका के राष्ट्रपति विलसन के प्रयासों के फलस्वरूप राष्ट्र संघ की स्थापना की गई। इस राष्ट्र संघ के अग्रलिखित उद्देश्य थे—

(1) युद्धों को रोकना तथा दो देशों के झगड़ों को शान्तिपूर्ण ढंग से सुलझाना,

(2) मानव कल्याण के लिए कार्य करना,

(3) हथियारों की होड़ पर प्रतिबन्ध लगाना,

(4) अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग की वृद्धि करना तथा सद्भाव बढ़ाना।

राष्ट्र संघ के अंग

राष्ट्र संघ के निम्नलिखित अंग थे—

(1) **साधारण सभा**—सभा में प्रत्येक राष्ट्र 3 सदस्य भेजता था। इसका जिनेवा में सितम्बर माह में अधिवेशन हुआ करता था। इस सभा के कार्य इस प्रकार थे—

(i) राष्ट्रसंघ का बजट स्वीकार करना,

(ii) अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय के लिए न्यायाधीशों का चयन करना,

(iii) नए राष्ट्रों को सदस्यता प्रदान करना।

(2) **परिषद्**—परिषद् राष्ट्र संघ की कार्यपालिका थी। इसमें स्थायी और अस्थायी दो प्रकार के सदस्य हुआ करते थे। वर्ष में यह परिषद तीन अधिवेशन बुलाती थी।

(3) **सचिवालय**—इसकी स्थापना जिनेवा में की गयी थी। इसके प्रमुख को महासचिव कहा जाता था। राष्ट्र संघ की सम्पूर्ण व्यवस्था सचिवालय द्वारा की जाती थी।

(4) अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय—इसकी स्थापना हेग में 1921 में हुई थी। इसमें 11 न्यायाधीश थे जिनका कार्यकाल 9 वर्ष का हुआ करता था।

(5) अन्तर्राष्ट्रीय श्रमिक संघ—जो देश राष्ट्र संघ का सदस्य होता था, वह इस संघ का भी सदस्य हो सकता था। इस संघ की स्थापना का उद्देश्य श्रमिकों की दशा सुधारना था।

प्रश्न 4. लीग ऑफ नेशन्स की असफलता के क्या कारण थे ?

उत्तर—राष्ट्र संघ की असफलता के कारण—

राष्ट्र संघ की असफलता के कारण निम्नलिखित थे—

(1) अमरीका इस संघ का सदस्य नहीं बना।

(2) इस संघ ने अपने उद्देश्यों को ध्यान में रखकर काम नहीं किया।

(3) राष्ट्रों ने अपने उद्देश्यों को ध्यान में रखकर काम नहीं किया।

(4) राष्ट्र संघ अपने आदेशों को पालन कराने में असमर्थ रहता था।

(5) 1931 ई० में जापान को मंचूरिया पर आक्रमण करने का दोषी पाया गया। परन्तु उसके विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं की गई।

(6) विभिन्न राष्ट्र राष्ट्र संघ का उपयोग अपने स्वार्थों के लिए किया करते थे।

बहु विकल्पीय प्रश्न

सही विकल्प चुनिए—

प्रश्न 1. प्रथम विश्व युद्ध से पूर्व यूरोप का सबसे अधिक शक्तिशाली राष्ट्र कौन सा था— (1985)

(क) ब्रिटेन, (ख) फ्रांस, (ग) जर्मनी, (घ) इटली।

उत्तर—(ग) जर्मनी।

प्रश्न 2. प्रथम विश्व युद्ध कब प्रारम्भ हुआ— (1989)

(क) 1914, (ख) 1920, (ग) 1919, (घ) 1939।

उत्तर—(क) 1914।

प्रश्न 3. वुडरोविल्सन किस देश के राष्ट्रपति थे— (1985)

(क) सोवियत संघ, (ख) फ्रान्स, (ग) मिश्र, (घ) सं० रा० अमेरिका।

उत्तर—(घ) सं० रा० अमेरिका।

प्रश्न 4. प्रथम विश्व युद्ध के बाद किस अन्तर्राष्ट्रीय संस्था की स्थापना हुई— (1987)

(क) सुरक्षा परिषद, (ख) राष्ट्रों की महासभा, (ग) राष्ट्र संघ, (घ) संयुक्त राष्ट्र संघ।

उत्तर—(ग) राष्ट्र संघ।

प्रश्न 5. राष्ट्र संघ का प्रमुख उद्देश्य था— (1985)

(क) आर्थिक विकास करना, (ख) तकनीकी विकास करना, (ग) साम्राज्य स्थापित करना, (घ) विश्व शान्ति की स्थापना करना।

उत्तर—(घ) विश्व शान्ति की स्थापना करना।

28 अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग तथा शान्ति (2)

[द्वितीय विश्व युद्ध 1939 से 1945 ई० तक]

अति लघु उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1. द्वितीय विश्व युद्ध कब से कब तक चला ? (1986)

उत्तर—1 सितम्बर 1939 से 14 अगस्त 1945 ई० तक।

प्रश्न 2. द्वितीय विश्व युद्ध किन-किन देशों के मध्य हुआ ?

उत्तर—(i) जर्मनी, और (ii) पोलैण्ड, नार्वे तथा डेनमार्क, फ्रांस, हालैण्ड बेलजियम, रूस आदि।

प्रश्न 3. द्वितीय विश्व युद्ध का आरम्भ किस घटना से हुआ ? (1987)

उत्तर—हिटलर के द्वारा पोलैण्ड पर आक्रमण करने की घटना से द्वितीय विश्व युद्ध आरम्भ हो गया।

प्रश्न 4. जर्मनी व इटली के तानाशाह कौन थे ? (1985)

उत्तर—(1) हिटलर (जर्मनी का तानाशाह
(2) मुसोलिन (इटली का तानाशाह)

प्रश्न 5. जापान द्वारा किस स्थान पर आक्रमण करने से अमेरिका भी विश्व युद्ध में सम्मिलित हो गया ? (1984)

उत्तर—पर्लहार्बर पर जापान ने आक्रमण किया।

प्रश्न 6. अमेरिका ने जापान के किन दो नगरों पर परमाणु बम छोड़ा था ? (1985, 87, 89)

उत्तर—(1) हिरोशिमा, (2) नागासाकी।

प्रश्न 7. जर्मनी को रूस से किस नगर के युद्ध में पराजित होना पड़ा ?

उत्तर—स्टालिनग्राड में पराजित होना पड़ा।

प्रश्न 8. जर्मनी ने बिना शर्त आत्मसमर्पण कब किया ? (1986)

उत्तर—7 मई, 1945 ई० को आत्मसमर्पण किया।

परीक्षोपयोगी एवं बोर्ड परीक्षा में पूछे गये अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1. द्वितीय विश्व युद्ध में जर्मनी का साथ देने वाले प्रमुख दो राष्ट्रों का नाम बताइये। (1989)

उत्तर—(1) जापान, (2) इटली।

प्रश्न 2. द्वितीय विश्व युद्ध में सबसे अन्त में हारने वाला देश कौन था ? (1990)

उत्तर—जापान।

प्रश्न 3. पर्लहार्बर क्या है? (1988)

उत्तर—प्रशान्त महासागर में स्थित अमेरिका की नौ सेना का केन्द्र है।

प्रश्न 4. द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान किस भारतीय क्रान्तिकारी नेता ने भारत को शक्ति के द्वारा स्वतन्त्र कराने का प्रयास किया? (1985)

उत्तर—नेताजी सुभाष चन्द्र बोस।

प्रश्न 5—जापान के नागासाकी तथा हिरोशिमा नगरों पर सं० रा० अमेरिका ने कब बम गिराये?

उत्तर—हिरोशिमा नगर पर 6 अगस्त 1945 को तथा नागासाकी नगर पर 9 अगस्त 1945 को बम गिराये।

प्रश्न 6. आजाद हिन्द फौज का निर्माण किसने किया था?

उत्तर—नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने।

प्रश्न 7. रूस की बढ़ती हुई शक्ति से चिन्तित होकर अमेरिका ने किन सैनिक गुटों का निर्माण किया?

उत्तर—(1) सीटो, (2) नाटो, (3) सेन्टो।

प्रश्न 8. द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद विश्व में शान्ति स्थापित करने के लिए किस संस्था की स्थापना हुई?

उत्तर—संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना हुई।

लघु उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1. द्वितीय विश्व युद्ध के चार प्रमुख कारण लिखिये।

उत्तर—(1) वर्साय सन्धि का न्याय तथा शान्ति के सिद्धान्तों के विरुद्ध होना।

(2) जर्मनी में उग्र राष्ट्रवाद की भावना तथा तानाशाह हिटलर की विजय भूख बढ़ना।

(3) इंगलैण्ड तथा फ्रांस की अहं तुष्टिकरण की नीति।

(4) इटली तथा जापान में उग्र राष्ट्रवाद तथा सैनिकवाद।

प्रश्न 2. द्वितीय विश्व युद्ध के आरम्भ में शक्तिशाली राष्ट्रों के द्वारा अपनाई गई आक्रमण नीति के कुछ उदाहरण दीजिए।

उत्तर—(1) पोलैण्ड की पराजय,
(2) फ्रांस की पराजय,
(3) रूस पर जर्मनी का आक्रमण,
(4) जापान का युद्ध में प्रवेश,
(5) इटली का पतन।

प्रश्न 3. शीत युद्ध का क्या अर्थ है?

उत्तर—दो देशों के मध्य अघोषित युद्ध शीत युद्ध कहलाता है। शक्तिशाली [illegible] अपनी गुटबाजी के कारण शीत युद्ध के द्वारा दूसरे देशों का मनोबल तोड़ते [illegible]ते हैं। इस गुटबाजी के कारण इनके समर्थक राष्ट्र भी एक दूसरे को नीचा दिखाने [illegible] प्रयत्न करते रहते हैं।

प्रश्न 4. संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना क्यों की गई ?

उत्तर—स्थापना—

द्वितीय महायुद्ध के दौरान सन् 1943 ई० में अमेरिका, इंगलैण्ड, रूस चीन तथा फ्रांस के विदेश मन्त्रियों का एक सम्मेलन मास्को में हुआ जिसमें विश्व-शान्ति की स्थापना पर जोर दिया गया। इस सम्बन्ध में अक्टूबर 1944 ई० में दुबारा एक सम्मेलन अमेरिका में हुआ जिसमें विश्वशान्ति की स्थापना के लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्था के गठन पर विचार करके एक योजना तैयार की गयी। इसके पश्चात् 25 अप्रैल 1945 ई० को संयुक्त राज्य अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने अमेरिका के राज्य सैनफ्रांसिस्को में एक सम्मेलन आयोजन किया जिसमें संसार के 51 स्वतन्त्र राष्ट्रों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया इन सबने मिलकर एक संयुक्त राष्ट्रीय घोषणा पत्र का प्रारूप तैयार किया जिस पर 21 अक्टूबर 1945 ई० को 51 राष्ट्रों के प्रतिनिधियों ने हस्ताक्षर कर दिये और इस संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना हुई।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1. द्वितीय विश्व युद्ध की प्रमुख घटनाओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर—द्वितीय विश्व युद्ध की प्रमुख घटनाएँ इस प्रकार हैं—

(1) पोलैण्ड की पराजय, (2) नार्वे तथा डेनमार्क पर आक्रमण, (3) फ्रांस की पराजय, (4) हालैण्ड और बेल्जियम की पराजय, (5) रूस पर आक्रमण, (6) इंगलैण्ड पर हवाई आक्रमण, (7) अमेरिका व जापान का युद्ध में प्रवेश, (8) उत्तरी अफ्रीका में युद्ध, (9) इटली का पतन, (10) जर्मनी का पतन।

(11) **जापान का समर्पण**—अमेरिका ने 6 अगस्त, 1945 को हिरोशिमा तथा 9 अगस्त को नागासाकी पर परमाणु बम गिरा दिया। जापान ने भी अपने हथियार डाल दिये। इस प्रकार 15 अगस्त, 1945 को द्वितीय विश्व युद्ध का अन्त हो गया।

प्रश्न 2. द्वितीय विश्व युद्ध के परिणाम लिखिए।

उत्तर—द्वितीय विश्व युद्ध के निम्नलिखित परिणाम निकले—

(1) द्वितीय विश्व युद्ध ने साम्राज्यवाद को लगभग समाप्त कर दिया। अनेक पराधीन देशों में स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष होने लगा। 1947 ई० में भारत तथा पाकिस्तान स्वतन्त्र हो गए।

(2) द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् तेजी से साम्यवाद का प्रसार हुआ। यूरोप में रूमानिया, हंगरी, बलगेरिया, यूगोस्लाविया, अल्बानिया, चैकोस्लावाकिया, पोलैण्ड तथा पूर्वी जर्मनी में साम्यवादी सरकारों की स्थापना हुई। अब विश्व का एक बड़ा भाग साम्यवादी विचारधारा में परिवर्तित हो गया।

(3) इस युद्ध के पश्चात् धन तथा जन का अत्यधिक विनाश हुआ। ऐसा अनुमान लगाया गया है कि लगभग 2 करोड़ 50 लाख लोग मृत्यु को प्राप्त हुए। अत्यधिक सम्पत्ति नष्ट हुई। बाल्टिक सागर से काले सागर तक का क्षेत्र पूर्ण रूप से नष्ट हो गया। अनेक देशों के निवासी भूखों मर गए।

(4) द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् विश्व दो सैनिक गुटों में विभाजित हो गया। अमरीका पूँजीवादी देशों का अगुआ था। रूस साम्यवादी देशों का नेता बन

गया। रूस की सैनिक शक्ति में वृद्धि हुई। रूस ने परमाणु बम बनाना आरम्भ कर दिया। रूस और अमेरिका में गम्भीर मतभेद हो गए। अमेरिका तथा अन्य पूंजीवादी देशों ने सैनिक गुटबन्दियाँ आरम्भ कर दीं।

(5) रूस और अमेरिका ने अपने आर्थिक प्रभाव के क्षेत्रों का निर्माण करना आरम्भ कर दिया। द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् विश्व के अनेक देशों में बेरोजगारी फैल रही थी। इसी कारण वहाँ निर्धनता का बोलबाला था। इसका लाभ उठाकर रूस तथा अमेरिका ने अनेक देशों को आर्थिक सहायता देना प्रारम्भ कर दिया। रूस तथा अमेरिका अपने प्रभाव क्षेत्र स्थापित कर रहे थे।

(6) अब विश्व के देशों ने अपनी-अपनी सुरक्षा की ओर विशेष ध्यान देना आरम्भ कर दिया। इससे बड़ी मात्रा में अस्त्रों-शस्त्रों का निर्माण आरम्भ हो गया।

(7) द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् शान्ति स्थापना के उद्देश्य से संयुक्त राष्ट्र संघ (U. N. O.) की स्थापना हुई। अक्टूबर 1945 ई० को संयुक्त राष्ट्र संघ का विधिवत ज़न्म हुआ।

प्रश्न 3. लीग ऑफ नेशन्स की विफलता के कारण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—प्रारम्भ में राष्ट्र संघ को अनेक क्षेत्रों में सफलता मिली परन्तु बाद में यह सफल नहीं हो सका। इसकी असफलता के अनेक कारण थे जो निम्न हैं—

(1) बड़े राष्ट्रों में निहित स्वार्थ तथा तानाशाही का उदय, (2) युद्ध रोकने की शक्ति का अभाव, (3) विजित राष्ट्रों में असन्तोष, (4) कार्य पद्धति में शिथिलता, (5) सैनिक शक्ति एवं राष्ट्रों के सहयोग का अभाव।

उपर्युक्त असफलताओं के कारण विश्व दूसरे महायुद्ध की लपेट में आ गया। एक सितम्बर सन् 1939 ई० को जर्मनी ने पोलैण्ड पर आक्रमण करके द्वितीय विश्व युद्ध का प्रारम्भ कर दिया। परिणामस्वरूप राष्ट्र संघ स्वतः निष्क्रिय हो गया। राष्ट्र संघ की असफलता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि यह जापान, मंचूरिया, इटली, अबीसीनिया आदि युद्धों को रोकने में असफल रहा। अन्त में द्वितीय विश्व युद्ध ने राष्ट्र संघ के अस्तित्व को पूर्ण रूप से समाप्त कर दिया था।

बहु विकल्पीय प्रश्न

सही विकल्प का चयन कीजिए—

प्रश्न 1. द्वितीय विश्व युद्ध कब प्रारम्भ हुआ— (1987, 90)

(क) 10 जनवरी 1920, (ख) 1 दिसम्बर 1939,
(ग) 15 नवम्बर 1936, (घ) 9 अगस्त 1945।

उत्तर—(ख) 1 दिसम्बर 1939।

प्रश्न 2. संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना कब हुई— (1986, 88, 89)

(क) 10 जनवरी 1920, (ख) 24 अक्टूबर 1945,
(ग) 20 जुलाई 1954, (घ) 9 अगस्त 1945।

उत्तर—(ख) 24 अक्टूबर 1945।

प्रश्न 3. निम्नलिखित में से कौन सा जोड़ा उग्र राष्ट्रवादी पार्टी और उसके देश को सही प्रदर्शित करता है— (1990)

(क) फासिस्ट (इटली), (ख) नाजी (फ्रांस),

(ग) कम्युनिस्ट (सोवियत संघ), (घ) कीपोतांग (जापान)।
उत्तर—(क) फासिस्ट (इटली)।

प्रश्न 4. द्वितीय विश्व युद्ध में पराजित राष्ट्र कौन सा है—
(क) रूस, (ख) ब्रिटेन, (ग) जर्मनी, (घ) फ्रांस।
उत्तर—(ग) जर्मनी।

प्रश्न 5. द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति कब हुई— (1987, 89)
(क) 1942, (ख) 1943, (ग) 1944, (घ) 1945।
उत्तर—(घ) 1945।

29 अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग तथा शान्ति (3)

[नये राष्ट्रों का विश्व में नई शक्ति के रूप में आविर्भाव-तटस्थता की नीति]

अति लघु उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1. द्वितीय विश्व युद्ध के बाद एशिया व अफ्रीका के देश यूरोपीय देशों के आधिपत्य से क्यों मुक्त होने लगे ?

उत्तर—ये राष्ट्र अपने देश की बाहरी शक्तियों से स्वतन्त्रता चाहते थे।

प्रश्न 2. इंग्लैण्ड के साम्राज्यवादी शासन से किन-किन देशों को स्वतन्त्रता प्राप्त हुई ?

उत्तर—(1) भारत, (2) बर्मा,
(3) श्री लंका, (4) मलाया आदि।

प्रश्न 3. चीन में माओत्सेतुंग के नेतृत्व में किस सरकार की स्थापना हुई ? (1986)

उत्तर—साम्यवादी जनतन्त्र सरकार की स्थापना हुई।

प्रश्न 4. सन् 1960 के पश्चात् अफ्रीका के कौन-कौन से देश स्वतन्त्र हुए ?

उत्तर—(1) घाना, (2) ट्यूनेशिया,
(3) मास्को, (4) लीबिया,
(5) सूडान, (6) अल्जीरिया,
(7) केन्या, (8) युगाण्डा,
(9) टाँगानिका, (10) न्यसालैण्ड,
(11) जंजीबार, (12) मेडागास्कर,
(13) अंगोला, (14) गिनीबसाऊ।

प्रश्न 5. द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् विश्व के अनेक देश किन दो गुटों में बंट गए ?

उत्तर—(1) साम्यवादी गुट, (सोवियत संघ द्वारा नेतृत्व)
(2) पूंजीवादी गुट (अमेरिका द्वारा नेतृत्व) ।

परीक्षोपयोगी अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न 1. तृतीय विश्व से क्या आशय है ? (1988)

उत्तर—गुट निरपेक्षता एवं तटस्थता की नीति के समर्थक देशों को तृतीय विश्व कहते हैं ।

प्रश्न 2. गुट निरपेक्ष आन्दोलन का सूत्रपात कब और किसने किया ? (1989)

उत्तर—गुट निरपेक्ष आन्दोलन का सूत्रपात सन् 1956 ई० में मार्शल टीटो, कर्नल नासिर तथा पं० जवाहरलाल नेहरू ने किया ।

प्रश्न 3. पंचशील के सिद्धान्तों की घोषणा कब और किसने की ?

उत्तर—पंचशील के सिद्धान्तों की घोषणा सन् 1954 ई० में भारत के प्रधानमन्त्री पं० जवाहरलाल नेहरू तथा चीन के प्रधानमन्त्री चाऊ-एन-लाई ने मिलकर की ।

प्रश्न 4. तटस्थता का क्या अर्थ है ?

उत्तर—तटस्थता राज्यों की वह अवस्था है जिसमें तटस्थ राज्य किसी भी गुट में शामिल नहीं होता है तथा गुण-दोषों के आधार पर पूंजीवादी तथा समाजवादी राष्ट्रों का समर्थन करता है ।

लघु उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1. गुट निरपेक्ष तथा तटस्थता की नीति किन सिद्धान्तों पर आधारित है ?

उत्तर—(1) राष्ट्रों की स्वाधीनता,
(2) सहअस्तित्व,
(3) समानता,
(4) निरस्त्रीकरण,
(5) विश्व शान्ति एवं
(6) मानव अधिकार ।

प्रश्न 2. गुट निरपेक्ष देशों का संगठन क्यों बना ?

उत्तर—गुट निरपेक्ष देशों का संगठन निम्नलिखित कारणों से बना—

(1) एशिया और अफ्रीका के नए स्वतन्त्र राष्ट्र अविकसित थे ।
(2) ये देश अकेले अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा नहीं कर सकते थे ।
(3) अकेले ये देश अपना विकास नहीं कर सकते थे ।
(4) इसी कारण इन स्वतन्त्र राष्ट्रों ने आपस में एकता और सद्भाव बढ़ाने का प्रयास किया ।

परीक्षोपयोगी एवं बोर्ड परीक्षा में पूछे गये अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1. गुट निरपेक्ष नीति का क्या अर्थ है ? (1988)

उत्तर—विभिन्न शक्तियों व गुटों से अप्रभावित रहते हुए अपनी स्वतन्त्र नीति अपनाना और राष्ट्रीय हितों के अनुसार न्याय को समर्थन देना ही गुट निरपेक्षता की नीति है।

प्रश्न 2. पंचशील के सिद्धान्त बताइए। (1991)

उत्तर—पंचशील के सिद्धान्त—

(1) प्रादेशिक अखण्डता और प्रभुसत्ता का पारस्परिक सम्मान,
(2) अहस्तक्षेप,
(3) समानता और पारस्परिक हित में सहयोग,
(4) अनाक्रमण,
(5) मिल-जुल कर शान्तिपूर्वक रहना।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1. गुट निरपेक्षता एवं तटस्थता की नीति के विकास में भारत का क्या योगदान रहा है? (1985, 87)

उत्तर—तटस्थता की नीति को प्राचीन समय से ही मान्यता मिलती रही है। परन्तु आधुनिक समय में विश्व की राजनीति में यह एक नवीन शब्द है। जो देश तटस्थता की नीति अपनाते हैं, वे तटस्थ गुट कहलाते हैं। इस गुट के निर्माण का श्रेय पं० जवाहरलाल नेहरू, मार्शल टीटो तथा कर्नल नासिर को है। इन तीन महान् व्यक्तियों के सहयोग से तटस्थ राष्ट्रों के गुट का निर्माण हुआ। यह गुट विश्व की एक नवीन शक्ति के रूप में उभर आया है। तटस्थता के विषय में 1947 ई० में एशियाई सम्मेलन में पं० नेहरू ने अपने विचार इस प्रकार प्रकट किये थे—"अब एशिया के राष्ट्र दूसरे राष्ट्रों के हाथों में मोहरें नहीं बन सकते। विश्व समस्याओं के सम्बन्ध में ये निश्चित ही अपनी स्वतन्त्र नीति अपनायेंगे।

तटस्थता नीति की विशेषताएँ

तटस्थता नीति की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—

(1) तटस्थ राष्ट्र किसी गुट में सम्मिलित नहीं होता है।

(2) तटस्थ देश के लिए यह आवश्यक नहीं है कि वह किसी भी प्रकार की औपचारिक घोषणा करे। उसे ऐसा करने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता।

(3) तटस्थ राष्ट्र सभी देशों से मैत्री सम्बन्ध स्थापित करता है।

(4) यदि दो राष्ट्र युद्ध में रत हैं तो तटस्थ राष्ट्र किसी भी देश की सहायता नहीं करता है।

(5) तटस्थ देश किसी भी देश को सैनिक सामग्री नहीं दे सकता। परन्तु वह घायल व्यक्तियों की सहायता कर सकता है।

(6) तटस्थ राष्ट्र किसी भी देश से सैनिक सन्धि नहीं कर सकता। वह कोई सैनिक समझौता नहीं करता है।

(7) तटस्थता की नीति विश्व शान्ति की स्थापना में सहयोग देती है। इसने निःशस्त्रीकरण को सफल बनाया है।

गुट निरपेक्षता की नीति में भारत का योगदान

गुट निरपेक्षता एवं तटस्थता की नीति के विकास में भारत का विशेष योगदान गुट निरपेक्षता की नीति के विकास में भारत के प्रधान मन्त्री जवाहरलाल नेहरू

ने विशेष प्रयास किया। मार्च 1983 में गुट निरपेक्ष देशों का सातवां सम्मेलन भी नई दिल्ली में हुआ। इस सम्मेलन की अध्यक्षता भारत की तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने की।

प्रश्न 2. गुट निरपेक्षता एवं तटस्थता की नीति का आज के युग में क्या महत्व है? (1989)

उत्तर—आधुनिक युग में गुट निरपेक्षता तथा तटस्थता की नीति का विशेष महत्व है तथा आधुनिक युग में इस नीति का महत्व लगातार बढ़ता जा रहा है। इस नीति ने विश्व की दो महाशक्तियों (रूस व अमरीका) के बीच संसार की राजनीति में सन्तुलन बनाये रखा है तथा गुट निरपेक्ष सम्मेलन ने सदस्य राष्ट्रों के बीच युद्ध एवं विवादों को शान्तिपूर्ण ढंग से हल करने का प्रयास किया है तथा तटस्थ राष्ट्रों ने पारस्परिक विकास हेतु आर्थिक, औद्योगिक एवं तकनीकी समझौते किये हैं। इसमें भारत ने विशेष भूमिका निभाई है।

बहु विकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. गुट निरपेक्ष देशों का सातवां अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन कहाँ हुआ था— (1987)

(क) काहिरा, (ख) तेहरान,
(ग) कोलम्बो, (घ) नई दिल्ली।

उत्तर—(घ) नई दिल्ली।

प्रश्न 2. बांडुग सम्मेलन कब हुआ— (1988)

(क) 1945, (ख) 1950, (ग) 1955, (घ) 1960।

उत्तर—(ग) 1955।

प्रश्न 3. पंचशील के सिद्धान्तों की घोषणा कब की गई थी—

(क) 1950, (ख) 1952, (ग) 1954, (घ) 1956।

उत्तर—(ग) 1954।

प्रश्न 4. साम्यवादी नीति का समर्थक कौन सा राष्ट्र है—

(क) चीन, (ख) रूस, (ग) भारत, (घ) सं० रा० अमेरिका।

उत्तर—(क) चीन।

30 अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग तथा शान्ति (4)

[शान्ति के प्रयास संयुक्त राष्ट्र संघ]

अति लघु उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1. संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना कब हुई ? (1985, 87, 88, 89)

उत्तर—24 अक्टूबर, 1945 ई० को संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना हुई।

प्रश्न 2. संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना में किस राष्ट्र नायक ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई ?

उत्तर—अमेरिका के राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

प्रश्न 3. इस समय संयुक्त राष्ट्र संघ में कितने सदस्य राष्ट्र हैं ?

उत्तर—इस समय 159 सदस्य राष्ट्र हैं।

प्रश्न 4. संयुक्त राष्ट्र संघ में मानव अधिकारों की घोषणा कब की गई ? (1986)

उत्तर—10 दिसम्बर, 1948 ई० को मानव अधिकारों की घोषणा की गई।

प्रश्न 5. मानव अधिकारों के घोषणा-पत्र में कुल कितनी धाराएँ हैं ?

उत्तर—मानव अधिकारों के घोषणा पत्र में 30 धाराएँ हैं।

प्रश्न 6. निम्नलिखित कार्यों से सम्बन्धित संयुक्त राष्ट्र संघ की विशिष्ट संस्थाओं के नाम लिखिए—(i) शिक्षा, (ii) स्वास्थ्य। (1985)

उत्तर—(i) शिक्षा—यूनेस्को, (UNESCO)

(ii) स्वास्थ्य—डब्लू० एच० ओ० (W. H. O.)

परीक्षोपयोगी एवं बोर्ड परीक्षा में पूछें गये अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1. सुरक्षा परिषद में कितने सदस्य होते हैं ? (1989)

उत्तर—सुरक्षा परिषद में 5 स्थाई तथा 10 अस्थाई राष्ट्र सदस्य होते हैं। इस प्रकार इनकी संख्या 15 होती है।

प्रश्न 2. सुरक्षा परिषद के स्थाई सदस्य राष्ट्रों के नाम लिखिए।

उत्तर— 1. ब्रिटेन, 2. सोवियत संघ,
3. फ्रान्स, 4. चीन,
5. अमेरिका।

प्रश्न 3. यूनीसेफ का पूरा नाम लिखिए।

उत्तर—संयुक्त राष्ट्रीय बाल आयात कोष।

प्रश्न 4. एफ. ए. ओ. का पूरा नाम लिखिए। (1986, 87)
उत्तर—कृषि एवं खाद्य संगठन।

प्रश्न 5. विश्व स्वास्थ्य संगठन की स्थापना कब और कहाँ हुई थी? (1989)

उत्तर—विश्व स्वास्थ्य संगठन की स्थापना 1948 ई. में स्विट्जरलैण्ड के 'जिनेवा' नामक नगर में हुई थी।

प्रश्न 6. अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय कहाँ है? (1988, 89, 90)
उत्तर—अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय नीदरलैण्ड की राजधानी 'हेग' नगर में है।

प्रश्न 7. संयुक्त राष्ट्र संघ का मुख्यालय कहाँ है?
उत्तर—सं० रा० अमेरिका के 'न्यूयार्क' नगर में है।

लघु उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1. संयुक्त राष्ट्र संघ के घोषणा-पत्र की प्रस्तावना में "हम संयुक्त राष्ट्र संघ के लोग" से क्या तात्पर्य है?

उत्तर—इन शब्दों से संयुक्त राष्ट्र संघ के "एक संसार एवं एक मानव परिवार" का आदर्श उजागर होता है।

प्रश्न 2. संयुक्त राष्ट्र संघ के घोषणा-पत्र के आधार पर उसके प्रमुख उद्देश्यों का संक्षेप में उल्लेख कीजिए। (1987)

उत्तर—प्रमुख उद्देश्य—

संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना विश्व के युद्ध के भयंकर परिणामों से बचाने के लिए की गई है। इसका प्रमुख उद्देश्य विश्व में शान्ति की स्थापना करना है। इसके लिए संघ के सभी सदस्य राष्ट्रों को विश्व शान्ति एवं पारस्परिक सुरक्षा के लिए संयुक्त रूप से प्रयास करना होगा, अन्तर्राष्ट्रीय झगड़ों तथा समस्याओं को शान्ति पूर्ण एवं अन्तर्राष्ट्रीय वैधानिक तरीकों से सुलझायेंगे। समस्त प्रकार की आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक या मानवतावादी समस्याओं के समाधान हेतु सहयोग प्राप्त करेंगे। विश्व शान्ति को स्थायी बनाने हेतु समान मानव अधिकारों एवं लोगों के आत्म निर्णय के सिद्धान्त के आधार पर आधारित प्रयत्नों द्वारा राष्ट्रों में परस्पर मैत्री पूर्ण सम्बन्धों का विकास करने के लिए संघ सदैव प्रयत्नशील रहेगा।

प्रश्न 3. स्वेज नहर विवाद से उत्पन्न स्थिति को कैसे टाला गया?

उत्तर—सन् 1956 ई. में मिश्र ने स्वेज नहर को अपने कब्जे में ले लिया। फ्रान्स, इंगलैण्ड और इजराइल की सेनाओं ने मिश्र पर आक्रमण किया। रूस मिश्र के साथ था। विश्व युद्ध की सी भूमिका बन गई। किन्तु भारत ने पारस्परिक समझौते के द्वारा आक्रमणकारियों की सेनाओं को मिश्र से हटवाकर स्वेज विवाद को हल किया।

प्रश्न 4. निःशस्त्रीकरण का क्या अर्थ है? (1986)

उत्तर—अस्त्र-शस्त्र एवं परमाणु हथियारों की वृद्धि को रोकना निःशस्त्रीकरण कहलाता है। शक्तिशाली राष्ट्रों को परमाणु हथियारों पर व्यय होने वाली धनराशि को कल्याणकारी योजनाओं में लगाना चाहिए। सन् 1978 में परमाणु परीक्षण पर रोक लगाने के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ में प्रस्ताव पारित हुआ।

प्रश्न 5. कांगो समस्या का समाधान किस प्रकार हुआ?

उत्तर—द्वितीय महायुद्ध से पूर्व कांगो पर बेल्जियम सरकार का अधिकार था किन्तु 1960 ई० में कांगो की जनता ने आन्दोलन करके अपने देश की स्वतंत्रता प्राप्त की। लेकिन बेल्जियम सरकार के षड्यन्त्र से कांगो की जनता में गृह युद्ध का वातावरण बन गया। कांगो के प्रधानमंत्री 'लुमुम्बा' की हत्या कर दी गई। इसकी जाँच संयुक्त राष्ट्र संघ ने निष्पक्ष रूप से कराई। संयुक्त राष्ट्र संघ और कांगो सरकार के समझौते से कांगो स्वतंत्र हुआ।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न (राजकीय पुस्तक से)

प्रश्न 1. संयुक्त राष्ट्र संघ के घोषणा पत्र में दिए गये प्रमुख मानव अधिकारों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—प्रमुख मानव अधिकार—

संयुक्त राष्ट्र संघ के घोषणा पत्र में निम्नांकित मानव अधिकार हैं—

1. सामाजिक अधिकार

(i) जीवन की स्वतन्त्रता एवं व्यक्ति तथा सम्पत्ति की सुरक्षा का अधिकार।

(ii) आने-जाने, आपस में मिलने-जुलने व भाषण की स्वतन्त्रता का अधिकार।

(iii) विवाह करने व परिवार रखने का अधिकार।

(iv) शिक्षा व समता का अधिकार।

(v) निःशुल्क अनिवार्य शिक्षा का अधिकार।

2. धार्मिक अधिकार

प्रत्येक व्यक्ति अपने धर्म एवं धार्मिक विचारों को सामूहिक अथवा व्यक्तिगत रूप से व्यक्त करने में स्वतंत्र है।

3. आर्थिक अधिकार

(i) सेवा नियोजन का अधिकार।

(ii) जीवन स्तर में सुधार एवं सुरक्षा का अधिकार।

4. राजनीतिक अधिकार

(i) राष्ट्रीयता।

(ii) मत व अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता।

(iii) शान्तिपूर्ण सभा करने व समिति बनाने की स्वतन्त्रता का अधिकार।

(iv) सरकार में भाग लेने का अधिकार।

प्रश्न 2. संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रमुख अंगों के कार्यों का उल्लेख कीजिये।

उत्तर—संयुक्त राष्ट्र संघ का संगठन—

संयुक्त राष्ट्र संघ विश्व के स्वतन्त्र राष्ट्रों का सबसे विशाल संगठन है जिसके अग्रलिखित 6 प्रमुख संगठन हैं—

(1) साधारण सभा—साधारण सभा को विश्व की संसद कहा जा सकता है। संयुक्त राष्ट्र संघ के सभी सदस्य बिना किसी भेद-भाव के साधारण सभा के सदस्य होते हैं। इसका अधिवेशन एक बार प्रति वर्ष सितम्बर के महीने में तीसरे गुरुवार को होता है। परन्तु साधारण सभा का अधिवेशन सदस्य राष्ट्रों के बहुमत अथवा सुरक्षा परिषद के आदेशों से किसी भी समय 25 दिन की पूर्व सूचना पर संघ के महासचिव द्वारा किया जा सकता है। प्रत्येक सदस्य राष्ट्र को एक वोट देने

का अधिकार होता है। परन्तु वह साधारण सभा के अधिवेशन में पाँच प्रतिनिधियों तक की नियुक्ति कर सकता है। सभा संयुक्त राष्ट्र के कार्य क्षेत्र में आने वाले उन समस्त विषयों पर विचार करती है, जिनका आज्ञा पत्र में उल्लेख किया गया है।

(2) सुरक्षा परिषद—संयुक्त राष्ट्र संघ का दूसरा महत्वपूर्ण अंग सुरक्षा-परिषद है। इसकी तुलना किसी देश की कार्यपालिका से की जा सकती है। पाँच देश अमेरिका, सोवियत संघ, ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस और साम्यवादी चीन इसके स्थायी सदस्य हैं। शेष 10 सदस्यों का निर्वाचन साधारण सभा दो-तिहाई बहुमत से दो वर्ष की अवधि के लिए करती है। सुरक्षा परिषद मुख्य रूप से अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा और शान्ति से सम्बन्धित विषयों पर विचार करने का कार्य करती है। किसी भी प्रस्ताव के पारित होने के लिए उसके पक्ष में कम से कम नौ मत होने चाहिए। साथ ही किसी स्थायी सदस्य का मत उसके विरोध में नहीं होना चाहिए, क्योंकि प्रत्येक स्थायी सदस्य को निषेधाधिकार (Veto Power) प्राप्त है।

(3) आर्थिक और सामाजिक परिषद—यह संयुक्त राष्ट्र संघ का तीसरा अंग है। इस परिषद का गठन यह सोचकर किया गया है कि युद्ध केवल राजनीतिक कारणों से नहीं होते वरन् युद्ध के कारण आर्थिक तथा सामाजिक भी होते हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ के मूल संविधान में आर्थिक और सामाजिक परिषद की सदस्य संख्या चौदह (14) निश्चित की गई थी, परन्तु 1965 ई० में चार्टर में संशोधन करके यह संख्या बढ़ाकर सत्ताइस कर दी गई है। सदस्यों का निर्वाचन साधारण सभा दो-तिहाई बहुमत से तीन वर्ष के लिए करती है। यह एक स्थायी संस्था है। परन्तु प्रत्येक तीन वर्ष के पश्चात् इसके एक-तिहाई सदस्य अवकाश ग्रहण कर लेते हैं। सभापति का चुनाव एक वर्ष में अवधि के लिए परिषद द्वारा किया जाता है। परिषद का अधिवेशन वर्ष में कम से कम दो बार होना आवश्यक है। प्रत्येक सदस्य को एक मत देने का अधिकार है और निर्णय साधारण बहुमत से लिए जाते हैं।

इस परिषद का कार्य आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, शिक्षा सम्बन्धी, स्वास्थ्य सम्बन्धी तथा अन्य विषयों का जो इसके अन्तर्गत आते हैं अध्ययन करना तथा उन पर रिपोर्ट तैयार करना है। यह परिषद अपने क्षेत्र के अन्तर्गत आने वाले सभी विषयों पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन बुलाती है तथा अपने कार्यों को पूरा करने के लिए समितियाँ स्थायी और अस्थायी आयोग नियुक्त करती है।

इस परिषद के द्वारा किया गया सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य 10 दिसम्बर, 1948 ई० को मानवीय अधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा है।

(4) प्रन्यास परिषद—संयुक्त राष्ट्र संघ का चौथा अंग प्रन्यास परिषद है। इसकी स्थापना का उद्देश्य न्यास क्षेत्रों के शासन की देख-रेख करना होता है। इस प्रकार प्रन्यास परिषद के द्वारा उन अविकसित तथा पिछड़े क्षेत्रों के हितों की रक्षा की जाती है जो स्वायत्त शासन के योग्य नहीं है। विकसित तथा उन्नतिशील देशों का यह दायित्व है कि वे स्वयं को न्यास समझकर अविकसित तथा पिछड़े हुए क्षेत्रों के विकास में सहयोग दें। संघ की देख-रेख में ये देश अपने न्यास सम्बन्धी कार्य करते हैं।

प्रन्यास परिषद की सदस्यता—(1) सुरक्षा परिषद के सभी सदस्य चाहे वे न्यास क्षेत्रों का शासन प्रबन्ध करते हों अथवा नहीं।

(2) सदस्य राज्य, जो प्रन्यास क्षेत्रों का प्रबन्ध करते हैं।

(3) प्रन्यास क्षेत्रों का शासन करने वाले तथा न करने वाले सदस्यों में समानता बनाये रखने के लिए साधारण सभा द्वारा निर्वाचित अन्य सदस्य राज्य।

परिषद् की बैठक वर्ष में कम से कम दो बार अवश्य होती है तथा सभी निर्णय साधारण बहुमत से किये जाते हैं। शासन प्रबन्ध करने वाले प्रत्येक देश को उस क्षेत्र की आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक तथा शिक्षा सम्बन्धी उन्नति की वार्षिक रिपोर्ट महामन्त्री को देनी होती है।

कुछ वर्ष पूर्व इस परिषद के अधीन 11 क्षेत्र थे। परन्तु अब इसके अन्तर्गत दो क्षेत्र ही रह गये हैं। शेष स्वाधीनता प्राप्त राज्य हो गये हैं।

(5) **अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय**—संयुक्त राष्ट्र संघ का पाँचवाँ अंग अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय है। इसके पन्द्रह न्यायाधीश होते हैं। जिनका चुनाव सुरक्षा परिषद तथा साधारण सभा मिलकर 9 वर्ष के लिए करती है। प्रत्येक तीन वर्ष के बाद पाँच न्यायाधीश अवकाश प्राप्त कर लेते हैं और उनके स्थान पर पुनः चुनाव हो जाता है। इस न्यायालय का मुख्य कार्यालय नीदरलैण्ड के हेग नामक नगर में स्थापित किया गया है। न्यायालय अपने अध्यक्ष, उपाध्यक्ष तथा रजिस्ट्रार की नियुक्ति करने के अधिकार से सम्पन्न है। इस न्यायालय का विधान संयुक्त राज्य संघ के विधान से अलग है और जिसके परिवर्तन की विधि वैसी ही है जैसी संयुक्त राष्ट्र संघ के विधान की है। इस न्यायालय के अन्तर्गत वे सभी मामले आते हैं, जो सम्बन्धित राज्य की सहमति से न्यायालय के समक्ष लाये जाते हैं। सुरक्षा परिषद और साधारण सभा की अनुमति से इससे कानूनी परामर्श ले सकते हैं।

(6) **सचिवालय**—संयुक्त राष्ट्र संघ का दिन-प्रतिदिन का कार्य एक सचिवालय द्वारा संचालित किया जाता है, जिसका प्रधान अधिकारी महासचिव होता है और आवश्यकतानुसार कर्मचारी वर्ग रहता है। महासचिव की नियुक्ति सुरक्षा परिषद की सिफारिश पर महासभा द्वारा पाँच वर्ष के लिए की जाती है। एक व्यक्ति के इस पद पर दुबारा चुने जाने पर कोई प्रतिबन्ध नहीं है। महासचिव को अनेक महत्वपूर्ण शक्तियाँ प्राप्त हैं। उनका विवेकपूर्ण प्रयोग करके वह अन्तर्राष्ट्रीय जगत का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण व्यक्तित्व और शान्ति के लिए एक महत्वपूर्ण शक्ति बन सकता है। इस पद पर त्रिग्वेली, डॉग हैमर शोल्ड और ऊँथाण्ट ने बड़ी योग्यता और निष्ठा से कार्य किया और पद के गौरव को बढ़ाया। आस्ट्रेलिया के डॉ० कुर्त वाल्दहीम को 1 जनवरी, 1972 ई० में इस पद पर नियुक्त किया गया था।

इसके मुख्य कार्य—सचिवालय संघ का कार्यवाहक तथा प्रशासनात्मक अंग है। इसके मुख्य कार्य इस प्रकार हैं—

(1) यह सभा आर्थिक और सामाजिक परिषद तथा न्यास परिषदों की बैठकों का आयोजन करता है और उनमें भाग लेता है।

(2) वह संघ के कार्यों के सम्बन्ध में साधारण सभा की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत करता है।

(3) यदि उसकी सम्मति के किसी मामले में अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति और सुरक्षा को संकट उत्पन्न होता हो तो सुरक्षा परिषद का ध्यान उस ओर आकृष्ट कर सकता है।

(4) वह साधारण सभा द्वारा निर्धारित नियमों के अनुसार कर्मचारियों की नियुक्ति करती है। इन सबके अतिरिक्त संघ के विभिन्न अंग, जो भी कार्य सचिवालय को सौंपे, सचिवालय उन कार्यों को करता है।

प्रश्न 3. संयुक्त राष्ट्र संघ की विशिष्ट संस्थाओं या समितियों के प्रमुख कार्यों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—संयुक्त राष्ट्र संघ की विशिष्ट समितियाँ—

उपर्युक्त 6 प्रधान अंगों के अतिरिक्त संयुक्त राष्ट्र संघ की अनेक विशिष्ट समितियाँ हैं। कुछ विशिष्ट समितियाँ निम्नलिखित हैं—

(1) अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (I. L. O.)—यह संघ रूप से पुराना संगठन है। इसकी स्थापना 1919 ई० में हुई थी। इस संगठन के द्वारा विश्व के श्रमिकों के हितों की रक्षा करना, उनकी उन्नति करने का कार्य किया जाता है। इसका कार्यालय जिनेवा में है।

(2) संयुक्त राष्ट्र का शिक्षा, विज्ञान और संस्कृति संगठन [यूनेस्को] (UNESCO)—इस महत्वपूर्ण समिति का गठन 1945 ई० में हुआ था। इसका मुख्य कार्य शिक्षा, विज्ञान और संस्कृति के विकास तथा विभिन्न क्षत्रों के बीच सहयोग को विकसित कर अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति की भावना को विकसित करना है। इसका मुख्य कार्यालय पेरिस में है।

(3) अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा निधि (I.M.F.)—इस समिति का गठन 1945 ई० में हुआ था। इसका कार्य विभिन्न देशों की मुद्रा सम्बन्धी समस्या को हल करना और उनमें अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग स्थापित करना है। इसका मुख्य कार्यालय वाशिंगटन में है।

(4) विश्व स्वास्थ्य संगठन (W. H. O.)—इसका कार्य संसार में रोगों की रोकथाम करना है। साथ ही साथ विश्व में स्वास्थ्य के स्तर को सुधारना भी है। इसके मुख्य उद्देश्य को इस प्रकार व्यक्त किया गया है, "विश्व के देशों की जनता द्वारा स्वास्थ्य की उच्चतम सम्भव दशा।" इसका गठन 1946 ई० में हुआ था। इसका प्रधान कार्यालय जिनेवा में है।

(5) खाद्य और कृषि संगठन (F. A. O.)—यह संगठन संसार में खाद्य समस्या के निदान के उद्देश्य से बनाया गया है। संसार के सभी लोगों के लिए पोषक भोजन उपलब्ध करने की दिशा में यह प्रयत्नशील है। इसका गठन भी 1945 ई० में हुआ। इसका प्रधान कार्यालय वाशिंगटन है।

(6) असैनिक उड्डयन संगठन (C.A.O.)—इसकी स्थापना 1947 ई० में हुई और इसका कार्यालय कनाडा के माण्ट्रियल नगर में है।

(7) अन्तर्राष्ट्रीय बैंक (I. B.)—पुनर्निर्माण और विकास के लिए अन्तर्राष्ट्रीय बैंक की स्थापना 1936 ई० में की गई थी। इसका कार्य विभिन्न देशों की उत्पादन सम्बन्धी योजनाओं में आर्थिक पुनर्निर्माण और विकास हेतु पूंजी की व्यवस्था करना है।

प्रश्न 4. संयुक्त राष्ट्र संघ के कार्यों में भारत का क्या योगदान रहा है?

उत्तर— **संयुक्त राष्ट्र संघ के कार्यों में भारत का योगदान**

भारतवर्ष ने विश्व में शान्ति स्थापित करने के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ की निम्नलिखित अवसरों पर सक्रिय सहायता की है—

(1) **कोरिया की समस्या**—सन् 1950 ई० में उत्तरी कोरिया ने दक्षिणी कोरिया पर आक्रमण कर दिया। चीन ने उत्तरी कोरिया का साथ देना प्रारम्भ कर दिया। इससे भयंकर स्थिति पैदा हो गई। भारत ने दोनों पक्षों की सेनाओं को 380 अक्षांश सीमा से आगे न बढ़ने का प्रस्ताव संयुक्त राष्ट्र संघ में रखा तथा एक-दूसरे देश के युद्ध बन्दियों को लौटाने का प्रस्ताव भी रखा। दोनों दलों ने इस प्रस्ताव को स्वीकार किया। युद्ध रुक गया। युद्ध बन्दियों की वापिसी की जिम्मेदारी भारतीय सेना को दी गई। इस प्रकार सन् 1953 ई० में 3 वर्ष के तनाव के बाद कोरिया में शान्ति स्थापित हो गई।

(2) **कांगो की समस्या**—कांगो को बेल्जियम सरकार ने सन् 1960 ई० में स्वतन्त्र कर दिया किन्तु बेल्जियम की साजिश से वहाँ गृह युद्ध छिड़ गया। कटंगा प्रान्त ने सोम्बे के नेतृत्व में एक स्वतन्त्र राज्य की घोषणा कर दी तथा कांगो के प्रधानमन्त्री लुमुम्बा की हत्या कर दी। भारत ने इस घटना की संयुक्त राष्ट्र संघ में निष्पक्ष जाँच की माँग की। अपने देश के सैनिकों की एक टुकड़ी को संयुक्त राष्ट्र संघ की मदद के लिए कटंगा भेजा। कटंगा और संयुक्त राष्ट्र संघ के बीच समझौता हो गया। इस प्रकार भारत के प्रयास से कांगो स्वतन्त्र हो गया।

(3) **साइप्रस समस्या**—सन् 1960 ई० में साइप्रस को इंग्लैण्ड ने स्वतन्त्रता प्रदान की। इसके बाद वहाँ तुर्की व यूनानिनों में युद्ध शुरू हो गया। मार्च सन् 1964 ई० में संयुक्त राष्ट्र संघ ने भारत के सैनिकों की टुकड़ी वहाँ भेजी। जिससे वहाँ शान्ति स्थापित हो गई।

(4) **हिन्द चीन की समस्या**—फ्रान्स ने हिन्द-चीन के तीन राज्य वियतनाम, लाओस तथा कम्बोडिया को द्वितीय विश्व युद्ध के बाद स्वतन्त्र कर दिया, किन्तु दक्षिणी वियतनाम पर पुनः अधिकार कर लिया। इसके समाधान हेतु सन् 1954 ई० में जिनेवा सम्मेलन हुआ है। भारत, पोलैण्ड और कनाडा का एक आयोग बना, जिसका अध्यक्ष भारत था, समस्या को हल करने का प्रयास किया गया। तत्कालीन विदेश मन्त्री श्रीकृष्ण मेनन की अध्यक्षता में 20 जुलाई सन् 1954 ई० को युद्ध बन्दी तथा अस्थाई सन्धि का प्रस्ताव स्वीकृत हुआ। इस प्रकार भारत के प्रयास से वियतनाम में शान्ति स्थापित हो गई।

(5) **स्वेज नहर विवाद**—सन् 1956 में मिश्र द्वारा स्वेज नहर पर अधिकार कर उसका राष्ट्रीयकरण कर दिया गया। इससे इंग्लैण्ड, फ्रांस और इजराइल की सेनाओं ने संगठित होकर मिस्र पर आक्रमण कर दिया। रूस ने इन देशों की सेनाएँ हटाने की चेतावनी दी। भारत ने अपना विशेष दबाव डालकर सेनाओं को हटवा दिया और समझौते की बातचीत का वातावरण तैयार किया।

(6) **निःशस्त्रीकरण**—भारत ने निःशस्त्रीकरण के प्रस्ताव को संयुक्त राष्ट्र संघ में रखा और 1966 में यह प्रस्ताव बहुमत से स्वीकार किया गया। भारत ने परमाणु शस्त्रों के निर्माण एवं परीक्षण पर रोक लगा दी एवं परमाणु शक्ति की रचनात्मक कार्यों में प्रयोग करने का निरन्तर प्रयत्न किया है और आज भी कर रहा है।

प्रश्न 5. संयुक्त राष्ट्र संघ की उपलब्धियों का उल्लेख कीजिए। (1991)

उत्तर—

संयुक्त राष्ट्र संघ की उपलब्धियाँ

संयुक्त राष्ट्र संघ (U. N. O.) विश्व की एक महत्वपूर्ण संस्था है। उसने विश्व में स्थायी शान्ति की स्थापना करने में बहुत ही महत्वपूर्ण योग प्रदान किया है। द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् स्थापित संयुक्त राष्ट्र की प्रमुख उपलब्धियाँ इस प्रकार हैं—

(1) शान्ति स्थापना के लिए सराहनीय कार्य,
(2) निःशस्त्रीकरण के लिये प्रयास,
(3) मानव अधिकारों की घोषणा,
(4) औपनिवेशिक देशों की स्वतन्त्रता,
(5) आर्थिक प्रगति के लिये कार्य,
(6) बाल कल्याण कोष की स्थापना,
(7) काश्मीर, कोरिया, साइप्रस तथा मध्य एशिया में युद्ध विराम।

(8) अन्य उपलब्धियाँ—संयुक्त राष्ट्र संघ ने मानव हित की दृष्टि से बहुत ही सराहनीय कार्य किये हैं तथा आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में बहुत विकास किया है। इस संगठन ने विश्व के सभी देशों के लोगों के जीवन स्तर को ऊँचा उठाने तथा पिछड़े हुए देशों के आर्थिक विकास में बहुत ही योग प्रदान किया है। अतः इस अन्तर्राष्ट्रीय संगठन का भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों से बहुत महत्व है।

बहु विकल्पीय प्रश्न

सही विकल्प का चयन कीजिए—

प्रश्न 1. डब्लू० एच० ओ० की स्थापना कब हुई थी—
(अ) 1984 ई० में, (ब) 1962 ई० में,
(स) 1960 ई० में, (द) 1946 ई० में।
उत्तर—(अ) 1948 ई० में।

प्रश्न 2. यूनेस्को की स्थापना कब हुई थी—
(अ) 1962 ई० में, (ब) 1950 ई० में,
(स) 1948 ई० में, (द) 1946 ई० में।
उत्तर—(द) 1946 ई० में।

प्रश्न 3. सुरक्षा परिषद में कितने सदस्य हैं—
(अ) 15, (ब) 12,
(स) 10, (द) 6।
उत्तर—(अ) 15।

प्रश्न 4. अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय में कितने न्यायाधीश होते हैं—
(अ) 15, (ब) 5,
(स) 10, (द) 20।
उत्तर—(अ) 15।

प्रश्न 5. संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना कब हुई थी— (1984, 88, 90)

(क) 26 जून 1945, (ख) 24 अक्टूबर 1945,
(ग) 15 मई 1946, (घ) 15 दिसम्बर 1946 ।

उत्तर—(ख) 24 अक्टूबर 1945 ।

प्रश्न 6. अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय कहाँ है— (1985, 86, 88, 89)

(क) न्यूयार्क, (ख) हेग,
(ग) लन्दन, (घ) दिल्ली ।

उत्तर—(ख) हेग ।

प्रश्न 7. 'मानव अधिकार दिवस' प्रति वर्ष कब मनाया जाता है—

(क) 4 अक्टूबर, (ख) 26 जनवरी,
(ग) 10 दिसम्बर, (घ) 7 मार्च ।

उत्तर—(ग) 10 दिसम्बर ।

मानचित्र अध्ययन

(मानचित्र पर प्रश्न एवं उनका अभ्यास)

- मानचित्र सम्बन्धी आवश्यक बातें
  - मानचित्र भरने के लिए आवश्यक निर्देश
    - मानचित्र पर महत्वपूर्ण प्रश्न
      - परीक्षा में आये मानचित्र सम्बन्धी प्रश्न एवं उनका हल

मानचित्र अध्ययन

मानचित्र पर महत्वपूर्ण प्रश्न एवं उनका अभ्यास

मानचित्र सम्बन्धी आवश्यक बातें—

सामाजिक विज्ञान के दो प्रश्न-पत्र होते हैं। दोनों ही प्रश्न-पत्रों में मानचित्र सम्बन्धी प्रश्न पूछे जाते हैं।

प्रथम प्रश्न-पत्र—इस प्रश्न-पत्र में भारत के संलग्न मानचित्र में सम्बन्धित स्थानों को अंकित करना होता है और उनका नाम उत्तर-पुस्तिका में लिखना होता है। यह प्रश्न कुल 4 अंक का होता है।

द्वितीय प्रश्न-पत्र—इस प्रश्न-पत्र में विश्व के संलग्न मानचित्र में दी हुई सम्बन्धित बातों को केवल दर्शाना होता है। मानचित्र के चार प्रश्न होते हैं और प्रत्येक प्रश्न एक-एक अंक का होता है। इस प्रकार यह प्रश्न कुल 4 अंक का होता है।

छात्रों को मानचित्र में विभिन्न विवरणों के भरने का अभ्यास करना अति आवश्यक है। वे जितना अधिक अभ्यास करेंगे उनको उतना ही अधिक लाभ होगा।

मानचित्र भरने के लिए आवश्यक निर्देश—

छात्रों को मानचित्र भरने में निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए—

(1) नगर दर्शाने के लिए (●) चिन्ह द्वारा अंकित करना चाहिए। चिन्ह के पास नगर का नाम भी लिख देना चाहिए।

(2) रेलमार्ग दर्शाने के लिए -|-|-|- चिन्ह का प्रयोग करना चाहिए तथा प्रमुख रेलवे स्टेशनों के नाम भी चिन्ह (●) द्वारा अंकित कर लिख देने चाहिए।

(3) जलमार्ग एवं वायुमार्ग को निश्चित संकेत ---- द्वारा दर्शाना चाहिए तथा उसके मध्य के प्रमुख बन्दरगाह एवं हवाई अड्डों को चिन्ह (●) द्वारा अंकित कर उनके नाम भी लिख देने चाहिए।

(4) पर्वत दर्शाने के लिए चिन्ह ııı का प्रयोग करना चाहिए। पर्वत का नाम भी लिख देना चाहिए।

(5) नदी दर्शाने के लिए निकास स्थान से हल्की रेखा और आगे की ओर धीरे-धीरे गहरी रेखा करते हुए गिरने के स्थान पर अधिक गहरी कर देनी चाहिए। नदी का नाम भी अंकित कर देना चाहिए।

(6) वनस्पति, जलवायु एवं मरुस्थल आदि दर्शाने के लिए किसी प्रकार के संकेत चिन्ह का प्रयोग करना चाहिए, जैसे × |∴| + आदि।

(7) खाड़ी, झील, नहर तथा द्वीप अंकित करते समय उनका नाम लिख देना चाहिए।

(8) मानचित्र के भरने में स्वच्छता का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

टिप्पणी—(1) द्वितीय प्रश्न-पत्र में चिन्ह अंकित रहते हैं। अतः मानचित्र भरते समय उन्हीं चिन्हों का प्रयोग करना चाहिए।

(2) यदि Index (संकेत चिन्ह) बना दिये जाये तो परीक्षक एक ही दृष्टि में मानचित्र का मूल्यांकन कर पूरे अंक प्रदान कर देता है।

प्रथम प्रश्न-पत्र में मानचित्र सम्बन्धी प्रश्न निम्न प्रकार के पूछे जा सकते हैं—

1. भारत की ऐतिहासिक इमारतों के स्थान एवं धार्मिक स्थान।
2. भारत में स्वतन्त्रता संग्राम की प्रमुख घटनाओं के स्थान।
3. भारत के महत्वपूर्ण एवं ऐतिहासिक नगर।
4. भारत के महापुरुषों के जन्म व मरण स्थान।
5. भारत में स्थित प्रमुख मन्दिर एवं मस्जिदों के स्थान।
6. भारत के राज्यों एवं उनकी राजधानियों के स्थान।
7. भारत के ऐतिहासिक प्रमुख युद्ध एवं सन्धि क्षेत्रों के स्थान।
8. भारत के प्रमुख शिक्षा एवं कला केन्द्र।

प्रथम प्रश्न-पत्र के मानचित्र सम्बन्धी महत्वपूर्ण प्रश्न

(1) दिल्ली राज्य से सम्बन्धित विविध प्रकार के प्रश्न—

(क) प्रसिद्ध इमारतों से सम्बन्धित प्रश्न (दिल्ली)—

1. वह स्थान जहाँ जयसिंह द्वारा निर्मित जन्तर-मन्तर स्थित है।
2. वह स्थान जहाँ का इण्डिया गेट प्रसिद्ध है।
3. वह स्थान जहाँ शेख निजामुद्दीन औलिया की दरगाह है।
4. वह स्थान जहाँ मौर्यकाल का लौह स्तम्भ स्थित है।
5. वह स्थान जहाँ राष्ट्रपति भवन स्थित है।
6. वह स्थान जहाँ सर्वोच्च न्यायालय स्थित है।
7. वह स्थान जहाँ संसद भवन है।
8. वह स्थान जहाँ गयासुद्दीन तुगलक का मकबरा है।
9. वह स्थान जहाँ हुमायूँ का मकबरा है।
10. वह स्थान जहाँ जामा मस्जिद है।
11. वह स्थान जहाँ कुतुबमीनार स्थित है।
12. वह स्थान जहाँ शाहजहाँ द्वारा निर्मित लाल किला है।

(ख) जन्म एवं मृत्यु सम्बन्धी प्रश्न (दिल्ली)—

1. वह स्थान जहाँ इन्दिरा गाँधी को गोली मारी गयी।
2. वह स्थान जहाँ महात्मा गाँधी की हत्या हुई।
3. वह स्थान जहाँ महात्मा गाँधी की समाधि है।
4. वह स्थान जहाँ पं० जवाहरलाल नेहरू की मृत्यु हुई।

(ग) राजधानी के रूप में प्रश्न—(दिल्ली)

1. वह स्थान जहाँ पृथ्वीराज चौहान की राजधानी थी।
2. वह स्थान जो स्वतन्त्र भारत की राजधानी है।
3. वह स्थान जो ब्रिटिश शासन में राजधानी था।
4. वह स्थान जिसको बाद में मुगल सम्राटों ने राजधानी बनाया।

(घ) मुख्य कार्यालयों पर आधारित प्रश्न (दिल्ली)—

1. वह स्थान जहाँ भारतीय सेनाओं का मुख्यालय है।
2. वह स्थान जहाँ केन्द्रीय सरकार का प्रधान कार्यालय है।
3. वह स्थान जहाँ पालम हवाई अड्डा है।
4. वह स्थान जहाँ विश्व स्वास्थ्य संगठन (W.H.O.) का कार्यालय है।
5. वह स्थान जहाँ उत्तरी रेलवे का मुख्यालय स्थित है।

(2) उत्तर प्रदेश राज्य से सम्बन्धित विविध प्रकार के प्रश्न—

(क) लखनऊ नगर से सम्बन्धित प्रश्न—

1. वह स्थान जो उत्तर प्रदेश की राजधानी है।
2. वह स्थान जहाँ उत्तर प्रदेश विधान सभा भवन है।

(ख) इलाहाबाद नगर से सम्बन्धित प्रश्न—

1. वह स्थान जहाँ स्वराज भवन स्थित है।
2. वह स्थान जहाँ पं० जवाहरलाल नेहरू का जन्म हुआ।
3. वह स्थान जहाँ श्रीमती इन्दिरा गाँधी का जन्म हुआ।
4. वह स्थान जहाँ आनन्द भवन स्थित है।
5. वह स्थान जहाँ चन्द्रशेखर आजाद ने अपना बलिदान दिया था।
6. वह स्थान जो गंगा-यमुना संगम पर स्थित है।
7. वह स्थान जहाँ अकबर द्वारा निर्मित किला है।
8. वह स्थान जहाँ उत्तर प्रदेश का उच्च न्यायालय है।

(ग) वाराणसी नगर से सम्बन्धित प्रश्न—

1. वह स्थान जहाँ रेल-डीजल इन्जन का कारखाना है।
2. वह स्थान जहाँ हिन्दू विश्वविद्यालय स्थित है।
3. वह स्थान जो प्राचीन काल में संस्कृत भाषा का केन्द्र था।
   (काशी—वाराणसी का पुराना नाम)
4. वह स्थान जहाँ महात्मा बुद्ध का धर्मचक्र प्रवर्तन हुआ।
   (सारनाथ—वाराणसी के निकट)
5. वह स्थान जो बौद्धों का धार्मिक स्थल है। (सारनाथ—वाराणसी के निकट)

(घ) आगरा नगर से सम्बन्धित प्रश्न—

1. वह स्थान जहाँ ताजमहल स्थित है।
2. वह स्थान जहाँ एतमादुद्दौला का मकबरा है।
3. वह स्थान जहाँ अकबर का मकबरा है। (सिकन्दरा—आगरा के निकट)
4. वह स्थान जहाँ अकबर द्वारा निर्मित लाल किला स्थित है।
5. वह स्थान जहाँ शेख सलीम चिश्ती की कब्र है।
   (फतेहपुर सीकरी—आगरा के निकट)
6. वह स्थान जहाँ बुलन्द दरवाजा स्थित है।
   (फतेहपुरी सीकरी—आगरा के निकट)
7. वह स्थान जहाँ अकबर द्वारा निर्मित जोधाबाई महल स्थित है।
   (फतेहपुर सीकरी—आगरा के निकट)

8. वह स्थान जो अकबर द्वारा बसाया गया था। (फतेहपुर सीकरी—आगरा के निकट)
9. वह स्थान जो प्रारम्भ में मुगल बादशाहों की राजधानी था।
10. वह स्थान जहाँ शाहजहाँ द्वारा बनवायी गयी मोती मस्जिद है।

(3) हरियाणा राज्य से सम्बन्धित विविध प्रकार के प्रश्न—

1. वह स्थान जहाँ भारत का डेयरी अनुसंधान केन्द्र स्थित है। (करनाल)
2. वह स्थान जहाँ श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश दिया था। (कुरुक्षेत्र)
3. वह स्थान जहाँ महाभारत युद्ध हुआ था। (कुरुक्षेत्र)
4. वह स्थान जहाँ बाबर और इब्राहीम लोदी के बीच युद्ध हुआ। (पानीपत)

(4) पंजाब राज्य से सम्बन्धित विविध प्रकार के प्रश्न—

1. वह स्थान जो पंजाब राज्य की राजधानी है। (चण्डीगढ़)
2. वह स्थान जो ऊनी वस्त्र उद्योग का केन्द्र है। (लुधियाना)
3. वह स्थान जहाँ जलियाँवाला बाग का काण्ड हुआ था। (अमृतसर)
4. वह स्थान जहाँ स्वर्ण मन्दिर स्थित है। (अमृतसर)

(5) हिमाचल प्रदेश राज्य से सम्बन्धित विविध प्रकार के प्रश्न—

1. वह स्थान जहाँ भारत एवं पाकिस्तान में समझौता हुआ। (शिमला)

(6) राजस्थान राज्य से सम्बन्धित विविध प्रकार के प्रश्न—

1. वह स्थान जहाँ शेख मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह है। (अजमेर)
2. भारत का वह स्थान जहाँ यादव राजवंश स्थापित था। (चितौड़गढ़)
3. वह स्थान जो राजपूत चित्रकला शैली का प्रधान केन्द्र था। (जयपुर)
4. वह स्थान जहाँ परमाणु शक्ति केन्द्र स्थापित है। (कोटा)
5. वह स्थान जहाँ रानी पदमिनी ने जौहर किया। (चित्तौड़गढ़)

(7) महाराष्ट्र राज्य से सम्बन्धित विविध प्रकार के प्रश्न—

1. वह स्थान जहाँ पश्चिमी रेलवे का प्रधान कार्यालय है। (बम्बई)
2. वह स्थान जहाँ राष्ट्रीय कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन हुआ था। (बम्बई)
3. वह स्थान जहाँ 1942 में 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव पारित हुआ। (बम्बई)
4. वह स्थान जहाँ आर्य समाज की स्थापना हुई। (बम्बई)
5. वह स्थान जहाँ औरंगजेब का मकबरा है। (औरंगाबाद)
6. वह स्थान जहाँ गोल गुम्बद स्थित है। (बीजापुर)

(8) गुजरात राज्य से सम्बन्धित विविध प्रकार के प्रश्न—

1. वह स्थान जहाँ महात्मा गाँधी का जन्भ हुआ। (पोरबन्दर)
2. वह स्थान जहाँ महात्मा गाँधी ने आश्रम स्थापित किया। (साबरमती)
3. वह स्थान जहाँ के शिव मन्दिर को महमूद गजनवी ने लूटा था। (कठियावाड़)
4. वह स्थान जहाँ अखिल भारतीय कांग्रेस का बँटवारा हुआ। (सूरत)
5. वह स्थान जो सूती वस्त्र उद्योग का प्रमुख केन्द्र है। (अहमदाबाद)

(9) बिहार राज्य से सम्बन्धित विविध प्रकार के प्रश्न—

1. वह स्थान जहाँ गौतम बुद्ध को निर्वाण प्राप्त हुआ था। (बौद्ध गया)
2. वह स्थान जो गुप्त शासकों की राजधानी था। (पाटलिपुत्र-पटना)

3. वह स्थान जो मौर्य शासकों की राजधानी था। (पाटिलपुत्र-पटना)
4. वह स्थान जो मौर्यकाल में शिक्षा का केन्द्र था। (नालन्दा)
5. वह स्थान जहाँ प्रथम लोहा-इस्पात का कारखाना स्थापित हुआ। (जमशेदपुर)
6. वह स्थान जहाँ प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद का जन्म हुआ। (पटना)

(10) मध्य प्रदेश राज्य से सम्बन्धित विविध प्रकार के प्रश्न—

1. वह स्थान जहाँ चन्देल नरेशों के भव्य मन्दिर स्थित हैं। (खुजराहो)
2. वह स्थान जहाँ राजा भोज की राजधानी थी। (उज्जैन)
3. वह स्थान जहाँ कालिदास का जन्म हुआ। (उज्जैन)
4. वह स्थान जहाँ लक्ष्मीबाई युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुइ। (ग्वालियर)
5. वह स्थान जहाँ सार्वजनिक क्षेत्र का लोहा-इस्पात का कारखाना स्थित है। (भिलाई)
6. वह स्थान जहाँ तानसेन निवास करते थे। (ग्वालियर)

(11) उड़ीसा राज्य से सम्बन्धित विविध प्रकार के प्रश्न—

1. वह स्थान जहाँ लिंगराज का मन्दिर स्थित है। (भुवनेश्वर)
2. वह स्थान जहाँ भगवान जगन्नाथ जी का प्रसिद्ध मन्दिर स्थित है। (जगन्नाथपुरी)
3. वह स्थान जहाँ सूर्य मन्दिर स्थित है। (कोणार्क)

(12) तमिलनाडु राज्य से सम्बन्धित विविध प्रकार के प्रश्न—

1. वह स्थान जहाँ थियोसोफिकल सोसायटी का मुख्यालय है। (अड्यार, मद्रास)
2. वह स्थान जहाँ 1927 में कांग्रेस ने होमरूल का प्रस्ताव पारित किया। (मद्रास)
3. वह स्थान जो तमिलनाडु राज्य की राजधानी है। (मद्रास)
4. वह स्थान जहाँ मीनाक्षी मन्दिर स्थित है। (मदुरई)
5. वह स्थान जहाँ दक्षिण रेलवे का प्रधान कार्यालय स्थित है। (मद्रास)
6. तमिलनाडु का वह स्थान जहाँ परमाणु शक्ति संस्थान स्थित है। (कलपक्कम्)
7. वह स्थान जो दक्षिण भारत में अन्तर्राष्ट्रीय वायु पत्तन है। (मीनावक्कम्)
8. वह स्थान जहाँ स्वामी विवेकानन्द का स्मारक है। (कन्याकुमारी)
9. वह स्थान जहाँ चोल राजाओं ने विशाल शिव मन्दिर बनवाया। (तंजौर)

(13) कर्नाटक राज्य से सम्बन्धित विविध प्रकार के प्रश्न—

1. वह स्थान जो रेशम वस्त्र उद्योग का प्रमुख केन्द्र है। (बंगलौर)
2. वह नगर जहाँ वायुयान बनाने का कारखाना स्थित है। (बंगलौर)

(14) आन्ध्रप्रदेश राज्य से सम्बन्धित विविध प्रकार के प्रश्न—

1. वह स्थान जो आन्ध्र प्रदेश की राजधानी है। (हैदराबाद)
2. वह स्थान जहाँ 'वेन्कटेश्वर' का मन्दिर स्थित है। (तिरुपति)

(15) पश्चिमी बंगाल राज्य से सम्बन्धित विविध प्रकार के प्रश्न—

1. वह स्थान जहाँ ब्रह्म समाज की स्थापना हुई। (कलकत्ता)
2. वह स्थान जहाँ कांग्रेस का द्वितीय अधिवेशन हुआ। (कलकत्ता)
3. वह स्थान जहाँ ब्रिटिश शासन में हिन्दू कालेज की स्थापना हुई। (कलकत्ता)
4. वह स्थान जहाँ टैगोर द्वारा विश्व भारती की स्थापना की गयी। (कलकत्ता)
5. वह स्थान जहाँ 'दमदम' अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा स्थित है। (कलकत्ता)

(16) राजधानियों एवं राज्यों से सम्बन्धित विविध प्रकार के प्रश्न—

1. वह स्थान जो भारत की राजधानी है। (दिल्ली)
2. वह स्थान जो उत्तर प्रदेश की राजधानी है। (लखनऊ)
3. वह स्थान जो उड़ीसा प्रदेश की राजधानी है। (भुवनेश्वर)
4. वह स्थान जो कर्नाटक की राजधानी है। (बंगलौर)
5. वह स्थान जो आन्ध्र प्रदेश की राजधानी है। (हैदराबाद)
6. भारत का वह राज्य जो 22वाँ राज्य बना। (सिक्किम)
7. भारत का वह राज्य जो 23वाँ राज्य बना। (अरुणांचल प्रदेश)
8. भारत का वह राज्य जो 24वाँ राज्य बना। (मिजोरम)
9. भारत का वह राज्य जो 25वाँ राज्य बना। (गोआ)
10. भारत का वह राज्य जहाँ सबसे पहले सूर्य दर्शन होता है। (अरुणांचल प्रदेश)
11. वह राज्य जो भारत का स्वर्ग कहलाता है। (जम्मू-काश्मीर)

(17) महत्वपूर्ण घटनाओं वाले नगरों से सम्बन्धित विविध प्रश्न—

1. वह स्थान जहाँ लाल इमली ऊनी मिल हैं। (कानपुर)
2. वह स्थान जहाँ अटाला मस्जिद स्थित है। (जौनपुर)
3. उत्तर प्रदेश का वह स्थान जहाँ मुस्लिम विश्वविद्यालय है। (अलीगढ़)
4. उत्तर प्रदेश का वह स्थान जहाँ हिन्दू विश्वविद्यालय है। (वाराणासी)
5. वह स्थान जहाँ दशावतार विष्णु मन्दिर है। (देवगढ़—झाँसी)
6. वह स्थान जहाँ अशोक का शिलालेख प्राप्त हुआ है। (झाँसी-कालपी)
7. वह स्थान जहाँ लक्ष्मीबाई शासन करती थी। (झाँसी)
8. वह स्थान जहाँ राम का जन्म हुआ। (अयोध्या)
9. वह स्थान जहाँ श्रीकृष्ण का जन्म हुआ। (मथुरा)
10. वह स्थान जहाँ प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम का श्रीगणेश हुआ। (मेरठ)
11. उत्तर प्रदेश का वह स्थान जहाँ अणुशक्ति का केन्द्र है। (बुलन्दशहर—नरोरा)
12. वह स्थान जहाँ उत्तर प्रदेश में तेलशोधक कारखाना है। (मथुरा)

(18) अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न—

1. वह स्थान जहाँ महावीर स्वामी का जन्म हुआ था। (वैशाली)
2. वह स्थान जहाँ महावीर स्वामी को निर्वाण (मोक्ष) प्राप्त हुआ था। (पावापुरी)
3. भारत का वह स्थान जहाँ वास्कोडिगामा आया। (कालीकट)
4. भारत का वह स्थान जहाँ कैलाश मन्दिर स्थित है। (काँची)
5. वह स्थान जहाँ अशोक का स्तूप स्थित है। (साँची)
6. वह स्थान जो राजा हर्षवर्धन की राजधानी था। (थानेश्वर)
7. वह स्थान जहाँ रामकृष्ण मिशन का मुख्यालय है। (बेल्लूर)
8. वह स्थान जहाँ पृथ्वीराज चौहान और मुहम्मदगौरी के मध्य युद्ध हुआ। (तराईन)

परीक्षा में पूछे गये मानचित्र सम्बन्धी प्रश्न एवं उनका हल

प्रथम प्रश्न-पत्र 1987

प्रश्न 1—भारत के संलग्न मानचित्र में निम्नलिखित घटनाओं से सम्बन्धित स्थानों को अंकित कीजिए तथा उनका नाम उत्तर-पुस्तिका में लिखिए—

Set (MNM)— (अ) वह स्थान जहाँ गुरु नानक का जन्म हुआ था।
(ब) वह स्थान जहाँ लिंगराज मन्दिर का निर्माण हुआ था।
(स) वह स्थान जहाँ कुतुबमीनार स्थित है।
(द) वह नगर जहाँ 1927 में कांग्रेस ने होमरूल (स्वराज) का प्रस्ताव पारित किया था।

उत्तर— (अ) तलवण्डी (ननकाना साहिब)—पाकिस्तान में लाहौर के पास।
(ब) भुवनेश्वर—उड़ीसा प्रदेश की राजधानी।
(स) दिल्ली—भारत की राजधानी
(द) मद्रास—तामिलनाडु राज्य का प्रमुख नगर है।

Set (DNM)— (अ) वह स्थान जहाँ पं० जवाहरलाल नेहरू का जन्म हुआ।
(ब) वह स्थान जहाँ स्वर्ण मन्दिर स्थित है।
(स) वह स्थान जहाँ महाभारत का युद्ध हुआ।
(द) वह स्थान जहाँ अकबर ने बुलन्द दरवाजा बनवाया।

उत्तर— (अ) इलाहाबाद—उत्तर प्रदेश का धार्मिक स्थान जो गंगा यमुना संगम पर स्थित है।
(ब) अमृतसर—पंजाब राज्य में पाकिस्तान की सीमा के निकट।
(स) कुरुक्षेत्र—हरियाणा राज्य में एक धार्मिक स्थान हैं।
(द) फतेहपुर सीकरी—उत्तरप्रदेश में आगरा नगर के निकट है।

Set (RAJIV)— (अ) वह स्थान जहाँ महात्मा बुद्ध ने अपना पहला उपदेश सुनाया था।
(ब) मौर्य साम्राज्य की राजधानी।
(स) प्राचीन भारत के प्रसिद्ध विश्वविद्यालय का स्थान।
(द) वह स्थान, जहाँ मुगल शासक अकबर ने दुर्ग का निर्माण किया था।

उत्तर— (अ) सारनाथ—उ० प्र० में वाराणसी नगर में स्थित।
(ब) पाटलिपुत्र (पटना)—बिहार राज्य की राजधानी है।
(स) तक्षशिला—पाकिस्तान में।
(द) आगरा—अन्य स्थान हैं—(1) इलाहाबाद, (2) लाहौर।

Set (MMM)— (अ) वह स्थान जहाँ पृथ्वीराज तथा मुहम्मद गोरी के बीच युद्ध हुआ था।
(ब) वह स्थान जहाँ कुतुबमीनार स्थित है।
(स) वह स्थान जहाँ महात्मा गांधी का जन्म हुआ था।
(द) वह स्थान जहाँ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन हुआ था।

उत्तर—

(अ) तरावड़ी (तराइन) का मैदान—हरियाणा राज्य।
(ब) दिल्ली भारत की राजधानी।
(स) पोरबन्दर—काठियावाड़ (गुजरात) समुद्री तट पर स्थित।
(द) बम्बई—महाराष्ट्र राज्य की राजधानी, समुद्र तट पर स्थित।
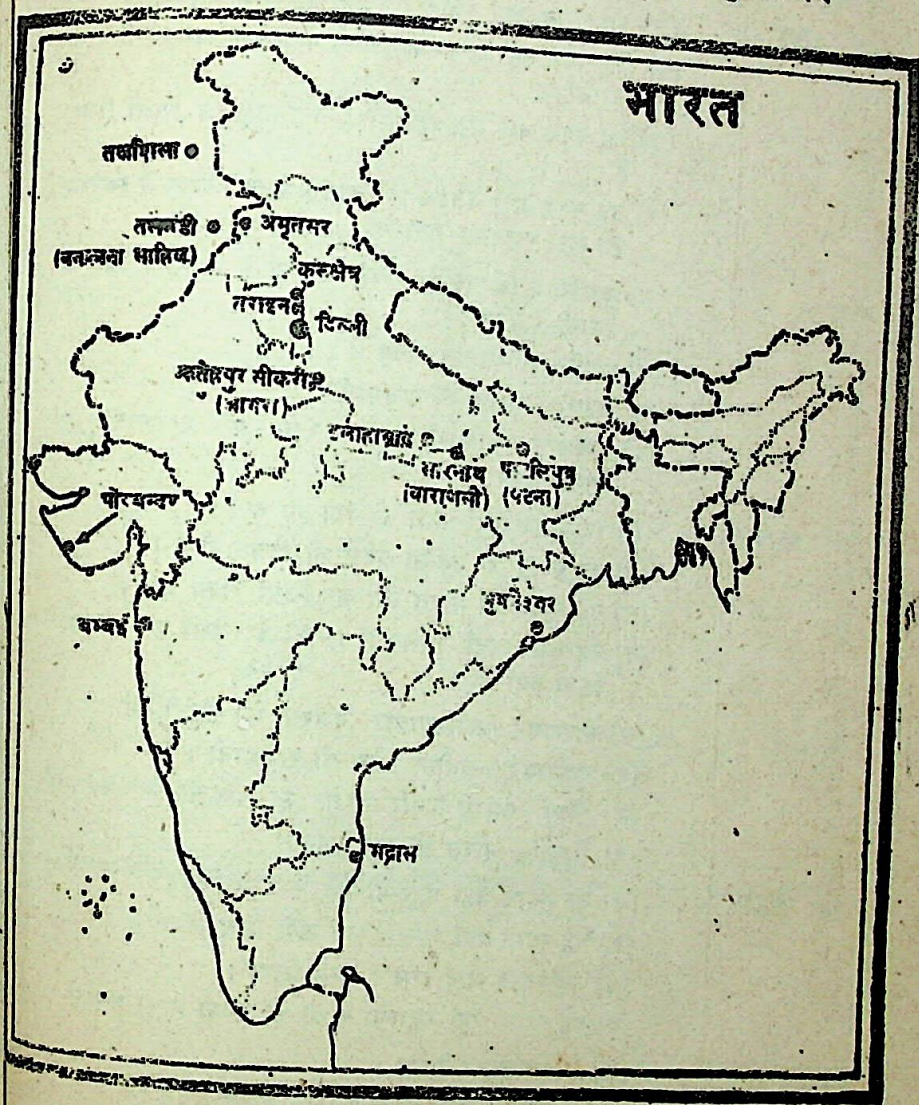
प्रश्न 1—1987 के प्रथम प्रश्न-पत्र का मानचित्र

प्रथम प्रश्न-पत्र, 1988

प्रश्न 2—भारत के संलग्न मानचित्र में निम्न घटनाओं तथा तथ्यों से सम्बन्धित स्थानों को अंकित कीजिए तथा उनका नाम अपनी उत्तर-पुस्तिका में भी लिखिए।

Set (ANT)—
(अ) वह स्थान जहाँ महावीर स्वामी का जन्म हुआ था।
(ब) वह नगर जहाँ पल्लव शासकों ने कैलाश मन्दिर का निर्माण कराया था।
(स) वह नगर जहाँ शाहजहाँ द्वारा निर्मित लाल किला स्थित है।
(द) वह नगर जहाँ 1906 में कांग्रेस के अधिवेशन में स्वराज का झंडा फहराया गया था।

उत्तर—
(अ) **कुण्डीग्राम (वैशाली)**—बिहार राज्य के मुजफ्फर जिले में वैशाली के निकट।
(ब) **कांची**—तमिलनाडु राज्य में।
(स) **दिल्ली**—भारत की राजधानी।
(द) **कलकत्ता**—पश्चिमी बंगाल राज्य की राजधानी एवं प्रसिद्ध नगर।

Set (MNM)—
(अ) वह स्थान जहाँ गाँधी जी पैदा हुए थे।
(ब) वह स्थान जो उड़ीसा प्रदेश की राजधानी है।
(स) वह राज्य जो भारत संघ का 25वाँ राज्य बना।
(द) वह स्थान जहाँ एशियाड 1982 के खेलों का आयोजन किया गया था।

उत्तर—
(अ) **पोरबन्दर**—काठियावाड़ (गुजरात में) समुद्री तट पर।
(ब) **भुवनेश्वर**—उड़ीसा प्रदेश की राजधानी।
(स) **गोआ**—भारत के पश्चिमी तट पर, पणजी की राजधानी।
(द) **दिल्ली**—भारत की राजधानी।

Set (SKP)—
(अ) वह स्थान जहाँ महात्मा बुद्ध ने जन्म लिया।
(ब) वह स्थान जहाँ लाल इमली ऊनी मिल स्थित है।
(स) वह स्थान जहाँ राम ने जन्म लिया।
(द) वह स्थान जहाँ महात्मा गाँधी को गोली मारी गयी।

उत्तर—
(अ) **कपिलवस्तु**—नेपाल।
(ब) **कानपुर**—उत्तर प्रदेश का एक प्रमुख नगर।
(स) **अयोध्या**—उत्तर प्रदेश के जनपद फैजाबाद में गंगा तट पर स्थित है।
(द) **दिल्ली**—भारत की राजधानी।
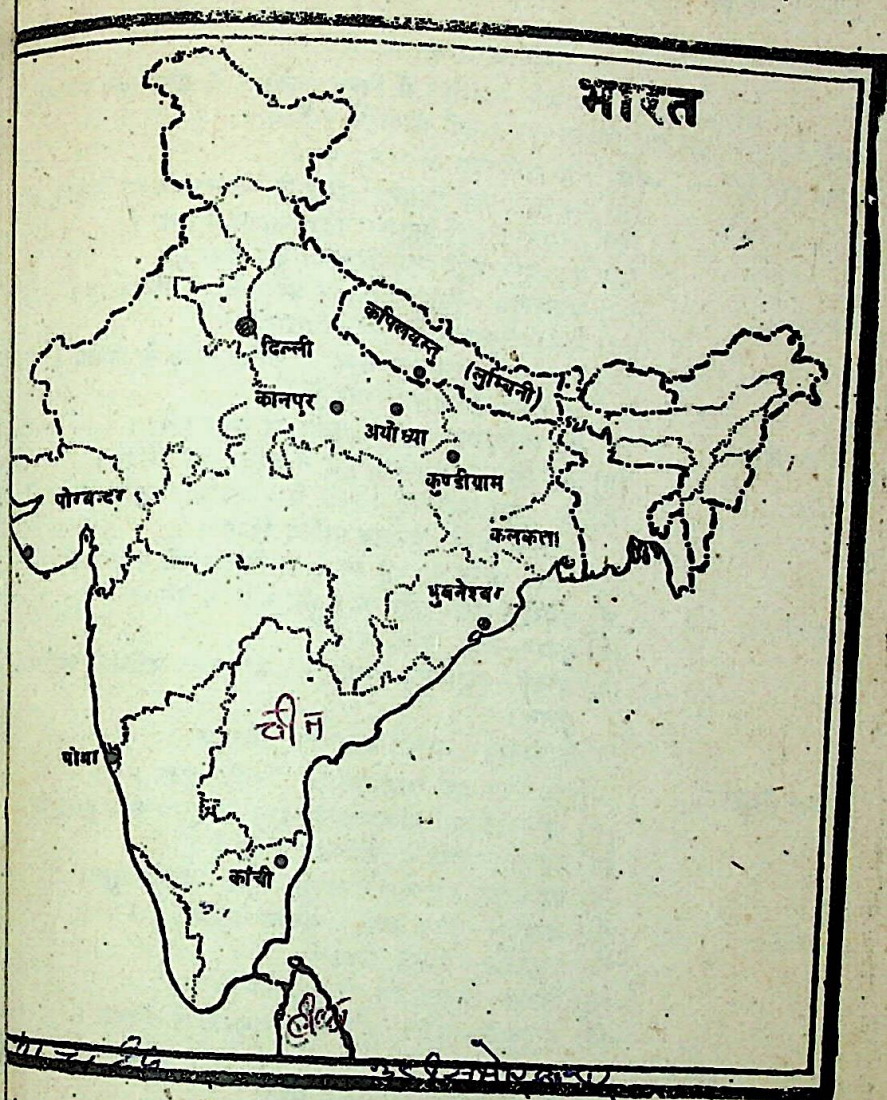
प्रश्न 2—प्रथम प्रश्न-पत्र 1988 का मानचित्र

प्रथम प्रश्न-पत्र 1989

प्रश्न 3—भारत के संलग्न मानचित्र में निम्न घटनाओं से सम्बन्धित स्थानों को अंकित कीजिए तथा उनका नाम अपनी कापी में लिखिए—

Set (HPP)—
(अ) मौर्य साम्राज्य की राजधानी।
(ब) वह नगर जहाँ शाहजहाँ द्वारा निर्मित लालकिला स्थित है।
(स) वह स्थान जहाँ महात्मा गांधी का जन्म हुआ।
(द) वह स्थान जहाँ महाभारत का युद्ध हुआ।

उत्तर—
(अ) **पाटलिपुत्र**—(पटना) विहार प्रदेश की राजधानी है।
(ब) **दिल्ली**—भारत देश की राजधानी।
(स) **पोरबन्दर**—गुजरात राज्य के काठियावाड़ के समीप।
(द) **कुरुक्षेत्र**—हरियाणा राज्य में।

Set (RKP)—
(अ) वह स्थान जहाँ भगवान कृष्ण का जन्म हुआ।
(ब) वह स्थान जहाँ गौतम बुद्ध ने ज्ञान प्राप्त किया।
(स) वह स्थान जहाँ सन् 1942 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने "भारत छोड़ो" प्रस्ताव पारित किया।
(द) दक्षिण भारत का वह स्थान जो निजाम की राजधानी थी।

उत्तर—
(अ) **मथुरा**—उत्तर प्रदेश में यमुना नदी के तट पर।
(ब) **गया**—विहार राज्य में।
(स) **बम्बई**—महाराष्ट्र राज्य में भारत के पश्चिमी तट पर पत्तन।
(द) **हैदराबाद**—आन्ध्र प्रदेश की राजधानी।

Set (RRP)—
(अ) वह नगर जहाँ ताजमहल का निर्माण हुआ।
(ब) वह स्थान जहाँ जलियावाला बाग का हत्याकाण्ड हुआ था।
(स) वह स्थान जहाँ कुतुबमीनार स्थित है।
(द) वह स्थान जहाँ बुद्ध ने अपना पहला उपदेश सुनाया।

उत्तर—
(अ) **आगरा**—उत्तर प्रदेश में यमुना तट पर है।
(ब) **अमृतसर**—पंजाब राज्य में।
(स) **दिल्ली**—भारत देश की राजधानी।
(द) **सारनाथ**—उत्तर प्रदेश में वाराणासी के निकट।

Set (VKP)—
(अ) वह स्थान जहाँ महात्मा बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ था।
(ब) वह नगर जहाँ ताजमहल स्थित है।
(स) वह स्थान जहाँ राष्ट्रकूट शासकों ने कैलाश मन्दिर का निर्माण कराया था।
(द) वह स्थान जहाँ 1927 में कांग्रेस द्वारा साइमन कमीशन के बहिष्कार का प्रस्ताव पारित किया गया था।

उत्तर—
(अ) **गया**—बिहार राज्य में।
(ब) **आगरा**—उत्तर प्रदेश में यमुना तट पर स्थित।
(स) **एलोरा**—महाराष्ट्र राज्य के औरंगाबाद के उत्तर-पूर्व में स्थित।
(द) **मद्रास**—तमिलनाडु राज्य में भारत के पूर्वी तट पर स्थित है।
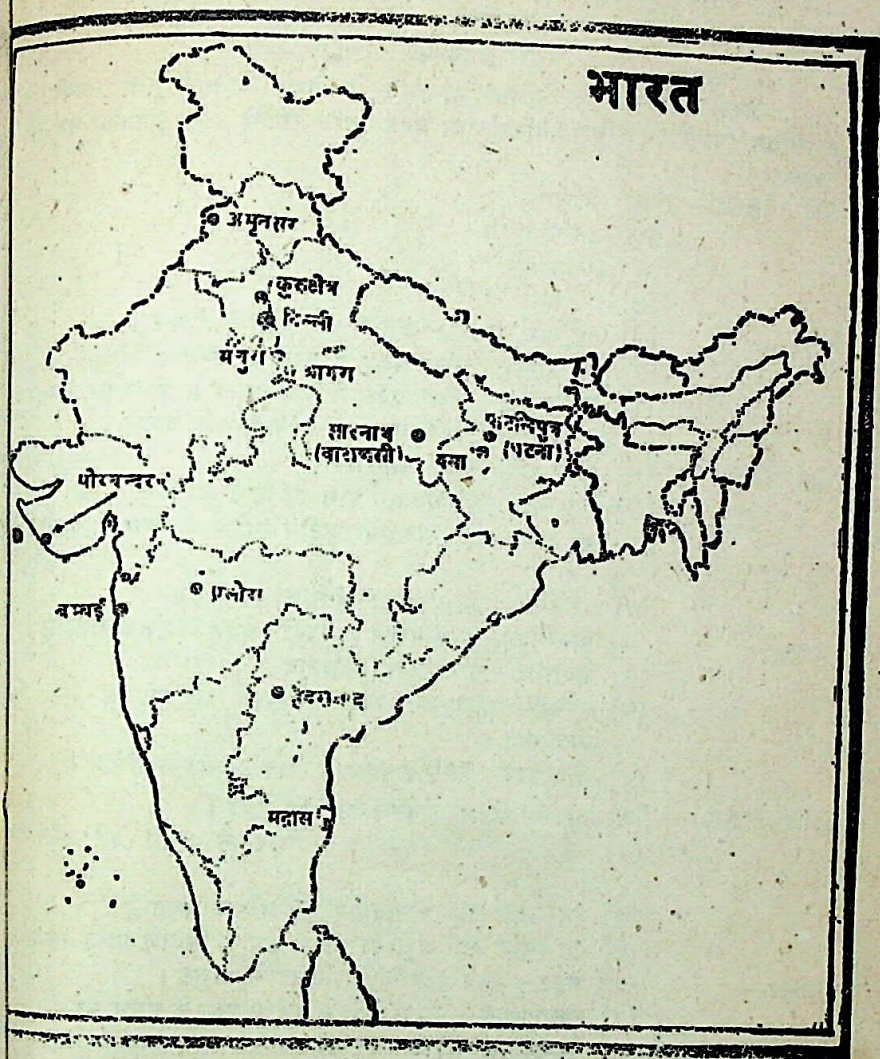
प्रश्न 3 - प्रथम प्रश्न-पत्र 1989 का मानचित्र

प्रथम प्रश्न-पत्र, 1990

प्रश्न 4--भारत के संलग्न मानचित्र में निम्न घटनाओं तथा तथ्यों से सम्बन्धित स्थानों को अंकित कीजिए तथा उनका नाम अपनी उत्तर पुस्तिका पर भी लिखिए—

Set (GBG)— (अ) सारनाथ।
(ब) हस्तिनापुर।
(स) इलाहाबाद।
(द) इन्द्रप्रस्थ।

उत्तर— (अ) **सारनाथ**—उत्तर प्रदेश में वाराणसी के निकट।
(ब) **हस्तिनापुर**—उत्तर प्रदेश में मेरठ के निकट।
(स) **इलाहाबाद**—उत्तर प्रदेश में गंगा-यमुना के संगम पर स्थित।
(द) **इन्द्रप्रस्थ**—दिल्ली भारत की राजधानी के निकट।

Set (FBF)— (अ) मौर्य साम्राज्य की राजधानी।
(ब) वह स्थान जहाँ भगवान राम का जन्म हुआ।
(स) वह स्थान जहाँ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन हुआ।
(द) वह स्थान जहाँ महात्मा गांधी का जन्म हुआ।

उत्तर— (अ) **पाटलिपुत्र**—अब पटना हैं, बिहार प्रदेश की राजधानी है।
(ब) **अयोध्या**—उत्तर प्रदेश फैजाबाद में।
(स) **बम्बई**—महाराष्ट्र राज्य में भारत के पश्चिम तट का बन्दरगाह।
(द) **पोरबन्दर**—काठियावाड़ (गुजरात राज्य) के समीप।

Set (HBH)— (अ) वह नगर जहाँ तानसेन का जन्म हुआ।
(ब) वह स्थान जहाँ चन्द्रशेखर आजाद ने अपने को बलिदान किया।
(स) वह स्थान जहाँ 'दशावतार' का मन्दिर स्थित है।
(द) वह स्थान जहाँ महात्मा गौतम बुद्ध ने निर्वाण प्राप्त किया।

उत्तर— (अ) **बेहट**—मध्य प्रदेश में ग्वालियर के निकट।
(ब) **इलाहाबाद**—उत्तर प्रदेश में गंगा-यमुना के संगम पर स्थित।
(स) **देवगढ़ (झाँसी)**—उत्तर प्रदेश झाँसी जिले में।
(द) **बोध गया**—बिहार राज्य का एक धार्मिक स्थल।

Set (IBI)— (अ) वह स्थान जहाँ गौतम बुद्ध को निर्वाण प्राप्त हुआ था।
(ब) वह स्थान जहाँ सूर्य मन्दिर स्थित है।
(स) वह नगर जहाँ चोल राजाओं ने विशाल शिव मन्दिर का निर्माण कराया था।
(द) वह नगर जहाँ जलियाँवाला बाग का हत्याकाण्ड हुआ था।

उत्तर— (अ) **बोध गया**—बिहार राज्य में।
(ब) **कोणार्क**—उड़ीसा राज्य के जगन्नाथ पुरी के पूर्व में समुद्र तट पर स्थित।
(स) **तन्जौर**—तमिलनाडु राज्य के दक्षिण-पूर्व में।
(द) **अमृतसर**—पंजाब राज्य में।

प्रश्न 4—प्रथम प्रश्न-पत्र 1990 का मानचित्र

प्रथम प्रश्न-पत्र 1991

प्रश्न 5—भारत के संलग्न मानचित्र में निम्न घटनाओं से सम्बन्धित स्थानों का अंकित कीजिए तथा उनका नाम अपनी उत्तर-पुस्तिका में भी लिखिए—

Set (HHI.)—
(अ) वह स्थान जहाँ गौतम बुद्ध ने ज्ञान प्राप्त किया।
(ब) उस स्थान का नाम जहाँ जलियाँवाला बाग हत्या काण्ड हुआ।
(स) वह स्थान जहाँ चन्द्रशेखर आजाद ने अपना बलिदान दिया।
(द) वह स्थान जहाँ भगवान राम का जन्म हुआ।

उत्तर—
(अ) **गया**—बिहार राज्य में पटना के दक्षिण-पश्चिम में स्थित है।
(ब) **अमृतसर**—पंजाब राज्य का प्रसिद्ध नगर है जो पाकिस्तान तथा पंजाब राज्य की सीमा पर स्थित है।
(स) **इलाहाबाद**—उत्तर प्रदेश का एक प्रसिद्ध नगर है जो गंगा-यमुना के संगम पर स्थित है।
(द) **अयोध्या**—उत्तर प्रदेश के फ़ैजाबाद में सरयू नदी के तट पर स्थित है।

Set (HHK)—
(अ) दिल्ली।
(ब) कुरुक्षेत्र।
(स) आगरा।
(द) सारनाथ।

उत्तर—
(अ) **दिल्ली**—भारत देश की राजधानी।
(ब) **कुरुक्षेत्र**—हरियाणा राज्य (दिल्ली के उत्तर-पूर्व में स्थित है)।
(स) **आगरा**—उत्तर प्रदेश का प्रसिद्ध नगर है जो यमुना तट पर स्थित हैं।
(द) **सारनाथ**—उत्तर प्रदेश के प्रसिद्ध नगर वाराणसी के निकट स्थित है।

Set (HHN)—
(अ) गया।
(ब) आगरा।
(स) वाराणसी।
(द) दिल्ली।

उत्तर—
(अ) **गया**—बिहार राज्य में पटना के दक्षिण-पश्चिम में स्थित है।
(ब) **आगरा**—उत्तर प्रदेश का प्रसिद्ध नगर है जो यमुना तट पर स्थित है।
(स) **वाराणसी**—उत्तर प्रदेश का प्रसिद्ध नगर है जो गंगा के तट पर स्थित है।
(द) **दिल्ली**—भारत देश की राजधानी।

Set (HHM)— (अ) सारनाथ ।
(ब) गया ।
(स) अजमेर ।
(द) अमृतसर ।

उत्तर— (अ) **सारनाथ**—उत्तरप्रदेश के जनपद वाराणसी के निकट स्थित है ।
(ब) **गया**—बिहार राज्य की राजधानी पटना के दक्षिण-पश्चिम में स्थित है ।
(स) **अजमेर**—राजस्थान में प्रसिद्ध नगर है जो मुसलमानों का धार्मिक स्थान है ।
(द) **अमृतसर**—पंजाब राज्य में पाकिस्तान तथा पंजाब की सीमा पर स्थित है ।
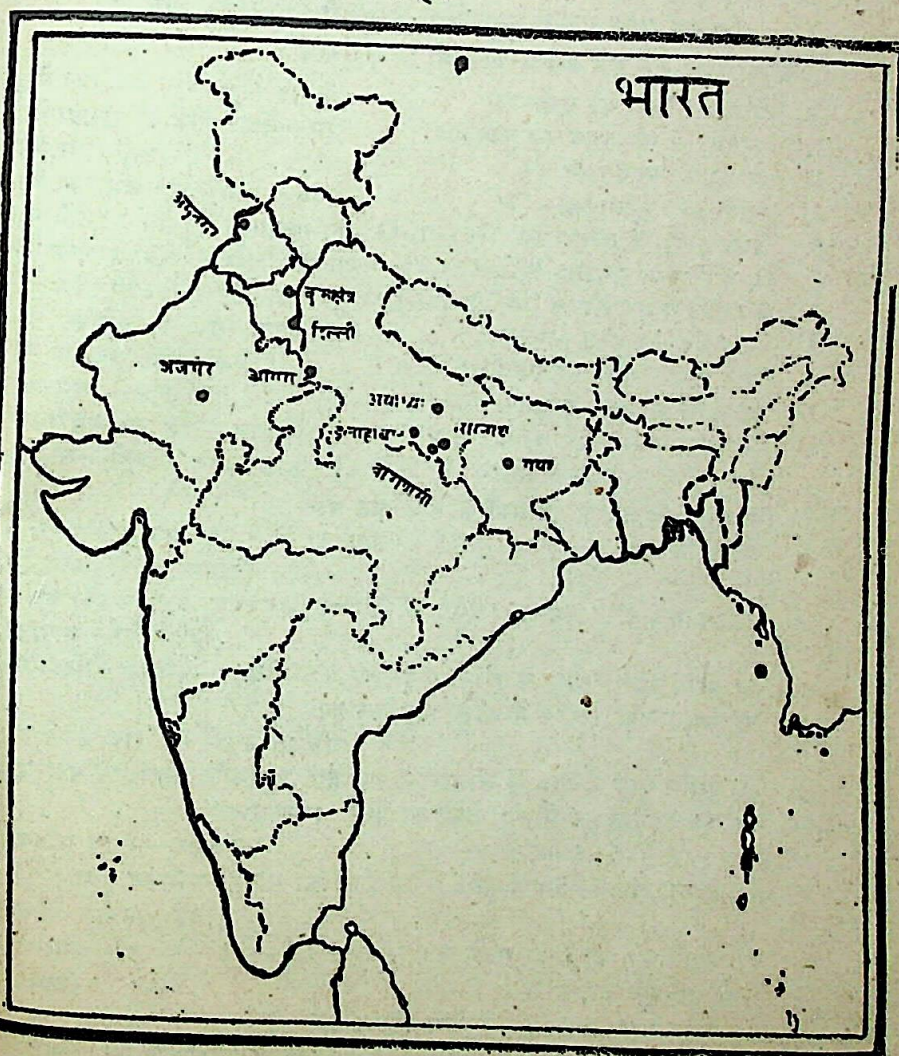
प्रश्न 5—प्रथम प्रश्न-पत्र 1991 का मानचित्र

द्वितीय प्रश्न-पत्र के मानचित्र सम्बन्धी प्रश्न निम्न बातों पर पूछे जा सकते हैं—

1. विश्व के प्रमुख नगर, पत्तन और देशों की राजधानी।
2. विश्व के प्रमुख रेलमार्ग, वायुमार्ग एवं जलमार्ग और उनके प्रमुख नगर।
3. संयुक्त राष्ट्र संघ की शाखाओं एवं संस्थाओं के प्रधान कार्यालय।
4. विश्व के प्रमुख सागर, खाड़ियाँ, झीलें, नहरें एवं द्वीप।
5. विश्व की प्रमुख ऐतिहासिक घटनाओं के स्थान।
6. विश्व की प्रमुख नदियाँ एवं पर्वत।
7. विश्व की प्रमुख फसलें, घास के मैदान तथा मरुस्थल।
8. विश्व के प्रमुख जलवायु अथवा वनस्पति प्रदेश।
9. विश्व के प्रमुख खनिज पदार्थों के क्षेत्र।

द्वितीय प्रश्न पत्र के मानचित्र सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण प्रश्न

(क) संयुक्त राष्ट्र संघ एवं उसकी शाखाओं के मुख्यालय

1. संयुक्त राष्ट्र संघ का मुख्यालय (न्यूयार्क—सं० रा० अमेरिका में)
2. अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय का मुख्यालय (हेग—नीदर लैण्ड की राजधानी)
3. यूनेस्को का मुख्य कार्यालय (पेरिस, फ्रान्स में)
4. यूनीसेफ का मुख्यालय (न्यूयार्क—सं० रा० अमेरिका में)
5. विश्व कृषि एवं खाद्य संगठन (F. A. O.) का मुख्यालय (रोम—इटली में)
6. विश्व स्वास्थ्य संगठन (W.H.O.) का मुख्यालय (जेनेवा—स्विटजरलैण्ड में)
7. अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (आई.एल.ओ.) का मुख्यालय (जेनेवा–स्विटजरलैण्ड में)
8. विश्व बैंक का मुख्य कार्यालय (वाशिंगटन—सं० रा० अमेरिका में)
9. विश्व डाक संगठन का कार्यालय (जेनेवा—स्विटजरलैण्ड में)
10. अन्तर्राष्ट्रीय जन उड्डयन का कार्यालय (मांट्रियाल—कनाडा)
11. अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष का कार्यालय (वाशिंगटन—सं० रा० अमेरिका)
12. भारत में विश्व स्वास्थ्य संगठन (W.H.O.) का कार्यालय (नई दिल्ली—भारत)

(ख) विश्व के ऐतिहासिक घटनाओं से सम्बन्धित प्रश्न

1. वह स्थान जहाँ 9 अगस्त, 1945 को अमेरिका ने परमाणु बम्ब गिराया था—
(नागासाकी—जापान में)
2. वह स्थान जहाँ 6 अगस्त, 1945 को अमेरिका ने परमाणु बम्ब गिराया था—
(हिरोशिमा—जापान)
3. वह स्थान जहाँ 1986 ,में एशियाड खेल हुए थे। (सीओल—दक्षिणी कोरिया में)
4. वह स्थान जहाँ 1984 में ओलम्पिक खेल हुए।
(लास ऐन्जिल—सं० रा० अमेरिका)
5. वह स्थान जहाँ 1988 में ओलम्पिक खेल हुए (सीओल—दक्षिणी कोरिया)
6. वह स्थान जहाँ गुट निरपेक्ष देशो का प्रथम सम्मेलन हुआ।
(वेलग्रेड—यूगोस्लाविया)
7. वह स्थान जहाँ 1983 में गुट-निरपेक्ष देशों का सातवाँ सम्मेलन हुआ।
(नई दिल्ली—भारत)
8. वह स्थान जो विश्व का सबसे बड़ा पत्तन है। (न्यूयार्क—सं० रा० अमेरिका)
9. उगते हुए सूर्य का देश। (जापान)
10. वह नगर जहाँ हमेशा बसन्त जैसा मौसम रहता है—
(क्वेटो—इक्वेडोर की राजधानी)

(ग) विश्व के प्रमुख पर्वत

1. राकी (उत्तरी अमेरिका के पश्चिमी किनारे पर)
2. एण्डीज (दक्षिणी अमेरिका के पश्चिमी किनारे पर)
3. आल्पस (यूरोप के दक्षिण में)
4. एटलस (अफ्रीका के उत्तर में)
5. हिमालय (भारत के उत्तर-पूर्व में)
6. ड्रेकिन्स बर्ग (अफ्रीका के दक्षिण में)
7. यूराल (यूरोप में, यूरोप एशिया की सीमा पृथक् करते हुए)
8. अल्टाई (एशिया)

(घ) विश्व की प्रमुख नदियाँ व झीलें

1. अमेजन (दक्षिणी अमेरिका)
2. मिसीसिपी (उत्तरी अमेरिका)
3. सैंटलारेंस (उत्तरी अमेरिका)
4. कांगो (अफ्रीका)
5. नील (अफ्रीका)
6. ह्वांगो (चीन)
7. यांगिटीसीक्यांग (चीन)
8. गंगा (भारत)
9. ब्रह्मपुत्र (तिब्बत-भारत)
10. सिन्धु (पाकिस्तान)
11. कावेरी (भारत)
12. नर्वदा (भारत)
13. वोल्गा (रूस)
14. मरे-डार्लिंग (आस्ट्रेलिया)
15. सुपीरियर झील (उत्तरी अमेरिका)
16. ह्यूरन झील (उत्तरी अमेरिका)
17. टीटी काका टीटीकाका (दक्षिणी अमेरिका)
18. विक्टोरिया (अफ्रीका)
19. वृहद झील (उत्तरी अमेरिका)
20. वूलर झील (कश्मीर)
21. बेकाल झील तथा बालकश झील (मध्य एशिया)

(ङ) विश्व की प्रमुख नहरें—

1. पनामा नहर (अटलांटिक और प्रशान्त महासागर को जोड़ती हैं)
2. स्वेज नहर (लाल सागर और भूमध्य सागर को जोड़ती हैं)
3. कील नहर (उत्तरी सागर और बाल्टिक सागर को जोड़ती हैं)

(च) प्रमुख सागर—

1. लाल सागर (एशिया में हिन्द महासागर और भूमध्य सागर को जोड़ता हुआ)
2. अरब सागर (भारत के पश्चिम में)
3. भूमध्य सागर (यूरोप में—अफ्रीका के उत्तर में)

4. कैस्पीयन सागर (यूरोप में भूमध्य सागर के उत्तर में)
5. अरल सागर (यूरेशिया में)
6. काला सागर (टर्की के उत्तर-पश्चिम में)
7. हिन्द महासागर (भारत के दक्षिण में)
8. वाल्टिक सागर (यूरोप में)

(छ) विश्व के प्रमुख मरुस्थल—
1. सहारा (अफ्रीका के उत्तर-पश्चिम में)
2. कालाहारी (अफ्रीका के दक्षिण-पश्चिम में)
3. अटाकामा (दक्षिणी अमेरिका-चिली राज्य)
4. गोभी का मरुस्थल (एशिया में)

(ज) विश्व के प्रमुख जलवायु के प्रदेश—
1. भूमध्य सागरीय प्रदेश (फ्रान्स, इटली, यूनान, कैलोफोर्निया की घाटी, केप प्रान्त, आस्ट्रेलिया का दक्षिणी भाग)
2. भूमध्य रेखीय प्रदेश (अमेजन वेसिन, काँगो वेसिन, गिनी तट, पूर्वीद्वीप समूह)
3. मानसूनी जलवायु के प्रदेश (भारत, चीन, जापान, उत्तरी अमेरिका का दक्षिणी-पश्चिमी मध्यभाग)
4. टुण्ड्रा प्रदेश (कनाडा का उत्तरी भाग, रूस का उत्तरी भाग, नार्वे, स्वीडन का उत्तरी भाग, ग्रीन लैण्ड)
5. टैगा प्रदेश (कनाडा का मध्य भाग, साइबेरिया का उत्तरी भाग)

(झ) विश्व के प्रमुख नगर तथा बन्दरगाह—
1. न्यूयार्क (सं० रा अमेरिका)
2. शिकागो (सं० रा० अमेरिका)
3. वाशिंगटन (सं० रा० अमेरिका)
4. हालीवुड (सं० रा० अमेरिका)
5 लासएँजिल (संयुक्त राज्य अमेरिका)
6. सैनफ्रान्सिस्को (सं० रा० अमेरिका)
7. विनीयेग (कनाडा)
8. न्यूआर लिट्ंज (सं० रा० अमेरिका)
9. वैंकूवर (कनाडा)
10. मांट्रियाल (कनाडा)
11. पारा (दक्षिणी अमेरिका)
12. ब्यूनिस आय (दक्षिणी अमेरिका)
13. लन्दन (ब्रिटिश द्वीप)
14. पेरिस (फ्रान्स)
15. रोम (इटली)
16. मास्को (सोवियत संघ)
17. लेलिनग्राद (,, ,,)
18. जिब्राल्टर (स्पेन)
19. केपटाऊन (अफ्रीका)
20. काहिरा (अफ्रीका)
21. अदन (सऊदी अरब)

22. बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, कानपुर, नई दिल्ली, अमृतसर इलाहाबाद, लखनऊ, कोचीन, विशाखापट्टनम्, कांधला } (भारत)

(ञ) विश्व के प्रमुख रेल मार्ग—

1. ट्रान्स साइबेरियन रेल मार्ग (सोवियत संघ में व्लाडीवोस्टक से—लेलिनग्राद तक)
2. कनैडियन पैस्फिक रेल मार्ग (कनाडा में मांट्रियल से—वैन्कूवर तक)
3. कनैडियन नेशनल रेल मार्ग (कनाडा में, हैलीफोक्स से—प्रिन्स रुबर्ट तक)
4. ट्रान्स एण्डीज रेलमार्ग (ब्यूनस आयर्स से—वालपरेजों तक)

(ट) विश्व के प्रमुख जल मार्ग—

1. बम्बई से लन्दन तक (बम्बई—अदन—स्वेज, जिब्राल्टर—लन्दन)
2. न्युयार्क से सिडनी (स्वेज नहर द्वारा कोलम्बो होते हुए)
3. कलकत्ता से टोकियो (कलकत्ता—सिंगापुर—संघाई—हांगकांग—टोकियो)

(ठ) विश्व के प्रमुख वायु मार्ग—

1. बम्बई से लन्दन (बम्बई—बसरा—काहिरा—रोम—पेरिस—लन्दन)
2. मास्को से पर्थ (मास्को—दिल्ली—कलकत्ता—सिंगापुर—सिडनी)
3. लन्दन से सिडनी (लन्दन—पेरिस—रोम—कहिरा—कोलम्बो—सिडनी)
4. बम्बई से टोकियो (बम्बई—कलकत्ता—सिंगापुर—हाँगकाँग—टोकियो)

(ड) विश्व की प्रमुख कृषि उपज क्षेत्र—

1. कपास (संयुक्त राज्य अमेरिका, मिश्र)
2. गेहूँ (भारत, पाकिस्तान, रूस, कनाडा, आस्ट्रेलिया)
3. चावल (चीन, भारत, जापान, पूर्वीद्वीप, हिन्द चीन)
4. चाय (भारत, चीन, श्री लंका)
5. रबड़ (मलाया, ब्राजील)
6. गन्ना (भारत, जावा)
7. कहवा (ब्राजील, सऊदी अरब)

(ढ) विश्व के प्रमुख खनिज पदार्थ—

1. कोयला (1) सार की खानें (पश्चिमी जर्मनी), (2) सं०रा० अमेरिका
2. लोहा (1) लारेंस की खान (फ्रान्स), (2) उत्तरी अमेरिका का एप्लिचियन प्रदेश
3. हीरा किम्बरले—दक्षिणी अफीका में
4. सोना (1) जोहन्स वर्ग (दक्षिणी अफ्रीका), (2) कालगूर्ली कूलमार्गी (आस्ट्रेलिया)

(ण) भारत के रेल मण्डल

1. उत्तरी रेलवे का मुख्यालय—नई दिल्ली।
2. दक्षिण रेलवे का मुख्यालय—मद्रास।
3. मध्य रेलवे का मुख्यालय—बम्बई।
4. उत्तरी-पूर्वी रेलवे का मुख्यालय—कलकत्ता।

द्वितीय प्रश्न पत्र 1987

प्रश्न 1—विश्व के मानचित्र में निम्नांकित को अंकित कीजिए—

Set D (अ) उत्तर रेलवे का मुख्यालय।
(ब) पनामा तथा स्वेज नहर।
(स) एफ० ए० ओ० का प्रधान कार्यालय।
(द) अमेजन तथा लाल सागर।

उत्तर— (अ) नई दिल्ली (भारत)
(ब) पनामा—अटलांटिक तथा प्रशान्त महासागर को जोड़ती हुई।
स्वेज—लाल सागर तथा भूमध्य सागर को जोड़ती हुई।
(स) रोम (इटली)।
(द) अमेजन (दक्षिण अमेरिका)।
लाल सागर—हिन्द महासागर तथा भूमध्य सागर को जोड़ता हुआ सऊदी अरब तथा पूर्वी अफ्रीका के बीच में।

Set RKC – (अ) टुण्ड्रा प्रदेश।
(ब) कनेडियन नेशनल रेल मार्ग।
(स) सेन्टलारेंस नदी।
(द) मद्रास तथा टोकियो नगर।

उत्तर— (अ) टुण्ड्रा प्रदेश—कनाडा, नार्वे-स्वीडन, सोवियत संघ का धुर उत्तरी भाग।
(ब) क्यूबेक से मांट्रियाल तक (कनेडियन नेशनल रेल मार्ग)।
(स) सेन्टलारेंस नदी—(उत्तरी अमेरिका में)।
(द) मद्रास (भारत), टोकियो (जापान)।

Set (CPJ) (अ) (i) इलाहाबाद, (ii) गंगा नदी।
(ब) (i) वृहद झीलें, (ii) शिकागो।
(स) हिन्द महासागर तथा स्वेज नहर।
(द) यूनेस्को का कार्यालय।

उत्तर— (अ) (i) इलाहाबाद (भारत), (ii) गंगानदी (भारत)
(ब) (i) वृहद झीलें (उत्तरी अमेरिका)
(ii) शिकागो (सं० रा० अमेरिका)।
(स) (i) हिन्द महासागर—भारत के दक्षिण में।
(ii) स्वेज नहर—लाल सागर तथा भू-मध्य सागर को जोड़ती हुई।
(द) पेरिस (फ्रान्स)।

Set (JCP) (अ) ट्रान्स साइबेरियन रेल मार्ग।
(ब) शिकागो।
(स) भारत में काली मिट्टी का क्षेत्र।
(द) सिन्धु नदी।

उत्तर— (अ) ट्रान्स साइबेरियन रेल मार्ग—ब्लाडीवोस्टक से—मास्को—लेलिनग्राद।

(ब) शिकागो (सं० रा० अमेरिका का नगर)।

(स) भारत में काली मिट्टी, महाराष्ट्र, गुजरात, मध्य प्रदेश।

(द) सिन्धु नदी—हिमालय की मानसरोवर झील से निकलती हुई, जम्मू—कश्मीर—पाकिस्तान में बहती हुई अरब सागर में गिरती है।
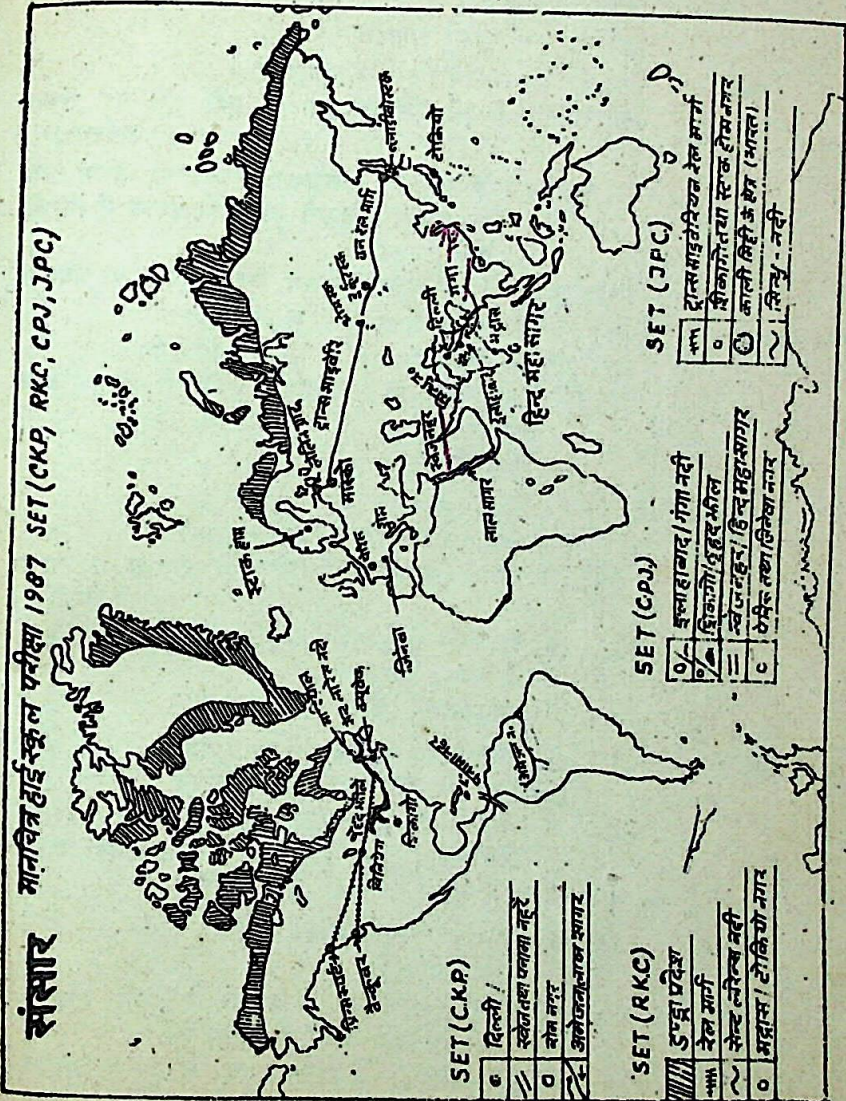
द्वितीय प्रश्न पत्र 1988

प्रश्न 2—दिये गये विश्व के मानचित्र में निम्नांकित को अंकित कीजिये—

Set (BB)

(क) कनैडियन पैसफिक रेल मार्ग ।
(ख) ब्यूनिस आयर्स तथा सिंगापुर नगर ।
(ग) ब्रह्मपुत्र नदी ।
(घ) भारत में चावल उत्पादन क्षेत्र ।

उत्तर—
(क) वैन्कूवर—विनीपेग—से मांट्रियाल ।
(ख) ब्यूनिस आयर्स (अर्जेनटाइना के पूर्वी तट पर स्थित बन्दरगाह) ।
(ग) ब्रह्मपुत्र—हिमालय से निकलकर अरुणांचल, असम तथा प० बंगाल में बढ़ती हुई खाड़ी बंगाल में गिरती है ।
(घ) चावल—असम, पश्चिमी बंगाल, बिहार, पूर्वी उत्तर प्रदेश ।

Set (OO)

(क) (i) यूनेस्को का कार्यालय, (ii) कोचीन ।
(ख) (i) यांगटीसीक्यांग नदी, (ii) एटलस पर्वत ।
(ग) (i) वह स्थान जहाँ 6 अगस्त, 1945 को परमाणु बम्ब गिराया गया ।
(ii) अरब सागर ।

उत्तर—
(क) (i) पेरिस (फ्रान्स),
(ii) कोचीन (भारत के पश्चिमी तट पर) ।
(ख) (i) यांगटीसीक्यांग नदी (चीन में प्रशान्त महासागर में गिरती) ।
(ii) एटलस—(अफ्रीका के उत्तरी पश्चिमी भाग में) ।
(ग) (i) हिरोशिमा (जापान),
(ii) अरब सागर (भारत के पश्चिम में) ।

Set (QQ)

(क) (i) अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन का कार्यालय,
(ii) खाद्य एवं कृषि संगठन का कार्यालय ।
(ख) नील नदी तथा अरब सागर ।
(ग) (i) कील नहर, (ii) विश्व का सबसे बड़ा पत्तन ।
(घ) भारत में उत्तरी रेलवे का मुख्य कार्यालय ।

उत्तर—
(क) (i) जिनेवा (स्विट्जरलैण्ड),
(ii) रोम (इटली) ।
(ख) (i) नील—अफ्रीका के मिश्र देश में होकर बहती हुई भू-मध्य सागर में गिरती है ।
(ii) अरल सागर—कैस्पीयन सागर के पूर्व में (सोवियत संघ) ।
(ग) (i) कील नहर—जर्मनी के उत्तरी भाग में,
(ii) न्यूयार्क ।
(घ) नई दिल्ली ।

Set (SS)

(क) कनैडियन पैसफिक रेल मार्ग,

(ख) टोकियो तथा शिकागो ,

(ग) नर्वदा नदी ।

(घ) भारत के प्रमुख गेहूँ उत्पादक क्षेत्र ।

उत्तर— (क) कनाडा में वैन्कूवर से मांट्रियाल तक ।

(ख) टोकियो (जापान), शिकागो (सं० रा० अमेरिका) ।

(ग) नर्वदा नदी (भारत) ।

(घ) भारत के गेहूँ के उत्पादन क्षेत्र—पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश ।
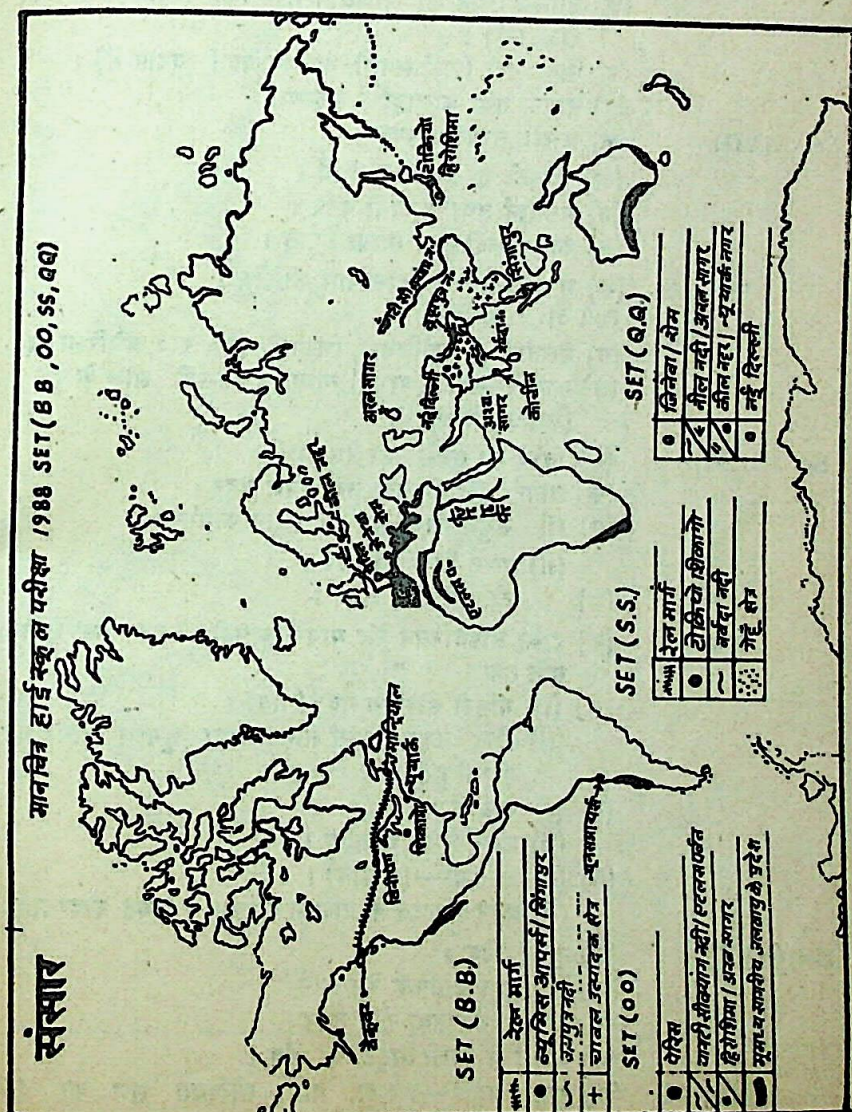
द्वितीय प्रश्न-पत्र 1989

प्रश्न 3—निम्नांकित को विश्व के मानचित्र में अंकित कीजिए—

Set (IDA)— (क) मिश्र तथा ब्राजील,
(ख) बीजिंग तथा मास्को नगर।
(ग) सिन्धु नदी तथा आल्पस पर्वत।
(न) अफ्रीका महाद्वीप में उष्ण मरुस्थल।

उत्तर— (क) मिश्र (अफ्रीका), ब्राजील (दक्षिणी अमेरिका)।
(ख) बीजिंग (चीन की राजधानी), मास्को (सोवियत संघ की राजधानी)।
(ग) सिन्धु नदी (पाकिस्तान), आल्पस पवर्त (यूरोप में)।
(घ) सहारा तथा कालाहारी मरुस्थल।

Set (ALD)— (क) भूमध्य सागरीय प्रदेश।
(ख) यूनेस्को का प्रधान कर्यालय।
(ग) मेलबोर्न तथा शिकागो नगर।
(घ) कावेरी नदी तथा न्याग्रा प्रपात।

उत्तर— (क) भूमध्य सागर के आस-पास का क्षेत्र।
(ख) पेरिस (फ्रान्स)
(ग) मेलबोर्न (आस्ट्रेलिया), शिकागो (सं० रा० अमेरिका)।
(घ) कावेरी नदी (भारत) न्याग्रा प्रपात-ईरी झील के पूर्व में (उत्तरी अमेरिका)।

Set (RAM)— (क) विश्व का सबसे बड़ा रेल मार्ग।
(ख) यांगटी सीक्यांग नदी तथा स्वेज नहर।
(ग) (i) संयुक्त राष्ट्र संघ का प्रधान कार्यालय।
(ii) आस्ट्रेलिया महाद्वीप।
(घ) टोकियो तथा अदन।

उत्तर— (क) ट्रान्स साइबेरियन रेल मार्ग—ब्लाडी वोस्टक से—लेनिन ग्राद तक।
ख) (i) यांगटी सीक्यांग नदी (चीन)।
(ii) स्वेज नहर (लाल सागर तथा भूमध्य सागर को जोड़ती हुई)।
(ग) (i) न्यूयार्क।
(ii) आस्ट्रेलिया महाद्वीप।
(घ) (i) टोकियो—(जापान)।
(ii) अदन—अरब के दक्षिणी पश्चिम में स्थित बन्दरगाह।

Set (RKC)— (क) टुण्ड्रा प्रदेश।
(ख) कनेडियन पैसफिक रेल मार्ग।
(ग) यूराल पर्वत तथा रोम नगर।
(घ) भारत में काली मिट्टी का क्षेत्र।

उत्तर— (क) टुन्ड्रा प्रदेश—कनाडा, नार्वे, सोवियत संघ का धुर उत्तरी भाग।

(ख) कनाडा में वैन्कूवर से—विनीपेग—मॉन्ट्रियाल तक।

(ग) (1) यूराल पर्वत—सोवियत संघ के पूर्व में।
(2) रोम (इटली)।

(घ) भारत में काली मिट्टी के क्षेत्र—महाराष्ट्र, गुजरात, मध्य प्रदेश,
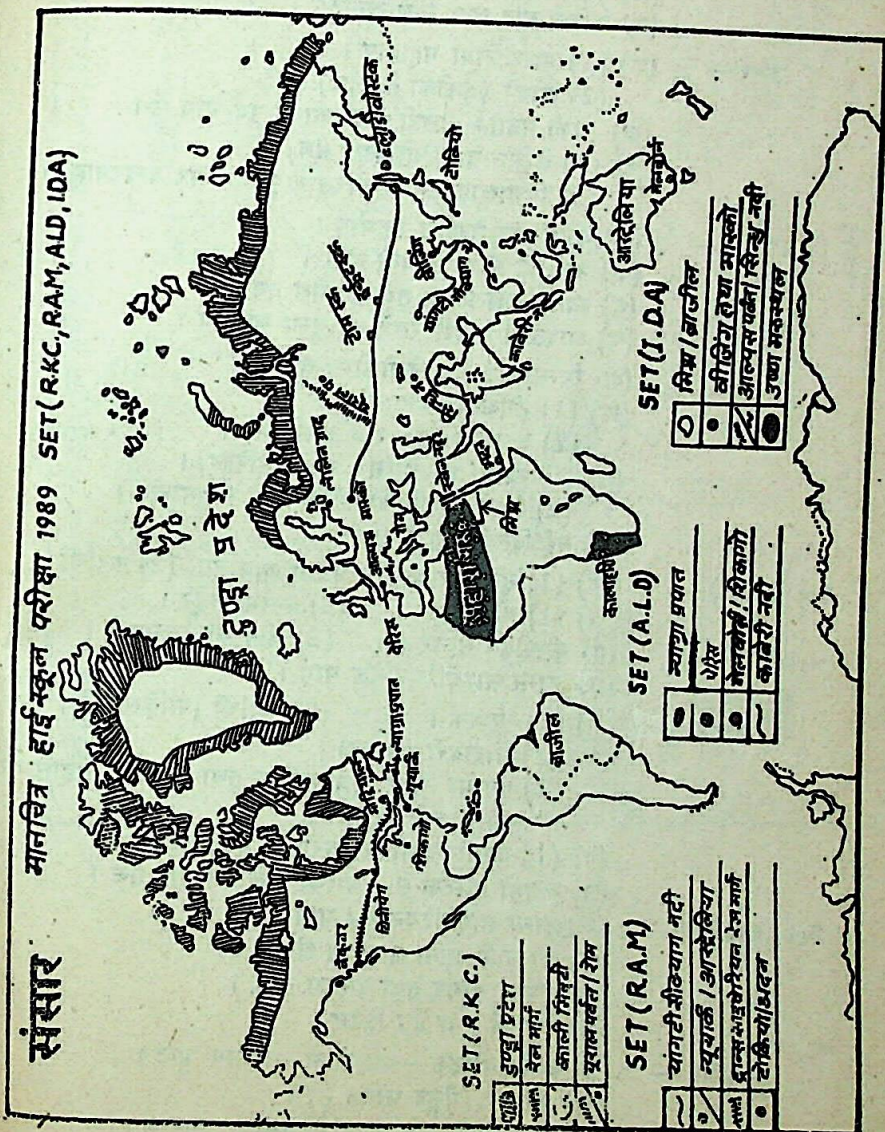
द्वितीय प्रश्न-पत्र 1990

प्रश्न 4—निम्नांकित को विश्व के मानचित्र में दर्शाइये—

Set (JCJ)— (क) आस्ट्रेलिया तथा जायरे (नाम लिखकर)।
(ख) राकी पर्वत।
(ग) लेलिन ग्राद तथा विशाखापट्टम।

उत्तर— (क) (1) आस्ट्रेलिया महाद्वीप।
(2) जायरे (अफ्रीका का देश)।
(ख) राकी पर्वत—उत्तरी अमेरिका के पूर्व भाग में।
(ग) (1) लेलिन ग्राद (सोवियत संघ)।
(2) विशाखापट्टनम (भारत के पूर्वीतट पर बन्दरगाह)।

Set (KCK)— (क) कनाडियन नेशनल रेलमार्ग।
(ख) टोकियो तथा शिकागो नगर।
(ग) न्याग्रा जल प्रपात तथा सियोल नगर।
(घ) भारत में उत्तरी रेलवे का मुख्य कर्यालय।

उत्तर— (क) प्रिन्सरूवर्ट से—हैलीफोम्स तक
(ख) (1) टोकियो (जापान)।
(2) शिकागो (सं० रा० अमेरिका)।
(ग) (1) न्याग्रा प्रपात (सं० रा० अमेरिका)।
(2) सियोल (दक्षिणी कोरिया की राजधानी)।
(घ) नई दिल्ली (भारत)।

Set (LCL)— (क) (1) संयुक्त राष्ट्र संघ प्रधान कार्यालय, (2) करांची।
(ख) (1) गोदावरी। (2) पनामा नहर।
(ग) कैस्पीयन सागर। (2) चीन की राजधानी।
(घ) ट्रान्स साइवेरियन रेल मार्ग।

उत्तर— (क) (1) न्यूयार्क। (2) करांची (पाकिस्तान)।
(ख) (1) गोदावरी (भारत)।
(2) पनामा नहर (अटलांटिक तथा प्रशान्त महासागर को जोड़ती है)।
(ग) (1) कैस्पीयन सागर (यूरोप)। (2) बीजिंग।
(घ) ब्लाडी व्रोस्टक से—मास्को— लेलिन ग्राद तक।

Set (MCM)— (क) ट्रान्स साइबेरियन रेल मार्ग।
(ख) भारत में सोना उत्पादन क्षेत्र।
(ग) भूमध्य सागर तथा पनामा नहर।
(घ) न्यूयार्क तथा ग्रेट ब्रिटेन।

उत्तर— (क) ब्लाडीवोस्टक—मास्को से—लेलिन ग्राद।
(ख) कोलार (मैसूर भारत में)।
(ग) (1) अफ्रीका के उत्तर में भूमध्य सागर है।
(2) पनामा नहर—अटलांटिक तथा प्रशान्त महासागर को जोड़ती हुई।
(घ) न्यूयार्क (सं० रा० अमेरिका)।
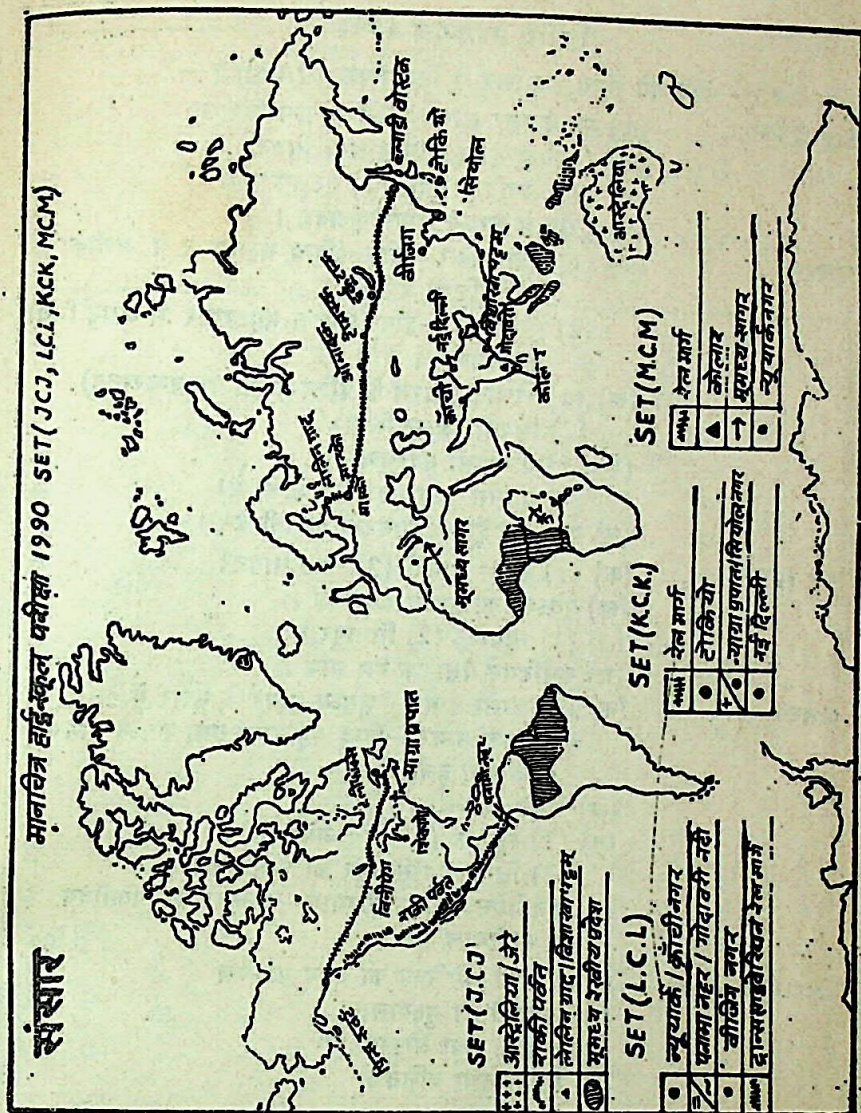
द्वितीय प्रश्न-पत्र 1991

प्रश्न 5—दिये गये विश्व मानचित्र में निम्नांकित को दर्शाइए—

Set (FFH)— (क) मेडागास्कर और न्यूजीलैण्ड नाम लिखकर
(ख) O चिह्न द्वारा कोचीन तथा सिडनी
(ग) (1) यांगटिसी नदी, (2) एटलस पर्वत
(घ) यूरोप में भूमध्य सागरीय प्रदेश।

उत्तर— (क) (1) मेडागास्कर—द्वीप (हिन्द महासागर में अफ्रीका के पूर्वी दक्षिणी ओर।)
(2) न्यूजीलैण्ड—द्वीप (प्रशान्त महासागर में आस्ट्रेलिया के दक्षिण-पूर्व में।)
(ख) (1) कोचीन (भारत के पश्चिमी तट पर बन्दरगाह)
(2) सिडनी (आस्ट्रेलिया)
(ग) (1) यांगटिसी नदी (चीन)
(2) एटलस पर्वत (उत्तरी अफ्रीका में)
(घ) यूरोप के भूमध्य सागरीय तटवर्ती देश।

Set (FFI)— (क) (1) काला सागर, (2) लाल सागर।
(ख) यूनेस्को का प्रधान कार्यालय।
(ग) (1) न्यूयार्क, (2) सिंगापुर।
(घ) कनैडियन पैसफिक रेल मार्ग।

उत्तर— (क) (1) काला सागर—भूमध्य सागर के उत्तर में।
(2) लाल सागर—हिन्द महासागर तथा भूमध्य सागर को जोड़ता हुआ।
(ख) पेरिस (फ्रान्स)।
(ग) (1) न्यूयार्क (सं० रा० अमेरिका)।
(2) सिंगापुर (सिंगापुर की राजधानी)।
(घ) कनैडियन पैसफिक रेलमार्ग—बैन्कूवर से—विनीवेग से मांट्रियाल तक।

Set (FFG)— (क) दक्षिणी अमेरिका का उष्ण मरुस्थल
(ख) यूनेस्को का मुख्यालय
(ग) अमेजन तथा आल्पस
(घ) मद्रास तथा बर्लिन।

उत्तर— (क) आटाकामा
(ख) पेरिस
(ग) (1) अमेजन (दक्षिणी अमेरिका में)
(2) आल्पस पर्वत (यूरोप)
(घ) (1) मद्रास, (भारत), (2) वर्लिन (जर्मनी की राजधानी)।

Set (FFS)— (क) आस्ट्रेलिया के मानसूनी प्रदेश
(ख) संयुक्त राष्ट्र संघ का मुख्यालय
(ग) सिन्धु नदी तथा ग्रीन लैण्ड
(घ) लखनऊ तथा वाशिंगटन

उत्तर—

(क) आस्ट्रेलिया के उत्तरी पूर्वी भाग की पेटी—मानसूनी जलवायु के क्षेत्रों में।

(ख) न्यूयार्क (संयुक्त राज्य अमेरिका में)

(ग) सिन्धु नदी—(हिमालय से निकलकर जम्मू-कश्मीर में होती हुई पाकिस्तान में बहती हुई अरब सागर में गिरती है)

(घ) (1) लखनऊ (भारत में उत्तर प्रदेश की राजधानी)
(2) वाशिंगटन (सं० रा० अमेरिका)

1992
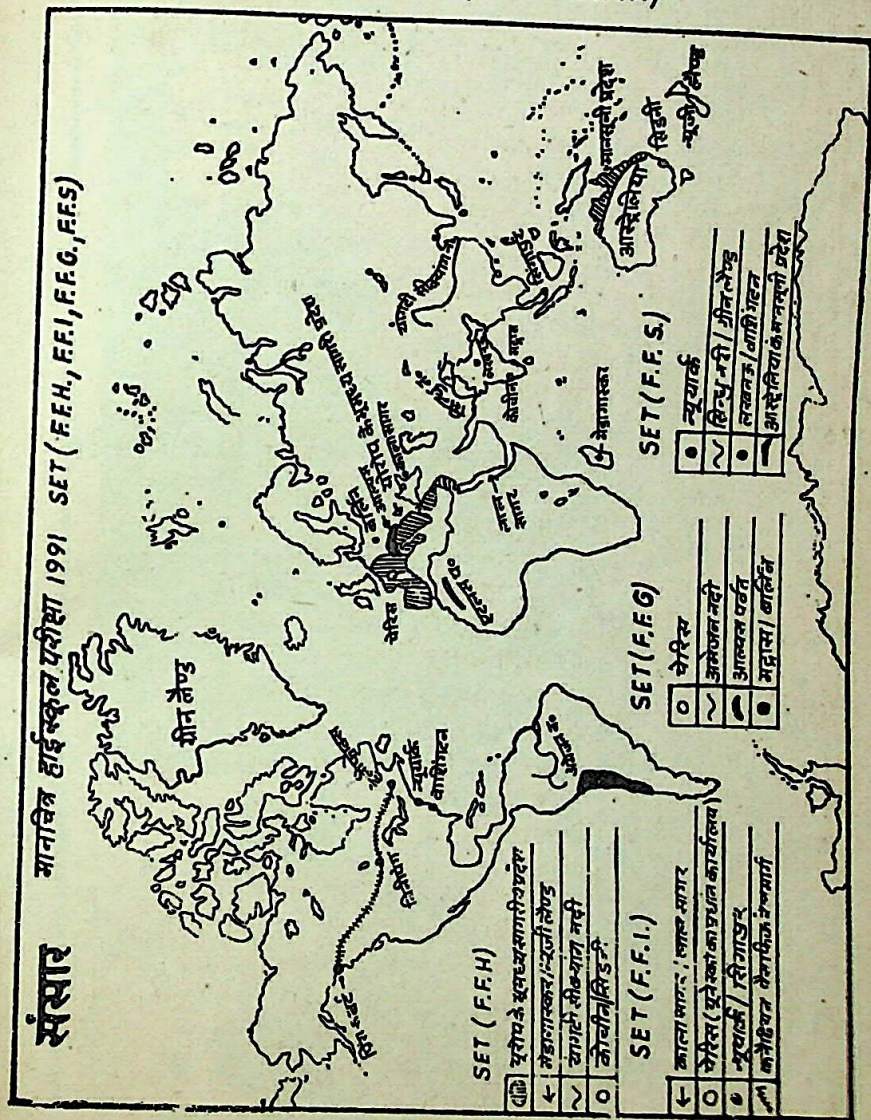
हाई स्कूल सामाजिक विज्ञान

प्रथम प्रश्नपत्र

खण्ड—(अ) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. नव पाषाण काल की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। 5

अथवा

सिन्धु घाटी सभ्यता का वर्णन निम्नलिखित शीर्षकों के अन्तर्गत कीजिए : (1) नगर-योजना, (2) धार्मिक जीवन, आर्थिक दशा। 2+2+1

2. जैनधर्म के प्रवर्तक कौन थे ? जैन धर्म के प्रमुख सिद्धान्तों का वर्णन कीजिए। 2+3

अथवा

पुनर्जागरण के फलस्वरूप यूरोप के सामाजिक, आर्थिक तथा धार्मिक जीवन में क्या परिवर्तन हुए ? 2+2+1

3 भारत के संविधान में उल्लिखित राज्य के नीति-निर्देशक तत्वों का संक्षिप्त उल्लेख कीजिए। 5

अथवा

राष्ट्रीय एवं भावात्मक एकता में सहायक तथा बाधक तत्वों का उल्लेख कीजिए।

खण्ड—ब (लघु उत्तरीय प्रश्न) $2\frac{1}{2}+2\frac{1}{2}$

4. हम्मूराबी कौन था ? उसकी विधि-संहिता के विषय में आप क्या जानते हैं ? 1+1
5. फाहियान कौन था ? उसने भारतीय जन-जीवन के विषय में क्या लिखा है ? 1+1
6. रोम के इतिहास में आगस्टस का नाम क्यों प्रसिद्ध है ? 2
7. बौद्ध धर्म के चार आर्य सत्यों का उल्लेख कीजिए। 2
8. शंकराचार्य कौन थे ? उनके द्वारा स्थापित मठों के नाम लिखिए। 1+1
9. रूसो कौन था ? फ्रांस की क्रान्ति में उसके योगदान का उल्लेख कीजिए। 1+1
10. गन्धार कला से आप क्या समझते है ? इस शैली की मूर्तियों की प्रमुख विशेषताएँ क्या है ! 1+1
11 थियोसोफिकल सोसाइटी की स्थापना किन उद्देश्यों को लेकर की गई थी ? 2
12. पंचशील के पाँच सिद्धान्तों का उल्लेख कीजिए। 2
13. 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का शाब्दिक अर्थ बतलाइए। 2

खण्ड—'स' (अतिलघु उत्तरीय प्रश्न)

14. पाषाण काल के प्रमुख विभाजन क्या है ? 1

15. प्राचीन भारत के 'आदिकाव्य' का नाम लिखिए। 1

16. प्राचीन यूनान के कवि होमर के दो महाकाव्यों के नाम लिखिए। 1

17. सुकरात कौन था ? 1

18. मुहम्मद साहब का जन्म किस नगर में हुआ था ? 1

19. मार्टिन लूथर क्यों प्रसिद्ध है ? 1

20. आजाद हिन्द फौज की स्थापना किसने किया था ? 1

खण्ड—'द' (बहुविकल्पीय प्रश्न)

निर्देश—अधोलिखित प्रत्येक प्रश्न के उत्तर के चार विकल्पों में से केवल एक विकल्प सही है। सही विकल्प को अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखिए।

21. 'मेघदूतम्' के लेखक कौन थे ?
(अ) भारवि, (ब) बाल्मीके, (स) भवभूति, (द) कालिदास। 1

22. ओलम्पिक खेलों का आरम्भ किस देश में हुआ ?
(अ) मिश्र, (ब) मेसोपोटामिया, (स) यूनान, (द) रोम। 1

23. पारसी धर्म के प्रवर्तक कौन थे ?
(अ) ईसा मसीह, (ब) जरथ्रुस्त्र,
(स) मूसा, (द) हजरत मुहम्मद साहब। 1

24. भारत के राष्ट्रगान का रचयिता कौन है ?
(अ) बंकिमचन्द्र चटर्जी, (ब) रवीन्द्रनाथ टेगोर,
(स) मैथिलीशरण गुप्त (द) सरोजिनी नायडू। 1

25. भारत के संलग्न मानचित्र में नीचे लिखी हुई घटनाओं एवं तथ्यों से सम्बन्धित स्थानों को अंकित कीजिए तथा उनके नाम अपनी उत्तर पुस्तिका में भी लिखिए :

(अ) वह स्थान जहाँ गौतम बुद्ध ने ज्ञान प्राप्त किया था।
(ब) वह स्थान जहाँ पर ताजमहल स्थित है।
(स) वह स्थान जहाँ पर पंडित जवाहर लाल नेहरू का जन्म हुआ था। 1
(द) वह नगर जहाँ पर जलियाँ वाला बाग हत्यकाण्ड हुआ था। अथवा 1

दक्षिण पूर्व एशिया में भारतीय संस्कृति के प्रभाव के विजय में एक संक्षिप्त निबन्ध लिखिए। 4

हाईस्कूल सामाजिक विज्ञान 1992 067 (CG)

द्वितीय प्रश्नपत्र

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. विश्व में सवाना प्रदेशों का विवरण निम्नलिखित शीर्षकों में दीजिए :
1+1+1+1+1

(क) स्थिति एवं विस्तार (ख) जलवायु
(ग) प्राकृतिक सम्पदा (घ) कृषि (च) आर्थिक विकास।

2. अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का क्या अर्थ है ? इसकी क्या आवश्यकता है ? भारत के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की प्रधान वस्तुओ का उल्लेख कीजिए।

3. भारत में जनसंख्या के घनत्व का विवरण दीजिए तथा असमान घनत्व के कारण बताइए।
5(2+3)

लघु उत्तरीय प्रश्न

4. भारत में कौन से परमाणु केन्द्र हैं ? उनका विवरण दीजिए। 2

5. कल्याणकारी राज्य की स्थापना से आपका क्या आशय है ? स्पष्ट कीजिए।
2

6. बेरोजगारी के प्रकार बताकर अन्तर स्पष्ट कीजिए। 2

7. हरित क्रान्ति का क्या अर्थ है ? इसके चार प्रधान तत्वो का उल्लेख कीजिए।
2

8. परिवार विघटन में किन-किन कानूनों का योगदान है ? 2

9. अनुसूचित जाति व जन जातियों का भारत में क्या प्रतिशत है ? उनसे सम्बन्धित किन्हीं दो समस्यांओं का विवेचन कीजिए।
2

10. बागानी कृषि से आप समझते हैं ? उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए। 2

11. विकसित व विकासशील देशों में क्या अन्तर है ? विकसित देशों की चार प्रमुख विशेषताओं का परिचय दीजिए।
1+1

12. आयात व निर्यात कर लगाने का क्या उद्देश्य है ? स्पष्ट करिये।

13. द्वितीय विश्व युद्ध कब हुआ ? इसके चार कारण लिखिए। 2

अति-लघु उत्तरीय प्रश्न

14. पोल्डर' क्या हैं ? ये संसार में कहाँ जाते हैं ? 1

15. स्वेज नहर की स्थिति बताइये और उसके महत्व का उल्लेख कीजिए। 1

16. प्रथम विश्व युद्ध किन-किन देशों के बीच हुआ ? दो-दो नाम बताइए 1

17. गुट निरपेक्षता की नीति के प्रमुख उद्देश्य क्या है ? 1

18. काली मिट्टी भारत के किन क्षेत्रों में पाई जाती है ? इसका क्या गुण है ? 1

19. यूरोपीय समुदाय क्या है ? वह किस आधुनिक प्रकृति का द्योतक है ?

20. स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात भारत में भूमि के सुधार के लिए सर्वोत्तम उपाय क्या किया गया है ? इससे किसानों को क्या लाभ है ?

बहु-विकल्पीय प्रश्न

21. सामाजिक कुरीतियों सम्बन्धी समस्याओं के समाधान का सबसे उत्तम उपाय क्या है ?

(i) समाज सेवी संस्थायें, (ii) शिक्षा, (iii) सांस्कृतिक कार्यक्रम, (iv) स्वास्थ्य सेवाएँ।

22. उष्ण मरुस्थलीय लोगों का जीवन निर्भर है—

(i) पशुपालन पर, (ii) उद्योग धन्धों पर, (iii) कृषि पर, (iv) जानवर के शिकार पर।

23. लोहे तथा इस्पात के उत्पादन में संसार का प्रमुख देश है : 1

(i) भारत, (ii) संयुक्त राज्य अमेरिका, (iii) इंगलैण्ड, (iv) फ्रांस।

24 विचारों के आदान-प्रदान का प्रमुख माध्यम है :

(i) तार, (ii) टेलीफोन, (iii) चलचित्र, (iv) छापाखाना।

भाग—अ

निर्देश : दिए गए विश्व के मानचित्र में उचित रूप से प्रदर्शित कीजिए।

25. अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय का केन्द्र, भारत का कोई एक तेल शोधक कारखाना चिन्ह व नाम लिखें। $\frac{1}{2}+\frac{1}{2}$

26. ड्रेकेसबर्ग पर्वत, डैन्यूब नदी। $\frac{1}{2}+\frac{1}{2}$

27. कनैडियन पैसिफिक रेलमार्ग ++++ चिन्ह द्वारा और बीच के स्टेशन।

28. एक टैगा क्षेत्र छायांकित करें, एंटारकटिका, केवल लिखकर प्रदर्शित करें। 1 ($\frac{1}{2}+\frac{1}{2}$)

भाग—ब

25. निर्यात का अर्थ केवल एक वाक्य में लिखें।

26. यूनेस्को का मुख्यालय कहाँ है ?

27. नील नदी किस महाद्वीप में बहती है ? 1

28. संयुक्त राज्य अमेरिका की राजधानी का नाम लिखिए। □

सामाजिक विज्ञान 1993

प्रथम प्रश्न-पत्र

खण्ड (अ)

(विस्तृत उत्तरीय प्रश्न)

प्रत्येक प्रश्न पाँच अंकों का है—

1. प्राचीन मिस्रवासियों के कला और धर्म पर प्रकाश डालिये। $2\frac{1}{2}+2\frac{1}{2}$

अथवा

सिन्धु सभ्यता की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिये। 5

2. पुनर्जागरण से आप क्या समझते हैं ? यूरोप में पुनर्जागरण के क्या कारण थे ?

अथवा 2+3

योरोप में पुनर्जागरण के फलस्वरूप सामाजिक और आर्थिक जीवन में क्या प्रगति हुई ? 2+3

3. भारत के राष्ट्रपति के अधिकारों का वर्णन कीजिये। 5

अथवा

भारतीय नागरिकों के कर्त्तव्यों का वर्णन कीजिये। 5

खण्ड (ब)

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

प्रत्येक प्रश्न दो अंकों का है—

4. नव पाषाण काल की दो प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिये। 2
5. हम्मूराबी की विधि संहिता की दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिये। 2
6. वैदिक धर्म की प्रमुख विशेषताएँ बतलाइये। 2
7. मेगास्थनीज ने पाटलिपुत्र के विषय में क्या लिखा है ? 2
8. स्पार्टा तथा ट्राय के बीच युद्ध के क्या कारण थे ? 2
9. सिक्ख धर्म की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिये। 2
10. राजनीतिक दल से क्या तात्पर्य है ? अपने देश के दो प्रमुख राजनीतिक दलों के नाम लिखिये। 1+1
11. 1942 के 'भारत छोड़ो आन्दोलन' का भारत की स्वतन्त्रता प्राप्ति पर क्या प्रभाव पड़ा ? 2
12. राज्य के शासन में मुख्यमन्त्री का क्या महत्त्व है ? 2
13. आजाद हिन्द फौज से आप क्या समझते हैं ? 2

खण्ड (स)

(अति लघु उत्तरीय प्रश्न)

प्रत्येक प्रश्न एक अंक का है—

14 मार्टिन लूथर कौन था ? वह क्यों प्रसिद्ध है ? $\frac{1}{2}+\frac{1}{2}$

15. मौर्य साम्राज्य का संस्थापक कौन था ? 1

16. गाँधी—इरविन समझौता कब हुआ था ? 1

17. अपने प्रदेश का उच्च न्यायालय कहाँ स्थित ? 1

18. मक्का-मदीना क्यों प्रसिद्ध है ? 1

19. ताजमहल कहाँ पर स्थित है ? 1

20. भारतीय संविधान के प्रमुख रचयिता का नाम लिखिये। 1

खण्ड (द)

(बहुविकल्पीय प्रश्न)

निर्देश—इस खण्ड के प्रत्येक प्रश्न के उत्तरों में दिये गये चार विकल्पों में से केवल एक सही है, उसे अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखिये—

21. 'पिरामिड' का सम्बन्ध किस सभ्यता से था ? 1

(क) मेसोपोटामिया सभ्यता, (ख) मिस्र की सभ्यता,
(ग) चीन की सभ्यता, (घ) यूनान की सभ्यता।

22. अर्थशास्त्र के रचयिता कौन थे ? 1

(क) कालिदास, (ख) बाणभट्ट,
(ख) कौटिल्य, (घ) वराहमिहिर।

23. भारत के प्रथम राष्ट्रपति कौन थे ? 1

(क) डा० राजेन्द्र प्रसाद, (ख) डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन्,
(ग) डा० जाकिर हुसेन, (घ) नीलम संजीव रेड्डी।

24. भारत का प्रधामन्त्री किस के प्रति उत्तरदायी है ? 1

(क) राष्ट्रपति, (ख) राज्य सभा,
(ग) केन्द्रीय मन्त्रि परिषद्, (घ) लोक सभा।

25. भारत के संलग्न मानचित्र में निम्नलिखित स्थानों को दिखलाइये— 1+1+1+1

(क) आगरा, (ख) सारनाथ,
(ग) अमृतसर, (घ) नालन्दा।

अथवा

निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए— 4

(क) गौतम बुद्ध, (ख) सुकरात,
(ग) कोलम्बस, (घ) राजा राममोहन राय।

द्वितीय प्रश्न-पत्र

(विस्तृत उत्तरीय प्रश्न)

1. विश्व के चीन तुल्य जलवायु वाले क्षेत्रों का भौगोलिक विवरण निम्नलिखित शीर्षकों में कीजिये— 1+1+1+1+1
(क) स्थिति, (ख) जलवायु,
(ग) प्राकृतिक वनस्पति, (घ) कृषि,
(ङ) आर्थिक विकास।
2. जनसंख्या में तेजी से वृद्धि होने के कारण कौन-सी दो प्रमुख समस्यायें उत्पन्न हुई हैं ? इनके समाधान हेतु क्या उपाय किये जा रहे हैं ? $2\frac{1}{2}+2\frac{1}{2}$
3. छठी पंचवर्षीय योजना कब से कब तक चली ? इसके उद्देश्यों व विशेषताओं का उल्लेख कीजिये। 1+2+2

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

4. मिट्टी के कटाव को रोकने के लिए क्या उपाय किये जाने चाहिए ? 2
5. लघु उद्योग व कुटीर उद्योग में अन्तर स्पष्ट कीजिये। 2
6. निर्धनता का दुष्चक्र क्या है ? भली प्रकार समझाइये। 2
7. इस प्रदेश की चार बहुउद्देशीय नदी घाटी योजनाओं के नाम लिखिए और एक का संक्षिप्त परिचय दीजिये। 2
8. समुदाय विकास योजना तथा सहकारिता आन्दोलन एक-दूसरे से कैसे सम्बन्धित हैं ? 2
9. जातिवाद, क्षेत्रवाद व भाषावाद की समस्या का समाधान किस प्रकार सम्भव है ? 2
10. पारिवारिक विघटन के चार प्रमुख कारणों को स्पष्ट रूप से बताइये। 2
11. घाटे की वित्त व्यवस्था क्या है ? इसका मुख्य दोष लिखिए। 2
12. संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक संगठन क्या है ? उसका मुख्यालय कहाँ है ? 2
13. न्यूज एजेंसी की आवश्यकता क्यों है ? किन्हीं दो एजेंसियों के नाम लिखिए। 2

(अति लघु उत्तरीय प्रश्न)

14. दहेज विरोधी अधिनियम कब पारित हुआ ? 1
15. भारत में अभ्रक व मैंगनीज निकाले जाने वाले एक-एक क्षेत्र का नाम बताइये। 1
16. भारत में दो परमाणु केन्द्रों के नाम व उन प्रदेशों के नाम लिखिए जिसमें वे स्थित हैं। 1

17. "जनसंख्या विस्फोट" क्या है ? 1
18. भारत के दो राष्ट्रीय मार्गों के नाम लिखिए। 1
19. प्रदूषण की समस्या किन कारणों से है ? 1
20. व्यापार संतुलन क्या है ? 1

(बहुविकल्पीय प्रश्न)

21. निम्नलिखित में से संचार का साधन कौन-सा है ? 1
(क) मोटर गाड़ी, (ख) राकेट,
(ग) हवाई जहाज, (घ) केबिल ग्राम।
22. निम्नलिखित वर्षों में से किस वर्ष में भारत में वायु यातायात का राष्ट्रीयकर हुआ ?
(क) 1955, (ख) 1953,
(ग) 1951, (घ) 1947।
23. निम्नलिखित में से कौन-सी जाति इस प्रदेश की अनुसूचित जाति है ? 1
(क) कुर्मी, (ख) जाटव,
(ग) लोहार (घ) भूटिया।
24. जर्मनी का रूर घाटी क्षेत्र किस उद्योग के लिए प्रसिद्ध है ? 1
(क) लोहा-इस्पात, (ख) दुग्ध उत्पादन,
(ग) रेशम, (घ) जल-पोत निर्माण।

(भाग—अ)

निर्देश—दिये गये विश्व के मानचित्र में निम्नलिखित को उचित रूप से प्रदर्शित कीजिये।

25. वह नगर जहाँ 1992 में ओलिम्पिक खेल हुए। भारत के पश्चिमी तट का एक पत्तन। 1
26. एंडीज् पर्वत, नील नदी। 1
27. ट्रांस साइबेरियन रेल मार्ग····चिन्ह द्वारा और बीच के दो स्टेशन। 1
28. एक शीतोष्ण घास के मैदान का क्षेत्र नाम सहित, हवाई द्वीप समूह। 1

(भाग—ब)

निर्देश—केवल उत्तर-पुस्तिका में उत्तर लिखें। मानचित्र का प्रयोग न करें।

25. भारत से निर्यात की दो वस्तुओं के नाम और वह बन्दरगाह जहाँ से वे भेजी जाती हैं। 1
26. अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय का कार्यालय कहाँ है ? 1
27. कांगो नदी किस महाद्वीप में बहती है ? 1
28. लन्दन किस नदी पर स्थित है ? 1